

	Water president and or		a francisio		istoly telling Benediction			
	and served		अथ दुर्गोपासनाकत	च्य डुमविषय	पानुक्रमणिका ।		egys mis	
	Mary suggestion of			Kenney .			at a milia	
	प्र० विषयनामानि.	व्रन्थनामानि.	ऋोकप्रतीकानि. ऋो०	पत्रांकाः प्र०	विषयनामानि.	ग्रन्थनामानि.	ऋोकप्रतीकानिः	ऋो॰
— чяты: ——		(हरिकृष्णः)	वृषवाहनवि० ५२		अथ ब्रह्माण्डमोहननाख्यं	(ब्रह्मवैवर्ते)	भगवन्सर्व०	88
१	१ खपोद्धातप्रकरणम् २ दुर्गामाहात्म्यम्	(पाद्में सृष्टिखण्डे) चण्डिकान्त्रप्र० १८५	,, १२	दुर्गाकवचम् अथ दुर्गाष्टोत्तरशतनामा-	(विश्वसारतन्त्रे)	शतनाम प्रवस्यामि	89
Ę	३ अथ दुगौष्टाक्षरीमन्त्रपटेख ,, तत्र मन्त्रोद्धारः	म् (दवारहस्थतन्त्र)	तारं मायां० १०	१९ १३	त्मकस्तोत्रम् अथ रुद्रचण्डीपाठः	(रुद्रयामळे)	चण्डिकाहृद्यं०	
,,	,, यन्त्रोधारः		विन्दुस्त्रिकोणं २२ ब्राह्मीनारायणी० २५		अथ सर्स्वतीलक्ष्मी-	(कद्रयामछत्तनत्रे षद्त	न्त्रे) मुनं कथय०	00
"	,, अथावरणदेवतानिर्णयः ,, अथ प्रयोगाः		स्तम्भनं मोहनं० ३७-५२	२३ १५	कालिकासूक्तत्रयम् अथ श्रीचण्डिकामाला-	(अथर्वणागमसंहिता	याम् ी) अस्य श्री०	
2	४ अथ पद्धतिः ५ अथ श्रीदुर्गाकवचम्	(देवीरहस्यतन्त्रे) (देवीरहस्यतन्त्रे)	श्रृणु पार्वति वक्ष्या० १ अधुना देवि वक्ष्या० ४२	२४ १६	मन्त्रः अथ श्रूलिनीदुगीमन्त्रवि-	(शारदातिलक)	च्वल च्वलय ०	8
88	६ अथ श्रीदुर्गासहस्रनाम-	(द्वीरहस्यतन्त्रे)	अधुना ऋणु वक्ष्या० १३३		धानम्	(तन्त्रसारे)	प्रातःकृत्यादि० २४	-3'4.
9	स्तोत्रम् ७ अथ श्रीदुर्गास्तोत्रम्	(देवीरहरयतन्त्रे)	अधुना देवि वक्ष्या० १९	24 ,	अस्य पूजाप्रयोगः , अथ शूलिनीदुर्गामहामन्त्र		अस्य श्री०	0
१६	८ अथ श्रीदुर्गामुवनवर्णनम्	(द्वीरहस्यतन्त्रे)	श्रीशेखराज॰ ४४	२६ १७	अथ श्रीनवदुर्गोपनिषत्	(अथर्वणरहस्ये) (अथर्वज्ञीर्षे)	अस्य श्री० सर्वे वै देवा०	
200	९ अथ दुर्गापश्चरत्नेश्वरी-	(देवीरहस्यतन्त्रे)	अधुना देवि० १८	38 80	अथ श्रीदुर्गोपनिषत् अथ देवीमहिम्नस्तोत्रम्	(चन्द्रचूडः)	रवमन्तरःवं ०	38
	विधानम् १० अथ दुर्गास्तोत्रम्	(ब्रह्मवैवर्ते)	पुरा स्तुता सा० २६		अथ श्रीदुगस्तिवः	(हरिवंशे)	आयोस्तवं प्रवक्ष्या	0 40

मृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥ १ ॥	पत्रांकाः ष्र० विषयनासानि ३६ १ अथदुर्गांकल्पप्रकरणं तत्राधिनप्रतिपदादिनव— म्बन्तं कर्नुमङ्गळरनाना— दिकम् ,, ,, बेदिकळशस्थापनादिकम् ,, ,, बन्त्रोदारः ,, यन्त्रोपरि चतुरस्रे पीठ- पादुकानाथपूजनम् ३७ ,, अथ घद्रकदेवताः ,, अथ प्रत्रकोणदेवताः ,, अथ प्रत्रकोणदेवताः ,, अथ मन्त्रोद्धारः ,, अथ मन्त्रोद्धारः ,, अथ मन्त्रोद्धारः ,, अथ मन्त्रोद्धारः ,, अथ नवाणमन्त्रोद्धारध— न्द्रादिसमवर्णसिहितः नवाणजपपळम् ,, अस्य सिद्धादिष्वचारो ना	प्रनथनामानि ऋोकप्रतीकानि ऋो (ज्ञान्तिसारे मार्क- शृणु राजन्प्र० १ एखेयपुराणे डामरतन्त्रे च) ततस्य कारये० ३ यन्त्रोद्धारः प्र० ६ पश्चकः काळि० ८ चक्रे अष्टद्ळे० १८ नायुः स्रोमस्घ० २२ गणेशं हरिहरं० २३ सरस्वत्याः० २५ जया च विज० २९-३७ पुनस्त्वां परि० ३८ एँबीजमादि० ४२ नवाबीकविशुद्धो० ४५ क्रित अस्मित्रवाक्ष० ५०	३८ १० अस्य ऋषिच्छन्दोदेवतादि ३८ , विनिषोगः ऋष्यादिन्या— साश्च १, , अथ मन्त्राणां पञ्जविश्वरो- मूकसुप्तनप्रमृतग्रुथानिवीर्थ- कील्ठतशून्यभुजङ्गमलक्ष- णानि प्रयोजनं च १, कर्मपरत्वेन परश्चयोजना १, जलमध्येऽतुष्ठानं न्यास- तर्पणादि १, अथ पूजापद्धतिकमस्तत्र स्थानितयमः १, पद्मासनलक्षणम् १, भूतशुद्धः १, प्राणायामः ३९ ,, न्यासकर्तव्यताविधः १, सातृकान्यासः १ १, सार्स्वतन्यासः २ सातृगणन्यासः ३	श्लोकप्रतीकानि, श्लो० नवक्षरस्य ऋषयो० ५१ मन्त्राणां यञ्ज० ५५ मन्त्राणां यञ्ज० ५५ मनिवादी विधि० ६८ प्रविदय देव० ५४ पूर्वादिषद्यु० ५९ मोनी बद्धास० ८१ तस्याचिरेण० ९२ पृजानां जप० ५५ मालकान्या० ९८ अथ सारस्वतो० १०५ त्तीयं ते प्रव० १०९ जायते त्रिष्ठु० ११३ पादाभ्यां ना० ११८	7777 7- 3
----------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------

पत्राङ्घाः	प्र०	विषयनामानि.	त्रम्थनामानि.	ऋोकप्रतीकानि.	ऋो॰	पत्रांकाः	प्र० विषयनामानि.	यन्थनामानि.	ऋोकप्रतीकानि.	,
39	38	वैकुण्ठसुखकुन्न्यासः ६		मध्यं पातु	977	85	२१ कार्यपरत्वे कुण्डानेर्णयः	. (योनिकुण्डे भगांके	
37	19	श्चिरआदिपायुपर्यन्तं वीज-		महाजः पायु०	850	"	,, चरित्रत्रयऋष्यादिकम्		चण्डीसप्तरावी •	
17	5.0	न्यासः ७				"	" अथ काम्यप्रयोगाः	siger of a	नित्यचण्यादि०	
39	"	पाय्वादिशिरोन्तं बीजन्यास	: 6	पायुतो ब्रह्म॰	१२६	"	,, अथ नित्यचण्डी उक्षणम्		सकृद्रहस्य०	
**	";	मन्त्रन्यासः ९		महारक्षोगणा०	१२८	"	,; नवचण्डीविधानम्		शुक्रां षष्ठीं०	
"		वलवयुक्तन्यासः १०	Gardydes 1	हृन्मस्तक शि०	१३०	2)	" कालरात्रिसंज्ञकनवचण्डी-		महाकालोद्भवं०	
80	,. ?	खिङ्गन्यादिऋोकन्यासः ११		न्यासं ते संप्र०	180		विधानम्			
"	,, 1	एकादशन्यासान्ते सृष्टि-		एवं न्यासवि०	188	"	,, कुण्डस्य अष्ट संस्काराः		संस्कारैरष्टभिः ०	
		पुद्राद्शेंनम्				"	पात्रासादनं च			
- 5,		अर्घपात्रादिस्थापनम्		अर्घपात्रं प्रति॰	१५१	४३	" स्वष्टकृदादिपूणाहुत्यन्तं		नह्याणीमाहेश्व०	
Table 1		पीठपूजा 💮	2.00	पीठादिपूज॰	१५६		कर्म वसोद्धीरा अभिषका-			
"							द्कं घ			
88		द्वीपूजा		एकाक्षरं महा०	150	17	,, नवरात्रिविधानम्		शारदे चाश्विन०	
"		सप्तश्चतीपाठकरणम्		प्राणानायम्य पूर्वोव	41-17-17-17	. "	,, शतचण्डीविधानम्		शतचण्डीवि•	
17	", ह	होमविधानम्		जपेन्नवाक्षरं मन्त्रं०	188	88	,, तत्र मधुपकैविधिः		मधुपर्कं बि॰	
17	,, 5	गार्थनाविसर्जेनादिनि॰		विद्ध्यात्प्रुस्थि०	899	1,	मण्डपप्रवेशः		कृतस्वस्त्यय नो ०	
1)	,, 9	जाम हिमा		अनेन विधिना०	२०२	"	मण्डपपूजा		दिशापाछांश्च०	
27	,, व	वर्षपरन्वे ध्यानयोगः		यथा ध्यानं तथा०	206	"	,, कुमारीपूजा		कुमारीद्शकं ०	
"		कार्यपरत्वे चतुरस्रादिपीठ-		चतुरस्रेहि शान्त्यर्थ		84	" होमः पूर्णाहुतिवसोधारा-		महाजागरणो०	
		निर्णयः		Start min			दानादिकं च			

हु.ज्ज्यो.र्ण. अर्थ के	पत्रांकाः ४५ ११ १८ १९ ५० ११ ११	प्र० विषयनामानि. प्रन्थनामानि. २१ चिष्डकायाः महाविद्या १ चण्डी २ सप्तश्ती ३ मृतसंजीविनी ४ महाचण्डी ५ कुमुदीनाम ६ ,, नवाणंसंपुटनिर्णयः ,, कुमारीपूजाविधिः ,, इति दुर्गाकल्पः समाप्तः २२ अथ द्वितीयदेवीसूक्तम् (मार्कण्डेयपु० २३ अथ चिण्डकाहृदयम् २४ अथ अचिण्डकाहृदयम् २४ अथ अचिण्डकास्तोत्रम् २५ अथ लघुदुर्गासप्तश्ती— (मार्कण्डेयपु०) स्तोत्रम् २६ अथ दुर्गाकवचम् (कुष्टिजकातन्त्रे) २० अथ चण्डीस्तोत्रम् (पृथ्वीधराचार्यः) २८ अथ गुरुकीलकपटलम् (रहस्यतन्त्रे) २९ वेदवत्सप्तश्तीप्रतिपा— (मेहतन्त्रे) दनं सप्तस्तीसप्तश्तीति— पद्द्रयन्याख्या ,, अथ सप्तश्तीमन्त्रविभाग- (कात्यायनीतन्त्रे) प्रकरणम् नीलकण्ठः)	ऋोकप्रतीकाति. ऋो० महाविद्या म० ३५७ शतमादौ च० ३५९ महाराज० ३६१ सीऽपि ज्ञान० ३८१ जन्तोरप० ७० ओश्म हीं जय० या देवी खड़ाहरता०१२ ओश्म व्रीं व्रीं० १० प्रणु देवि प्रवक्ष्यामि०७ प्रत्कर्मधर्म० १७ पुरा सनत्कुमाराय०२३ अस्य स्तोत्रस्य सप्तसती सप्तशती चेति नामद्वयम् मार्कण्डेय च०	पत्रांकाः ५२ ५७ ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	"चण्डीनवार्णमन्त्रोद्धारः (मन्त्रमहोद्धो) "नवार्णऋष्यादिन्यासः १	मार्कण्डेय उवाच ४७ अष्टसप्तत्युं त्तराणां० ११ अधुना देवि व० ५३ तत्राद्यचरिता० ६४ अनिर्वाच्यजग० ६८-१२७ मार्कण्डेय उवाच० मार्कण्डेय उवाच० हिंद्या तन्त्राण्यने० ११		उपा.स्त. १ दुर्गा. अनुक्र०	The state of the s
---------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--	----------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

4								3
	पत्राडू	ाः प्र. विषयनामानि. प्रन्थनामानि.	ऋोकप्रतीकानि.	ऋो॰	पत्रा	ङ्काः प्र. विषयनामानि. प्रन्थनामानि.	ऋोकप्रतीकानि.	স্থাত 👹
	६७	३० एकाद्शन्यासे मातृका- न्यासः १	प्रथमं मातृका०	88	६९	३० सप्तशस्याश्चरित्रत्रयस्य ऋष्यादिन्यासः	सप्तराखाञ्च०	E 8
	"	" सारस्वतन्यासः २	अथ द्वितीयं कुर्वी ?	83	77	,, सार्थचण्डीपाठफळम्	सार्थस्मृतिं०	६६
	71	" मातृगणन्यासः ३	ततस्तृतीयं कुर्वी०	१५),	» पाठान्ते न्यासध्यानजपादिकम्	समाप्ती तु०	,,
(A)	77	" नन्दिन्यादिन्यासः ४	न्यासं चतुर्थं०	88	,,	,, पाठादो कवचार्गलाकीलक-	पुरा दशमु०	E9 83
8	77	" त्रह्माख्यन्यासः ५	अथ कुर्वीत व्र०	73		पाठक्रमकथेतिहासाः		
	27	" महालक्ष्म्यादिन्यासः ६	षष्टं न्यासं ततः	२७	,,	,, पाठादौ अर्गलाकीलककवचं पठेदिति क्रमवर्णनम्,	अर्गलं विष्णुना०	C3 1
4	६८	^१ ः मूळाक्षरन्यासः ७	मूलाक्ष्रन्यास॰	38	"	,, अर्गलादीनां पठनफलमाह	अर्गला हृदये०	64
3	"	'' वर्णन्यासः ८	कृतेऽस्मित्रष्ट॰	३३	00	,, सप्तशतीसंपूर्णपाठस्या-	प्रत्यध्याय०	CC 8
8	"	" मन्त्रव्याप्तिन्यासः ९	कुर्वीत नवमं०	38	1	द्यन्ते नवार्णसम्पुटम्	Series and Parket	
4	"	'' षडङ्गन्यासः १०	ततः कुर्वीत०	३६	>7	,, प्रत्यध्यायस्याद्यन्ते	नवार्णमनुना०	68 (A)
(4)	"	" खिङ्गनीत्यादिश्लोक-	दशन्यासोक्त०	३८		नवार्णसंपुटम्		1
91		न्यासः ११	detail Book the		"	" निष्कामपाठे सम्पुटस्या-	चरितं मध्यमं०	90
	"	" मन्त्रवर्णन्यासः	मन्त्रवर्णान्०	४३		नपेक्षा	the field and the	I (A)
A	17	'' महाकालीध्यानम्	खङ्गं चक्रगदे०	88),	,, एकचिरतपाठे निर्णयः	चरितार्ध०	68
71	77	'' महालक्ष्मीध्यानम्	अक्षस्रक्परशुं॰	84	,,	,, अर्धचरितपाठेऽनिष्टफलम्	यदि प्रमादात्०	65
	72	" महासरस्वतीध्यानम्	घण्टाशूल०	४६	"	,, अध्यायमध्ये न विरामः	पुनरध्यायमारभ्य॰	"
(a)))	" नवार्णपुरश्चरणम्	एवं ध्यात्वा०	80	,,	,, दुर्गापाठकरणे नव भेदाः	महाविद्या महा०	88
9	11		त्रिकोणमध्ये ०	४९	7,	,, महाविद्यानामकदुर्गापाठकमः १	आचाद्विती०	65 8
9		'' यन्त्रावरणदेवता 3, नवरात्रे नवार्णमन्त्रजपः	आश्चिनस्य ०		"	ु, महातन्त्रनामकदुर्गापाठकमः २	भाद्य-तमध्यच ०	99

.पां.	3. Employerantes 3					19	200
	३० चण्डीनामकदुर्गापाठकमः ३	आदिमध्यान्तचारित्र		३० कामनापरत्वे पाठकरणे दक्षिणानिणयः	पश्च स्वर्णाः०	885	उप
"	, ,, सप्तशतीनामकदुर्गा० ४	मध्यमाद्यन्तचारित्र०	800 "	,, वाचकस्य पूजाकरणम् (देवीपुराणे)	वाचकं पूजिय॰	883	
11 8 "	,, मृतसंजीविनीनामकदुर्गा० ५	अन्त्यादिमध्यचा०	11 11	,, चण्डीपठनश्रवणफलम्	वाजपेयस॰	१४६	अनु
(a) "	,, महाचण्डीनामकदुर्गा॰ ६	अन्त्यमध्यादि चा०	१०१७२	,, रात्रिसूक्तदेवीसूक्तसंपुट- (मारीचकल्पे)	रात्रिसूक्तं जपेदादौ०	840	ONE
19 17	, ,, रूपचण्डीनामकदुर्गा० ७	संपुटत्वेन संयो॰	१०२	निर्णयः		(A	
",	,, योगिनीनामकदुर्गा० ८	योगिनीनां चतु०	१०३ ,,	,, सूक्तेन सह चण्डीपुरश्चरण-	एवं देवि मया प्रो०	१५३	
1 1	,, पराचण्डीनामकदुर्गा० ९	पराबीजसमायो०	808	सूक्तेन सह दशांशहोमश्च	County and the		1
18 "	,, जयादिनवदुर्गानामानि	जयां च विजयां॰	१०५ ,,	,, संपुटितहोमे मन्त्रसंख्या-	मन्त्रपुटं बीजपुटं०	१५५	
3 ;,	,, नवभेद्रहाने फलमाह	एवं ज्ञात्वा सप्तश्	१०७	निर्णयः			
(4) "	" अथ कामनापरत्वे चण्डीपाठ- (वाराहीतन्त्रे)) चण्डीपाठफळं दे०	१०८ ,,	,, अथ कवचाहुतिनिषेधः (तन्त्रांतरे)	चण्डीस्तवं प्रवक्ष्या०	१५९	
NA IA	संख्या		, ,,	" कवचार्गलाकीलकदुर्गा- (स्कान्दे)	चण्डीपाठेन होतन्यं०	१६३	1
30	,, सप्तश्चतीस्तवप्रशंसा	नातः परतरं०	१२३	रहस्यत्रयाणां होममाह		19	
,,	,, अथ कामनापरत्वे स्थापित-	संशोध्य भूमि०	854 "	,, सप्तश्तीपाठेऽङ्गषट्कस्य	अङ्गदीनो यथा देही०	१६५	
YA .	कलशे निक्षेपपदार्थाः			मुख्यतमपठने दोषं चाह		1	
	ु, पदार्थानिक्षपणे सन्त्रप्रयोजनम्	नकुलीशं वामकर्ण०	१३० ,,	,, रात्रिसूक्तनवार्णमन्त्रयोः (प्रन्थकर्ता)	नवार्णकमनुं॰	१६९	
	" मन्त्रोद्धारः	चामुण्डायै स॰	838	संपुटनिर्णयः			
1	, ,, हस्ते पुस्तकं धृत्वा पाठकरणे	हस्ते संस्थापना०	१३३ ७३	,, दाक्षिणात्यसंप्रदायेन सं- (नागोनीभट्ट-	वेदादिवीरभवं०	808	
1	दोष:			पुटनवार्णमन्त्रनिर्णयः टीकायाम्)		JA	
,	,, कामनापरत्वे होमपदार्थाः	मारण मोहने०	848	,, हामरबन्त्रोक्तनवार्णसंपुटी-	ऍबीजमादीन्द्र	200	
(A) "	, ,, पाठे सृष्टिस्थितिसंहारकम- (इरगौरीतन्त्रे) श्रीकामः पुत्रव	१३८ "	करणप्रयोगः			111
	त्रयनिरूपणम्			क्रिणंत्रयागः		TA	
							1

प्त्राङ्क	ः प्र॰ विषयनामानि, प्रन्थनाम	नि. श्लोकप्रतीकानि. श्लो० पत्राङ्का	: प्र॰ विषयनामानि. यन्थनामानि	ऋोकप्रतीकानि.	ऋो॰
७३	३० षद्पल्छवानां कामनापरत्वेन निर्णयः	मन्त्राणां पल्लवो० १८२ ७७	२० अथेकस्मिन्दिने संपूर्णपाठ- करणाशक्तौ निर्णयः	पा १ठो २ यं०	200
"	,, शारदातिलकोक्ताष्टाक्षर- दुर्गामन्त्रविधानम्	वतो दुर्गामनुं वक्ष्ये० १८९ "	,, अथ सप्तशत्याः शापोद्धा- रोत्कीलने निर्णयः	त्रयोदशाध्यायं०	266
80	,, अथ दुर्गे स्मृता, कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारां मन्त्रद्वयप्रयोगः	दुर्गे स्पृता॰ २०९	,, अ <mark>थ स्तोत्र</mark> पठनविधिः तत्र सप्तशत्या मानसपाठनिषधः	प्रयावं पूर्वमु०	7 29
,,	,, दुर्गानवांर्णषद्श्रयोगिव- (प्रयोगतन्त्रे) वषद्भवत्रये फडु० २१३	,, अथ पुस्तकं विना पाठनि० ,, अथ नित्यचण्डीजपनिर्णयः	पुस्तके वाचनं० नित्यचण्डयादि०	₹ ९३ ३०७
J 04	भानम् ,, तत्र पहनाः	नमोऽन्तः शान्ति० २३०	,, अथ प्रत्यध्याये जपहोमतर्पण- पूजनादि	संत्रं पठित्वा	380
,,	,, दि _ङ नियमः	17	,, अथ प्रत्यध्याचे महाहुतिम ^{न्} त्राः	ओ३म् नमो देव्यै	३१२
,,	,, साध्यनामस्थापननिर्णयः	साध्यनामार्णमे० २४०	,, अथ पुनः शापोत्कीलनविषये निर्णयः	आदौ प्राणं तथा॰	३२७
्र ५	,, मन्त्रप्रकारः (तन्त्रसारे ,, अथ सप्ताक्षरो दुर्गामन्त्रः ,, अथ दुर्गायन्त्रोद्धारः	ओरम् ही दुर्गाय नमः२७० "	3, अथ प्रकारान्तरेण रात्रिसूकः विचारः	सामविधि॰	338
	्र, अथ तन्त्रान्तरोक्तदुर्गामन्त्रः	दुर्गायन्त्रं प्रव० २७३ स्रो३म् रात्री प्रव० २८० "	,, अथ वैदिकदुर्गाराधनम् (ज्ञान्तिसारे)	जातवेदस०	317
,, ,,	,, अथ दुर्गानवार्णमहामन्त्रः	ओ३म् अस्य श्री० २८१ "	,, अथ कामनापरत्वेन प्रयोगाः (नागोजीभट्टः)	प्रतिश्लोकमा०	388
,,	,, अथ संपुटितपाठहोमे आहुति- (प्रबोगसंप्रहे संख्या सप्तशत्येत्याह		ु,, अथ ज्ञीत्रकार्यार्थे प्रत्यहं नव- चण्डीनिर्णयः		

ज्या.ण.	ात्राङ्काः ।		नामानि. ऋोकप्रतीकानि.	ऋो॰ पत्राङ्का	ः प्र॰ विषयनामानि.	्रित्रन्थनामानि.	ऋोकप्रतीकानि.	ऋो॰
र्भस्कंध ८	: ?	३० अथ कामनापरत्वेन मंत्रसूचना ,, अथ दुर्गानामप्रसिद्धिः	वन्दिमोचने तत्रेव च॰	४०७ ९६ ४०८	३४ अथ सहस्रायु तळत्त्वण्डी- विधानम्	(मन्त्रमहोद्धी शान्तिसारे च)	एतद्दशगुणं •	86
54 Q 44 1 182 11	: ? :8	,, अथ दुर्गाविधानम् (मार्क ,, इति दुर्गापटलम्	ण्डेयपु॰) तत्रानुक्तत्वा॰ ततः कृत्त्रा॰	४९२ ४९२	३५ अथ दुर्गामखमहोत्सवस्तत्र नवाणिविधानम्	- Alexandra	अथातः संप्रव॰	8
	"	३१ अथ नित्यचण्डीविधानम् ,, अथास्याः प्रयोगः ३२ अथ नवरात्रिनवचण्डी- (नागोजं	नित्यचण्डयादि ० तत्र साधकः०	8 ",	,, दीक्षाकालनियमाः ,, अथ मन्त्रोद्धारः ,, मखोत्सवपद्धतिकमारस्भः		चैत्रे मासि जपं॰ ओ३म् ऐं हीं क्वीं च	8−88 Tg.
	,,	दुर्गाविधानम् भुष्यं प्रयोगः	तत्र साधकः॰	4 "	,, तत्र गुरुपादध्यानादिकम् ,, अथ सखे सत्पात्रत्राह्मणाः		अथ ब्राह्मे मुहूर्त्ते॰ ब्रातः श्चिरसि॰ सदाचाराः॰	8-2 u
	;, Ę	,, अथ नवचण्डीविधिः ,, अथ कुमारीपूजनम्	शरहताविषे॰ पूजादिनात्॰	71	,, अथ पूजासंभाराः		अथानन्तरं ॰ देशकाली स्मृत्वा ॰	c-83
,	"	,, अथ नवचण्डीविधिना होम- प्रकारः	मूळेन कुण्डं॰	"	,, अथ निष्कामसंकरपः ,, अथ ब्राह्मणप्रार्थना		सया च ऋत्विग्० पावनाः सर्व०	१५
	,	,, अथ नियमग्रहणे मन्त्रः ,, अथ नियममोचने मन्त्रः ,, अथ घटस्थापने निर्णयः	नवरात्रं निरा॰ इदं व्रतं मया॰	१ " २ " १००	,, गणेशमातृकापूजा ,, पुण्याहवाचननान्दीश्राद्धार्द् ,, अथ बाह्मणवरणम्	।नि	गणेशं संपू॰ आवाहयामि	^{२२} ६४
\$ Q	?	" इति घटस्थापनविधिः	आश्विने शुक्छप॰ इमां पूजां॰ डितन्त्रे) यदा यदा सतां०	ر ا ا ا	,, अथ कुमारीवदुकसुवासिनी पूजाविधिः इति प्रथमी-		एकवर्षा तु॰	00
3 4	8	्र, अथ गोविन्दकृतशतचण्डी- प्रयोगः	वत्र अनावृष्ट् <mark>या</mark> ॰	३७ १०२	ऽवसरः " अथ स्नानसंध्यातर्पणविधिः इति द्वितीयोऽवसरः		त्राह्य मुहूत्तं॰	१२३

4	त्राङ्काः	प्र॰ विषयनामानि ग्रन्थनामानि	ऋोकप्रतीकानि. ऋो॰ _।	पत्राङ्घाः	प्र॰ विषयनामानि.	श्रन्थनामानि.	्र ऋोकप्रतीकाति. ऋो॰	
	88	प्रविध्यनिमानिः प्रन्यनामानिः ३५ जथ मण्डपप्रतिष्ठा इति तृतीयोऽनसरः ३; अथ भूत्रुद्धचादिवर्ण- मातृकान्यासिविधिः इति चतुर्थोऽनसरः ३, अथैकाद्शन्यासिविधिः इति पंचमोऽनसरः ३, अथ कामकळान्यासिविधिः इति पष्ठोऽनसरः ३, अथ वोडशस्तम्भप्रतिष्ठाविधिः 3, अथ वोरणध्नजपताका-	अथ मण्डप॰ १३० गुर्वादीनेवं॰ १४० तत्रादी॰ प्रणवादि॰ ईशानस्तम्भे॰ सुटढतोरणं पूर्वे॰	१३४ १३५	३७ अथ द्वारपूजा ,, अथासनविधिः ,, अथ पापपुरुवशुद्धिः ,, अथ प्राणप्रतिष्ठा ,, मातृकान्यासः ,, अथानेकन्यासाः ,, अथ पात्रस्थापनविधिः ,, अथ पीठपूजा ,, अथ मूर्तिस्थापनविधिः ,, इति दुर्गानित्यर्चनपद्धतिः ३८ अथ दुर्गानेमित्तिककान्यान	(श्रीनिवास:)	अोशम् विं विन्नराः स्वासनस्थानं र्वासनस्थानं र्वारिते पादादि र्विरसि न्नद्धः ततः शिरसिः र्विरसि न्रद्धः ततः शिरसिः र्विरसि न्रद्धः र्वेत्र स्वर्णादिः स्रोशम् औं कारपीः कर्णिकामध्यस्यः	26 26 26 26 26 26 26 26 26 26 26 26 26 2
	१२१ १२५ १३२ १३३	प्रतिष्ठापूजाबिलदानादिकम् इति सप्तमोऽवसरः अथ होमिविधिः इयष्टमोऽवसरः ३६ अथ दुर्गादीपदानविधिः (नागोजीभट्टीये) ३७ अथ दुर्मानित्यार्चनपद्धतिः (श्रीनिवासकृत- कल्पवल्ल्याम्) अथ दन्तधावनम् अथ वैदिकतान्त्रिकस्नान- सन्ध्यादिकम्	अथातः कुण्डं ॰ ृषोडशांगुल ॰ तत्र श्रीमत् ॰ क्लीं कामदे ॰ तत्र नाभिमात्र ॰	१४२ १४३ १४५ १४५ १४५	र्चनपद्धतिः ३९ अथ दुर्गादमनपूजापद्धतिः ४० अथ दुर्गापवित्रारापेण - प्रयोगः ४१ अथ जय दुर्गामन्त्रविधानम् ४२ अथ दुर्गाकोड शनामस्तोत्रम् ४३ अथ दुर्गाकवचम् ४५ अथ दुर्गाकहस्रनामस्तोत्रम्	(ब्रह्मवैवर्ते) "	तत्र चेत्रवैशाखि॰ तत्र मिथुन॰ तारो दुर्गे युगं सर्वाख्या॰ ३३ श्रीकृष्णस्य॰ ५५ कवचं कथितं ध३ मम नाम॰ २३७	

क्क्यो.र्ज. पत्रा हिन्तंभ ८ ॥ ५ ॥	४६ अथ दकारादिदुगौसहस्र- नामाविकः ४७ अथ दुर्गाष्टोत्तरशतनामाविकः	भोश्म् हुं दुर्गायै॰ १ भोश्म् दुर्गायै॰ १		(मार्कण्डेयपु.) ,, अो३	होकप्रवीकानि अहे। ओरम् अस्य श्री॰ म् मार्कण्डेय बवाच ७००
1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	४९ अथ दुर्गा ब्रह्मकवचम् ५० अथार्गळास्तोत्रम् ५१ अथ श्रीदुर्गा कीलकस्तोत्रम् ५१ अथ विविधन्यासाः	यद्गुद्यं परमं•ः ५६ २ ब्रोश्म् अस्य ब्री० २७ २ ओश्म् नमञ्जण्डि० १५ १ ब्रोश्म् खं नमः०	५८ अप द्वासूकम्	" अ " स्ट	मो देन्यै॰ विम् अस्य श्री॰ छिस्थितिवि॰ त्राद्वै॰
\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	,, अथ रात्रिसूक्तम् ,, अथ वेदोक्तस्कम्	विश्वश्वरी॰ १५ २	१८ ५९ त्रथ भीदुर्गादेवीगीता ३१ ६० अथ प्रन्थाळकारः	(देवीभागवते) व	तं देन्या वरं॰ ७०० राधराधीश॰ ५०८ गिमद्वाजखने० ४
	Se description also				

श्रीगणेशाय नमः ॥ वृषवाहनविघ्नेशौ इंसवाहं सरस्वतीम् ॥ स्वेष्टं श्रीबदुकं नत्वा पितरं व्यङ्कटं ततः ॥ १ ॥ त्पन्नो ज्योतिर्विद्यङ्कटात्मजः ॥ हरिकृष्णः करोत्यत्र दुर्गोपासनसंग्रहम् ॥ २ ॥ अस्यामुपासनायां वै सर्व पूर्वमेवोक्तं विज्ञेयमिह चाद्रात् ॥ ३ ॥ पूर्वोक्तानां पदार्थानामत्र वक्ष्याम्यनुक्रमम् ॥ लक्षणं निर्णयः ॥ ४ ॥ पारायणविधानं चाभिषेकँस्य विधानकम् ॥ बीजीनां लक्षणं चैव पुरश्चर्याविधिस्तथा विनिर्णयः ॥ मुद्रौणां लक्षणाध्यायो मालौनिर्णय एव च ॥ ६ ॥ जैंपस्य लक्षणं चैव ह्यजपैंजपलक्षणम् । तींन्त्रिकं स्नानसंध्यादिनित्यैकर्मनिरूपणम् ॥ ७ ॥ भूर्जुद्धिद्वीरपूजादिवेहरसीनिरूपणम् ॥ भूर्तेज्ञुद्धिश्च च ॥ ८ ॥ न्यार्सानां निर्णयश्चेव मार्तृकान्यासनिर्णयः ॥ अनेकविर्धन्यासानां सप्रमाणं निरूपणम् ॥ ॥ वामेन वा दक्षिणेन पूजनं तु यथारुचि ॥ १०॥ पात्रौणां या वामे परिकीर्तिता ॥ ११ ॥ पौत्राणां ग्रहणं चैव तिरस्केरैणिपूजनम् ॥ बैंहिर्यागविधानं च देवर्तांपीठनिर्णयः ॥ सैर्वयन्त्रप्रतिष्ठा च साऽपि भेदद्वयात्मिका ॥ ५३ ॥ यन्त्रपूजनम् ॥ वश्याद्यनेककार्येषु यानि यन्त्राणि सन्ति हि ॥ १८ ॥ तेषां चैव प्रतिष्ठा च भेद्र अणवर्णनम् ॥ १५ ॥ श्रीङ्कचर्ण्टीषूजनं च तन्माहात्म्यनिक्पणम् ॥ उपासनाप्रभेदेन गोपीचन्दैनमाहात्म्यं तुलसीकाष्ठधारणम् ॥ निर्णयश्चैव संप्रोक्तो ह्यावाईनैविसर्जने ॥ १७ ॥ आर्सनस्य च ध्यानैस्य र्घ्यनिर्णयः ॥ विधिरार्चैमनीयस्य मधुर्पर्कस्य निर्णयः ॥ १८ ॥ विधिः स्नानाभिषेकस्य जत्महर्रणंनिर्णयः ॥ वस्त्रस्य १९ ॥ गर्न्धांक्षतांनां पुष्पाणीं पत्राणीं च विनिणीयः ॥ धूपेंदीपविधांनं

टिप्प०-यत्र यत्र शन्दोपरि बङ्काः सन्ति तेऽङ्कास्तद्ध्यायस्चकाः सन्तीति विज्ञेयम् ।

बु.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध८ ॥१॥

फर्लंताम्बूर्लंयोश्चेव दक्षिणांयाश्च निर्णयः ॥ आराँतिंकमन्त्रपुर्व्पंप्रदक्षिणैविनिर्णयः ॥ २१ ॥ प्रणीमस्य प्रार्थनीयास्तीर्थस्य च विनिर्णयः ॥ अङ्गपूजाऽऽवरणेपूजा बलिदानादिनिर्णयः ॥ २२ ॥ कुर्मारिकादिपूजायाः शक्तिंपूजननिर्णयः ॥ स्तोत्रौदिपठनं चैव तीर्थब्रैहणनिर्णयः ॥ २३ ॥ होमंस्य च विधानं वै कुर्ण्डमण्डपलक्षणम् ॥ तर्पणेस्य मार्जनेस्य द्विजैसंतपणस्य च ॥ २४ ॥ विधानं पृथक्प्रोक्तं निर्णयश्च पृथक रूथक ।। मन्त्रस्य शीत्रसिद्धचर्थं विधिक्को मया नृणाम् संस्कारपूर्वकः ॥ मूलिकौयहणे मन्त्रा दिशां नियमं एव च ॥ २६ ॥ ऋँतुमासक्षेवाराणां तिथीनां नियमस्तथा॥ अंगुँलीनिर्णय वन्दांत्रहणनिर्णयः ॥ २७ ॥ सिद्धार्यादिचकंमार्गशोधनं साधकेष्टयोः शापोद्धांरोतकीलने नषुंसकादिभेदाश्च मन्त्राणां ये प्रकीर्तिताः ॥ पुरश्चरणतः पूर्वकृत्यं यर्ज्ञान्तिमे तथा ॥ २९ ॥ तत्सर्वमिप प्रकीर्तितम् ॥ आवरणदेवतानां च यजनार्थं विशेषतः ॥ ३० ॥ उद्धारश्चैव यन्त्रींणां मन्त्रोद्धीरस्तथेव च ॥ गायत्रीमन्त्रसंग्रहः ॥ ३१ ॥ चक्रॅपूजाविधिश्चैव काम्येपूजाविधिस्तथा ॥ नैमित्तिकीर्चनविधिर्विशेषेण निरूपितः ॥ ३२ ॥ गर्भाधी दिसंस्कारास्तान्त्रिकाश्च निरूपिताः ॥ दीक्षितस्योदासकस्य ह्यन्त्येष्टिकैर्मनिर्णयः मेव च ॥ पूजापराधाः संप्रोक्ताः स्वैस्तिकादिनिरूपणम् ॥ ३४ ॥ देवालर्थस्य मर्यादासेवनं रस्य शब्दसृष्टिनिरूपणम् ॥ ३५ ॥ धेंडाञ्चायस्य चोत्पत्तिः पवित्रेंद्यनार्चनम् ॥ सूर्तीनां लंक्षणं चैव तपोर्मीर्गनिद्शेनम् ॥ निह्मपता ॥ दुष्केंर्मप्रायश्चित्तानि नित्यशिक्षानिह्मपणम् ॥ ३७ ॥ शरीरसँयै स्वह्मपं कार्मंनाभेदनिर्णयः ॥ पृथकपृथकतथाऽध्यायैः सर्वेषां निर्णयः स्फुटः ॥ ३८ ॥ परिभाषाभिधेऽध्याये केषांचित्रिर्णयस्तथा स्तदनुरोधेन प्रयोगः सिद्धिदो नृणाम् ॥ ३९ ॥ अहङ्कैव विधानं तु कृतश्चेन्नैव सेत्स्यति ॥ येषां सर्वोपासनेषु ह्यपयोगो भवे त्किल ॥ ४० ॥ तेषां सर्वपदार्थानां पूर्वमेव निरूपणम् ॥ कृतं तस्माद्विशेषेण हङ्घोपासनमारभेत् ॥ ४१ ॥ सर्वे शाक्ता द्विजाः

उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ० १२८

प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः ॥ आदिदेवीमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम् ॥ ४२ ॥ तस्मादादौ प्रयत्नेन गायत्रीं प्रयुतं जवेत् ॥ पटलं पद्धतिर्वर्म तथा नामसहस्रकम् ॥ ४३ ॥ स्तोत्राणि चेति पञ्चाङ्गं देवतोपासने स्मृतम् ॥ कवचं देवतागत्रा पटलं देवताशिरः ॥ ४४ ॥ पद्धतिदेवहस्तौ तु मुखं साहस्रकं स्मृतम् ॥ स्तोत्राणि देवतापादौ पञ्चाङ्गं पञ्चभिः स्मृतम् ।। ४५ ॥ जपो होमस्तर्पणं च मार्जनं विश्रभोजनम् ॥ आराधनं पश्चविधं देवतानां प्रकीर्तितम् ॥ ४६ ॥ पञ्चाङ्गेः त्वेतद्दशाङ्गं कथ्यते बुधैः ॥ हृद्यं दीपदानं च स्तवराजादिकं तथा ॥ ४७ ॥ मालामन्त्रस्तथा कल्पः सर्वमेतद्भवीम्यहम् । उपासनाशराङ्गेषु या प्रोक्ता पद्धतिः पुरा ॥ ४८ ॥ इष्टदेवार्चनार्थ । तीयाङ्गं च तत्स्मृतम् ॥ तस्योपयोगिकं ह्येतत्सर्वे पूर्वे मयोदितम् ॥ ४९ ॥ सविस्तरं च तद्या कार्या पद्धतिहत्तमा ॥ सनिर्णयां च सर्वत्र लिखामि यदि पद्धतिम् यन्थो महानेव भवेत्तस्माच पूर्वतः ॥ लिखित्वा निर्णयं पश्चात्पटलादिकमत्र वै ॥ ५१ ॥ प्रवस्यामि विशेषेण यन्थानालोक्य यत्नतः ॥ तस्माद्यत्नपरो भूयात्स्वस्य सिद्ध न संशयः ॥ ५२ ॥ इति श्रीज्योतिर्वित्कुलावतंसन्यङ्कटरामात्मजहरिकृष्णविनि बृहज्ज्योतिषार्णवेऽष्टमे धर्मस्कन्धे तृतीय खपासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनाध्याय खपोद्धातप्रकरणं प्रथमम् ॥ १ ॥ अथ श्रीदुर्गामाहात्म्यम् ॥ उक्तं च पाद्मे सृष्टिखण्डे ॥ भीष्म उवाच ॥ चण्डिकाऽनुत्रहाहैत्या गताः शिष्टा रसातलम् ॥ तद्भदस्व महात्राज्ञ चिण्डकापूजने फलम् ॥ १ ॥ यथा संपूज्यते देवी तुष्टा यच्छित यत्फलम् ॥ श्रोतुं कौतूहलं मेऽद्य तद्भदस्य सविस्तरम् ॥ २ ॥ **उवाच ।। शृणुष्व नृपशार्द्**ल चण्डिकापूजने फल्रम् ॥ तत्कृत्वा स्वर्गभुङ्मर्स्यः पश्चान्मोक्षं लभेद् ध्रुवम् देव्या न तत्क्रतुशतैरिप ॥ लभ्यते नितरां तात तीर्थदानब्रताभिः ॥ ४ ॥ चिण्डकां पूजयेद्धकत्या यो नरः प्रत्यहं नृप ॥ न क्षमस्तत्फलं वक्तुं साक्षाहेवः पितामहः ॥ ५ ॥ अश्वमेघसहस्राणि वाजपेयशतानि च ॥ चण्डिकापूजनस्यैव लक्षांशेनापि ने समः ॥ ६ ॥ स दाता स मुनिर्यष्टा स तपस्की स तीर्थपः ॥ यः सदा पूजयेहुर्गो नानापुष्पानुरुपनेः ॥७॥

बु.ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥ २ ॥ धूपैर्दीपैस्तथा भोज्येः प्रणमेद्वाऽपि भाविनीम् ॥ स योगी स मुनिः श्रीमांस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता ॥८॥ वर्षमेकं तु यो दुर्गी पूज येद्विजितेन्द्रियः ॥ एकाहारो महाबाहो सोऽग्निष्टोमफलं लुभेत् ॥ ९ ॥ पौर्णमास्यां नवम्यां च अष्टम्यां च न्राधिप ॥ स्नाप यित्वा ग्रुभां दुर्गा वाजपेयफलं लभेत् ॥ १० ॥ ग्रुक्कपक्षे नवम्यां तु अष्टम्यां परमेश्वरीम् ॥ त्रिकालं पूजयेद्यस्तु चतुर्दश्यां नराधिप ॥ ११ ॥ स गच्छति परं स्थानं यत्र देवी व्यवस्थिता ॥ क्रीडित्वा सुचिरं कालं राजा भवति भूतले ॥ १२ ॥ नवम्यां सोपवासस्तु यः पूजयति चण्डिकाम् ॥ दशानामश्वमेधानां फलं प्राप्नोति मानवः ॥ १३॥ जितेन्द्रियो ब्रह्मचारी ग्रुचिर्भृत्वा त यो नरः ॥ चिण्डकां पूजयेद्रक्त्या स याति परमां गतिम् ॥ १४ ॥ स्नानोपवासनियमैः पूजाजागरमार्जनैः ॥ सर्वकालेषु सर्वेषु चिण्डकां यः प्रपूजयेत् ॥ १५ ॥ विमानवरमारुह्य ध्वजमालाकुलं नृप ॥ ब्रह्मलोकं नरो गत्वा मोदते शाश्वतीः समाः ॥ १६ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यथाविभवविस्तरैः ॥ पूजयेत्सततं दुर्गा महाषुण्यफलेच्छया ॥ १७ ॥ अयने विषुवे चैव पदशीतिम्रखे नृप ॥ मासैश्रतुर्भिर्यत्पुण्यं विधिना पूज्य चण्डिकाम् ॥ १८ ॥ तत्फलं लभते वीर नवम्यां कार्त्तिकस्य तु ॥ मासि चाश्रयुजे वीर शुक्क पक्षे त्रिशृलिनीम् ॥ ३९ ॥ नवम्यां पूजयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ अश्वमेघसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ॥ तक्कमेद्वीर दिवि देवगणैर्वृतः ॥ मासि मासि नरो भक्त्या पूजयेद्यस्तु चिण्डकाम् ॥ २१ ॥ लभेत्वाण्मासिकं पुण्यं नवम्यां तु न संशयः ॥ मेरुपर्वततुल्योऽपि राशिः पापस्य कर्मणः ॥ २२ ॥ चिण्डकावैद्यमासाद्य नश्यते दुष्टरोगवत् ॥ दुर्गार्चने रतो नित्यं महापातकसंभवैः ॥ २३ ॥ दोषेर्न लिप्यते वीर पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ छित्त्वा भित्त्वा च भूतानि इत्वा सर्वमिदं जगत् ॥ २४ ॥ प्रणम्य शिरसा देवीं न स पापैर्विलिप्यते ॥ सर्वावस्थां गतो वाऽपि युक्तो वा सर्वपातकैः ॥ २५ ॥ दुर्गा दृष्टा नरः सोऽपि प्रयाति परमं पदम् ॥ स्वपंस्तिष्ठन् ब्रह्ममार्गे प्रलपन्भोजने रतः ॥ २६ ॥ स्मरते सततं दुर्गो स च मुच्येत बन्धनात् ॥ न तहेशे तु दुर्भिक्षं न च दुःखं प्रवर्तते ॥ २७ ॥ न कश्चिन्घ्रियते राजन्यूज्यते यत्र चिण्डका ॥ यो दुर्गो पूजयेत्रित्यं श्वपचो वा जिते

उषा.स्त. इ दुर्गा.

द्रिन्यः ॥२८॥ भावेन च समायुक्तः सोऽपि याति परां गतिम् ॥ पूजियत्वा तु तां भक्तया श्रद्धया सर्वमंगलाम् ॥२९॥ प्रयाति परमं स्थानं यत्र सा सर्वमंगला ॥ व्रताभिषेकं यः कुर्याद्द्वोरात्रं नराधिय ॥ ३० ॥ सूक्ष्मधारेण ताञ्रेण भगवत्या विचक्षण ॥ मासि चाश्वयुजे वीर सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३१ ॥ कार्त्तिके पौर्णमास्यां यः सोपवासोऽर्चयेदुमाम् ॥ सोऽग्निष्टोमफलं विन्देत्सूर्यलोकं च गच्छति ॥ ३२ ॥ आषाढे पौर्णमास्यां तु योऽर्चयेदम्बिकां नरः ॥ सोपवासो महाभागः स याति परमां गतिम् ॥ ३३ ॥ पौर्णमा स्यां तु यो माघे पूजयेद्विधिवच्छिवाम् ॥ सोऽश्वमेधमवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥ ३४ ॥ अयने दक्षिणे यस्तु पूजयेदिम्बकां नृप ॥ सकुद्गन्धोदकैश्रेव गन्धर्वसद्ने वसेत् ॥ ३५ ॥ पञ्चगन्येन उक्षित्वा पञ्चचूडाचलं व्रजेत् ॥ आपः क्षीरं कुशायाणि तन्दुला हिवरक्षताः ॥ ३६ ॥ सहसिद्धार्थका दूर्वा कुंकुमं रोचना मधु ॥ अघींऽयं कुरुशार्दूल द्वादशांग उदाहतः ॥ ३७ ॥ अनेन पूजये चस्तु स याति परमं पदम् ॥ दारवेणार्घपात्रेण दत्त्वाऽर्घे विधिवन्नृप ॥ ३८ ॥ देग्ये तदा महाराज अग्निष्टोमफलं लभेत् ॥ अब्दमेकशतं दिव्यं शकलोके महीयते ॥ ३९॥ गन्धानुलेपनं कृत्वा ज्योतिष्टोमफलं लभेत् कृष्णागुरुणा वाजपेयफलं लभेत् ॥ कुंकुमेन विलिप्यार्या गोसहस्रफलं लभेत् । ॥ ४१ ॥ चन्दनागुरुकपूरेः सूक्ष्मपत्रैः सुकुंकुमैः ॥ दुर्गामालिप्य विधिवत्कलपकोटिं वसेहिवि विष्रे वेद्वेदांगपारगे ॥ सुवर्णानां सुवर्णानां शते दत्ते तु यत्फलम् ॥ ४३॥ तत्फलं लभते राजन् पूजयित्वा तु चण्डिकाम् ॥ मालया बिल्वपत्राणां नवम्यां च पुरेण च ॥४४॥ मालाद्वयेन संपूज्य दुर्गादेवीं नराधिप ॥ बिल्ववृक्षस्य पुष्पेश्च राजसूयफलं लभेत ॥४५॥ करवीरस्रजोभिश्च पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥ वाजपेयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥ ४६ ॥ द्रोणपुष्पस्रजोभिस्तु पूजयेद्यस्तु चिण्डकाम् ॥ राजस्यफलं प्राप्य स्वर्गलोके महीयते ॥ ४७ ॥ पूजियत्वा तु राजेन्द्र श्रद्धया विधिपूर्वकम् ॥ वन्यपुष्पस्रजोभिस्तु पितृलोके महीयते ॥ ४८ ॥ शमीपुष्पस्रजोभिस्तु आर्या संपूज्य भक्तितः ॥ गोसहस्रफलं लब्ध्वा विष्णुलोके महीयते ॥ ४९ ॥

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥ ३॥ सर्वेषामेव पुष्पाणां प्रवरं नीलमुत्पलम् ॥ नीलोत्पलसहस्रेण यस्तु मालां प्रयच्छति ॥ ५० ॥ दुर्गाये विधिवद्वीर तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ वर्षकोटिसहस्राणि वर्षकोटिशतानि च ॥ ५३ ॥ दिग्यमूर्तिधरो भूत्वा रुद्रलोके महीयते ॥ सर्वासां पुष्पजातीनां यत्फलं परिकीर्तितम् ॥ ५२ ॥ तस्माच्छतग्रणं प्राप्य दुर्गालोके महीयते ॥ नीलोत्पलस्रजोभिस्तु पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥ ५३ ॥ वाजपेयफलं प्राप्य रुद्रलोके महीयते ॥ अलाभे पुष्पजातीनां पत्राण्यपि निवेदयेत् ॥ ५४ ॥ पत्राणामप्यलाभे तु ओषधीस्तु निवेदयेत् ॥ ओषधीनामलाभे तु भक्तया भगवती जिता ॥ ५५ ॥ प्रत्येकमुक्तपुष्पेषु कुशेष्विप फलं नृप् ॥ आंगिरसेषु तेष्वेव द्विगुणं काञ्चनस्य तु ॥ ५६॥ मिळ्ळामुत्पलं पत्रं शमीपुत्रागचम्पकम् ॥ कर्णिकारमशोकं च द्रोणपुष्पं विशेषतः ॥५७॥ चन्दनं च जपाषुष्पं नागकेशरमेव च ॥ यः प्रयच्छति पुण्यात्मा पुष्पाण्येतानि भावतः ॥ ५८ ॥ चण्डिकायै नरश्रेष्ठ स च प्रोक्तफलं लभेत् ॥ संप्राप्य कालाद्राजत्वं चिण्डकानुचरो भवेत् ॥ ५९ ॥ अथ पुष्पविशेषाणां फलं वक्ष्येऽम्बिकार्चने ॥ ऋतुकालोद्धवेः पुष्पै मीक्षिकाजातिकुङ्कुमेः ॥ ६० ॥ सितरक्तैस्तथा पुष्पैनीलपुष्पेश्च पाण्डुरेः ॥किञ्जकेः केशरेः कङ्केः कङ्कतेश्च सचम्पकेः ॥६१॥ बकुले श्रेव मन्दारेः कुन्दपुष्पेः कुरण्टकेः ॥ करवीरार्कपुष्पेश्च तुर्विषेश्चापराजितेः ॥ ६२ ॥ धनूरकातिमुक्तेश्च ब्रह्मकागस्तिस्पनेः ॥ दमनैः सिन्धुवारैश्च सुरभीमार्कवैस्तथा ॥ ६३ ॥ लताभिन्नंझवृक्षस्य दूर्वाङ्कुरैश्च कोमलैः ॥ मञ्जरीभिः कुशानां च विल्वपत्रैः सुशो भनेः ॥६४॥ अक्तया युक्तास्तथाऽनुक्तश्चण्डिकायाश्च मन्दिरे ॥ स दिन्ययानगो भूत्वा रमते वैष्णवे पुरे ॥ ६५ ॥ पद्माकृतिं च यः कुर्यान्मण्डलं चिण्डकागृहे ॥ स ब्रह्मणः पुरं गत्वा मोदते ब्रह्मणा सह ॥६६॥ शङ्कवर्णे तु यः कुर्यान्मण्डलं विधिवननृप ॥ स दिन्यं यानमारुह्य चन्द्रलोकमवाप्नुयात् ॥६७ ॥ नानावर्णेन चूर्णेन कृत्वा मन्डलमुत्तमम् ॥ गत्वा माहेश्वरीलोकं मोदते शाश्वतीः समाः ॥ ६८॥ वज्राकृति वज्रवूणिर्यः कुर्यानमन्डलं नृप ॥ ऐरावतं समारूढ इन्द्राणीलोकमाप्नुयात् ॥ ६९ ॥ यः करोति नरो भक्तया दुर्गायाः पुरतो भहत् ॥ श्वेतकृष्णैः सितैर्वर्णैः श्रीवत्साङ्कितमुत्तमम् ॥ ७० ॥ मण्डलं स नरो वीर विमानवरमाश्रितः ॥

डपा.स्त. है । हुर्गा.

सेन्यमानोऽप्सरोत्रातत्रजेच्छ्रीलोकमुत्तमम् ॥ ७१ ॥ यः करोति नरो भक्त्या मण्डलं चाम्बिकान्वितम् ॥ रमते किन्नरैः सार्धे याव दाभूतसंप्रुवम् ॥ ७२ ॥ घृतिपष्टप्रदीपाद्येर्घृतिमिश्रितप्रह्रवैः ॥ ओषधीभिश्र मेध्याभिः सर्ववीजैर्यवादिभिः ॥ ७३ ॥ नवम्यां सर्व कालेषु यात्राकाले विशेषतः ॥ यः कुर्याच्य्रद्धया वीर दिन्यं नीरांजनं नरः ॥ ७४ ॥ शङ्खभेर्यादिनिचींषैर्महद्धिर्देववादितैः ॥ जयशब्दैः पुष्कलैश्च शिवलोकं स गच्छिति ॥ ७५ ॥ लवणेनाक्षतैः कृत्वा देग्या नीराजनं कृतम् ॥ तावत्कलपसहस्राणि स्वर्ग लोके महीयते ॥ ७६ ॥ सुवर्णरोप्यवर्णेश्च कृत्वा नीराजनं नरः ॥ अगवत्यै महाराज ब्रह्मलोके महीयते ॥ ७७ ॥ त्रिकालं यो नरः कुर्योहुर्गायाः पुरतो नृप ॥ नृत्यं गीतं च वादित्रं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ७८ ॥ यावन्त्यब्दानि कुरुते गीतं नृत्यं च वादि तम् ॥ तावत्कल्पानि राजेन्द्र देवीलोके सुखं वसेत् ॥ ७९ ॥ एकाहमपि यो भक्त्या पञ्चगव्येन चण्डिकाम् ॥ स्नापयेन्नृपशार्दूल स गच्छेत्षुरभीषुरम् ॥ ८० ॥ कपिलापञ्चगच्येन घृतक्षीरयुतेन च ॥ स्नानं शतगुणं श्रोक्तमितरेभ्यो नराधिप ॥ ८३ ॥ वर्षेश्व षट्सहस्राणां पापानां समुपार्जनम् ॥ तत्सर्वं विलयं याति तोयेन लवणं यथा ॥ ८२ ॥ घृताभ्यंगेन देन्यास्तु कृतेन न्तृप ॥ तस्मादभ्यञ्जयेद्भक्त्या नित्यं भगवतीं तृप ॥ ८३ ॥ नवम्यां शुक्कपक्षे तु विधिवचणिडकां तृप ॥ घृतेन स्नागयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ८८ ॥ दश पूर्वान् दश परानात्मानं च विशेषतः ॥ भवार्णवात्समुबृत्य दुर्गालीके महीयते ॥ ८५ ॥ क्षीराद्यैः स्नापयेद्यस्तु श्रद्धाभिक्तसमन्वितः ॥ चिण्डकां स नरो याति गोलोकं तमसः परम् ॥ ८६ ॥ चिण्डकां स्नापयेद्यस्तु नरश्रेक्षुरसेन च ॥ सौवर्णकेन यानेन विष्णुना सह मोदते ॥ ८७ ॥ यो नरः स्नापयेहुर्गो श्रद्धया हेमवारिणा यानमारूढो मोदते पुरुषेदिंवि ॥ ८८ ॥ रक्तोदकेन विधिवत्स्नापयेच्छद्याऽन्त्रितः ॥ चिण्डकां स नरः पूर्वैविष्पुलोके महीयते ॥ ८९ ॥ स्नापयेद्य उमां देवीं नरः कर्पूरवारिणा ॥ सौवर्ण यानमारूढो गच्छते यत्र चण्डिका ॥ ९० ॥ चण्डिकां स्नाप यित्वा तु श्रद्धयाऽग्रुरुवारिणा ॥ इन्द्रलोकं समासाद्य क्रीडते सह किन्नरैः ॥ ९१ ॥ पिवृतुद्दिश्य यो दुर्गो मधुना पायसेन च ॥

बृ.ज्ज्यो.ण. धर्मस्कंध ८ ॥ ४॥

स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ९२ ॥ तृप्ता भवन्ति पितरस्तस्य वर्षशतद्भयम् ॥ य एवं स्नापयेब्नित्यं स्नान द्रव्येर्नराधिप ॥ ९३ ॥ युगपद्विधिवद्वीर तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ॥ ९३ ॥ अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य स फल विन्दते नरः ॥ स्नापयित्वा नरस्ताञ्चेर्वाजपेयफलं लभेत् ॥ ९५ ॥ सोवर्णेः स्नापयित्वा च चण्डिकां कलशेर्नृप ॥ अश्वमेधफलं प्राप्य ब्रह्मलोके महीयते ॥ ९६ ॥ घृतस्नातां तथा दुर्गा समुद्रत्यते तु यः ॥ यवगोधूमजेश्चूर्णिर्घपं येन्छकरेण च ॥ ९७ ॥ घृतेन पयसा दथ्ना स्नापयेचण्डिकां ततः ॥ विल्वपत्रैः सुगन्धादयेर्वर्षयेद्यत्नतः पुमान् ॥ ९८ ॥ गोसहस्रशते दत्ते यत्फलं पुष्करे स्मृतम् ॥ तत्फलं लभते वीर देव्या उद्दर्तने कृते ॥ ९९ ॥ दत्त्वाऽर्धे विधिवद्भक्त्या दुर्गाये संपूज्यमानो गन्धवै रमते दिवि देववत् ॥ १००॥ दत्त्वोपवासं विधिवत्स भोगी पुत्रवान् भवेत् ॥ उत्तरे अयने यस्तु सोपवासोऽर्चतेऽम्बिकाम् ॥ १०१ ॥ बहुपुत्रो बहुधनः स नरः कीर्तिमान्भवेत् ॥ इत्येते कथिता वीर काला मनीषिभिः ॥ १०२ ॥ कृत्वोपवासं विधिवद्विष्ठवे योऽर्चयेच्छिवास् ॥ शक्तिमान् बहुपुत्रश्च स भवेद्रलवान्नरः योऽर्चयेद्धिघिवहुर्गा यहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ कृत्वोपवासं विधिवत्स भवेत्पुत्रवान्नरः ॥ १०४ ॥ शान्तिकामो नरो यस्तु राहुयस्ते दिवाकरे ॥ सोपवासोऽर्चयेदेवीं स गच्छेत्परमं पदम् ॥ १०५ ॥ इत्येते कथिता वीर पूजाकाला मनीषिभिः ॥ दुर्गायाः कुरुशार्दूल येषु ब्रह्मदिवं व्रजेत् ॥ १०६ ॥ दुर्गाया दर्शनं पुण्यं दर्शनादिभवन्दनम् ॥ वंदनात्स्पर्शनं श्रेष्ठं स्पर्शनादिप पूजनम् ॥ १०७ ॥ पूजनाछेपनं श्रेष्ठं लेपनात्तर्पणं स्मृतम् ॥ तर्पणान्मांसदानं तु महिषाजनिपातनम् ॥ १०८ ॥ अहन्यहिन यो दुर्गी पूजयेद्विधरा दिभिः ॥ कुलानां शतमुद्धत्य ब्रह्मलोके महीयते ॥ १०९ ॥ वरं प्राणपरित्यागः शिरसः कर्तनं वरम् ॥ चापूजयेहभुञ्जीत चिण्डकां चण्डकां चण्डकपिणीम् ॥ ११० ॥ पुलस्त्य दवाच ॥ देवैः पुरा जगत्कर्ता पृष्टो देवः पितामहः ॥ ब्रहि दुर्गार्चनं देव येन तुष्यित चण्डिका ॥ १९१॥ ब्रह्मोवाच ॥ शंभुः पूजयते देवीं मन्त्रशक्तिभयीं शुभाम् ॥ अक्षमालां करे न्यस्य तेनासौ विभवोद्भवः ॥ १९२॥ दुर्गी रतनमयीं

डपा.स्त. **३** डर्गा. अ॰ १**२**८

देवाः पूजयामि सदा हाहम् ॥ तेन प्राप्तं मया चैव ब्रह्मत्वं च सुदुर्लभम् ॥ ११३ ॥ इन्ह्रनीलमयीं द्वीं विष्णुः पूजयते सदा ॥ विष्णुत्वं प्राप्तवांस्तेन अद्भुतैकं सनातनम् ॥ ११४ ॥ देवीं हेममयीं दुर्गी धनदोऽचयते सद्। ॥ तेनासी धनदो देवी धनेशत्वमवा तवान् ॥ ११६ ॥ विश्वेदेवा महात्मानो रौप्यां देवीं मनोरमाम् ॥ यजन्ति विधिवत्तेन विश्वेदेवत्वमागताः ॥ ११६ ॥ वायुः पुजयते भक्त्या देवीं पित्तलसंभवाम् ॥ वायुत्वं तेन संप्राप्तमनौपम्यगुणावहम् ॥ ११७॥ वसवः क्रांस्यकां देवीं पूजयन्ति विधानतः ॥ प्राप्तास्ततो महात्मानो वसुत्वं तन्महोद्यम् ॥ ३१८ ॥ अश्विनौ पार्थिवीं देवी पूजयन्तौ विधानतः ॥ तेन तावश्विनौ देवौ स्ववैद्यो संबभ्वतुः ॥ ११९ ॥ स्फाटिकीं शोभनां देवीं वरुणः पूजयेत्सदा ॥ वरुणत्वं च संप्राप्तं तेन चद्धची समन्वि तम् ॥ १२० ॥ देवीं रत्नमयीं पुण्यामियर्जिति भावितः ॥ अग्नित्वं प्राप्तवांस्तेन तेजोरूपसमन्वितम् ॥ १२१ ॥ ताम्रां देवीं सदा कालं भवत्या देवो दिवाकरः ॥ अर्चते तेन संप्राप्तं सूर्यत्वं शुभम्रत्तमम् ॥ १२२ ॥ मुक्ताफलमयीं देवीं सोमः पूजयते सदा ॥ तेन सोमेन संप्राप्तं सोमत्वं सततोज्जवलम् ॥ १२३ ॥ प्रवालकमयीं देवीं पूजयन्ति विधानतः ॥ तेन ते ग्रहतां प्राप्ता ग्रहाः सूर्यादयो ऽनिशम् ॥ १२४ ॥ वारिजां शोभनां देवीं पूजयन्त्यसुरोत्तमाः ॥ वारिजाश्च महात्मानस्तेन तेऽमितविक्रमाः ॥ १२५ ॥ त्रपुसीस मयीं देवीं यजन्ते पितरः सदा ॥ मातृत्वं प्राप्य ताः सर्वाः संपूज्याश्च जगत्रये ॥ १२६ ॥ तथा छि।हमयीं देवीं पिशाचाः पूज यन्ति ताम् ॥ तेन सिद्धिबलोपेताः प्रयान्ति परमं पद्म् ॥ १२७ ॥ त्रैलोहिणीं सदा देवीं यजन्ते ग्रह्मकाद्यः ॥ तेन भोगबलो पेताः प्रयान्तीश्वरमन्दिरम् ॥ १२८ ॥ वञ्चलोहमयीं देवीं यजन्ते भूतयोनयः ॥ तेन मुक्ताः सुरत्वं च लभन्ते सततं दिवि ॥१२९॥ देवास्तथा युयमपि यदीच्छथ परां गतिम् ॥ शिवां मणिमयीं पूज्य लप्स्यध्वे मानसेप्सितम् ॥ १३० ॥ यश्च देव्या गृहं नित्यं संमार्जयति भिवततः ॥ स भवेद्वलवान्देवाः सर्वसंपत्तिसंयुतः ॥ १३१ ॥ देव्या गृहं तु यो देवा गोमयेनोपलेपयेत् ॥ श्ली प्रमान्वा यथावच षण्मासाभ्यन्तरे सुराः ॥ १३२ ॥ स लभेदीप्तितान्कामान्देवीलोक च गच्छिति ॥ पुलस्त्य उवाचे ॥ स्नानकाले बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥ ६॥

महाराज नानावादित्रमङ्गलैः ॥ १३३ ॥ जयशब्दैश्च यो हुर्गो स्नाप्यमानां जलादिभिः ॥ संपूजयति भूत्रया च गन्धपुष्पादिभि स कीडते दिवं गत्वा गन्धर्वाप्सरसां गणैः ॥ चकैर्वा शतशाखैरत क्षीरवृक्षसमुद्भवैः ॥ १३५ ॥ अनेकवर्णसंयुक्तैरक्षतैनीरतन्दुलैः ॥ १३६ ॥ यः करोति नरो भक्तया राजञ्जलजैः स्थलसंभवैः॥ १३७॥ पत्रैः पुष्पैर्यथालाभं सर्वर्तुषुद्भवैः शुभैः १३८ ॥ ग्रुमं वाऽप्यशुमं वाऽपि फलं पुष्पं निवेदयेत् ॥ भक्तया युक्तो नानापुष्पस्रजोभिश्र चिण्डकोपरि ॥ विधिवञ्चिण्डकोपरि ॥ नवम्यां पूर्वकाले वा विमानवरमारुह्य पुष्पदामोपशोभितम् ॥ अक्षयं मोदते कालं चण्डिकालयमाश्रितः ॥ १४२ ॥ पूजाविभक्तविन्यासरचनादिष्ठ ज्ञेय वित्तानुसारतः ॥ १४३ ॥ कृष्णागुरु सकर्पूरं सिन्दूरं चन्दनं तथा ॥ भगवत्ये नराधिप ॥ १४४ ॥ इह कामानवाप्याथ शिवलोके महीयते ॥ गुग्गुलुं सघृतं दत्त्वा हुर्गायै च नर्षभ ॥ १४५ ॥ गोसहस्रफलं लभेत् ॥ अगुरुधूपमावेद्य सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥ १४६ ॥ सितागुरुं नरो दत्त्वा गोसहस्रफलं सर्वेषामेव धूपानां हुर्गाया गुग्गुलुः प्रियः ॥ १४७ ॥ घत्रयुक्तो विशेषेण सततं प्रीतिवर्द्धनः ॥ द्वे सहस्रे पलानां तु तथा पलशत द्रयम् ॥ १४८ ॥ दत्त्वा ग्रुक्जनवम्यां तु चिण्डकावल्लभो भवेत् ॥ महिषाक्षं घृताक्तं तु दम्धा बिल्वमथापि वा ॥ १४९ ॥ वाजपेय फलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ सकुबाग्रक्षृपेन प्रीतिदा सर्वमङ्गला ॥ १५० ॥ शोधयेत्पापकलिलं काञ्चनं दहनो यथा ॥ वस्नाणि सुविचित्राणि सुस्माणि सुमृदूनि च ॥ १५१ ॥ यः प्रयच्छति दुर्गायै स गच्छति शिवालयम् ॥ सुवर्णघटितं वस्त्रं यो दुर्गायै प्रयच्छति ॥ १५२ ॥ गोसहस्रफलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ एवं वित्तान्तसारेण फलं ज्ञेयं समासतः ॥ १५३ ॥ संध्याकाळे नवम्यां

डप्रा.स्त. ^३ डुगा.

यो बिल कुर्यात्रराधिप ॥ चिण्डकायतने भक्त्या महिषाजिनपातनैः ॥ १५४ ॥ स गच्छिति प्रं स्थानं यत्र सा चिण्डका स्थिता ॥ गुडखण्डाज्यसंमिश्रमन्नं दत्त्वा नराधिप ॥ १५५ ॥ वैष्णवः सुकुलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ गुडखण्डघृतानां तथा शर्करयः नृप ॥ १५६ ॥ इत्ते चोद्वर्तने देन्यै स याति ब्रह्मणः पदम् ॥ शाल्योदनं रसानां च प्रपानं विरजं तथा ॥ १५७ यः प्रयच्छति दुर्गायै स च गच्छेच्छिवालयम् ॥ दुर्गामुपिश्य पानीयं केतकीगन्धवासितम् ॥ १५८ ॥ यः प्रयच्छति राजेन्द्र गणाधिपतिभेवेत् ॥ आम्रं च नारिकेलं च खर्जूरं बीजपूकरम् ॥ १५९ ॥ यः प्रयच्छति दुर्गाय स गच्छेत्परमं पदम् ॥ घृतदीप प्रदानेन योऽर्चयेचिण्डिकां नरः ॥ १६० ॥ सोऽश्वमेधफलं प्राप्य चण्डिकानुचरो भवेत् ॥ तैलदीपं च यो द्यात्पूजियत्वा त चण्डि काम् ॥ १६१ ॥ नागलोकं समासाद्य क्रीडते सह किन्नरैः ॥ आत्मदेहवसादीपं प्रज्वाङ्य चण्डिकामतः ॥ १६२ ॥ निवेदयेन्नरो भक्त्या मोदते सोऽम्बिकालये ॥ यः कुर्यात्कार्त्तिके मासि शोभनां दीपमालिकाम् ॥ १६३ ॥ चण्डिकायतने भक्त्या स्रसूर्यालय मात्रजेत् ॥ घृतेन कुरुशार्ट्ल अमायां च स्वशक्तितः ॥ १६४ ॥ विशेषतो नवम्यां तु भक्तिश्रद्धासमिनवतः ॥ तावद्वषसहस्राणि ब्रह्मलोके महीयते ॥ १६६ ॥ अश्मसारमयं कृत्वा नानादीपसमन्वितम् ॥ दीपं दत्तं समुद्रोध्य दुर्गायाः पुरतो नृप ॥ १६६ ॥ नरः कल्पायुतं सात्रं दुर्गालोके महीयते ॥ चन्द्रांशुनिर्मलं छत्रं मणिमाणिक्यभूषितम् ॥ १६७ ॥ सर्वतः शोभनं कृत्वा नाना पुष्पानुलेपनैः ॥ दुर्गायाः पुरतो वीर स याति परमां गतिम् ॥ १६८ ॥ चामरे श्रद्धया देव्ये दत्त्वा च परयाऽन्वितः ॥ राजस्यफलं प्राप्य इंसलोके महीयये ॥ १६९ ॥ संप्रसारितदेहो यो दण्डवत्पतितो भुवि ॥ चण्डिकापुरतो वीर स याति परमां गतिम् ॥ १७० ॥ तत्फलं लभते वीर प्रणम्य शिरसा महीम् ॥ दुर्गापूजोपकरणं स्वरुपं वा यदि वा बहु ॥ १७१ ॥ कृतवा वित्तानुसारेण रुद्रलोके मही यते ॥ चण्डिकां पूजयित्वा तु प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥ १७२ ॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा इदं स्तोत्रमुदीरयेत् ॥ दुर्गा शिवां शान्ति करीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ १७३ ॥ सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सद्। ऽम्बिकाम् ॥ मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां

बु.क्क्यो.ज. धमस्कंघ ८ ॥ ६ ॥

कलाय ॥ १७४॥ विश्वेश्वरीं विश्ववन्द्यां चिण्डकां प्रणमाम्यहम् ॥ सर्वदेवमयीं देवीं सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ १७५॥ ब्रह्मेशविष्णुनिमतां प्रणमामि सदा डमाय ॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिन्यस्थानिवासिनीम् ॥ १७६ ॥ योगिनीं योगविद्यां च चिण्डकां प्रणमाम्यहम् ॥ ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वरिप्रयाम् ॥ १७७ ॥ प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गा संसारार्णवतारिणीम् ॥ इहं यः पठते स्तोत्रं शृणुयाद्वाऽपि मिकतः ॥ १७८ ॥ स्मुक्तः सर्वपापेभ्यो दुर्गालोके महीयते ॥ १७९ ॥ देवीभागवते ॥ अधुना शृणु निप्रेन्द्र हुर्गादेग्या महात्म्यकम् ॥ यस्याः स्मरणमात्रेण पलायन्ते महाऽऽपदः ॥ ३८०॥ एनां न भजते यो हि तादक् नास्त्येव छुत्र चित् ॥ सर्वोपास्या सर्वमाता शैनी शक्तिर्महाद्धता ॥ १८१ ॥ सर्वबुद्धचिधदेवीयमन्तर्यामिस्वरूपिणी ॥ हुर्गसंकटहन्त्रीति हुर्गिति प्रथिता भ्रवि ॥ १८२ ॥ वैष्णवानां च शैवानामुपास्येयं च नित्यशः ॥ मूलप्रकृतिरूपा सा सर्वे देवा इरित्रह्मप्रमुखा मनवस्तथा ॥ मुनयो ज्ञाननिष्ठाश्च योगिनश्चाश्रमास्तथा ॥ १८९ ॥ लक्ष्म्यादयस्तथा देव्यः सर्वे ध्यायन्ति तां शिवाम् ॥ तदैव जन्मसाफल्यं दुर्गास्मरणमस्ति चेत् ॥ १८५ ॥ इति श्री वृ॰ घ॰ उपासनास्तबके दुर्गापासनाध्याये माहात्म्यनिरूपणं नाम प्रकरणं द्वितीयम् ॥ २ ॥ अथ श्रीदुर्गापटलम् ॥ उक्तं देवीरहस्यतन्त्रे षट्चत्वारिंशत्तमे पटले ॥श्रीदेण्युवाच ॥ भगवन् सर्वतन्त्रज्ञ साधकानां जयावह ॥ यत्पुरा सूचितं देव हुर्गापञ्चाङ्गग्रत्तमम् ॥ १ ॥ सर्वस्वं सर्वदेवानां रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम् ॥ तद्य कृपया ब्रहि यद्यस्ति मिय ते द्या ॥ २ ॥ भैरव उवाच ॥ एतद्भव्यतमं देवि पञ्चाङ्गं तत्त्वलक्षणम् ॥ दुर्गायाः सारसर्वस्वं न कस्य कथितं मया ॥ ३ ॥ तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि हुर्गापञ्चाङ्गमीश्वरि ॥ गुह्यं गोप्यतमं गुह्य न देयं ब्रह्मवादिभिः दमनी दुर्गेत्यष्टाक्षरात्मिका ॥ देवैराराधिता पूर्व ब्रह्माच्युतपुरःसरैः ॥ ५ ॥ पुरंदरहितार्थाय वधार्थाय सुरद्विषाम् ॥ सैवं सृजिति भूतानि राजसी परमेश्वरी ॥ ६ ॥ सान्विकी रक्षति प्रान्ते संहरिष्यति तामसी ॥ इत्थं गुणत्रयीरूपा सृष्टिस्थितिलयात्मिका ॥ ॥ ७ ॥ अष्टाक्षरी महाविद्या संध्यातीता परात्मिका ॥ यस्याः पञ्चाङ्गमधुना रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ॥ ८ ॥ वक्ष्यामि परमप्रीत्या

उपा.स्त. ३ दुर्मा.

11 8 11

न चारुयेयं हुरात्मने ॥ पटलं तव वक्ष्यामि यन्त्रोद्धारं पराश्रयम् ॥ सर्वतन्त्रेष्ठ विख्यातं सर्वकामफलप्रदम् ॥ ९ ॥ तारं मायां चाक्रिकं चक्रिदूरावायन्यालं विश्वमन्ते भवानि ॥ हुर्गायास्ते वर्णितो मूलविद्यामन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाक्षरोऽयम् ॥ १० ॥ इत्यु द्धारः ॥ नास्यान्तरायबाहुरूयं नापि मित्रारिदूषणम् ॥ नो वा प्रयाससयोगो नाचारयुगविष्ठवः ॥ ११ ॥ साक्षात्सिदिपदो मन्त्रो दुर्गायाः कलिनाशनः ॥ अष्टाक्षरोऽष्टिसिद्धीशो गोपनीयो दिगम्बरैः ॥ १२ ॥ महाचीनक्रमस्थानां साधकानां मन्त्रराजो महादेवि सद्यो भोगापवर्गदः ॥ १३ ॥ वर्णलक्षं पुरश्चर्या तद्धं वा महेश्वरि ॥ एकलक्षावधं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ ॥ १४ ॥ मूलोत्कीलनसिद्धं तु संजीवनसुसंस्कृतम् ॥ पुरश्चर्यां चरेत्पश्चात्संपुटाढचं चरेन्मनुम् ॥ १५ ॥ ततो मन्त्रं जपेन्नित्यं दुर्गाया अष्ट्रसिद्धिदम् ॥ यं जप्त्वा साधको भूमौ विचरेद्धैरवो यथा ॥ १६ ॥ ऋषिरस्य स्वृतो देवि मन्त्रस्याद्यो महेश्वरः ॥ छन्दोऽनुष्टुब्देवता च श्रीदुर्गाऽष्टाक्षरात्मिका ॥ १७ ॥ तारं कीलकमीशानि विश्वबन्धनमीश्वरि ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनि योगः प्रकीर्तितः ॥ १८ ॥ तारमायाक्षेरेदेवि न्यासं षड्दीर्घभागिभिः ॥ निहत्य षड् निपून् देवि ध्यायेहुर्गो कुलेश्वरि ॥ १९ ॥ दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसित्करीटां शङ्काब्जखङ्गशरखेटकशूलचापान् ॥ संतर्जनीं च द्वतीं महिषासनस्थां दुर्गा नवारकुलपीठ गतां भजेऽहम् ॥ २० ॥ यन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि दुर्गायाः कुलसुन्दरि ॥ सर्वसिद्धिप्रदं चक्रं सर्वाशापरिपूरकम् ॥ २१ ॥ विन्दुस्त्रि कोणं रसकोणविम्बं वृत्ताष्ट्रपत्राञ्चितविह्नवृत्तम् ॥ धरागृहोद्धासितिमिन्दुचूहे दुर्गाश्रयं यन्त्रमिदं प्रदिष्टम् ॥ २२॥ लयाङ्गमस्य यन्त्रस्य सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥ यस्योच्चारणमात्रेण कोटियज्ञपःलं लभेत् ॥ २३ ॥ गणेशं च कुमारं च पुष्पदन्तं विकर्तनम् ॥ चतुर्द्वारेषु देवेशि पूजयेत्साधके श्वरः ॥ २४ ॥ श्राह्मी नारायणी देवी चासुण्डा व्यपराजिता ॥ माहेश्वरी च कौमारी वाराही नार सिंहिका ॥ २५ ॥ पूज्या वसुद्छे देवि भैरवा अष्ट पार्वति ॥ असितांगो रुरुश्रण्डः कोघोन्मत्तकपालकाः ॥ २६ ॥ भीषणश्रेव संहारी वामावर्तेन साधकैः ॥ पूज्याः पृथकपृथग्देवि गन्धपुष्पाक्षतैः शिवे ॥ २७ ॥ दत्त्वा पुष्पाञ्जलि चक्रे मूलमुजार्य साधकः ॥

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८

पूजयेन्पञ्चिकञ्जल्कैः षडस्रेषु कुलाम्बिकाः ॥ २८ ॥ शैलपुत्रीं स्ववामायात्पूजयेद्वस्यारिणीम् ॥ चण्डघण्टां च कूटमाण्डां स्कन्द् 🕍 मातरमीश्वरि ॥ २९ ॥ कात्यायनीं च संपूज्य दूर्वागन्धाक्षतैः परम् ॥ पुनः पुष्पाञ्चलि दत्त्वा श्रीचके परमार्थदे ॥ ३० पूजयेहेवतास्तिसः कुलस्थास्त्रिपुराम्बिकाः ॥ कालरात्रिर्महागौरी देवभूतीति पार्वति ॥ ३१ ॥ त्रिकोणागाच्छिवे पूज्याः सिन्दूरा क्षतपुष्पकैः ॥ दूर्वादलाञ्जलि दत्त्वा यन्त्रराजेष्टसिद्धये ॥ ३२ ॥ पूजयेदम्बिकां दुर्गामष्टाक्षरिवभूषणाम् ॥ बिन्दौ देवीमष्ट अजां विद्यामष्टाक्षरी शिवे ॥ ३३ ॥ नीलकंठं शिवे बिन्दौ पूजयेजगदम्बिकाम् ॥ तत्रायुधानि देवेशि पूजयेद्ष्ट साधकः ॥ ३४ ॥ अजां विद्यामष्टाक्षरी शिवे ॥ ३३ ॥ नीलकंठं शिवे बिन्दौ पूजयेजगदम्बिकाम् ॥ तत्रायुधानि देवेशि पूजयेद्ष्ट साधकः ॥ ३४ ॥ शङ्कं पद्ममसि बाणान् घनुः खेटकमीश्वरि ॥ शूलं संतर्जनीं दिन्यां नानापुष्पैः समर्चयेत् ॥ ३५ ॥ देवदेन्यौ बिन्दुपीठे पूजयेत्सर्व सिद्धये ॥ यं विधाय कलौ मन्त्री भवेत्करूपद्धमीपमः ॥ ३६ ॥ स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः शान्तिकं पौष्टिकं तथा ॥ ३७ ॥ एषां साधनमाचक्षे प्रयोगाणां महेश्वारे ॥ महाचीनक्रमस्थानां साधकानां हिताय च ॥ ३८ ॥ अयुतं तु जपेन्मुलं श्मशाने निशि साधकः॥ हुनेहशांशतः सर्पियंवान्मांसान्मृगच्युतान् ॥३९॥ स्तम्भनं जायते क्षिप्रं वादिकाविजनाम्भ साम् ॥ अयुतं प्रजपेहेवि वटे रुड़ाक्षमालया ॥ ४० ॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्माक्षपङ्कजैः ॥ आरग्वधैः स्वधामुलैमीहनं जायते क्षणात् ॥ ४३ ॥ देवानां दानवानां च का कथाऽरूपियां नृणाम् ॥ अयुतं प्रजपेन्यूलं वने साधकसत्तमः ॥ ४२ ॥ वेतसीमूलगो वाऽिष हुनेत्तत्र दशांशतः ॥ घृतपायसशम्बूकान् रिषुर्मृत्युमुखं ब्रजेत् ॥४३॥ अयुतं प्रजपेदात्रौ शून्यागारे कुलेश्वारे ॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतन्योषिर्जारकैः ॥ ४४ ॥ किपनिजिरिप प्रांतर्भवेदाकर्षणं स्त्रियाम् ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं चत्वरे त्वरितं हुनेत् ॥४५॥ आज्या बजेक्षुरसाखण्डरक्तपुष्पाणि पार्वति ॥ शकोऽपि वशतामेति किं पुनः क्षुद्वभूमिपः ॥ ४६ ॥ अयुतं प्रजपेनमूलं साधकोऽश्वत्थमूलके ॥ हुनेदाज्यं दशांशेन केशान् स्त्रीणां त्वचं गणाः ॥ ४७ ॥ रिपुमुच्चाटयेच्छीष्रं यदि शकसमो भवेत् ॥ अयुतं प्रजपेन्मूलं सुरहुमतिले हुनेत् ॥ ४८॥ चृताण्डकुक्कुटाङ्गानि नानापुष्पाणि पृच्छकः ॥ रोगोपद्रवकालस्य सद्यः शान्तिभीविष्यति ॥ ४९॥ अयुतं प्रजपे

हुमा. हुमा.

नमूळं लीलोपवनमण्डले ॥ होमो दशांशतः कार्यो घृतमीनाजमस्तकैः ॥५०॥ पादैरष्टभिरीशानि सद्यः प्रष्टिःप्रजायते ॥ इत्येष पटलो दिन्यो मन्त्रसर्वस्वरूपवान् ॥५१॥ दुर्गारहस्यभूतोऽपि गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥ ५२ ॥ इति श्री०वृ०घ०स्कं०उपा०स्त० श्रीदुर्गीपा० ध्याये देवीरहस्यतन्त्रोक्तश्रीदुर्गापटलनिरूपणं नाम तृतीयं प्रकरणम् ॥३॥ अथ श्रीदुर्गापद्धतिः ॥ उक्तं च तत्रैव सप्तचत्वारिंशत्तमे पुरले ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ शृणु पार्वित वक्ष्यामि पद्धति गद्यरूपिणीम् ॥ यस्याः श्रवणमात्रेण कोटियज्ञफलं लभेत् ॥ ३ ॥ ब्राह्म मुहुर्ते उत्थाय बद्धपद्मासनः स्वशिरःस्थसहस्राराधोम्रुखकमलकर्णिकान्तर्गतं निजगुरुं श्वेतवर्णे श्वेतालङ्कारालंकृतं द्विभुजं स्वशक्तया श्वेताम्बरभूषितया वामेऽङ्गे सहितं ध्यात्वा मानसैरुपचारैः संपूज्य दंडवत्प्रणमेत् ॥ अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ॥ तत्पदं दर्शितं येन तस्मे श्रीगुरवे नमः ॥ तदाज्ञां गृहीत्वा बहिरागत्य मलमूत्रादि संत्यज्य वर्णोक्तं शौचं कृत्वा नद्यादौ गत्वा सुकूर्चे द्वादशाङ्गुलम् ॥ ॐ क्कीं कामदेवाय सर्वजनमनोहराय नम इति दन्तान्विशोध्य चाकिकबीजेन गण्डूषषट्कं विधाय प्रणवेन मुखं त्रिः श्रोक्ष्य ॥ ॐ ह्रीं मणिधरि विज्ञिणि शिखापरिसरे रक्ष रक्ष हुं फट्ट स्वाहेति शिखां बर्ध्वा तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन प्राणा यामं विधाय म्लापकर्षणं स्नानं कुर्यात् ॥ ततो मूलेन मृदमानीय जलं प्रोक्षयेत् ॥ मन्त्रमृदा सूर्यमंडलं विचित्य गङ्गेत्यङ्कुशसुद्रया तीर्थमावाह्य जले यन्त्रं विभाव्य ॥ देवेशि भिक्तसुलभे परिवारसमन्विते ॥ यावत्त्वां पूजियष्यामि तावदेवि इहावह ॥ इति सनीलकंठं दुर्गामावाह्य तत्र षडङ्गं विधाय देवीं सशिवां ध्यात्वा मूलं यथाशक्ति जिपत्वा त्रिरुन्मज्जेत् ॥ तत्र कुम्मसुद्रां बद्ध्वा स्वसूर्धि देवदेग्यौ जलेन स्नापयित्वा ॥ॐ ह्रां हीं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशाशिक्तसिहताय एष तेऽघों नमः ॥ इति त्रिर्दत्त्वा वासोऽन्यत्परिधाय तत्त्व त्रयेणाचम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा पूर्वसंध्यां कृत्वा षडङ्गं कृत्वा चुलुकेन जलमादाय तत्त्वसुद्रयाऽऽच्छाद्य हं यं वं रं लं इति पञ्चभूत मन्त्रेणाभिमन्त्रय त्रिर्मूलमुच्चरंस्तद्गलितोदकिबन्दुभिः सप्तधा स्वशिरोऽभ्युक्ष्य सन्यहस्ते शेषं जलं धृत्वा इडयाऽन्तर्नीत्वा देहान्तः पापं प्रश्लाल्य पिङ्गलया विरेच्य पुरःकल्पितवज्रशिलायां वामे फिडिति निक्षिपेत् ॥ इत्यघमर्षणं विधाय पूर्ववदाचम्य

हु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥ ८॥ यन्त्रं ध्यात्वा मूलं यथाशिक जिपत्वा ॥ मूलम् ॥ सवाहने सायुधे सपिरच्छदे नीलकण्ठसहिते मातर्दुर्गे तृप्यतां इत्यष्टवारं संतप्यं नीलकण्ठं त्रिः संतप्यं एकैकाञ्जलिना परिवारदेवताः संतप्यं देवदेव्यो हृदि ध्यात्वा जले चतुरस्रं विधाय तत्रेशानादिकमेण गुरून् संतप्यं गायत्रीं जपेत् ॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गाये विद्यहे अष्टाक्षराये धीमिह ॥ तन्नश्रण्डी प्रचोदयात् ॥ इति यथाशिक जिपत्वा गायज्या देवदेव्योर्धत्रयं दवत्त्वा जपं समर्प्य यागमण्डपमागच्छेत् ॥ इति संध्याविधिः ॥ ततो गृहमागत्य पादी प्रश्लाह्य द्वार देवीः पूजयेत् ॥ ॐ गां गूं गणेशाय नमः पूर्वे ॥ ॐ क्षां ह्रीं बहुकाय नमः दक्षिणे ॥ ॐ क्षां क्षे क्षेत्रपालाय नमः पश्चिमे ॥ ॐ यां यूं योगिनीगणेश्यो नमः उत्तरे ॥ ॐ गां गङ्गाये नमः देहल्याम् ॥ ॐ यां यमुनाये नमः उध्वें ॥ ॐ सं सरस्वत्ये नमः मध्ये॥ गृहान्तः प्रविश्य आसनं शोधयेत ॥ ॐ आं आसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूमीं योगः ॐ प्रीं पृथिन्ये नमः ॥ महि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां लोके ॐ आं आधारशक्तये नमः ॥ मूलप्रकृत्ये नमः ॥ अं अनन्ताय नमः ॥ पद्माय नमः ॥ पद्मनालाय नमः ॥ तत्रोपविश्य ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता द्विव संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ इति पठित्वा तालत्रयेण वामपार्षणघात त्रयेण नाराचमुद्रया च दिव्यान् भौमानान्तरिक्षान्विष्ठानुत्सार्थ छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा गुरुं प्रणमेत् कारमितिग्रुह्मयो नमः ॥ प्रमग्रह्मयो नमः ॥ प्रात्प्रग्रह्मयो नमः॥ प्रमेष्टिग्रह्मयो नमः॥इति गन्धाक्षतैः स्विश्ररस्यभ्यच्ये न्यासपूर्वे संकर्षं कुर्यात् ॥ अस्य श्रीदुर्गापूजामन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः अनुष्ट्ष छन्दः श्रीदुर्गा देवता दुं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं नम इति दिग्बन्धः ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गापूजायां विनियोगः ॥ अथ न्यासः ॥ महेश्वरऋषये नमः शिरसि ॥ अनुष्टुपछन्दसे नमो सुखे ॥ हुर्गादेवताये नमो हिद्दि ॥ हुंबीजाय नमो नामौ ॥ हींशक्तये नमो ग्रह्मो ॥ ॐ कीलकाय नमः पादयोः ॥ नमो दिग्वंघ इति सर्वाङ्गे ॥ ॐ हाँ अङ्कष्टाभ्यां नमः ॥ ॐ हीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रं सध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ हीं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ हीं

उपा.स्त. १ दुर्गा. अ० १२८

कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं षडङ्गन्यासः ॥ अथ मूलन्यासः ॥ ॐ नमः शिरिस ॥ ह्रीं नमो मुखे ॥ दुं नमो वक्षसि ॥ गीं नमो नाभौ ॥ यैं नमः पृष्ठे ॥ नं नमो जान्वोः ॥ मः नमः पाद्योः ॥ इति त्रिव्यीपयेत् ॥ ॐ आत्मतत्त्वाय नमः शिरसि ॥ ॐ ह्वीं विद्यातत्त्वाय नमो मुखे ॥ ॐ दुं शिवतत्त्वाय नमो हृदये ॥ ॐ गुरुतत्त्वाय नमो नाभौ॥ हीं शक्तितत्त्वाय नमः जङ्घयोः ॥ ॐ दुं शिवशक्तितत्त्वाय नमः पादयोः ॥ ॐ अं आं कं हीं उं ऊं चं छं जं झं जं ऋं ऋं शिरसे स्वाहा ॥ दुं ऌं टं ठं दं ढं णं ॡं शिखाये वषट् ॥ हुम्॥ यें ओं पं फं बं भं मं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ नमः अं यं रं लं वं शं पं सं हं करन्यासः ॥ इति शुद्धमातृकान्यासः ॥ अथ मूलमातृकान्यासः ॥ अं नमः शिरित ॥ आं नमो मुखवृत्ते ॥ इं नमो दक्षनेत्रे ॥ ईं नम वामनेत्रे ॥ इं नमो दक्षकर्णे ॥ ऊ नमो वामे ॥ ऋं नमो दक्षगण्डे ॥ ऋं नमो वामे ॥ ऌं नमो दक्षनासापुटे ॥ एं नम अध्वीष्ठे ॥ ऐं नमोऽधरोष्ठे ॥ ओं नम अध्वेद्नतपङ्कतौ ॥ औं नमः अधोदन्तपङ्कतौ ॥ अं नमः शिरसि अः नमो मुखे ॥ कं नमो दक्षबाहुमूले ॥ खं नमः कर्पूरे 🗓 गं नमो मणिबन्धे ॥ घं नमोऽङ्गुलिमूले ॥ ङं नमः अङ्गुल्यत्रे ॥ चं नमो वामबाहुमूले ॥ छं नमः कूर्परे ॥ जं नमो मणिबन्धे ॥ झं नमोऽङ्गुलिमूले ॥ ञं नमोऽङ्गुल्यग्रे ॥ टं नमः दुश्रपादमूले ॥ ठं नमो जानुनि ॥ डं नमो गुरूफे ॥ ढं नमोऽङ्गुलिमूले ॥ णं नमोऽङ्गुरूयमे ॥ तं नमो वामपादमूले ॥ थं नमो जानुनि ॥ दं नमो गुरूफे॥ धं नमोऽङ्गुलिमूले॥ नं नमोऽङ्गुल्यमे ॥ पं नमो दक्षपार्श्वे॥ फं नमो वामपार्श्वे॥ बं नमः पृष्ठे॥ भं नमो नाभौ ॥ मं नमो जठरे ॥ यं नमो हिद् ॥ रं नमो दक्षांसे ॥ लं नमः ककुदि ॥ वं नमो वमांसे ॥ शं नमो हदादिदक्षहस्तात्रान्तम् ॥ षं नमो हदादि वामहस्तायान्तम् ॥ सं नमो हदादिदक्षपादायान्तम् ॥ हं नमो हदादिवामपादायान्तम् ॥ ळं नमः पादादिशिरःपर्यन्तम् ॥ क्षं नमः शिरसः पादपर्यन्तम् ॥ इति त्रिन्यीपयेत् ॥ एवं विधाय पूर्ववत्षडङ्गं कृत्वा प्रणवेन प्राणायामत्रयं विधाय पू॰ १६

षु.ज्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥ ९॥ कु॰ ६४ रे॰ ३२ ॥ ॐ आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ इत्याचम्य प्राणायामयोगेन भूतशुद्धि कुर्यात् ॥ ॐ हुं आकुञ्चनेन सुषुम्नावरमेना कुण्डलिनीं ब्रह्मपथान्तर्नीत्वा परमिशवेन सह संयोज्य तदुद्धतामृतधारया स्वातमानं कुलगुरूंश्च संतर्प्य पुनस्तेनैव मार्गेण वायुवीजेन षोडशघा जप्तेन वामकुक्षिगतं पापपुरुषं ॥ शोषयेत् रमिति वह्निबीजेन चतुःषष्टिवारजप्तेन दाहयेत् ॥ विमिति वर्षण बीजेन प्लावयेत् द्वात्रिंशद्वारजप्तेन ॥ लिमतीन्द्रबीजेन षोडशघा जप्तेन गलच्चन्द्रामृतवृष्ट्या स्वात्मानं दिव्यदेहं इति भूत्र सुद्धि कृत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ॐ ह्रीं हुं आं क्रों सोऽहं हंसः मम प्राणाः मम जीवः मम मनस्त्वक्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाद्राणप्राणा इहैवागत्य चिरं सुखं तिष्टन्तु स्वाहेति प्राणान्समप्य पडङ्गं विधायाचम्य देवीं ध्यायत ॥ भूगोहनागदळवृत्तरसाररारविन्दुस्थसनमहिषपीठगतां भवानीम् ॥ दूर्वादळात्रसदृशच्छविमष्टवाहुं दुर्गा भजे जाम् ॥ इति ध्यात्वा मूलाङ्गन्यासं विधाय श्रीचकं चतुर्द्वारं त्रिवृत्तमष्टदलं वृत्तं षडसं त्रिकोणं विन्दु विलिख्य पीठपूजां कुर्यात ॥ ॐ ह्रीं मण्डूकाय नमः २ कालाग्निरुद्वाय नमः २ मूलप्रकृत्यै नमः २ आधारशक्त्यै नमः २ कूमीय नमः २ अनन्ताय नमः २ वराहाय नमः २ पृथिव्ये नमः २ इत्युपि संपूज्य सुघार्णवाय नमः २ मध्ये नवरत्निराजित नवरत्नखण्डमयद्वीपाय नमः २ पद्मरागखंडाय नमः २ स्वर्णागरये नमः २ नन्दनोद्यानाय नमः २ कल्पवनाय नमः पद्मवनाय नमः २ विचित्ररत्नखित्रभूमिकायै नमः २ चिन्तामणिमंडपाय नमः २ नवरत्नखितरत्नमयवेदिकायै नमः २ रत्न सिंहासनाय नमः २ तन्मध्ये सहस्रारपद्माय नमः २ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २ विकृतिमयकेसरेभ्योनमः २ तन्मध्ये अष्ट्वीजभूषित कर्णिकायै नमः २ तत्पार्थे धर्माय नमः २ ज्ञानवैराग्यैश्वर्यभ्योनमः २ वामे अधर्माज्ञानवैराग्यानैश्वर्यभ्योनमः २ मध्ये सं सत्त्वाय नमः २ रं रजसे नमः २ तं तमसे नमः २॥मूलं मातृकाश्चोज्ञार्य श्रीयोगपीठाय नमः २ इत्यभ्यच्यं पात्रार्चनं कुर्यात् ॥ तत्रस्ववामेवृत्तत्रिकोण

डपा.स्त. दुर्गा. अ० १२८

चतुरस्रं मण्डलं विधाय मूलेनाभ्यच्यं मूलं दुर्गासामान्याघीय नमः ॥ तन्मण्डलं षडङ्गेनाभ्यच्यं तत्राह्मक्षालितं शांखं संस्थाप्य ॥ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नम इति विलोममातृकया सपूर्ण्य । सौः सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः॥ इत्यभ्यच्यं मूले नाष्ट्वारं मन्त्रितं कृत्वा ॥ गं गङ्गे चेति तीर्थमावाद्य इति सामान्यार्घ्यविधिः ॥ सामान्यर्घ्यस्य वामे त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतु रस्रं मण्डलं कृत्वा तन्मंडलं षडंगेनाभ्यच्यं मूलमुज्ञार्थ श्रीदुर्गाकलशमंडलाय नमः ॥ ततो मूलेनाभ्यच्यं तत्रास्रक्षालितां त्रिपादिकां संस्थाप्य रं विह्नमंडलाय दशकलात्मने नमः इति संपूज्य तत्र कलशं संस्थाप्य ॥ अं अर्कमंडलाय द्वादशकला त्मने नमः ॥ तत्रानामिकाङ्गष्टकरामृतधारापातेन विलोममातृकया कलश्मापूर्य ॥ सौः सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ इत्यभ्यच्ये ॐ ह्रीं दां दीं दूं दें दों दः दुं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्नावय २ क्रुक्रशापं मोचय २ ॐ ह्रीं दुं सुरादेव्यै वीषट् ॥ इति सप्तधाऽभिमन्त्रय ॥ ॐ दुं ह्रीं दूं इसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वोषट् ॥ ॐ ह्रीं दुं आनन्दभैरवसुधादेवीपादुकाभयो नमः ॥ इति सपूज्य घेनुयोनिमत्स्यमुद्धाः प्रदर्श्य ॥ॐ सूर्यमंडलसंभूते वर्षणालयसंभवे ॥ अमाबीजमये देवि शुक्रशापादिमुच्यताम् ॥ एकमेव परं ब्रह्म स्थूलं सुक्ष्ममयं ध्रवम् ॥ कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम् ॥ पावमानः परानन्दः पावमानः परो रसः ॥ पावमानं परं ज्ञानं तेन त्वां पावयाम्यहम् ॥ वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि ॥ तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु ॥ कृष्णशापविनिर्भुक्ता त्वं मुक्ता ब्रह्मशापतः ॥ विमुक्ता रुद्रशापेन पवित्रा भव साम्प्रतम् ॥ इति संपूज्य धेनुयोनिमत्स्यमुद्राः प्रदर्श्य गरुडमुद्रयाऽऽच्छादयेदिति द्रव्यशुद्धिः ॥ ॐ ह्रीं दुं कृतावभारो हरिणा कलिना पीडितं जगत् ॥ बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च ॥ श्रीदुर्गापारितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवत्त्रधुः ॥ इति मुद्दात्रयं प्रदर्श्य मीनशुद्धिः ॥ ॐ ह्रों दुं छागलादिगवान्तादिकृतरूपाय वै नमः ॥ बरुयर्थ देवदे व्योश्च पिवत्रीभव साम्प्रतम् ॥ मूलं त्रिजीपित्वा मुद्रात्रयं दर्शयित्वा मांसशुद्धिः ॥ ॐ ह्रों दुं दुर्गार्चनकाले तु यानि यानीइ साम्प्रतम् ॥ वस्तूनि सौरमीयाणि पवित्राणीह साम्प्रतम् ॥ इति मूलं त्रिजीपेन्सुद्रात्रयं दर्शयेदिति सर्वशुद्धिः ।

बृ.ज्ज्यो.णं. धर्मस्कंध ८ ॥१०॥

तत्र मूलेनानन्दभैरवाङ्कोपविष्टां नीलकंठकेशीं ध्यात्वा बाह्यश्रीचक्रमचेयेत् ॥ तत्र मूलेन पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपकीचमनीयनैवेद्य गन्धपुष्पदीपच्छत्रमुक्तमालादीन्निवेद्य गंडूषत्रयं निवेद्य मूलषडंगं विधाय चतुरस्र पूजयेत् ॥ ॐ हीं दुं सर्वसिद्धिपदाय श्रीचकाय नम इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा ॥ ॐ हीं दुं गं गणेशाय नमः पूर्वे ३॥ॐ हीं कुमाराय नमः दक्षिणे ३॥ प्रीं पुष्पदन्ताय नमः पश्चिमे ३॥ वे विकर्तनाय नमः उत्तरे ३ ॥ प्रथमावरणम् ॥ ॐ ह्री दुं असितांगभैरवयुतन्नाह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ३॥ ॥ चंडभैरवयुतचामुण्डाश्री॰ ३॥ क्रोधेशभैरवयुतापराजिताश्री॰ ३ ॥ उन्मत्तभैरवयुतमाहेश्वरी श्री॰३॥ कपालभैरवयुतकोमारीश्री॰ ३॥ भीषणभैरवयुतवाराहीश्री॰ ३॥ संहारभैरवयुतनारसिंहीश्री॰ ३ इति वामावर्तन गन्धाक्षत पुष्पैरभ्यच्यं द्वितीयावरणम् ॥ ॐ ह्रीं हुं सर्वाशापूरकाय श्रीचकाय नमः ॥ इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा षटकोणं पूजयेत् ३ ॥ शैलपुत्री श्री०३॥ ब्रह्मचारिणीश्री०३॥ चंडघण्टश्री०३॥ कूष्मांडाश्री०३॥ स्कन्दमाताश्री०॥ कात्यायनीश्री०३॥ इति वामावर्तेन संपूज्य तृतीयावरणम् ॥ श्रीचके पुष्पाञ्जलि दत्वा ३॥ कालरात्रिशी० ३॥ महागौरीश्री० ३॥ देवदृतीश्री०३॥ इत्यये ईशानाययतोऽर्चयेत्॥ चतुर्थावरणम् ॥ ॐ ह्रीं दुं अष्टिसिद्धिदाय श्रीचकाय नमः ॥ मूलं नीलकंठश्रीदुर्गाश्री०॥इति सप्तघाऽभ्यच्यं बिन्दौ पञ्चमावरणम् ॥ मुलम् ॥ अम्बिकाश्री॰ मुलम् ३॥ अष्टाक्षराश्री॰ ३॥ यूलम् ३॥ अष्टमुजाश्री॰ ३॥ मुलं नीलकंठश्री॰ मुलं ॥ जगदम्बिकाश्री॰ इति षष्ठावरणम् ॥ विन्दौ शङ्खाय नमः ॥ पद्माय नमः ॥ खङ्काय नमः ॥ बाणेभ्यो नमः ॥ धनुषे नमः ॥ खेटकाय नमः ॥ श्रूलायनमः श्रीनीलकंठश्रीदुर्गाश्रीं॰ यूलेन गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनीयताम्बूलच्छत्रचामरारार्तिकादीन् समर्प्य इति सप्तमावरणम् ॥ तत्रमूळेन बिंछ निवेद्य सौः सर्वविन्नकृद्भ्यो भूतेभ्यः स्वाहा यां यूं योगिनीगणेभ्यो नमः ॥ ॐ वां वीं देवीपुत्र बटुकनाथ किपलजटाभारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख एहि एहि इसं बल्लि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ क्षां क्षे क्षेत्रपालाय नमः॥ इति बलिं दत्त्वा संकल्प्य पूर्व न्यासं विधाय देव्यये मालामादाय यथाशक्ति जपं कृत्वा समर्प्य गुह्मातिगुह्मेति पिटत्वा ततः

उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ॰ ११८

कवचसहस्रनामस्तवपाठं कृत्वा तद्पि समर्प्य ॥ प्रातःप्रभृति सायान्तं सायादिप्रातरन्ततः ॥ यत्करोमि जगन्मातस्तद्स्तु तव पूजनम् ॥ इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा योनिमुद्रया प्रणम्य संहारमुद्रया देवदेव्यौ हद्यानीय स्वयमपि शिवरूपो भूत्वा पात्रापेणं विधाय मुखं विहरेदिति दुर्गानित्यपूजाविधिः ॥ इति श्रीनित्यपूजायाः पद्धति गुद्धगोपिताम् ॥ श्रीदुर्गासारसंभूतां गोपयेत्साधकेश्वरि ॥ इति श्री • बृ • घ • उपा • श्रीदु • देवीरहस्यतन्त्रोक्तश्रीदुर्गापद्धतिनिरूपणं नाम चतुर्थं प्रकरणम् ॥ २ ॥ अथ श्रीदुर्गाकवच्य ॥ डकं च तत्रैवाष्ट्रचत्वारिंशत्पटले ॥ श्रीभैरव डवाच ॥ अधुना देवि वक्ष्येऽहं कवचं मन्त्रगर्भकम् ॥ दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञ कम् ॥ १ ॥ परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनम् ॥ योगिप्रियं योगगम्यं देवानामिप दुर्लभम् ॥ २ ॥ विना दानेन मन्त्रस्य सिद्धि र्देवि कलौ भवेत् ॥ धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः ॥ ३ ॥ भैरवो भैरवेशानि विष्णुर्नारायणो बली ॥ ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विमध्वंसी गजाननः ॥ ४ ॥ सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः प्रिये ॥ सूर्यस्तमोपहो लोके चन्द्रोऽमृतनिधिस्तथा ॥ ५ ॥ बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात् ॥ मत्योंऽप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः ॥ ६ ॥ कवचस्यास्य देवेशि ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः ॥ छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताऽष्टाक्षरा स्मृता ॥ ७ ॥ चिक्रबीजं च बीजं स्यान्माया शिक्तिरिता ॥ ८ ॥ ॐ मे पातु शिरो दुर्गा हीं मे पातु ललाटकम् ॥ दुं नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु चकी पातु श्रुती मम ॥ ९ ॥ मठं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्त कुण्डला ॥ वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिष्दिनी ॥ १०॥ लवणं पातु मे चोष्ठी चामुण्डा चण्डघातिनी ॥ भेकीबीजं सदा पातु दन्तानमे रक्तदन्तिका ॥११॥ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठं नीलकण्ठाङ्कवासिनी ॥ ॐ ऍ क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी ॥१२॥ ॐ सौः क्लों मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी ॥ एँ श्रीं हीं पातु में हस्तौ शिवाशतनिवादिनी ॥ १३ ॥ सौः एँ ह्रीं पातु में वक्षो देवता विनध्यवासिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षि मम मातङ्गिनी परा ॥ १४ ॥ श्रीं ह्रीं ऐं पातु मे पाश्वीं हिमाचलनिवा सिनी ॥ ॐ स्त्रीं हूं ऐ पातु पृष्टं मम दुर्गतिनाशिनी॥ १५॥ ॐ क्रीं हूं पातु मे नाभि देवी नारायणी सदा ॥ ॐ ऐ क्लीं सौः सदा

बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥११॥

पातु किंद कात्यायनी मम ॥१६॥ ॐ हीं श्रीं पातु शिश्रं मे देवी श्रीवगलामुखी ॥ एं सोः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता ॥१०॥ ॐ हीं एं श्रीं हसौः पायादृरू मम मनोन्मना ॥ ॐ नूं सः सौः पातु जानु जगदीश्वरपूजिता ॥१८॥ ॐ एं क्लीं पातु में जिल्लों में पातु जलें में पातु जलें में पातु जलें पातु में पातु पाविता ॥ ॐ हीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्कों मम गणेश्वरी ॥ १९ ॥ ॐ हीं हुं पातु में पादी पाविता विद्याक्षरी ॥ पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नो च वैष्णवी तथा ॥ २० ॥ दक्षिणे चिष्डका पातु नैर्ऋते नारसिंहिका ॥ पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये माऽप राजिता ॥ २० ॥ उत्तरे पातु कौमारी चेशान्यां शांभवी तथा ॥ उध्वे दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा ॥ २२ ॥ प्रभाते विपुरा पातु निशीथे छित्रमस्तका ॥ निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्दकालिका ॥ २३ ॥ अम्रेरम्वा च मां पातु जलान्भां जग दम्बिका ॥ वायोर्मा पातु वाग्देवी वनाद्वनजलोचना ॥ २४ ॥ सिंहातिसहासना पातु सर्पात्सर्पान्तकासना ॥ रोगान्मां राजमातङ्गी भूताद्भतेशवद्धभा॥ २५ ॥ यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका ॥ भूतप्रेतिपशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा ॥ २६ ॥ सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा ॥ इत्येवं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम् ॥ २७ ॥ मन्त्रगर्भे महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥ वित्तदं पुण्यदं पुण्यं वर्म सिद्धिप्रदं कलौ ॥ २८ ॥ वर्म सिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम् ॥ श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम् ॥ ॥ २९ ॥ महापातककोटिघ्रं मानदं च यशस्करम् ॥ अश्वमेधसहस्रस्य फलदं परमार्थदम् ॥ ३० ॥ अत्यन्तगोप्यं देवेशि मन्त्रसिद्धिदम् ॥ पठनात्सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे ॥ ३१ ॥ रवी भूजें लिखेद्धीमान् कृत्वा कर्माहिकं प्रिये ॥ श्रीचकाग्रेऽष्ट गन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये ॥ ३२ ॥ लिखित्वा धारयेद्वाहो गुटिकां पुण्यवर्धिनीस् ॥ किं किं न साधयेछोके गुटिका रात् ॥ ३३ ॥ ग्रुटिकां घारयेन्मुर्धि राजानं वशमानयेत् ॥ धनार्थी घारयेत् कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले ॥ ३४ ॥ तामेवं घारयेन्मुर्धि लिखित्वा भूजीपत्रके ॥ श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥३५॥ सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य घारयेद्रक्तरज्जुना ॥ ग्रुटिका कामदा देवि देवानामिष दुर्लभा ॥ ३६ ॥ कवचस्यास्य ग्रुटिकां धृत्वा सुक्तिपदायिनीम् ॥ कवचस्यास्य देविश वर्णितुं नैव शक्यते ॥ ३७ ॥

उषा-स्त हुग्

महिमानं महादेवि जिह्नाकोटिशतैरिप ॥ अदातव्यमिदं वर्म मन्त्रगर्भ रहस्यकम् ॥ ३८ ॥ अवकव्यं महापुण्यं सर्व सारस्वतप्रदम् ॥ अदीक्षिताय नो द्यात्कुचैलाय दुरात्मने ॥ ३९ ॥ अन्यशिष्टाय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम् ॥ दीक्षिताय कुळीनाय गुरुभिक्तरताय च ॥ ४०॥ शान्ताय कुळसकाय शान्ताय कुळवासिने ॥ इदं वर्म शिवे द्यात्कुळभागी भवेत्ररः ॥ ४९॥ इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम् ॥ गुहचं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ४२ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते वृ० धर्मस्कन्धे उासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनाध्याये देवीरहस्यतन्त्रोक्तश्रीदुर्गाकवचनिरूपणं नाम पञ्चमं प्रकरणम् ॥६॥ अथ श्रीदुर्गासहस्र नामस्तोत्रम् ॥ उक्तंच तत्रैवैकोनपञ्चाशत्पटले ॥ भैरव उवाच ॥ अधुना शृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमी श्वरि ॥ रहस्यं सर्व दिवानां दुर्लभं जन्मिनामिप ॥ १ ॥ श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टं सारं त्रैलोक्यकारणम् ॥ मन्त्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम् ॥ २ ॥ यत्पिठित्वा शिवे धृत्वा देवीनामसहस्रकम् ॥ अश्वमेषायुतं पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम् ॥ ३ ॥ श्रेयस्करं विश्ववन्दं सर्वदेवनम स्कृतम्॥गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात्सिद्धिदायकम् ॥४॥ अस्य श्रीदुर्गानामसहस्रस्य श्रीमहेश्वर ऋषिः॥ अनुष्टुप्छन्दः॥ श्रीदुर्गा देवता ॥ दुंबीजम् ॥ ह्रींशक्तिः ॥ ॐ कीलकम् ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्रनामपाठे विनियोगः ॥ ॐ ह्रीं तुं दुं जगन्माता भद्रिका भद्रकालिका ॥ प्रचंडा चंडिका चंडी चंडमुंडनिषूद्नी ॥ ५ ॥ अनुसूया तुटिस्तारा कृत्तिका कुन्जिकालया ॥ प्रलयस्थितिसंभूति विंभूतिर्भयनाशिनी ॥ ६ ॥ महामाया महाविद्या मूळविद्या चिदीश्वरी ॥ महालसा मदोत्तुङ्गा मदिरा मदनिष्रया ॥७॥ अलि न्यालप्रसः पुण्या पवित्रा एरमेश्वरी॥ आदिदेवी कला कान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी॥ ८॥ मनोन्मना महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती ॥ सरित्कादम्बरी गोघा ग्रह्मकाली गणेश्वरी ॥ ९ ॥ गणाम्बिका जया तापी तपना तापहारिणी ॥ तपोमयी दुरालम्बा दुष्ट्रग्रहनिवारिणी ॥ १० ॥ दुःखन्नी सुखदा माध्वी परमामृतसूः सुरा ॥ सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसन्निमा ॥ ११ ॥ समस्त संपदम्भोजिवलया कलिकालया ॥ विद्येश्वरी विश्वमयी विराट् छन्दोगतिर्मतिः ॥ १२ ॥ धृतिश्च दाम्भिकी दोला लोपामुद्रा

बु.ज्न्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥१२॥

पटीयसी ॥ गरिष्ठाऽरिष्टहा दुष्टा कृशा काशी कुलाऽकुला ॥ १३ ॥ अकुलस्था पदन्यासा न्यासह्रपा विह्रपिणी ॥ विह्रपाक्षा कोटराक्षी कुलकान्ताऽपराजिता ॥ १४ ॥ अजिता कुलिका लम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी ॥ त्रितयी वेदविन्यासा संन्यासा सुमति भैया ॥ १५ ॥ अभया स्वर्धुखा देवी महौषधिरलंबुसा ॥ चपला चिन्द्रका चण्डा चण्डमुण्डनिषूदनी ॥ १६ ॥ चपलाक्षी मदा विष्टा मदिराह्मणलोचना ॥ पुरित्रिपुरसूरास्ता रमा रामा मनोरमा॥१७॥ सन्ध्या सन्ध्याश्रशीला च शाला श्यामपयोधरा॥ शशाङ्क मुकुटा श्यामा सुरा सुन्दरलोचना ॥ १८॥ विषमाक्षी विशालाक्षी वशा वागी वरी शिला ॥ मनःशिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगे क्षणा ॥ १९॥ मृगारिवाहना साध्वी मानदा मत्तमाषिणी ॥ नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया॥२०॥ पुण्या पुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनित्रया ॥ चासुण्डा उम्रसुण्डा च महाचण्डतमा उमा ॥ २१ ॥ तपस्विनी प्रभा ज्योतस्ना महज्ज्योतिःस्वरूपिणी ॥ सुरूपा सद्गतिः साध्वी सद्सद्रपराजिता ॥ २२ ॥ सृष्टिः स्थितिः क्षेमकरी क्षामा क्षामोन्नतस्तनी ॥ क्षोणी क्षयकरी क्षीणा शवस्था शिववञ्चमा ॥ २३ ॥ दन्तुरा दाडिमप्रीतिर्दया दाम्भिकसूदिनी ॥ राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवञ्चमा ॥ २४ कबन्धा कन्द्रा कृत्या कृत्तिका कण्टकान्तका ॥ कलङ्करिहता काली कम्पा काश्मीरवस्त्रमा ॥ २५ ॥ काशी कीर्तिप्रदा काश्ची काश्मीरी कोकिलस्वना ॥ प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥ २६ ॥ रतिः स्तुतिस्तुरी तुर्या तोतुलाऽतलवासिनी ॥ तपः प्रिया शरच्छेष्ठा पञ्चप्रत्री यमस्वसा ॥ २७ ॥ यामी यमान्तका याम्या यमुना स्वर्नदी तिहत् ॥ नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥ २८॥ विगता विगतप्रश्ना कृशा कृषाऽसिधारिणी । वारी वारावरघरा वरदा वीरसूदिनी ॥ २९॥ नाकारा दीर्घसूत्रा दयावती ॥ दरी धनप्रिया धात्री धात्रीयछी महोदरी ॥ ३०॥ गणेश्वरी गणा काश्ची काश्चीकिङ्किणिघणिट का ॥ माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरेश्वरी ॥ ३१ ॥ पौरन्दरी शची सीता शीतातपस्वभावजा ॥ स्वाभाविकगुणा गण्या गाम्भीर्यग्रणभूषणा ॥ ३२ ॥ सृतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तसप्ततिरूपिणी ॥ तेजस्विनी सदानन्दा सभासन्तोषवर्धिनी ॥ ३३

उपा.स्त. १ दुर्गा. अ.० १२८

तर्पणाऽऽकर्षणा होता संकल्पा ग्रुभमन्त्रिका ॥ दर्भा द्रोणिकला शान्ता सिमधा सुरवेदिका ॥ ३४ ॥ धूब्राऽहुतिश्च रमतिश्चामीकर रुचिश्चिता ॥ दिव्याऽनलेश्वरी नीला कालानलसरस्वती ॥ ३५ ॥ अपर्णा सुफला यज्ञा समया निभया मया ॥ भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भास्करा विभा ॥ ३६ ॥ विभावरी नदी नन्द्या नन्द्यावर्तप्रवर्तिनी ॥ पृथ्वीघरा विषधरा विश्वगर्भा प्रव र्तिका ॥ ३७ ॥ विश्वमाया विश्वबाला विश्वंभरविलासिनी ॥ उरगेशा पद्मनागा पद्मनाभप्रसुः प्रजा ॥ ३८ ॥ तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्यतिः ॥ संपुटा शयना शय्या शासना शमनान्तका ॥ ३९ ॥ श्यामाकवर्णा शार्दूली शष्पनीतां यु वछमा ॥ स्तुत्या प्रणीता नियतिः कम्पना कम्पहारिणी ॥ ४० ॥ चम्पकामा धराचीनाऽदीना दीनजनिपया ॥ वसुंधरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी ॥ ४१ ॥ समुद्रा संगमा पूर्णा तरला तरुवासिनी ॥ पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥ ४२ । माधवी मधुपानस्था मन्दिरा मन्दुरा मृगी ॥ मुमूर्षा भरुषा रेवा रेवती रमणी रमा ॥ ४३ ॥ ऋदिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी ॥ अणुरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी ॥ ४४ ॥ गारुडी गगनालम्बा लम्बमानकचित्रया ॥ पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीतवञ्चभा ॥ ४५ ॥ बलाका जगदन्ता च जरा जयवरप्रदा ॥ प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रमा ॥ ४६ ॥ जिह्ना हस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा ॥ कीरी करालवपुषी शेसुषी मक्षिका मषी ॥ ४७ ॥ उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा शलक्ष्णा कामेश्वरी शिवा ॥ शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती ॥ ४८ ॥ तथ्या पथ्यकृती रथ्या रथस्था विततस्वरा ॥ महती रामिणी भागीं ज्यचिहासा हरीश्वरी ॥ ४९ ॥ हरिद्रत्नां ग्रुलिसता लक्ष्मीनायकसुन्दरी ॥ अम्बालिकाऽम्बा देवेशी अनघाऽग्निशिखा श्रुतिः ॥६०॥ अलसाऽल्पगतिश्चान्त्याऽनन्ताऽनन्तगुणाश्रया ॥ आद्या चादित्यसङ्काशा आदित्यकुलसुन्दरी ॥ ५१ ॥ आत्मरूपाऽघिशमनी आदिमायाऽऽदिदेवता ॥ इन्द्रस्य सूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना ॥ ५२ ॥ उमा उर्वी उरुभुजा उत्तङ्गा चोक्षवाहना ॥ उत्तङ्गा चोत्तमा ध्येया बद्धासा चोरूगर्विणी ॥ ५३ ॥ उद्मा उपा च गुर्वङ्गी उध्वीक्षी उध्वीमस्तका ॥ ऋदिऋंचा ऋवणैशी

बृ.क्चो.र्ण. हित्रीं च वार्तकी ॥ ५४ ॥ ऋदिजा चारुवस्ना च ऋणिवासा महालसा ॥ लकारा लकरा लीना लकारवरधारिणी ॥ ५५ ॥ एणाङ्क मुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला॥ एकारगतिरैश्वर्यदायिनी चेश्वरी गतः॥ ५६॥ ॐ कारबीजरूपा च औत्रिकी बीज धारिणी॥ अम्बिकाऽलम्पिका वाच अस्त्ररोद्वारहृपिणी॥ ५७॥ काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा॥ कन्था काञ्चीमण्डनमण्डिता ॥ ५८ ॥ कलङ्करहिता कूर्पा काञ्चनाभा करीरगा ॥ कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमा नसा ॥ ५९ ॥ कुलस्था कौलिनी कुल्झा कुरुकुङा कपालिली ॥ कपालकुलनिर्विण्णा क्रींकारा कञ्चलोचना ॥ ६० ॥ खञ्जनाक्षी खङ्गधरा खेटकायुधभूषणा ॥ खर्पराह्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥ ६१ ॥ खगायुधा खगगतिः खकाराक्षरभूषणा ॥ गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा ॥ ६२ ॥ गोघा गदाघरप्राज्या गगनेशी मही मला ॥ घुर्घुरा घटभूर्घ्का घुराणाभा घने श्वरी ॥ ६३ ॥ घनसारित्रया साम्या घवर्णरुतभूषणा ॥ चान्द्री चन्द्रस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डिनःस्वना ॥ ६४ ॥ स्वना देवी चश्चचामीकराङ्गदा ॥ छत्रिका छुरिका छुन्छा छत्रचामरभूषणा ॥ ६५ ॥ जीकारी जलजिह्ना च योगिनी ॥ जटान्टभग जातिजीतीपुष्पसमानना ॥ ६६ ॥ जलेश्वरी जगद्धचेया जानकी जननी जटा ॥ झञ्झा झरी झरत्कारी इरत्काञ्चीरकिंकिणी ॥ ६७ ॥ ज्ञिंटिका झम्पकुज्झम्पा झंपत्रासनिवारिणी ॥ अणुरूपा अकहस्ता अकाराक्षरसंमता ॥ ६८ ॥ टंकायुघा महातथ्या टंकारा करुणाटसी ॥ ठक्कुरा ठत्करा ठानी डिंडीरवसना डला ॥ ६९ ॥ ढंडानिलमयी ढंड़ा करा दसा॥ णान्ता नणी णीलायुधा णवर्णाक्षरभूषणा। ७० ॥ तक्षणी तुन्दिला तोद्। तामसी तामसिषया।। ताम्रानना ताम्रकरा ताम्राम्बरधरा तुला॥ ७१॥ तापत्रयहरा तापी तैलासका तिलोत्तमा॥ स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला स्थितिः स्थैर्यघरा स्थुला ॥ ७२ ॥ दन्तिनी दन्तुरा दावी देवकी देवनायिका ॥ दिमनी शिमनी दंडचा दंडहस्ता दुरानितः ॥ ७३ ॥ दुर्वारा दुर्गतिद्राक्षी द्राक्षा द्रविद्रवासिनी ॥ दूरस्था दुन्दुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी ॥ ७४॥ दुःखन्नी च हुगा द्रष्टा द्या दाम्भिक्यनाशिनी ॥

उपा.स्त. ३ दुर्गा.

धम्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवञ्चभा ॥ ७५ ॥ धनुर्धरा धनुर्वल्ली धनुष्कवरदायिनी ॥ धूमाली धूम्रवद्नाधूमश्रीधूम्रलोचना॥ ॥ ७६ ॥ निलनी नर्तकी नान्ता नङ्गा निलनलोचना ॥ निमला निगमाचारा निम्नगा नगजा निमिः ॥ ७७ ॥ नीलगी ना निरीहा च नीपोपवनवासिनी ॥ निरञ्जनजनी जन्या निद्रालुनीरवासिनी ॥ ७८ ॥ नटिनी नाट्यनिरता नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवस्थमा ॥ ७९ ॥ पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला ॥ परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोत्रा पुलो मजा ॥ ८० ॥ प्रुष्पिणी पुस्तककरा पट्टः पाटीरवाहना ॥ पापन्नी शम्पिनी पाली पली परमसुन्दरी ॥ ८१ ॥ पिशाची च पिशा चन्नी पानपात्रधरा पुटा ॥ पूर्णिमा पञ्चमी पौत्री पुरूरववरत्रदा ॥ ८२ ॥ पञ्चयज्ञा पञ्चशरी पञ्चाशतमनुत्रिया ॥ पञ्चाली पञ्चपुत्रा च पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥ ८३ ॥ फल्टिनी फलदात्री च फलहस्ता फणित्रिया ॥ फिरङ्गहा स्फीतमितः स्फीतिमनी स्फरा ॥ ८४ ॥ बलमाया बलस्तन्या बिछसेना बलाबला ॥ बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलविंनी ॥ ८५ ॥ बुद्धमाता बौद्ध मतिर्बद्धा बन्धनमोचिनी ॥ भगिनी भगमाला च भगलिङ्गाऽमृतस्रवा ॥ ८६ ॥ भीमेश्वरी च भीरुण्डा भगेशी भगमिर्षिणी ॥ भग लिङ्गस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी ॥ ८७॥ मत्ता मनोहरा मैना मैनाकजननी सुरी ॥ सुरली मानवी होत्री महस्विजन मोदिता ॥ ८८ ॥ मत्तमातङ्गगा माद्री मरालगतिरञ्चला ॥ यज्ञेश्वरीश्वरी यज्ञा यज्ञेदिष्रियाश्विता ॥ ८९ ॥ यशोवती यतिस्था च यतिस्था यतिवछभा ॥ यवनी यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया॥ ९०॥ यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्युपमूलिनी ॥ रिञ्जता राजपत्नी च राजसूयफलपदा ॥ ९१ ॥ रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी ॥ राज्ञी रात्रिचरेशानी रोगन्नी त्रिपुरेश्वरी॥५२॥ लिलता लितका लाप्या लोपा ललनलालसा ॥ लाटीरद्रुमवासा च पाटीरद्रुमवार्तिनी ॥ ९३॥ लङ्का लल्जटाजूटा लिङ्किता सुरसुन्दरी ॥ लोकेशवरदा लीया लयकत्री महालया ॥ ९४ ॥ वेदिर्विगमा वाणी च वेणा वेणुर्वनेश्वरी ॥ वन्दमाना ववर्णाढचा वाराही वीरमातृका ॥ ९५ ॥ शङ्किनी शङ्कवलया शङ्कायुधधरा शमा ॥ शशिमण्डलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी ॥ ९६ ॥

बु.क्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥१८॥

श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिल्येश्वरी ॥ सिन्धुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी ॥ ९७॥ सप्तमी सान्त्विकी सत्त्वा सूत्रस्थाऽसुरसृदिनी ॥ सुरेश्वरी संपदाद्या समस्ताचलचारिणी ॥ ९८ ॥ समदा संमतिः संमा सवना सवनेश्वरी ॥ इंसी हिरिप्रया हास्या हरिन्नेत्रा हराम्बिका ॥ ९९ ॥ हेषा हटीश्वरी हीरा फलिनी फलदायिनी ॥ हेहा हाहारवा हाला हालाहालहता श्राया ॥ १०० ॥ क्षेमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षोमाम्बरघरा क्षया ॥ क्षितिः क्षीरिप्रयाऽलक्ष्या क्षितिभृत्तनया क्षुघा ॥ १०१ ॥ क्षित्रिणी ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षबीजमिण्डता ॥ लक्षबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका ॥ १०२ ॥ दुर्गन्धनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गनाशिनी दुर्गा दुर्गातिनाशिनी ॐ ह्रीं दुंबीजमण्डिता ॥ १०३ ॥ इति नामसहस्रं तु मन्त्रगर्भ महाफलम् ॥ दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृ तम् ॥ १०४ ॥ सर्वमंत्रमयं दिन्यं देवदानवपूजितम् ॥ अयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम् ॥ १०५ ॥ यः पठेत्पाठयेद्वाऽपि शृणोति श्रावयेत्तथा ॥ स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः ॥ १०६ ॥ इह लोके सुखं श्रुक्ता परत्र त्रिदिवं व्रजेत ॥ दुर्गानाम सहस्रं तु मूलमन्त्रैकसाधनम् ॥ १०७ ॥ अर्धरात्रे पठेद्वीरो मधुरं भवसेवितम् ॥ त्रिवारं वर्मपूर्वे तु भवेद्वागीशसित्रमः ॥ १०८ ॥ यः पठेद्देवि मध्याह्न स्त्रीयुतो मुक्तकुन्तलः ॥ तस्य वैरिकुलं त्रस्येद्दर्शनादेव नश्यति ॥ १०९॥ दहनादिव देवेशि मिंडिजे ॥ यः पठेद्रेतसीमूले सायं पूजितभैरवः ॥ ११० ॥ तस्यास्यकुहराद्वाणी निःसरेद्रद्यपद्यभाकः ॥ यः पठेत्सततं देवि स्त्री रताकुला ॥ १११ ॥ स भवेद्वैरिविध्वंसी धनेन धनदोपमः ॥ वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः ॥ ११२ ॥ तेजसा सूर्यसङ्काशो यशसा सूर्यसित्रभः ॥ बलेन वायुतल्यो हि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः ॥ ११२ ॥ देवि कि बहुनोक्तेन स भवेद्भरवी पमः ॥ स्तम्भनाकर्षणोचाटवशीकरणकक्षमः ॥ १९८ ॥ रवौ भूजें लिखेदेवि निशीथे वाऽष्ट्रगन्धकैः ॥ सस्तन्यरेतो राजस्कैः साधको मंत्रसाधकः ॥ ११५ ॥ लिखित्वा वेष्टयेन्नाम सहस्रमणिमीश्वरि ॥ श्वेतवस्त्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥ ११६ ॥ सुवर्णरजताढचेश्च वेष्टयेत्पीतसूत्रकैः ॥ संपूज्य गुटिकां देवि शुभेऽह्नि साधकोत्तमः 11 999 11

उषा.स्त. ३ दुर्गाः

अ० १२८

बाहौ गुटिकां. कामदायिनीम् ॥ रणे रिपून्विक्षित्याञ्च कल्याणी गृहमाविशेत ॥ ११८ ॥ वन्ध्या वामभुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम् ॥ पुत्राँछभेन्महादेवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान् ॥ ११९॥ गुटिकैषा महादिन्या गोप्या कामफलप्रदा ॥ साधकैः सततं पूज्या साक्षाद्दुर्गास्वरूपिणी ॥ १२० ॥ योऽर्घयेत्साधको दुर्गा ग्रुटिकां धारयेत्प्रिये ॥ पठेद्वर्म शिवे मन्त्रं नाम साहि सिकं परम् ॥ १२१ ॥ अङ्गरतोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्येऽधुना शृणु ॥ वने राजकुले वाऽिप दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे ॥ १२२ ॥ ब्रह्यक्ष पिशाचादिभूतप्रेतभये तथा ॥ वीरे विगतभीदेवि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१२३॥ स्तम्भयेद्वायुसूर्यो च चन्द्रादीन्साधकोत्तमः ॥ मोहये त्रिजगत्सद्यः कान्ताश्राकर्षयेद् ध्रुवम् ॥ १२४ ॥ मारयेदखिलान् शत्रूनुचाटयेच वैरिणः ॥ वशयेद्देवताः सद्यः कि पुनर्मानवान् शिवे ॥ १२५ ॥ शमयेद्खिलात्रोगान्महोत्पातानुपद्रवान् ॥ कि कि न लभते वीरो दुर्गापश्चाङ्गपूजनात् ॥१२६॥ इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरि ॥ सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम् ॥ १२७॥ महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम् ॥ पठेत्संपूजयेदेव्या मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १२८ ॥ इदं सारं हि तन्त्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम् ॥ दुर्गानामसहस्रं तु तव भक्तया प्रका शितम्॥१२९॥अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसंकटे॥ अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात् ॥१३०॥ दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च ॥ शान्ताय भक्तियुक्ताय देयं नामसहस्रकम् ॥१३१॥ विना दानं न गृह्णीयात्र द्याद्दिशणां विना ॥ दत्त्वा गृहीत्वा ऽप्युभयोः सिद्धिहानिभवेद् ध्रुवम् ॥ १३२ ॥ इदं नामसहस्रं तु गुप्तं गोप्यतमं शिवे ॥ तव अक्तया मयाऽऽख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १३३ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृहज्योतिषार्णवे धर्मस्कन्धे उपासनास्तबके श्रीदुर्गोपासनाध्याये देवीरहस्यतन्त्रोक्तश्रीदुर्गा सहस्रनामस्तोत्रनिरूपणं नाम षष्ठं प्रकरणम् ॥ ६ ॥ अथ दुर्गास्तोत्रम् ॥ उक्तं च तत्रैव पञ्चाशत्तमे पटले ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ अधुना देवि वक्ष्यामि दुर्गास्तोत्रं मनोहरम् ॥ मूलमन्त्रमयं दिन्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ १॥ दुर्गार्तिशमनं पुण्यं साधकानां जयप्रदम् ॥ दुर्गाया अङ्गभृतं तु स्तोत्रराजं परात्परम् ॥ २ ॥ श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य ऋषिर्देवो महेश्वरः ॥ छन्दोऽनुष्टुब्देवता श्रीदुर्गाऽप्यष्टाक्षरा शिवे ॥३॥

ष्ट्र.क्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥१५॥

दुं बीजं च परा शक्तिर्नमः कीलकमीश्विरि ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थं दुर्गास्तोत्रपाठे विनियोगः ॥ ४ ॥ अथ ध्यानम् ॥ दूर्वानिभां त्रिन यनां विलसितकरीटां शङ्काञ्जखङ्गशरखेटकञ्चलचापान् ॥ संतर्जनीं च द्वितीं महिषासनस्थां दुर्गी नवारकुलपीठगतां अजेऽहम् ॥५॥ अ तारं हारं मन्त्रमालासुबीजं ध्यायेदन्तयों बलं बालकान्तः ॥ तस्य स्मारंस्मारमङ्घिद्वयीं द्वात्रम्भाऽऽयाति स्वर्गता कामवश्या ॥६॥ मायां जपेद्यस्तव मन्त्रमध्ये दुगें सदा दुर्गतिखेदखिन्नः ॥ भवेत्स भूमौ नृपमौलिमालामाणिक्यनिर्घृष्टपदारविन्दः ॥ ७ ॥ चाक्रिकं यदि जपेत्तवाम्बिके चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वारे ॥ साधको अवति चक्रवार्तनां नायको नयविलासकोविदः ॥ ८ ॥ चक्रिबीजमप्रंस्मरे च्छिने योऽरिवर्गविहिताहितव्यथः ॥ आजिमण्डलगतो जयेदिपून्वाजिवारणरथाश्रितो नरः ॥ ९ ॥ दूर्वाबीजं यो जपेत्प्रेतभूमौ सायं मायाभस्मना लिप्तकायः ॥ गीर्वाणानां नायको देवमन्त्री अकत्वा राज्यं प्राज्यप्राज्यं करोति ॥१०॥वायन्यबीजं यदि साधको जपेत्रियाकुचद्रन्द्रविमर्दनक्षमः ॥ समस्तकान्ताजननेत्रवागुरैविलासहंसी भविता स पार्वति जपेत्कामवेलाकलार्तो रात्रौ मात्राक्षरविलसितन्यास ईशानि मातः ॥ तस्य स्मेराननसरसिजभ्राजमानाङ्गलक्ष्मीर्वश्याऽवश्यं सुरपुरवधूमौलिमालोर्वशी सा ॥१२॥ भूगेहाश्चितसत्रिवृत्तविलसन्नागारवृत्ताश्चितव्यवारोह्नसितामिकोणविलसच्छ्रीबिन्दुपीठस्थिताम।। ध्यायेचेतिस शर्वपत्नि भवतीं माध्वीरसाधूर्णितां यो मन्त्री स भविष्यति स्मरसमः स्त्रीणां घरण्यां दिवि ॥ १३ ॥ दुर्गास्तवं मनुमयं मनुराजमौलिमाणिक्यमुत्तमशिवाङ्गरहस्यभूतम् ॥ प्रातः पठेद्यदि जपावसरेऽर्चनायां भूमौ भवेत्स नृपतिर्दिवि देवनाथः ॥ १५॥ स्तोत्रं महापुण्यं पञ्चाङ्गिकशिरोमणिम् ॥ यः पठेदर्धरात्रे तु तस्य वश्यं जगत्रयम् ॥ १५ ॥ इदं पञ्चाङ्गमिखलं श्रीदुर्गाया सर्वाशापरिपूरकम् ॥ १६॥ गुह्यं मन्त्ररहस्यं तु तव भक्तया प्रकाशितम् ॥ अभक्ताय न दातव्यिमत्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ १७ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ भगवन्भवताऽनेन कथनेन महेश्वर ॥ श्रीपञ्चाङ्गस्य दुर्गाया अद्य कीता Sसम्यहं परम् ॥ १८ ॥ श्रीभैरव डवाच ॥ इदं रहस्यं परमं दुर्गासर्वस्वयुत्तमम् ॥ पञ्चाङ्गं वर्णितं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनि

उपा.स्त. हुर्गा.

37º 85

वत् ॥ १९ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृ॰ घ॰ उपा॰ स्त॰ श्रीदुर्गो॰ ध्याये देवीर॰ श्रीदुर्गास्तोत्रनिरूपणं नाम णम् ॥७॥ अथ श्रीदुर्गाभुवनवर्णनम् ॥ उक्तं च देवीरहस्यतन्त्रैकपञ्चाशत्तमे पटले॥श्रीभैरव उवाच॥ श्रीशैलराजशिखरे नानाडुमलता कुले ॥ वसन्तलक्ष्मीनिलये समासीनमुमापतिम् ॥ १ ॥ एकदा देवमीशानं शशिशेखरमुत्तमम् ॥ उमाश्रितार्घवपुषं देवदानव सेवितम् ॥ २ ॥ ध्यानासक्ताक्षिश्रितयं जटाजूटलतारूणम् ॥ भस्माङ्गरागधवलं नारायणनमस्कृतम् ॥३॥ ब्रह्मादिदेवप्रणतं गन्धर्वजन वन्दितम् ॥ यक्षराक्षसनागेन्द्रनगेन्द्रकुलपूजितम् ॥ ४ ॥ भैरवं भैरवाकारं गिरीशं परमेश्वरम् ॥ उत्थाय विनता भूत्वा पर्यप्रच्छत पार्वती ॥ ५ ॥ श्रीदेन्यवाच ॥ भगवन् सर्वलोकेश सर्वलोकनमस्कृत ॥ गुणातीत गणाध्यक्ष सृजस्यविस नृत्यान्ते संहरस्यमितं जगत् ॥ चराचरं च त्वमेव किं पुनर्जपिस प्रभो ॥ ७ ॥ किं ध्यायसि महादेव सततं भक्त वत्सल ॥ वद शींघ्रं दयाम्भोधे यद्यहं प्रेयसी तव ॥८॥ श्रीभैरव उवाच ॥ देवि किं ते प्रवक्ष्यामि रहस्यमिद्मद्भतम् ॥ सर्वस्वं सर्वेषां तत्त्वमुत्तमम् ॥ ९ ॥ लक्षवारसहस्राणि वारिताऽसि पुनः पुनः ॥ स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं पृच्छिसि ॥ १० ॥ अद्य भक्त्या तव स्नेहाद्रक्ष्यामि परमाद्धतम् ॥ देवीरहस्यतन्त्राख्यं तन्त्रराजं महेश्वारे ॥११॥ सर्वागमैकपुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम् ॥ सर्वतन्त्रमयं दिव्यं पटलेर्दशभिर्धुतम् ॥ १२ ॥ अनुक्रमणिकां दिव्यां शृणु तन्त्रस्य पार्वति ॥ यस्याः श्रवण कोटिपूजाफलं रुभेत् ॥ १३ ॥ श्रीविद्यानिर्णयो देवि मन्त्रसाधनकोऽपरः ॥ शिवमन्त्रप्रकाशाख्यो दीक्षाविधिरत पुरश्चर्याविधिदेवि पञ्चरत्नेश्वरीकमः ॥ होमसाधनकश्चेव चक्रपूजाविधिः परः ॥ १५ ॥ दशमो दशमीविधिः ॥ तत्रादौ देवि वक्ष्येऽहं दुर्गाभुवनमद्धतम् ॥ १६ ॥ जयं नाम महादिन्यं बहुविस्तारविस्तृतम् ॥ नानारत्न समाकीर्ण सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ १७ ॥ इन्द्रगोपकवर्णं च चन्द्रकोटिमनोहरम् ॥ अप्रमेयमसंख्येयमगम्यं सर्ववादिनाम् ॥ १८ ॥ इदं दिःयं जयं नाम भुवनं परमेश्वरि ॥ तंत्रैव वसते दुर्गा नवरूपातिमका परा ॥ १९ ॥ या देवदेवी वरदा

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१६॥ था दुर्गेति स्मृता लोके ब्रह्माण्डोद्रवर्तिनी ॥ २०॥ विष्णुना तपसा पूर्वमाराध्य परमेश्वरी ॥ महिषस्यासुरेन्द्रस्य वधार्थायाव वारिता ॥ २१ ॥ योगमाया महामाया सर्वदा परमेश्वरी ॥ तामेवाहर्निशं ध्याये श्रीविद्यां परमां जपे ॥२२॥ तामद्याहं प्रवक्ष्यामि विद्याचरणदायिनीम् ॥ यां श्रुत्वा स शिवो जातः पञ्चनादात्मकः शिवः ॥ २३ ॥ यदाऽभूद्धारेहीना सा दुर्गा निष्कलरूपिणी ॥ साक्षाद्भवनरूपाऽपि महज्ज्योतिःस्वरूपिणी ॥ २४ ॥ तदा शवहकाले तु ज्योतीरूपे महीश्वरि ॥ शिवः प्रभामण्डलतो निर्गतो डचेतनो विभुः ॥ २५ ॥ अशृणोत्रादमाधारं जगतां बीजमुत्तमम् ॥ अवमं सारमायां त्वं सृष्टोऽग्रे मनुनायकः ॥ २६ ॥ इति श्रुत्वा परानादं तारमित्युपदीर्यते ॥ शिवो जजाप सहसा बीजं त्रिजगतां शिवे ॥ २७ ॥ तेन मायेति शब्दं स शुश्राव गगना त्ततः ॥ दमं भज महेशान सदानन्दालयं परम् ॥ २८ ॥ बिन्दुनादमयो देवः शिवोऽभूत्परमेश्वरः ॥ ततो नादं स शुश्राव दृष्टिकण विवर्जितम् ॥ २९ ॥ दुर्गी भजेति स शिवः पश्चनादात्मकोऽभवत् ॥ ततो जप्त्वा पराविद्यामसृजज्जगदम्बिके ॥ ३० ॥ आदौ वायुं शिवः सृष्ट्वा ततः सृष्टिं यथेच्छया ॥ इच्छामात्रं शिवे विश्वं विश्वेश्वरि चराचरम् ॥ ३१ ॥ ससर्ज लवमात्रं स शितिकण्ठः शिवः शिवे ॥ इतीमां ग्रुप्तविद्यां तु लब्ध्वा ग्रुरुपदार्चनात् ॥ ३२ ॥ किं किं न साधयेह्वोके साधको मन्त्रसाधकः ॥ वस्त्र विद्व च कामं च धनं वृत्तं च साधकः ॥ ३३ ॥ वशीकुर्याद्यथाबुद्धचा येन तुर्याकुलो भवेत् ॥ श्रीचक्रमिद्माधारं देग्या विभवकार णम् ॥ ३४ ॥ गुह्यं सर्वस्वमम्बायाः पूज्यं साधकसत्तमम् ॥ चक्रं लिखेन्महादेवि पूज्यमब्जार्कयोर्दलैः ॥ ३५ ॥ येन देवी महामाया श्रीदुर्गाऽऽशु प्रसीदति ॥ चके संपूजयेद्यस्तु नीलाभां दहतीं द्युतिष् ॥ ३६ ॥ वह्नीन्दुसूर्याम्बुरजं मण्डलाकारमचेयेत् ॥ लसन्युकुटरोचिष्णुः स भवेत्साधकोत्तमः ॥ ३७॥ तस्य शङ्कानिभा कीर्तिर्श्रमते ध्रुवनत्रये ॥ ससुरासुरगन्धर्व वशं याति महे श्वरि ॥ ३८ ॥ शरासवरसानन्दमयो भूत्वा जपेन्मनुम् ॥ खेटकास्तस्य तुष्यन्ति साधकस्याङ्गपूजनात् ॥ ३९ ॥ तस्य रोगा विनश्यन्ति सर्वे शूलादयोऽचिरात् ॥ तर्जनी तव वक्ष्यामि रिपवो यान्ति विद्वताः ॥ ४० ॥ तस्य गेहं धनं गावो महिषा

उपा.स्त. व दुर्गा. अ० १२८

विष्टरं गजाः ॥ दुर्गा रत्नवती भूमिस्तस्य पीठं मनोहरम् ॥ ४१ ॥ सायकस्य भवेदेवं संपत्तिर्बहुधाऽर्चनात् ॥ एवं ध्यायेन्महादेवीं दुर्गी दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ४२ ॥ ध्यानेन येन देवेन्द्रो भविष्यति हि साधकः ॥ इती इंदेवि तत्त्वं ते कथितं परमाद्धतम् ॥ ४३ ॥ अवक्तव्यमदातव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ ४४ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविरचिते वृ० धर्मस्कन्धे उपासनास्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये देवीर्ह ॰ श्रीदुर्गाभुवनवर्णनिहरूपणं नाम अष्टमं प्रक्रणम् ॥८॥ अथ दुर्गापञ्चरत्नेश्वरीविधानम् ॥ उक्तं च देवीरहरुयतन्त्रे षट्पञ्चा शत्तमे पटले ॥ श्रीभैरव उवाच ॥ अधुना देवि वक्ष्येऽहं पञ्चरत्नेश्वरीविधिम् ॥ यस्य श्रवणमात्रेण विद्या सिद्धचित सत्वरम् । विना पञ्चरत्नेश्वरीमन्त्रजाप्यं न सिद्धिभवेत्साधकस्योत्तमस्य ॥ ततः पूजयेद्दीक्षितः श्रीग्रुक्तं स्वं समस्ताष्ट्रसिद्धीश्वरं देवदेवि ॥ २ ॥ दुर्गायाः परमं तत्त्वं पञ्चरत्नेश्वरीमयम् ॥ श्रीदुर्गा शारिका शारी सुमुखी रत्नेश्वरीविद्या दुर्गायाः कथिता मया ॥ सुदिने देवि दुर्गायाः पञ्चरत्नेश्वरीं जपेत् ॥ माप्रोति साधकः ॥ साधकेषु चतुष्वेंवं श्रीदुर्गीपासकः दीक्षामन्येषु शिष्येषु दापयेत्साधकोत्तमः॥ ६ ॥ येन मन्त्रो हि दुर्गायाः सद्यः स्फुरित भारते ॥ साधकेषु कली युगे ॥ ७ ॥ पञ्चरत्नेश्वरीं दत्त्वा पुरश्चर्यापलं लभेत् ॥ श्रीदुर्गीपासकश्चेव शारिकोपासकश्चेव मातङ्गचास्त्वपरः शिवे॥ पश्चमो बगलामुख्याश्चेकत्र मिलिताश्च ते॥ जपेत् ॥ अन्योन्यं साधकाः पञ्च श्रीग्ररोः पुरतः शिवे ॥ १० ॥ पुरश्चर्याफलं सिद्धं प्रार्थयेयुर्गुरोस्ततः ॥ सर्वसिद्धि प्रयच्छित ॥ ११ ॥ तारं मायां चिक्रकं च त्रिदूर्वा वायव्याणी विश्वमन्ते भवानि ॥ दुर्गायास्ते वर्णितो मूल विद्यामन्त्रोद्धारो गोपितोऽष्टाक्षरोऽयम् ॥ १२ ॥ तारं मायां कामराजश्र शक्तिः स्तम्भं तस्माद्भगवत्ये च नाम ॥ दश्रले ठद्वयं स्यात्रोक्तो मुक्त्यै शारदामन्त्र एषः ॥ १३ ॥ तारं परामातटसिन्धुराणीः खं शर्म तनमध्यगतं च नाम ॥ अन्तेऽश्मरी

मृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१७॥

पार्विति शारिकायास्त्रयोदशाणीं मनुरस्ति गोप्यः ॥ १४ ॥ वाक्काममुच्छिष्टपदं विभाग्य चण्डालिनी वै सुमुखी च देवि महापिशाची सककात्रयाव्जं वनं मनुः स्यात्स्रमुखीप्रियोऽयम् ॥ १५ ॥ तारं मठं बगलामुखि सर्वेदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय द्विः ॥ पादं जिह्नां कीलय द्विमंठ वा तारं नीरं ब्रह्मणोऽस्त्रास्त्रविद्याम् ॥ १६ ॥ इत्येषा ग्रुप्तविद्येयं प्रभावसहिता कलौ ॥ पञ्चरत्नेश्वरी शाह्या पुरश्वरणसिद्धये ॥ १७ ॥ इतीदं तत्त्वमीशानि पुरश्चर्यारहस्यकम् ॥ अनन्तफलदं गुह्यं गोपनीयं मुमुक्षया ॥ १८ ॥ इति श्रीह॰ वृ॰ घ॰ उपा॰ स्त॰ श्रीदुर्गापा॰ ध्याये दे॰ श्रीदुर्गापश्चरत्नेश्वरीविधाननि॰ नाम नवमं प्रकरणम् ॥ ९ ॥ अथ दुर्गा स्तोत्रम् ॥ उक्तं च ब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखण्डे अन्तिमेऽध्याये ॥ पुरा स्तुता सा गोलोके कृष्णेन परमात्मना ॥ संपूज्य मधुमांसेन प्रीतेन रासमण्डले ॥ १ ॥ मधुकैटभयोर्युद्धे द्वितीये विष्णुना पुरा ॥ तत्रैव काले सा चतुर्थे संस्तुता देवी भक्तया च त्रिपुरारिणा ॥ पुरा त्रिपुरयुद्धे च महाघोरतरे रणे ॥ ३ ॥ पञ्चमे संस्तुता दे वृत्रासुरवधे तथा॥ शकेण स्वैदेवेश्व घोरे च प्राणसंकटे ॥ ४ ॥ तदा सुनीन्द्रेर्धनिभिर्मानवैः सुरथादिभिः ॥ संस्थिता पूजिता सा करुपे करुपे परात्परा ॥ ५ ॥ स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन् सर्वविद्यविनाशनम् ॥ सुखदं मोक्षदं सारं भवाब्धेः पारकारणम् ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ त्वमेव सर्वजननी मुलप्रकृतिरीश्वरी ॥ त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् ॥ परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या स्वरूपिणी ॥ ८॥ निजस्वरूपा परमा भूकानुबर् विग्रहा ॥ सर्वस्वरूपा सर्वाणी सर्वाधारा परात्परा ॥ ९ ॥ सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला ॥ सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्व भाविनी ॥ १०॥ त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम् ॥ दक्षिणा सर्वदाने च सर्वकर्मणि संततम् ॥ ११ ॥ निद्रा त्वं च द्या त्वं च कृष्णा त्वं चात्मनश्च मे ॥ तत्क्षान्तिः शान्तिरीशा च कान्तिरत्विध्य शाश्वति ॥ १२ ॥ श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा प्रभा सदा ॥ सतां संपत्स्वरूपा श्रीविंपत्तिरसतामिह ॥१३॥ प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहांकुरा ॥ शश्वत्कर्ममयी शक्तिः

उपा.स्त. १ हुगी. अ० १२८

सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥ १४ ॥ देवेभ्यः स्वपदं दात्री धातुर्धात्री कृपामयी ॥ कृता या सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी ॥ १५ ॥ योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम् ॥ माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया च वैष्णवी ॥ १६ ॥ भद्रदा भद्रकाली सर्वलोकभयंकरी ॥ त्रामेत्रामे त्रामदेवी गृहदेवी गृहेगृहे ॥ १७ ॥ महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी ॥ रक्षास्वरूपा शिष्टा मातेव हितकारिणी ॥ १८ ॥ ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम् ॥ विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिबुद्धिमतां सताम् ॥ ॥ १९ ॥ मेधास्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम् ॥ राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वाऽपीशपूजिते ॥ २० ॥ इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गायाः स्वर्गकारणम् ॥ पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धिर्भवति वांछिता ॥ २१ ॥ वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च दुर्भगा ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभते ध्रुवम् ॥२२॥ कारागारे महाघोरे यो बद्धो दृढवन्धने ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धना न्मुच्यते ध्रुवम् ॥ २३ ॥ यक्ष्मग्रस्तो गलत्कुष्ठी महाञ्चली महाज्वरी ॥ श्रुत्वा स्तोत्रंवर्षमेकं सद्यो रोगात्प्रमुच्यते ॥ २४ ॥ राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रणस्थले ॥ हिंस्रजन्तुसमीपे तु श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते ॥ २५ ॥ महाद्रिद्रो सूर्वश्च वर्षे स्तोत्रं पठेत्तु यः ॥ विद्यावान्धनवांश्चेव स भवेन्नात्र संशयः ॥ २६ ॥ इति श्रीह० वृ० घ० उ० दुर्गोपासनाध्याये ब्रह्मवैवर्तान्गतप्रकृतिखण्डोक्त दुर्गास्तोत्रनिरूपणं नाम दशमं प्रकरणम् ॥ १० ॥ अथ ब्रह्माण्डमोहनाख्यं दुर्गाकवचम् ॥ उक्तं च तत्रैव ॥ नारद उवाच ॥ भगवान् सर्वधर्मज्ञ सर्वज्ञानविशारद् ॥ ब्रह्माण्डमोहनं नाम प्रकृतेः कवचं वद् ॥ १ ॥ नारायण उवाच ॥ शृणु वक्ष्यामि हे वत्स कवचं च सुदुर्लभम् ॥ श्रीकृष्णेनैव कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥ २ ब्रह्मणा कथितं पूर्वं धर्माय जाह्नवीतटे ॥ धर्मेण दत्तं मह्यं च कृपया पुष्करे पुरा ॥३॥ त्रिपुरारिश्च यद्धृत्वा जघान त्रिपुरं पुरा ॥ सुमोच ब्रह्मा यद्धृत्वा मधुकैटभयोर्भयात्॥४॥सञ्जहार रक्तबीजं यद्धृ त्वा भद्रकालिका ॥ यद्धृत्वा हि महेन्द्रश्च संप्राप कमलालयाम् ॥५॥ यद्धृत्वा च महायोद्धा बाणः शत्रुभयंकरः ॥ यद्धृत्वा शिव तुल्यश्च दुर्वासा ज्ञानिनां वरः ॥ ६ ॥ ॐ दुर्गैति चतुर्थ्यन्तः स्वाहान्तो मे शिरोऽवतु ॥ मन्त्रः षडक्षरोऽयं च भक्तानां कल्पपाद्पः ॥७॥

बु.उच्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१८॥

विचारो नास्ति वेदे च शहणेऽस्य मनोर्धुने ॥ मन्त्रश्रहणमात्रेण विष्णुतुल्यो भवेत्ररः ॥८॥ मम वक्रं सदा पातु ॐ दुर्गायै नमोऽन्तकः ॐ दुर्गे च इति कण्ठं मन्त्रः पातु सदा मम ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीमिति मन्त्रोऽयं स्कन्धं पातु निरन्तरम् ॥ ह्रीं श्रीं क्वीमिति पृष्टं च पातु मे सर्वतः सदा ॥ १० ॥ ह्रीं मे वक्षस्थलं पातु हं सं श्रीमिति सन्ततम् ॥ ऐं श्रीं ह्रीं पातु सर्वां हं स्वप्ने जागरणे सदा ॥ १९ ॥ प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः पातु वह्नौ च चण्डिका ॥ दक्षिणे भद्रकाली च नैर्ऋत्यां च महेश्वरी ॥ १२ ॥ वारुण्यां पातु वाराही वायन्यां सर्वमङ्गला ॥ उत्तरे वैष्णवी पातु तथैशान्यां शिवप्रिया ॥ १३ ॥ जले स्थले चान्तरिक्षे पातु मां जगदम्बिका ॥ इति ते कथितं वहस कवचं च सुदुर्लभम् ॥ १४ ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥ गुरुमभ्यच्यं विधिवद्वस्त्रालंकार चन्द्नैः ॥ १५ ॥ कवचं धारयेद्यस्तु सोऽपि विष्णुर्न संशयः ॥ स्नाने च सर्वतीर्थानां पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे ॥ १६ ॥ यत्फलं लभते लोकस्तदेतद्वारणे मुने ॥ पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धमेतद्भवेद ध्ववम् ॥ १७ ॥ लोकश्च सिद्धकवचो नावसीदित संकटे ॥ न तस्य मृत्युर्भवति जले वहाँ विषे जवरे ॥ १८ ॥ जीवन्मुक्तो भवेत्सोऽपि सर्वसिद्धीश्वरीश्वरम् ॥ यदि स्यात्सिद्धकवचो विष्णुत्तरयो अवेद ध्रुवम् ॥ १९ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते बृह् धर्मि उपासनास्तमके दुर्गो ध्याये ब्रह्मवैवर्तप्रकृतिखण्डान्तर्गतदुर्गा कवचनिरूपणं नाम एकादशं प्रकरणम् ॥११॥ अथ दुर्गाष्टोत्तरशतनामात्मकस्तोत्रम् ॥ उक्तं च विश्वसारतन्त्रे ॥ ईश्वर उवाच शत नाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ॥ यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता सदा भवेत् ॥ १ ॥ सती साध्वी भवपीता भवानी भव मोचिनी ॥ आर्या दुर्गा जया आद्या त्रिनेत्रा ११ लघारिणी ॥ २ ॥ पिनाकघारिणी चित्रा चन्द्रघण्टा महातपा ॥ मनो बुद्धिरहं कारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥ ३ ॥ सर्वमन्त्रमयी सत्या सत्यानन्दस्यरूपिणी ॥ अनन्ता भाविनी भाष्या भवा भव्या सद्गगितः ॥ ४॥ शंभुपत्नी देवमाता चिन्तारत्निप्रया सदा ॥ सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥ अपूर्णा चैकपूर्णा च पाटला पाटलावती ॥ पट्टाम्बरपरीघाना कलमञ्जीरनादिनी ॥ ६ ॥ अमेयविकमा कूरा सुन्दरी कुलसुन्दरी ॥ वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्ग

उपा.स्त. इ दुर्गा.

मुनिपूजिता ॥ ७ ॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ॥ चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥ विम लोत्कर्षिणी ज्ञाना किया सत्या च वाक्प्रदा ॥ बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥ निज्ञुम्भज्ञुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ॥ मधुकेटभहन्त्री च चण्डसुण्डविनाशिनी ॥ १० ॥ सर्वासुरविनाशा च्रसर्वदानवघातिनी ॥ सर्वशास्त्रमयी विद्या सर्वास्त्रघारिणी तथा ॥ ११ ॥ अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रविधारिणी ॥ कुमारी चैव कन्या च कौमारी युवती यती ॥ १२ ॥ अप्रौढा चैव प्रौढा च बृद्धमाता बलपदा ॥ इदं च पठेतस्तोत्रं दुर्गानामशताष्टकम् ॥ १३ ॥ नासाध्यं विद्यते देवि त्रिष्ठ धान्यं सुतान् जायां इयं हस्तिनमेव च ॥ १४ चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्सुर्क्ति च शाश्वतीम् ॥ कुमारीं पूजियस्वा देवीं सुरेश्वरीम् ॥ १५ ॥ पूजयेत्प्रयतो भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥ तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि सर्वैः सुरवरेरिष ॥ दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाष्ब्रयात् ॥ १७ ॥ गोरोचनालक्तककुंकुमेन सिन्दूरकपूरमध्रत्रयेण ॥ विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत्सदा धारयतः स्मरारिः ॥ १८ ॥ भौमावास्यां निशाभागे चन्द्रे शतभिषां गते ॥ विलिख्य प्रपठच् स्तोत्रं स भवेत्संपदां पदम् ॥ १९ ॥ इति श्रीहरिकुष्णविरचिते । बृ । घ । उपासनास्त । श्रीहुगोंपा । ध्याये विश्वसारतन्त्रोक्तश्रीहुगांधोत्तरशतनामा त्मकस्तोत्रनिहरः नाम द्वादशं प्रकरणम् ॥ १२॥ अथ रुद्रचण्डीपाठः ॥ उक्तं च रुद्रयामले॥ श्रीशंकर उवाच ॥ चण्डिकाहृद्यं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि ॥ अनन्तफलमाप्नौति देवि चण्डीप्रसादतः ॥ १ ॥ रविवारे यदा चण्डीं पठेदागमसंमताम् ॥ नवावृत्ति फलं तस्य जायते नात्र संशयः॥ २ ॥ सोमकारे यदा चण्डीं पठेखस्तु समाहितः॥ सहस्रावृत्तिपाठस्य सुव्रते ॥ ३ ॥ कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसंमताम् ॥ शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्षफलं घ्रवम् ॥ ४ ॥ ग्रुरौ यदि महामाये लक्षयुग्म फलं ध्रवम् ॥ ग्रुके देवी जगद्धात्री चण्डीपाठेन शंकारि ॥ ५ ॥ ज्ञेयं तुस्यफलं दुगै यदि चण्डि समाहितः ॥ शनिवारे जगद्धात्रि को खावृत्तिफलं ध्रुवम् ॥ ६ ॥ अत एव महेशानि यो वै चण्डीं समभ्यसेत् ॥ स सद्यक्ष कृतार्थक्ष राजराजाधियो

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१९॥

आरोग्यं विजयं सौरूयं वस्त्रस्त्रवालकम् ॥ पठनाच्छ्वणाचैव जायते नात्र संशयः ॥ ८ ॥ धनं धान्यं प्रवालं च वस्त्रं विभूषणम् ॥ चण्डीश्रवणमात्रेण कुर्यात्सर्दे महेश्वरी ॥ ९ ॥ घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी ॥ चतुर्वका महावीयां दैवविभूषिता ॥ १० ॥ रक्तद्न्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी ॥ तारणी जननी दुर्गा चण्डिका गुह्मकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा ॥ १मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका ॥ १२ ॥ शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेशा गणभूषिता ॥ जाह्नवी परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्द्री ॥ १३ ॥ श्रीविद्या परमा विद्या चण्डिका वैरिमर्दिनी ॥ दुर्गा दुर्ग शिवा घोरा चण्डहस्ता प्रचण्डिका ॥ १८ ॥ माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा॥ प्रमथैर्भूषिता कृष्णा चामुण्डा मुण्डमर्दिनी ॥१५॥ रणखण्डा चन्द्रघण्टा रणरामवरप्रदा॥भारणी भद्रकाली च शिवा घोरभयानका ॥१६॥ विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपगृहो द्भवा ॥ मङ्गला जननी चण्डी महाकुद्धभयंकरी ॥ १७ ॥ विमला भैरवी निद्रा जातिरूपा मनोहरा माया शक्तिर्माया मनोहरा ॥ १८ ॥ तस्यै देव्यै नमस्तस्यै सर्वरूपेण सांस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥ इमां चण्डीं जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सद्। पठेत् ॥ नान्यांस्तु पाठयेदेवि पठने ब्रह्महा अवेत् ॥ २० ॥ यः शृणोति घरायां च मुच्यते सर्वपातकैः ॥ ब्रह्महत्या च गोहत्या ह्यीवधोद्भवपातकम् ॥ २१ ॥ श्वश्र्गमनपापं च कन्यागमनपातकम् ॥ तत्सर्व पातकं दुर्गे मातृगमनपातकम् ॥ २२ ॥ सुतस्त्रीगमने चैव यद्यत्पापं प्रजायते ॥ परदारकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यित ॥ २३ ॥ जन्मजन्मान्तरात्पापाद्ग्रहहत्यादिपातकम् ॥ मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्तीसुसंगमात् ॥ २४ ॥ मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्म हिंसने ॥ मिथ्यायाश्चेव यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात ॥ २५ ॥ श्रवणं पठनं चैव यः करोति घरातले ॥ स घन्यश्च कृतार्थश्च राज राजाधियो भवेत् ॥२६॥ यः करिष्यत्यविज्ञाय रुद्रयामलचिष्डकाम्॥पापैरंतैः समायुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ २७॥ अश्रद्धया च कुर्वन्ति ते च पातकिनो नराः ॥ रौरवं नरकं कुण्डं कृमिकुण्डं मलस्य वै ॥ २८॥ शुक्रस्य कुण्डं स्त्रीकुण्डं यान्ति ते ह्यचिरेण वै ॥

उचा.स्त. ३ दुर्गा.

ततः पितृगणैः सार्घे विष्ठायां जायते कृमिः ॥ २९ ॥ शृणु देवि महामाये चण्डीपाठं करोति यः ॥ गङ्गायां चैव यत्पुण्यं काश्यां विश्वेश्वरायतः ॥ ३० ॥ प्रयागे मुण्डने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे ॥ तस्य पुण्यं भवेदेवि सत्यं दुर्गे रमे शिवे ॥ ३१ ॥ त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच पुण्यं समुत्थितम् ॥ तच पुण्यं तच पुण्यं तच पुण्यं न संशयः ॥ ३२ ॥ भवानी च भवानी चोच्यते चुचैः ॥ भकारस्तु भकारः केवलः शिवः ॥ ३३ ॥ वाणी चैव जगद्धात्री वरारोहे भकारकः ॥ प्रेतवहेवि विश्वेशि भकारः प्रेतवत्सदा ॥ ३४ ॥ आरोग्यं च जयं पुण्यं नातः सुखिववर्धन्य ॥ धनं पुत्रजरारोग्यं कुष्ठं गलितनाशनम् ॥ ३५ ॥ अर्धांगरोगा नमुच्येत दहुरोगाच पार्वति ॥ सत्यं सत्यं जगद्धात्रि महामाये शिवे शिवे ॥ ३६ ॥ चण्डे चण्डि महारावे चण्डिका व्याधिनाशिनी ॥ मन्दे दिने महेशानि विशेषफलदायिनी ॥ ३७ ॥ सर्वदुःखाद्मिमुच्येत भक्त्या चण्डीं शृणोति यः ॥ ब्राह्मणो हितकारी च पठे त्रियतमानसः ॥३८॥ मङ्गलं मङ्गलं ज्ञेयं मङ्गलं जयमङ्गलम् ॥ भवेद्धि पुत्रपौत्रैश्च कन्यादासादिभिर्युतः ॥ ३९ ॥ तत्त्वज्ञानेन निधन काले निर्वाणमाप्नुयात् ॥ मणिदानोद्भवं पुण्यं तुलाहिरण्यके तथा ॥ ४० ॥ चण्डीश्रवणमात्रेण पठनाद्वाह्मणोऽपि च ॥ निर्वाणमेति देवेशि महास्वस्त्ययने हितः ॥ ४९ ॥ सर्वत्र विजयं याति श्रवणाद्वहदोषतः ॥ मुच्यते च जगद्धात्रि राजराजाधिपो भवेत ॥ ४२ ॥ महाचण्डी शिवा घोरा महाभीमा भयानका ॥ काञ्चनी कमला विद्या महारोगविमर्दिनी ॥ ४३ ॥ ग्रुह्मचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा ॥ देवानां दुर्लभा चण्डी कद्रयामलसंमता ॥ ४४ ॥ अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी ॥ मतस्यप्रिया मांस रता मत्स्यमांसबलिपिया ॥ ४५ ॥ मदमना महानित्या भूतप्रमथसंगता ॥ महाभागा महारामा धान्यदा धनरत्नदा ॥ ४६ ॥ वस्त्रदा मणिराज्यादिसदाविषयवार्द्धेनी ॥ मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महाविपदनाशिनी ॥ ४७ ॥ इमां हि चण्डीं पठते मनुष्यः शृणोति भक्तया परमां शिवस्य ॥ चण्डीं घरण्यामतिषुण्ययुक्तां स बै न गच्छेत्परमन्दिरं किल ॥ ४८ ॥ जप्यं मनोरथं दुगै तनोति घरणी तले ॥ रुद्रचण्डीप्रसादेन किं न सिध्यति भूतले ॥ ४९ ॥ रुद्रध्येया रुद्रह्मपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा ॥ रुद्रशक्ती रुद्रह्मपा रुद्रमुखसम

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२०॥

न्विता ॥ ५० ॥ शिवचण्डी महाचण्डी शिवप्रेतगणान्विता ॥ भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥५९॥ सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी ॥ गुह्मकाली भद्रकाली महाकालविमादिनी ॥ ५२॥ कृष्णा तृष्णा स्वरूपा सा जगनमोहनकारिणी ॥ अतिमन्त्रा महालजा सर्वमङ्गलदायिनी ॥ ५३ ॥ घोरतन्त्री भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा ॥ मंगला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा ॥ ५४ ॥ स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगार्द्धैरपि सेविता ॥ भयानका महादेवी भयदुःखविनाशिनी ॥ ५५ ॥ चण्डिका शक्ति हस्ता च कौमारी सर्वकामदा ॥ वाराही च वराहास्या इन्द्राणी शकपूजिता ॥ ५६ ॥ माहेश्वरी महेशस्य महेशगणभृषिता ॥ चांसुंडा नारसिंही च नृसिंहशत्रमिदिनी ॥६७॥ सर्वशत्रप्रथमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी ॥ इति सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ५८ ॥ नैव शोकं नैव रोगं नैव दुःखं भयं तथा ॥ आरोग्यं मङ्गलं नित्यं करोति शुभमंगलम् ॥ ५९ ॥ महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सत्य मुत्तमम् ॥ अभक्ताय न दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम् ॥ ६० ॥ तव भक्ताय शान्ताय शिवविष्णुप्रियाय च ॥ द्यात्कदाचि द्देवेशि सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥ ६१ ॥ अनन्तफलमाप्नोति शिवचण्डीप्रसादतः ॥ अश्वमेधवाजपेयराजसूयशतानि च ॥६२॥ तुष्टाश्च पितरो देवास्तथा च सर्वदेवताः ॥ दुर्गैयं मृन्मयी ज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम् ॥ ६३ ॥ मन्त्रमक्षरसंज्ञानं करोत्यपि नराधमः ॥ अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥ ६४ ॥ लम्बोदराधिकश्चण्डीपठनाच्छ्वणात्तु यः ॥ तत्त्वमस्यादि वाक्येन मुक्ति प्राप्नोति दुर्लभाम् ॥६५॥ इति श्रीह० बृ० धर्म० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये रुद्रयामलोक्तश्रीरुद्रचण्डीनिह्रपणं नाम त्रयोदशं प्रकरणम्॥ १३॥ अथ सरस्वतीलक्ष्मीकालिकामृक्तत्रयम् ॥ उक्तं च रुद्रयामले षट्तन्त्रे ॥ तत्रादौ विनियोगादिकम् ॐ अस्य श्रीत्रिमृतिमहासरस्वतीम् कस्य ब्रह्मा ऋषिः ॥ त्रिष्टुबनुष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि ॥ श्रीमहासरस्वती देवता ॥ श्रीमहासरस्वती प्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ पडङ्गन्यासः ॥ ॐ क्वां अङ्गुष्टाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ क्लूं मध्य माभ्यां नमः ॥ ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लों किनिष्टिकाभ्यां नमः ॥ ॐ क्वः करतलकरपृष्टाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि

उषा.स्त. ३ हुर्गा. अ० १२८

अथ ध्यानम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां शशिघगं क्वीं सात्त्विकीं सित्त्रियां बाणेक्षुं मुसलं त्रिशूलवरदं शङ्घं च घण्टां करेः ॥ बिश्राणां हल कार्मुकं सुविलसत्सीन्दर्यह्रपां परां पद्माभां हि निशुम्भशुम्भभिथनीं वन्दे महाशारदाम् ॥१॥ ॐ अस्य श्रीत्रिमृतिमहालक्ष्मीमृत्तस्य विष्णुऋषिः ॥ त्रिष्टुबनुष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि ॥ श्रीमहालक्ष्मीदिवता ॥ श्रीमहालक्ष्मीप्रसादसिद्धचर्थं जपे विनियोगः ॥ श्रीमिति दिचिबीजेन करषडङ्गन्यासः ॥ ॐ श्रां अङ्गु० ॥ ॐ श्रीं त० ॥ ॐ श्रें म० ॥ ॐ श्रेंअ० ॥ ॐ श्रीं क० ॥ ॐ श्रः कर० कर० ॥ एवं हृदयादि ॥ अथ ध्यानम् ॥ नित्यां स्वर्णसरोजसुप्रकटितां बालार्ककोटिप्रभां श्वेतास्यस्तनमण्डलारूणमयां मध्ये विचित्र प्रभाम् ॥ सत्सालाकमलेषुखङ्गकुलिशं कौमोदकीं चक्रकं शूलं वै पर्शं च शङ्घममलं घण्टां च पाशं क्रमात ॥ १ ॥ शक्ति दण्डक चर्मचापदशकं दोभिर्वहन्तीं मुदा सान्द्रानन्दमयीं कमण्डलुधरां नीलोक्षजङ्घाकुचाम् ॥ चित्रां माहिषमर्दिनीं गुणमयीं साम्राज्य लक्ष्मीप्रदां मायाबीजमयीं परावरमहालक्ष्मीं भजे राजसीम् ॥ २ ॥ ॐ अस्य श्रीत्रिमूार्तिमहाकालीसूक्तस्य सदाशिव ऋषिः ॥ त्रिष्टुबनुष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि ॥ श्रीमहाकाली देवता ॥ श्रीमहाकालीप्रसादसिद्धचर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ह्रां अ० ॥ ॐ ह्रीं हूं म० ॥ ॐ हैं अ० ॥ ॐ हीं कनि० ॥ ॐ हः कर० ॥ एवं हृदयादि ॥ अथ ध्यानम् ॥ घोरां भीमपराक्रमां दशकरैः खङ्गेषुशूलं गदां चकं पाशभुशुण्डिके च पर्शुं चापं शिरो बिश्रतीम् ॥ वागीशां मधुकैटभप्रमथिनीं ब्रह्मार्तिहन्त्रीं पर् त्रिंशछोचनमण्डितां दशमुखीं वन्दे महाकालिकाम् ॥ ३ ॥ एवं न्यासध्याने कृत्वा सूक्तत्रयं पठेत् ॥ तद्यथा ॥ कथय सर्वज्ञ भ्रयः किंचिद्वुत्तमम् ॥ तत्त्वमेतस्य सर्वस्य येन सिद्धिरवाप्यते ॥ १ ॥ ऋषिरुवाच ॥ भ्रयः शृणु महाभाग देवी माहातम्यमुत्तमम् ॥ विना येन स्तवश्चायं निर्जीवो नृपनन्दन ॥ २ ॥ हष्ट्वा शुम्भं विनिहतं दारुणं देवकण्टकम् ॥ आजग्मुः पर मानन्दाद् ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ३ ॥ देव्याः स्तुतिं समाधातुं गतास्तछक्षसंयताः ॥ आज्ञामादाय देवेश्याः कर्तुं दर्शनमाद्रात् ॥ ॥ ४॥ बद्धाञ्जलिपुटाः साक्षानुष्टुबुः कमशः शिवाम् ॥ लोकानां च हितार्थाय देवीसूक्तानि पार्थिव ॥ ५ ॥ ब्रह्मा सरस्वेतीसूक्तं

मृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२१॥ | लक्ष्मीसूक्तं जनार्दनः ॥ सूक्तं तथा महाकाल्याः शंकरः स्वयमत्रवीत् ॥ ६ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ अजां पुराणीममरां सनातनीं चतु 🗳 र्भुजां पुस्तकमक्षधारिणीम् ॥ वराभयाभ्यामनुशोभिहस्तां नमामि तां जाडचजटाविनाशिनीम् ॥ ७ ॥ सरस्वतीं त्वामनुनौमि वाचो वरप्रदां हंसवराधिक्रढाम् ॥ मुक्तामणिद्योतितकण्ठहारां भाग्यैक्लभ्यां परमां पवित्राम् ॥ ८॥ श्रीकण्ठशक्तित्रयशोभमानां दशारतूर्येण कृतानुरूपाम् ॥ पञ्चारवासोभृतभूगृहारां सरस्वतीं त्वां प्रणमामि देवीम् ॥ ९ ॥ कलाढचमन्त्रामधिकोटिवासां विहार यन्त्रां विमलैकशोभाम् ॥ स्वच्छावदातां स्फटिकानुरूपां सरस्वतीं त्वां प्रणमामि मातः ॥ १० ॥ वाक्कामकायैः प्रमैः रमारमाह्रीवरदानदक्षेः ॥ बीजैरमीभिः कपिबीजयुक्तैः क्वीयुग्मिभिशैरिति मन्त्रराजः ॥ ११ ॥ एकेन चैकेन च युग्मकेन द्राभ्यां मथैकेन तथैव शेषैः ॥ कराङ्गलिप्तैः परमोत्तमोऽयं निहन्ति पापानि च साधकानाम् ॥ १२ ॥ हटेन वै शृङ्खलया च श्रेण्या विधातृपत्न्या च तथैव वाचा ॥ श्रीः कीर्तिब्राह्मादिभिः शोभया च न्यासैरमीभिः पतितोऽपि शंभुः ॥ १३ ॥ द्रव्येण होमा त्सकलार्थिसिद्धिः सुकिंशुकैर्वागपि सिद्धिमृच्छेत् ॥ तैः साकमाज्येन रमानिवासः सुपायसेनापि च वेदसिद्धिः ॥ १४ ॥ न चाम्ब ते महिमानं वदामि सरस्वति प्रथिते लोकमध्ये ॥ जानन्ति किं बुद्बुदा भूमितोये जडा वयं ब्रह्महरीशमुख्याः ॥१५॥ तथैव वाचा वयं संवदामो जित्राम शत्तया च तथैव जीवाः ॥ पश्याम हे त्वां हि मात्रमहिशि स्पृशाम साक्षात्त्विय संयुतायाम् ॥ १६ ॥ स्वादं विदामस्तव शक्तियोगाद्गृह्णीमहे तव शक्तया महेशि ॥ गच्छाम हे तव शक्तेः प्रभावादानन्द्युक्तास्तव सन्निवेशात ॥ ॥ १७॥ आत्मा मनस्त्वं त्वमेवासि देहस्त्वमेव वै चैन्द्रियपञ्चतत्त्वम् ॥ त्वमेव वै विषयाः शब्दमुख्याः परावरेषां परमा त्वमेव ॥ १८॥ रविश्व ते चन्द्रमाश्च ते ताराश्चते भूमिश्च ते जलं च ते तेजश्च ते वायुश्च ते व्योग च ते शब्दश्च ते स्पर्शश्च ते हपं च ते रसश्च ते गन्धश्च ते ॥ प्राणश्च तेऽपानश्च ते च्यानश्च ते उदानश्च ते समानश्च ते नागश्च ते कृकलश्च ते देव दत्तश्च ते धनंजयश्च ते भूतात्मा च ते ॥ ज्ञानात्मा च ते सर्वात्मा च ते मम चित्तं त्वय्येव विनिवेश्यताम् ॥ १९॥ यदा न चाण्डं

डपा.स्त. ३ हुर्गा.

भुवनानि जीवा नाहं न विष्णुर्न च पार्वतीशः॥ न चेश्वरो नापि सदाशिवश्य त्वमेव चासीदिति वा भविष्या॥२०॥कालस्त्वमेवासि जग त्रयाणां स्त्रभाववीर्यादिकं च त्वमेव ॥ त्वमेव विश्वं परमात्मशक्तिनीमामिते पादपीठं सरस्वति ॥ २१ ॥ त्वं वेदवाणी निखिलाश्च वेदास्त्वं शब्दशक्तिश्च तथाऽर्थशक्तिः ॥ त्वं ब्रह्मविद्याऽपि परावरेशि त्वां ब्रह्मशक्ति शरणं प्रपद्ये ॥२२॥ सूक्तं तवेदं सुभगं सरस्वित प्रातश्च मध्याह्नकाले च सायम्॥ पठनित ये श्रद्धया युक्तचित्तास्ते भोगमोश्लो सहसा लभनते॥ २३॥ न ते कुयोनि न दरिद्रतां चाध्यात्मादितापं न च संलभनते ॥ त एव धन्याश्च त एव पूज्याः सर्वत्र मानो भवतीह तेषाम् ॥ २४ ॥ इदं पुराणं विरजं सुधामयं सुतत्त्वभूतं जगतां त्रयाणाम् ॥ ते प्राप्तुवन्ति प्रकटप्रभावास्त्वां सर्वयोनि शरणं प्रपद्ये ॥ २५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ स्तुत्याऽनया वेदवाण्या सर्वसारस्वरूपया ॥ प्रसन्नादेवदेवेशी महापूर्वा सरस्वती ॥ २६ ॥ आविर्भृता महादेवी ब्रह्मतोषक कारिणी ॥ उवाच वचनं दिन्यं ब्रह्मानन्दप्रदायकम् ॥ २७ ॥ देन्युवाच ॥ स्तुत्याऽनया च ते ब्रह्मन् भृशं तोषसमन्विता ॥ तुष्टाऽस्मि त्रियतां देव वरं संतोषकारकम् ॥ २८ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वद्चेने मनो देवि दृढं भवतु सर्वदा ॥ एष एव वरः साक्षादुत्तमो त्रियते मया॥ २९॥ सुस्कतेनापि देवेशि तेजो दिन्यं विधीयताम्॥ येन कार्याणि सिध्यन्ति साधकानां महात्मनाम्॥ ३०॥ श्री देन्युवाच ॥ सर्वदा ते मनो देवीकुलधर्मैः सुपूजितम् ॥ दृढं भवतु सूक्तं च प्रसादान्मे परंतप् ॥ ३१ ॥ सर्वसिद्धिप्रदं चास्तु पर मानन्ददायकम् ॥ विना सुक्तं पठेद्यस्तु स्तोत्रं सप्तशतीति च ॥ ३२ ॥ मातृगामी स विज्ञेयो नरकावासतत्परः ॥ ममावज्ञा पराधेन ब्रह्मन्नानां गति त्रजेत् ॥ ३३ ॥ ऋषिह्याच ॥ एवमुत्तवा वचो देवी तूष्णीमासीन्नृपोत्तम ॥ इति श्रीसरस्वतीसूक्तम् ॥ अथाञ्जलिं समाधाय हरिः प्रोवाच विश्वकृत् ॥ ३४ ॥ हरिरुवाच ॥ प्रावरेशां जगदादिभूतां प्रां वरेण्यां वरदां वरिष्ठाम् ॥ वरेश्वरीं बहुवाग्ग्मिप्रगीतां त्वां विश्वयोनि शरणं प्रपद्ये ॥ ३५ ॥ श्रियं समस्तैरधिवासभूतां महासुलक्ष्मीं घरणीघरां च ॥ अनादि मादिं परमार्थेरूपां त्वां विश्वयोनिं शरणं प्रपद्ये ॥ ३६॥ एकामनेकां विविधाशुकार्यो सुकारिणीं सदसदूपिणीं च ॥ रूपा

खु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२२॥

मरूपां च शिवां शिवपदां त्वां विश्व ।। ३७ ।। सर्वाश्रयां सर्वजगन्निवासां श्रीमन्महालक्ष्मीमनादिदेवीम् ॥ शक्तिस्वरूपांच शिवस्वरूपां त्वां विश्व॰ ॥ ३८ ॥ कामाभिधां श्रीमधिवासभूतां ह्रींकृपिणीं बीजकपित्रभावाम् ॥ कर्णाष्ट्रबीजां परमार्थसंज्ञां त्वां विश्व॰ ॥ ३९ ॥ वैश्वानरस्त्रीसहितेन देवी श्रीमन्त्रराजेन विराजमानाम् ॥ सर्वार्थदात्रीं परमां पवित्रां त्वां विश्व॰ ॥ ४०॥ त्रिकोणपञ्चारयुगप्रभावां षद्कोणिमश्रां द्विदशारयुक्ताम् ॥ अष्टारचकादिनिवासभूतां त्वां ।। ४१ ॥ पुनर्दशारद्वितयेन युक्तां पञ्चारकोणाङ्कितभूगृहां च ॥ यन्त्राधिवासामपि यन्त्ररूपां त्वां विश्व० ॥ ४२ ॥ संभावितां सर्वदा न्यासगम्यां सर्वस्वरूपा मिप सर्वसेन्याम् ॥ सर्वाक्षरन्यासवशां विश्वां त्वां विश्व० ॥ ४३ ॥ सृष्टिस्थितिप्रलयाख्येश्च बीजैन्यांसं विधाय प्रजपन्ति ये त्वाम् ॥ त एव राजेन्द्रनिघृष्टपादा विद्याधरेन्द्रस्य यशोलभन्ते ॥ ४४ ॥ प्रपूज्य यन्त्रं विधिना महेशि साभ्यासप्रजाः परमां सुभाग्याः ॥ जपन्ति ये त्वां विविधार्थदात्रीं त एव धान्याः कुलमार्गनिष्ठाः ॥ ६५ ॥ जानन्ति के पशवस्ते कुरूपा ब्रह्माहिगीते महिमा महेशि ॥ केचिन्महान्तो निजधामलाभा जानन्ति ते देवि परं सुधाम ॥ ४६ ॥ विधाय कुण्डं विधिना स्थण्डिलं वा सौगन्धिहोमं सफलं प्रकुर्वते ॥ त्वत्तोषणाज्ञायते भाग्यमात्रं तेषां छुदेवैरपि योगगम्यम् ॥ ४७ ॥ पुनः स्तुवन्ति प्रयताश्च मातः स्तोत्रेरुदारैः कुलयोगयुक्ताः ॥ त एव धन्याः परमार्थभाजो भोगश्च मोक्षश्च किमस्ति तेषाम् ॥ ४८॥ ऋषिरुवाच ॥ इति स्तुत्वा **ऽवसाने तु महालक्ष्मीं ददर्श सः ॥ चतुर्भुजां त्रिनयनां महिषासुर्घातिनीम् ॥ ४९ ॥ अस्य श्रीमन्महालक्ष्मीः प्रसन्ना स्तुति** गौरवात् ॥ उवाच स्मितशोभाह्या नारायणमेजं शुभम् ॥ ५० ॥ देव्युवाच ॥ वरं वरय देवेश नारायण सनातन ॥ दास्याम्य याभिदातन्यं तव स्तुत्या वशीकृता ।। ५१ ॥ नारायण उवाच ॥ मातः परकारुण्ये महालक्ष्म वरप्रदे ॥ कुलाचारे मतिर्मेऽस्तु हढ़ं तेऽस्तु तथा शिवे !।६२॥ तव सूक्तं च सफलं तव सुप्रीतिकारणम् ॥ देन्युवाच ॥ वरमेत-महाभाग नारायण सनातन॥५३॥सूक्त मेतद्विना यस्तु पठेत्सप्तशतीं नरः ॥ स याति च महाघोरं नरकं दारुणं किल ॥ ५४ ॥ लिप्यते परमशाप्यं मम कोपिवयाणितः ॥ उपा.स्त. १ द्ध्याः अ० १२८

॥२२॥

लक्ष्मीस्तोत्रं विना सप्तशतीस्तोत्रं निषिध्यते ॥ ५५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ एवमुक्त्वा वचो देवी तृष्णीं भगवती नृप ॥ इति श्रीमहा लक्ष्मीसूक्तम् ॥ ततोऽञ्जलि समाधाय शिवो वाचं मुदा युतः ॥ ५६ ॥ तुष्टाव वाग्भिर्दिःयाभिर्महाकालीं महेश्वरः ॥ वेदवाणीं सुतत्त्वाभिलौंकानां हितकाम्यया ॥ ५७ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ शिवामनिन्द्यां विविधप्रभावां कालीं कलामालिनीं विश्ववन्द्याम् ॥ कपालखद्वाङ्गधरां नृमुण्डमालाविभूषां मृगचर्मशोभाम् ॥ ५८ ॥ सुज्जुब्कमांसां च शवासनस्थां विभीषणां सुरारीन् ॥ रक्तप्रियां मांसमदाविपूर्णां कालीं शरण्यां शरणं ब्रजामि ॥ ५९॥ सुघोरबीजं च कपीश्वरश्च चिन्तामणिः कुब्जिककामरूपे ॥ विद्यासु विद्यासु च कामराजं कामः कलामालिनी कामराजम् ॥ ६०॥ वहेर्वधूर्मन्त्रराजोऽयमीशे विश्वं पुना तीश्वरि देवि वन्द्ये ॥ मन्त्रेण चानेन सिध्यन्ति सर्वाः सुसिद्धयः सर्वजगन्निवासे ॥ ६१ ॥ पञ्चारग्रुगमं च त्रिकोणग्रुगमं पुनश्च पञ्चारयुगेन बद्धम् ॥ कलाप्रकोष्ठं किल भूगृहं च यन्त्रेश्वरं ते च पदाब्जवासम् ॥ ६२ ॥ संपूज्य यन्त्रं तव विश्वनायिके निष्पा पिनस्ते सहसा भवन्ति ॥ ये साधकास्तव मार्गानुसारिणः कुलानुवृत्त्या परमाः पवित्राः ॥ ६३ ॥ ते सिद्धिमृद्धिं च वशानुगम्यां नृणां वशीकृत्य गृणन्ति भूपाः ॥ समस्तमन्त्रेण विधाय चाङ्गन्यासादिकं भक्तिसुभावयुक्ताः ॥ ६४ ॥ ते किंकरीकृत्य देवानीत्से जगत्येव विभूतियुक्ते ॥ वदामि नान्यं न शृणोमि चान्यं गृणामि नान्यं न विचिन्तयामि ॥ ६५ ॥ स्मरामि नान्यं न भजामि चान्यं ध्यायामि नान्यं न वितर्कयामि ॥ गायामि नान्यं तव मन्त्रपादात्त्वां येषां न दैवं त्विमहासि देवि नाराधयन्तीह च ते कुबुद्धयः ॥ येऽन्धं तमः प्रविशन्ति ते सदा तेषां मां भूहर्शनं ते दुरात्मनाम् ॥ ॥ ६७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इति वाक्यं समाकर्ण्य परमामृत संमितम् ॥ प्रसन्नाऽभून्महाकाली त्रियतामीप्सितो वरः ॥ ६८ ॥ इत्युवाच विशालाक्षी शम्भोरानन्ददायिनी ॥ प्रसन्ना परमाह्नादसंयुता शिवभाषणात् ॥ ६९ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वियतां मनसोऽभीष्टो वरो जगित दुर्लभः ॥ दास्याम्यद्याभिदातन्यं तव स्तुत्या वशीकृता ॥ ७० ॥ शिव उवाच ॥ कुलाचारेण ते देवि मतिर्मेऽस्तु

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२३॥

चन ॥ शिथिला देवदेवेशि सूक्तं च सफलं तव ॥ ७१ ॥ देव्युवाच ॥ एवमस्तिवति चोक्तवाऽथ तिस्रो अन्तर्धिमाषुः परमा एकस्मिन्नास्थिताभवन् ॥ ७२ ॥ अथ तान्स्तुवतो देवान्त्रोवाच वचनं मुदा ॥ संतोषथन्ती च मुहुर्लोकानुग्रह तत्परा ॥ ७३ ॥ देन्मुवाच ॥ शृणुध्वं प्रीतिसंयुक्ता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ देवीसूक्तं परं ध्यायन् भविष्यति वरार्थद्दम् ॥ ७४ ॥ देवीसूक्तं विना देवा ये च सप्तशतीं नराः ॥ श्रोष्यन्ति च पृष्ठिष्यन्ति तेषां शापः पदे पदे ॥ ७५ ॥ देवीसूक्तं विना पाठो ह्यरण्ये रोदनं यथा ॥ स्तोत्रोचारेण चानेन पूर्णं स्तोत्रमभूदिदम् ॥७६॥ देवा ऊचुः ॥ मातः सप्तसतीस्तोत्रफलश्रुतिरिहोच्यताम् ॥ यां समाकण्यं जीवानां विश्वासो जायते भृशम् ॥७७॥ ऋषिरुवाच ॥ इति वाक्यं समाकण्यं ब्रह्मविष्णुशिवोदितम् ॥ फलस्तुतिमथो वाच स्तोत्रस्यास्य महामते ॥७८॥ इति श्रीहरिकृष्ण० वृ०घ० उपासनास्त०श्रीदुर्गोपा० ध्याये रुद्रयामलोक्तदेवीसक्तत्रयनिरूपणं नाम चतुर्दशं प्रकरणम्॥ १४॥ अथ श्रीचिण्डकामालामन्त्रः ॥ उक्ताश्चथर्वणागमसंहितायाम् ॥ ॐ अस्य श्रीचिण्डकामालामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः अनुष्टुष्छन्दः श्रीचिष्डका देवता ॐ ह्रः बीजम् ॐ सीं शक्तिः ॐ ह्री कीलकम् मम श्रीचिष्डकाप्रसादसिद्धचर्थं सकलजन वश्यार्थे श्रीचिण्डिकामालामन्त्रजपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः॥ ॐ ह्रां फां इत्यादिषडङ्गानि विन्यस्य ॥ अथ ध्यानम् ॥ कल्याणीं कमलासनस्थशुभदां गौरीं घनश्यामलां मालादामविभूषितामभयदामाद्वैकरक्षेः शुभैः॥ श्रीं ह्वीं क्लीं वरमन्त्रराजसिंदतामानन्दपूर्णा त्मिकां श्रीशैले श्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्ति भजे॥१॥ इति ध्यात्वा॥ अथ मालायन्त्रः॥ ॐ ह्रः ॐ सीं ॐ ह्रीं ॐ क्लीं श्री जय जय चिण्डका चासुण्डे चिण्डके त्रिदशसुकुटकोटिसंघिहतचरणारिवन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति महि भैरवरूपधारिणि प्रकटितदंष्ट्रोग्रवदने घोरानननयने ज्वलज्ज्वालासहस्रपरिवृते महादृहासाद्धवलीकृतदिगन्तरे सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरीये भूतवेताल १रिवृते प्रकम्पितधराधरे मधुकैटभमहिषासुरधू म्रलोचनचण्डसुण्डरक्तबीजशुम्भिनशुम्भ दैत्यनिकृते कालरात्रि महामाये शिवे नित्ये ॐ ऍ ह्वीं ऐन्द्रि आग्नेयि नैऋति वार्फ्तणि वायन्ये कौबेरि ईशान्ये ब्रह्मविष्णु

उपा.स्त. रे दुर्गा. अ० १२८

112 है।

शिवस्थिते त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके बाह्मी माहे वरी कौमारी वैष्णवी बाराही द्वाणी ईशानी महालक्ष्मी इति स्थिते महोत्रविषमहाविषोरगफणामणिसुकुटरत्नमहाज्वालामलमणिमहाहिहारबाहुकहोत्तमाङ्गनवरत्ननिधिकोटितत्त्वबाहुजिह्वावाणीशब्द्स्पर्श क्षितिसाहसमध्यास्थिते महोज्ज्वलमहाविषोपविषगन्धर्वविद्याधराधिपते ॥ आं हीं कीं अनमेऽनमे पाते प्रवेशय २ ॐ द्वां दीं शोषय २ ॐ द्वां दीं होमय २ ॐ संतापयरॐसौं सौं उन्मादय २ ॐ म्लैं म्लें मोहय २ ॐ खां खां शोधय २ ॐ द्यां द्यां उन्मादय २ ॐ द्वीं द्वीं आवेशय स्त्रीं स्त्रीं उच्छादय २ ॐ स्त्रीं स्त्रीं आकर्षय २ ॐ हुं हुं आस्फोटय २ ॐ त्रूं त्रूं त्रोटय २ ॐ छां छांछेदय २ ॐ कूं कूं उच्चाटय मारय २ ॐ घ्रीं घ्रीं घर्षय २ ॐ स्वीं स्वीं विध्वंसय २ प्लूं प्लूं घ्रावय २ ॐ त्रां दर्शय २ ॐ दां दां दिशो बन्धय २ ॐ दीं दीं वर्तिनामेकाश्रचित्ता विशिक्तकतेङ्गये ॐ ह्रां हीं हूं हैं फ्रः ॐ चामुण्डायै विचे स्वाहा मम सकलमनोरथं देहि २ सर्वोपद्वं निवारय २ अमुकं वशं कुरु ब्रह्मराक्षसयक्षयमदूतशाकिनीडाकिनीसर्पश्वापदतस्कारादिकं नाशय २ मारय २ मञ्जय २ ॥ ॐ द्वीं श्रीं क्वीं नित्यम् १२१ आदौ सुवासिन्याः कुमार्याः पूजां कृत्वा पश्चाजपं कुर्यात् ॥ एवमेकविंशतिशतजाप्येन श्चियो वा पुरुषोऽपि वा ॥ राजद्वारे श्मशाने च विवादे शत्रसंकटे ॥ शत्रोक्षचाटने चैव सर्वकार्याणि साधयेत् ॥२॥ इति श्रीह० वृ०घ०उपा०स्त०श्रीदुर्गोपा० ध्याये अथर्वणागमसंहितोक्तश्रीचण्डिकामालामन्त्रनिरूपणं नाम पञ्चदशं प्रकरणम् ॥१५॥ अथ शुलिनीदुर्गामन्त्रविधानम् ॥ उक्तं च शारदातिलके ॥ ज्वलज्वलयशब्दान्ते शूलिनीति पदं पुनः ॥ दुष्ट्यहहुमस्यान्ते विह्नजायाविधर्मनुः ॥ प्रोक्तो प्रहशन्नविनाशनः ॥ ऋषिदीर्घतमाः प्रोक्तः ककुण्छन्द उदाहतम् ॥ २ ॥ श्रूलिनी देवता प्रोक्ता समस्तसुरवन्दिता ॥ हुनै हृद्ये शीर्ष विन्ध्यवासिनि तिन्छिखा ॥ ३ ॥ असुशन्ते मार्दिनी स्याद्यद्विप्रये पुनः ॥ त्रासयद्वितयं वर्म देवसिद्धसुपूजिते॥ ४ ॥

बु.उन्यो.र्ण. धर्मस्तेध ८ ॥२४॥

नान्दिनी स्याद्रक्षयुग्मं महायोगेश्वरी कमात् ॥ श्रूलिन्याद्या हुंफडन्ताः पञ्चाङ्कमनवः रमृताः ॥ ५ ॥ अध्याहृहां मृगेन्द्रं सजलजलधरश्यामलां हस्तपद्मैः ज्ञूलं बाणं कृपाणमिरिजलजगदाचापपाशान्वहन्तीम् ॥ चन्द्रोत्तंसां त्रिनेत्रां चतसृभिरसियह्वटकं विश्वतीभिदेवों संसेन्यमानां प्रतिभटभयदां ज्ञूलिनीं तां नमामि ॥ ६ ॥ मसुमेनं जपेनमन्त्री वर्णलक्षं विचक्षणः ॥ सर्पिषाऽन्नेन वा होमस्तद्शांशिमतो भवेत् ॥ ७ ॥ प्रागुक्ते पूजयेत्पीठे वक्ष्यमाणेन वत्मीना ॥ विधाय पूजामङ्गानि पूज्याः पत्रेषु शक्तयः ॥ ८ ॥ हुर्गाऽऽद्या वरदा विन्ध्यवासिन्यसुरमिंदेंनी ॥ युद्धित्रया पश्चमी स्यादेवसिद्धसुपूजिता ॥ ९ ॥ सप्तमी नन्दिनी प्रोक्ता महायोगे श्वरी परा ॥ दलामेषु तदस्राणि चक्रं शङ्कमसिं पुनः ॥ १० ॥ गदेषुचापश्चलानि बाणपाशान्दिशाधिपान् ॥ इत्थं जपादिभिः सिद्धं कुर्यात्कर्म निजेप्सितम् ॥ ११ ॥ अष्टोत्तरसहस्रं यस्तिस्रेश्चिमधुराष्क्वतेः ॥ नित्यंः प्रजुहुयात्तस्य शक्तिः स्यादितमानुषी ॥ १२ ॥ अष्टोत्तरशतं नित्यं सर्पिषा जुहुयान्नरः ॥ वाञ्छितं वत्सरादवीक् प्राप्नोति महतीं श्रियम् ॥ १३ ॥ पूर्व होमो भवेबूणां सर्ववाञ्छित सिद्धिदः ॥ छुरिकाद्यानि शस्त्राणि जतानि मनुनाऽमुना ॥१४॥ संसिक्ताज्यिनिलितानि नितरन्ति जयश्रियम्॥अश्वत्थार्कसमिद्धिर्वा तिलैवां मधुरोक्षितैः ॥ १५ ॥ होमो वै दिशति क्षिप्रमीप्तितान्मिन्त्रणो वगन् ॥ इद्यदायुधहस्तां तां देवीं कालघनप्रभाम् ॥ १६ ॥ ध्यात्वाऽऽत्मानं जपेन्मन्त्रं स्पृष्ट्वा तं सुञ्चति त्रहः ॥ सर्पासुवृश्चिकादीनां विषमाञ्ज विनाशयेत् ॥ १७ ॥ मनुनाऽनेन विधिवन्मन्त्र विद्देवताधिया ॥ मन्त्रेणानेन संजप्तान्बाष्पानादाय योधिकः ॥१८॥ विमुज्चेत्प्रतिसेनायां सा द्वृतं विद्वता भवेत् ॥ ञूलपाशघरां देवीं ध्यात्वाऽऽत्मानमनाकुलः ॥ १९ ॥ प्रविशेद्युद्धदेशं यो जित्वाऽऽयाति स निर्ज्ञणः ॥ जुहुयात्तिलसिद्धार्थर्लक्षमेकं यथाविधि ॥ २०॥ नामयुक्तं जपेन्मन्त्रं वश्याऽसौ मतिमेष्यति ॥ गुटिकां गोमयोत्पन्नां हुत्वाऽष्टशतसंख्यया ॥ २१ ॥ सप्ताहान् कुस्रते मन्त्री विद्वेषं स्निग्धयोर्मिथः ॥ गृहीत्वा गोमयं व्योक्ति त्रिसहस्रं जपेत्युनः ॥ २२ ॥ गमिष्यति द्वारदेशे निखातं स्तम्भकृद्भवेत्॥बहुनोक्तेन किं सर्वे साधयेन्मनुनाऽमुना ॥ २३ ॥ अस्य पूजाप्रयोगः तन्त्रसारे ॥ प्रातःकृत्यादि दुर्गामंत्रोक्तपीठन्यासान्तं कर्मे कृत्वा ऋष्यादि

उपा.स्त. व दुर्गा. अ॰ १२८

न्यासं कुर्यात् ॥ शिरिस दीर्घतमस ऋषये नमः ॥ मुखे ककुष्छन्दसे नमः हृदि श्लिन्ये देवताये नमः ॥ तथा च निवन्धे ॥ ऋषिदींचितमाः प्रोक्तः ककुपछन्द उदाहतम् ॥ शूलिनी देवता प्रोक्ता समस्तम्वरवन्दिता ॥ २६ ॥ ततः कराङ्गन्यासौ कुर्यात् ॥ शुलिनि दुर्गे हुंफट्ट अङ्गुष्टाभ्यां नमः ॥ शूलिनि वरदे हुंफट् तर्जनीभ्यां स्वाहा॥शूलिनि विन्ध्यवासिनि हुंफट् मध्यमाभ्यां वषट् ॥ श्रुलिन्यसुरमर्दिनि युद्धिप्रये त्रासय हुंफट् अनामिकाभ्यां हुं ॥ श्रुलिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दिनि रक्ष रक्ष महायोगेश्वरि हुंफट् कॅनिष्ठिकाभ्यां फट् ॥ एवं हृदादिषु ॥ ततो ध्यानम् ॥ अध्याहृदां मृगेन्द्रं सजलजलधरश्यामलां पद्महस्तैः शूलं बाणं कृपाण मरिजलजगदाचापपाशान्वहन्तीम् ॥ चन्द्रोत्तंसां त्रिनेत्रां चतसृभिरसिमस्खेटकं बिश्रतीभिः कन्याभिः सेन्यमानां प्रतिभटभयदां श्रु किनीं भावयामि ॥ ३० ॥ एवं ध्यात्वा मानसः संपूज्यार्घस्थापनं कुर्यात् ॥ ततः पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय पुनध्यत्वाऽऽवाह नादिपञ्चपुष्पाञ्चलिदानपर्यन्तं कर्म कृत्वा आवरणदेवतापूजामारभेत् ॥ तद्यथा ॥ अग्निनिर्ऋतिवाध्वीशानकोणेषु दिश्च च पूर्वोक्तानि पूजयेत् ॥ ततः पूर्वादि पत्रेषु ॥ ॐ दुर्गाये नमः एवं वरदाये विनध्यवासिन्ये असुरमार्दिन्ये युद्धप्रियाये देवसिद्धसुपूजिताये निन्दिन्ये महायोगेश्वर्ये ॥ ततः पत्राप्रेषु तदस्त्राणि पूजयेत् ॥ अस्य पुरश्चरणं पञ्चदशलक्षजपः ॥ अथ वर्णमनुं वक्ष्ये शीव्रबोधविधायिनीम् ॥ यस्यामनुपलन्धायां सर्वमेतज्जगज्जडम् ॥ ३५ ॥ अथ श्रीशृलिनीदुर्गामहामन्त्रः ॥ ॐ अस्य श्रीशृलिनीदुर्गामहामन्त्रस्य ब्रह्म ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीशूलिनी दुर्गा परमेश्वरी देवता हुं बीजं मं शिक्तः स्वाहा कीलकं मम शूलिनीदुर्गासप्रादिसद्धचर्थे ज विनियोगः ॥ ॐ श्रीशुलिनि बरदे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ वरदे देवसिद्धसुप्रजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट्ट हीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीशूलिनि युद्धविष्रे देवसिद्धसुप्रजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफटू हूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीशूलिनि महिषासुरमर्दिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् हैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीशूलिनि विन्ध्यवासिनि यन्त्रमन्त्रतन्त्राकर्षिणि देवसिद्धसु हु.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२५॥

पूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफट् ह्रौं कनिष्टिकाभ्यां नमः॥ ॐ श्रीश्लूलिनि सर्वसिद्धिप्रदायिनि देवसिद्धसुपूजिते रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफद हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ एवं हृदयादिन्यासः ॥ ॐ श्रीज्ञूलिनि वरदे देव सिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफद हां हृदयाय नमः ॐ श्रीज्ञूलिनि वरदे देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष र महायोगेश्वरी हुंफद हूं शिखाये वषद ॥ ॐ श्रीज्ञूलिनि महिषासुरमिदिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफद हूं शिखाये वषद ॥ ॐ त्रिज्ञूलिनि महिषासुरमिदिनि देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफद हूं कवचाय हुम् ॥ ॐ श्रीज्ञूलिनि विन्ध्यवासिनि यन्त्रमन्त्रतन्त्राकिषिण देवसिद्धसुपूजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफद ह्रा नेत्रत्रयाय वोषद ॥ ॐ श्रीज्ञूलिनि सर्वेसिद्धप्रदायिनि देवसिद्धसुप्रजिते नन्दी रक्ष रक्ष महायोगेश्वरी हुंफटू हः अख्राय फट् ॥ अथ ध्यानम् ॥ विश्राणा झूलबाणा ापपाशान्करायैमें घश्यामा किरीटो छसितशशिकलाभूषणा ॥ भीषणास्या ॥ सिंहस्कन्धाधिक्दा चतसृभिर चतं कन्याभिभिन्नदैत्या भवतु भवभयध्वंसिनी ज्ञूलिनी नः ॥ १ ॥ संहारमुद्रां प्रदर्श्य योनिमुद्रां प्रणमेत् लिमिति पश्चपूजा ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ ऐ हीं श्रीं हुं ज्वल २ ज्ञूलिनि हुए महान् हुंफट् स्वाहा ॥ अथ ज्ञूलिनी हुर्गामूलमन्त्रस्य जिपत्वाऽनन्तरं मालामन्त्रं पढेत् ॥ अथः मालामन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवति कङ्कालरात्रि हुं हुगै त्रतापकेलिनि महाज्ञानधारिणि सर्वभूतप्रेतिपशाचमद्भीषमाकर्षय अर्धरात्रविलासिनि शय २ केलय २ भाषय २ महाबद्धकभैरवी हंफट् स्वाहा ॥ १॥ ॐ नमो भगवति भद्रकालि कासकूटमोहिनि एँ हीं श्री इष्टकामार्थसिद्धिप्रदायिनि सकलज्ञापिनि संक्रामिणि ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी आकर्षय २ आवेशय २ केलय २ भाषय २ ऐं हीं श्रीं इन २ सप्तमातृके हुंफट्र स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवति हीं शूलिनि संहारकालि अष्ट्रभुजे शालिनि एहि २ आगच्छ २ आवेशय २ केलय २ भाषय २ बन्धय २

उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ० १२८

।।२५।

रारारा याह्य २ सकलमहान् संहारय २ भूतमहपेतमहपिशाचमहब्रह्मराक्षसमहडाकिनीमहशाकिनीमहकाकिनीमहराकिनीमह हाकिनीयहयाकिनीयहकालिनयहमहाकालिनयहावेशयहानावेशयहस्वप्नयहभोगयहापस्मारयहिनत्ययहसर्वयहान् उचाटय २ नाशय २ मार्य २ शोषय २ दह २ पच २ अक्षय २ खण्डय २ खङ्गेन छिन्धि २ ज्रूलेन ताडय २ पाशेन बन्धय २ दुर्गे बटुकभैरवि सकलयहसंहारकारिणि भूतज्वरप्रेतज्वरपिशाचज्वरराक्षसज्वरपित्तज्वरवातज्वरश्चे विमक ज्वरसन्निपातज्वरैकाहिकज्वरद्याहिकज्वरञ्याहिकज्वरचातुर्थिकज्वरपक्षज्वरमासज्वर-त्रिमासज्वरषण्मासज्वरसांवत्सरिकज्वरसर्व-ज्वरा न् भञ्जय २ कृटिशूलकुक्षिशूलाङ्गशूलपार्श्वशूलपृष्टशूलिशरःशूलाहिसर्वरोगान् संहारय २ ह्रीं दुर्गे परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रविद्यास्त स्वमन्त्रस्वयन्त्रस्वतन्त्रविद्याविविधिनि ॐ ह्रां ह्रीं हूं दुस्वाहा ॥ ३ ॥ गुद्यातिगुद्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सि भिवतु मे देवि सर्वकामफलपदा २ इति जपं निवेद्य उत्तरन्यांस कृत्वा यथाशक्तया प्रजप्य स्तुवीत ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनि र्मिते वृ ध उ द स्त दुर्गीपासनाध्याये श्रीशुलिनीदुर्गानिरूपणं नाम षोडशं प्रकरणम् ॥ ५६॥ अथ श्रीनवदुर्गोपनिषत्॥ उक्तं चाथर्वणरहस्ये ॥ ॐ अस्य श्रीनवदुर्गामहामन्त्रस्य किरातरूपघर ईश्वर ऋषिः अनुष्ठप् छन्द अन्तर्यामी नारायणः धरेश्वरो नवदुर्गागायत्री देवता ॐ बीजं स्वरहा शक्तिः क्वी कीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे ष्टाभ्यां नमः ॥ शिङ्किनी हीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ चिक्रिणी हूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ गिदनी हैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ शिरणी कनिष्ठिकास्यां नमः ॥ त्रिज्ञूलघारिणी ह्नः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ हृदयादि ॥ हंसिनी ह्नां हृदयादि नमः ॥ शङ्किनी ह्नीं शिरसे स्वाहा ॥ चिक्रणी हूं शिखाये वषद्॥गदिनी हैं कवचाय हुम्॥शरिणी हों नेत्रत्रयाय य वौषद् ॥ त्रिज्ञूलधारिणी हःअस्राय फट् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः ॥ अथ ध्यानम् ॥अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान्सुधनुष्कशूलमथं कर्तरीं दधाना॥भजतां महि षोत्तमाङ्गसंस्था नवदूर्वासदशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥ ३ ॥ हेमप्ररूयामिन्दुखण्डान्तमीलि शङ्कारिष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ॥ हेमाब्जस्थां

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२६॥

पीतवर्णी प्रसन्नां देवीं दुर्गी दिन्यह्रपां नमामि॥२॥ॐ सह नाववतु सह नौ अनक्तु सह वीर्य करवावहै तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ॐ हरिःॐ॥अथ पञ्चपूजा ॥ॐछं पृथिन्यात्मने गन्य समर्पयामि॥ॐहंआकाशात्मने पुष्पं समर्पयामि ॥ॐयं वाध्वात्मनेधूपंसमर्पयामि ॥ॐः रं अग्न्यात्मने दीपं समर्पयायि॥ॐवं अमृतात्मने अमृतनैवेद्यंसमर्पयामि ॥ ॐ हिं श्रीं उत्तिष्ठ पुरुष किं स्विपिष भयं मे समुपस्थितम् ॥ यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा ॥ ॐ नमश्चिष्टकाये नमः ॥ हेतुकं पूर्वपिठे तु आग्नेय्यां त्रिपुरान्तकम् ॥ दक्षिणे चाम्निवैतालं नैर्ऋत्यां यमजिह्नकम् ॥ ४ ॥कालाल्यं वारुणे पीठे वायन्यां तु करालिनम् ॥ उत्तरे एकपादं तु ईशान्यां भीमह्रिपणम् ॥ ६ ॥ आकाशे तु निरालम्बं पाताले नलम् ॥ यथा त्रामे तथाऽरण्ये रक्ष मां बहुकस्तथा ॥ सर्वमंगलमाङ्गरूये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये ज्यम्बके गौरि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गीय नमः ॥ प्रयोगविषये ब्राह्मण्ये नमः ॥ वारुणि खल्वि माहेश्वर्ये नमः ॥ कुल्यवासिनैय कुमारिण्ये नमः ॥ जयन्तीपुरलाहिनाराहिण्ये नमः ॥ अष्टमहाकालि माहेश्वर्ये नमः ॥ चित्रकूट इन्द्राण्ये नमः त्रिपुरब्रह्मचारिण्ये नमः ॥ एकवृक्षञ्जभिण्ये महालक्ष्म्ये नमः ॥ त्रिपुरब्रह्माण्डनायक्ये नमः ॥ एतानि क्षं क्षं त्रेलोक्यवशंकराणि ॥ बीजाक्षराणि ॐ ह्रीं कुरु कुरु हुंफट् स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सकलनरमुखभ्रमरीम् ॥ ॐ क्वीं ह्रीं सकलराजमुखभ्रमरीम् ॥ ॐ कीं सीं सकलदेवतामुख अमरीम्॥ॐ क्वीं क्वीं सकलकामिनीमुखश्रमरीम् ॥ ॐ ई सौः सकलदेशमुखश्रमरीम् ॥ इसकफ्रें त्रैलोक्यचित्तश्रमरीम् ॥ ॐ क्षं क्षां क्षि

डपा.स्त. ३ हुर्गा.

॥२६।

धान्यकरी बलकरी यशस्करी विद्याकरी उत्साहबलवर्धिनी भूतानां विजृम्भिणी स्तम्भिनी मोहिनी द्राविणी सर्वभन्त्रप्रभिनी सर्व विद्याप्रभेदिनी सर्वज्वरोत्सादकरी ऐकाहिकं द्रचाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकमर्द्धमासिकं मासिकं द्रिमासिकं त्रिमासिकं षाण्मासिकं सांवत्सरिकं वातिकं पैत्तिकं श्लैिष्मकं सान्निपातिकं सन्ततज्वरं शीतज्वरम् उष्णज्वरं विषमज्वरं तापज्वरं च गण्डमालालूततालु वर्णानां त्रासिनी सर्पाणां त्रासिनी सर्वान् त्रासिनी शिरःशूलाक्षिशूलकर्णशूलदन्तशूलबाहुशूलहद्दयशूलकुक्षिशूलपक्षशूलगुद्शुल गुल्मशूळिङ्कशूळयोनिशूळपादशूळसर्वाङ्कशूळिवस्फोटकादि इति आत्मरक्षा परोक्षरक्षा प्रत्यक्षरक्षा अग्निरक्षा अघोररक्षा वाग्रु रक्षा उदकरक्षा महान्धकारोहकाविद्युद्निलचरोशस्त्रास्त्रं मां रक्ष रक्ष स्वाहा ॥ महादेवस्य तेजसां भयंकराविष्टदेवता बन्धयामि पन्था तुगतचौराद्रक्षते बन्धकस्य कण्टकं बन्धयामि महादेवस्य पञ्चर्शार्षेण पाणिना महादेवस्य तेजसा सर्वश्रूलान् कहिपङ्गलेन कण्टक मयरुद्राङ्गी ॐ अं आं मातङ्गी इं ई मातङ्गी उं ऊं मातङ्गी ऋं ऋं मातङ्गी ॡं ॡं मातङ्गी एं ऐं मातङ्गी ओं औं मातङ्गी अं अः मातंगी स्वर स्वरब्रह्मदण्ड विश्वर विश्वर रुद्भदण्ड प्रज्वल प्रज्वल वायुदण्ड प्रहर प्रहर इन्द्रदण्ड भक्ष भक्ष निर्ऋतिदण्ड हिलि हिलि यमदण्ड नित्योपवादिनि हंसिनी शिङ्किनी चिक्रिणी गदिनी ज्ञूलिनी त्रिज्ञूलधारिणी हुंफर स्वाहा ॥ आयुर्विद्यां च सौभाग्यं धान्यं च धनमेव च ॥ सदा शिवं पुत्रवृद्धिं देहि मे चिण्डिके शुभे ॥ ९ ॥ अथातो मनत्रपादा भवन्ति ॥ ॐ छायायै स्वाहा ॥ चतुरायै स्वाहा ॥ इलि स्वाहा ॥ पीलि स्वाहा ॥ पिलि स्वाहा ॥ हरं स्वाहा ॥ हरहरं स्वाहा ॥ गन्धर्वाय स्वाहा ॥ गन्धर्वाधिपतये स्वाहा ॥ यक्षाय स्वाहा ॥ यक्षाधिपतये स्वाहा ॥ रक्षसे स्वाहा ॥ रक्षोऽधिपतये स्वाहा ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐभ्वः स्वाहा ॥ ॐस्वः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ उल्कामुखी स्वाहा ॥ रुद्रमुखी स्वाहा ॥ रुद्रजटी स्वाहा ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रतेजसे स्वाहा ॥ या इमा भूतप्रेतिपशाचराक्षसनवग्रहभूतवेतालशािकनीडािकन्यः कूष्माण्डवासश्चत्वारो राजपुरुषः कलहपुरुषो वा तेषां दिशं बन्ध यामि ॥ दुर्दिशो बन्धयामि ॥ इस्तौ बन्धयामि ॥ चक्षुषी बन्धयामि ॥ श्रोत्रे बन्धयामि ॥ जिह्वां बन्धयामि ॥ त्राणं बन्धयामि ॥

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२७॥

चुद्धि बन्धयामि ॥ गति बन्धयामि ॥ मति बन्धयामि ॥ अन्तरिक्षं बन्धयामि ॥ आकाशं बन्धयामि ॥ पातालं बन्धयामि ॥ यममुखेन पश्चयोजनविस्तीर्णं बन्धयामि॥ रुद्रो बधातु॥ रुद्रमण्डलं हुरूद्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं रुद्रमण्डलं प्रत्यक्ष बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याकम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसपीसहव्याजामि ममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां हीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्रीं कीं हुंफर् स्वाहा ॥ ज्यम्बकं यजामहे सुगन्धि प्रष्टिवर्धनम् ॥ उर्वे रिकमिव बन्धनान्मृत्योर्धक्षीय माऽमृतात् ॥ १० ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अश्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मदिषो जिह अव ब्रह्मदिषो जिह १९॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि देवता ऐरावतारूढो हेमवर्णो वज्रहस्त इन्द्रो बधातु ॥ इन्द्रमण्डलमिन्द्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यचिदेवतासहितमिन्द्रमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याकम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसपीमहच्याम्नामि ममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ ह्रां हीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं यों आं हीं कीं हुंफट् स्वाहा॥ १ ॥ इन्द्रं वी विश्वतस्पिर हवामहे जनेभ्यः॥ अस्माकमस्तु केवलः॥१॥वर्षन्तु ते विभाविर दिवो अश्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विपो जिह अव ब्रह्मद्विषो जिहा।।।। ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय आग्नेय्यां दिशि अग्निर्देवता मेषारूढो रक्तवणौ ज्वालाहस्तोऽग्निर्वध्रातु ॥ अग्निमण्डलमंत्रिः सहपरिवारो देवताप्रत्यिषदेवतासहितमण्डलं प्रत्यक्षं वन्ध यम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचल मचलमाजम्याकम्य महावज्रकवचायाद्वाय राजचौरसपीसंहन्यात्राग्रिममसवौपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रीं क्वीं क्खें त्रों आं हीं कीं हुफट् स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अग्निं दूत वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ॥ अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अश्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रश्नद्विषो जिहे अव ब्रह्मद्विषो जिहे ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भग वते रुद्राय ॥ याम्यां दिशि यमो देवता महिषारूढो नीलवर्णो दण्डहस्तो यमो बधातु यममण्डलं प्रत्यक्ष बन्ध बन्ध सम सपिर

डपा.स्त. **३** हुर्गा. अ० १२८

वारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याकम्य महावज्रकवचायात्राय राजचौरसर्पसिंहव्यात्राग्रिममसर्वोपद्वनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्रीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रीं हुंफट् स्वाहा॥३॥ॐ यमाय सोमं सुनुत यमाय ज़हुता हविः॥यमं ह यज्ञो गच्छत्यिघृतो अरंकृतः ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अश्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मदिषो जिह अव ब्रह्मदिषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ नेऋत्यां दिशि निर्ऋतिमण्डलं निर्ऋतिःसहपरिवारो देवताप्रत्यि देवतासहितं निर्ऋतिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्धं बन्धं सम संपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याकम्य महावज्ञ कवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्याघायिममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हुं श्रीं क्रीं क्लुं प्रों आं ह्रीं कीं हुंफट् स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुईणावधीत ॥ पदीष्ट तृष्णया सह ॥ ३ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अश्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जिह अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वारुण्यां दिशि वरुणो देवता सकराह्नढः श्वेतवर्णः पाशहस्तो वरुणो बधातु वरुणमण्डलं वरुणः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्हितं वरुण मण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौर सर्पिंहच्यात्राग्निममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हुं श्रीं क्वीं क्लुं त्रों आं ह्रीं क्रीं हुंफट् स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ इमं भे० ॥ ९ ॥ तत्त्वा यामि॰ ॥ २ ॥ वर्षनतु ते विभावरि दिवो अश्रस्य विद्यतः॥रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जिह अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥३॥ ॐ नमी भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमी भगवते रुद्राय ॥ वायन्यां दिशि वायुर्देवता मृगारूढो धूम्रवर्णो ध्वजहस्तो वायुर्वभातु वायु मण्डलं वायुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं वायुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्धं बन्धं सम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचल मचलमाकम्याकम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसपेसिंह न्याबाग्निममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्वीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्रीं हुंफर स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भत ॥ आवाँस्या वृणीमहे ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो

खु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२८॥

अश्रस्य विद्युतः ॥ रोइन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जिह अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्दाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौबेर्या दिशि कुबेरो देवता अश्वाह्मढः पीतवर्णो गदाङ्कुशहस्तः कुबेरो बन्नातु कुबेरमण्डलं कुबेरः सहपरिवारो देवता प्रत्यधिदेवतासिहतं कुबेरमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध वन्ध मम सहपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याकम्य महा वज्ञकवचायास्त्राय राजचौरसपीसिहः यात्रान्निमसवौपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां हीं हूं श्रीं क्रीं क्लुं श्रों आं हीं कीं हुंफ्ट् स्वाहा ॥ ७॥ ॐ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाञ्चं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ॥ साद्न्यं विद्ध्यं सभेयं पितृश्रवणं यो देदाशदस्म ॥ १॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अश्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जिह अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ईशानो देवता वृषाहृढः स्फटिकवर्णस्त्रिशूलहस्त ईशानो बन्नातु ईशान मण्डलमीशानः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितमीशानमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध सम सपारिवारकस्य रक्ष अचलमचलमाक्रम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहन्यात्राग्निममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ द्वां द्वीं हूं श्रीं क्वीं क्लं यों आं हीं कीं हुंफर् स्वाहा॥ ८॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वसवसे हुमहे वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामस इधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अश्वस्य विद्यतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जिह अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ उध्वीयां दिशि ब्रह्मा देवता इंसाह्दो रक्तवर्णः कमण्डलुहस्तो ब्रह्मा बधातु ब्रह्ममण्डलं ब्रह्मा सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं ब्रह्ममण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवार कस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याकम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसपीसहव्यात्राग्रिममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं इतें क्छुं श्रें आं ह्रीं कीं हुंफर स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विपाणां महिषो भृगा णाय ॥ श्येनो गुधाणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अश्रस्य विद्युतः ॥

उपा.स्त. ३ दुर्गा.

रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्मद्विषो जिह अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ३॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अधस्तादिशि वासुकिदैवता कूमारूढः पद्महस्तो वास्तुकिः बधातु वासुकिमण्डलं वासुकिः सहपरिवारो देवताप्रत्यिघेदेवता सहितं वासुकिमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याकम्य महावज्रकवचाया स्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्यात्राग्निममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्वां ह्वीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं प्रों आं ह्वीं कीं हुंफट् स्वाहा ॥ १०॥ ॐ नमो अस्तु सर्पेभ्यो॰ ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अश्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्वबीजान्यव ब्रह्माद्विषो जिह अव ब्रह्माद्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अवान्तरस्यां दिशि विष्णुर्देवता गरुडाह्रदः श्यामवर्ण श्रकहरतो विष्णुर्बभ्रातु विष्णुमण्डलं विष्णुः सहपरिवारो देवताप्रत्यधिदेवतासहितं विष्णुमण्डलं प्रत्यक्षं बन्ध बन्ध मम सपरिवार कस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याकम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसपीसिंहव्यात्राग्रिममसवीपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्वीं क्लुं प्रों आं ह्रीं क्वीं हुंफट् स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे० ॥ १ ॥ वर्षन्तु ते विभाविर दिवो अभ्रस्य विद्युतः ॥ रोहन्तु सर्ववीजान्यव ब्रह्मद्विषो जिह अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि इन्द्रः सहपरिवारो देवताप्रत्यिषदेवतास्ति दिश्च त्रिशूलको नाम राक्षसः शाकिनीडाकिनीकािकनी हाकिनीयाकिनीराकिनीवैतालकामिनीयहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याकम्य महा वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंहव्यात्राग्रिममसर्वोपद्रवनाशनाय 🖟 ॐ ह्वां हीं हूं श्रीं क्लीं क्लुं श्रों आं हीं कौं हुंफट् स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ वर्षन्तु ते॰ बीजान्यव ब्रह्मद्विषों जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ आग्नेथ्यां दिशि अग्निः सहपरिवारो देवताप्रत्यिवेवतास्ताद्विश्च मारीचको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिभूतप्रेतिपशाचब्रह्मराक्षसशाकिनी डािकनीकािकनीहािकनीयािकनीवैतालकािमनीयहान् बन्धयामि मम सहपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक

बृ.स्त्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२९॥

राजचौरसर्पसिंहच्यात्राग्रिममसर्वोपद्वनाशनायः॥ ॐ हां हीं हूं श्री क्वीं क्लुं प्रों आं हीं क्रौं ॐ वर्षन्तु ते० द्विषो जिहि ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्दाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्दाय ॥ याम्यां दिशि देवताप्रत्यधिदेवतास्ति हिक्षु एकपिङ्गलको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिभूतप्रेतिपशाचन्नहाराक्षसशाकिनी नीहाकिनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनीयहान् बन्धयामि सम सपरिवारकस्य सर्वतो मां जिकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह न्यात्राग्रिममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ हां हीं हूं श्रीं क्वीं क्लुं श्रों आं हीं कीं हुंफद्र ते॰ द्विषो जिंद ॥२॥ ॐ नमो भगवते रुद्दाय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्दाय ॥ नैऋत्यां दिशि परिवारो देवताप्रत्यधिदेवतास्तिहिश्च सत्यको नाम राक्षसस्तस्य अष्टादशकोटिभूतप्रेतिपशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडािकनीकािकनीहा किनीराकिनीयाकिनीवैतालकामिनीयहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष चौरसर्पसिंह व्याचामिममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ हां हीं हूं श्रीं क्वीं क्लुं ॐ वर्षन्तु ते॰ द्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते कहाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते कहाय ॥ प्रतीच्यां दिशि वर्राणः सहपरिवारे देवताप्रत्याधिदेवतास्तिहिश्च लम्बको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतिपशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनी याकिनीवैतालकामिनीत्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां स्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्याचाग्रिममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ हां हीं हूं श्रीं छीं क्लुं श्रों औं हीं कीं हुंफट् स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ वर्षन्तु ते॰ द्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायन्यां दिशि वायुः सहपरिवारो देवता राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनीहाकिनीराकिनी याकिनीवैतालकामिनीयहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष

उपा.स्त. ह दुर्गा. अ० १२८

स्राय राजचौरसपेसिंह व्यात्राग्रिममसवीपद्वनाशनाय ॥ ॐ हां हीं हूं श्री क्वीं क्लुं श्रीं आं हीं कीं हुंफट् स्वाहा ॥ ६ ॥ वर्षनतु ते दिषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते हृदाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते हृदाय चिद्वतास्ति दिश्च अश्वालको नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिश किनीवैतालकामिनीग्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो राजचोरसपसिइच्यात्राग्रियमसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय उन्मत्तको नाम रासक्षसस्त० शाकिनोडाकिनीका सपरिवारकस्य सर्वतो मां स्त्राय राजचौरसर्पसिंहन्यात्राप्रिममसर्वोपद्वनाशनाय ॥ ॐ हां हीं हुं श्रीं क्वीं क्लुं द्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्धाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्धायः।। ॐ उध्वीयां दिशि देवताश्रह्यधिदेवतास्ति हिश्च आकाशवासी नाम राक्षसस्तरयाष्ट्रादशकोटिभूतप्रेतिपशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकािकनीहािकन चौरसपेसिंहन्यात्राशियमसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ हां हीं हूं श्रीं क्वीं क्लुं श्रों आं हीं कीं हुंफट्र स्वाहा वर्षन्तु ते॰ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अधस्ताहिशि वीसुकिः सहपरि पातालवासी नाम राक्षसस्तस्याष्टादशकोटिभूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनीकाकिनी किनीवैतालकामिनीत्रहान् बन्धयामि मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाक्रम्याकम्य महा **इ.ज्ज्यो**.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥३०॥ वज्रकवचायास्त्राय राजचौरसर्पसिंह व्यात्राश्चिममसर्वोपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं श्रीं क्वीं क्खं श्रों आं ह्रीं क्वीं हुंफट् स्वाहा ॥ १०॥ ॐ वर्षन्तु ते० अव ब्रह्माद्विषो जिह ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्धाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्धाय ॥ अवान्तरस्यां दिशि विष्णुः सहपरिवारो देवताष्ट्रत्यचिदेवतास्ति हिश्च महाभीमको नाम राक्षसस्तस्याचादशकोटिभूतप्रेतिपशाच ब्रह्मराक्षसशािकनीडािकनीकािकनीहािकनीरािकनीयािकनीवेतालकािमनीत्रहान् बन्धयािम मम सपरिवारकस्य सवतो मां रक्ष रक्ष अचलमचलमाकम्याक्रम्य महावज्रकवचायास्त्राय राजचौरसपींसिंह व्याचािममसवींपद्रवनाशनाय ॥ ॐ ह्रां हीं हूं श्रीं क्वीं क्छं प्रों आं हीं क्रीं हुंफट् स्वाहा ॥ १९ ॥ ॐ वर्षन्तु ते० अव ब्रह्मद्विषो जिहा। २॥ ॐ नमो भगवते रुद्धाय नमः ॥ नमो भगवते रुद्राय ॥ प्राच्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते रक्ष हुंजरी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ आग्नेट्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते अग्निज्वां सम सपरिवारकस्य स्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजरी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ याम्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते यमकालदण्डहस्ताभ्यां मम इन्द्राणिवज्रहस्ताभ्यां सपरिवारकस्य सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नैऋत्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते निऋतिखङ्गकंकालहरूताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वारुण्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते वारुणिपाश हस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः॥ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ वायव्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते वायविवेधहरूताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ कौबेर्यो दिशि ॥ ॐ नमो भगवते

उपा.स्त. है दुर्गी. अ० ११८

कौवेरीगदांकुशहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ईशान्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते ईशानित्रिश्च्लडमरुहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ उध्वां यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते ब्रह्माणि सुक्सुवकमण्डल्वक्षसूत्रांकुशहस्तैः मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ नमो भगवते पातालवासिनि विषगलहस्ताभ्यां मम सपरिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ अवान्तरस्यां दिशि ॥ ॐ नमो भगवते श्रीमहालक्ष्मीपद्माह्नढा पद्महस्ताभ्यां मम सपारिवारकस्य सर्वतो मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ शिरो रक्षतु ब्रह्माणी मुखं माहेश्वरी तथा ॥ कण्ठं रक्षतु वाराही ऐन्द्री चैव भुजद्वयम् ॥ १॥ चामुण्डा हृद्यं रक्षेत्कुक्षि रक्षेच वारुणी ॥ वैष्णवी रक्ष पादी मे पृष्ठदेशे धनुर्धरी ॥ २ ॥ यथा त्रामे तथा क्षेत्रे रक्षस्व मां पदे पदे ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये ज्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ ॐ ब्राह्मि माहेश्वारे कीमारि वैष्णवि वाराहि इन्द्राणि चामुण्डे सिद्धचामुण्डेश्वारि गणेश्वारि क्षेत्रपाल नारसिंहि महालिक्ष्म सर्वतो दुर्गे हुंफट् स्वाहा॥ ॐ ऐं हीं श्रीं दुं हुंफट् ॥ कनकवत्रवेदुर्यमुक्तालंकृतभूषणे एहि एहि आगच्छ आगच्छ मम कर्णे प्रविश्य भूतभविष्यवर्तमानकालज्ञानदूरदृष्टिदूरश्रवणं बहि बहि अग्निस्तम्भनशत्रुस्तम्भनशत्रुमुखस्तम्भनशत्रुगतिस्तम्भन शत्रुमतिस्तम्भनपरेषांगतिसर्वमतिशत्रूणां वाग्जृम्भणं स्तम्भनं कुक् कुक् शत्रुकार्यहानिकरि मम कार्यसिद्धिकरि शत्रूणामुद्योगविध्वंस करि वीरचामुण्डि निहाटकहाटकधारिणी नगरीपुरीपट्टणआस्थानसंमोहिनी असाध्यसाधिनी ॥ ॐ हीं श्रीं देवि हन हुंफट् स्वाहा ॥ ॐ आं ह्रीं सौं ऐं क्लीं हूं सौः छीं श्रीं कौं एहि एहि श्रमराम्बा हि सकलजगन्मोहनाय मोहनाय सकलाण्डजपिण्डजान् श्रामय २ जरा

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥३१॥ प्रजावशंकारे संमोहय संमोहय महामाये अष्टादशपीठरूपिण अमलवरयं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर कोटिसूर्यप्रभाभासारे चन्द्रजटी मां रक्ष रक्ष मम शत्रून भस्मीकुरु मस्मीकुरु विश्वमोहिनी हुं क्लीं हुं हुंफर स्वाहा।।ॐनमो भगवते कामदेवाय इन्हाय वसाबाणाय इन्ह्र संदीपवाणाय कलीं क्लीं संमोहनबाणाय ब्लूं ब्लूं संतापनबाणाय सःसः वशीकरणवाणाय कम्पित कि पत हुंफर स्वाहा।।क्लीं नमो भगवते कामदेवाय श्रीं सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय उवल जवल प्रज्वल प्रज्वल हन इन वद वद तप तप संगोहय संमोहय सर्व जनं मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ।। ॐ ह्रां श्रीं व्लीं क्ष्में ह्स्त्रीं सहस्राराय हुंफर स्वहा ।। ॐनमो विव्लवे ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ ॐ जय जय गोपीजनवछभाय स्वाहा ॥सहस्रार ज्वालावर्त क्ष्म्प्री हन हन हुंफट्ट स्वाहा ॥ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भगी देवस्य धीमिह ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ श्रीमन्नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ श्रीमते नारायणाय नमः ॥ उन्नवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोष्ठित्वम् ॥ नृसिहं भीषणं भृदं वृत्युवृत्युं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥ भगवन् सर्वविजय सहस्राग्य राजित् ॥ शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि श्रीकरं श्रीसुदर्शनम् ॥५॥ अरुणी वारुणी चैत्र सविब्रह्निवारिणी ॥ सर्वकर्मकारे ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ भुवः स्वाहा ॥ ॐ स्वः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ अष्टी ब्राह्मणान् सम्यक् ब्राह्मित्वा ॥ततो महाविद्या सिध्यति ॥ अशिक्षितं नोपयुत्रीत ॥ अहं न जाने न च पार्वतीश एकविंशतिवाराणि परिजाप्य शुचिभवेत् ॥ ६ ॥ पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् स्त्रियो वा पुरुषोऽपि वा ॥ अवश्यं वशिमत्याहुरात्मना च परेण वा ॥ ७ ॥ महाविद्यावतां पुंसां मनः क्षेत्रं करोति यः ॥ सप्तरात्रौ व्यतीतायां शत्रूणां तद्विन श्यित ॥८॥ ॐ कुबेर ते मुखं रोइं निन्दमानिन्दमावह ॥ ज्वरं मृत्युभयं घोरं विषं नाशय मे ज्वर ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते रहाय अहताभिवर्षाय मम ज्वररोगशांति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ कालकाल महाकाल कालदण्ड नमोऽस्तु ते ॥ कालदण्डनिपा तेन भूम्यामन्तर्हितं ज्वरं हन्ति ॥ लिखित्वा यस्तु पश्चिति समुद्रस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम सक्षसस्तस्य मूत्रपुरीषाभ्यां हुताशनं । शमय शमय स्वाहा ॥ हिमवत्युत्तरे पार्श्वे चपला नाम यक्षिणी ॥ तस्यां नूपुरशब्देन विशल्या भव गर्भिणी ॥ जातवेदसे सुन

डपा.स्त. ३ हुर्या. स्व० १२८

वाम सोममरातीयतो निद्दाति वेदः ॥ स नः पर्षद्वि दुर्गाणि विश्वा नावैव सिन्धुं दुरिताऽत्यिशः ॥ १०॥ भास्कराय विद्यहे महद्युतिकराय धीमहि ॥ तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो केषस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ प्रतिकूलकास्णि नश्येत् ॥ अनुकूलकारिणी अस्तु ॥ महादेवी च विद्यहे विष्णुपत्नी च धीमहि ॥ तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२॥ॐ ब्रुं हीं श्रीब्रह्मकोशजी मां रक्ष रक्ष हुंजटी स्वाहा॥पश्चम्यां च नवम्यां चदशम्यां च विशेषतः॥ पठित्वा तु महाविद्यां श्रीकामः सर्वेदा पठेत् ॥ ११ ॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ श्रीमें भजतु ॥ अलक्ष्मीमें नश्यतु ॥ यदन्ति यञ्च दूरके भयं विन्दति मामिह ॥ पवमानवितज्जिहि ॥ यदुत्थितं दुःखं भवति तत्सर्व शमय शमय स्वाहा॥ॐ गायञ्ये स्वाहा॥ॐ साविञ्ये स्वाहा॥ॐ सरस्वत्ये स्वाहा ॥ ततपुरुषाय विद्यहे सहस्राक्षाय धीमहि ॥ तन्न इन्द्रः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ४ ॥ तत्पुरुषाय विद्यहे वकतुण्डाय धीमहि ॥ तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥५॥ तत्पुरुषायं विद्यहे चऋतुण्डाय धीमहि॥ तन्नो निन्दः प्रचोदयात्॥ ६॥ तत्पुरुषाय विद्यहे महासेनाय धीमहि॥ तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ॥ ७ ॥ तत्पुरुषाय विद्यहे सुवर्णपक्षाय धीमहि ॥ तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि॥ तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्॥ ९॥ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ १०॥ मन्मथेशाय विद्यहे कामदेवाय धीमहि ॥ तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात् ॥ ११ ॥ वज्रनखाय विद्यहे तीक्ष्णद्र ष्ट्राय धीमहि ॥ तत्रो नारसि रहः प्रचोदयात् ॥ १२ ॥ भास्कराय विद्यहे महद्द्युतिकराय धीमहि ॥ तत्रो आदित्यः प्रचोदयात् ॥ १३ ॥ वैश्वानराय विद्यहे लालीलाय धीमहि॥ तन्नो अग्निः प्रचोदयात्॥ १४॥ कात्यायनाय विद्यहे कन्यकुमारि धीमहि॥ तन्नो डुगिः प्रचोदयात ॥१५॥ सहस्रपरमा देवी शतमूला शतांकुरा ॥ सर्व इस्तु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशिनी ॥ १२ ॥ काण्डात्काण्डात्परो इन्ती॰ ॥ अश्वकान्ते रथकान्ते विष्णुकान्ते वसुंधरे ॥ शिरसा धारिबिष्यामि रक्षस्य मां पदे पद ॥ १३ ॥ अत्रिणा त्वा किमे हिनम

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥३२॥ कण्वेन जमदिश्रना ॥ विश्वावसोन्नेह्मणा हतः कृमीणा राजा अप्येषा स्थपितहितः ॥ अथो माताऽथो पिता अथो स्थूरा अथो श्रुहाः अथो कृष्णाः अथो श्रेताः अथो आशातिका हताः श्वेतािभः सह सर्वे हताः आहरावद्य श्रुतस्य हिवणो यथा तत्सत्यं यद्मुं यमस्य जम्भयोः आदिधािम तथा हितत्॥ खण्फण्ञ्रसि ब्रह्मणा त्वा शपािम ॥ ब्रह्मणस्त्वा शपथेन शपािम ॥ घोरेण त्वा भृगूणां चश्रुषा प्रेश्ते ॥ रौद्रेण त्वाऽङ्गिरसा मनसा ध्यायािम ॥ अघस्य त्वा धारया विध्यािम ॥ अघरो मत्पद्यस्वासौ उत्तुद्द शिमिजा विर तल्पेजे तल्प उत्तुद्द गिरी रजुपवेशय मरीचीरुपसंबुद यावदितः पुरस्तादुद्दयाित सूर्यः तावदितोऽमुं नाशय योऽस्माव् द्रिष्ट यं च वयं द्विष्मः खद्द फट् जिह छिन्धि भिन्धि हन्धि कट् इति वाचः क्रुराणि परिवाहिणीदं नमस्ते अस्तु मा मा हिस्सीः द्विष्मतं मेऽभिनाशय तं मृत्यो मृत्यवे नय अरिष्टं रक्ष अरिष्टं अञ्च भञ्ज स्वाहा ॥ ॐ हीं कृष्णवाससे नारसिंहवदे महाभैरिव ज्वल ज्वल विद्युज्ज्वलज्ज्वालाजिह्ने करालवद्ने प्रत्यिङ्गरे ६व्वीं ६म्यें नमी नारायणाय त्रिणुः सूर्यादित्यों सहस्रा हुंफट्॥अव ब्रह्म जिह ॥ सपौलूककाककङ्ककपोतादिवृश्चिकोयदंष्ट्राकरोयविषान्मे महाभूतप्रेतिपशाचब्रह्मराक्षससकलिकिषादिमहारोगविषा त्रिरोगविषं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अक्षिरपन्दं च दुःस्वप्नं भ्रुजस्पन्दं च दुर्मतिष् ॥ दुश्चिह्नं दुर्गतिं रोगं भयं नाशय शांकरि ॥ १८ ॥ महाविद्यां कृतवतो योस्माकं द्वेष्टि योऽिष्टं स्मरित यावदेकविंशति कृत्वा तावद्धिकं नाशय ॥ सेवेत यः सुधीः ॥ ऐहिकामुध्मिकं सीरुयं सिद्धचत्येव न संशयः ॥ १५॥ एनां विद्यां महाविद्यां यो दूषयति मानवः ॥ सो sवश्यं नाशमाप्नोति षण्मासाद्चिरेण वै ॥१६॥ अत्रतः पृष्ठतः पार्श्वे ऊर्ध्वतो रक्ष मे सदा ॥ चण्डघण्टा विरूपाक्षी त्वां भजे जग दीश्वरीम् ॥ १७ ॥ एवंविधां महाविद्यां त्रिसन्ध्यं स्तौति मानवः ॥ हञ्चा जनैर्दुष्टजनाः सर्वमोहवशं गताः ॥ १८ ॥ तामिश वर्णा तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ॥ दुर्गा देवीं शरणमहं प्रपद्य सुतरां दुःशमनाये नमः ॥ ५९ ॥ मातर्मे मधु कैटभिष्ठ महिषप्राणापहारोद्यमे हेलानिर्मितधूष्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डादिनि ॥ निःशेषीकृतरक्तबीजद्वुजे नित्ये निजुम्भागहे अस्म

उषा.स्त. इ दुर्गाः

ध्वंसिनि संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके ॥ २०॥ कालदण्डपरं मृत्युविजया बन्धयाम्यहम् ॥ पञ्चयोजनविस्तीणं मृत्योश्च मुख मण्डलम् ॥ तस्माद्रक्ष महाविद्ये भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥ अव ब्रह्मद्विषो जिह ॥ वारिजलोचनसहपारीगितं वारयासुरकर निकरैः पूरितमेघद्रुगानां दापितागोपकन्यके सहोद्रवतु॥अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धलक्ष्मी स्वाहा ॥ ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा चीरमात्मनः ॥ वासाः सि मम गावश्च अन्नपाने च सर्वदा ॥ ततो मे श्रिय आनिरियाय श्रियं वयो जिरतृभ्यो द्धाति ॥ श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ श्रिय एवैनं तिच्छ्यामाद्धाति संतत मृचा वषद्रकृत्यं संतत्यै संघीयते प्रजया पशुभिर्य एवं वेद ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्वीं क्लूं प्रों हुंफट् स्वाहा ॥ अव ब्रह्मद्विषो कि ॐ सह नाववतु सह नौ चुनकतु सह वीर्य करवावहै तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ इति श्रीह॰ बृहज्ज्यो॰ धर्मस्कन्ध उपा॰ स्त॰ श्रीदुर्गीपा॰ ध्याये अथर्वणरहस्योक्तश्रीनवदुर्गीपनिषन्निह्रपणं नाम सप्तदशं प्रकरणम् ॥ १७॥ अथ श्रीदुर्गोपनिषत् ॥ उक्तं चाथर्वशीर्षे ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः काऽसि त्वं महादेवि साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी मत्तः प्रकृति पुरुषात्मकं जगत् ॥ श्रुन्यं चाशुन्यं च अहमानन्दानानन्दौ अहं विज्ञानाविज्ञाने अहं ब्रह्मब्रह्मणी द्वे ब्रह्मणी वेदितन्ये इति वा आथर्वणश्रुतिः ॥ १ ॥ अहं पश्चभूतानि अहं पश्चतन्मात्राणि अहमखिलं जगत् वेदोऽहं विद्याऽहमविद्याऽहमजाऽहमनजाऽहमध तिर्यक्चाइमहं रुद्रैर्वसुभिश्चरामि अइमादित्यैरुत विश्वेदेवैः अहं मित्रावरुणावुभौ विभिम अहमिन्द्रामी अहमश्विनावुभौ अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं द्धामि अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्राजापत्यं द्धामि अहं द्धामि द्विण हिविष्मते सुप्रजाय यजमानाय सुन्व ते अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ॥ अहं सुवेपितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वा १ न्तः ससुद्वे य एवं वेद स देवीं संपद्माप्नोति ते देवा अब्रुवन् ॥ नमो देव्ये महादेव्ये शिवाये सततं नमः॥नमः प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ २ ॥ तामग्रिवर्णी तपसा ज्वलन्ती वैरोचनी कर्मफलेषु ज्रष्टाम् ॥ दुर्गी देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरां नाशयते नमः ॥ ३ ॥

ष्टु.ज्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥३३॥

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वस्तपाः पशवो वदन्ति ॥ सा नो मन्द्रेषमूर्जे द्वहाना घेर्नुवागस्मानुपसुष्टुतैतु ॥ कालरात्री ब्रह्म सुतां वेष्णवीं स्कन्दमातरम् ॥ सरस्वतीमदितिदश्चद्विहतरं ननाम पावनां शिवाम् ॥ महालक्ष्म्ये च विद्यहे सर्वशक्त्ये च धीमहि ॥ तन्नो देवा प्रचोदयात् ॥ अदितिर्द्यजनिष्ट दश्चया द्वहिता तव ॥ तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥ कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्ग्रहा हस्ता मातलिश्वायमिन्द्रः ॥ पुनर्ग्रहा सकला मायया चापृथक् त्वेशा विश्वमाताऽतिविद्या ॥ एषात्म पाशाङ्कुशघनुर्वाणघरा एषा श्रीमहाविद्या य एवं वेद स शोकं तरित नमस्ते भगवित मात्रस्मान्पा सेषा द्वादशादित्याः सेषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च सेषा यातुधाना वसवः सेषेकादश रुद्राः सेषा सत्त्वरजस्तमांसि सेषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी सेषा प्रजापतीन्द्रमनवः सेषा ब्रह कलाकाष्टादिकामरूपिणी तामहं प्रणौमि नित्यम् ॥ पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदाम् विजयां शुद्धां शरण्यां शारदां शिवाम् ॥ ४ ॥ वियदाकारसंयुक्तां वीतिहोत्रसमन्विताम् ॥ अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थ साधकम् ॥ ५ ॥ एवसेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्धचेतसः ॥ ध्यायन्ति परमानन्दं मम ज्ञानाम्बुराशयः ॥ ६ ॥ वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मा त्पृष्ठं चक्रसमन्वितम् ॥ सूर्यो वामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्ट्रतीयकः ॥ ७ ॥ नारायणेन संमिश्रो वायुश्राधारयुक् ततः ॥ विच्चे नवार्णकोण परमानन्ददायकः ॥ ८ ॥ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम् ॥ पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् ॥ ९ ॥ त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुहं भजे ॥ नमामि त्वां महादेवीं महासयविनाशिनीम् ॥ १० ॥ महादारिद्यशमनीं महाकारूण्यरूपि णीम् ॥ यस्याः स्वरूपं ब्रह्माद्या न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया यस्या अन्तो न लक्ष्यते तस्मादुच्यते अनन्ता यस्या गृहं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्याते एका एकैव विश्वरूपिणी तस्मादनेका अनन्ततपोवाच्यज्ञेयाऽन्ताऽलक्ष्याऽजैकाऽनैका ॥ मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी॥

डपा.स्त. **३** हुनी. अ० १२८

॥इइ॥

ज्ञानानां चिन्मयातीता श्रून्यानां शून्यसाक्षिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ तां दुर्गा देवीं दुराचार विघातिनीम् ॥ ११ ॥ नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवताारिणीम् ॥ य इदमथवैशिरसमोऽधीते स पञ्चाथवैशीर्षफलमवामोति ॥ इदे मथवैशीर्ष ज्ञात्वा योऽची स्थापयिति ॥ शतलक्षं प्रजप्तवाऽथ नार्चाशुद्धि च विन्दिति ॥ शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥ १२ ॥ दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते ॥ महादुर्गाणि तरित महादेग्याः प्रसादतः ॥ १३ ॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापंनाशयति ॥ सायंप्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति ॥ निशीथे तुरीय संध्यायां जप्तवा वाक्सिद्धिभवति ॥ नूतनायां प्रतिमायां जप्तवा देवतासान्निध्यं भवति ॥ प्रतिद्यायां प्राणानां प्रतिष्ठापयति भौमाश्विन्यां महादेवीसित्रिधौ जप्तवा महामृत्युं तरित महामृत्युं तारयित य एवं वेद ॥ इति श्री ह० वृ० घ० उपा० स्त० श्री दुर्गीपा॰ ध्याये श्रीदेव्युपनिषन्निरूपणं नाम अष्टादशं प्रकरणम् ॥ १८॥ अथ देवीमहिन्नस्तोत्रम् ॥ चन्द्रचूड उवाच॥ त्वमन्तस्त्वं पश्चा त्त्वमिस पुरतस्त्वं च परतस्त्वमूर्ध्वं त्वं चायस्त्वमिस खळुळोकान्त्रचरी॥त्विमिन्द्रस्त्वं चन्द्रस्त्वमिस निगमानामुपनिषत्तवाहं दासो ऽस्मि त्रिपुरहररामे कुरु कृपाम् ॥ १ ॥ इयान् कालः सृष्टेः प्रभृति बहुकप्टेन गमितो विना यत्त्वत्सेवां करुणरसकछोलिनि शिवे ॥ तदेतहीभीग्यं मम विषयतृष्णारुयरिषुणा हतः शुद्धानन्दं स्पृशिमि तव सिद्धेश्वरि पदम्॥ २॥ सुवाधारावृष्टेस्तव जननि दृष्टे विषयतां वयं यामो दामोद्रभगिनि भाग्येन फिलितम् ॥ इदानीं भूतानां भ्रुवमुपरि भूताः परमुदा न वाञ्छामो मोक्षं विपिन पथि कक्षं जरिद्व ॥ ३ ॥ जपादौ नो सक्ता हरगृहिणि भक्ताः करुणया भवत्या होमत्या कति कति न भावेन गमिताः ॥ चिदानन्दाकारं भवजलियारं निजपदं न ते मातुर्गभै जननि तव गभै यदि गताः ॥ ४॥ चिदेवेदं सर्व श्रुतिरिति भवत्याः स्तुतिकथा प्रियं भात्यस्तीति त्रिविधमपि रूपं तव शिवे ॥ अणुदीं इस्वं महदजरमन्तादिरहितं त्वमेव ब्रह्मासि त्वदपर मुदारं न गिरिजे ॥ ५ ॥ त्वयाऽन्तर्यामिन्या भगवति वशिन्याऽऽदिसहिते विधीयन्ते भावा मनिस जगतामित्युपनिषत् ॥ अहं

बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥३४॥

कर्तित्यन्तर्विशत मम बुद्धिः कथमुमे सबुद्धिस्त्बद्धको न भवति कुबुद्धिः किचिद्गि ॥ ६ ॥ न मन्त्रं तन्त्रं वा किमिप खलु विद्यो गिरिम्रिते क यामः किं कुर्मस्तव चरणसेवा न रचिता ॥ अये मातः प्रातः प्रभृति दिवसास्तावधि वयं कुबुध्याऽहंकार्यी शिव शिव न यामो निजवयः ॥७॥ इहामुिष्मछोके ह्यपि न विषये प्रेमकरवे न मे वैरी किश्चद्भगवित भवानि त्रिभुवने ॥ गुणात्रामाधारं निगम गणसारं तव पदं मनो वारंवारं जपित च विनोदं च भजते ॥ ८ ॥ महामाये काये मम भवति याद्दक्खलु मनो मनस्ते संख्याने न हि ताद्दक्षथमुमे ॥ त्वमेवान्तर्मात्रानिगमयसि बुद्धि त्रिजगतां न जाने श्रीजानेरिप न विदितस्तेऽत्र महिमा ॥ ९ ॥ अमीषां वर्णानां ऋतुकरणसम्पूर्णवयसां निकाम्यं कान्यानामुरिस समुदायं प्रकटितम् ॥ स्तनौ मेहः मत्वा स्थिगित ममृतोपाष्यमुभयं दयाधाराधारं मम जनि हारं तव भजे ॥ १० ॥ स्तनद्वन्द्वं स्कन्दद्विपमुखमुखे यतस्तुतमुखं कदाचिन्मे मात र्वितरतु मुखे स्तन्यकणिकाम् ॥ अनेनायं धन्यो जगदुपरि मान्योऽपि भवतां कुषुत्रे सत्पुत्रे न हि भवति मांतुर्विषमता ॥ ११॥ जगन्मूलं शुलं ह्यनुभवित कूलं कथिमदं द्विधाकुर्वे सर्वेश्विरि मम तु गर्वेण फलितत् ॥ पदद्वन्दं द्वन्द्वं व्वतकरहरं द्वनद्वसुखदं गुणा रामे रामे कलय हिंदि कामेश्वारि सदा ॥ १२ ॥ अहोरात्रं गात्रं समजिन न पात्रं मम मुदा धनायत्तं चित्तं तृणमिष तु निश्चित्त मभवत् ॥ इदानीमानीता कथमपि भवानी हृदि मया स्थितं मन्ये धन्ये पथि कथमधन्येह मुचितः ॥ १३ ॥ निराकारामाराद्धि हृद्यमाराधितवता मया मायातीता सितसकलकायापहतये ॥ अहं कोऽहं सोऽहं मितिरिति विमोहं हतवित कृताहन्तानन्तामुपनयित सन्तानकवति ॥ १४ ॥ त्वदंत्रेहृह्योताद्हृणकिरणश्रेणिगमनात्समुद्भृता ये ये जगति जयिनः शोणमणयः ॥ त एते सर्वेषां शिरसि विदुषां भान्ति भुवने त्वदीयादन्यः को भवति जनवन्द्योऽद्य गिरिजे ॥ १५ ॥ अकार्षीत्सोऽमर्षी भुवनभपरं गाधितनयः शशा पान्यो लक्ष्मीमपिबदपरो हार्णविमिति ॥ सपर्यामाहात्म्यं तव जनि ताद्दात्म्यफलदं कियद्वक्ष्ये यक्षेश्वरिकरणदत्तं भगवित ॥ १६ ॥ यतो मञ्जकतया शिवोऽप्यच्छच्छायारचितक्रचिरप्रच्छद्तया ॥

उपा.स्त. । दुर्गाः अ० १२८

वामाङ्कनिलया परब्रह्मस्फूर्तिस्तव जयति सूर्तिः सकरुणा ॥१७॥ समुद्धतुं भक्तान् विभ्नेति विहर्तु जगदिदं गति वायोर्वद्ध्वा विनि मयति रूपं च नियमात् ॥ यहच्छा यस्येच्छा न च भजनविच्छेद्भयतो नमस्ते भक्ताय ध्रुवभजनसक्ताय गिरिजे ॥ १८ ॥ उमा माया माता कमलनयना कृष्णभगिनी भवानी दुर्गाऽम्बा मितरमरलक्ष्मीति तरला ॥ महाविद्या देवी प्रकृतिरजजायेति जपतां भवन्ति श्रीविद्य तव जननि नामानि निधयः ॥ १९॥ दिशां पाला बाला इंरहरिसरोजासनमुखास्त्वया दुर्गे सर्वे कित कित न भक्ता अधिकृताः ॥ स्वयं रक्ता भक्तावहमधिकृतो नाधिमगमं सुखे वा दुःखे वा मम समतया यान्तु दिवसाः ॥ २०॥ भवत्या भक्तानां यदि किम्पि कश्चिद्धिधिकृते पुरो वा पश्चाद्वा कपटदुरितेर्षापरवशः ॥ जनश्चेत्संन्यासाद्पि जपित नारायणपदं ततोऽप्येनं देवी नयनपथवीथीं गमयति ॥ २१ ॥ किया वा कर्ता वा करणमपि वा कर्म यदि वा प्रणीयन्ते चेष्टा जगित पुरुषैर्भावकळुषैः ॥ समर्प्य स्वात्मानं तव तु पदयोरिन्द्रपदवीमिदं वा तद्विष्णोर्गणयति न भक्तोऽयमचलः ॥ २२ ॥ स्वयं माया कार्याद्यदयकरणे वती शिवादीनां सर्गस्थितिविलयकर्माणि बिभृषे ॥ अयं भक्तो नाम्ना भगवति शुभः स्यात्तव यदा भवान्या भक्तानामशुभमपरं तेऽपि न कृतम् ॥२३॥ धरित्री ह्यम्भोधिस्त्वमपि दहनस्त्वं च पवनस्त्वमाकाशस्त्वं च ग्रसति पुरुषस्तेन सहितम् ॥ ग्रसन्ती ब्रह्माण्डं प्रकृतिरिप दासी पशुपतेर्यदासीत्संहारे जननि तव संहारमहिमा ॥ २४ ॥ स्फुरत्तारा माल्यं ग्रहनिवहनीराजनविधिईविधूमो धूपो मलयपवमानः परिमलः ॥ इदं ते नैवेद्यं विविधरसवेद्यं खळु सुखं सपर्यामर्यादा ध्रवमियसुमे ब्रह्मनिलये सृष्टिः स्फुटितनवधाशब्द्रचना नवानां खेटानामुपरि नवधाऽप्यर्चितपदे ॥ नवानां संख्यानां प्रकृतिरगराजन्यतनये नवद्वीपी देवी त्वमसि नवचकेश्वरि शिवे ॥ २६ ॥ यदाऽकृष्याकृष्यातपति भवदम्बा क नु गता बलात्कारादारादिति विधया ॥ तदैवेनं दीनं स्पृशति वदने प्रश्रयवती विध्याम्बा धूर्तं गुहमपि धयन्तं भगवती ॥ २७ ॥ इविधाने गीतं श्रुतिशिरिस निर्धारितमितं शिवस्यार्धाङ्गस्थं परममहदद्धा मम मनः ॥ यदाऽऽचक्षाणस्ते चरणतललाक्षारमजलैर्मुखं प्रक्षाल्यायं गणयति न लक्षाणि

घृ.क्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥३५॥

कृतिनाम् ॥ २८ ॥ गुरूणां सर्वेषामयसुपरि विद्यागुरुरभून्मनुनां सर्वेषामयसुपरि जातो सुवमनुः॥ कलानां सर्वाषामियसुपरि लक्ष्मीः परकला महिन्नां सर्वेषामयसुपरि जागति महिमा ॥ २९ ॥ यदाऽऽलापादापादितविविधविद्यापरिणतिः करे कृत्वा मोक्षं व्यवहरति लोकं प्रस्नुतया ॥ प्रणादेवाशायेप्रभवति दुरापे च पुरुषस्तदेतन्माहात्म्यं विरलजनसात्म्यं तव शिवे ॥३०॥ याभिः शंकर कालकृत्यदहनज्वालाससुन्सारणं याभिः शुम्भिनशुम्मद्पदलनं याभिर्जगन्मोहनम् ॥ याभिर्भरवभीमह्रपदलनं सद्यः कृतं मेऽन्वहं दारिद्यं दलयम्तु तास्तव दशो दुर्गं दयामेदुराः ॥ ३० ॥ याभिर्दुर्गतया कुशासनपुनःस्वाराज्यदानं कृतं याभिर्भारतसंसदि द्वप दजालजा जवाद्रक्षिता ॥ याभिः कृष्णगृहीतहस्तकमलेखाणं कृतं मेऽन्वहं दारिद्यं दलयन्तु तास्तव दशो दुर्गं दयामेदुराः ॥ ३२ ॥ याभिर्विष्णुकृते कृतं कुरुकुलप्रध्वंसनं संगरे प्राद्यम्नेहिदि मुद्गरस्य कुसुमस्रग्याभिराकिष्पता ॥ कंसाद्याभिरिप व्यधायि वसुधा गोपालगोपायनं दारिद्यं दलयन्तु तास्तव हशो दुर्गे दयामेदुराः ॥ ३३॥ याभिः स्थावरजङ्गमं कृतमिदं याभिः सदा पालितं याभिर्भासितमाक्रमेण च पुनर्याभिः सदा संहतम् ॥ याभिर्दुःखमहाम्भसो भवमहासिन्धोर्न के तारिता दारिद्यं दलयनतु तास्तव हशो दुर्गे दयामेदुराः ॥ ३४ ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते वृ० ध० उपा० स्त० श्रीदुर्गोपा० ध्वाये चन्द्रचूडकृतश्रीदेवी महिम्नस्तोत्रनिह्रपणं नाम एकोनविंशं प्रकरणम् ॥ १९ ॥ अथ श्रीहुर्गास्तवः ॥ उक्तं च हरिवंशे ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ आर्थास्तवं प्रवक्ष्यामि यथोक्तमृषिभिः पुरा ॥ नारायणीं नमस्यामि देवीं त्रिभुवनेश्वरीम् ॥१॥ त्वं हि सिद्धिर्धृतिमेधा श्रीविद्या सन्नतिमेतिः ॥ सन्ध्या राज्ञः प्रभा निद्रा कालरात्रिस्तथैव च ॥ २ ॥ आयी कात्यायनी देवी कौशिकी ब्रह्मचारिणी ॥ जननी चारी महातिषाः ॥३॥ जया च विजया चैव पुष्टिश्च त्वं क्षमा द्या॥ ज्येष्ठा यमस्य भगिनी नीस्ठकौशेयवासिनी॥४॥ बहुरूपा विरूपा च अनेकविधचारिणी॥ विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी॥६॥ पर्वतात्रेषु चौरेषु नदीषु च गृहेषु च॥ वासस्तव महादेवि बनेषूपवनेषु च॥६॥ शबरैर्बर्बरैश्चैव पुलिन्देरभिषुजिता॥ मयूरपक्षध्वजिनी लोकान् क्रमसि सर्वशः॥ ७॥

डपा.स्त. व हुगां.

कुक्कुटैश्छागलैंमैषैः सिंहैर्गिष्ठैः समाकुला ॥ घण्टानिनाद्बहुला विश्वता विनध्यवासिनी ॥ ८॥ त्रिशूली पहिश्वी वेव सूर्यचन्द्र पताकिनी ॥ नवमी कृष्णपक्षस्य शुक्रस्यैकादशी तथा ॥९॥ भगिनी बलदेवस्य रजनी कलहिष्या ॥ आवासः सर्वभूतानां निष्ठा च परमा गतिः ॥१०॥ नन्दगोपस्ता चैव देवानां विजयावहा ॥ चीरवासाः सुवासाश्च रात्रिः संध्या त्वमेव च॥११॥ प्रकीणकेशी मृत्युश्च तथा मांसीदनित्रया ॥ लक्ष्मीरलक्ष्मीरूपेण दानवानां वधाय च ॥१२॥ सावित्री चैव वेदानां माता मन्त्रगणस्य च ॥ अन्तर्वेदी च यज्ञानामृत्विजां चैव दक्षिणा॥१३॥सिद्धिः सांयात्रिकाणां तु वेला त्वं साग्रस्य च ॥ यक्षाणां प्रथमा यक्षी नागानां सुरसेति च ॥१४। कन्यानां ब्रह्मचर्या त्वं सौभाग्यं प्रमदासु च ॥ ब्रह्मचारिण्यथो दीक्षा शोभा च परमा तथा ॥ १५ ॥ ज्योतिषां त्वं प्रभा देवी नक्ष त्राणां च रोहिणी ॥ राजद्वारेषु तीथेषु नदीनां संगमेषु च ॥ १६ ॥ पूर्णा च पूर्णिमा चन्द्रे कृत्तिवासा इति स्मृता ॥ सरस्वती च वाल्मीकेः स्पृतिर्द्वैपायनेस्तथा ॥ १७ ॥ कर्षकाणां च सीतेति भूतानां धरणी तथा ॥ ऋषीणां धर्मबुद्धिस्तु देवानां मानसी तथा ॥ १८ ॥ सुरादेवीति भूतेषु स्तूयसे त्वं स्वकर्मभिः ॥ इन्द्रस्य चारुदृष्टिस्त्वं सहस्रनयनेति च ॥ तापसानां च देवी त्वमरणिश्चामिहो त्रिणाम् ॥ १९ ॥ श्रुघा च सर्वभूतानां तृप्तिस्तवं दैवतेषु च ॥ स्वाहा तृप्तिर्धृतिर्मेघा वसूनां तवं वसुमती ॥ २० ॥ आशा च मानु षाणां तु तुष्टिश्च कृतकर्मणाम् ॥ दिशश्च विदिशश्चिव तथा ह्यप्रिशिखा प्रभा ॥ २१ ॥ शकुनी पूतना च त्वं रेवती वसुदारुणा ॥ निदा च सर्वभूतानां मोहिनी क्षत्रिया तथा ॥ २२ ॥ विद्यानां अह्मविद्या च त्वमोंकारो वषट् तथा ॥ नारीणां पार्वती च त्वं पौराणी मृषयो विदुः ॥ २३ ॥ अरुन्धत्येकभर्तृणां प्रजापतिवचो यथा ॥ पर्यायनामभिर्दिग्यैरिन्द्राणी चेति विश्रुता ॥ २४ ॥ त्वया व्याप्तमिदं सर्वे जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ संश्रामेषु च सर्वेषु अग्निष्ठज्विलतेषु च ॥ २५ ॥ नदीतीरेषु चौरेषु कान्तारेषु भयेषु च॥ प्रवासे राजबन्धे च शत्रणां च प्रमर्दने ॥ २६ ॥ प्राणाद्येषु च सर्वेषु त्व हि रक्षा न संशयः ॥ त्विय मे हृदयं देवि त्विय चित्तं मन स्त्वि ॥ २७ ॥ रक्ष मां सर्वपापेभ्यः प्रसादं कर्तुमईसि ॥ इमं तत्र स्तवं दिन्यमिति न्यासप्रकल्पितम् ॥ २८ ॥ यः पठेत्प्रात

हत्थाय शुचिः प्रयतमानसः ॥ त्रिभिर्मासैः काङ्कितं च फलं वै संप्रयच्छति ॥ २९॥ षङ्भिर्मासैर्विरिष्टं तु वरमेकं प्रयच्छति ॥ आर्चिता 💖 उपा.स्त. इ वर्षस्कंघट निविभमिसीर्दिन्यं चक्षुः प्रयच्छिति ॥ ३० ॥ संवत्सरेण सिद्धि तु यथाकामं प्रयच्छित ॥ सत्यं ब्रह्म च दैवं च दैपायनवचो यथा ॥३६॥ 💖 ॥ ३१ ॥ नृणां बन्धं वधं घोरं पुत्रनाशं धनक्षयम् ॥ व्याधि मृत्युभयं चैव पूजिता शमयिष्यसि ॥ ३२ ॥ भविष्यसि महाभागे। वरदा कामरूपिणी ॥ मोहयित्वा च तं कंसमेका त्वं भोक्ष्यसे जगत् ॥ ३३ ॥ अहमप्यात्मनो वृत्ति विधास्ये गोषु गोपवत् ॥ स्ववृद्धचर्थमहं चैव करिष्ये कंसगोपताम् ॥३४॥ एवं तु स समादिश्य गतोऽन्तर्धानमीश्वरः ॥ सा चापि तं नमस्कृत्य तथाऽस्त्वित विनिश्चिता ॥ ३५ ॥ इति श्रीह० वृ० घ० उपा० स्त० श्रीहुर्गोपा० ध्याये हार्रवंशोक्तश्रीहुर्गास्तवनिरूपणं नाम विंशं प्रकरणम् ॥ २०॥ अथ श्रीदुर्गाकल्पः उक्तं च शान्तिसारे मार्कण्डेयपुराणे डामरतन्त्रे च ॥ शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि चण्डिकाक्रममुत्तमम् ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे प्रतिपत्षु यथाक्रमम् ॥ १ ॥ बहुवचनेन नवम्यन्तं तिलतेलेन स्नानम् ॥ सुम्नातस्तिलतेलेन पूर्वीह्ने च नृपो त्तम ॥ पुण्याह्वाचनं कृत्वा द्विजांश्चेव प्रपूजयेत् ॥ २ ॥ तृतश्च कारयेद्वेदिं सप्तधान्ययुतां नृप ॥ स्थापयेत्पूर्णकलशं पञ्चरत्तसमन्वि तम् ॥ ३ ॥ वस्त्रं चारक्तके चैव संलिखेद्यन्त्रमुत्तमम् ॥ गर्भे संस्थापयेदेवीं चिण्डकां हेमरूपिणीम् ॥ ४ ॥ पञ्चामृतैश्र सुस्नातां चर्चितां गन्धकुङ्कमेः ॥ तथा रक्तेन वस्त्रेण प्रसन्नां भक्तवत्सलाम् ॥ ५ ॥ गुरूपदेशविधिना पूजयित्वा प्रयत्नतः ॥ यन्त्रोद्धारः प्रय त्नेन ज्ञातच्योऽस्य नृपोत्तम ॥ ६ ॥ चतुरस्राष्ट्रषद्वं च त्रिकोणं संलिखेततः ॥ कुङ्कमागरुकपूरैश्चन्दनैश्च सितासितैः ॥ ७ ॥ पञ्चकैः कालिकाभिश्च तथा कस्तूरिकादिभिः ॥ चतुरस्रे पूर्वदिशि न्यसेदुड्डाणपीठकम् ॥ ८॥ नाथसुण्डेश्वरं चैव सुण्डाख्यां पादुकां तथा ॥ न्यसेन्मातृकोपपीठमाभ्रेय्यां पृथिवीपते ॥ ९ ॥ मातृकेश्वरोपनाथं च मातृकारुयोपपाहुकाम् ॥ पीठं जालन्धरं चैव दक्षिणे तु तथैव च ॥ १० ॥ नाभं जवालामुखं चापि जवालाख्यां पादुकां तथा ॥ कोल्लापुरोपपीठं च नैर्ऋत्यां विन्यसेन्नृप ॥ ५१ ॥ कोछारेश्वरोपनाथं कोछाराख्योपपादुकाम् ॥ पूर्णिगिरीशपीठं च पश्चिमे स्थापयेन्तृप ॥ १२॥ नाथं पूर्णेश्वरं वाऽिप पूर्णाख्यां

दुर्गी. 370 926

पादुकां तथा ॥ संहाराख्योपपीठं च वायव्यां च प्रपूजयेत् ॥ १३ ॥ संहाराख्योपनाथं च संहाराख्योपपादुकाम् ॥ उत्तरायां तथा देशे ओणपीठं प्रपूजयेत् ॥ १४ ॥ ओणकेश्वरनाथं च ओणाख्यां पादुकां तथा ॥ कामरूपोपपीठं च ईशान्यां पूजयेत्ततः ॥ १५ ॥ कामेश्वरोपनाथं च कामारूयां चोपपादुकाम् ॥ आग्नेय्यामिश्रसुसुखं नैर्ऋत्यां प्रेतवाहनम् ॥ १६ ॥ ज्वालासुखं तु वायच्यां धूष्राक्षं त्वीशतस्तथा ॥ कोणे चतुष्ट्ये वाऽपि वेतालानां चतुष्ट्यम् ॥ १७॥ चक्रे अष्टद्ले चैव शक्तयष्ट्रकमुदाहृतम् ॥ भैरवाष्ट्रकं च ततो लोकपालाष्ट्रकं तथा ॥ १८॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कीमारी वैष्णवी तथा ॥ वाराही चैव माहेन्द्री चामुण्डा चण्डिका तथा ॥ १९॥ असिताङ्गो रुरुश्चेव चण्डः क्रोधस्तथैव च ॥ उन्मत्तभैरवश्चेव कपाली भीषणस्तथा ॥ २० ॥ संहारभैरवश्चेति भैरवाष्ट्रकमीरितम् । इन्द्रोऽग्निश्च यमश्चेव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा ॥ २१ ॥ वायुः सोमस्तथेशानो लोकपालाः प्रकीर्तिताः ॥ गुरुं परमगुरुं च परमेष्ठिगुरुं तथा ॥ २२ ॥ गणेशं हरिहरं चैव षड्दले चैव पूजयेत् ॥ बाह्य त्रिकोणके चक्रे प्रधानस्य च पृष्ठतः ॥ २३ ॥ पूजयेच महा कालीं रुद्रो गौर्या तथा सह ॥ महालक्ष्मीं हृषीकेशो लक्ष्म्या च सहितस्तथा ॥ २४ ॥ सरस्वत्याः पृष्ठदेशे विरिञ्चिस्स्वरया सह कालश्च दक्षिणे पूज्यो रुद्रश्चापि नृपात्मज ॥ २५॥ सिंहश्चापि तथा भक्तया पूजनीयः प्रयत्नतः ॥ मृत्युर्वामे च महिषस्तथा ॥ २६ ॥ मृतनामा ततश्चापि त्रिकोणे बाह्यतस्तथा ॥ मध्ये त्रिकोणके चके प्रधानं चण्डिकां देवीं महाकालीं दक्षिणे चव पूजयेत् ॥ प्रत्यधिदेवतां चैव वामभागे सरस्वतीम् ॥ २८॥ पूजयेच नृपश्रेष्ठ ताम् ॥ इति यन्त्रोद्धारकमः ॥ जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता ॥ २९॥ दिव्ययोगी महायोगी श्वरी ॥ प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्रिस्तथैव च ॥ ३०॥ टङ्काक्षी रौद्रवेताली हुंकारी उर्ध्वकेशिनी ॥ विरूपाक्षी नरभोजनिका तथा ॥ ३१ ॥ फट्टारी वीरभट्टा च धूमाङ्गी कलहिपया ॥ राक्षसी घोररकाक्षी विश्वरूपा भयंकरी चण्डमारी च चण्डी च वाहाही मुण्डधारिणी ॥ भैरवी च तथोध्वांक्षी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी ॥ ३३॥ खटूवाङ्गी चैव लम्बोष्ठी

धर्मस्कंध ८ 116211

मालिनी मत्तयोगिनी ॥ काली रक्ता च कङ्काली तथा च भुवनेश्वरी ॥ ३८ ॥ त्रोटिकी च महामारी यमदूती करालिनी ॥ केशिनी मिदनी चैव रोमगङ्गाप्रवाहिनी ॥ ३५ ॥ बिडाली कामुका लाक्षी जया चाघोमुखी तथा ॥ मुण्डाप्रधारिणी व्यात्री काङ्किणी प्रेतमक्षिणी ॥ ३६ ॥ धूर्जटी विकटी घोरी कपाली विषलम्बनी ॥ चतुःषष्टिस्तु योगिन्यः प्रजनीयाः प्रयत्नतः ॥ ३७ ॥ इति यन्त्रोद्धारः ॥ अथ मन्त्रोद्धारः ॥ राजोवाच ॥ पुनस्त्वां परिष्टच्छामि चण्डिकायजनादिकम् ॥ नित्यचण्डचादिजाप्यस्य विधानं च द्विजोत्तम ॥ ३८ ॥ ऋषिकवाच ॥ परिपृच्छिस राजेन्द्र चिटङकापूजनादि यत् ॥ तद्हं ते प्रवक्ष्यामि यथावद्वपूर्वशः ॥ ३९॥ आदौ नत्वा महालक्ष्मीं कर्त्री हर्त्री सदोदिताम् ॥ यन्नमस्कारतो यज्ञा भवन्ति सुकृताः सकृत् ॥ ४० ॥ त्रैलोक्यडामरं मन्त्रं शृणु भूए नवाक्षरम् ॥ येन विज्ञातमात्रेण परमैश्वर्यवान् भवेत् ॥ ४१ ॥ एं बीजमादी-दुसमानदीप्तिं ह्रीं क्कीं मूर्तिवैश्वानरतुल्यहर्षं तृतीयमानन्त्यसुखाय चिन्त्यम् ॥ ४२ ॥ चां शुद्धजाम्बूनदकान्ति तुर्ये सुं पञ्चमं डां षद्भमुत्रातिहरं सुनीलं ये सप्तमं कृष्णतरं रिषुघ्रम् ॥ ४३॥ वि पाण्डुरं चाष्ट्रममादिसिद्धं चे धूम्रवर्ण नवमं क्वीं चामुण्डाये विश्वे इति नवाक्षरो मन्त्रः ॥ एतानि बीजानि नवात्मकस्य जप्तुः प्रदेशुः सकलार्थसिद्धिम् ॥ ४४ ॥ नवबीज विश्वाद्धोऽयं मन्त्रक्षेळोक्यपावनः ॥ एनं जपति यो मन्त्री फळं तस्य वदाम्यहम् ॥ ४५ ॥ वश्या भवन्ति कामिन्यो राजानोऽनुचरा इव ॥ न हस्तिसर्पदावाभिचोरशत्रुभयं भवेत् ॥ ४६ ॥ सर्वाः समृद्धयस्तस्य जायन्ते चिण्डकाज्ञया ॥ नश्यन्ति दारुणा रोगाः सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ४७ ॥ सहस्रमस्य मन्त्रस्य नवबीजस्य यो जले ॥ नाभिमात्रे जपेत्सम्यक् कवित्वं लभते ध्रुवम् ॥ ४८ ॥ अयुतं नवतत्त्वस्य राजबन्धनसंकटैः ॥ जपेत्तदाऽऽद्यु मुच्येत यो मन्त्री चण्डिकाज्ञ्या ॥ ४९ ॥ अस्मित्रवाक्षरे मन्त्रे महालक्ष्मी 👹 ॥३०॥ र्व्यवस्थिता ॥ तस्मात्मुसिद्धः सर्वेषां सर्वदिश्च प्रदीपकः ॥ ५०॥ अनेनास्य सिद्धादिविचारो नास्तीति सूचितम् ॥ नवाक्षरस्य ऋषयो ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ छन्दांस्युक्तानि मुनिभिर्गायच्युष्णिगनुष्टुभः ॥ ५१ ॥ देग्यः प्रोक्ता महापूर्वाः काली लक्ष्मीः सर

दुर्गा.

I BOY

स्वती ॥ नन्दा शाकंभरी भीमा शक्तयोऽस्य मनोः स्वृताः ॥ ५२ ॥स्याद्रक्तदन्तिकादुर्गाश्रामयो बीजसंचयः ॥ अग्निवायुभगा स्तत्त्वं फलं वेदत्रयोद्भवम् ॥ ५३ ॥ भगः सूर्यः ॥ सर्वाभीष्टप्रसिद्धचर्यं विनियोग उदाहतः ॥ ऋषिच्छन्दोदैवतानि शिरोमुखहिद न्यसेत् ॥ ५४ ॥ शक्तिबीजानि स्तनयोस्तत्त्वानि हृदये पुनः ॥ मन्त्राणां पछ्वो वासो मन्त्राणां प्रणवः शिरः ॥ ५५ ॥ शिरः पछ्वसंयुक्तो मन्त्रः कामदुघः फले ॥ पछवः नमोऽन्तः ॥ न्यासं विना भवेन्मूकः सुप्तः स्यादासनं विना ॥ ५६ ॥ पछवेन विना मन्त्रो नमः संपरिकीर्तितः ॥ शिरोहीनो मृतः प्रोक्तो वृथा मन्त्रो ग्रुकं विना ॥ ५७ ॥ हतो दुष्टाय दत्तो यो निर्वीर्यश्चाधि काक्षरः ॥ अन्तरालेन बीजेन व्याप्तः कीलित उच्यते ॥ ५८ ॥ यस्य जाप्यं शृणोत्यन्यः स मन्त्रः शून्य उच्यते ॥ ऋषिदैवत छन्दोभिः परित्यक्तो भुजङ्गमः ॥ ५९ ॥ मूकः सुप्तो मृतो नशो वीर्यहीनो वृथा हतः ॥ भुजङ्गः कीलितः शून्य Sन्यथाफलः ॥ ६० ॥ यत्नाद्विवर्जयेनमन्त्री यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥ नमोडन्तः शान्तिके पुष्टौ प्रणिपाते च ॥ ६१ ॥ वश्याकर्षणहोमेषु स्वाहान्तः सिद्धिदायकः ॥ वौषट्पछवसंयुक्तो मन्त्रो लक्ष्म्यादिसाधकः ॥ ६२ ॥ हुंकारपछवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना ॥ यन्त्रभञ्जनकार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ ६३ ॥ वषडन्तो महाकल्पो ब्रह्मालाब्धिनाशकः ॥ खण्डनोज्ञाटने बन्धे मन्त्रः फट्पछवान्वितः ॥ ६४ ॥ जातिहीना न सिद्धचन्ति तस्माजाति नियोजयेत् ॥ नमः स्वाहा वषट्कं च वौषट् फिडिति जातयः ॥ ६५ ॥ ॐकारमुखजौ मन्त्रौ वेदागमसमुद्भवौ ॥ यछवोऽस्त्यागमे मन्त्रे वैदिके नास्ति पछवः ॥ ६६ ॥ वेन च जप्योऽयं मन्त्रो वेदसमुद्भवः ॥ न नम्नः कीर्त्यते यस्मान्नेश्वर्यपरिधानवान् ॥ ६७ ॥ नद्यादौ विधिवतस्नात्वा नाभिमान्ने Sस्भिस स्थितः ॥ दशाञ्जलिभिरात्मानं नवबीजेन प्लावयेत् ॥ ६८ ॥ कृत्वा माध्याह्निकं णीयं महालक्ष्म्याः षडद्ग्रन्यासमाचरेत् ॥ ६९ ॥ मायाबीजं चिण्डकाये हृदयादि नमोऽन्तकम् ॥ ॐ मायाबीजं चिण्डकाये अंग्रष्ठाभ्यां नमः तर्जनीभ्यां मध्य अना किन करत ॥ एवं हदयादि ॥ एवं न्यासविधि कृत्वा मर्दिनीम् ॥ ७० ॥ चण्डिकां त्रिजगद्धात्रीं ब्रह्माद्यमरवन्दिताम् ॥ ततश्च नवबीजान्ते चण्डिका तृप्यतामिति ॥ ७१ ॥ अञ्जलीना

मष्टशतं सुगन्धिकुसुमान्वितम् ॥ अशक्तौ तु तद्धैन तद्धींचेन वा पुनः ॥ ७२ ॥ महालक्ष्मीं तर्पयित्वा प्राधितान् लभते धर्मस्कंध ८
॥३८॥
॥३८॥
अप्रार्थितानिप कामान्कर्ता प्राप्नोति तर्पणात् ॥ ७३ ॥ प्रविश्य देवतागारं वितानपरिशोभितम् ॥ पुष्पप्राकारशोभाढ्यं पूजाद्रव्येः प्रपूजितम् ॥ ७४ ॥ बहुदीपप्रकाशाद्ध्यं दिव्येर्धूपेः सुधूपितम् ॥ तत्रोपविष्टो विधिना पूजियित्वा हरीश्वरौ ॥ ७५ ॥ उपविश्यासने मन्त्री प्राङ्मुखो धृतिमान् क्षमी ॥ कामकोधमहामोहलोभतापविवर्जितः ॥ ७६ ॥ चतुरस्रे समे शुद्धे सर्वदोषविव जिते ॥ लिखेदष्टदलं प कुङ्कमाग्रहचन्दनैः ॥ ७७ ॥ पद्ममध्ये लिखेच्यकं षट्कोणं चिष्टकालयम् ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थ माद्यबीजत्रयं न्यसेत् ॥ ७८ ॥ पूर्वादिषद्सु कोणेषु बीजान्यन्यानि विन्यसेत् ॥ गुर्मेद्रान्तरं वामपार्म्लेन पीडयेत् ॥ ७९ ॥ वामपादोपरि स्थाप्य दक्षिणं चरणं दृढम् ॥ एतत्पद्मासनं नाम जरामरणवर्जितम् ॥ ८० ॥ मौनी बद्धासनो ज्ञानी ध्यानी निश्चल विश्रहः ॥ अनाहतिवशुद्धात्मा भेदियत्वा यथाक्रमम् ॥ ८१ ॥ स्वशरीराद्धिनिर्गत्य सूक्ष्मरूपोऽर्घमार्गगः ॥ ततो नदीं समुत्तीर्य स्थित्वा स्वकरसंपुटैः ॥ ८२ ॥ शोधयेत्पञ्चभूतानि ज्ञात्वा वर्णक्रमेः पृथक् ॥ पृथिन्यापोऽनलो वायुः खं भूतानामयं क्रमः ॥ ८३ ॥ पृथ्वी पीता सितं वारि रक्तवणी द्वताशनः ॥ तेषां कृष्णतरो वायुराकाशं निर्मलं सदा ॥ ८४ ॥ मनसा शोधयेद्दुद्धि बुद्धचा संशोधये न्मनः ॥ तद्द्वयं परमं शुद्धमात्मनः सम्यगीरितम् ॥ ८५॥ स्वदेहं ब्रह्ममार्गेण योगयुत्तया समाविशेत् ॥ सुषुम्णास्थान माश्चित्य तिष्ठमानमनाहते ॥ ८६ ॥ आदौ संशोधयेत्पृथ्वी शोषदाहप्लवाष्ट्रतैः ॥ पुनर्वारि पुनस्तेजः पुनर्वायुं तु पावयेत् ॥ ८७ ॥ बीजैश्रतुर्विधैर्वायोरमेर्वरुणशक्रयोः ॥ यमिदं शोषकं बीजं रिमदं दाहकं महत ॥ ८८ ॥ वमाप्रवनवीजं च लिमन्दुममृतात्म कम् ॥ एवं शुद्धानि भ्रतानि भवन्ति नृपनन्दन ॥ ८९ ॥ व्योज्ञश्च शोधनं नास्ति यतस्तित्रर्मलं सदा ॥ कृत्वाऽऽलयं स्वकं देह प्रविश्यात्मविशोधनम् ॥ ९०॥ कर्तव्यं योगमाश्रित्य सर्वकामविवार्जितम् ॥ भूतसिद्धिमिमां कृत्वा यः कुर्याचिण्डकार्चनम् ॥९१॥ तस्याचिरेण कालेन महालक्ष्मीः प्रसीदति ॥ निकुञ्चनाद्धःशिक्तरूर्ध्वशक्तिनिपातनात् ॥ ९२ ॥ मध्यशक्तः प्रबोधाय प्राणायाम

परो भवेत् ॥ एकचित्ते न्यसेर्बुद्धि कोधगर्वविवार्जितम् ॥ ९३ ॥ स्वार्थं लोभं परित्यज्य जपकर्ता च निश्चलः ॥ निरञ्जनं महागोप्यं मन्त्रसाधनमुत्तमम् ॥ ९४ ॥ इति प्रथमपटलः ॥ ऋषिक्वाच ॥ पूजानां जपहोमानां सर्वमाङ्गरूयकर्मणाम् ॥ न्यासं व्रवीमि भूपाल सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥ ९५ ॥ स्थिरासने स्थिरो भूत्वा निरहंकारनिर्ममः ॥ स्वग्ररोश्चरणं नत्वा महालक्ष्मीं च पूर्ववत् ॥ ९६ ॥ ध्यानपूर्वे नमस्कृत्य न्यासकर्म समारभेत् ॥ क्षिप्त्वाक्षिप्त्या न्यसेत्तत्त्वं बिन्दुनोपि भूषितम् ॥ ९७ ॥ मातृका न्यासविज्ञानी शिरः प्रथमपछवः ॥ प्रथमं विन्यसेन्सूर्धिन ललाटे तत्परं न्यसेत् ॥ ९८ ॥ नेत्रयोद्धितयं भूप द्वयमन्यत्कपो लयोः ॥ श्रुत्योः स्वरद्वयं न्यस्य द्वयं नासापुटद्वयोः ॥ ९९ ॥ ओष्ठयोर्विन्यसेद्वन्द्वं द्वन्द्वं दशनलेखयोः ॥ जिह्वायां विन्यसेदेकं तालुस्थाने च तत्परम् ॥ १००॥ विन्यसेत्प्रथमं वर्ग भूपतेर्दक्षिणे भुजे ॥ वामे परं न्यसेद्द्वर्गे द्वितीयं दक्षिणे भुजे ॥१०१॥ चतुर्थवाम पादे च पश्चमं हृदये न्यसेत् ॥ शेषाक्षराणां नवकं न्यसेद्वै सर्वधातुषु ॥ १०२ ॥ त्वचि रक्ते च मांसे च स्नायुष्वस्थिषु पश्चमम् ॥ मजामेदांसि शक्ते च तृतींय तत्परं न्यसेत् ॥ १०३॥ अयं ते मातृकान्यासः प्रथमः परिकीर्तितः ॥ साङ्गवेदसमो भाति भूषितो येन मान्त्रिकः ॥ १०४ ॥ अथ सारस्वतो न्यासो द्वितीयस्ते प्रकथ्यते ॥ उक्तमन्त्रस्य बीजानां नवानां देवतार्चने ॥ १०५ ॥ आद्यं वीजद्वयं कृत्वा प्रणवादि नमोऽन्तकम् ॥ कनिष्टिकादिसर्वासु पश्चस्वंगुलिषु न्यसेत् ॥ १०६ ॥ करमध्ये च पृष्ठे च स्फारे च मणिबन्धने ॥ हिद मुर्प्नि शिखायां च कवचे चक्षुरस्रयोः ॥ १०७ ॥ बद्धेषु संप्रयोक्तव्यं सर्वदिक्षु पृथक् पृथक् । भृशं सारस्वते न्यासे महत्यस्मिन्कृते सकृत् ॥ १०८॥ दुरितं विलयं याति जाडचं वाक्र्पापसंचयम् ॥ तृतीयं ते प्रबक्ष्यामि न्यासं मातृगणा न्वितम् ॥ १०९ ॥ मायाबीजेन संयुक्ता ब्रह्माणी पातु सर्वतः ॥ एवमीशानपर्यन्तमष्टौ मातृः प्रपूजयेत् ॥ ११० ॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।। वाराही नारसिंहीन्द्री चामुण्डा चाष्ट मातृकाः ॥ १११ ॥ उध्व व्योमेश्वरी पातु सप्तद्वापेश्वरी भुवि ॥ नागेश्वरी च पाताले न्यासकर्ता च निर्भयः ॥ ११२ ॥ जायते त्रिषु लोकेषु सर्वदेवप्रियो यतः ॥ षड्देवीनां पुनन्यांसं

मृ.क्ज्यो.र्ज. **धर्म**स्कंध ८ ॥३९॥

चतुर्थं शृणु भूमिप ॥ ११३ ॥ पूर्वाङ्गं नन्दजा पातु कमलांकुशमण्डिता ॥ खङ्गपात्रकरा पातु दक्षिणे रक्तदन्तिका ॥ ११४ ॥ पुष्पपछनम्लादिहस्ता शाकंभरी सदा ॥ धनुर्बाणधरा दुर्गा वामं दुर्गातिंहारिणी ॥ ११५ ॥ शिरःपात्रकरा णाविधि ॥ चरणाभ्यां शिरो यावत् श्रामरी चित्रकान्तिभृत् ॥ ११६ ॥ अनेन न्यासयोगेन जरामरणवर्जितः ॥ निर्भयश्राप्ति वारिभ्यां मान्त्रिकस्तत्क्षणाद्भवेत् ॥ ११७ ॥ पादाभ्यां नाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु समन्ततः ॥ नाभेविंशुद्धिपर्यन्तं पातु नित्यो जनार्दनः ॥ ११८ ॥ विशुद्धेस्तु शिखा यावत्पातु रुद्धिलोचनः ॥ हंसः पादद्वयं पातु वैनतेयः करद्वयम् ॥ ११९ ॥ चक्षुषी वृषभः पातु पञ्चाङ्गानि गजाननः ॥ एवं परम्परां पातु सर्वानन्दमयो हरिः ॥ ३२०॥ अभेद्यः पञ्चमो न्यासः कर्तुः कामदुघा फलः ॥ महापापातिपापाभ्यां प्रायश्चित्तमसौ भवेत् ॥ १२१ ॥ मध्यं पातु महालक्ष्मीरष्टादशभुजा ध्रुवम् ॥ उ.ध्वं सरस्वती पातु भुजैरष्टाभिक्षिता ॥ १२२ ॥ अधः पातु महालक्ष्मीस्त्रिशङोचनमण्डिता ॥ सिंहो हस्तद्वयं पातु परहंसोऽग्निमण्डलम् ॥ ॥ १२३ ॥ महिषेण समायुक्तः प्रेतः पातु पद्द्रयम् ॥ सर्वाङ्गानि महेशानी चिण्डका च परस्परम् ॥ १२४ ॥ वैकुण्ठसुखकृ न्न्यासः षष्टः कष्टोपशान्तये ॥ ब्राह्मणः पायुपर्यन्तं नवद्वारेषु विन्यसेत् ॥ १२५ ॥ उक्तमन्त्रस्य बीजानि प्रणवाद्यं रूथक् पृथक् ॥ पायुतो ब्रह्मपर्यन्तं विन्यसेत्तानि पूर्ववत् ॥ १२६ ॥ न्यासद्वयमिदं प्रोक्तं सुगोप्यं सप्तमाष्ट्रमम् ॥ महाभयमहान्याधिशत्र चौरविघातनम् ॥ १२७ ॥ महारक्षोगणानां च कल्पान्ताग्रिसमं भवेत् ॥ पूर्वाङ्गे विन्यसेन्मन्त्रं मस्तकाञ्चरणाविघ ॥ १२८ ॥ दक्षिणे पश्चिमे वामे तथा लोमविलोमयोः ॥ अस्मिन्न्यासे कृते राजन् नवमे देववद्भवेत् ॥ १२९ ॥ हन्मस्तकशिखास्वेनं कवचे लोचनद्वये ॥ अस्त्रे सर्वकनिष्ठादि पृथङ् मन्त्रं विनिक्षिपेत् ॥ १३० ॥ नमोऽन्तं प्रथमं प्रोक्तं स्वाहान्तं तत्परे भवेत् ॥ वष्डन्तं लाचनद्वयः ॥ अश्च सवकाम् ॥ १३१ ॥ पूज्यस्त्रेलोक्यदेवानां दशमेऽस्मिन्कृते कृती ॥ दशन्यासप्रविद्यो वै यद्वदेवस्तथा भवेत् ॥ हुमन्तं च वौषडन्तं फडन्तकम् ॥ १३१ ॥ पूज्यस्त्रेलोक्यदेवानां दशमेऽस्मिन्कृते कृती ॥ दशन्यासप्रविद्यो वै यद्वदेवस्तथा भवेत् ॥ ॥ १३२ ॥ यत्पश्यति यथा दृष्ट्या तद्भवेत्तादृशं किल ॥ तेन सार्धं महालक्ष्मीः स्वयं वदति सर्वदा ॥ १३३ ॥ भविष्यमभविष्यं

उपा.स्त. १ दुर्गा. २४० १२८

वा तं पालयति पुत्रवत् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवास्त्वेनं पालयन्त्यात्मवत्सद्। ॥ १३४ ॥ त्रिषु लोकेषु पश्यन्ति यदाऽऽधिक्यं न कि चन ॥ दशन्यासैः कृतं पापं दशजन्मार्जितं क्षणात ॥ १३५ ॥ स्नुतीत्रं विलयं याति तामिस्रं रविणा यथा ॥ सन्नद्धो दशभिन्यांसै श्रण्डीं सप्तशतीं जपेत् ॥ १३६ ॥ असाध्यं साध्यत्याञ्च कार्य लोकत्रयेऽपि यत् ॥ माधवे मासि मध्याह्ने तपन्तं निर्मलं रविम् ॥ ॥ १३७॥ दिवान्धास्तं न पश्यन्ति सर्वदा सर्वथा यथा॥ चण्डीसप्तशतीजाप्यं दशन्यासः समुज्जवलम्॥ १३८॥ त्रैलोक्ये सर्वदुष्टास्तं न पश्यन्ति च सर्वदा ॥ चण्डीसप्तशतीजाप्ये सरहस्ये नृपोत्तम ॥ १३९ ॥ न्यासं ते संप्रवक्ष्यामि ब्रह्माविष्णुशिवैः कृतम् ॥ अङ्गेषु सर्वसिद्धचर्थं चन्द्रामृतमनः सुखम् ॥ १४० ॥ अस्मिन्न्यासे दश श्लोका ब्रह्मविष्णुशिवोदिताः ॥ खङ्किनी शुलिनी श्लोकमांचं कृष्णतरं न्यसेत् ॥ १४१ ॥ नाभ्यादिचरणान्तं तु न्यासं शत्रुविनाशनम् ॥ शूलेन पाहि नो देवि पुनः श्लोक चतुष्ट्यम् ॥ १४२ ॥ बालाकसदृशं न्यासं चिन्तनीयं महत्तरम् ॥ तद्विशुद्धादिपर्यन्तं न्यासं तिमिरनाशनम् ॥ १६३ ॥ सर्वस्वह्मप इत्याद्श्लोकानां पञ्चकं पुनः ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं न्यासं त्रेलोक्यकामदम् ॥१४४॥ मौलिर्मुखं तथा नेत्रे श्रोत्रे नासाद्वये तथा ॥ लिङ्गं चैव गुदं चैव दशस्थानं प्रकीर्तितम् ॥ १४५ ॥ मूर्घी विद्युद्धिपर्यन्तं श्लोकानां पञ्चकं न्यसेत ॥ अयमेकादशो न्यासो दशन्याससमो भवेत् ॥१४६॥ नवाक्षरस्य मन्त्रस्य जाप्ये सर्वफलप्रदे ॥ एते न्यासः प्रकर्तन्याश्चण्डीं सप्तशतीं पठेत ॥ १४७ ॥ एवं न्यासविधि कृत्वा सृष्टिमुद्रां विलोकयेत् ॥ तस्या विलोकने राजन् कृते न्यासाः स्थिरो भवेत् ॥ १४८॥ परिषिञ्चति पूजार्थ द्रव्याणि नवःबीजतः ॥ दशन्यासैः कृतैर्यस्य जपकर्ता फलं लभेत् ॥ १४९ ॥ तत्फलं लभते सत्यमस्मिन्नेकादशे कृते ॥ तलपृष्ठो द्भवां मुद्रां दत्त्वाऽस्त्रेणावगुण्ठयेत् ॥ १५० ॥ अर्घवात्रं प्रतिष्ठाप्य पूरयेच्छुभवारिणा ॥ गन्धपुष्पाक्षतांस्तत्र विन्यस्य नृपनन्दन ॥ ॥ १५१ ॥ ध्यात्वा सर्वाणि तीर्थानि इस्तं दत्त्वाऽभियन्त्रयेत् ॥ रक्षार्थे तस्य कर्तव्या चक्रमुद्र।ऽस्त्रसंयुता ॥ १५२ ॥ अघींदकस्य संस्कारं पूजाद्रव्यस्य पूर्ववत् ॥ कृत्वा लोमविलोमाभ्यामात्मानं सम्यगर्चयेत् ॥ १५३ ॥ प्रत्यर्घं संप्रतिष्ठाप्य मध्ये पीठार्घ

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥४०॥ पात्रयोः ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थां मध्यबीजैर्ध्वस्थिताम् ॥ १५४ ॥ महाकाल्या सरस्वत्याऽलंकृतां दक्षवामयोः ॥ संयुक्तां दक्षिणे वामे सिंहेन महिषेण च ॥ १५५॥ अष्टादशभुजां ध्यात्वा महालक्ष्मीं प्रणम्य च ॥ पीठादिपूजनं कुर्यात्स्वबीजेन पृथक् पृथक् ॥ ॥ १५६ ॥ ॐ कारिबन्दुमध्यस्थं ना मध्ये चाद्यमक्षरम् ॥ देवतानां स्वबीजं च प्रजाया ऋद्धिसिद्धद्म् ॥ १५७ ॥ ॐ कार्र प्रथमं पीठं पूर्णपीठं ततः परम् ॥ तृतीयं कामपीठं च पूज्येत्संप्रदायतः ॥ १५८ ॥ पूर्वादिदिश्च पीठस्य गणेशादिचतुष्ट्यम् ॥ गणेशक्षेत्रपालो च पादुकैर्बटुकास्त्रयः ॥ १५९ ॥ आग्नेयादिचतुर्दिश्च पूज्यं देवीचतुष्ट्यम् ॥ आद्या तत्र जया प्रोक्ता द्वितीया विजया स्मृता ॥ १६० ॥ जयन्ती तत्परा भूप चतुर्थी स्यात्पराजिता ॥ पूज्या नामपदैर्देव्यः पीठपङ्कजमध्यगाः ॥ १६१ ॥ प्रागादिकमयोगेन पञ्च षट् षट् च षट् तथा ॥ प्रथमा विष्णुमाया च द्वितीया चेतना स्मृता ॥ १६२ ॥ बुद्धिर्निदा क्षुघा छाया शक्तिस्तृष्णाऽष्टमी तथा ॥ क्षान्तिर्जातिस्ततो लजा शान्तिः श्रद्धा त्रयोदशी ॥१६३॥ कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा स्मृतिरेव दया तथा॥ तुष्टिः पुष्टिश्च माया च श्रान्तिनीमपद्कमः ॥ १६४॥ त्रयोविंशतिसंख्याता ब्रह्मणा पूजिताः स्तुताः॥ नालमूले च संपूज्य माधारादिचतुष्ट्यम् ॥ १६५ ॥ आधारं कूर्मशेषौ च चतुर्थी पृथिवी नृप ॥ ततो नालं समभ्यर्च्य पद्मं संपूज्य यत्नतः ॥ १६६ ॥ ज्ञानामृतसुतृप्तात्मा मण्डलार्चनमारभेत् ॥ अर्घोदकाद्भिरासिच्य मण्डलं सौम्यदृष्टिमान् ॥ १६७ ॥ पूर्वपात्रादितः पूज्यं मातृणां मण्डलं शिवम् ॥ रहस्यकथितै वी जैः स्ववीजेनाथवा नृप ॥ १६८ ॥ आद्यपत्रे समभ्यच्या ब्रह्माणी हंसवाहिनी ॥ माहेश्वरी वृषारूढा पूज्या सा हुतसुग्दले ॥१६९॥ सयूरवाहना पूज्या कीमारी दक्षिणे दले ॥ नैऋते वैदणवी पूज्या गरुडोपरि संस्थिता ॥ ॥ १७० ॥ पश्चिमे यज्ञवाराही दंष्ट्रोद्धृतवसुंघरा ॥ समीरणद्ले पूज्या नारसिंह्यव्धिनिस्वना॥ १७१ ॥ गजराजसमाहृदा पूज्ये न्द्री सौम्यदिग्दले ॥ गणनाथपरीवारा सदा रुद्रेण संयुता ॥ १७२ ॥ ईशपत्रे समभ्यच्या चामुण्डा मुण्डमण्डिता ॥ ब्रह्माणी कणिकामध्ये कमात्षद्कोणपूजनम् ॥ १७३ ॥ नन्द्रजा हेमगर्भाभा सुरक्ता रक्तदन्तिका ॥ नीला शाकंभरी दुर्गा सर्वदुःखाति कर्णिकामध्ये क्रमात्वद्कोणपूजनम् ॥ १७३ ॥ नन्दजा हेमगर्भाभा सुरक्ता रक्तद्निका ॥ नीला शाकंभरी दुर्गा सर्वदुःखाति

उपा.स्त. । दुर्गाः

हारिणी ॥ १७४॥ दंष्ट्राञ्चितसुखी भीमा नीलपत्रशिरोधरा ॥ तेजोमण्डलदुर्दशी श्रामरी वरदाऽर्चिता ॥ १७५ ॥ आद्यबीजे महा कालीं ध्यानपूर्वी समर्चयेत् ॥ द्वितीयेऽष्टादशभुजां महालक्ष्मीं प्रपूजयेत् ॥ १७६ ॥ तृतीयेऽष्टभुजां ध्यात्वा समभ्यच्ये सरस्वतीम् ॥ ततः कृत्वा पृथकपूजां सम्यङ्क महिषसिंहयोः ॥ १७७ ॥ मध्यबीजे चिरं ध्यात्वा महालक्ष्मीं समाहितः ॥ हद्यादावा हनं पूर्वमासनं मणिभूषितम् ॥ १७८ ॥ मण्डलस्था तु या देवी पीठस्था सर्वशस्तथा ॥ महालक्ष्म्या सहैक्येन चिन्तयेद्योग मुद्रया ॥ १७९ ॥ एकाक्षरं महालक्ष्म्या रूपं ध्यात्वा परात्परम् ॥ मुद्राभुजायुधाकारांश्चण्डिकात्रे प्रदर्शयेत् ॥ १८० ॥ अष्टा दशाक्षमालाद्यास्ततः पाद्यं प्रकल्पयेत् ॥ वारिपुष्पाक्षतारक्तचन्द्नैश्च प्रमोदितम् ॥ १८१ अर्घ दत्त्वा महालक्ष्म्यै धिनुमुद्रां प्रदर्श येत् ॥ संकल्पाचमनं भूप स्नानं पुष्पाभिषेचनम् ॥ १८२ ॥ विद्ध्याद्वैधसीं मुद्रां यथा माता प्रतुष्यति ॥ महाईं चित्रिते द्विस्त्रे चित्राण्याभरणानि च ॥ १८३ ॥ कस्तूरीकुङ्कमोपेतं कर्पूरागुरुचन्दनम् ॥ सुरभीणि सुपुष्पाणि बिल्वपत्राक्षतानि च नैवेद्यं चिष्डकां भूप दिन्यैर्धूपैश्च धूपयेत् ॥ ज्वलन्मणिशिखाकारैदीपैनीराजनैः शुभैः ॥ १८५ ॥ यथावर्णक्रमोपेतैनैवेद्यैः पायसा दिभिः ॥ अनेकरसपकान्नैर्महालक्ष्मीं प्रतोषयेत् ॥ १८६ ॥ प्रणम्याचमनं दत्त्वा चन्दनं मुखवासनम् ॥ सकर्पूरं च ताम्बूलं भक्ति भावसमन्वितम् ॥ १८७ ॥ प्राणानायम्य पूर्वोक्तान् न्यासान्संस्मृत्य चात्मवान् ॥ प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभघातनम् ॥१८८॥ महिषासुरनिर्नाशं चरितं मध्यमं तथा ॥ चरितं चोत्तरं विद्धि निशुम्भादिवधाश्रितम् ॥ १८९ ॥ चरितानि जपेत्रीणि सरहस्यान्यत न्द्रितः ॥ चरितं मध्यमं चैषां जपेद्वा चिण्डकामयम् ॥ १९० ॥ जपेत्रवाक्षरं मन्त्रमथवाऽष्टोत्तरं शतम् ॥ हुनेजपदशांशेन पायसं तिलसर्पिषा ॥ १९१ ॥ नवाक्षरेण मन्त्रेण स्मार्ताप्त्री नृपनन्दन ॥ विद्यया मूलमन्त्रेण होमं कुर्याद्नेन वा ॥ १९२ ॥ नमो देन्ये महादेन्ये शिवाये सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ १९३ ॥ अनेन श्लोकपाठेन जुहुयाद्वा शुभं इविः ॥ उद्धृतप्रोक्षितो मन्त्रेः पात्रानीतः समुज्जवलम् ॥ १९४ ॥ संस्कृतायां भुवि स्थाप्य स्मातीियः संप्रकीर्तितः ॥ देवतार्च

बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥४१॥

नस्य जाप्यस्य होमे भुः संस्कृता यथा ॥ १९५ ॥ कृत्वा संस्थापयेदियं नान्यथा स्थापनं मतम् ॥ स्माति हि पायसं होमे हुते स्माति 🗳 हुताशने ॥ १९६ ॥ अत्र स्मार्ताष्ट्राञ्चेले ब्राह्मणस्य होमः स्मार्ताब्रावेव उक्तः ॥ तान्त्रिकप्रकारस्तु तदितरेषामेव शूद्रस्य तान्त्रिक एव तदितरयोर्विकल्पः ॥ होमाभावे द्विग्रणो जपः ॥ तदभावे समित्सपिंस्तिलानां हवनं भवेत् ॥ होमो यच महालक्ष्म्या ऋतुकाल समुद्भवैः ॥१९७॥ सजपं होमनैवेद्यं महालक्ष्मीं प्रणम्य च॥ज्ञूलेन पाहि नो देवीत्येतैः श्लोकैः प्रदक्षिणाम् ॥१९८॥ विद्ध्यात्मुस्थितो भूत्वा चण्डिकाध्यानतत्परः ॥ नमो देव्या इति श्लोकैः पश्चमिः पश्चवर्गतः ॥ १९९ ॥ कृत्वा पश्च नमस्कारानुपविश्यासने ज्ञुभे ॥ सर्वस्वरूपे इत्यादिषड्भिः श्लोकैः कृताञ्जलिः ॥ २०० ॥ प्रार्थयेज्ञगतां घात्रीं प्रयतात्मा मनेष्मितम् ॥ स्वशरीरे समारोप्य दद्या दस्यै विसर्जनम् ॥ २०१ ॥ अनेन विधिना भूप यः कुर्याञ्चण्डिकार्चनम् ॥ तस्य तुष्टा महालक्ष्मीर्यहदाति शृण्व तत् ॥ २०२॥ महदैश्वर्यमतुलं त्रैलोक्ये तस्य जायते ॥ धर्मराजसमायुक्तं पुत्रपौत्रसमाकुलम् ॥ २०३ ॥ तं करोति महालक्ष्मीर्नरं वै ब्रह्मणोपमम् ॥ शिवाश्च प्रवलायन्ते तत्स्थानाच्छतयोजनम् ॥ २०४ ॥ तेनैकोनवसन्तोऽपि तं न पश्यति दृश्यवत् ॥ तस्य स्मरणमात्रेण जायते क्षयः ॥ २०५ ॥ त्रिषु लोकेषु यत्किचित्सुरासुरसुदुर्लभम् ॥ तत्सर्वे तं समायाति महालक्ष्मीप्रसाद्तः ॥ २०६ ॥ त्परया भक्तया महालक्ष्म्याः सुपूजनम् ॥ स नरो लभते सत्यं पूजाफलमनुत्तमम् ॥ २०७ ॥ तुष्टिपुष्टिसुकीर्तीनां णाम् ॥ यथा ध्यानं तथा कुर्यात्पूजने जपकर्मणि ॥ २०८ ॥ सद्बुद्धचा देवतानां च प्राप्तये शुभकर्मणाम् ॥ शुद्धस्फटिक पङ्काशं ध्यानं स्यात्पूजने मतम् ॥२०९॥ वश्ये रक्ततरं ध्यानं कर्बुरं हर्षवेगयोः ॥ धूब्रमुज्ञाटनाख्येषु कृष्णध्यानं च मारणे ॥२१०॥ नीस्रो त्पलद्लश्यामं ध्यात्वा भवति सुप्रजाः ॥ सर्वरत्ननिभाकारं ध्यात्वा निश्चलमानसः ॥ २११ ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति नृप यया तव ॥ कल्पान्ताग्निसमं युद्धे ध्यानं प्रोक्तं स्वयंभुवा ॥ २१२ ॥ महाशोषं महायुक्तं ध्यात्वा वारिभवे भये ॥ पीयूषवर्षसंयुक्तं पूर्णचन्द्रसमप्रभम् ॥ २१३ ॥ ध्यानं कृत्वा लभेत्सत्यं शीश्रं सर्वान्मनोरथान् ॥ चतुरस्रे हि शान्त्यर्थे पीठे पूजामहाफलम् ॥२१४॥

उपा.स्त. व दुर्गा. अ० १२८

वंश्यादौ वर्तु हे तद्वदर्धचन्द्रे सुपौष्टिके ॥ त्रिकोणे या विरुद्धा सा पश्चकोणेऽथवा भवेत् ॥ २१५ ॥ षट्कोणपीठपूजायां निर्भय स्तत्क्षणाद्भवेत् ॥ खण्डनादौ रविमिते पीठे या पूजनिकया ॥ २१६ ॥ विधूनयति शत्रूणां सप्तरात्रकृतं सित ॥ योनिकुण्डे भगाङ्के वा वर्तुले चार्धचन्द्रके ॥ २१७ ॥ नवित्रकोणचके वा चतुरस्रेऽष्टपत्रके ॥ योनिकुण्डे भवेद्वाग्ग्मी भूगे चाकृतिकृतमा ॥ २१८ ॥ वर्तुले तु भवेछक्ष्मीरर्धचन्द्रे त्रयं भवेत् ॥ नवित्रकोणकुण्डे तु खेचरत्वं प्रजायते ॥ २१९ ॥ चतुरस्रे भवेच्छान्तिर्रूक्ष्मीः ररोगता ॥ पद्माङ्के सर्वसंपत्तिरचिराद्भूप जायते ॥ २२० ॥ चक्रेऽष्टकोणसुभगे समीहितफलं भवेत् ॥ होमं कुर्यादशांशेन कुसुमैर्बस वृक्षजैः ॥ २२ १ ॥ अस्य श्रीचण्डीसप्तशतीप्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः ॥ महाकाली देवता ॥ गायत्री छन्दः ॥ नन्दजा शक्तिः ॥ रक्त दन्तिका बीजम् ॥ अग्निस्तत्त्वम् ॥ मध्यमचरितस्य विष्णुर्ऋषिः ॥ महालक्ष्मीदेवता ॥ उष्णिक् छन्दः ॥ शाकंभरी शक्तिः ॥ दुर्गा बीजम् ॥ वायुस्तत्त्वम् ॥ उत्तरचरित्रस्य रुद्द ऋषिः ॥ महासरस्वती देवता ॥ अनुष्टुच्छन्दः ॥ भीमा शक्तिः ॥ श्रामरी बीजम् ॥ सूर्य स्तत्त्वम् ॥ अस्य श्रीनवाक्षरमन्त्रस्य हिरण्यगर्भवासुदेवरुंद्रा ऋषयः ॥ गायत्रयुष्टिणगनुष्ट्रप्छन्दांसि ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहा सरस्वत्यो देवताः ॥ नन्दजाशाकंभरीभीमाः शक्तयः ॥ रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामयों बीजानि ॥ ह्रीं कीलकम् ॥ अग्निवायुसूर्यास्त स्वानि ॥ कार्यनिर्देशे जपे विनियोगः ॥ एतद्गोप्यतरं सर्वे वेदागमसमुद्भवम् ॥ ब्रह्मणा ग्रुरवे दत्तं ग्रुरुणा मम शंसितम् ॥ २२२ ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणां त्रिषु लोकेषु साधनम् ॥ अनेन सदशं नास्ति सत्यं सत्यं नृपोत्तम ॥ २२३ ॥ इति पूजाजपहोमविधिः द्वितीया पटलः ॥ अथ काम्यप्रयोगः ॥ ऋषिरुवाच ॥ नित्यचण्डचादिजाप्यस्य विधानं ते वदाम्यहम् ॥ क्रमेण सर्वकार्याणां सिद्धये यज्ञ पुण्यदम् ॥ २२४ ॥ पूर्वोक्तविधिना कृत्वा चिण्डकातपेणादिकम् ॥ शुक्लां भूतामवष्टभ्य मासं प्रतिदिनं जपेत् ॥२२५॥ सकृद्रहस्य संयुक्तं चिण्डकाचरितज्ञयम् ॥ दशांशहोमसहितं सोच्यते नित्यचिण्डका ॥ २२६ ॥ धनपुत्रयशोदात्री महाज्याधिविनाशिनी महाभयमहादुःखहन्त्री सौख्यप्रदायिनी॥ २२७॥ शुक्लां षष्ठीमवष्टभ्य यावच्छुक्लचतुर्दशी॥ नव दुर्गा विधातच्याः सर्वकार्यफला

बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥४२॥

र्थिना ॥ २२८ ॥ संयूज्य विधिवदेवीं चण्डिकाकृततर्पणम् ॥ कलशं पञ्चरत्नात्वं सहकारदलाकुलम् ॥ २२९ ॥ सवस्त्रं संप्रति ष्ठाप्य चिण्डकाम्रेऽम्भसा भृतम् ॥ समन्तात्पूजयेद्दिश्च दिशां पालान यथाक्रमम् ॥ २३० ॥ चन्दनेन विलिप्ताङ्गः स्रग्वी न्यासपरा यणः ॥ नवाहं रूपमेकैकं मौनी बद्धासनो जपेत् ॥ २३१ ॥ प्रणवादिरहस्यान्तं चिण्डकाचरितत्रयम् ॥ चतुरस्र समे कुण्डे समन्ता द्धस्तमात्रके ॥ २३२ ॥ एकावरणसंयुक्ते योनिमण्डलमण्डिते ॥ ॥ दशांशविधिना होममुक्तद्वयेण साधयेत् ॥ २३३ ॥ नवदुर्गा मखे कु॰डमेवं जानीहि भूपते ॥ नित्यचण्डीविधानेऽपि कुण्डमीहक् प्रकीर्तितम् ॥ २३४ ॥ नवचण्डीमखे कुण्डमीहग्रुक्षणमुच्यते ॥ एतद्द्रिगुणितं कुण्डं दशचण्डचाः प्रकीर्तितम् ॥२३५॥ कृष्णपष्टीं समारभ्य नवदुर्गावियानवत्ः॥ यो यथा कुरुते जाप्यं कालरात्रि ह्रदाहता॥ २३६॥ महाकालोद्भवं दुःखं कालरात्रिर्व्यपोहति॥ संस्कारैरष्टभिः कुण्डं संस्कृत्यामि प्रतिष्ठयेत् ॥ २३७॥ माया बीजसमोपेतं दुर्गास्तवनसाधकः ॥ कुण्डमध्यभुवं दर्भैः परिमाजयोपलेपयेत् ॥ २३८ ॥ प्रागत्राः स्नुवमूलेन रेखास्तिस्रः समुह्णि खेत ॥ पांशुमुद्धृत्य रेखाणामभ्युक्षणमतः परम् ॥ २३९ ॥ कुण्डस्य पूजनं षष्ठं सप्तमं सप्तमुद्रया ॥ अस्त्रावगुण्ठनं कुण्डे संस्कार आष्टमः स्मृतः ॥ २४० ॥ शतमङ्गलनामानं कुण्डेऽग्नि संप्रतिष्ठयेत् ॥ चिण्डकापाठसंपूर्णं ब्राह्मणं दक्षिणे द्विजम् ॥ २४१ ॥ तत स्तत्सामिकुण्डं च नवसूत्रेण सूत्रयेत् ॥ कुण्डस्योत्तरतः स्थाप्या प्रणीता वारिपूरिता ॥ २४२ ॥ प्रणीतापात्रयोर्मध्ये उत्तरे विश्वदेवता ॥ स्थापयेत्प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतोदकपूरितम् ॥ २४३ ॥ प्रणीतापात्रतः पूर्वे स्थाप्याः पात्रगणाः क्रमात् ॥ आज्य स्थाली चह्नस्थाली गव्यक्षीरसमन्विता ॥ २४४ ॥ स्रक्षुवौ च घृतं गव्यं तन्दुलाः कुशपूलकः ॥ पालाशसमिपस्तिस्रः पूर्णपात्रमतः परम् ॥ २४५ ॥ सप्तद्वीपेश्वरीं ध्यात्वा गृहीत्वा कुशपूलकम् ॥ निक्षिपेत्प्रोक्षणीपात्रे वारुणं बीजमुञ्चरन् ॥ २८६ ॥ तेन दर्भसमूहेन शतसंख्येन संस्थितम् ॥ क्रमात्वांत्रगणं प्रोक्षेत्प्रोक्षणीपात्रवारिणा ॥ २४७ ॥ आज्यपात्रे चहस्थाल्यां निक्षि पेर् घृततन्दुलान् ॥ यथाक्रमेण कर्तन्यं ततोऽधिश्रपणं तयोः ॥ २४८ ॥ आज्ये च पायसे कार्य पर्यम्रिकरणं तयोः ॥ सन्यं

उपा.स्त. हे दुर्गी.

पालाशकाष्ट्रेन त्रिसिर्देभैंः समुज्ज्वलम् ॥ २४९ ॥ स्रुवयोस्तापनं कृत्वा प्रणीतोदकसिञ्चनम् ॥ पुनः प्रतपनं कृत्वा दक्षिणे स्थापनं स्मृतम् ॥२५०॥ उद्वास्य प्रथमं पूर्वादानीयाज्यं प्रदक्षिणम् ॥ कुण्डाचार्यान्तरे स्थाप्य स्ववी जजपपूर्वकम् ॥ २५१ ॥ अभिघार्याज्य मार्गेण वायव्ये स्थापयेच्यहम् ॥ स्वबीजजपसंस्थाने घेनुमुद्दा तयोभवत् ॥ २५२ ॥ तिस्रः पालाशसिमधो मौनी वैश्वानरे क्षिपेत् ॥ कुशपूलकयुक्ताभिः प्रोक्षण्यद्भिः प्रदक्षिणम् ॥ २५३ ॥ पर्युक्ष्याप्तिं प्रणीतायां निक्षिपेत्कुशपूलकम् ॥ निधाय दक्षिणं जानं भूमौ विश्वमुखे द्वते ॥ २५४ ॥ अन्वारब्धे सुवेणाज्यं निर्धूमे हृज्यवाहने ॥ प्रजापतिर्महाकाली महालक्ष्मीः सरस्वती ॥ २५५ ॥ एतदिममुखं त्रोक्तं मायाबीजपुरःसरम् ॥ संस्रवान्त्रोक्षणीपात्रे निक्षिपेदिश्रसाधनः ॥ २५६ ॥ विद्ध्यात्किरिपतं शमीम् ॥ तेन स्विष्टकृतं द्याद्धविषा सोज्ज्वलेऽनले ॥ २५७ ॥ मायावीजं च ॥ ब्रह्माणी माहेश्वरी कौमारी नारसिंही एँ हीं कीं चामुण्डाये विचे स्विष्टकृते स्वाहा ॥ २५८ ॥ अयं तु मुनिभिः प्रोक्तो मन्त्रः स्विष्टकृते हुते नवकं दद्यान्मायाबीजादिनामभिः ॥ २५९ ॥ तद्यथा ॥ ॐ ह्रीं नन्दाये स्वाहा इत्यादिनवाहुतयः ॥ नन्दा भगवती आद्या द्वितीया रक्तदन्तिका ॥ २६० ॥ शाकंभरी तृतीय। च दुर्गा भीमा च तत्परे ॥ भ्रामरी कालिका चैव शिवदूती प्रजापितः ॥ २६१ ॥ गन्ध पुष्पफलोपेतं कृत्वा यज्ञात्मकं स्तवम् ॥ ततः पूर्णाहुतिं दद्याद् घृतस्याच्छित्रधारया ॥ २६२ ॥ नवाक्षरेण मन्त्रेण परायणः ॥ ध्यायेद्यज्ञपुरोडाशममृतं देवदुर्रुभम् ॥ २६३ ॥ प्रोक्षणीपात्रमध्यस्थानमन्त्रेणाश्राति संस्रवान् ॥ यज्वानो ब्रह्महिष्णः ॥ २६४ ॥ तं संस्नवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम् ॥ सिललेन प्रणीतायास्तीर्थध्यानपरायणः करोति मार्जनं दर्भैः शतशः श्लोकपाठतः ॥ याः शिवा याश्च शक्तयो याभिश्च सविता सह ॥ २६६ ॥ यास्त्वापः सत्यं स्ता मे कृण्वन्तु भेषजम् ॥ अभिषिश्चदथातमानं चतुर्भिश्चण्डिकास्तवैः ॥ २६७॥ दानं दद्याद्विधानेन हेमधेन्वम्बरादिकम् ॥ नचदुर्गा तथाऽऽख्याता पापतापप्रणाशिनी ॥ २६८ ॥ सर्वैश्वर्यप्रदा भूप कुर्वेनामविलम्बितम् ॥ नवदुर्गाविधानेऽस्मिन्यत्फलं

ब्.क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥४३॥

परिकीर्तितम् ॥ २६९ ॥ कालरा त्रिविधानेऽपि तत्फलं लभते ध्रुवम् ॥ एतत्रिग्रणितं सर्वे नवदुर्गाजपे फलम् ॥ २७० ॥ कथितं तद्वाप्नोति नित्यं चण्डीजपे कृते ॥ मनसा चिन्तितं कार्यं कार्यंसिद्धिः प्रजायते ॥ २७१ ॥ ऋषिक्वाच ॥ शारदे मासि ग्रञ्जपक्षे नृपोत्तम ॥ प्रतिपत्तिथिमारभ्य नवचण्डीं समारभेत् ॥ २७२ ॥ तोरणाढचे ग्रुभस्थाने सुविताने स्वलंकृते ॥ पूर्वादिकमयोगेन दिग्देवीभ्यो बलिं हरेत् ॥ २७३ ॥ गन्धपुष्पक्षताधूपदीपैश्चरुभिरुत्तमैः ॥ कादम्बरी गजारूढा पृष्ठगा ॥ २७४ ॥ कराली महिषारूढा रक्ताक्षी प्रेतसंस्थिता ॥ श्वेतकौलिरगा श्वेता हरिता मृगवाहिनी ॥ २७५ ॥ यक्षिणी सिंह पृष्ठस्था कङ्काली वृषवाहना ॥ इंसपृष्ठसुरा ज्येष्ठा सर्पराजाहिवाहना ॥ २७६ ॥ अनेन विधिना दत्त्वा दिग्देवीभ्यो बलि यजी ॥ नव महान् लोकपालान् दिशां पालांश्च पूजयेत् ॥ २७७ ॥ कलशं पञ्चरत्नाढचं हेमवस्त्रोदकान्वितम् ॥ संप्रतिष्ठाप्य संपूज्य चण्डिका र्चनमारभेत् ॥ २७८ ॥ पूर्वोक्तेन विधानेन गन्धपुष्पैरनुत्तमैः ॥ वस्त्रालङ्कारसिन्दूरकस्तूर्यगरुचन्द्नैः ॥ २७९ दीपेश्व नैवेद्येर्वर्णसंस्थया ॥ कृत्वा तु पूजनं सर्वं जपेदेकात्रमानसः ॥ २८०॥ सकृद्रहस्यसंयुक्तं चण्डिकाचरितत्रयम् ॥ कुमारीं विष्र सुरुयांश्च भोजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ २८१ ॥ यदाद्ये दिवसे कुर्याञ्चिण्डकापूजनादिकम् ॥ द्विगुणं तद्द्वितीयेऽद्वि त्रिगुणं तत्परेऽहनि ॥ ॥ २८२ ॥ नवमीतिथिपर्यन्तं वृद्धचा पूजाजपादिकम् ॥ एकाहारं व्रती कुर्यात्सत्यादिनियमैर्युतः ॥ २८३ ॥ कृत्वा होमादिकं सर्व नवदुर्गाविधानवत् ॥ वित्तशाठचं परित्यज्य कुर्यादाचार्यतोषणम् ॥ २८४ ॥ वस्त्रांगुलीयमूधेनुवाजिहेमप्रदानतः ॥ अशक्तो नित्यमेकं तु द्याद्रूपे प्रयत्नतः ॥ २८५ ॥ शृणुष्वास्य फलं भूप यो हि कश्चिद्नेन हि ॥ विद्धाति विधानेन य एनां नवचिष्ड काम् ॥ २८६ ॥ इन्द्रब्रह्मादयो देवास्तमायान्ति प्रसेवितुम् ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं निर्धनो धनवान् भवेत् ॥ २८७ ॥ अविद्यो लभते विद्यां सकामश्र मनोरथान् ॥ न्याधयः संक्षयं यान्ति शत्रवः क्षयमाप्तुयुः ॥ २८८॥ न तस्यास्ति भयं किंचिद्राजचौराग्निवातजम् ॥ विद्या सकामन्त्र मनारयात् । ज्याययम् स्वय पारण राज्यम् अनुष्या अञ्चलका ।। शतचण्डीविधानं ते यथावत्कथयाम्यहम् ॥ २८९ ॥ सुघोरायामनावृष्ट्यां भूकम्पे च सदारुणे ॥ प्रचक्रभये तीवे क्षय

उपा.स्त. ३ दुर्गा.

रोग डपस्थिते ॥ २९० ॥ राजवश्यादिकार्येषु आयुष्मत्सुतजन्मिन ॥ महोत्पातिवनाशाय पञ्चविंशतियोजने ॥२९१॥ देशे सर्वत्र शान्त्यर्थे शतचण्डीमिमां जपेत् ॥ शिवाभ्याशे समे देशे चतुर्द्वारं सुतोरणम् ॥ २५२ ॥ पताकालंकृतं कुर्यानमण्डपं वेदिभूषितम् ॥ तत्र कुण्डं प्रकर्तन्यमुक्तलक्षणसंयुतम् ॥ २९३॥ सदाचाराःकुलीना ये ह्रीमन्तः सत्यवाजिनः ॥ चण्डिकापाठसंपूर्णा दयावन्तो जिते न्द्रियाः ॥ २९४ ॥ ईद्दग्लक्षणसंयुक्ता दम्भमोहविवार्जिताः ॥ दश विप्रान् समभ्यर्च्यमहालक्ष्मीस्वरूपिणः ॥२९५॥ मधुपर्कविधानेन यथावत्तद्भवास्यहम् ॥ श्रीपर्णीवृक्षपीठानि हस्तमात्राणि मानतः ॥ २९६ ॥ अष्टांगुलसमुच्छायसहितानि समानि च ॥ स्नुवा स्नुक्च समायुक्ताः खादिरा लक्षणान्विताः ॥ २९७ ॥ सप्तविंशतिदर्भाणां वेण्यो यन्थिविभूषिताः ॥ विष्ट्राणां सर्वयज्ञे लक्षणं परिकी र्तितम् ॥ ३९८ ॥ शुद्धोष्णोदकसंपूर्णाः पादार्घे ताम्रपात्रकाः ॥ शङ्खाश्चार्घप्रदानाय गन्धपुष्पयवान्विताः ॥ २९९ ॥ दूर्वोदकसमा युक्ताः स्थापनीयाः पृथकपृथक् ॥ सुताम्राश्च कमण्डल्व आचम्योदकपूरिताः ॥३००॥ संपुटा मधुपर्कार्थे कांस्या दृध्यादि संयुताः ॥ महान्त्यर्हाणि वस्त्राणि मुद्रिकाढचं सुभूषणम् ॥ ३०१ ॥ मयूरपत्रच्छत्राणि सोव्णीषाणि समाहरेत् ॥ पादुका आहरेत्तत्र ताष्ट्रभूषण भूषिताः ॥ ३०२ ॥ अन्यदत्र यदस्त्युक्तं मधुपर्कस्य पूजनम् ॥ कृत्वा फलमवामोति महायज्ञाईणोपमम् ॥ ३०३ ॥ अन्येभ्यो मधुपर्कस्य विप्रेभ्यः पूजनं समम् ॥ यथावद्द्रिगुणं दद्यादाचार्याय सुभिक्तमान् ॥ ३०४ ॥ अन्यैर्द्विजैः समं यत्र देशिकस्य प्रपूज नम् ॥ तस्मिन्यज्ञे फलं स्वरूपमनावृष्टौ यथा क्षितौ ॥ ४०५ ॥ अर्चितास्ते द्विजाः श्रेष्ठा संतुष्ठाः पूर्णमानसाः ॥ यजमानं सप नीकं सुतबन्धुसमन्वितम् ॥ ३०६ ॥ उपवेश्यासने पुण्यकलशाये विभूषिते ॥ वेदमन्त्राक्षरैः पूर्णे कुर्वन्ति स्वस्तिवाचनम् ॥ ३०७ ॥ कृतस्वस्त्ययनो विप्रैवेंद्वादित्रनिः स्वेनैः ॥ चिण्डकामण्डपं यायात्परिवारविभूषितः ॥ ३०८ ॥ पश्चिमद्वारमार्गेण प्रविश्य कृत मण्डपम् ॥ ददातिपूजनेऽनुज्ञां देशिकाय कृताञ्जलिः ॥ ३०९ ॥ देशिकः सर्वमन्त्रज्ञो नवभित्रीहाणैः सह ॥ दिग्देवीनेव प्रहांश्च लोकपालैः समन्वितान ॥ ३१० ॥ दिशापालांश्च संपूज्य कलशं स्थाप्य एव च मण्डपस्य चतुर्दिश्च दत्त्वा भूतविलि

बु.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥४४॥

बहिः ॥ ३११ ॥ मण्डपे कलशौ द्रौ द्वौ द्वारे निवेशयेत् ॥ पवित्रोदकसंपूर्णावाम्रपञ्चवशोभितौ ॥३१२॥ उपस्पृश्योदकं ध्यात्वा चण्डिकां देववन्दिताम् ॥ उपविश्यासने वेद्यां बद्धपद्मासनो हटः ॥ ३१३ ॥ प्राणायामित्रिजुद्धात्मा दश कन्याः सभूषणाः ॥ चण्डिकापूजनं कुर्योद्धिशेषेण समन्वितम् ॥ ३१४ ॥ कस्तूरीकुंकुमं जात्यं सकर्पूरं सचन्दनम् ॥ पलद्वयं च संपूर्णमनुलेपनमाह रेत् ॥ ३१५ ॥ दिन्यवस्त्रमलंकारं हेमगद्याणकत्रयम् ॥ लक्षपुष्पचतुर्थाशं गुग्गुलोश्च पलद्वयम् ॥ ३१६ ॥ दीपानां द्विशतं श्रेष्टं मण्डपे जपसाधनम् ॥ कुडवौ द्वौ हविष्यात्रं नैवेद्यं सरसं श्रुचि ॥ ३१७ ॥ ताम्बूलानां सकर्पृरं शतद्वयमनुत्तमम् ॥ नवचण्डी विधानोक्तं महालक्ष्मीप्रपूजनम् ॥ ३१८ ॥ नवभिर्बाहणः सार्धं कृत्वाऽऽचार्यो द्विजोत्तमः ॥ ददाति नवविप्रेभ्य आचार्यश्चण्डिका मयः ॥ ३१९ ॥ कार्य जाप्यप्रसिद्धचर्थमनुज्ञामानपूर्वकम् ॥ ततोऽनुज्ञामनुप्राप्य वेद्यामाचार्यसिव्धि ॥ संदिष्टा उपविष्टाः सुनिश्चलाः ॥ न्यासध्यानसमायुक्ता नासात्रान्तावलोकिनः ॥ ३२१ ॥ श्रीगन्धपुष्पमालाश्च चण्डिकाचरित त्रयम् ॥ सरहस्यमृषिच्छन्दोदेवताशक्ति संयुतम् ॥ ३२२ ॥ बीजतत्त्वसमोपेतमुपांशुगणसंयुतम् ॥ जपेयू रूपमेकैकं मौनिनस्त्यक मत्सराः ॥ ३२३॥ समुत्थाय ततः कुर्युरेवं सर्वे प्रदक्षिणम् ॥ चण्डिकां सुनमस्कारैः परितोष्य पुनः पुनः ॥ ३२४॥ उपविश्य ततो यक्तैः श्लोकैः सर्वार्थसाधकैः ॥ प्रार्थयेषुः प्राप्यफलं महालक्ष्मीं हढवताः ॥ ३२५ ॥ कुमारीदशकं भोज्यं भोज्या विपा दशो त्तमाः॥ महाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वतीर्जपन् ॥ ३२६ ॥ भोजयेत्परया भत्तया देशिकादिदशद्विजान् ॥ ततो बन्धुसमायुक्तो अजीयातु सकृत्युमान् ॥ ३२७॥ सत्कथाभिः सुगीतैश्च सर्ववादित्रनिःस्वनैः ॥ पूजनेः प्रदक्षिणीयैश्च वेदपाटैर्निशां नयेत् ॥ ३२८ ॥ द्वितीये दिवसे स्नात्वा विधिवत्ते द्विजोत्तमाः ॥ चण्डिकातपूर्णं कुर्युः संपूर्णध्यानपूर्वकम् ॥ ३२९ ॥ सर्वे पृथकपृथककृत्वा दिग्देवी यजनादिकम् ॥ बहिर्भृतबलि दत्त्वा कृत्वा भूतप्रदक्षिणाम् ॥ ३३० ॥ पुष्पागारे प्रविश्याथ स्वस्वासनसुसंस्थिताः ॥ जपनित जय चण्डीति यावहुर्गाप्रपूजनम् ॥ ३६१॥ पूर्वस्मात्पूजनात् कुर्याद्द्रिगुणं पूजनं क्रमात् ॥ आचार्यः सुस्थिरः शान्तश्रण्डिकायाः

उषा-स्त. व दुर्गाः अ० १२/

प्रतोषणम् ॥ ३३२ ॥ सुकृते पूजने विशा जपेयुद्धिंगुणं जपम् ॥ द्विगुणं च प्रकर्तव्यं कुमारीपरितोषणम् ॥ ३३३ ॥ कार्यं जागरणं रात्रावुकैः सर्वमहोत्सवैः ॥ चिण्डकापूजनं कार्ये कुमारीद्विजपूजनम् ॥ ३३४ ॥ तृतीयेऽहनि कर्तव्यं त्रिगुणं च सजागरम् ॥ चतुर्थे दिवसे पूर्व सम्यकार्यं चतुर्गुणम् ॥ ३३५ ॥ महाजागरणोपेतं होमं स्यात्पश्चमेऽहनि ॥ पायसं सर्पिषा युक्तं तिलैः शुक्कै र्विमिश्रितम् ॥ ३३६ ॥ जहत्युक्तविधि कृत्वा दशांशेन नृपोत्तम ॥ रुद्राध्याये यथा होमं मन्त्रेणैकेन साधयेत् ॥ तथा स्तोत्रं ॥ ३३७॥ चण्डीसप्तशतीजाप्ये होममन्त्रो नवाक्षरः ॥ कथितः पूजनाध्याये तस्माद्धोमे भवे दसौ ॥ ३३८ ॥नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ अथवाऽयं भवेद्धोमे श्लोकस्तत्र निरूपितः ॥ ३३९ ॥ जपहोमे सुसंपूर्णे दिग्देवीनां शतं शतम् ॥ होतव्यं नाममन्त्रेश्च हविष्यावेन साद्रम् ॥ ३४० ॥ शतं शतं कमाद्वेयं समिदाज्यं चरु स्तिलाः ॥ यहेभ्यो वैदिकैर्मन्त्रैः फलं पुष्पं शतं शतम् ॥ ३४१ ॥ लोकपालदिशापालहोमे सर्पिश्चरं तिलान् ॥ आचार्यादिद्विजाः सर्वे जुहुयुश्च शतं शतम् ॥ ३४२ ॥ होमे संपूर्णतां प्राप्ते नमस्कृत्येष्टदेवताम् ॥ चण्डिकां देवदेवानामृषीणां वन्दितां पराम् ॥ ३४३ ॥ स्तम्भद्रये सुचं कृत्वा यजमानः स्वलंकृतः ॥ घृतकुम्भद्शांशेन कुर्यात्पूर्णोद्वति स्वयम् ॥ पाठेन नवाक्षरजपेन वा ॥ प्राशनं मार्जनाद्यं च नवदुर्गाविधानवत् ॥ ३४५ ॥ जपहोमं समावेद्य चिण्डकायै मनोरथम् ॥ ब्रह्मणे द्याद्गोमिथुनद्रयम् ॥ ३४६ ॥ यस्याः प्रभावमतुलं श्लोकमुक्तवा कृताञ्जलिः ॥ द्याद्गोमिथुनान्यष्टावाचार्याय सुतृष्तिमान् ॥ ३४७ ॥ चतुर्विशतिसंख्याकैईमगद्याणकैः सह ॥ एकैकमष्ट्रविष्रेभ्यो दद्याद्गोमिथुनं स्वयम् ॥ ३४८ ॥ निष्कत्रय समायुक्तं वस्त्रालंकारभूषितम् ॥ सुस्थितं स्वासने शान्तं यजमानं महोत्सवम् ॥ ३४९ ॥ कुङ्कुमाकाश्चता दूर्वा द्धि ॥ आदाय दीयते विप्रा अचार्यादिसुपूजिताः ॥ ३५० ॥ स्तोत्राणां च चतुर्णां तु महालक्ष्मीपरायणः ॥ एकैकं श्लोकसुचार्य द्यादाशि समुत्तमम् ।' ३५१ ॥ सभार्यः समुतः पूर्णो लब्धाशीर्वादमङ्गलः ॥ रक्तपुष्पाञ्जलि द्याञ्चण्डिकायै विसर्जनम् ॥ ३५२ ।

इ.क्ज्यो.र्ज. **धर्म**स्कंध ८ ॥**१९**॥

भूरिदानं ततो दत्त्वा तूर्यवादित्रनिःस्वनैः ॥ प्रविशेच्छान्तिपौठश्च तोरणाढचं स्वमालयम् ॥ विधानस्य कृतेन सुकृतेन हि ॥ महालक्ष्मीर्द्दात्यस्मै त्रैलोक्ये सुखमुत्तमम् ॥ ३५४ ॥ यद्यत्कार्य सम्रहिश्य ॥ तत्र तस्य महालक्ष्मीस्तत्तदाशु प्रयच्छति ॥ ३५५ ॥ चरित्रतितयं जाप्यं चिण्डकाया नृपोत्तम ॥ सरहस्यानि नामानि ब्रह्मोक्तानि वदाम्यहम् ॥ ३५६ ॥ महाविद्या महामन्त्रश्रण्डीसप्तशतीति च ॥ मृतसंजीवनी नाम चतुर्थं परिकीर्तितम् ॥ पश्चमं तु महाचण्डी षष्टं च कुमुदी परा ॥ एतानि यो विजानाति नामानि नृपसत्तम ॥ ३५८॥ चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ॥ चण्डीसप्तशतीमध्ये संपुटोऽयमुदाहृतः ॥ ३५९ ॥ सकामैः संपुटो जाप्यो निष्कामैः संपुटं विना ॥ एतद्वोप्यतरं तत्त्वं चिण्डकाजपसिद्धिदम् ॥ ३६० ॥ ऋषिक्रवाच ॥ महाराज प्रयत्नेन सर्वसिद्धिफलप्रदम् ॥ सर्वयज्ञो त्तमं भूप कुमारीपूजनं शृणु ॥ ३६१ ॥ कृते यस्मिन्महालक्ष्मीरचिरेण प्रसीद्ति ॥ आमन्त्रयेद्दिने पूर्वे कुमारीं भिक्तपूर्वकम् ॥ ॥ ३६२ ॥ पूजादिने समाहूय कुमारीमाद्यदेवताम् ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा महालक्ष्मीः प्रसीद्ति ॥ ३६३ ॥ मण्डले चरणी तस्याः क्षालयेच्छुभवारिणा ॥ अर्चयेद्धेमपात्रेण वारिपुष्पाक्षतैः समम् ॥ ३६४ ॥ स्विताने शुभे स्थाने पङ्कानेपरि पीठके ॥ उपवेश्य कुमारीं तां स्वाङ्गे न्यासान्समाचरेत् ॥३६५॥ आसनं विधिवतपूज्य कोधद्पीववर्जितः ॥ अथ ध्यायेत्कुमारीं तां महालक्ष्मीस्वरूप पिणीम् ॥ ३६६ ॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पात्रं पीयूषपूरितम् ॥ दक्षिणाधःक्रमाद्धस्ते बिश्रतीं सर्वमङ्गलाम् ॥ ३६७ ॥ सुतप्तहेम सर्वाङ्गीमाद्यां त्रिदशपूजिताम् ॥ नवाक्षरेण मन्त्रेण सुमर्चयेत् ॥ ३६८ ॥ दद्यादाचमनं तस्यै द्याद्रश्चं सकङ्कणांगुलीयानि कर्णालकरंणे शुभे ॥ ३६९ ॥ श्रैनैयकं प्रदत्त्वा च चन्दनेन विलेपयेत् ॥ पूजयेत्पुष्पमालाभिदिन्यैध्रेपैः सुधूपयेत् ॥ ३७० ॥ कुर्यादारार्तिकं राजन्तुद्यं वाच्यतां सुहुः ॥ भोजयेद्धक्तिभावेन पायसं घृतशर्कराम् ॥ ३७१ ॥ सुपकान्नानि चान्यानि दम्भमोहिवविजितः ॥ फलैः सुरुवादु चान्नं यह्द्याद्रस्ये पुनः पुनः ॥ ३७२ ॥ यावत्सा भोजनं कुर्यात्तावत्स्तोत्रं जपेत

हुगा. हुगा.

सुधीः ॥ द्यादाचमनं तस्यै ताम्बूलं च समर्पयेत् ॥ ३७३ ॥ तोषयेद्धेमदानेन कुमारीं प्रणतोऽसकृत् ॥ प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्धिन कृताञ्जलिः ॥ ३७४ ॥ विसर्जयेत्कुमारीं तां स्वगृहे सत्त्वनिर्भरः ॥ अनेन विधिना भक्तया कुमारीं योऽभिपूजयेत् ॥ ॥ ३७५ ॥ पृथिन्यां राज्यमासाद्य शिवसायुज्यतां त्रजेत् ॥ यं यं प्रार्थयते कामं देवानामिष् दुर्लभम् ॥ ३७६ ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा तं तं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानां कुमारी परमा कला ॥ ३७७ ॥ तत्पूजनेन राजेन्द्र विलोक्यं स्यातसुपूजि तम् ॥ सम्यक् तत्फलदं तस्य चतुर्वेदफलं भवेत् ॥ ३७८ ॥ सर्वतीर्थफलं तस्य यः कुमारीं समर्चयेत् ॥ तस्मातपूज्य कुमारीं यतमानसः ॥ ३७९ ॥ कुमारीपूजने राजन् कोटियज्ञफलं लभेव ॥ राज्यं च प्राप्स्यसे शीव्रमविश्रंश्यजनमिन ॥ ३८० ॥ सोऽपि ज्ञानमवाप्नोति ब्रह्मलोकमकरुमषम् ॥ २८१॥ इति श्रीहरिकृष्ण० वृ० घ० उपासनास्त० श्रीदुर्गोपा० ध्याये मार्कण्डेयपुरा णोक्तदुर्गाकरुपनिरूपणं नामैकविंशं प्रकरणम् ॥ २१ ॥ अथ द्वितीयं देवीसूक्तम् ॥ उक्तं च माकण्डेयपुराणे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ जन्तो रपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये निःशेषपाशपटलच्छिदुरा निमेषाः ॥ कल्याणदेशिककटाक्षसमाश्रयेण कारुण्यतो भवसि शांभवि देशि केष्टे ॥ १ ॥ मुक्तादिभूषण्वती नवविद्वमाभा यचेत्सि स्फर्सि तारिकतेव संध्या ॥ एकः स एव भुवनत्रयसुन्द्रीणां कन्दर्पतां व्रजति पश्चशरौर्वेनाऽपि ॥ २ ॥ ये भावयन्ति मतिदाहभिदंशुजालैराप्यायमानभुवनाममृतेश्वरीं त्वाम् ॥ ते लंघयन्ति रलंघनीयां ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्षाम् ॥ ३ ॥ यः स्फाटिकाक्षगुणपुस्तककण्ठिकाभ्यां व्याख्यास्मुद्यतकरां गुभाम् ॥ पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते मातः स विश्वकवितार्किकचक्रवर्ती ॥ ४ ॥ बहावतंसयुतबन्धुरकेशपाशां कृतघनस्त्नहारशोभाम् ॥ श्यामां प्रवालवदनां सुकुमारहस्तां त्वामेव नौमि शबरीं शबरस्य नाथाम् ॥ ५ ॥ अर्धेन किं तव लता लिलतेन मुग्धे कीतं विभो पुरुषधर्ममिदं त्वयेति ॥ आलीजनस्य परिहासवचांसि मन्ये मंद्रिमतेन तव देवि ॥ ६ ॥ ब्रह्माण्डबुद्बुद्कद्म्बकसंकुलो मे मायोदिधिविधदुःखतरंगमालः ॥ आश्चर्यमम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति त्वद्धचानसंतति

र्श्वं.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥४६॥

महावडवामुखाग्नौ ॥ ७ ॥ दाक्षायणीति कुटिलेति गुहाननेति कात्यायतीति कमलेति कलावनीति ॥ एषा सती अगवती पर मार्थतोऽपि संदृश्यते बहुविधा ननु नर्तकीव ॥ ८ ॥ संकोचिमिन्छसि यदा गिरिजे तदानी वाक्तकयोस्त्वमसि भूमिरनाम्हणा ॥ यद्वा विकाससुपयासि यदा तदानीं त्वन्नामरूपगणनाः सुकरा अवंति ॥ ९ ॥ भोगाय देवि भवती कृतिनः प्रणामा भूकिंकरी कृतसरोजगुहां सहस्राम् ॥ चिन्तामणिप्रचयकित्पत एव शेले कल्पहुमोपवन एव चिरं चरंतु ॥ १० ॥ हन्तुस्त्वमेव भवसि त्व द्धीनमीशे संसारतापमिखलं द्यया पश्चाम् ॥ वैकर्तनी किरणसंहतिरेव दक्षो धर्म निजं शमयितं निजयेव दृष्ट्या ॥ ११ ॥ शक्तिः शरीरमधिदैवतमन्तरात्मा ज्ञानं किया करणमासनजालिमच्छा ॥ ऐश्वर्यमायतनमावरणादि च त्वं कि लजसे यद्पि देवि शशाङ्क मौले ॥ १२ ॥ भूमौ निरुक्तिमपि तापयसि प्रतिष्ठा विद्याऽनले मरुति जातु तिड्छनेव ॥ भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु निस्पन्दमानप्रमामृततोयरूपा ॥ १३ ॥ आनन्द्रकक्षणमनाइतनाभिदेशे नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे ॥ प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं सिञ्चन्ति नेत्रसिल्लैः पुलकैश्च धन्याः ॥ १४ ॥ त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मतनौ क्विस्त्वं संचेतनाऽसि पुरुषे पवने चलत्वम् ॥ त्वं साधुताऽसि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा निःसारमेवमिखलं त्वहते यदि स्यात् ॥ १५ ॥ ज्योतीषि यत्र विच रन्ति यदन्तरिक्षे सूते ययाऽपि यदिहर्भरणीं च धत्ते ॥ यद्वाति वायुरनलो यदुदर्भिषस्ते तत्सर्वमम्ब तव केवलमाज्ञयेव ॥ १६॥ यावत्पदं पद्सरोजयुगं त्वदीयं नाङ्गीकरोति हृदयेषु जगच्छरण्ये ॥ तावद्विकीर्णजिटलाकुटिलप्रशस्तास्तर्केष्रहाः समियनां प्रलयं भजन्ति ॥ १७ ॥ यद्देवयानिपतृयानिवहारमेकं कृत्वा मनःकरणमण्डलसार्वभौमम् ॥ ज्ञानेन वेह तव कारणपञ्चकस्य पर्वाणि पार्वति न यान्ति निजागमत्वम् ॥ १८ ॥ स्थूलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्त्तः कस्याश्च नापि तव वैभवमम्ब यस्याः ॥ प्रत्यिङ्गरा अपि न शक्यत एव वक्तुं साऽपि स्तुताऽखिलमयेति तितिक्षितच्यम् ॥ १९ ॥ कालाभिकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धां बालावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम् ॥ श्यामां घनस्तनतटां शक्लीकृतौ च ध्यायन्त एवं भवतीं गुरवो भवन्ति ॥ २० ॥ विद्यां परां कृतिचि

उपा.स्त. ६ दुर्गा. अ० ११८

दुम्बुरसं च केचिदानन्दमेव कतिचित्कतिचिच्च मायाम् ॥ त्वां विश्वमाहुरपूरे वयमात्तनामाः साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥२१॥ कुवलयदलनीलं बन्धुसुस्निग्धकेशं पृथुतरकुचसारं क्रान्तिकान्तावनम् ॥ किमिह बहुभिरुक्तस्तत्स्वरूपं परं नः सकलभुवनमातः सन्ततं सन्निधत्ते ॥ २२ ॥ कारुण्यकोमलकटाक्षविराजमाने संसारतारिणि शिवे सकलाघहन्त्रि॥ त्वां देवि वन्दितपदाममगदि भूतां वागीश्वरीमहमनन्तगुणां श्रयामि ॥२३॥ कलामालां कलातीतां सारां सारनिषेविताम् ॥ अमोघां सहमोघां च व्रजामि शरणं गिराम् ॥ २४ ॥ धात्रीं विवात्रीं कल्याणीं धरां धारणासुक्षमाम् ॥ अवियोनिमनिन्द्यां च वाचं त्वां शरणं ब्रजे ॥२५॥ अजां पुराणीममृतामद्भितीयां सनातनीम् ॥ वरां वरेण्यां वरदां वरश्रेष्ठां वरित्रयाम् ॥२६॥ शुभां सरस्वतीं देवीं सिच्चदानन्द्रूणिणीम् ॥ शरणागतवात्सल्ये त्वामहं शरणं व्रजे ॥२७॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ इति स्तृत्यवसाने तु प्रादुर्भृता कृपामयी ॥ महासरस्वती देवी प्रोवाच वचा शुभम् ॥ २८ ॥ श्रीदेन्युवाच ॥ वरं वरय भद्रं ते कमलोद्भव सुत्रत ॥ स्तुत्याऽनया मनो देव संतोषं मम चाग मत् ॥२९॥ ब्रह्मोवाच ॥ यदि देवि प्रसन्नाऽसि वरदाऽसि वरेश्वरि ॥ त्वद्भक्तौ देहि मे दाढर्च भववन्यविमोचकम् ॥३०॥ श्रीदेन्युवाच ॥ एवमस्तु महाभाग कमलोद्भव मारिष ॥ मृत्प्रसादात्तव सदा निर्मला बुद्धिरस्तु ते ॥३१॥ महासरस्वतीसूक्तं यत्त्वया भाषितं विघे ॥ तस्मै दत्तप्रतापो मे निशामय वचो मम ॥३२॥ विना सरस्वतीमूक्तं देवीं यश्चण्डिकां पठेत् ॥ ब्रह्मन्नानां गति यातु शापमाप्रोतु दारु णम् ॥३३॥ निष्फलस्तस्य पाठोऽस्तु मम वाक्यनियन्त्रणात् ॥ अनेन पाठिता देवी धर्ममोक्षार्थकामदा ॥३४॥ ऋषिष्वाच ॥ इत्य क्तवाऽन्तर्धिमापेदे महापूर्वा सरस्वती॥ वरेण च्छन्दयित्वाऽजं लोककल्याणभाषिणी॥३५॥ विष्णुक्रवाच॥ यामामनन्ति मुनयः प्रकृति पुराणीं विद्येति यां श्रुतिरहस्यविदो गृणन्ति ॥ तां धर्मपञ्चवितशंकररूपमुद्रां देवीमनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये ॥३६॥ अम्ब स्तवेषु तव तावदकर्तृकाणि कुण्ठीभवन्ति वचसामपि कुण्ठनानि ॥ डिम्भस्य मे स्तुतिरिमाद्य न पुञ्चरूपा वात्सल्यनिन्नहृदयां भवतीं धुनोति ॥३ ॥ ध्यानेति बिन्दुरिति वादवतीन्दुलेखारूपेति वाग्भवतन्त्रिति मारिकेति ॥ निष्पन्दमानससुधास्वरूपाऽवबोधा विद्योतसे मनसि

बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥४७॥

भाग्यवतां जनानाम् (?)॥३८॥ आविभवत्षुलकसंहतिभिः शरीरैनिंष्पन्दमानसिललेनियनैश्च नित्यम्॥ वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये पादौ तवाम्ब भुवनेषु त एव धन्याः ॥३९॥ वक्चं यदुद्यनुतिभिर्नयते भवत्याः स्तुत्यं नमो यदिप देवि शिरः करोति ॥ चेतश्च यस्त्विय परायणमन्तराणि कन्यापि कैरिप भवन्ति तपोविशेषः ॥ ४०॥ मूलालवालकुहरादुदिता भवानी निर्भिद्य षद्मु चरिस जातु तिड्छतेव ॥ भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दुनिष्पन्दमानप्रमामृततोयरूपा ॥ ४१ ॥ दग्धं यदा मद्रनमेकमनेकधाऽतो मुग्धः कटाक्षविधिनाऽङ्करयांचकार ॥ धत्ते तदा प्रभृति देवि ललाटनेत्रं सत्यं ह्रियैव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः ॥ ४२ ॥ अज्ञान संभवमनाकिलतान्वयं हि भिक्षुं कपालिनमदाद्समाद्वितीयम् ॥ पूर्वं करब्रहणमङ्गलतो भवत्या शंधुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ॥ ॥ ४३ ॥ चर्माम्बरं च शवभस्मविलेपनं च भिक्षाटनं च नटनं च परेतश्र्यौ ॥ वेतालसंहतिपरिग्रहता च शंभोः शोभां गिरिजे तव साहचर्यात् ॥ ४४ ॥ सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमऋत ॥ अत्रा सलायः सल्यानि जानते भद्रेषां लक्ष्मीनिंहिताऽधिवाचि ॥ ४५ ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये ॥ ४६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इति स्तुत्यवसाने तु विष्णोरमिततेजसः ॥ प्रादुर्भूता महालक्ष्मीमिहिषासुरघातिनी श्रीदेव्युवाच वियतामीप्सितो देव कामस्ते कमलापते ॥ ददाम्यहं त्वां च सदा तव सूक्तवशीकृता ॥ ४८॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यदि दास्यसि मे देवि वरान्सुकरुणागमात् ॥ त्वथ्येव विमला भक्तिः सदा मेऽस्तु कृपा मिय ॥ ४९ ॥ किंचित्सुक्ते विधा तन्या कृपा सिद्धिर्वरोत्तमा ॥ यत्त्रसादात्त्रसन्ना त्वं भवस्यानन्ददायिनी ॥ ५० ॥ श्रीदेन्युवाच ॥ एवमस्तु महाविष्णो कीर्तिस्ते ह्मनपायिनी ॥ अतुलश्च प्रतापो हि सदा भवतु सत्तम ॥ ६१ ॥ महालक्ष्मीसृक्तमृते देवीं यश्चण्डिकां पठेत ॥ मातृगामी स भवति पापं भवति पुष्कलम् ॥ ५२ ॥ सूक्तेऽस्मिन्काऽपि विमला स्थापिता सिद्धिकत्तमा ॥ यस्याः प्रसादतो जन्तुर्भुक्ति सुक्ति च विन्द्ति ॥ ५३ ॥ इति ते व्याहतं सत्यं विज्ञातव्यं रमापते ॥ तवास्तु विमला कीर्तिः सूक्तपाठानुभावतः ॥ ५४ ॥ इत्यु

उपी.स्त. क् डुर्फा.

HSAII

क्तवाऽन्तर्धिमापेदे महालक्ष्मीर्वरप्रदा ॥ नारायणं जगन्नाथं सा बोध्य बहुधा नृप ॥ ५५ ॥ शिव उवाच ॥ सुन्द्री त्रिपुरा कामन कामिनी साधकप्रिया ॥ अमोघसत्यवचना विमोही मोहरूपिणी ॥ ५६ ॥ अमृतेशी च कल्याणी कारूण्या करूणा कला ॥ करणा विश्वनायिका ॥ ५७ ॥ विष्ठकत्रीं विष्ठहर्ती विष्ठशी विष्ठयक्षिणी ॥ कामाख्या कामनिलया कलातीता कोमलान्तः कामेशी भगमालिनी ॥ ५८ ॥ त्रिखण्डा योनिमुद्रा च घेनुमुद्रा च खेचरी ॥ पाशाङ्कशा द्राविणी च मोहिनी मद्भिञ्जनी ॥ ॥ ५९ ॥ मन्दप्रिया दुराराध्या काला कालविनाशिनी ॥ काष्ठा कुलेशी कल्याणी सुकल्या कल्यकारिणी ॥ ६० ॥ कोमलाङ्गी विश्वमाता युगेशी च युगन्धरी ॥ ब्रह्मविष्णुविमोहा च मोहिनी स्तम्भिनी परा ॥ ६१ ॥ अमोघा सत्यसंकल्पा सत्या सत्य विनाशिनी ॥ सत्ययामा सत्यवहा सत्यवश्या जनित्रया ॥ ६२ ॥ शरीरवासिनी वासा निर्मदा वामदक्षिणा ॥ कपालकुण्डला काली काली कालविनाशिनी ॥ ६३॥ गानिप्रया च गीताङ्गी सुगीता धर्मशालिनी ॥ विश्वयोनिर्विश्वमाता विश्ववन्द्या क्रिया मयी ॥६४॥ ऋषिरवाच ॥ इति स्तुत्यवसाने तु श्रीशंभोः शूलधारिणः ॥ महाकाली कलातीता प्रोवाच वचनं महत् ॥६५॥ श्रीदेव्यु वाच ॥ स्तुत्याऽनया ते महेश संतुष्टं मम मानसम् ॥ वरं वरय भद्रं ते प्रार्थनाद्धिकं शिव ॥ ६६ ॥ श्रीशिव डवाच ॥ तवा मला सदा देवि जायतां भक्तिरुत्तमा ॥ एष एव वरो देवि प्रार्थितो मे कृपाकुले ॥ ६७ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ एवमस्त्वित देवेश सूक्तं ते पावनं क्षितौ ॥ दुर्लभं भविता देव सर्वसिद्धिविधायकम् ॥ ६८ ॥ महाकालीमूक्तमृते पठनसप्तशतीं नरः गच्छेत्सप्तशो व्याह्रतं शिव ॥ ६९ ॥ अन्यच श्रूयतां देव सप्तशत्याः फलं भवेत ॥ यस्य स्मरणमात्रेण ब्रह्महत्या क्षयं व्रजेत ॥ ॥ ७०॥ इति श्रीह० व० घ० उ० स्त० श्रीदुर्गीपा० ध्याये मार्कण्डेयपुराणोक्तदेवीसूक्तनिरूपंण नाम द्वाविंशं प्रकरणम् ॥ २२ ॥ अथ श्रीचिण्डकाह्रदयम् ॥ ॐ ह्रीं जय चामुण्डे इति त्रिदशकोटिमुकुटनिघृष्टचरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति महासंध्या महाकृताभरणा भैरवह्मपिणि धारणे प्रकटितदर्शने घोरे घोरासने ज्वलज्ज्वालासहस्रपरिवृते अर्ध्वमध्यवसुधाते उदारितव्रतरन्ध्रे

ब्.उच्चो.र्ज. धर्मस्कंध ८ 118511

निर्मिते परे परापरे कम्पितचराचरे षद्चकशोभिते महाशून्ये सुगन्धे अधऊर्ध्वमध्यस्थिते सुक्तिप्रदे देवि निर्मले सकले सकल ऋग्यज्ञःसामपरिपिठते एहि एहि भगवति ऐन्द्रस्थे सुक्ष्मे सुक्ष्मात्परे फेकारावस्थिते स्जिनीस्तम्भिनीसोहनीक्षोभिणीज्मिभणी पञ्चबीजमध्यस्थिते क्षेत्रे उपक्षेत्रे अष्टदलप्रकृतियोगियोगरते यक्षराक्षसज्वरमहाग्रहविषोपविषसिद्धगन्धवीविद्याधराधिपते ॥ ॐ हींकारकूंकारहस्ते ॥ ॐ आं हीं अमुकपात्रे प्रवेशय प्रवेशय बाह्मी च वैष्णवी रोद्री त्रिपुरे त्रिशक्ति आद्यमूर्ति आगच्छ वामकरे कारयेत ॥ अमृतसिञ्चनं पूर्णं कारयेत ॥ सुगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यफलताम्बूलदक्षिणासर्वहंसमात्रेण कार मधुकुङ्कमकस्तूरीरक्तचन्दनरक्तकरवीरपुष्पैः अतः परं शतपत्राद्यानीतैर्नानाविधपुष्पैरेकचित्तमानसं कुर्वस्तूष्णी पूजां कुर्यात ॥ ॐ द्रीं द्रीं द्रावय २ ॥ ॐ क्वीं क्वीं क्वावय २ ॥ ॐ म्लीं म्लीं म्लावय मूं मूं उन्माद्य २ ॥ ॐ हीं हीं आवेशय २ ॥ ॐ अीं भीं मूच्छिय २ ॥ ॐ धूं धूं धूनय २ ॥ ॐ म्लां म्लां आस्फोटय २ ॥ ॐ ब्लीं छीं छेदय २ ॥ ॐ हं हं उच्छेदय २ ॥ ॐ दूं हूं हन हन २ ॥ ॐ गं गं धारय २ ॥ ॐ लां लां स्तम्भ य २ ॥ ॐ स्तूं स्तूं प्रमथय २ ॥ ॐ यां यां यासय २ ॥ ॐ स्वां स्वां विध्वंसय २ ॥ ॐ प्रुं प्लं प्रावय २ ॥ ॐ भूं भूं भ्रामय २ ॥ ॐ कूं के मुद्रां दर्शय २ ॥ ॐ बीं वीं बन्धय २ ॥ ॐ दीं दीं दिशं बन्धय २ ॥ ॐ आं आं अधो बन्धय २ ॥ ॐ ऊं ऊं उर्ध्व 🗳 बन्धय २ ॥ ॐ कीं की कीलय २ ॥ ॐ श्रीं श्रीं मीलय २ ॥ ॐ गीं गीं गिलय २ ॥ ॐ विलं कुरु २ ॥ ॐ हं सां विलम्बय २ ॥ ॐ ह्रां ह्रां ढूं ढूं फट् फट् अतीतानागतागतवर्तमानं समादिशयादिशय।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पावय २॥ त्रैलोक्ये वशवतिने एकोऽपि चिण्डकाह्दयं पूज्य पठिष्यतेऽत्यर्थफलम् इति चिण्डिकावश्यं कुरु कुरु ॥ ॐ ह्यां हीं हूं हः ॥ ॐ स्फां स्फीं स्फूं स्फः एकविंशति 👹 ॥४८॥ वारं जाप्य राजद्वारे विवादे च शत्रसंकटे समराङ्गणे कृते मनसा चिन्तितान्यिप सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति ॥ इति श्रीइ० वृ० घ० उपार स्तर श्रीदुर्गोपार ध्याये श्रीचण्डिकाहृदयनिरूपणं नाम त्रयोविशं प्रकरणम् ॥२३॥ अथ चण्डिकास्तोत्रम् ॥ या देवी खङ्गहस्ता

दुर्गा. अ० ११८

सकळजनपद् व्यापिनी विश्वदुर्गा श्मामाङ्गी झुक्कपाशा दिजगणगणिता ब्रह्मदेहार्घवासा ॥ ज्ञानानां साधयन्ती यतिगिरिगमन ज्ञानदिन्यप्रबोधा सा देवी दिन्यमूर्तिः प्रदृहतु दुरितं खण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ १ ॥ ॐ हां हीं हूं चर्ममुण्डे शवगमनहते भीषणे भीमवक्रे कां कीं कूं कोधमूर्तिविकृतस्तनमुखे रोद्दंष्ट्राकराले ॥ कं कं कालधारि अमसि जगदिदं भक्षयन्ती प्रसन्ती हुंकारो च्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ २ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं रुद्ररूपे त्रिभुवननिमते पाशहस्ते त्रिनेत्रे रां रीं हूं रङ्गरंगे किलि किलितरवा शुलहरते प्रचण्डे ॥ लां लीं लूं लम्बजिह्ने इसती कहकहा शुद्ध घोराष्ट्रहासैः कङ्काली कालगत्रिः प्रदहत दुरितं चण्ड मुण्डा प्रचण्डा ॥ ३ ॥ ॐ त्रां त्रीं त्रूं घोरहृपे घघघघघघटिते घुर्छुरारावघोरे निर्मासी ग्रुष्कजङ्घे पिबतु नरवसाधूस्रधूस्रायमाने ॥ ॐ दां दीं दूं द्रावयन्ती सकलभुवि तले यक्षगन्धर्वनागैः क्षां क्षां क्षां क्षां भाभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा।। ४॥ ॐ भ्र श्री श्रू चण्डवर्गे हरिहरनिमते रुद्रमूर्तिश्र कीर्तिश्चन्द्रादित्यो च कणी जडमुकुटशिरोवेष्टितां केतुमालाम् ॥ स्रक्सवी चोरगेन्द्र शशिकिरणनिभा तारको हारकण्ठे सा देवी दिन्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥५॥ ॐ खं खं खं खं इहस्ते वरकनकिमे सूर्यकान्ति स्वतेजोविद्युज्जवालावलीनां नवनिशितमहाकृत्तिका दक्षिणेन ॥ वामे हस्ते कपालं वरविमलसुरापूरितं धारयन्ती सा देवी दिन्यमूर्तिः प्रदहत दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ ६ ॥ ॐ हुं हुं फट् कालरात्रि रुरुसुरमथनी धूम्रमारी कुमारी हां हीं हूं इति शोरीक्षपितुकिलिकिलाशब्द अष्टाइहासे।। हाहा भूत प्रभूते किलिकिलितमुखा कीलयन्ती यसन्ती हुंकारोचारयन्तीं प्रदहत दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ ७ ॥ ॐ भृङ्गी काली कपाली परिजनसहिते चण्डि चामुण्डिनत्या रों रों रोंकारिनत्ये शिकरधवले कालकूटे दुरन्ते ॥ दुं दुं दुंकारकारी सुरगणनिमते कालकारी विकारी त्रैलोक्यं वश्यकारी प्रदहत दुरितं चण्डसुण्डा प्रचण्डा ॥ ८॥ वन्दे दण्डप्रचण्डा डमहरूणिमाणिष्टीपटंकारघण्टेर्नृत्यन्ती याऽहपातैरटपटविभवैनिर्मला मन्त्रमाला ॥ सुक्षी कुक्षी वहन्ती खरखरितसखा चार्चिनि प्रेतमाला उच्चैस्तैश्राद्वहासैर्घुरुपुरितरवा चर्ममुण्डा प्रचण्डा १॥ ॐ त्व ब्राह्मी त्वं च रोद्री स च शिखिगमना त्वं

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥४९॥

च देवी कुमारी त्वं चकी चक्रहस्ता घुरघुरितरवा त्वं वराहस्वरूपा ॥ रौद्रे त्वं चर्ममुण्डा सकलभुवि तले संस्थिते स्वर्गमार्गे पाताले शेलश्के हरिहरनिमते देवि चण्डी नमस्ते ॥१०॥ रक्ष त्वं मुण्डधारी गिरिग्रहविवरे निर्झरे पर्वते वा संग्रामे शत्रमध्ये विश विश भविशे संकटे कुत्सिते वा॥ व्याप्ते चौरे च सर्पेऽप्युद्धिभुवि तले विह्नमध्ये च दुर्गे रक्षेत्सा दिव्यस्तिः प्रदृहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ ११ ॥ इत्येवं बीजमन्त्रेः स्तवनमितिशवं पातकव्याधिनाशं प्रत्यक्षं दिव्यस्तं ग्रहगणमथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ॥ इत्येवं वेगवेगं सकलभयहरं मन्त्रशक्तिश्च नित्यं मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठित स लभते प्रार्थितां मन्त्रसिद्धिम् ॥ १२ ॥ इति श्रीह० वृ० घ० उपा॰ स्त॰ श्रीदुर्गोपा॰ मार्कण्डेयविरचितं चण्डिकास्तोत्रनिह्नपणं नाम चतुर्विशं प्रकरणम् ॥ २४ ॥ अथ लघुदुर्गासप्तशतीस्तोत्रम् ॥ ॐ वीं वीं वेणुहस्ते स्तुतिविधबदुके हां तथा तान्माता स्वानन्दे नन्दक्ष्पे अनहतनिक्ते मुक्तिदे सुक्तिदे त्वाम्॥ हंसः सोऽहंविशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे हीं हीं सिद्धलोके कषकषिषुले वीरभद्रे नमस्ते॥१॥ ॐ हींकारोच्चारयन्ती मम हरति नयं चर्म मुण्डप्रचण्डे खां खां खां खड़पाणे ध्रकध्रकध्रकिते उग्रह्मपे स्वह्मपे ॥ हुं हुं हुंकारनादे गगनभुवि तले व्यापिनी व्योमहूमे हं हं हंकार नादे सुरगणनमिते राक्षसान् इन्यमाने ॥२॥ एँ लोके कीर्तयन्ती मम हरतु अयं चण्डह्रपेनमस्ते त्रां त्रां त्रां वोरह्रपे घघघघघघटिते घर्घरे घोररावे ॥ निर्मासे काकजंघे घसितनखनखाधू अनेत्रे त्रिनेत्रे हस्तान्जे ज्ञूलकुण्डं कुलकुलकुकुले श्रीमहैशी नमस्ते ॥ ३ ॥ ॐ कीं कीं एं कुमारी इहकुहमखिले को किले नानुराग सुद्रासंज्ञ त्रिरेखा कुरू कुरू सततं श्रीमहामारि ग्रह्मे ॥ तेजांगे सिद्धिनाथे मनपवनचले नैव आज्ञानिधाने ऍकारे रात्रिमध्ये सुपितपशुजने तत्र कान्ते नमस्ते ॥४॥ ॐ त्रां त्रीं वुं वूं कवित्ये दहनपुरगते रुक्मि रूपेण चके त्रिःशक्तया युक्तवर्णादिककरनिमते दादिवंपूर्ववर्णे॥ हीं स्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वल कोशितैस्तास्तु पत्रे स्वच्छन्दं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्ममुण्डे नमस्ते॥ ५॥ ॐ ब्रां ब्रीं घ्रं घोरतुण्डे घघघघघघघ घर्घरान्यां ब्रिघोषे हीं कीं दं द्रीं चचके ररररमिते सर्वज्ञाने प्रधाने ॥ द्वीं तीर्थे द्वींतज्येष्ठे ज्ञगजजुगे म्लेखदे कालमुण्डे सर्वीगे रक्तघोरा मथनकरवरे वज्रदण्डे नमस्ते ॥६॥

उषा.स्त. ३ द्वर्गा. अ० १२८

ॐ क्रां कीं कूं वामभित्ते गगनगडगडे गुह्मयोन्याहिसुण्डे वज्राङ्गे वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातङ्गहृहे ॥ सृतेजे शुद्धदेहे ळळळळळळळळळे छेदिते पाशजाले कुण्डल्याकारह्मपं वृषवृषभहरं ऐन्द्रिमातर्नमस्ते ॥ ७ ॥ ॐ हुं हुं हुं कारनारदे कषकषवसिनीमांसि वैतालहस्ते संसिद्धपेंः सिद्धसुसिद्धिटढढढढढढः सर्वभक्षी प्रचण्डी ॥ जूं सः सौंशान्तिकमें मृतमृतिनहडे निःसमे सीसमुद्रेदेवित्वंसाध कानां भवभयवरदे भद्रकाली नमस्ते ॥ ८ ॥ देवि त्वं तूर्यहस्ते परिचगमनि ते त्वं वराहस्वरूपे त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी त्वमिस च जननी त्वं पराणी महेन्द्री ॥ ऐं हीं हींकारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे पाताले शैलशृङ्गे हार्रहरभुवने सिद्धिचण्डी नमस्ते ॥ ९ ॥ इन्ताक्षं सौण्डदुः खं शमित भवभयं सर्वविघानतकार्ये गां गीं गूं में षडक्के गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये ॥ कूं कूं मुद्रा गजांशो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराले ॐ हीं हूं गां गणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते ॥ १० ॥ इति श्रीह० वृ० घ० उ० स्त॰ श्रीदुर्गोपा॰ ध्याये मार्कण्डेयकृतलघुसप्तशतीदुर्गास्तोत्रनिह्नपणं नाम पञ्चिवंश प्रकरणम् ॥ २५ ॥ अथ दुर्गाकवचम् ॥ उक्तं च कु िजकातन्त्रे ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् ॥ पठित्वा पाठियत्वा च नरो मुच्येत संकटात् ॥ १ ॥ अज्ञात्वा कवचं देवि दुर्गामन्त्रं च यो जपेत् ॥ स नाप्नोति फलं तस्य परत्र नरकं ब्रजेत् ॥ २ ॥ उमा देवी शिरः पातु छलाटं शूलघारिणी ॥ चक्षुषी खेचरी पातु वदनं सर्वधारिणी ॥ ३॥ जिह्नां च चण्डिकादेवी श्रीवां सौभद्रिका तथा ॥ अशोकवासिनी चेतो द्री बाहू वज्रधारिणी ॥ ४ ॥ हदयं लिलता देवी उद्रं सिंहवाहिनी ॥ किंट भगवती देवी द्वावूरू विनध्यवासिनी ॥ ५ ॥ महाबला च जङ्के द्वे पादौ भूतलवासिनी ॥ एवं स्थिताऽसि देवि त्वं त्रैलोक्यरक्षणात्मिके ॥ ६ ॥ रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ इति श्रीहर वृर्धः उपार स्तर दुर्गोपार कुन्जिकातन्त्रोक्तश्रीदुर्गाकवचनिरूपणं नाम षड्विंशं प्रकरणम् ॥ २६ ॥ अथ पृथ्वीधराचार्योक्तः चण्डीस्तोत्रम् ॥ यत्कर्मधर्मनिलयं कलयन्ति तज्ज्ञा यज्ञादिकं तद्खिलं सफलं त्वयेव ॥ त्वं चेतना यत इति प्रवि चार्य चित्ते नित्यं त्वदीयचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १॥ यद्वारुणात्परिमदं जगदम्ब यत्ते बीजं स्मरेद्वुदिनं दहनाधिरूढम् ॥ मायांकितं

हु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥६०॥

तिलकितं तरुणेन्द्रविन्दुनादैरमन्द्रिमः राज्यमसौ भुनिक ॥ २ ॥ पाथोधिनाथतनयापितरेष शेषपर्यङ्कलालितवपुः पुरुषः पुराणः ॥ ाविषशो जगदम्ब सोऽिप न्यापूर्णमाननयनः शयनं चकार ॥ ३ ॥ तत्कौतुकं जनि यस्य जनार्दनस्य कर्णप्रसूत विषयो जगदम्ब सोऽिप न्यापूर्णमाननयनः शयनं चकार ॥ ३ ॥ तत्कौतुकं जनि यस्य जनार्दनस्य कर्णप्रसूत विषयो ॥ तस्यापि यो न अवतः सुलभौ निह्दन्तुं त्वन्मायया कवलितौ विलयं गतौ तो ॥ ४ ॥ यन्माहिषं वपु क्षित्र यञ्जाकनायकपराक्रमजित्वरं च ॥ यल्लोकशोकजनन्त्रतबद्धहादं तल्लीलयेव दलितं गिरिजे अवत्या ॥ ५ ॥ यो धूम्र लोचन इति प्रथितः पृथिव्यां भस्मीबभूव समरे तव हुंकृतेन ॥ सर्वोष्ठिरक्षयकरे गिरिराजकन्ये मन्ये स्वमन्युद्हने कृत ६ ॥ केषामि त्रदशनायकपूर्वकाणां जेतुं न जातु सुलभाविति चण्डसुण्डौ ॥ तौ दुर्मदौ कुलिशात्पतितौ विशीपौ ॥ ७॥ दौत्येन ते शिव इति प्रथितप्रभावो देवोऽपि दानवपतेः सद्नं जगाम ॥ भूयोऽपि प्रथयांचकार सा त्वं प्रसीद शिवदृति विजृम्भितं ते ॥ ८॥ चित्रं तदेतद्परैरपि ये न जेयाः शस्त्राभिपातपतिताद्विधिरादपर्णे ॥ भूमौ बभूवः रिमताः पतिरक्तबीजास्तेऽपि त्वयैव गगने गिलिताः समस्ताः ॥ ९ ॥ आश्चर्यमेतद्तुलं विलुण्ठनपुष्टपाणिः ॥ शस्त्रीर्नेहत्य सुवि शुम्भनिशुम्भसंज्ञी नीतौ त्वया जननि तावपि नाकलोकम् ॥ ५०॥ कालहुताशनेऽस्मिन्यस्मिन्त्रयानित विलयं भुवनानि सद्यः॥ तस्मिन्निपत्य शलभा इव दानवेन्द्रा भस्मीभवन्ति हि भवानि किमन ११॥ तत्कि गृणामि भवती भवतीपतापनिवीपणप्रणियनी प्रणमज्जनेषु ॥ तत्कि गृणामि यिनी विपदि स्थितेषु ॥ १२ ॥ वामे करे तदितरे च तथोपरिष्टात्पात्रं सुधारसयुतं वरमातुलिङ्गम् ॥ खेटं गढ़ां भवानीं ध्यायन्ति येऽह्मणनिभां कृतिनस्त एव।। १३॥ आवाहनं यजनवर्णनमिशहोत्रं कर्मार्पणं तव विसर्जनमत्र देवि॥ मोहान्मया कृतमिदं सकलापराधं मातः क्षमस्व वरदे बहिरन्तरस्थे ॥ १८॥ अन्तः स्थिताऽप्यखिलजनतुषुतनतुष्ट्पा विद्योतसे बहिरिहाखिलवस्तु हमा।। का भूरिशब्दरचना वचनातिगाऽऽसीदीनं जनं जननि मामव निष्प्रपञ्चम्।। १५॥ एतत्पठेदबुदिनं दबुजान्तकारि चण्डी

उपा-स्ताः दुर्गाः

Heoll

चरित्रमखिलं भुवि यस्त्रिकालम्॥श्रीमानसुखी सुविजयी सुभगः क्षमः स्यात्त्यागी चिरन्तनवपुः कविचकवर्ती ॥१६॥ श्रीसिद्धनाथा परनामधेयः श्रीशम्भुनाथो भुवनैकनाथः॥ तस्य प्रसादात्सुलभागमश्रीः पृथ्वीधरः स्तोत्रमिदं चकार ॥ १७ ॥ इति श्रीह० बृ०ध० ड॰ स्त॰ दुर्गोपा॰ ध्या॰ पृथ्वीधरविरचितचण्डीस्तोत्रनि॰ सप्तविशं प्र॰॥२७॥ अथ गुरुकीलकपटलम् ॥ उक्तं रहस्यतन्त्रे ॥ शिव उवाच ॥ पुरा सनत्कुमाराय दत्तमेतन्मयाऽनघ ॥ संवर्ताय द्रौ तच स चान्यस्मै द्दौ च तत् ॥ १ ॥ सर्वत्र चण्डीपाठस्य प्राचु र्येण महीतले ॥ ब्रह्मकाण्डः कमेकाण्डस्तन्त्रकाण्डश्च सर्वथा ॥२॥ अभूत्प्रतिद्दतस्तेन शीष्रसिद्धिप्रदायिनी ॥ तदा तेषां च सार्थक्यं कर्तुकामेन भूतले ॥ ३ ॥ दानप्रतिमहत्वेन मन्त्रोऽयं कीलितो मया ॥ दानप्रतिमहाख्यं यत्कीलकं समुदाहतम् ॥ ४ ॥ तदा रभ्य च मन्त्रोऽयं कीलकेनाभिकीलितः ॥ न सर्वेषां भवेत्सिद्धचै ये कीलकपराङ्मुखाः ॥ ५ ॥ ये नराः कीलनेनेमं जपन्ति परया मुदा ॥ तेषां देवी प्रसन्ना स्यात्ततः सर्वाः समृद्धयः ॥ ६ ॥ त्वत्प्रसूतस्त्वदाज्ञप्तस्त्वदासस्त्वत्परायणः ॥ त्वन्नामचिन्तनपर स्त्वद्र्येंऽहं नियोजितः ॥ मयाऽऽर्जितमिदं सर्वे तच्च स्वं परमेश्वरि ॥ ७ ॥ राष्ट्रं बलं कोशगृहं सैन्यमन्यच्च साधनम् ॥ ८ ॥ त्वदधीनं कारिष्यामि यत्रार्थं त्वं नियोक्ष्यसि ॥ तत्र देवि सदावर्तं त्वदाज्ञामेव पालयन् ॥ ९ ॥ इति संचिन्त्य मनसा त्वाजितानि धनानि च ॥ कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥१०॥ समर्पयेनमहादेव्यै स्वार्जितं सकलं धनम् ॥ राष्ट्रं गृहं कोशबलं नवं च यदुपार्जितम् ॥ ११ ॥ अस्मिन्मासि मया देवि तुभ्यमेतत्समर्पितम् ॥ इति ध्यात्वा ततो देव्याः प्रसादं प्रतिगृह्य च ॥ १२ ॥ विभज्य पञ्चघा सर्वे इयंशं स्वार्थे प्रकल्पयेत् ॥ देविपत्रितिथीनां च कियार्थ त्वेकमादिशेत् ॥ १३ ॥ एकांशं गुरवे द्यात्तेन देवी प्रसीदति ॥ तस्य राज्यं स्वकं सैन्यं कोशः साधु विवर्धते ॥ १४ ॥ नानारत्नाकरः श्रीमान् यथा पर्वणि वारिधिः ॥ ज्ञात्वा नवाक्षरं मन्त्रं जीवब्रह्मसमाश्रयम् ॥ १५ ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यानां सारं संसारभेषजम् ॥ सप्तशत्याख्यमन्त्रस्य यावजीव

हु.क्त्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥५१॥

महं जपम् ॥ १६ ॥ कुर्वस्ततो न प्रमादं प्राप्तुयामिति निश्चयम् ॥ कृत्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यति ॥ १७ ॥ नाहं ब्रह्म निराकुर्यो मा मा ब्रह्म निराकरोत ॥ अनिराकरणं मेऽस्तु अनिराकरणं प्रम ॥ १८ ॥ इति वेदान्तमूर्धन्ये छान्दोग्यस्य प्रपञ्च नात् ॥ प्रारभ्य तत्परित्यागो न तस्य श्रयसे ततः ॥ १९ ॥ नाब्रह्मवित्कुले तस्य जायते हि कदाचन ॥ न दारिद्रचं कुले तस्य यावत्स्थास्यति मेदिनी ॥ २० ॥ प्रतिसंवत्सरं कुर्याच्छारदं वार्षिकं तथा ॥ तेन सर्वमवाप्नोति सुरासुरसुदुर्रुभम् ॥ २९ ॥ अन्यच्च यद्यत्करुयाणं जायते तत्क्षणे क्षणे॥सत्यं सत्यिमिदं सर्वं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥२२॥ पुत्राय ब्रह्मनिष्ठाय पित्रा देयं महात्मना ॥ अन्यथा देवता तस्मै शापं दद्यात्र संशयः ॥ २३ ॥ अयं भावः ॥ पित्रार्श्जतं विना स्वेनैव मन्त्रप्रास्युत्तरं यद्यन्तृतनमर्जितं तदर्जनं माससंबन्धिकृष्णचतुर्दश्यष्टम्यन्यतरिवसे देवीनिकटे स्थित्वा देशकाली संकीत्व दानप्रतिष्रहाख्येन कर्मणा भीणियण्ये इति संकरूप्य ।। त्वत्प्रसूत इत्यादिश्चोकत्रयमर्थानुसंधानपूर्वकं पिठत्वा राष्ट्रं बलं कोशगृहमिति श्लोकमन्त्रेण देवी चरणयोर्दत्तमिवानुसंधाय प्रसन्नतया देव्याऽऽज्ञप्त एव पुनः प्रतिग्रहं विभाव्य तन्मध्ये पञ्चमं भागं ग्रुखे निवेद्य तत्पुत्रादिभ्यो वा दत्त्वाऽवशिष्टं चतुर्थाशं स्वेन क्रियमाणपञ्चयज्ञादिधर्मन्ययार्थं निष्कास्येव तत्स्वार्थं यथेष्टं नियोजयेत् ॥ अत्र मासश्चान्द्रो श्राह्यः ॥ अमायामर्जितस्य तृत्तरमासे दानमन्त्रे पूर्णिमास्वित्यृहो यथान्यायं तन्त्रेण दानादावृह्यः ॥ दानप्रतिग्रहे एकमन्त्रसाधा रण्येन मन्त्रस्वीकारादि यावदायुषो भागत्रये प्रथमाधिकैकभागेष्वेव प्रकृते तद्यवादमाह ज्ञात्वेति नवार्णमन्त्रं स्वीकृत्य महावाक्यार्थ वादिनं तदर्थं च गुरोर्लब्ध्वाधिकृतः सन्नद्यावधि यावजीत्रं सप्तशतीस्तवपाठं प्रमादेन सकृदपि न त्यक्ष्ये इति दृढं संकल्प्य तथैवानुतिष्ठेत ॥ इत्यनेन च कीलके पटले ददाति प्रतिगृह्णाति इत्यस्य ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत इत्यस्य च प्रागुक्तोऽर्थः स्पष्ट मेवोक्त इति ॥ इति श्रीह० वृ० घ० उपा० स्त० दुर्गोपा० ध्याये मीलकण्डकृतगुरूकीलकपटलनि० अष्टाविशं प्र० ॥ २८ ॥

डपा.स्त. ३ हुर्गा.

श्रीगणेशाय नमः॥ अचलौ गिरीशगिरिशौ मातामहतां च ताततां यातौ॥ सर्वस्य यत्मभावाद्वन्देऽपर्णालतां तु गिरिजां ताम्॥१॥ ये सन्ति अतिमौलिसाररिसका यज्वान एवं परे स्ववामाधरमाधुरीपरिचये संरिक्षणः सन्तु ते ॥ अस्माकं तु तदेव लोचनचात्काराय भ्रूयाच्चिरं प्रालेया-चलकन्दरोदरझरीखेलतु मेनं वपुः॥ २ ॥ मेनं मत्स्यीक्ष्यिमिति बाह्योऽर्थः॥ मेनायां भवं मेनिमित्र उमारूपं गृहोऽर्थः॥ श्रीमल्लक्ष्मवर्तां लक्ष्मीं मातां देशिकोत्तमाम्॥ पितरं रङ्गनाथाख्यं देशिकोत्तममाश्रये॥ ३ ॥ शोवोपनामको वित्तो नीलकण्ठोऽभिधानतः॥ सप्तशातीसतशतमन्त्रसंख्याविभाजके॥ ४ ॥ कात्यायनीतन्त्रमध्ये पटलानां विवोधिनीम् ॥ व्याख्यां करोमि शिवयोस्तोषाय जनतामुद् ॥५॥ अथ वेदवत अनादिसिद्धे यम्॥ अथेदं सप्तशातीस्तोत्रं मार्कण्डेय उवाचेत्यारभ्य सावाणिर्भविता मन्नरित्यन्तं त्रयोदशाध्यायात्मकं मार्कण्डेयपुराणान्तर्गतं सर्वकामहुघं न केनिचिन्निर्मितम् ॥ किंतु वेदवदनाद्येव । तदुक्तं भुवनश्वरीसंहिनायाम्--" यथा वेदो ह्यनादिद्धं तद्वत्सप्तशाती स्मृता " इति ॥ मेकतन्त्रेपि--" सप्त शत्यास्तु सकलं तत्त्वं वेदवदनाद्येव । तदुक्तं भुवनश्वरीसंहिनायाम्--" यथा वेदो ह्यनादिद्धं तद्वत्सप्तशाता स्मृता " इति ॥ मेकतन्त्रेपि--" सप्त शत्यास्तु सकलं तत्त्वं वेदवदनाद्येव हि । पादोनं श्रीहरिवेत्ति वेत्यर्थ तु प्रजापतिः । व्यासस्तुर्याशाकं वेति कोव्यंशमितरे जनाः " इति ॥ व्यासन प्रकारम् प्रकारम् श्रीकात्वाद्यस्त्र । स्मृत्रत्वाद्यस्त्र स्मृत्रात्यस्त्र स्मृत्यात्वस्त्र श्रीम ॥ सविश्रेष्य प्रवाधिक्ष्यस्त्र । तत्र अथ सप्तशातीमन्त्रविभागप्रकरणम् ॥ इत्यापनितन्त्रे ॥ ईश्वर उव|च ॥ मार्कण्डेय उवाचाद्यो मन्त्रः श्रोकात्मकास्ततः ॥ व्योमारिवर्णमारभ्य द्वितीयस्वरसंयतम् ॥ ३ ॥

अस्य स्तोत्रस्य सप्तराती सप्तसती चिति नामद्वयं तद्वगुत्पत्तिमें हतन्त्रे-" सप्तरात्याश्चरित्रे तु प्रथमे पद्मजो मुनिः ॥ छन्दो गायत्रमुदितं महाकाली तु देवता ॥ वाग्बीजं पावकस्तन्त्वं धर्मार्थे विनियोजनम् ॥ प्रयोगाणां तु नवित्मारिणे मोहनेऽत्र तु " इत्यादि ॥ उचाटे स्तम्भने चात्र प्रयोगाणां रातद्वयम् ॥ मध्यमे तु चरित्रे स्यानृतीयेऽथ चरित्रके ॥ विद्वषवस्ययोश्चात्र प्रयोगा दिक्कृतेर्मताः ॥ एवं सप्तरातं चात्र प्रयोगाः संप्रकीितेताः ॥ तस्मात्सप्तरातीत्येवं प्रोत्ते । महाविद्येत्यादिसत्यः सप्त कल्पे तथाऽऽदिमे ॥ ब्रह्मेन्द्रगुरुशुक्राणां विष्णुरुद्रसुरद्विषाम् ॥ उपास्या देवता जातास्ताश्चात्र ब्रह्मणा स्तुताः ॥ तस्मात्सप्तरातीत्येवं व्यासेन परिकीितेता ॥ तथा मध्यमचरित्रे ॥ लक्ष्मी लिलता काली दुर्गा गायत्र्य- स्वत्यती स्त्रस्ति इति ॥ तथा काली तारा छित्रमस्ता सुमुखी सुवनेश्वरी बाला कुञ्जेति सप्तप्ततीनां मन्त्रा ग्रप्तस्त्रपेण कथिताः । तस्मात्सप्तस्तिति नाम ॥ तथा तृतीयचरित्रे बाह्याद्याश्चामुण्डान्ताः सप्त तथा नन्दाराताक्षीशाकंभरीभीमारकदिनकादुर्गामार्यः सत्यः सप्तसंख्या उक्तास्तस्मान्तस्त्रसति नाम इत्यादि मेरुतन्त्रे स्पष्टम् ॥ तत्र होमे तर्पणे मार्जने मन्त्रेः संपुटीकरणे च सप्तशातिवभागं कृत्वेव होमादिकं सप्तशातमन्त्रेः कर्तव्य- मन्यथा विफलं भवतिति वक्ष्यमाणकात्यायनीतन्त्रवचनादस्य स्तोत्रस्य सप्तशातमन्त्रविभागोऽवस्यमपेक्षितः ॥ स तु मन्त्रविभागः कात्यायनीतन्त्रे उक्तः । स च कात्यायनीतन्त्रवचाख्यानेत स्थाः प्रथमः । स च कात्यायनीतन्त्रवचाख्यानेतन्त्रते । इश्वर उवाच ॥ मार्कण्डेय उवाचाद्य इति ॥ अस्यार्थः ॥ मार्कण्डेय उवाचेत्याद्यः प्रथमः

बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥५२॥

एको मन्त्रः ॥ ततस्तत उत्तरं द्वितीयस्वर आकारस्तेन संयुतः संयुक्तो व्योम हकारस्तस्यादिवर्णः सकारस्तेन सा इति सिद्धम् ॥ तमारभ्य तृष-मित्यक्षरद्वयमन्तिमं येषां ते तदन्तिमा अष्टाद्श तत्संख्याकाः श्लोकात्मकाः मन्त्रा अवन्तीत्यर्थः ॥ तत्र यद्यपि सावार्णः सूर्यतनय इत्यारभ्य प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्र्यावनतो नृपिमत्यर्धातपूर्व सप्तद्या श्लोकाः प्रत्युवाच स तं वैश्य इति त्वर्धश्लोक एव ॥ तथापि अन्त्यार्धश्लोकस्येव मन्त्रत्त्रं स्वीकृत्य छित्रन्यायेन श्लोकार्षेऽपि श्लोकव्यवहारः कृत इति बोध्यम् । तथा च प्रथममन्त्रेण सिहता एकोनविंशतिमन्त्राः संपन्नाः । वेद्यवाक्यः मिति । वैश्य उवाचेत्येको मन्त्र इत्यर्थः । ततस्तदुत्तरं व्योमाद्यादिति लयब्लोपे पश्चमी । व्योम हकारः तदाद्यः सकारस्तमारभ्यत्यर्थः ॥ १ ॥ तमारभ्य श्लोका अर्थाञ्चत्वारः । ते पञ्चमन्त्रका भवन्ति इति होषः । चतुःश्लोकानामेव तावत्पर्यन्तं सन्वात् ॥ नतु चतुर्षु श्लोकेषु पञ्चमन्त्रत्वं कथ-मिति चत्प्रथमश्लोकस्यार्धभागस्य मन्त्रत्वस्वीकारात् । तदुक्तं भुवनेशीसंहितायाम् "समाधिनीम मन्त्रोऽयमर्धमन्त्रस्ततस्त्रयः। अन्तिमार्धेन सहिताः पश्चमन्त्रा उदीरिताः " इति ॥ २ ॥ नृषस्योक्तिरिति । राजोवाचेत्येको मन्त्रो भवतीति शेषः । मान्तवर्णो मकारान्तवर्णो यकारः । कथंभूतः एका-रेण एक ऐकारेण युक्तस्तेन ये इति सिद्धं स आदित आदौ। अथ च सकारो बिन्दुसंयुक्तोऽन्तेऽवसाने ईदशौ मन्त्रौ द्वौ मतो॥ येनिरस्त इति श्लोक खण्डद्वयं कृत्वा मन्त्रद्वयं संपादनीयमिति भावः॥ ३॥ ततो वैश्य उवाचेतीति॥ वैश्य उवाचेत्येको मन्त्र इत्यर्थः। स्वर्षु एकादशः स्वर एकारः नृपित्यन्तिमा मन्त्रा भवन्त्यष्टादश प्रिये ॥ वैश्यवाक्यं ततः श्लोका व्योमाद्यात्पञ्चमन्त्रकाः ॥ २ ॥ नृपस्योक्तिमान्तवर्ण ऐकारेण युगादितः ॥ सकारो बिन्दुसंयुक्तोऽन्ते मन्त्रीवीहशौ मतौ ॥ ३ ॥ ततो वैश्य उवाचेति स्वरैकादश आदितः ॥ विद्विषीजं बिन्दुयुक्तमन्ते स्यान्मनुपञ्चकम् ॥ ४ ॥ मार्कण्डेय उवाचेकस्ततो मन्त्रत्रयं भवेत् ॥ तादिवर्णं च भ्रवनस्वग्यु ग्वारुणान्तिमम् ॥ ६ ॥ राजीवाचेति षण्मन्त्रा आदितान्ताः शुभानने ॥ अथोवाच ऋषिर्ज्ञानमस्तीत्यारभ्य पार्वति ॥ ६ ॥ स आदित आदौ । अथ च विद्ववीजं रकारः । कथंभूतं बिन्दुयुक्तम् ॥ तेन रामिति तदन्ते यस्यैतादृशं मनुपञ्चकं स्यादित्यर्थः । अत्राप्येवमेतव्यथा पाहेत्यारभ्य निष्ठुरमित्यन्ताश्चत्वार एव श्लोकास्तेषु पूर्वन्यायेनादिमाधीतिमाधिन सहितमध्यश्लोकत्रयेण पश्चमन्त्रत्वं बोध्यम्॥४॥मार्कण्डेय उवाचैक इति । मार्कण्डेय उवाचेत्येको मन्त्र इत्यर्थः । तनस्तादिवर्णं तकार आदिवर्णां यस्य भवनस्वरं औकारस्तग्रुग्वारुणोऽकारः सोऽन्तिमे यस्यैतादशं मन्त्रत्रयं भवेत।अत्रापि ततस्तावित्यारभ्य पार्थिवावित्यन्तरलोकद्वयेपथमस्रोक्धांतित्मस्रोकार्धयोःपृथककरणेन मध्येकस्रोकेन मन्त्रत्रयत्वं बोध्यम्। तदुक्तं अवनेश्वरीसंहितायां ततस्तावर्धमेतत्स्यादिति॥५॥राजोवाचेति।राजोवाचेत्यको मन्त्र इत्यर्थः। ततो भूकार आदियेषां ता इति अन्त येषां ताहशाः षण्मन्त्राःमता ज्ञेया इत्यर्थः।अत्रापि प्रथमान्तिमार्धद्वयपृथककरणेन षण्मन्त्रत्वं बोध्यम्।तद्वक्तं भगवन्निद्मर्धं स्यादिति॥अहितमार्धस्य तु उवाचान्तास्तु ये मन्त्रास्तर्धमन्त्रात्मिकाः त्रिये इति हर्गौरीतन्त्रवचनात् मन्त्रत्वं बोध्यम्। अथोवाचेति॥ अथानन्तरमुषिहवाचेत्येको मन्त्रः॥ तदनन्तरं ज्ञानमहित

उपा.स्त. १ दुर्गाः

अ० १२६

इत्यार्भ्य सर्वेश्वरीत्यन्ता मन्त्राद्वादरा कीर्तिताः।प्रथमार्धमध्ये दश् श्लोका अवशिष्टमन्तिमार्धमिलित्वा पूर्वन्यायन द्वादरा मन्त्रा ज्ञेयाः॥राजोवा-चिति । राजोवाचत्येक मन्त्रः॥ अथादौ भगवन् इति अन्ते विदावर्ति तादराश्लोकद्वये प्रथमार्धमध्यश्लोकान्तिमार्धात्मकं मन्त्रत्यमिदं पूर्वन्यायेत ख्यातमित्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ पश्चाद्दिवचनेत्येको भन्तः । नत आदौ नित्येव सा ज्यदिति अन्ते प्रभुरिति तार्दशा ये सप्त श्लोकास्तेषु प्रथमार्ध-मध्यश्लोकषट्काान्तिमार्थात्मका अष्ट मन्त्रा इत्यर्थः ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्मोवाचेति ॥ ब्रह्मोवाचेत्येको मन्त्रः ततस्त्वं स्वाह।दिका असुरावित्यन्तिमा ये चतुर्दश श्लोकास्ते पूर्वन्यायेन प्रथमार्धमध्यत्रयोदशश्लोकान्तिमार्धात्मका पश्चदश मन्त्रा इत्यर्थः ॥ ९ ॥ ऋषिरविमिति । ऋषिर्रवाचेत्येको मन्त्र । एवं स्तुतेत्याद्याः केशवान्तिमा ये षट् श्लोकास्ते प्रथमार्धमध्यश्लोकपञ्चकांतिमार्धकाः सप्त मन्त्राः भवन्ति इत्यर्थः । ततो भगवद्धक्तिर्भगवानुवाचे-त्येको मन्त्रः । भवेतामद्य मे सुष्टाविति श्लोके खण्डद्वयेन द्वौ मन्त्रावित्यर्थः ॥ १० ॥ अथिष्टिति ॥ ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः । विश्वताभ्यामिति । सर्वेश्वरेश्वरीत्यन्ता मन्त्रा द्वादश कीर्तिताः राजीवाचेति भगवन्नादावन्ते विदावर ॥७॥ मन्त्र त्रयमिदं ख्यातं पश्चाद्दषिरुवाच च ॥ नित्यैव सा जगन्नादौ प्रभुरन्तेऽष्ट मन्त्रकाः ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्मोवाच ततस्त्वं स्वाहा त्वं स्वधादिमाः ॥ महासुरान्तिमा मन्त्रा मताः पञ्चदश प्रिये ॥ ९ ॥ ऋषिरेवं स्तुतेत्याद्याः सप्त स्युः केशवान्तिमाः ॥ ततो भगवदुक्तिः स्याद्भवेतामित्युभौ मन् ॥ १० ॥ अथर्षिर्वश्चिताभ्यामित्येतन्मन्त्रद्वयं शिवे ॥ ऋष्युक्तिश्च तथेत्युक्तेत्यादिमन्त्रद्वयं भवेत् ॥ ११ ॥ सर्वे श्चोका इहा ध्याये त्वष्टयुक् सप्ततिर्मताः ॥ मध्येऽर्धश्चोकमन्त्रास्तु चतुर्तिशतिरीरिताः ॥१२॥ उवाचान्तास्तत्र बोध्या मन्त्रा भुवनसंख्यकाः ॥ संहत्याहुतयो ज्ञेयाश्चतुर्भिरिधकं शतम् ॥१३॥ इति कात्यायनीतन्त्रे सप्तशतीमन्त्रविभागे विंशतितमः प्रथमः पटलः ॥ २०॥ विश्वताभ्यामित्यादिकमेतन्मन्त्रद्वयं भवेत्। विश्वताभ्यामयं मन्त्रो ह्यर्थमन्त्रो जलपद् इति हरगौरीतन्त्रात्सोऽर्थमन्त्रोऽविशष्ट एकः श्लोकमन्त्र इति मन्त्र द्वयम् । ऋष्युक्तिरिति । ऋषिरुवार्चेत्येको मन्त्रः तथेत्युक्तवेत्यादिश्लोकद्वयात्मकं मन्त्रद्वयं नात्रार्थमन्त्रोऽस्ति ॥ ११ ॥ नतु सर्वे श्लोका इहाध्याये काति जातास्तत्राह-सर्वे श्लोका इति । इह प्रथमाध्याये सर्वे श्लोकाश्चतुष्पादात्मका अष्ट्रयुक्समृति ७८ जाता मध्येऽर्धश्लोकमन्त्रास्त पूर्वीकप्रकारेण चतुर्विशातिरीरिताः इदमेव ज्ञापकं अध्ये मध्येऽधमन्त्र करणे ॥ १२ ॥ उवाचान्ताः कात स्नन्ति तत्राह् - उवाचान्ता इति । ऋषि-रुवाच राजोवाचेत्याद्य उवाचमन्त्रा भुवनसंख्यकाश्चर्द्धद्यासंख्याका भवन्ति ॥ अस्त्वेतत्संहत्याहुतयः कति जातास्तदाह--संहत्येति । अस्यार्थः स्पष्ट एव ॥ १३ ॥ इति नीलकण्ठकृतायां कात्यायनीतन्त्रव्याख्यायां विद्याः पटलः ॥ २० ॥

ष्ट.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥५३॥ ईश्वर उवाच ॥ द्वितीय द्वितीयाध्याये ऋषिरुवाचेति प्रथमो मन्त्रः । तेन सह अष्टपष्टिश्लोकमेळनेन नवपिराद्वतयो जाता एकोनसप्तिति प्रिति फिलतम् ॥ आहुतिरित्येक वचनमार्थम् । ततस्तृतीयेऽध्याये हे देशिके ग्रुरुक्षिणि पार्विति ऋषिरुवाचेत्यको मन्त्रः ॥ १ ॥ ततः प्रश्लिरुवाचेत्यको मन्त्रः । १ ॥ ततः क्षिरुवाचेत्यको मन्त्रः । १ ॥ ततः क्षिरुवाचेत्यको मन्त्रः । प्रवार्षः । प्रवार्वः । प्रवार्व

गोचरं ततो देव्युगचित्येको मन्त्रः । ततो त्रियतामिति षोडशाक्षरोऽर्धश्लोकात्मको मन्त्रः इत्यर्थः ॥ ५ ॥ देवा उचुिरित एको मन्त्रः तं मन्त्रमुक्त्वा भगवत्या कृतं सर्विमिति वदेत् । कियत्पर्यन्तं वदेत्त्त्राह--मन्त्रोऽयमिति । द्वादश शते उत्तरा वर्णास्तयुक् तयुक्तः शतवर्णाध्यः द्वादशाधिकशतवर्णात्मः सार्धित्रश्लोकात्मक इति यावत् तावत्पर्यन्तमेको मन्त्र इत्यर्थः। इदमेकमन्त्रत्वविधानं कामनापरत्वेन केवल-मन्त्रजपपत्तया कचिद्धक्तं तत्सर्वोत्तमं भवतीति स्चनाय प्रसंगाद्धकं न तु सार्धित्रश्लोकात्मक मन्त्रेणकाहुतिः कर्तव्यत्यिभायेण पटलान्ते वश्य-माणसंख्याया विरोधापतेः तस्मादशापि खण्डं कृत्वा होमः कर्तव्यःतत्र भवनेशीसंहितायां भगवत्येत्येतदर्धं सर्वाशापुरकं स्मृतमित्युक्तत्वाद्धगवत्या कृतं सर्विमित्यर्धश्लोकात्मक एको मन्त्रः ततः श्लोकत्रयात्मकास्त्रयो मन्त्राः इति वोध्यस्।। ६।। ततो ऋषिक्वाचान्त इति । ऋषिकवाचेको मन्त्रः अन्ते

डपा.स्त. ₹

अ० १२८

तद्नते इति प्रसादितत्याद्यश्चत्वारः श्लोका ये स्युः तावन्त एव मन्त्रा अवन्तीत्यर्थः॥ ७॥ सर्वाध्यायमन्त्रसंख्यां मेळयति श्लोकाश्चतुर्थे इति॥ पश्चित्रिंशदिति पश्चित्रंशच्छ्लोकात्मका मन्त्राः पश्चोवाचान्ता अर्थात् बोध्याःतत्रैवार्धमन्त्रद्वयमेळने चत्वारिंशत् द्वियुक् द्विचत्वारिंशन्मन्त्रा अवन्ति इत्यर्थः॥ ८॥ मध्यमचरित्रसंख्यां मेळयति एवं मध्यचरित्रस्योति ॥ स्पष्टम् ॥९॥ प्रथमं शतं तद्वत्तरं पश्चयुतं पश्चाशदित्यर्थः ॥१५५॥ इति का० व्याख्यायामेकिष्शः पटळः ॥ २१ ॥ पश्चमा ध्याये ऋषिहवाचेतीति ॥ ऋषिहवाचेत्येको मन्त्रः ततः पुरा इत्यारभ्य विष्णुमायां प्रतुष्टुवः इत्यन्ताः श्लोकक्षपः पण्यन्त्रा अवन्तीत्यर्थः। ततो देवा उच्चरित्येको मन्त्रः ॥ १ ॥ नमो देव्यादीति ॥ नमो देव्ये इत्यारभ्य विनम्रमूर्तिभिरित्यन्ताः श्लोकािस्त्रंशद्भवन्ति तन्मध्ये विष्णुमायेति शिव्यकाः ते

श्चोकाश्चतुर्थेऽध्याये तु पञ्चित्रंशत्परेश्वारे ॥ अर्धमन्त्रद्वयेनैव चत्वारिंशद्द्रियुक् पुनः ॥ ८॥ एवं मध्यचरित्रस्य पञ्चाशच्च शतो त्रम् ॥ तथा पञ्चयुतं मन्त्रा महालक्ष्म्या विभेदतः ॥ ९ ॥ इति का॰ तन्त्रे एकविंशः पटल ॥ २१ ॥ ऋषिरुवाचेति पुरा विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ षण्मन्त्राः श्चोकरूपास्ते देवा ऊचुस्ततः परम् ॥ १ ॥ नमो देव्यादितः श्चोकाश्चिशद्विनम्रमूर्तिभिः ॥ विष्णुमायादितो श्चान्तिरूपान्ते त्रीणि षष्टियुक् ॥ २ ॥ अवतारैः पृथङ्मन्त्रास्तेषां त्रिषष्टिराहुतिः ॥ इन्द्रियाणामधिष्ठा त्रीरयेकः श्चोकात्मकः परः ॥ ३ ॥

खण्डत्रयेण त्रिपष्टिर्भवन्तीत्यर्थः ॥ २ ॥ कथं खण्डत्रयं कर्तव्यमिति चेत्तत्राह-अवतारैरिति ॥ एतत्पद्लब्धांकः पृथङ्मन्त्राः कर्तव्याः खण्डत्रयं कर्तव्यां तत्राकारेण वर्गस्यं प्रहणं तेन च षोडशसंख्या लक्ष्यते वकारेण वरक्षचिसंकेतन चतुःसंख्याया प्रहणं मिलित्वा विष्णुमार्यत्यादि नम्स्तस्य पर्यन्तं विद्यात्यक्षरात्मकः प्रथमः खण्डः तार इति तकारेण षट्संख्याया प्रहणं रकारेण द्वित्वसंख्याया मिलित्वाऽष्टाक्षरात्मको द्वितीयः खण्डः । यद्यप्येतद्मन्थानुरोधेनायं द्वितीयखण्डः प्राप्तस्तथापि वेदाक्षरो मनुर्मध्ये महालक्ष्मयाः प्रतोषकृत् । लक्ष्मीस्के तु ताशब्देनायमेवोच्यते शिवे ॥ इति चतुर्स्थिशे पटले वचनात् तृतीयखण्डो ज्ञेयः नमस्तस्य इति द्वितीयखण्डः एवं प्रतिश्लोकं संपन्ना ये त्रयो मन्त्रास्तेषां त्रिषष्टिराहुति राहुतयो ज्ञेया इत्यर्थः । इत्यं मूलाक्षरात्तन्त्रान्तराच मन्त्रत्रये लब्धे ग्रुप्तवत्यां केनचिज्ञाल्पतं या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्य नमो नमः इति चतुर्विशत्यक्षरो मन्त्रस्त्रवारमुचार्याहुतित्रयं भवतीति तत्केन ग्रुरुणा बोधितमिति स एव प्रष्ट्यः ।

इ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंथ ८ ॥५८॥ तथा च विशात्यक्षरः प्रथमो मन्त्रो द्वितीयश्चत्रक्षरः अष्टाक्षरस्तृतीयो मन्त्र इति सिद्धम् ॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्रीति अपमेकश्चोकात्मको मन्त्रः ॥ ३ ॥ चितिक्षपेणति । चितिक्षपेण या कृत्स्नामिति मन्त्रेण पूर्वोक्तयुक्तया आहुतित्रयं कुर्यादित्यर्थः । एवं मन्त्रा इति । विष्णुमायत्यादितः पूर्वैः त्रयोदशमन्त्रेः सह एवं प्रोक्तप्रकारेण सप्तषष्टिमन्त्रमेलने अशीतिमन्त्रा भवन्तित्यर्थः ॥ अत्र प्रथमोक्तमुवाचमन्त्रद्वयं मेलयित्वा अशीति संख्या संपादितेति बोध्यम् ॥ ४ ॥ तत इति । स्तुतेति युगलं स्तुता सुरारित्यादिकं मन्त्रद्वयमित्यर्थः । ऋषिक्रवाचित्येको मन्त्रः । एवं स्तवादियुक्तानाम् इत्यारभ्य त्वया कस्मान्न गृह्यते इत्यन्ताः सप्तदश मन्त्रा इत्यर्थः ॥ ५ ॥ ऋषिक्रवाचेत्येको मन्त्रः ॥ ततो वै निश्चयेन निशेति निश्चयिति वचः शुम्भ इत्यादित्रितयैः श्लोकैः मन्त्राः त्रयः शुद्धभेदाः प्रकीर्तिताः शुद्धभेदेत्युपरञ्जकतया विशेषणम् ॥ ६ ॥ अथ

चितिरूपेण मन्त्रेणाप्याद्वितत्रयमुचरेत् ॥ एवं मन्त्रा अशीतिस्ते पूर्वैः सद्द सुरेश्वरि ॥ ४ ॥ ततः स्तृतेति युगलमृषिरुवाच इत्यथ ॥ एवं स्तवादियुक्तानां त्वया करमान्न गृह्यते ॥ ५ ॥ मन्त्राः सप्तदशेते तु ऋष्युक्तिश्चानिशेति वे ॥ इत्यादित्रितयभेन्त्राः शुद्धभेदाः प्रकीतिताः ॥ ६ ॥ अथ दूत डवाचेति देवि दैत्येश्वरस्ततः ॥ इत्याद्या नव मन्त्राश्च पुनर्ऋषिरुवाच ह ॥ ७ ॥ इत्युक्तेत्यादिमन्त्रेणेहैकेन च सरस्वती ॥ देव्युवाच ततः श्लोकाश्चत्वारो मन्त्रभेदतः ॥ ८ ॥ अथ दृत डवाचेति गौरवा मा गमिष्यसि ॥ मन्त्राश्चतुःसंख्यकास्तु देव्युवाच ततः परम् ॥ ९ ॥ एवमेतद्वली शुम्भः स च युक्तं करोतु यत् ॥ इति मन्त्रद्वयं श्लोका अङ्गमन्त्राश्च ते नव ॥ १० ॥

दूतित दूत उवाचित्येको मन्त्रः । देवि दैत्येश्वर इत्यादयो नव मन्त्राः ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः ॥ ७ ॥ इत्युक्तत्यादि ॥ इत्युक्ता सा तदा देवित्येकेन श्लोकेनेवेह सरस्वती पाप्यत इति शेषः । सारस्वतप्रदोऽयं मन्त्रः इति भावः । ततो देव्युवाचेत्येको मन्त्रः । ततः श्लोका श्रद्धारो मन्त्राः ॥ ८ ॥ अथ दूत उवाचेति । दून उवाचेत्येको मन्त्रः ॥ गौरवा मा गमिष्यसीत्यन्ताश्चतुःसंख्याः मन्त्राः देव्युवाचेति चैकः ॥ ९ ॥ एवमिति एवमेतद्वली शुम्भः इत्याग्भ्य स च युक्तं करोतु यदित्यन्तं मन्त्रद्वयम् एवं रीत्या त सर्वे श्लोका अथ च नव संख्या अङ्गमन्त्राश्च । अत्र नवशब्दः सप्तानंख्याचेथको लक्षणया वक्ष्यमाणसंख्यानुरोधात ॥ अङ्गशब्दो ह्यारम्भवाचकः । अङ्गं त देहावयवे पुंस्यारम्भ प्रकीतित इति कोशात् । तथा चारम्भमन्त्रा इत्यर्थः । त च ऋषिरुवाच देव्युवाचेत्याद्यः । सर्वे मन्त्रा मिलित्वा तस्मित्रध्याये एते

उपा.स्त. इ दुर्गा. अ॰ ११८

एकोनपञ्चाशत्संख्या मन्त्राः पूर्वीक्ताः अशीतिमन्त्राश्चामिलित्वा शताद्धिका एकोनत्रिशन्मन्त्रका जाता इत्यर्थः ॥ १०॥ ततः षृष्ठेऽध्याये ऋषि-प्कानपत्रशिवस्था मन्त्राः प्रवाकाः अरागतमन्त्रात्र्वामाळावा राताद्वायका एकानात्रशन्मन्त्रका जाता इत्ययः ॥ १० ॥ ततः षष्ठऽध्याय ऋषि ह्वाचेत्याकण्येति ॥ ऋषिह्वाचेत्येको मन्त्रः । तत इत्याकण्येत्याद्याश्चत्वारः श्लोकमन्त्राः ईरिताः ॥ ११ ॥ पुनर्ऋषिह्वाचेति एको मन्त्रः तेना- ज्ञानस्ततः शीघ्रमित्यादिमन्त्रत्रयं प्रोक्तं देव्युचावेत्येको मन्त्रः ॥ १२ ॥ देत्येश्वरेणेति ॥ देत्येश्वरेण प्रहित इत्येको मन्त्रः । अथो अनन्तरमृषिष्ठिन् वाचेति मन्त्रः । अथानन्तरमित्युक्तान्ते इत्युक्तपद्स्यान्ते सोऽभ्यधावत इति पद्मित्यादि तदाद्यो द्वादश श्लोकास्तैः श्लोकेस्तत्संख्या देवता- हितयो भवन्ति ॥ १३ ॥ आदित आहुतीः कथयित-चतुर्विशितभेदा इति । ॥ षष्ठेऽध्याये चतुर्विशितसंख्या आहुतय इत्यर्थः ॥ १४ ॥ ततः सप्तमाध्याये ऋष्यकिरिति ॥ ऋषिह्वाचेत्यको मन्त्रः । तत आज्ञप्तत्यादि । आज्ञप्तास्तेन ते देत्य इत्याद्यस्त्रयो विश्वतिसंख्या मातर प्कोनिर्ञिश्च शतादिषिकामन्त्ररूपकाः ॥ ऋषिरुवाचेत्याकण्यं श्लोकाश्चत्वार ईरिताः ॥ ११ ॥ पुनर्ऋषिरुवाचेति तेनाज्ञप्तस्ततः परम् ॥ मन्त्रत्रयमिदं प्रोक्तं देव्युवाचेति वे ततः ॥ १२ ॥ देत्येश्वरेण प्रहित एको मन्त्रः प्रकीर्तितः अथो ऋषिरुवाचाथेत्यु कतान्ते सोऽभ्यधावत ॥१३॥ इत्यादिद्वादश श्लोकाः षष्ठेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ चतुर्विशतिभेदास्ता देवताहुतयः क्रमात् ॥ १४ ॥ ऋष्युवितराज्ञतेत्यादित्रयोविशतिमातरः ॥ ऋषिरुवाच तावानीतौ मन्त्रभेदद्वयं क्रमात् ॥१५॥ सप्तविशत्यदो देवि भवन्त्याहुतयः क्रमात् ॥ अत्राध्यायद्वये देवी धूम्राक्षीति प्रकीर्तिता ॥ १६ ॥ ऋषिश्चण्डे च निहते इत्यध्यायावसानकम् ॥ त्रिषष्टचाहुतयः प्रोक्ता एकाऽप्यधाहुतिस्तथा ॥१७॥ रक्ताक्ष्या देवता अष्टो देवतास्तु प्रकीर्तिताः ॥ राजोविचित्रमित्यादिश्लोकद्वयमुदाहतम् ॥१८॥ ऋषिश्चकार कोपं दीत्यादिश्लोकस्वरूपतः ॥ सप्ततिशच्च विज्ञया देवता मन्त्ररूपतः ॥ १९ ॥

आहुतयो भवन्तीत्यर्थः । ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः तावानीताविति मन्त्रद्वयम् ॥ १५ ॥ सप्तविंशतीति । हे देवि अद् एता आहुतयः । सर्वाः स्प्ताः विशातिसंख्या भवन्तीत्यर्थः । अत्राध्यायद्वये धूम्राक्षी देवता तदुपासकेनेदमध्यायद्वयमवश्यं पठनीयमित्यर्थः ॥ १६ ॥ ऋषिश्रण्डे च निहते इत्याद्यध्यायावसानकम् अध्यायान्तं त्रिषष्ट्याहुतयः प्रोक्तास्तन्मध्ये एकैवार्थ-श्लोकाहुतिरन्याः श्लोकरूपाः एकषष्टिसंख्य आहुतयः ऋषिरुवाचेत्येकाहुतिः मिलित्वा त्रिषष्ट्याहुतयः। तत्र प्राकृतमन्त्रस्य श्लोकात्मकस्य विच्छेदकरणापुक्षया ते विद्यमानस्यवार्धस्य हते मातृगण इत्यस्य मन्त्रत्वमुचितम् ॥ १७ ॥ रक्ताक्ष्या इति देवीललाटान्निःसृताया रक्ताक्ष्या ब्राह्म्याचा अष्टी शक्तयो देवता अस्मित्रध्याये भवन्ति । तदुपासकैरयमध्यायो नियमेन पठनीय इति भावः । नवमेऽध्याये राजोविचित्रेति राजीवाचेत्येकः विचित्रमित्यादिकश्लोकद्वयम् ॥ १८ ॥ ऋषिश्वकारेति । ऋषिरुवाचेत्येकः । चकार कोशमित्यारभा श्लोकरूपाः सप्तिविद्यान्यन्याः

A B B B B B

इ.ड्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ 119911

॥ १९॥ एकचत्वेति । सर्वा आहुतयो नवमाध्याये एकचत्वारिंशद्भवन्ति । अस्याध्यायस्य भरेवी तारा देवतेति पूर्ववत् ॥ २० ॥ दशमेऽध्याये ऋषिरुवाचेत्येको मन्त्रः निशुम्भं निहतमित्यादिद्धयमन्त्रकं मन्त्रद्धयं भवतीत्यर्थः । ततो देव्यवाचेत्येको मन्त्रः । तत एकवाहमित्यादी अनुत्तमौ मन्त्रावित्यर्थः ॥ २१ ॥ युनदेव्यकेति ॥ युनदेव्युवाचेत्येको मन्त्रा इत्यर्थः ॥ तदुत्तरमेकमन्त्रेण अहं विभृत्यति मन्त्रेण सह पूर्वोक्ता अष्टी मन्त्राः संपन्नाः । ऋषिरुवाचेत्येकः । ततः प्रववृते इत्यादि सार्धद्वाविद्यातिर्भन्ता अवन्ति । तत्र द्वाविद्यातिश्लोकरूपा मन्त्रा जन्वलुश्चाग्रय इति एकोऽन्ति-मोऽर्धमतुः । अस्मिन्नध्याये सर्वे मन्त्रा द्वात्रिद्याद्भवन्तीति बोध्यम् ॥ २२ ॥ दशमे इत्यादि स्पष्टं पूर्ववत् ज्ञयम् ॥ २३ ॥ इति कात्यायनीतन्त्र एकचत्वारिशदिति आहुतिर्नवमे शुभे ॥ देवता भैरवी तारा शृणु गोप्यं वरानने ॥ २० ॥ मन्त्रकम् ॥ ततो देवीति मन्त्रौ द्वौ एकैवाइमनुत्तमौ ॥ २१ ॥ पुनर्दैन्येकमन्त्रेणाप्यष्टौ मन्त्रा उदाहताः ॥ ऋषिस्ततः प्रववृते सार्धद्वाविंशतिर्मताः ॥ २२ ॥ द्वाविंशन्मनवस्तत्राप्येको सर्धमनुर्मतः ॥ दशमे सिंहमासीना शूलपाशविधारिणी मुख्या चतुर्भुजा बाणचापहरता शुभेक्षणा ॥ इति कात्यायनीतन्त्रे द्वाविंशः पटलः ॥ २२ ॥ ऋषिःसुमेघा देग्या हते शुभे ॥ चतुस्त्रिशत्तथा श्लोका मन्त्रास्तत्संख्यकाः स्मृताः ॥ १ ॥ ततो देन्येकमन्त्रेण वरदाऽहं सुरेश्वरी ॥ देवा उत्तरः सर्वाबाधाप्रशमनं तथा ॥ २ ॥ श्लोकेनैकेन देवेशि देव्युवाच ततः परम् ॥ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्तेत्यादिश्लोका श्रुत्रेश ॥ ३ ॥ सार्धा सर्वाहुतिदेवि पञ्चाशत्पञ्चसंयुता ॥ वैष्णवी देवता हात्र महागरूडवाहना ॥ ४ ॥ देव्युवाचेति च तत एभिः स्तवैश्व मां तदा ॥ दूरेत्यधेन सहिता अष्टाविंशतिक्रपकाः ॥ ५ ॥

व्याख्यायां द्वाविंशः पटलः ॥ २२ ॥ ऋषिः छमेधोति । एकाद्शे ऋषिरुवाचित्येको मन्त्रः । देत्या हते इत्यादि आरभ्य चतुःश्चिंशच्छलोकास्तावदेव मन्त्रा इत्यर्थः ॥ १ ॥ तत इति । देत्युवाचेति मन्त्रः एकेन वरदाऽहमित्युत्तर्मन्त्रेण युक्तः । तथाच मन्त्रद्वयं वोध्यम् । देवा उच्चिर्त्येकः सर्वा वाधाप्रशमनिम्त्युत्तरेकमन्त्रेण युक्तस्तेन मन्त्रद्वयं फालितम् ॥ २ ॥ देत्युवाचेत्येको मन्त्रः । ततो वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्त इत्याद्यश्चतुर्दश श्लोका मन्त्राः ॥ ३ ॥ पश्चसंयुता पश्चाशदाद्वतयोऽधमन्त्रेण सहिता अस्मित्रध्याये अवन्तीत्यर्थः । स चार्धमन्त्रोऽर्थाद्वशिष्ट एव । वैष्णवी देवता पूर्ववद्वोध्या ॥ ४ ॥ देव्युवाचेतीति । देत्युवाचेत्येको मन्त्रः । तत एान्नः स्तविश्व मामित्यारभ्य दूरादेव पलायन्ते इत्यन्तिमार्थेन सहिता

अष्टाविंशतिसंख्याविशिष्टश्लोकरूपा मन्त्रा बोध्याः ॥ ५॥

उपा.स्त. ३ दुर्गा.

अर् १२८

पदादिश्लोकत्रयेणात्र पडाहुतिः पडाहुतयो भवन्तीत्यर्थः । नतु श्लोकत्रये कथं पडाहुतित्वं तत्राह--अत्रार्धानामेवमन्त्रतादिति।अर्धमन्त्रपट्केन पडा हुतयोभवन्तीत्यर्थः॥१०॥ततो मार्कण्डेयेति । मार्कण्डेय उवाचेत्येको मन्त्रः । इति दत्त्वा तयोरिति । इति दत्त्वेत्यर्थश्लोक एवं मन्त्र इत्यर्थः । पुनर

नन्तरं द्वी मन्पी बभुवान्तिहिता सद्य इत्येकश्लोयात्मक एकोमन्त्रः ॥११॥ सूर्याज्ञन्म समासाद्यत्यर्धात्मको द्वितीयो मन्त्रः तौ द्वी मन्त्राबुज्ञार्यान्ते

सावर्णिर्भविता मतुरित्येकपादात्मकं मन्त्रं पठेदिति शेषः । प्रन्थसमाप्तिबोधकं पठेत्र त्वस्याहुतिरित्यर्थः । तदुक्तं कात्यायनीतन्त्रे--'इति दक्त्वे-त्यर्धमन्त्रो वाञ्छितार्थमपूरणे ' इति ॥ १२ ॥ एवं च्योदशेऽध्याये इति इदं पूर्वत्रान्वेति । होमतर्पण कर्मणीति उत्तरत्रान्वेति । होमादिषु सप्तशत हु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥५६॥ मन्त्राः कर्तव्या इत्यर्थः । तेन कामनानुसारेणेकद्वित्रमन्त्रजपेनायं मन्त्रविभागनियमो यथा दुगें स्मृतेत्यादिकेवलमन्त्राणां जपादिष्विति बोध्यम् । अत एव भगवत्या कृतमित्यार्भ्य सार्थितिश्च च्छलोकात्मक एको मन्त्रो भगवता पूर्वमुक्त इति बोध्यम् ॥ १३ ॥ सत्संप्रदायेति । तदुक्तं भुवने श्वरीसंहितायाम् ॥ इयं सप्तशाती देवि ज्वलद्गिर्म संशयः । सुरक्षिता सुखाय स्यादन्यथा गृहद्दाह् कृत् " इति ॥ १४ ॥ इत्थं कात्यायनीतन्त्र रहस्यार्थल्व्धेऽनुगमे सप्तमाणेसत्य युगमार्भ्याद्यपर्यन्तं सर्वदेशियः सर्वशिष्टेराश्चिते सत्यिति तमनुगमनाहत्योन्मत्तवत्केश्चिद्गुप्तवतीयन्थे पल पितम् । यथा सोऽचिन्तयत्तदा तन्तेत्यर्थश्लोकात्मको मनुः । तथा किंनु तेशं कथं ते चेत्यर्थश्लोकात्मको मनु । तथा तेशं कृते करोमीति द्वावर्ध श्लोकको मनु । इत्यादिसर्वत्र सप्तशत्यां मन्त्राणां प्रमाणाभावेनाङ्गलीभावः कृतः । तथाऽन्यरिति टीकाकारेः कचिदादिमश्लोक एवार्धमन्त्रत्वं कचिन्मध्यश्लोक एवार्धमन्त्रत्वं स्वीकृत्य सर्वसप्तशतीमन्त्राणामाङ्गलीभावः कृतस्तेन च सर्वानुष्ठानेषु लोकेरधर्मः कारितस्ताहशाधर्मचारिणां का गतिर्भवेदिति परमेश्वर एव जानाति । ननु किमिदं मन्त्रत्वं मननत्राणक्तपत्वमिति चेत्र । तस्य ब्राह्मणे सत्त्वान्यन्ति व्यातं भवित ॥ विहितार्थाभिषायको मन्त्र इत्युक्ते चसन्ते किथिलानालभेत इत्यस्य मन्त्रस्य विधिक्षपत्वादव्याप्तिरिति चेन्मेवं शास्त्रकारा यं मन्त्रं व्यवहरन्ति स एव मन्त्र इति समाख्यानस्य निर्दोषलक्षणत्वात स्पष्टीकृतं चैतज्ञीभिनिना सुत्रे 'तच्चोदकेषु मन्त्राख्या ' इति मन्त्रेण मीमांसायाम् । अस्ति च

सत्संप्रदायविधिना ज्ञातन्यो सम वछभे ॥ अन्यथा विफलो मन्त्रः सत्यं सत्यं सयोदितम् ॥ १४ ॥ इति श्रीकात्यायनीतन्त्रे त्रयोविशः पटलः ॥ २३ ॥

सप्तश्तीमन्त्रेऽपि शिवस्य मन्त्रत्विमित व्यवहारः । स्यादेतत् । जौमितिना अर्थैकत्वादेकं वाक्यं साकांक्षं चेद्विभागे स्यादिति स्वेणैकवाक्याव लक्षणमिमिहितं तस्यायमर्थः । यद्विभागे साकांक्षंमविभागे चैकार्थ तदेकं वाक्यमिति । तत्र विभागे साकांक्षामित्युक्तेऽतिव्याितः स्यात् । "स्योनं ते सद्नं कुणोमि वृतस्य धार्या सुषेवं कल्पयािम तस्मिन् सीदामृते प्रतितिष्ठ व्रीहीणां मेध सुमनस्यमानः " इति । अत्र तस्मिन् इत्यादि पदसमूहस्य विभागे साति प्रकृतवािच तच्छव्दिनिर्णयाय पूर्वपदसमूहसाकांक्षत्वमिति तद्वचच्छेत्तुमेकार्थिमित्युच्यते हि तत्रैकार्थं वमिति पूर्वार्धस्य पदसमूहस्य विभागे साति प्रकृतवािच तच्छव्दिनिर्णयाय पूर्वपदसमूहसाकांक्षत्वमिति तद्वचच्छेत्तुमेकार्थमित्युच्यते हि तत्रैकार्थं वमिति पूर्वार्धस्य सदनकरणमर्थः उत्तरार्धस्य पुरोडाशात्रिमात्रे स्योनं समी चीनं सुषेवं सुष्टु सेवितुं योग्यं मेधसारं पुरोडाश इत्यर्थः । अत्र द्वयोः समूहयोविषय द्वयत्वसुभयवािदिसद्धं तदेकार्थमित्यनेन व्यावर्तते । एकार्थमित्युक्तेऽतिव्याितःस्यात्। "भगो वां विभजतु पूषा वां विभजतु"अनयोविभिन्न मन्त्रत्वेन पदसमृहयोस्तात्पर्यविषयस्य द्रव्यविभागक्तपस्यार्थस्य स्यवच्यत्वयोः

डवा.स्त. ३ दर्गा.

सामानाधिकरण्यव्यात्प्या तादृशार्थश्लोकानामन्वेषणे सोऽचिन्तयत्तदा तत्रत्येवमाद्य एवार्धश्लोकाः संभवन्तीति चेत्तद्सत् अव्याप्त्यीतव्यातिदो षस्य दुष्परिहरत्वात् हुंफडादिमत्त्रेषु मन्त्रत्वेऽप्येकवाक्यत्वाभावात् ब्राह्मणप्रन्थ एकवाक्यत्वेऽपि मन्त्रत्वाभावात्।तथा च तादृशसामानाधिर्कण्यस्य कचित्सत्त्वेऽपि सर्वत्रास्त्वात् । किंच त्रयोदशेऽध्याये 'स्वल्पेरहोभिर्नृपते 'इत्यादिश्लो कत्रयेण परस्परापेक्षितानां षडर्धानां पण्म त्रस्वीकारेण भगवता तिव्रयमस्यास्वीकाराच । किंच पूर्वोक्तवचनैः सर्वत्र निर्वाहे जाते तिव्रित्रित्तहवीकारे उपयोगाभावाच वक्ष्यमाणकारिकाविरोधस्य दुष्परिहरत्वाच तस्मान्मदुक्तार्थ एव साधीयानिति सुधियो विभावयन्तु । अत्र केचिद्तुगमैकरिसेका एवमाहुः। ये सप्तशत्यामष्टसप्तत्युत्तरपञ्चशतक्लोकाः सन्ति तत्र यत्संख्यश्लोकमध्ये उवाचान्तमन्त्राःसन्ति तत्रोवाचान्तमन्त्रेरेव मन्त्रविभागस्यद्धितत्वात् उवाचान्तमन्त्रपूर्वोत्तरभागस्थार्धश्लोकद्वयस्यमन्त्र द्वयत्वं बोध्यम् । यथा प्रथमचरित्रे अष्टादशक्लोकान्तिमक्लोकमध्ये वैश्य उवाचेत्युवाचान्तमन्त्रो हित तत्र पूर्वोत्तरार्धक्लोकद्वयस्यमन्त्रद्वयत्वं तेन ' प्रत्युवाच स त वैश्यः ' इत्यादिर्धमन्त्रः । वैश्य उवाचेति चैको मन्त्रः । समाधिर्नाम वैश्योऽहमित्याद्यर्थात्मक एको मन्त्रः । एवमेव सप्तशत्यां सर्वशातुगमः । यत्र चाध्यायान्तेऽर्धरुलोकः स्वभावत एव पतित यथा जज्वलुश्वात्रयः शान्ता इति । तथा हते मातृगणस्तिसमन्ननर्ताहरूमदोद्धत इति । तात्रर्धश्लोकात्मक एक एव स मन्त्रो बोध्यः । प्रथमचरित्रान्ते ऋषिरुवाचत्युवाचमन्त्रस्तु पूर्वश्लोकान्ते उत्तरश्लोकादौ च पतितो न श्लोक मध्ये इति न पूर्वोत्तरार्थयोर्भन्त्रद्वयत्वम् । एवं सप्तशत्यां विना प्रमाणं सप्तशतमन्त्रविभागोऽतुगमेनैव विध्यति । अयं चातुगमः स्तोत्रकारेणैव मध्ये उवाचान्तमन्त्रकरणेन द्शित इति तत्र वदामः सत्योऽयमनुगमो भवतां यदि काःयायनीतन्त्रवचनविरुद्धो न स्यात्तदेव तु दुर्घटं तथा हि भवदतुगमातुरोधेन त्रयोदशाध्याये 'स्वल्पेरहोभिर्दृपते ' इत्यादिश्लोकत्रये मन्त्रचतुष्ट्यं भवति कात्यायनीतन्त्रातुरोधेन तु मन्त्रषट्कं भवति ततश्च का यायनीतन्त्रविरोधो दुरुद्धर एवंति मदुक्त एव पन्था रमणीय इति सुविधो विभावयन्तु । तः यदि शिष्टास्तमनुगममाश्रित्य तद्नु गमातुरोधेन सप्तरातमन्त्रविभागं स्वीक्कर्वन्ति तर्हि वयमपि स्वीकुर्मो नास्माकमात्रहः इति ॥ हंसः सारं यथाऽऽदत्ते सारासारविवेकतः । त्यक्त्वाऽ सारं तथा सारमङ्गीकुरुत पण्डिताः॥ अथास्य सप्तरातमन्त्रविभागस्य प्राचीनोक्ताः कारिका लिख्यते॥ मार्कण्डेय उवाचेति प्रथमो मन्त्र ईरितः॥ ततो मन्त्राः सप्तदशाप्यर्धश्लोकात्मकस्ततः ॥ १५ ॥ वश्योक्तिरयतोऽर्धं स्यात्ततो मन्त्रास्त्रयः स्मृताः ॥ कथं त इत्यप्यर्धं स्याद्राजाबोचेति मन्त्रकः ॥ १६ ॥ ततश्चार्धद्वयं मन्त्रौ वैश्योक्तिस्तद्नन्तरम् ॥ ततोऽर्धमन्त्रः संत्रोक्तस्त्रयः श्लोका मनुष्यम् ॥ १७ ॥ करोमि कि यद्र्धे स्यान्मार्कण्डेयवच स्ततः ॥ ततस्ताविदमर्धे स्यादेकः इलोकात्मको मतुः ॥ १८ ॥ उपविष्ठावित्यर्धमन्त्रो राजोवाच मतुस्तथा ॥ भगवित्रिति चार्धे स्याञ्चतुः इलोकी चतुष्टयम् ॥ १९ ॥ ममास्येत्यर्धमन्त्रः स्यान्मुनिवाक्यं ततः परम् ॥ ज्ञानमस्तीत्यर्धमन्त्रो दृश मन्त्रास्ततः परम् ॥ २० ॥ संसारेत्यर्धमन्त्रः स्याद्रा

बु.ज्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥५७॥

जोवाच मतुस्ततः ॥ अगवन्केत्यर्धमन्त्रो मतुः इलोकात्मकस्ततः ॥ २१ ॥ तत्सर्वमर्धमुनिवाङ् नित्येवेत्यर्धमन्त्रकः ॥ षण्मन्त्रास्तुः ततः प्रोक्ता निद्रामि यर्धमन्त्रकः ॥ २२ ॥ ब्रह्मोवाच ततोऽर्धः स्यात्रयोदश ततः परम् ॥ बोधश्चेत्यर्धमन्त्रः स्यान्मुनिवाक्यं ततः परम् ॥ २३ ॥ एवं स्तुतेत्यर्ध मन्त्रः पश्च मन्त्रास्ततः परम् ॥ उक्तवन्तावर्धमतुर्भगवद्वाक्यमेव च ॥ २४ ॥ भवेतामिदमर्धं स्यात्किमन्येनेति चार्धकम् ॥ मुनिवाक्यं पुनश्चार्धं ततः स्याच्छलोकमन्त्रकः ॥ २५ ॥ मुनिवाक्यं ततो मन्त्रौ द्वौ प्रोक्तौ चरमौ परौ ॥ इत्येवं प्रथमेऽध्याये मन्त्रसंख्या समीरिता ॥ २६ ॥ द्वितीय ऋषि वाक्यं स्यादष्ट्रषष्ट्रचणवः स्मृताः॥ तृतीयं मुनिवाक्यं तु पश्चित्रंशत्तथाऽणवः॥ २०॥ देवीवाक्यं ततश्चैकः इलोको मुनिवचस्तथा॥ पश्च इलोका स्ततो मन्त्रास्तृतोयेऽध्याय ईरिताः ॥ २८ ॥ चतुर्थे मुनिवाक्यं तु षड्विंशतिरथाणवः ॥ मुनिवाक्यं ततो मन्त्रद्वयं देवीवचस्तथा ॥ २९ ॥ अर्ध रलोकात्मको मन्त्रो देवा **ऊचुस्ततः परम् । अगवत्यत्यर्धमन्त्रस्ततः** रलोकत्रयं स्मृतम् ॥ ३० ॥ मुनिवाक्यं वेदमन्त्राः स्याद्ध्यायेऽथ पश्चमे ॥ मुनि वाक्यं च षट् इलोका देवा ऊचुस्तताः परम् ॥ ३१ ॥ पश्च इलोकास्तु ते मन्त्रा या देवीत्यादितः पुनः ॥ भ्रान्तिदेव्यन्तिमा मन्त्रा एकविंशतिरी रिताः ॥ ३२ ॥ तेषां खण्डत्रयेणेव त्रिषष्टचाहुतयोऽभवन् ॥ विंदात्यक्षरपर्यन्तं प्रथमः खण्डईरितः ॥ ३३ ॥ वेदाक्षरो द्वितीयस्तु तृतीयोऽष्टाक्षरः स्मृतः ॥ इन्द्रियत्येकमन्त्रः स्याचितिरूपेति च त्रयम् ॥ ३४ ॥ पूर्ववच ततो मन्त्रौ द्वौ मुनेर्वाक्यमेव च ॥ सप्तद्शाथमन्त्राः स्युर्मुनिवाक्यं त्रणोऽणवः ॥ ३५ ॥ दूतवाक्यं नव रलोका मुनिवाक्यं सक्रम्मतुः ॥ देवीवाक्यं वेद्मन्त्रा दूतवाक्यं ततः परम् ॥ ३६ ॥ चत्वारस्तु पुनः इलोका देवीवाक्यं मनुद्रयम् ॥ अथ षष्ठे मुनेर्वाक्यं चत्वारः इलोकमन्त्रकाः ॥ ३७ ॥ सप्तमऽथ मुनेर्वाक्यं त्रयोविंशतिमन्त्रकाः ॥ मुनिवाक्यं च मन्त्रौ द्वौ भवेतामष्टम् ततः ॥ ३८ ॥ मुनिवाक्यं त्रिषष्ट्यात्माहुतयोऽर्धाहुतिस्तथा ॥ नवमे राजवाक्यं तु इलोकद्वयमतः परम् ॥ ३९ ॥ मुनिवाक्यं ततः सप्तित्रंशच्छ्लो कास्तु मन्त्रकाः ॥ दशमेगुनिवाक्यं तु मन्त्रदयमतः परम् ॥ ४० ॥ देवीवाक्यं च मन्त्रौ द्वौ पुनर्देव्येकमन्त्रकः ॥ सुनिवाक्यं ततो द्वाविंशत्याहुतय ईरिताः ॥ ४१ ॥ अर्धमन्त्रोऽन्तिमः प्रोक्तस्तत एकादशे पुनः ॥ सुनिवाक्यं चतुस्त्रिशच्छूलोका देवीवचस्ततः ॥ ४२ ॥ एकमन्त्रस्ततो देवा उच्चारे त्येष मन्त्रकः ॥ एकमन्तोऽम्बिकावाक्यं चतुर्दश तथाऽणवः ॥ ४३ ॥ अर्ध मन्त्रोऽन्तिमः त्रोक्तो द्वादशोऽथाम्बिकावचः ॥ अष्टाविंशतिमन्त्राः स्युरे काऽप्यर्धाहुतिस्तथा ॥ ४४ ॥ पुनर्ऋषिस्ततोऽर्ध स्यात्रव इलोकास्त्रयोद्दो ॥ एकाद्द्यार्धाहुतयो द्वाद्दा इलोकमन्त्रकाः ॥ ४५ ॥ उवाचवचनैः षड् भिरेकोनिवेशदीरिताः ॥ गौडपादीयभाष्याब्धेः कारिकामृतमुद्धृतम् ॥ ४६ ॥ पिबन्तु विबुधाः सर्वे मृतिनाशो यतोभवेत् ॥ ४० ॥ इति कारिका वली रहस्योद्घाटनेनाम्बा मा क्रोधमवलम्बताम् ॥ दोषवन्तः सुताः सन्ति क्षमाशीला हि मातरः ॥ १ ॥ रङ्गनाथसुतेनेयं श्रीलक्ष्मीतनयेन च ॥ नीलकण्ठेन विदुषा मन्त्रसंख्याप्रकाशिका ॥ २ ॥ कात्यायनीतन्त्रवर्षे कृता टीका यथामित ॥ श्रीयतां तेन मे देवी भुवनेशी महेश्वरी ॥ ३ ॥ इति श्रीरङ्गभद्रस्रुतनीलकण्ठकृतौ कात्यायनीतन्त्रोक्तसप्तदातीमन्त्रव्याख्यात्रकाद्याकादीकायां त्रयोविंदातितमः पटलः ॥ २३॥

. उपा.स्त. हुर्गा.

।।५७॥

अथ मन्त्रविभागः ॥ नागोजीभद्दीये अष्टसदत्युत्तराणां श्लोकानां शतपञ्चकम् ॥ प्रोक्तं सप्तशतीस्तोत्रं तत्सप्तशतसङ्ख्यया ॥ १ विभज्य जुहुयान्मन्त्रमिति कात्यायनीमतम् ॥ मार्कण्डे उवाचैकः सावण्यांद्यास्ततः परम् ॥ २ ॥ श्लोकमन्त्राः श्लोकात्मकस्ततः ॥ एकोनविंशदेवं स्युवैंश्योक्तिविंशतिस्तथा ॥ ३ ॥ पुनरर्धे पुनः श्लोकत्रयम्धं पुनभवेत ॥ पञ्चविंशतिरेवं स्यादाजा षड्विंशतिस्ततः ॥ ४ ॥ अर्घश्लोकात्मकौ मन्त्रौ मन्त्रसङ्ख्या प्रकीर्तिता ॥५॥ पुनरंघ पुनः श्लोकत्रयमधं पुनर्भवेत् ॥ मार्कण्डेयः पुनश्चार्घश्चोकः श्चोकात्मकः पुनः ॥ ६ ॥ अर्घश्चोकात्मको मन्त्रो राजाऽपश्चोकमन्त्रकः ॥ मन्त्राश्चत्वारिंशदेवं श्चोकमन्त्रचतुष्ट्यम् ॥ ७ ॥ पुनरर्धमृषिश्चार्धे श्चोकमन्त्राः पुनर्दश ॥ पुनरर्धः पुना राजा एकोना षष्टिरुच्यते ॥ ८ ॥ पुनरर्ध पुनः श्लोकः पुनर्रं पुनर्र्हिषः ॥ पुनर्र्ध पुनः श्लोकाः षण्मन्त्राः पुनर्र्धकम् ॥ ९ ॥ निद्धां भगवतीं विष्णोरतलां तेजसः प्रभुः ॥ इत्येव पाठो मन्त्राणामेकसप्ततिरूच्यते ॥१०॥ ब्रह्माऽर्धश्लोमन्त्रोऽथ श्लोकमन्त्रास्त्रयोदश ॥ अर्धश्लोक ऋषिश्वार्धश्लोकः श्लोकास्तु पञ्च वै ॥ ११ ॥ पुनरर्घ तु मन्त्राणां सपञ्चनवतिः स्मृता ॥ भगवानर्धमन्त्रौ द्वावृषिश्लोकार्धकं पुनः ॥ १२ ॥ श्लोकः पुनर्ऋषि श्लोकद्वयं मन्त्रद्वयं भवेत् ॥ श्लोकानामष्ट्रसप्तत्या चतुर्भिग्धिकं शतम् ॥ १३ ॥ अध्यायादावेव ऋषिक्वाचेति सकूनमनुः ॥ अष्ट षष्टिमिताः श्लोकास्तावन्तो मनवः स्मृताः ॥ १४ ॥ एकोनसप्ततिः सर्वेऽध्याये मन्ता द्वितीयके ॥ आदावृषिरुवाचैकः पञ्चविंश त्ततः परम् ॥ १५ ॥ निहन्यमानाद्याः श्लोका मुखरागाकुलाक्षरम् ॥ इत्यन्ता देव्युवाचैको गर्ज गर्जेति चापरः ॥१६॥ श्लोका ऋषिरुवाचेति पुनश्च श्लोकपञ्चकम् ॥ चतुश्चत्वारिंशदेवं सर्वे मन्त्रास्तृतीयके ॥ १७ ॥ आद्यो ऋषिरुवाचेति शक्राद्याः श्लोक मन्त्रकाः ॥ षड्विंशास्तु ऋषिश्लोकद्वयं देवी ततः परम् ॥ १८ ॥ त्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ इत्यर्धश्लोक मन्त्रोऽथ देवा ऊचुस्ततः परम् ॥ ॥ १९ ॥ भगवत्या कृतं सर्वमित्यर्धश्लोकमन्त्रकः ॥ यद्यं निहतः श्लोकद्वयं देवी ततः परम् ॥ २०॥ (पाठान्तरं चद्यं निहताद्यं च श्लोकमन्त्रत्रयं भवेत् ॥) ऋषिश्लोकास्तु चत्वारो मनवः परिकीर्तिताः ॥ षट्त्रिश

बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥५८॥

चत्वारिंशर्द्रयाधिकम् ॥ २१ ॥ षट्सप्ततिश्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु पञ्चमे ॥ एकोत्रिंशर्धिकं शतं कात्या ातम् ॥ २२ ॥ एको ऋषिरुवाचेति पुरा ग्रुम्भादयश्च षट् ॥ श्लोकम्न्त्रास्ततो देवा ऊचुश्चैवाष्ट्रमो मनुः ॥ २३ ॥ नमो दिकाः श्लोकाः पञ्च मन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥ त्रयोदशैवं मन्त्रास्तु या देवी त्यादयोऽपि च ॥ २४ ॥ एकविंशतिकाः श्लोका ान्त्यन्तास्तेषु मन्त्रकाः ॥ प्रतिश्लोक त्रयो मन्त्रा ज्ञेयाः सर्वे त्रिषष्टिकाः ॥ २५ ॥ पुनः श्लोकात्मको मन्त्रश्चिमन्त्रः श्लोककः पुनः ॥ त्रयोविंशच्छ्लोककेषु मन्त्रा वै सप्तषष्टिकाः ॥ २६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्ये विंशत्यक्षरको मनुः ॥ २७ ॥ नमस्तस्यै इति प्रोक्तो द्वितीयश्चतुरक्षरः ॥ अद्यक्षरस्तृतीयोऽपि नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८ ॥ एवं द्राविंशतिश्लोकेंर्सेय मन्त्रत्रयं बुधैः ॥ पूर्वैस्त्रयोदशिर्मन्त्रैः सहाशीतिरुदाहृताः ॥ २९ ॥ स्तुता सुरेति च श्लोकद्वयं चेव पुनर्ऋषिः ॥ पुनः सप्तदश श्लोका ऋषिः श्लोकत्रयं ततः॥ ३०॥ दृतश्चेव नव श्लोका ऋषिरेकोऽम्बिका ततः॥ (एक इत्यस्यैक श्लोक इत्यर्थः) चतुःश्लोकी पुनर्दूत चतुःश्लोकी पुनः शिवा ॥३१॥ श्लोकद्वयं मिलित्वा तु चत्वारिशत्रवाधिकम् ॥ अशीत्यापि च संयोगे एकोनिर्विशताऽधिकम् ॥ ३२ ॥ शतमेवं तु विज्ञेयमाहुतीनां च पञ्चमे ॥ विंशतिश्लोकसंयुक्ते षष्ठेऽध्याये प्रकीर्तिताः ३३॥ सर्वे श्लोका मन्त्रह्मपा देव्यैकाऽथ ऋषित्रयम् ।। चतुर्विशतिमन्त्राणामित्येवं परिकीर्तिताः ॥ ३४॥ पञ्चिवंशतिश्लोक युक्तेऽध्याये यन्त्रास्तु सप्तमे॥सर्वे मन्त्राः श्लोकरूपा ऋष्युवाच द्वयं ततः॥३६॥सप्तविंशतिरेवं तु मन्त्रसंख्या प्रकीर्तिता॥सार्धेकषष्टि श्लोकाढचेऽष्टमेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ ३६ ॥ एकषष्टिश्लोकमन्त्रा अन्तेऽर्धश्लोकमन्त्रकः ॥ आदावेक ऋषिश्चव त्रिषष्टिर्मन्त्रसंततिः ॥ ३७ ॥ एकोनचत्वारिंशद्रिः श्लोकेर्युक्ते समीरिताः ॥ अध्याये नवमे मन्त्रास्तावन्तोऽथ मनुद्रयम् ॥ ३८ ॥ राजा ऋषिश्चेति चैकचत्व।रिंशन्मनुस्त्वयम् ॥ सार्घसप्तान्वितौर्वशच्छलोकैस्तु दशमेऽन्विते ॥ ३९ ॥ सप्तविंशतिमन्त्रास्तु श्लोकह्रपास्ततोऽन्तिमः ॥ अर्धश्लोकात्मको मन्त्र ऋष्युवाच द्वयं तथा ॥ ४० ॥ देव्युवाच द्वयं चैव द्वात्रिंशन्मन्त्रसंग्रहः॥श्लोकानां सार्धपञ्चाशज्ज्ञेयमेकादशे

उपा.स्त. ३

स्फुटम् ॥ ४१ ॥ पंचाशच्छलोकमन्त्रास्तु अन्तेऽर्धश्लोकमन्त्रकः ॥ शाकंभरीति विख्याति तदा यास्याम्यहं भुवि ॥ ४२ ॥ एषोऽर्धमन्त्र इत्याहुः केचिदत्र विचक्षणाः॥ देवीद्वयमृषिश्चेको देवा एकमितीरितम् ॥ ४३॥ पंचाधिकास्तु पंचाशनमन्त्रा त्रेयाः परिस्फुटम् ॥ अष्टात्रिंशच्छ्लोकयुक्तेऽप्यध्याये द्वादशाहमके ॥ ४४ ॥ चत्वारिंशञ्च एकश्च मन्त्राहतद्वियम् ॥ अयश्चोकात्मकश्चोकाः सप्तत्रिंशन्मिता ऋषिः ॥ ४५ ॥ देन्युवाचेति चैकैकमेवं संख्या स्फ्रुटोदिता ॥ त्रयोदशे सार्धसप्तदशश्चोकाः ऋषिरुवाचेत्यारभ्य भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ इत्यन्ताः पश्च मन्त्रास्ते मार्कण्डेयस्ततः परम् ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वेत्यर्धमन्त्रस्तथा स्मृतः ॥श्लोकमन्त्रास्ततो ज्ञेयाः पञ्जेवाऽप्यर्धपद्यकम्॥४८॥देव्युवाचेति मन्त्रोऽयं ततः श्लोकस्तु मन्त्रकः ॥ मार्कण्डेयस्ततो मन्त्रः श्लोकौ मन्त्रद्वयं ततः ॥४९॥ ततो देवी षडर्घानि सप्त मन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥ मार्कण्डेयस्ततो मन्द्रयं मन्त्रत्रयं म्मृतम् ॥५०॥ आवृत्त्या त्वधिको मन्त्रः सावर्णिर्भविता मनुः॥ एकोनत्रिंशत्संख्याका मन्त्रा अत्र स्मृता बुधैः ॥१॥ केचितु॥एका दशार्घाद्वतयो द्वादश श्लोकमन्त्रकाः ॥ उवाचवचनैः षड्भिर्मन्त्रास्ते उक्तसंख्यकाः ॥ ५२ ॥ इत्याद्वस्तत्र कात्यायनीतन्त्रे विरोधः स्पष्ट एवेति दिक् ॥ अथास्य स्तोत्रस्य श्लोकादिसंख्या डामरेश्वरतन्त्रे ॥ अधुना देवि वक्ष्यामि मालामन्त्रं नवार्णजम् ॥ यस्य स्मरणमात्रेण भुक्ति मुक्ति लभेत्ररः ॥ ५३ ॥ ब्रह्मणा त्वेकवारेण श्लोकाः प्रोक्ताश्चतुर्दश ॥ समाधिनाच्चा प्रोक्तास्तु श्लोकाश्चाष्टी द्विवारतः ॥ ५४ ॥ तथा राज्ञा चतुर्वारैः श्लोकानां दशकं प्रिये ॥ मार्कण्डेयेन ऋषिणा पश्चधा नव विंशतिः ॥५५॥ तथैवार्धेन सिंह ता भगवानेकमेकघा त्रिघा ॥ प्रोक्ताश्च विबुधैः सार्घ षट्त्रिंशदेव हि ॥ ५६ ॥ सार्धन्यूना षट्त्रिंशदित्यर्थः ॥ देव्या द्वादशघा प्रकीर्तिताः ॥ ५७ ॥ ऋषिणा सप्तविंशत्या चत्वारि च शतानि वै ॥ सार्घाष्ट्रोत्तरकाण्यत्र दूतेनोक्ता द्विधा त्रिये ॥ ५८ ॥ श्लोकास्त्रयोदशैवात्र प्रोक्ताः प्राणिष्रये मम ॥ एवं सप्तशती संख्या श्लोका अष्टौ च सप्ततिः ॥ ५९ ॥ शतानि पञ्च देवेशि तेषां सप्तशताहुतिः ॥ विष्णुमायादितो भ्रान्तिरूपान्ते आहुतित्रयम् ॥ ६० ॥ चितिरूपेण देयं तु आहुतीनां त्रयं

ष्ट.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥५९॥

प्रिये ॥ इति ॥ यत्तु ॥ ब्रह्मेको भगवानेको मार्कण्डेयस्तु मार्गणः ॥ देवाः पश्च ऋषिस्त्रिशहेवी द्वादशकं तथा ॥६१॥ वैश्यदूतौ पुन द्वी द्वी राजोवाचेति वर्णतः ॥ अर्धानि पूर्वपरयोः पुनः षोडश षोडश ॥ ६२ ॥ अर्धानि सप्त च द्वे च श्लोकाः पश्चशतं तथा ॥ श्लोकाः सार्धे चतुरशीतिरध्यायाश्च त्रयोदश ॥ ६३ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे ॥ इति त्रयोदशेत्यर्थः ॥ एवमाद्वतयः सप्तशतं स्युस्तर्पणस्य च ॥ इत्थं ज्ञानार्णवे तन्त्रे प्रोक्तमिति तत्तु ज्ञानार्णवे अनुपलम्भानमूलान्तरादर्शनाच कात्यायनीतन्त्रे ब्रह्माण्डपुराणनाम्रा प्रत्यध्यायं श्लोकसंख्या कचिदुक्ता अष्टरवेकसु संख्यकाः ॥ ६३ ॥ मध्यमायाश्चतुःसप्त चतुर्वेदखवेदकाः षडिप्रिश्चोकभागितेति ॥ ६५ ॥ अब्रीषोमाध्यायवती गीता सप्तशती स्मृता ॥ ६६ ॥ तथा कवचार्गलाकीलकानामपि त्रिपश्चाशच्छलोकशालिता ॥ अर्गलाकीलके श्लोका द्वचष्टाविंशनिसंख्यकाः त्रयस्य त्रयोऽध्याया मनुश्रुवाः ॥ इति च ॥ अथ गोविन्दकृतमन्त्रविभागः ॥ अनिर्वाच्यजगज्जनमलयस्थेमभ्रमाश्रयम् हितात्मानमाश्रयेत्तमुपाश्रयम् ॥ ६८ ॥ विघ्ननिर्विघकर्तारं दुरितघ्रमृतिस्तवम् ॥ चतुर्दशजनान्तस्था या चतुर्दशह्रपिणी ॥ चतुर्दशोदिता मायादिक्चतुर्दशनाच्छुभा ॥ ७० ॥ गोविन्दस्तनुते सप्तशतीमन्त्रविभाजनम् ॥ ७१ ॥ अष्टसप्तत्युत्तराणां श्लोकानां शतपञ्चकम् ॥ विभज्य जुहुयान्मन्त्रीरिति कात्यायनीमतम् ॥ मार्कण्डेय उवाचैकः सावण्यां वास्ततः सप्तदश अर्धश्चोकात्मकाः स्थिताः ॥ एकोनविंशतिदैवा वैश्योक्तिविंशतिस्तथा पुनर्भवेत् ॥ पश्चविंशतिरेवं स्याद्राजा षड्विंशतिस्ततः ॥ ७६ ॥ अर्धश्चोकात्मकं मन्त्रं द्वयं वेश्य मन्त्रसंख्या श्रकीर्तिता ॥ ७६ ॥ पुनरर्ध पुनः श्लोकत्रयमर्घ पुनर्भवेत् ॥ मार्कण्डेय पुनश्चार्ध श्लोकः श्लोका

उपा.स्त. इ

त्मकः पुनः ॥ ७७ ॥ अर्घश्चोकात्मको मन्त्रो हार्घश्चोकमजान्तकः ॥ मन्त्राश्चत्वारिंशदेवं श्चोकमन्त्रचतुष्ट्यम् ॥ ७८ ॥ पुनरर्घ कविश्वार्ध श्लोकमन्त्राः पुनर्दश ॥ पुनरर्ध पुना राजेत्येकोना षष्टिरूच्यते ॥ ७९ ॥ पुनरर्ध पुनः श्लोकं पुनरर्ध पुनर्र्छ ।। पुनर्र्ध पुनः श्लोकाः षष्मन्त्राः पुनरर्धकः ॥ ८०॥ स्तौमि निद्रां भगवतीमतुलां तेजसः प्रभुः ॥ इत्येव पाठो मन्त्राणामेकसप्ततिरुच्यते ॥८१॥ ब्रह्माचश्चोकमन्त्राचश्चोकमन्त्रास्त्रयोदश ॥ अर्घश्चोक ऋषिश्चार्घश्चोकः श्चोकास्तु पञ्च वै ॥ ८२ ॥ पुनरर्घे तु विप्राणां सपञ्चनवतिः स्मृता ॥ भगवानर्घमन्त्रे द्वे ऋषिश्चोकार्घकं पुनः ॥८३॥ श्लोकः पुनऋषिः श्चोकद्वयं मन्त्रद्वयं भवेत् ॥ श्लोकानामष्ट्रसप्तत्या चतुभि रिं शतम् ॥ ८४ ॥ उवाचवचनैः सांध विभागः प्रथमे पतः ॥ मार्कण्डेयद्वयं वैश्यद्वयं राजत्रयं ततः ॥८५॥ ऋषिः पञ्चकमुद्दिष्टं भगनानेक एव तु ॥ ब्रह्मेकं तु चतुर्विंशदर्धमन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥ ८६ ॥ उत्राचपदमध्येषु श्लोकद्वादशकेषु च ॥ अध्यायादावेक ऋषि ह्याचेति सकृन्मनुः ॥८७॥ अष्टषष्टिमिताः श्लोकास्तावन्तो मनवो मताः ॥ एकोनसप्ततिः सर्वोध्याये मन्त्रा द्वितीयके ॥८८ ॥ आदा वृषिष्ठवाचेति पश्चत्रिंशत्ततः परम् ॥ निहन्यमानाद्याः श्लोका मुखरागाकुलाक्षरम् ॥८९॥ इत्यन्ता देव्युवाचैको गर्ज गर्जेति चापरः ॥ श्चोको ऋषिरुवाचेति पुनश्च श्चोकपंञ्चकम् ॥ ९० ॥ चतुश्चत्वारिंशतस्तु सर्वे मन्त्रास्तृतीयके ॥ आद्यो ऋषिरुवाचेति शकाद्याः श्लोक मन्त्रकाः ॥९१॥ षड्विंशास्तु ऋषिः श्लोका द्वयं देवी ततः परम् ॥ त्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥९२॥ इत्यर्धश्लोक मन्त्रोऽथ देवा ऊचुस्ततः परम् ॥ भगवत्या कृतं सर्वमित्यर्धश्चोकमन्त्रकः ॥९३॥ यद्यं निहताद्यं च श्चोकमन्त्रत्रयं भवेत्॥ऋषिश्चोका स्तु चत्वारो मनवः परिकीर्तिताः ॥ ९४ ॥ ऋषित्रयं तु देवैका एकदेवास्तु पश्चभिः ॥ उवाचवचनैः श्लोकाः पश्चित्रंशत्तु मन्त्रकाः ॥ ९५॥ अर्धश्लोकात्मकं मन्त्रद्वयमेवं भवेदिह॥षट्त्रिंशच्छलोककेऽध्याये चत्वारिंशदृद्वयाधिका ॥९६॥विभज्य गणना कार्या मन्त्राणां हवनादिषु पर्सप्ततिश्चोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु पञ्चमे ॥ ९७ ॥ एकोनत्रिंशद्धिकशतं कात्यायनीमते ॥ एको ऋषिरुवाचेति पुर शुम्भाद्यश्च षट्र॥९८॥ श्लोकमन्त्रास्ततो देवा उच्चश्चेवाष्ट्रमो मनुः ॥ नमो देव्यादिकाः श्लोकाः पञ्चमन्त्राः प्रकीर्तिताः ॥९९॥ त्रयो

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥६०॥

दशैवं मन्त्रास्तु या देवीत्याद्योऽपि च ॥ एकविंशतिकाः श्लोका भ्रान्त्यन्तास्तेषु मन्त्रकाः ॥१००॥ प्रतिश्लोकं त्रयो ज्ञेया मन्त्रा त्रिषष्टिकाः॥ पुनः श्लोकात्मको मन्त्रियनत्रश्लोककं पुनः ॥ १०१ ॥ त्रयोविंशश्लोककेषु मनत्रा वे सप्तषष्टिकाः या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ १०२ ॥ नमस्तस्य इति प्रोक्तो विंशत्यक्षरको मनुः ॥ नमस्तस्य इति प्रोक्तो द्वितीयश्चतु । १०२ ॥ अष्टाक्षरस्तृतीयोऽपि नमस्तस्य नमो नमः ॥ एवं द्वाविंशश्लोकेषु ज्ञेयं मन्त्रत्रयं बुधेः ॥ १०४ ॥ पूर्वत्रयोदशै पर्नेः सहाशीतिरुदाहता ॥ स्तुता सुरेति च श्लोकद्वयं चैव पुनर्ऋषः ॥ १०५ ॥ पुनः सप्तदश श्लोका ऋषिश्लोकत्रयं ततः ॥ दृत श्चेव नव श्लोका ऋषिरेकोऽम्बिका ततः ॥१०६॥ चतुःश्लोकी पुनर्दूतचतुः श्लोकी पुनः शिवा ॥ श्लोकद्वयं मिलित्वा तु चत्वारिश इद्वयाधिका ॥ १०७ ॥ श्लोकाः सप्तोवाचवाक्यमेकोनार्घशतैःसह ॥ अशीत्यांपि च संगोगे एकोनत्रिंशताधिकम् ॥ १०८ ॥ शत मेवं त विज्ञेयमाहृतीनां च पश्चमे ॥ ऋषेश्वतुष्ट्यं प्रोक्तं देवा ऊचु सकृत्पुनः ॥ १०९ ॥ दूतोवाचद्वयं देवी उवाच नवोवाच चतुष्पञ्चाशच्छूलोकाहुतयस्तथा ॥११०॥ द्वाविंशस्याहुतिश्लोकाः षट्षष्टचाहुतयो मताः ॥ एकोनत्रिंशद्धिकमाहुतीनां शतं मम ॥ १११ ॥ विंशतिश्लोकसंयुक्ते षष्ठेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ सर्वे श्लोका सन्त्ररूपा देन्येकोऽथ ऋषित्रयम् ॥ १५२ ॥ चतुर्विशति मन्त्राणामित्येवं परिकीर्तितम् ॥ पञ्चविंशतिश्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु सप्तमे ॥ ११३॥ सर्वे मन्त्राः श्लोकहृपा ऋष्युवाच त्रयं ततः ॥ सप्तविंशतिरेवं तु यन्त्रसंख्या प्रकीर्तिता ॥ ११४ ॥ सार्धिकषष्टिश्लोकाश्वाष्टमेऽध्याये प्रकीर्तिताः ॥ एकषष्टिश्लोकमन्त्रा अन्तेऽर्घश्लोकमन्त्रकः ॥११५॥ आदावेको ऋषिश्चेकत्रिषष्टिर्मन्त्रसंतितः ॥ एकोनचत्वारिंशः द्विश्लोकेर्युक्ते समीरिताः ॥ ११६॥ अध्याये नवमे मन्त्रास्तावन्तोऽथ मनुद्रयम् ॥ राजा ऋषिश्चेति चैकचत्वारिंशन्मनुद्रयम् ॥ १९७॥ अर्धसप्तान्वितैर्विंशश्चोकैस्तु दशमेऽन्विते ॥ सप्तविंशतिमन्त्रास्तु श्लोकरूपास्ततोत्तमः ॥११८॥ अर्धश्लोकात्मको मन्त्र ऋष्युवाचद्वयं तथा ॥ देन्युवाचद्वयं चैव द्वात्रिंशन्मन्त्रसंग्रहः ॥११९॥ श्लोकानां सार्धपञ्चाशज्ज्ञेयं चैकादशत्रयम् ॥ पञ्चाशच्छ्लोकमन्त्रास्तद्नतेऽर्धश्लोकमन्त्रकः ॥१२०॥

उपा.स्त. इ दुर्गी.

अथ ग्रुतवतीमतेन स्पष्टमन्त्रविभागप्रतीकानि यथा श्रुतग्राहिभिन्नमतेन च स्पष्टमन्त्रविभाग प्रतीकानि स्पष्टतया प्रदृश्यन्ते ॥ बृ.ज्ज्यो.णं. उपा.स्त. हे मूलं तु ग्रुप्तवर्ताटीकायां द्रष्टव्यमिति ॥ तद्यथा-धर्मस्कंध ८ कात्यायनीतन्त्रानुसारेण यथाश्रुवपाहिमवेन सम्ब-हुर्गा. कात्यायनीतन्त्रानुसार्ण यथाश्रतमाहिसतेन सन्त्रः कात्यायनीतन्त्रानुसारेण गुप्त 118911 थयाज्ञतप्राहिमसेन सन्त्र-गुप्तवतीमतेन मन्त्रविभागः। विभागः। गुप्तवतीमतेन मंत्रविभागः। विभागः। अहर वस वतीमतेन मन्त्रविभागः। १ मार्कण्डेय खवाच विभागः। १ मार्फ व्हेय १६ असम्यग्ड्ययशी छै सचितः सोऽति ३१ यैं: संत्यक्य पितृ किं करोमि २ खावणिः सूर्यवनयः साविण १७ एतबान्यब सततम् तत्र विप्राश्रमा ३२ किमेवनाभिजाना पतिः श्वजन ३ महामायानुभावेन महामाया १८ स प्रष्टस्तेन करस्वम् सशोक इव कस्मा ॥ ३३ तेषां कृते मे निः ६ यश्त्रेमप्रवणम् ४ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वम् स्वारोधिके १९ इत्याकण्यं वचस्तस्य ॥ प्रत्युवाच स ॥ ३४ करो म कि य ॥ करोमि कि ५ वस्य पाख्यतः सम्यङ्ग तस्य पाछ २० वैश्य खवाच. ३% मार्कण्डेय उवाच वैश्य उवाच मार्कण्डेय ६ तस्य तैरभवद्युद्धम् तस्य वै २१ समाधिनीम वैद्योऽह ॥ ३६ वतस्ती सहिती ॥ समाधिनाम ॥ ततस्वी ७ ततः स्वपुरमायातो ततः स्व ९२ विहीनः स्वजनैदारीः पुत्रदारै निगस्तक्ष ॥ ३७ समाधिनाम वै समाधिनाम ८ अमार्येवं लिभित्रेष्टैः अमारयै २३ सोऽहं न वेश्चि पुत्रा वनमभ्यागतो ३८ कुत्वा तु तौ यथान्या ॥ उपविष्ट्री ९ वतो सृगयान्याजन ततो मृग ॥ २४ किंतु तेषां गृहे प्रवृत्ति स्वजनानां च ३५ राजोबाच राजीवाच १० स तत्राश्रममद्राक्षी स तत्रा ॥ २५ कथं ते किन्तुं स ३ ॥ इथं ते किन्तु ॥ ४० भगवंस्त्वासहस् १० ॥ भगवंसवा ११ तस्थी किश्वत्स कालम् तस्थी कं २६ राजीवाच ३ राजीवाच ॥ ४१ दुःखाय रन्मे द्रःखाय यनमे ॥१२ सोऽचिन्तयत्तदा १ सोऽचिन्तय ॥ २७ यैनिंदस्ती मना ॥ यैनिरस्तो ४२ समत्वं गतराज्यस्य जानतोऽपि १३ मस्पूर्वः पाछितं पूर्वम् मद्भृत्यै ॥ २८ तेषु कि अवत ५ ॥ तेषु कि ४३ अयं च निकृतः पुत्रे स्वजनेत च 118911 १४ न जाने स प्रधानी मे मम वरि २९ वैदय डवाच वैश्य उवाच ४४ एवमेष तथाऽहं च **र**ष्ट्रदोषेऽपि १५ ये मसानुगवा नित्यम् अतुवृद्धि ३० एनमेत्वथा प्राह ॥ एवमेतत ४५ तत्केनतन्महाभाग ॥ न सास्य च

गुप्तवबी.	यथानुबनाहिः	गुप्तवती.	यथाश्रुतप्राहि.	। जलबनी	
४६ स्विह्वाच ७ ४७ झानमस्ति समस्त ४८ दिवान्धाः प्राणिनः ४९ झानिनो मनुजाः ५० झानं च बन्मनुष्या ५१ झानेऽपि सित पद्ये ५२ मानुषा मनुजन्या ५३ वधापि ममतावर्ते ५४ बनात्र विसमयः का ५५ झानिनामपि चेवां ५६ स्वा विस्व्यते वि ॥ ५७ सा विद्या पर १९ ॥ ५८ संसारबन्धहे १३ ५६ राजोवाच ८ ६० सगवन्का हि सा ॥ ६१ यत्स्वमावा च १४ ॥६१ यत्स्वमावा च १४ ॥६१ वत्स्वव स्रोतु १५ ॥६४ निस्यैव सा स्व १६	व्यक्षि १९ ।। ज्ञानमस्ति १९ विषयश्च महाभाग किचिह्नित तथा यतो हि ज्ञानिनः मनुष्याणां च बच्चेदाव्य कणमोक्षा लोभारप्रश्युष महामायाप्रभा महामाया हरे बलादा छुण्य सेषा प्रसन्ना ।। संसारवन्ख १३ राजो ८ ॥ भगवन् १४ नवीति कथमुश्यवा ॥ तत्सर्वम् १५ व्यक्षि	श ६५ वंशापि तत्स १७ ६६ देवानां कार्यसिद्धव ६७ योगनिद्रां यदा वि ६८ सदा द्वावसुरौ घोरौ ६९ स नाभिकमळे वि ७० तुष्टाव योगनिद्रां ताम् ७१ विश्वेश्वरीं जगद्धा ७२ ब्रह्मोवाच १० ७३ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं ७४ अर्धमात्रा स्थिता ७५ त्वयतद्वार्यते वि ७६ विस्तृष्टौ सृष्टिक्पा त्वम् ७७ महाविद्या महामा ७८ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य ७९ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी स्वम् ८० खङ्गिनी श्रू छिनी ८१ सौस्या सौस्यसरा ८२ यस कि वित्वत्वविद्व	तथापि उत्पन्नित तदा आस्तीय शेष तिष्णुकर्णमलो दृष्टा तावसुरी तिबोधनार्थाय ॥ निद्रां भगवतीम् १७ हृद्यो १० ॥ त्वं स्वाहा १८ सुधा त्वमक्षरे त्वमेव सा त्वम् त्वयेत पास्यते तथा संहति महामोहा च भवती कालरात्रिमंहारात्रि लजा पृष्टिः शङ्किनी चापिनी परापराणाम्	ा९५ उक्तवन्ती वरो ११ ९६ श्रीभगवानुवाच १२ ॥९७ भवेतामद्य मे २२ ॥९८ किमन्येत ब २३ ९९ ऋषिरुवाच १३ १०० वश्चिताभ्यामिति ॥१०१ अवा जिह २४	यथाश्रुकपाहि. सोऽि निद्रा कारितास्त मोहयैती ॥ बोधश्च १९ ऋषि १९ ॥ एवं स्तुता २० विष्णोः प्रबोध निर्णम्य दर्शने एकाणवे हि कोधरक्तेश्वणा पश्चवर्षसहस्राणि ॥ उक्तवन्ती २१ भगवानु १२ ॥ भवेता २२ ऋषि १३ ॥ विश्वताभ्याम् २४ विलोक्य ताभ्याम् ऋषि १४

पु.ज्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंघ ८ ॥६२॥	१०३ तथेरयुक्ता भगव १०४ एवमेषो समुत्पन्ना पूर्णवडोकमन्त्राः ६६ अधरहोकमन्त्राः १६ माकण्डेय २ वैद्य २ राज । महा १ ऋषि ५ भगवद् १ वक्तानि उवाचान्तानि १४ एवं सर्वमन्त्राः प्रथमे १०४	वर्षे मन्त्राः १०४ द्वितीयाऽख्यायमन्त्राः सर्वे एवेकस्पा एकोनसप्ततिसख्याः १९.	१३ अतुलं तत्र तत्तेजः १४ यदभूच्छांभवं तेजः १५ सौझ्येन स्तनयोर्युं १६ ब्रह्मणस्तेजसा पा १७ तस्यास्तु दन्तः सं १८ भ्रज्ञी च सध्ययो १९ ततः समस्तदेवानाम् २० शूलं शूलाद्विन २१ श्रद्धंबच वरुणःशक्तिम् २५ वक्रमिन्द्रः समुत्पा २३ कालदण्डाद्यमो द २४ समम्तरोमशूपेषु २५ क्षीरोदश्चामलं हार २६ अर्ध्चन्द्रं तथा शुभ्रम् २७ अङ्गुलीयकरत्नानि	गुप्तवती, २९ अद्दे जलिं धरता ३० ददावशून्यं सुरवा ३१ नागहारं ददी तस्यै ३२ संमानिता ननादो ३३ अमायतातिमहता ३४ चचाल वसुधा चेलु ३५ तुष्टुवर्मुनयश्चेनां ३६ समद्धालिलसेन्या ३७ अभ्यधावत तं शब्द ३८ पादाक्रान्त्या नत ३९ दिशो मुलसहस्रेण ४० शस्त्रास्त्रें हुधा मु ४१ युयुधे चामरश्चान्ये ४२ अयुध्यतायुतानाम् ४३ अयुधानां शतैः प ४४ वृता रथानां कोट्या ४५ युयुधे संयुगे तत्र ४६ युयुधः संयुगे देव्या ४७ हयानां च वृतो युद्धे	गुप्तवती. ४८ युयुधः संयुगे देव्या ४९ देवी खड्ग प्रहारेग्तु ५० छील्येन प्रचिच्छेद ५१ मुमोचासुरदेहेषु ५२ चचारासुरसैन्यपु ५३ त एन सद्यः संभूता ५४ नाहायन्तोऽसुरग ५५ मृदङ्गास्त्र तथैनान्ये ५६ खड्गादिभिश्च श ५७ असुरानसुनि पाशेन ५८ विपोधिता निपाते ५९ केचिन्निपतिता भू ६० सनानुकारिणः प्रा ६१ शिरांसि पेतुरन्येषाम् ६२ एकवाहृश्चिच्णा ६३ कवन्धा युयुव्देव्या ६४ कवंधारिछन्नशिर ६५ पातिते रथनागाधः ६६ शोणितीषा महान	गुप्तवती. ६७ क्षणेन तन्महासैन्य ६८ स च सिंहो महानाद ६९ देव्या गणेश्र्य तैस्तत्र अर्धरलोकमंत्राः ६८ स्रवाचमंत्राः १ एवं सर्वमंत्राः द्वितीः याध्याये ६९	उपा.स्त दुग अ० १२	Ā.
---------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------	----

गुप्तवती. तृतीयाध्यायमन्त्राः । १ ऋषिहवाच १ २ निहन्यमानं तत्सैन्य ३ स देवी श्रवर्षेण ४ तस्य च्छित्त्वा ततो देवी ५ चिच्छेद च धनुः सद्यो ६ स च्छित्रधन्वा विरथो ७ सिंहमाहस्य खड्गेन ८ तम्याः खड्गो मुनं प्राप्य ९ चिश्लेप च ततम्तन्तु १० दृष्ट्वा तदापतच्छूछम् ११ हते तस्मिन्महावी १२ सोऽपि शक्ति मुमो १३ भग्ना शक्ति निपति १४ ततः सिहः समुत्प १५ युद्धधमानौ ततस्वौ १६ ततो वेगात्खमुत्पत्य १७ उदप्रश्लयगिदन्या	यथाश्रतप्राष्टिः तृतीयाध्यायमन्त्राः । क्षिकवाधेद्याधाः सर्व एवैकरूपाः ४४	गुप्तवती, १९	चतुर्थाध्यायमः त्राः । १ ऋषितवाच २ शकादयः सुरगणा ३ देव्या यया ततमिदम् ४ यस्याः प्रभावमतुलम् ५ या श्रीः स्वयं सुकृति ६ किं वर्णयाम तव रूप	१० शब्दाहिमका अवि ११ मधासि देवि विदि १२ इंपत्सहासमम्लम् १३ दृष्ट्वा तु देविकृपि १४ देवि प्रसीद परमा १५ ते संमता जनपदे १६ धम्य णि देवि सक १७ दुर्गे म्मृता हरसि भी १८ एभिहतर्जगदुपैति १० दृष्ट्वेव किन्न भवती २० खङ्गप्रमानिकर २१ दुर्गुत्तवृत्तरामनम् २२ केनोपमा भवतु २३ त्रेलोक्यमेतद्खि १४ श्रूलेन पाहि नो २५ पाच्यां रश्च प्रती	गुप्तवती. २७ खङ्गश्रूरगदादीनि २८ ऋषिकवाच २ २९ एवं स्तुता सुरैदिंन्यैः	
१८ देवी ऋद्धागदापा	वया सुख्याहर	३७ देव्युवाच	७ हेतुः समस्तजगताम्	२६ सौम्यानि यानि रू		

हु.जज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥६३॥	गुप्तवती. ३० सक्त्या समस्तेति ३१ देव्युवाच १ ३१ देव्युवाच १ ३३ देवा ऊचुः १ ३४ भगवत्या कृतं सर्वम् ३५ यदि चापि वरो देयः ३६ यश्चमत्यः स्तवैरंभि ॥ ३० वृद्धयेऽस्मत्म २ ३८ ऋषिठवाच ५ ३९ इति प्रसादिता देवैः ४० इत्येतत्कथितं भूप ४१ पुनश्च गौरीदेहा ४२ रक्षणाय च छोकानां अधंश्लोकमन्त्राः ६ श्लोकमन्त्राः ५ ववाचमन्त्राः ५ पर्वे मन्त्रश्चतुर्थाध्याये ४२ पष्ट्यमचारते भन्त्रसंख्या अधंश्लोकमन्त्राः २	Na falesii se Bigae sale Na dia delega	६ तयास्माकं वरो दत्ती ७ इति कृत्वा मितं देवाः ८ देवा ऊचुः ९ नमो देन्यै महादेन्यै १० रौद्रायै नमो नित्यायै ११ कल्याण्ये प्रणमां वृ		भवति तत्स्वरूपं चेत्थम्) १६ या दे. बिप्णु. न. ३ १९ या देवी. चेतने. न. ६ २२ या देवी. बुद्धि. न. ९ २५ था देवी. निद्रा. न. १२	६४ या दे. स्मृति. त. ५१ ६७ या दे. द्या. त. ५१ ६० या दे. तृष्टि. त. ५४ ७० या दे. मातृ त. ६० ७६ या दे. मातृ त. ६० ७६ या दे. भातृ त. ६३ ७७ इंद्रियाणामधि ८० चित्तिरूप्ण या ६६ ८१ स्तुता सुरे पूर्वम ८२ या सांप्रतं चोद्धत ८२ ऋषिरुवाच २ ८४ एवं स्तवादियुक्ता ८५ साऽज्ञवीत्तान्सुरा ८६ स्तोत्रं ममैतिह्कयते ८७ शरीरकोशाद्यव		उपा.स्त. १ दुर्गा. अ॰ १२८
--------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--	---------------------------------

१०१ ऋषिरुवाच ४ १०२ तिशम्येति वचः १०२ इति चेति च वक्त १०४ सतत्र गत्वा यत्रा १०५ दृत उवाच ५ १०६ देवि दैत्येश्वरः शु	गुप्तवती. १०८ सम त्रेलोक्यम १०९ त्रेलोक्ये वररता ११० क्षीरोदमथनोद्भुत १११ यानि चान्यानि दं ११२ कीरत्नभूतां त्वां दे ११३ मां वा ममानुजं वा ११४ परमेश्वर्यमतुल्धम् ११५ करिवाच ६ ११६ इत्युक्ता सा तदा हे ११८ सलमुक्तं त्वया ११८ कित्वत्र यत्प्रति १२० यो मां जयति संप्रा १२१ तद्गाच्छतु शु १२२ दूत चवाच ८ १२६ अवलिप्ताऽसि मेवम् १२४ अन्येषामिष दे १२५ इन्द्राद्याः सक्लाः १२६ सा त्वं गच्छ मधीवो	वथाश्वतप्राहि. अथ षष्ठोऽध्यायः । सर्वे मन्त्राः समानरूपाः ॥ इति षष्ठोऽध्यायः ॥	गुप्तवती, १० देन्युवाच ३ ११ दैरयेश्वरेण प्रहिती १२ ऋषिरुवाच ४ १३ इत्युक्तः सोऽभ्याधाव १४ अथ कुद्धं महासैन्यम् १५ तती धुतसटः कोपा १६ कांश्चित्करप्रहारेण १७ केषांचित्पाटयामा १८ विच्छित्रबाहुशिर १५ श्वणेन तद्वलं सर्व २० श्वत्वा तमसुरं देव्या २१ चुकोप दैत्याधिप २२ हे घण्ड हे मुण्ड बलैः २३ केशेष्वा कृष्य ब २४ तस्यां हतायां दुष्टा अर्धभ्कोकमन्त्राः ० इलोकमन्त्राः १७ सर्वे मन्त्राः १४ सर्वे मन्त्राः	ध ते दृष्टा तां समादातु ५ ततः कोपं चकारोचेः ६ भृकुटीकुटिलाच ७ विचित्रखष्ट्राङ्गधराः ८ अतिविस्तारवद्ता ९ सा वेगेनाभिपतिता १० पार्षणिप्राहाङ्कु ११ तथैव योधं तुरगैः १२ एकं जम्राह केशेषु १३ तेमुक्तानि च शस्ता १४ बिलनां तद्वलं सर्व १५ असिना निहताः के	
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--

	TO THE	गुप्तवती. १९ ततो जहासातिरु २० उत्थाय च महासिंहम् २१ अथ मुण्डे/ऽभ्यधाव २२ हतशेष ततः सैन्यम् २३ शिरश्चण्डस्य काली २४ मया तवात्रोपहती २५ ऋषिरुवाच २६ तावानीतौ ततौ ह २ २७ यस्माञ्चण्डं च मुण्डम् अर्द्धश्लोद सन्त्राः ० श्लोकमन्त्राः २५ उवाचमन्त्राः ३ सर्वमन्त्राः १५ अष्टमाऽध्यायमन्त्राः । १ ऋषिरुवाच १ २ चण्डे च निहते देते ३ ततः कोपपराधीन ४ अद्य सर्वेबंकैदेंतः ५ कोटिवीर्याणिप	यथातश्रुमाहि. अथ सप्तमाध्यायः । सर्वे मन्त्रास्तुत्यरूपाः इति सप्तमोऽध्यायः ॥ सर्वे मन्त्राः २७	गुप्तवती. ६ कालका दौहंदा मौ ७ इत्याज्ञाप्यासुरप ८ आयान्तं चण्डिका ९ ततः सिंहो महाना १० धतुर्ज्ञासिह्घण्टा ११ तिज्ञनादसुपश्रुत्य १२ एतिसम्नन्तर भूप १३ न्रह्मेशगृहविष्णृनाम् १४ यस्य देवस्य यद्भुपम् १५ हंसयुक्तविमानामे १६ माहेश्वरी वृषाक्त्वा १७ कौमारी शक्तिह १८ तथेव वैष्णवी श १९ यज्ञवाराहमतुल्यम् २० नारसिंही नृसिंहस्य २१ वज्रहस्ता तथेवैन्द्री २२ ततः परिवृतस्ताभः २३ ततो देवीश्वरीराचु २४ सा चाह धूम्रजटिल	गुप्तवती. २५ मूहि शुम्भं निशुम्भम २६ त्रैलोक्यमिन्द्रोल २७ वलावलेपादथ चद्र २८ यतो नियुक्तो दौत्ये २९ तेऽपि श्रुत्वा वचो हे ३० ततः प्रथममेवाप्रे ३१ सा च तान्प्रहितान् ३२ तस्याप्रतस्तथा का ३३ कमण्डलुजलाक्षेप ३४ माहश्वरीत्रिश्कृतेन ३५ ऐन्द्रीकुलिशपाते ३६ तुण्डप्रहारविध्वस्ता ३७ नखैर्विदारिताश्चा ३८ चण्डाट्टहासैरस्रा ३९ इति मागुगणं श्रुद्धम् ४० पलायनपरान् दृष्टा ४१ रक्तविन्दुर्यदा भूमौ ४३ युयुषे स गदापाणि ४३ कुलिशेनाहतस्या	गुप्तवती. ४४ थावन्तः पतितास्त ४५ ते चापि युयुधुस्तत्र ४६ पुनश्च वज्रपातन ४७ वैष्णवी समरं चैनम् ४८ वेष्णवीचक्रभिन्न ४९ शक्त्या जवान कौ ५० स चापि गव्या दै ५१ तस्याहताय बहुधा ५२ तैश्चासुगसृक्संभू ५३ तान्विषणणासु. ५४ मच्छस्रपातसंभू. ५५ भक्षयनती चरगो ५६ भक्षयमाणस्वया ५७ ॥सुखन काली ज. १ ५८ ततोऽसावाजघा ५९ तस्याहतस्य देहानु ६० सुखे ससुद्रता ये ६१ देवी शूलेन वन्नेण	यथाष्ट्रमाऽध्याय- मन्त्राः सर्वे समाना- काराः विशेषस्तु ५० मुख्यन् ततो ५८ न चास्या वेद ५० यतस्ततस्तद्व ६० तांश्चखादाथ ६१ जघान रक्त्वी	THE WAS THE WA	उपा-स्त. १ डमाः अ० १२८
--	--------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------

अधंग्रहोक सन्त्राः १ श्लोकमन्त्राः ६१ उवाचमन्त्राः १ मर्वे मन्त्राः ६३ अय नवणध्यायमन्त्राः।	यथाश्रुतप्राहि. ६२ तीरक्तश्च मही ॥६३ हते मालुग इत्यष्टमोऽध्यायः। अथ नवमोऽष्ठयायः। तत्र सर्वे मन्त्राः गुप्रवती- समानः ४१	गुप्तवती. १३ छिन्ने चर्मणि खन्ने च १४ कोपाध्मातो निशु १५ आविध्याथ गदाम् १६ ततः परशुद्दतं तम् १७ तिस्मिन्नियतिते भू १८ स रथस्थस्तथाऽरगुवै १९ तमायान्तं सपानो २० प्रयामास ककुभो २१ ततः सिंडो महाना २२ ततः काली समुग्यस्य २३ अट्टाट्टइसमिशित्रम् २४ दुरात्मेस्तिष्ठ तिष्ठति २५ शुम्भेनागत्य या २६ सिंइनादेन शुम्भस्य २० शुम्भमुक्तान् परान् २८ ततः सा चिष्डका २९ ततो निशुम्भः स ३० पुनश्च कृत्वा बाहूनाम् ३१ ततो भगवती ऋद्धा	गुप्रवती. ३२ ततो निशुक्भो वेगेन ३३ तस्यापतत एवाशु ३४ शूज्रहस्तं समायान्तम् ६५ भित्रस्य तस्य शूठे ३६ तस्य निष्कामतो दे ३७ ततः सिंहश्चखादी ३८ कौपारो गक्तिन ३९ माहेश्वरी त्रिशूळन ४० खण्डंखण्डं च चक्रेण ४१ केचिद्वितशुरसुराः अधंश्रोकमन्त्राः ० क्रोकमन्त्राः ३९ खाचमन्त्राः ३१ खनायमन्त्राः १ ऋषिष्ठगाय १ निशुक्भं निहतं ३ खळावळेपाद्दुष्टे स्वम् ४ देव्युवाच	१६ ततः खङ्गमुपादाय १७ तश्यापतत एवाङा	यथाश्रुतमाहि, अयं दशमीऽध्यायः । अत्रापि मन्त्रभेदो गुप्तवतीतो विशेषः १८ हताश्रः स तदा १९ चिच्छेदापत २० स मुद्दि पातया २१ तळप्रहाराभि २२ जत्पत्य च प्रगृ २३ नियुद्ध ख तदा		
---------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--	--

हु. इंज्यो. र्ण. धर्मस्कंथ ८ ॥६५॥	1 4		गुप्तवर्षी. द विचाः समस्ता ७ सर्वभूता यदा ८ सर्वस्य बुद्धिरूपेण ९ कलाकाष्ट्रादि १० सर्वमङ्गलमाङ्गस्ये ११ स्ट्रष्टिस्थिति १२ शग्णागतदीनार्षे १३ हंसयुक्तविमानाधे १४ तिश्लाचमहा १४ तिश्लाचमहा १८ गृसीहमपण १९ किरीटिनि महा २० शिवदूती २१ इंष्ट्राकराल २२ लिहम लज्जे २३ मेथे सरस्वती २४ सर्वस्वरूपे	गुप्रवती. २५ पतंत्र वदनम् २६ ब्वाह्यकराळ २७ हिनस्ति दैत्य २८ अधुरास्ग्यसा २९ रोगानशेषाम् ३० एतःकृतं यत् ३२ विद्यासु शास्त्रष्ठु ३२ रक्षांसि यत्रोप ३३ विश्वेश्वरी व्वम् ३४ देवि प्रसीद् ३५ प्रणतानाम् ३६ देव्युवाच ३० वरदाऽहम् ३८ देवा ऊचुः ३९ सर्वावाधा ४० देव्युवाच ४१ वैवस्वते ४२ नन्दगोपगृष्ठे ४३ पुनरप्यति	खवाचमन्त्रा'	यथाञ्चतिमाहि. एकादशाष्ट्रगाखनन्त्राः सर्वे तुल्याः भेदस्त्वयम् ४९ शार्कभ० तत्रै ५० दुर्गा देवीति ५१ रक्षांसि भ ५२ भीमादेवी ५३ तदाऽहम् ५४ भ्रामरीति । ५५ तदा तदा अर्घभ्रोकमंत्राः १ २० स्रोकमंत्राः १ २० स्रोकमंत्राः १ २० सर्वे मन्त्राः १ ६२० कादमीऽध्यायः ।	TO THE STATE OF TH
-----------------------------------------	-----	--	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

गुप्तवती	गुप्तवती.	यथाश्रुतप्राद्दि.	गुप्तवती,	गुप्तवती.	यथाश्रुतग्राहि.
द्वादशाध्यायमन्त्राः । १ देच्युवाच २ एभिः स्ववैश्व ३ मधुकैटभ ४ अष्टम्यां च ५ न तेषां दुष्कृतम ६ शत्रुतो न भयम ७ तस्मान्ममैतत् ८ उपसर्गानशेषा ९ यत्रैतत्पठथते १० विष्ठप्रदाने २१ जानताऽजानता १२ शर्रकाले महा १३ सर्वावाधाप्र १४ श्रुरवा मसैतत् १५ रिपवः संश्चयम १६ शांतिकर्मणि २७ उपसर्गाः	१८ बाळप्रहामि १९ दुर्ष्ट्रतानामशेषा ॥ २० सर्व ममेतत् १ २१ पशुपुष्पार्व २२ अन्वेश्च विविष २३ अतं हरित २४ युद्धेषु चरितम् २५ युष्माभिः स्तुतको २६ अरण्य प्रान्तरे २७ सिंहव्याप्रानु २८ आधूर्णितो वा २९ सर्वावाधासु ३० मम प्रभावातः ३१ ऋषित्रवाष्य ३२ इत्युक्तवा सा ३३ तेऽपि देवा ॥ ३० तिशुम्भ भ ३६ एवं भगवती ३७ तवेतन्मोद्धते	द्वादशाध्याये गुप्तवतीवन् विशेषस्तु	६८ व्याप्तं तवैतत् ६९ सैवकालं महा ४० भवकालं ४१ स्तुता संपूजिता अर्धश्लोक मंत्राः स्रोकमंत्राः हवाचमंत्राः	त्रयोदशाध्यायमन्त्राः । १ ऋषिरुवाच ॥ २ एतंत कथितम् ३ एवंप्रभावा ४ तया त्वमेव ५ तामुपेहि ६ मार्कण्डेय खवाच ७ इति तस्य वचः ८ निर्विण्णोऽति ९ सन्दर्शनार्थ १० ती तिस्मन्पुलिने ११ यताहारी १२ एवं समारा १३ देव्युवाच १४ यत्प्रार्थ्यते १५ मार्कण्डेय खवाच १६ ततो वम्ने नृषो १७ सोऽषि वैद्यस्तो	अय त्रयोदशोऽह्यायः । १ ऋषिरुवाच १ र त्रतं कथितम् ३ विद्या तथेव ४ मोद्यन्ते ५ आराधिता ६ मार्कण्डेय च ७ इति तस्य ॥ ८ प्रणिपत्य १ जगाम सद्य १० स च वैदयस्तपः ११ अर्हणां चऋतुः ११ ददनुस्ती १३ परितुष्टा १४ देन्युवाच

इ.ज्ज्यो.र्ण. अमेरकंघ ८ ॥इड्डा	"१० हस्वा रिपून् ३ २० हमल्पेरहोकिः ।।२१ सृतश्च भूपः ४ २१ हस्वा रिपून् ।।२३ सावर्णिको ५ २२ खुतस्च भूपः ।।२३ वैदयवर्ष ६ २३ सावर्णिको ।।२४ तं प्रयच्छामि ७ २५ तं प्रयच्छामि २९ एवं देव्या नरम् १६ मार्कण्डेय चवाच ६	अर्धम्होकमंत्राः १४ २ स्त्रोकमंत्राः १४ २ स्त्रोचमंत्राः ६ अ सर्वे मंत्राः २९ ऋ इति त्रयोदशोऽभयायः॥ स्त	८८ बभूबान्तिस्ता १९ सूर्याष्ट्रजनम् सर्धम्स्रोक्सम्भाः ११ स्रोमसंत्राः १२ वाचसंत्राः ६ विस्त्राः ६९		सर्वमन्त्रसंख्या ७०० इति मंत्रविद्यतिः संपूर्णा ।	उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ० १२८
	इति श्रीव्यङ्कटरामात्मजहरिक्कणविनि अनेकप्रकारेण	र्मित बृहज्ज्योतिषाणिवेऽष्ट हुर्गामन्त्रविभागकथनं न	ष्टमे धर्मस्कन्धे तृतीये नामेकोनशिशं प्रकरण	उपासनास्तवके श्रीडु म् ॥ २९ ॥	a spending	

दृष्टीत अहं हरिकृष्णः ॥ १ ॥ इहास्मिन् पटले अस्लं निर्मूलं मनःकिल्नं न विज्ञेयम् । अत्र नानाभेद्विधानके संशयोऽपि न कार्य इति ॥ २ ॥ इर्गाराधने वे निश्चयेन अनेकविधानानि कथितानि तानि देशेदेशेषु प्रासद्धानि सन्ति यथा कवचांश होमो न युक्तस्तत कुत्रचित् यद्गुह्यां परमं लोक इत्यादि कवचं गृह्यन्ति क्रत्रचित्र्यं वित्यादिश्लोकचतुष्टयात्मकं कवचं गृह्यन्ति ॥ ३ ॥ अतस्तेषामनेकभेदानां मया संग्रह अथ दुर्गापटलम् ॥ दृष्ट्वा तन्त्राण्यनेकानि पुराणानि विशेषतः ॥ जगन्मातुश्च दुर्गायाः पटलं कथयाम्यहम् ॥ १ ॥ नामूलं लिख्यते किंचिदिह विज्ञेयमादरात् ॥ नैशत्र संशयः कार्यो नानाभेद्विधानके ॥२॥ तन्त्रान्तरेष्वनेकानि विधानानि सुनीश्वरैः ॥ कथितानीह दुर्गायाः प्रसिद्धानि च सन्ति वे ॥ ३ ॥ देशदेशेषु तेषां वे संग्रहः कियते मया ॥ साधकानां हितार्थाय श्रीदुर्गायाः प्रसादतः ॥ ४ ॥ तत्रादो मन्त्रमहोद्धो ॥ अथ नवाक्षरं मन्त्रं वक्ष्यं चण्डीप्रवृत्त्ये ॥ वाङ् माया मदनो दीर्घा लक्ष्मीस्तन्द्री श्रुतीन्द्रयुक् ॥ ५ ॥ डाये सहग् जलं कूर्मद्वयं झिण्टीशसंयुतम् ॥ नवाक्षरोऽभ्य ऋषयो ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ६ ॥ छन्दांस्युक्तानि सुनिमिर्गायञ्युष्णिगतुष्टुभः ॥ देश्यः पोक्ता महापूर्ताः काली लक्ष्मीः सरस्वती ॥७॥ नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयोऽस्य मनोः स्वृताः ॥ स्याद्रकद्वित्वाधामायो बीजसंचयः ॥ ८ ॥ अग्निवायुभगास्तत्त्वं फलं वेदत्रयोद्भवम् ॥ सर्वाभीष्टमि द्वयर्थं विनियोग उदाहतः ॥ ९ ॥ ऋषिच्छन्दोदैवतानि शिरोष्ठुखद्वदि न्यसेत् ॥ शक्तिबीजानि स्तनयोश्वत्त्वानि द्वयं पुनः ॥ १० ॥ तत एकादश न्यासान्कुर्वीतेष्टफलप्रदान् ॥ प्रथमं मातृकान्यासः कार्यः पूर्वोक्तमार्गतः ॥ ११ ॥ कृतेन येन देवस्य साह्य्यं याति मानवः ॥ अथ द्वितीयं कुर्वीत न्यासं सारस्वताभिधम् ॥ १२ ॥ बीजत्रयं तु मन्त्राद्यं तारादि हृदयान्तिकम् ॥ कमादंगुलिषु न्यस्येकनिष्ठाद्वासु पञ्चसु ॥ १३ ॥

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥६७॥ मन्त्रादिबीजवर्य पणवादिनमोऽन्तं किनिष्ठादिवु स्थानेषु नयस्य हृदयादिवु जातियुक्तं न्यसेत् यथा ॐ हे ईं क्वीं नमः किनिष्ठायामित्यादि॥१३॥ ॐ हे हें क्वीं ह्वां वित्याय नम इत्याचक्नेष्विति॥१४॥ फलमाइास्मित्निति॥१५॥ मायेति हीं ब्राह्मी पूर्वतो मां पातु इत्यादि॥१६॥ यातुकाष्ठायां करयोर्मध्यतः पृष्ठे मणिबन्धे च कूर्परे ॥ हृदयादिषड्केषु विन्यसेजजातिसंयुतम् ॥ ३४ ॥ अस्मिन्सारस्वते न्यामे कृते जाड्चं विनश्यति ॥ तत्सतृतीयं कुर्वीत न्यासं मातृगणान्वितम् ॥ ३५ ॥ मायाबीजादिका ब्राह्मी पूर्वतः पातु मां सदा॥ माहेश्वरी तथाऽप्रेय्यां कौमारी दक्षिणेऽवतु ॥ १६ ॥ वैष्णवी यातुकाष्ठायां वाराही पश्चिमेऽवतु ॥ इन्द्राणी पावने कोणे चायुण्डा चोत्तरेऽवतु ॥ ३७॥ ऐशाने तु महालक्ष्मीकृष्वे च्योमेश्वरी तथा ॥ सप्तद्वीपश्वरी भूमौ रक्षेत्कामेश्वरी तले ॥ १८॥ तृतीयेऽस्मिन् कृते न्यासे त्रेलोक्यित्रयी भवेत् ॥ न्यासं चतुर्थ कुर्वीत नन्दजादिसमिन्वतम् ॥३९॥ नन्दजा पातु पूर्वाङ्गं कमलांकुशमण्डिता ॥ खङ्गपात्रकरा पातु दक्षिणे रक्तदन्तका ॥ २० ॥ पृष्ठे शाकंभरी पातु पुष्टपपञ्चतसंग्रता ॥ चतुर्वाणकरा दुर्गा वामे पातु सदैव माम् ॥ २३ ॥ शिरःपात्रकरा भीमा मस्तकाच्चगणावि ॥ पादादि मस्तकं यावद्धामरी चित्रकान्तिभृत् ॥ २२ ॥ तुर्यन्यासं नरः कुर्याचरामृत्युं व्यपोहिति ॥ अथ कुर्वीत ब्राख्यं न्यासं पञ्चमनुत्तमम् ॥ २३ ॥ पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु सनातनः ॥ नाभेविद्युद्धपर्यन्तं पातु नित्यं जनार्दनः ॥ २४ ॥ विद्युद्धेश्वह्मरन्त्रान्तं पातु हृद्धि वेततेयः करद्धयम् ॥ २५ ॥ चक्षुषी वृषमः पातु सर्वाङ्गानि गजाननः ॥ परापरी देहमागौ पात्वानन्दमयो हिरः ॥ २६ ॥ कृतेऽस्मिन्यभे न्यासे सर्वान्कामानाष्टुयात् ॥ षष्ठं न्यासं ततः कुर्यान्महालक्ष्यादिसंयुतम् ॥ २७ ॥ मध्यं पातु महालक्ष्मीरहादशभुजान्वता ॥ उध्वी सरस्वती पातु भुजैरष्टामिक्विता ॥ ३८ ॥

नैर्ऋत्याम् ॥ १७ ॥ १८ ॥ एतत्फलमाइ--तृनीय इति ॥ १९ ॥ चतुर्थन्यासमाइ--नन्द्जेति ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ फलमाइ--तुर्यमिति ॥ २३ ॥ पश्चमं न्यासमाइ--पादादीति ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ फलमाइ--कृतेति ॥ २० ॥ षष्ठमाइ--मध्यमिति ॥ अष्ठादशभुजामाइ--लक्ष्मीर्मम मध्य उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ० १२८

॥६७॥

Some Some Some

पात्वित्यादि प्रयोगः ॥ २८ ॥ २० ॥ ३० ॥ सप्तमं न्यासमाह--मूलेति ॥ ॐ रा ॥ ॐ रा नमः ब्रह्मान्छे इत्यादिप्रयोगः ॥३१॥३२॥ एतन्न्यासफलं रागेक्षयः ॥ पायुमारभ्य ब्रह्मरन्थ्रान्तं वर्णन्यासोऽष्टमः ॥ ३३ ॥ एतत्फलं दुःखनाद्याः ॥ नवममाह--कुर्वीतेति ॥ ३४ ॥ ३५ हि। रसः पादान्तम ष्टवारं मूलं न्यसेत् ॥ एवं पादाच्छिरोऽन्तमष्टशः एवं पुरो दक्षिणभागे पृष्ठे वामभागेऽप्यवं प्रत्यहमष्टशो मूलं न्यसेत् ॥ एनत्फलं देवत्वप्राप्ति अधः पातु महाकाली दशबाहुसमन्विता ॥ सिंहो हस्तद्वयं पातु प्रहंसो क्षियुग्मकम् ॥ २९ ॥ महिषं दि व्यमारूढो यमः पातु पदद्वयम् ॥ महेशश्रंडिकायुक्तः सर्वाङ्गानि ममावतु ॥३०॥ षष्ठेऽस्मिन्विहते न्यासे सद्गति प्राप्तुयात्ररः ॥ मूलाक्षरन्या सरूपं न्यासं कुर्वीत सप्तमम् ॥ ३१ ॥ ब्रह्मरन्त्रे नेत्रयुग्मे श्रुत्योन्।सिकयोर्ध्ये ॥ पायौ मूलमनोर्वर्णान् ताराद्यात्रमसाऽन्वि तान् ॥ ३२ ॥ विन्यसेत्सप्तमे न्यासे कृत रोगक्षयो भवेत् ॥ पायुतो ब्रह्मरन्थ्रान्तं पुनस्तानेव विन्यसेत् ॥३३॥ कृतेऽस्मित्रष्टमे दुःखं विनश्यति ॥ कुर्वीत नवमं न्यासं मन्त्रन्यातिस्वरूपकम् ॥ ३४ ॥ मस्तकाञ्चरणं विधि ॥ पुरो दल पृष्ठदेशे वामभागे पृशो न्यसेत् ॥३५॥ मूलमन्त्रकृतो न्यासो नवमो देवतातिकृत् ॥ ततः कुर्वीत दशमं षडङ्ग न्यासमुत्तमम् ॥३६॥ मूलमन्त्रं जातियुक्तं हृदयादिषु विन्यसेत् ॥ कृतेऽस्मिन्दशमे न्यासे त्रैलोक्यं वशगं भवेत् ॥३७॥ दशन्या सोक्तफलदं कुर्यादेकादशं ततः ॥ खिद्गिनीशूलिनीत्यादि पिठत्वा श्लोकपञ्चकम् ॥३८॥ आद्यं कृष्णतरं बीजं ध्यात्वा सर्वाङ्गके न्यसेत् ॥ श्लेन पाहि नो देवीत्यादिश्लोकचतुष्टयम् ॥३९॥ पठित्वा सूर्यसदृशं द्वितीयं सर्वतो न्यसेत् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादि श्लोकपञ्चकम् ॥४०॥ पिटत्वा स्फाटिकाभासं तृतीयं स्वतनौ न्यसेत् ॥ ततः षडङ्गं कुवीत विभक्तेमूलवर्णकैःः ॥४१॥ एकेनैकेन चैकेन चतुर्भिर्धुगलेन च॥समस्तेन च मन्त्रेण कुर्यादङ्गानि षट् सुधीः॥४२॥शिखायां नेत्रयोः श्रुत्योर्नसोर्वक्रे गुदे न्यसेत् ॥मन्त्र वर्णान्समस्तेन व्यापकं त्वष्टश्रश्रत् ॥४३॥ खङ्गं चकगर्षुचापपारिघाञ्छूलं भुशुंडीं शिरः शङ्कं संदधतीं करेश्चिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् ॥ यामस्तौत्स्विपते हरी कमलजो इन्तुं मधुं कैटभं नीलाश्मध्वितमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम् ॥ ४४ ॥ ३६॥३०॥ दशममाह- मूलोति॥ मूलं हृद्याय नम इत्यादि जातियुक्तं षडङ्गेषु न्यसेत ॥ एतत्फलं जगद्वस्यम् ॥३८॥ एकाद्शमाह--खिङ्गिनीति ॥ आद्यम् ऐं ॥ ३९ ॥ द्वितायं हीं ॥ ४० ॥ तृतीयं क्वीं ॥ ४१ ॥ षडङ्गमाह--एकेनेति ॥ ४२ ॥ वर्णन्यासमाह--शिखायामिति ॥ मत्र

पू.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ 115/11 श्रुतिनासामुखेषु द्वी द्वी अष्टशोऽष्टवारम् ॥ ४३ ॥ महाकालीध्यानमाह—खङ्गमिति खङ्गचऋबाणशिरःशङ्कान् दक्षेषु दधतीम् इतराणि वामेषु आस्यपाददशकां दशवकां दशपादां दशभुजां त्रिंशत्रेत्रामित्यर्थः ॥ हरी स्त्री कमलासनो ब्रह्मा मधुकेटभी हन्तुं यामस्नी दुष्टाव हरेनिद्रा वैष्यवी मायेत्यर्थः ॥ तदुकं यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीत इति ॥ ४४ ॥ महालक्ष्मीध्यानमाह--अक्षस्र असस्र प्रायु गदेषु िशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शिक्तमिमं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥ शूलं द्धतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभमदिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ ४५ ॥ घण्टाशुलहलानि धनुः सायकं हस्ताब्जेद्धतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वीमत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादिदैत्यादिनीम् ॥ ४६ ॥ एवं ध्यात्वा जपेछ अचतुष्कं तद्दशांशतः ॥ पायसान्नेन जुद्रयात्पृजिते यजेत्ततः ॥ तत्त्वपत्रावृतत्र्यस्रषट्कोणाष्ट्रदलान्विते ॥ ४८ ॥ ध्यात्वा तां मूलमन्त्रतः ॥ पूर्वकोणे विधातारं सुरया सह पूजयेत ॥३९॥ विष्णुं श्रिया च नैर्ऋत्ये वायव्ये तूमया शिवम् ॥ उद्यदक्षि णयोः सिंहं महिषं च क्रमाद्यजेत् ॥ ५० ॥ षट्सु काणेषु पूर्वादि नन्दजां रक्तदन्तिकाम् ॥ शाकंभरीं तथा दुर्गी श्रामरीं यजेत्।। ५१ ॥सिबन्दुनादाद्यणीद्यास्ताराद्याश्च नमोऽन्तिकाः ॥ नन्दजाद्या यजेच्छक्तीर्वक्ष्यमाणा अमीदशीः अप्यत्रेषु ब्रह्माणी पूज्या माहेश्वरी परा ॥ कोमारी वैष्णवी चाथ वाराही नारसिंहिका ॥ ५३ ॥ पश्चादैन्द्री तथा तत्त्वद्लेष्विमाः ॥ विष्णुमाया चेतना च बुद्धिनिंद्रा क्षुघा ततः ॥ ५४ ॥ छाया शक्तिः परा तृष्णा क्षान्तिर्जातिश्च लज्जया ॥ शान्तिः श्रद्धा कान्तिलक्ष्म्यो धृतिः तिः श्रुतिः स्मृतिः ॥५५॥ तुष्टिः पुष्टिदया माता ततो भ्रान्तिरिति क्रमात् ॥ बहिर्भुगृहकोणेषु गणेशः क्षेत्रपालकः ॥ ५६ ॥

गिति ॥ कुण्डिकां कमण्डलं जलजं राङ्खम् । अक्षमालापद्मबाणखद्भवजगदाचक्रकमण्डलुराङ्खान्दक्षेषु अन्यानि वामेषु द्धतीं नहिबासुरघातिनीं सरोजस्थितां कमलसंस्थितां वा सुरौजोभवां देवदेहनिर्गततेजःसमुद्गताम् ॥ ४५ ॥ महासरस्वतीध्यानमाह-चण्टेति ॥ शङ्ख मुसलचक्रबाणान्द्रक्षेषु घण्टाशुलहलधनुंषि वामेषु ॥ घनान्तेति शर्चन्द्रव्यामु ॥ ४६ ॥ हेमरेतसि वही ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

高 名 名 名 名 名

सिबिन्द्विति ॥ ॐ नं नन्द्जायै नम इत्यादिवक्ष्यमाणा अमी हशीः सिबिन्द्वनादाद्यर्णाद्यास्ताराद्या नमोऽन्ता यजेत् ॐ ब्रह्माण्ये नम इत्यादि ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ तेत्त्वदलषु चर्त्वीवशेतिपत्रषु विष्णुमायाद्याः ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ अग्नितिथि न्रतिपदम् ॥ ५९ ॥६०॥ चण्डीस्तवस्य

बदुकश्चापि योगिन्यः पूज्या इन्द्रादिका अपि ॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री भवेत्सौभाग्यभाजनम् ॥ ५७ ॥ सार्कण्डेयपुराणोक्तं नित्यं चण्डीस्तवं पठन् ॥ पुटितं पूलमंत्रेण जपन्नाप्नोति वांछितम् ॥ ५८ ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे आरभ्याग्नितिथि सुधीः ॥ अष्टम्यन्तं जपेछक्षं दशांशं होममाचरेत् ॥ ५९ ॥ प्रत्यहं पूजयेद्वीं पठेत्सप्तशतीमिष ॥ विप्रानाराध्य मंत्री स्विमिष्यर्थे लभते ऽिचरात् ॥ ६० ॥ सप्तशत्याश्चरित्रे तु प्रथमे पद्मभूप्रीतः ॥ छन्दो गायत्रसुदितं महाकाली तु देवता ॥ ६१ ॥ वाग्बीजं पावक स्तत्त्वं धर्मार्थे विनियोजनम् ॥ मध्यमेऽथ चरित्रे तु सुनिर्विष्णुक्दाहृतः ॥६२॥ उष्णिक् छंदो महालक्ष्मीर्देवता बीजमिष्ट्रजा ॥ वास्तत्त्वं धनप्राप्त्ये विनियोज उदाहृतः ॥ ६३ ॥ उत्तरस्य चरित्रस्य ऋषः शंकर ईरितः ॥ तिष्दुप् छंदो देवताऽस्य प्रोक्ता महासरस्वती ॥६८॥ कामो बीजं रितस्तत्त्वं कामाप्त्ये विनियोजनम् ॥ एवं संस्मृत्य ऋष्यादीन्ध्यात्वा पूर्वोक्तमार्गतः ॥६५॥ सार्थस्मृतिं पठेच्चण्डीस्तवं स्पष्टपदाक्षग्म् ॥ समाप्तौ तु महालक्ष्मी ध्यात्वा कृत्वा षडंगकम् ॥ ६६ ॥ जपेद्ष्यरातं मृलं देवताये निवेदयेत् ॥ एवं यः कुक्ते स्तोत्रं नावसीदित जातुचित् ॥ ६७ ॥ चंडिकां प्रभजनमत्यों धनैर्धान्येराश्चयेः ॥ पुत्रैः पोत्रे क्वाऽरराग्येर्युक्तो जिवेच्छतं समाः ॥ ६८ ॥ अथ सप्तशतीपाठे कवचार्गलाकीलकानामावश्यकतामाह ॥ उक्तं च देवीमाहात्म्ये ॥ पुरा दशमुखो ब्रह्मन्दीव्यमानो विद्यासि ॥ गच्छन्नत्यूर्ध्वमार्गः संसर्विद्धु विचारयन् ॥ ६९ ॥

मार्कण्डेयपुराणोक्तस्य ऋष्यादीनाह--सप्तशात्या इति ॥ प्रथमचार्रत्रे मधुकैट भवधः ॥६१॥ मध्यमे महिषासुरवधः ॥ ६२ ॥ अद्रिजा ह्रीं ॥ ६३ ॥ उत्तरे शुम्भिनशुम्भवधः ॥६४॥ कामः क्वीं ॥६५॥ सार्थस्मृतिमर्थस्मरण पूर्वकम् ॥६६॥ ६७ ॥ यशश्रयैः कीर्तिसमूहैः ॥ समा वर्षाणि ॥६८॥६९॥

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥६९॥

॥७०-७७॥ ईश्वरः शिवः तान् देवान् दुःखितान् समालोक्य प्रथमं कवचं ततः अर्गलां ततः कीलकं ततः सप्तशतीपठनिमति ऋमेण महातन्त्रक्षणं दुर्गापाठं सुप¹दिशत् ॥ महातन्त्रलक्षणमञ्जे वक्ष्यति॥७८॥७९॥८०॥ताभ्यां सुरथ्वेश्याभ्यां जय्त्वं देवि चासुण्डे इत्यादिपदां जयन्ती मङ्गलाकृष्णा सप्तशतीमालापारायणपरं द्विजम् ॥ अवतीर्य जप्यते सर्वलाकेषु मम छत्रं भवित्वति ॥ ७१ ॥ इत्याकण्यं त्रिलोकेशोऽहं THE SERIES प्रदेश छत्र संतुष्टस्तु द्विजोत्तमः ॥ ७२ ॥ स्वपुस्तकं दशास्याय प्रदेशै भिक्तदायकः ॥ शाकंभर्या मनुस्तवम् ॥ ७३ ॥ भीमायास्तदृषिस्तोत्रमपाकृष्याविशेषितम् ॥ देयब्रह्मस्तुतियुतं चरित्रत्रितयान्वितम् पुस्तकं पाठाहेवास्तु निधनं गताः ॥ अक्षणाख्यस्ततो दैत्यस्त्रेलोक्यं चातिपीड्यन् ॥ ७५ ॥ ततो देवा ऋषिस्तोत्रं विना सप्तशतीमनुम् ॥ जपंतस्तु महत्कालं महादेवीमुपासिषुः ॥ ७६ ॥ अत्रसन्ना महादेवी देवा ब्रह्माणमाययुः शंभुं हङ्घा सर्वे व्यनोधयन् ॥७७॥ ईश्वरस्तान्समालोक्य कृवचार्गलकीलकैः ॥ सह सप्तशतीमालामहातंत्रमुपादिशत् ॥७८॥ ततः प्रसन्ना श्रीदेवी श्रामरं रूपमाश्रिता ॥ अनेकश्रमरैः सार्धमरुणाख्यं महासुरम् ॥७९॥ हत्वा ब्रह्मादिदेवानां द्दौ ॥ ब्रह्मा मृकण्डपुत्राय सुरथाय समाध्ये ॥ ८० ॥ मार्कण्डयाय ताभ्यां च प्रसन्ना जगदंविका ॥ जय त्व । मधुकैटभविद्रावि विधात्रीति नवार्णकम् ॥ कीलकं शंकरप्रोक्तं विष्णुना प्रोक्तमेत्त्रितयमुत्तमम् ॥ अर्गलाकीलकं चादौ पठित्वा कवचं पठेत् ॥ ८३ ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं शिवोदितः ॥ अगेला दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत् ॥ ८४ ॥ कवचं रक्षयेत्रित्यं तस्मादेतत्रयं पठेत् ॥ अगेला हृदये यस्य ८५॥ भविष्यति न संदेहो नान्यथा शिवभाषितम् ॥ कीलकं हृदये यस्य स कवर्चं हृदये यस्य स वज्रकवचः प्रभुः ॥ अथ हुर्गापाठे संपुटनिर्णयः महामाया मनोरादौ चिरतस्यादितोऽपि वा ॥ ८७ ॥ इति पद्यं च अर्गलान्तर्गतम् अर्गलात्मकं पद्यद्वयं बोध्यम् ॥ ८१ ॥ मधुकैटभादिध्याक्षमिद्निपर्यन्तं नवार्णकं ज्ञेयं शेषा स्तुतिः ॥ ८२ ॥ कवचा दित्रित्यपठने मतान्तरमाह--अर्गला इति ॥ ८३ ॥ अत्र मूलं मृग्यमिति नागोजीभट्टः ॥ त्रयाणां पठने फलमाह अर्गलेति ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ नवार्णसंपुटे मनचतुष्ट्यमाह ॥ ८७ ॥

डपा.स्त. इ दुर्गा. अ० १२८

॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ चिरतार्धमिति ॥ एतत्पद्यं हुर्गारहस्येऽपि प्रतिपादितम् ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ अथ हुर्गापाठकरणे नव भेदाः रहस्योक्ता इति ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ एतत्रव भेदज्ञाने फलमाह --एतानीति ॥ ९६ ॥ पूर्वोक्तषङ्विधानां स्वरूपं तत्र चण्डीपाठे एव लोमविलोमादिमार्गेण स्वरूपमुदितम्

प्रत्यध्यायसमारम्भे तत्समाप्तौ जपेत्तथा ॥ प्रतिश्लोकस्यादितो यत्तदन्ते वा पठेन्नरः ॥ ८८ ॥ नवार्णमनुना सार्घ सम्पुटोऽय सुद्दाहृतः ॥ सकामैः संपुटो जाप्यो निष्कामैः संपुटं विना ॥ ८९ ॥ अथानेकविधनिर्णयः ॥ चार्ततं मध्यमं चैव जपेद्वा चिष्ठका द्वयम् ॥ एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिद्द ॥ ९० ॥ चरितार्धं तु न जपेजपॅश्छिद्धमवाप्तुयात् ॥ यावन्न पूर्यतेऽध्याय स्तावन्न विरमेत्सुधीः ॥ ९९ ॥ यदि प्रमादादध्याये विरामो भवति प्रिये ॥ पुनरध्यायमारभ्य पठेत्सर्वं सुदुर्मुद्धः ॥ ९२ ॥ अनु कमात्पठेदेवं शिरःकम्पादिकं त्यजेत् ॥ पठचमानाध्यायमध्ये विरामो यदि वा भवेत्॥पुनरध्यायमारभ्य पठेत्सर्वं सुद्दार्धाः॥९३॥ अथ दुर्गापाठस्य नव नामानि त्रञ्जक्षणानि च ॥ रहस्योक्तानि नामानि ब्रह्मोक्तानि वदामि ते ॥ महाविद्या महातन्त्री चण्डी सप्तशिति च ॥ ९८ ॥ मृतसंजीविनी नाम पञ्चमं परिकीर्तितम् ॥ षष्ठं चैव महा चण्डी सप्तमं रूपदापिका ॥ ९५ ॥ अष्टमं तु चतुःपिष्टियोगिनी नवमी परा ॥ एतानि योऽभिजानाति नामानि नृपनन्दन् ॥९६॥ जपं विना भवेत्तस्य चण्डिका वरदा सदा ॥ पूर्वोक्तषद्विधानां तु स्वरूपं तत्र चोदितम् ॥ ९७ ॥ आद्यद्वितीयन्तियचित्रतानुक्रमेण च ॥ महाविद्या सप्तशिती सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥ ९८ ॥ आद्यान्तमध्यचरितं महातन्त्रमितिरितम् ॥ आदिमध्यान्तचारित्रक्रमाचण्डीमहामनुः ॥ ९९ ॥ मध्यमाद्यन्त चरित्रक्रमात्मप्तरातीति च ॥ अन्त्यादिमध्यचारित्रान्महाचण्डीति कथ्यते ॥ रूपं देदीति संयोज्य नवार्णमनुना सद्द ॥ १०० ॥ संपुटत्वेन संयोज्य प्रतिश्लोकं जपेत्रथा ॥ रूपंचण्डीति सा प्रोक्ता सर्वाभीष्टपल्यत्र ॥ १०० ॥ योगिनीनां चतुःपष्टियोगात्सप्तरातीमनोः ॥ चतुःपर्ष्टीति सा प्रोक्ता योगसिद्धिवदायिनी ॥१००॥

॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ रूपंदेहीति अर्गलोक्तमन्त्रं नवार्णमन्त्रेण सह ॥ १०१ ॥ संपुटत्वेन चण्डीमन्त्रेण संयोज्य ॥ १०२ ॥ चतुःषष्टियोगिनी

बु.ज्ज्बो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥७०॥

स्तोत्रमन्त्रेण प्रतिश्लोकं संपुटितेन योगिनीचण्डी ॥ १०३ ॥ पराबीजम् सौरिति दन्त्यसकारीकार्विसर्गयोगेन !। १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ यथावत्कथयामि त इत्यत्र प्रत्यहं पठतां नृणामिति पाठः क्षत्रचिद्दृदृश्यते ॥ २०८ ॥ मनून् उक्त मन्वन्तरं ह्रीमित्यतत् डामरतन्त्रोक्तनवार्णविधौ पराबीजसमायोगात्परा चण्डीति कथ्यते ॥ एवं नवानां भेदानां नामानि च पृथक् पृथक् ॥ १०४ ॥ प्रत्येकं तैस्त्रिभिनीं जेर्ज यादिनवनामितः ॥ जयां च विजयां भद्रां भद्रकाळीमनन्तरम् ॥ १०५॥ सुपुत्वां दुर्पुत्वीं प्रज्ञां पञ्चाद्व्यात्रमुत्वीं तथा॥ अध सिंहमुत्वीं दुर्गो नवदुर्गो विदुर्बुयाः ॥१०६॥ एवं ज्ञात्वा मप्तशतीं यो जपेतसुसमाहितः ॥ तस्य देवी सुप्रमन्ना सर्वाभीष्टप्रदा भवेत् ॥ १०७ ॥ अथ कामनापरत्वेन चण्डीपाठसंख्या ॥ वाराहीतन्त्रे ॥ शिव उवाच ॥ चण्डीपाठफलं देवि शृणुष्त्र गदतो मम ॥ एकावृत्त्यादिपाठानां यथावतकथयामि ते ॥ १०८ ॥ संक्रपपूर्व संपूज्य न्यस्याङ्गेषु मनूनसकृत् ॥ पश्चाद्वलि GARAGE CONTRACTOR OF THE CONTR प्रदानेन फलमाप्नोति मानवः ॥ १०९ ॥ उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिगवृत्तिं पठेन्नरः ॥ गृहोपशान्तौ कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वगनने ॥११०॥ महाभये समुत्पन्ने सप्तवृत्तिमुदीरयेत ॥ नवावृत्तौ भवेच्छान्तिवाजपेयफलं लभेत ॥ १११ ॥ राजवश्याय भूत्ये च ह्रदावृत्ति मुदीरयेत् ॥ अर्कावृत्त्या काम्यसिद्धिवैरिहानिश्च जायते ॥ ११२ ॥ मन्वावृत्त्या रिपुर्वश्यस्तथा स्त्री वशतामियात् ॥ सीरूयं पञ्चदशावृत्त्या त्रियमाप्नोति मानवः ॥ ११३ ॥ करूपावृत्त्या पुत्रपौत्रधनधान्यागमं विदुः ॥ राजभीतिविनाशाय विपक्षोज्ञाटनाय च ॥ ११४ ॥ कुर्यात्सप्तदशावृत्ति तथाऽष्टादशकं प्रिये ॥ महाऋणविमोक्षाय विंशावृत्ति पठेन्नरः ॥ ११५ ॥ पञ्चविंशावर्तनाद्धि भवेद्धन्धविमोक्षणम् ॥ संबर्धे समनुप्राप्ते दुश्चिकितस्यामये सदा ॥ ११६ ॥ जातिध्वंसे कुलोच्छेरे आयुवो नाशमागते ॥ वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धी धननशे तथा क्षये ॥ ११७ ॥ तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके ॥ कुर्याद्यत्नाच्छतावृत्ति ततः संपद्यते शुभम् ॥ ॥ ११८॥ विपदस्तस्य नश्यन्ति अन्ते याति परां गतिम् ॥ जयबृद्धो शतावृत्त्या राज्यवृद्धौ सद्। पठेत् ॥ ११९॥ कथितः इलोकन्यासो वा ॥ १०९ ॥ ११० ॥ महाभये महोत्पातादिजे भये ॥ १११ ॥ छद्रा एकादश अर्काः द्वादश ॥ ११२ ॥ मनुश्रतुर्दश रिपुः श्राञ्चः ॥ ११३ ॥ कल्पः षोडश विपक्षोचाटनाय वैरिपरविरोधाय ॥ ११४--११९ ॥

उपा.स्त. १ इर्गाः अ॰ १२८

॥ १२० ॥ १२१ ॥१२२१२३॥१२४॥ अत्र अष्टमृद्मिति वा पाठः ॥१२५॥ धर्मकामः क्षिपेद्धस्म धनकामस्तु मौति हमिति वा पाठः । नेकामार्थी रोचनां क्षिपेदिति पाठश्च ॥ १२६ ॥ मोक्षकामो न्यसेद्वह्मनिति पाठः । उबाटनार्थं न्यात्रीं चेति पाठः । न्यात्रो आषया करेसवेत्युच्यते ॥ १२७ ॥ मनसा चिन्तितं देनि सिद्धिरष्टोत्तराच्छतात् शताश्रमेययज्ञानां फलमाप्नोति सुन्नते ॥ १२० ॥ सहस्रावर्तनाछक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा ॥ अक्तवा कामान्यथाकामं नरो मोक्षमवाष्त्रयात् ॥१२१॥ यथाऽश्वमेवः ऋतुषु देवानां चयथा हरिः ॥ स्तवाना मिप सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः ॥ १२२ ॥ नातः परतरं स्तोत्रं किचिदस्ति वरानने ॥ अक्तिवृक्तिवदं पुण्यं पावनानां च पाव रम् ॥ १२३॥ अथवा बहुनोक्तेन किमन्येन वरानने ॥ पञ्चाशदावृत्तिपाठात्सर्वाः सिद्धचन्ति सिद्धयः ॥ १२४ ॥ अथ कामना परत्वेन कलरामध्ये निक्षेपपदार्थाः ॥ संशोध्य भूमि संस्थाप्य कलशं तीर्थवारिणा ॥ पूरियत्वा वाजिगज शालादिभ्यो मृदस्तथा ॥ १२६ ॥ धनकामो न्यमेत्स्वर्णे धान्यकायस्तु मौक्तिकम् ॥ श्रीकामः कमलं न्यस्य कामार्थी दमनं न्यसेत् ॥ १२६ ॥ मोक्षकामा न्यसेद्रतं जयकामोऽपराजिताम् ॥ उच्चाटनार्थे हिङ्गुलं वश्यार्थे शिखिमुलिकाम् ॥ १२७॥ मारणाय मरीचं तु केतंकीं मोहनाय च ॥ आकर्षणार्थं धत्तूरं प्रक्षिपेत्कलशोपिर ॥ १२८ ॥ जपेनमन्त्रं महेशानि शृणुष्व गदतो मम ॥ क्षिप्तं यत्कलशे हस्ते तदेमं प्रजपेन्मनुम् ॥ ५२९ ॥ नकुलीशं वामकर्णयुतमर्धेन्दुमस्तकम् ॥ द्विर्वाग्भवं समुचार्य मायाबीजमथोचरेत् ॥ ॥ १३० ॥ चामुण्डायै समुचार्य द्विठान्तोऽयमुदीरितः ॥ जपेद्द्वादशलक्षं तु स्नानं तेनैव वारिणा ॥ १३१ ॥ एवं शतावृतिफलं मयोक्तं ते विधिप्रिये ॥ आधारे स्थापयित्वा तु पुस्तकं वाचयेत्ततः ॥ १३२ ॥ इस्ते संस्थापनादेवी इन्त्यर्धे हि फलं यतः ॥ होमे प्रदीपिते वही मोक्षार्थी पायसं हुनेत् ॥ १३३ ॥ मारणे मोहने चैव तथैवोचाटकर्मणि हुनेन्मांसं त्रिमध्वकं मोहने मधुपायसम् ॥ १३४ ॥ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ मस्तकमित्यत्र शेखरिमिति पाठः ॥१३०॥ मन्त्रप्रकाशकः हूं ऐ ऐ ही चानुग्डाये हवाहा हीमित्यनेन कराङ्गन्यासौ द्वादशक्शं

जिपत्वा तेन कलशोदकेन स्नानं कार्येत् ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ मांसिमत्यत्र माषमपीति पाठः १३४ ॥

इ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥७१॥ ॥ १३६ ॥ १३६ ॥ १३० ॥ अथ कामनापरत्वेन विविधपाठक्रममाह--लक्ष्मीपुत्रकामनायां सृष्टिमागंः ॥ १३८ ॥ सृष्टिमागंलक्षणं सावाणः सृष्टं तन्य इत्यारभ्य सावाणिर्भविता मनुरित्यन्तः पाठ इति सृष्टिक्रमः ॥ अथ स्थितिक्रममाह--जपेदिति ॥ प्ररा सुम्मत्यादिनवाध्यायानपठित्वा स्तम्भने मानुलफलं वश्ये तु सितसर्षपाः ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थ पूर्वाशाभिमुखो यजेत् ॥ १३६ ॥ माहने मार्णे चैत हुनेह्रे देक्षिणामुखः ॥ उच्चाहने उत्तरास्यः पूर्वोक्तमनुना हुनेत् ॥ १३६ ॥ एवं शतावृत्तिफलं मयोक्तं ते विधिप्रिये ॥ एकावृत्त्याद्यः पाठाः सर्वेषां सर्वकामदाः ॥ १३० ॥ सुक्तमुक्तमदाः पुण्याः पातकानां च पावनाः ॥ इरगौरीतन्त्रे ॥ श्रीकामः पुत्रकामो वा सृष्टिमागंक्रमेण तु ॥ १३८ ॥ सावाणः सूर्यतनयः सावाणंर्भविता मनुः ॥ जपेच्छकादिमारभ्य सुम्भदेत्यवधावधि ॥ १३९ ॥ आद्यमारभ्य प्रजपेत्पश्चाच्छेषं समापयेत् ॥ शान्त्यादिकामः सर्वत्र स्थितिमागंक्रमेण तु ॥ १४० ॥ स्थितिपाठः सर्वकामे मुक्ति कामे च संहितिः ॥ संहारे चान्त्यमारभ्य पश्चादादि समापयेत् ॥ १४९ ॥ पश्च स्वर्णाः शतावृत्तो पक्षावृत्तो तु तत्रयम् ॥ पञ्चावृत्तो स्वर्णमेकं त्रिरावृत्तो तद्रधंकम् ॥ १४२ ॥ एकावृत्तो पादमेकं द्वाहा शक्तितो बुधः ॥ देवीपुराणे ॥ वाचकं पूज यित्वा तु यथाविभवविस्तरेः ॥ १४३ ॥ वाचित्रवा ततो राजा देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ तद्दन्ते शान्तिरावस्तु जनस्य सनुपस्य च ॥ १४४ ॥ अभिधशतस्य च ॥ यत्पलं लभेते तता तत्पलं शताधा भवेत् ॥ १४६ ॥

राक्राध्यान्तं पठेदिति स्थितिक्रमः राक्रादिमारभ्येत्यस्यातहुणसंविज्ञानबहुव्रीहिणा तहुत्तराध्यायमारभ्येत्यर्थः ॥ राक्रादिपर्यन्तमित्यस्य तद्ध्या यान्तमित्यर्थः ॥ १३९ ॥ १४० ॥ अथ संहारक्रममाह--मुक्तिकाम इति ॥ एवं देःया वरं लब्ध्वेत्यादिक्रलोकसंहारक्रमेण सावर्णिः सूर्यतनय इति क्लोकान्तं पठनीयमिति संहारक्रमः ॥ संकटे चायं प्रशस्तः ॥ १४१ ॥ चण्डीपाठभ्य दक्षिणानियममाह--पञ्च स्वर्णा इति ॥ १४२ ॥ वाचकस्य पूजनमाह--वाचकामिति ॥ १४३--१४६ ॥

उपा.स्त. ।

340 85

HROLL

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafqarh Delhi Collection

॥१४७॥ १४८॥ पत्निद्मिति द्वस्व आर्षः ॥ १४९॥ लयं मोक्षम्॥ १५०॥ पठनीये सुक्ते वैदिक इत्येकें ॥ रात्रिसुक्तं दुर्गाप्रथमाध्यायस्यं विश्वे श्वरीं जगद्धात्रीमिति पञ्चदशक्लोकात्मकं सूक्तं देवीसूक्तं नमो देव्ये महादेव्ये इत्यादिपञ्चमाध्यायस्थं त्रिंशच्ह्रोकात्मकम् इत्यपरे ॥ एतदन्तर्गते एवइति प्रामाणिकाः ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ प्रतिइलोकामित्यस्य कात्यायनीतन्त्रोक्तमन्त्रविभागेनेति शेषः ॥ समुदाये सुक्तस्य व्यवहारस्य लक्ष्मीतन्त्र गङ्गातोयाऽभिषेकेण तीनैधिमषपुष्करैः ॥ यत्फलं लभते तात तत्फलादयुताधिकम् ॥ १४७ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानां शमनं परमं मतम् ॥ वर्धनं चाथ धर्माणां काममोक्षफलप्रदम् ॥ १४८ ॥ पुत्रदं पत्निदं तात जयदं मौरूयदं परम् ॥ अनेन विधिना वत्स प्राप्नोति श्रवणान्नरः ॥ १४९ ॥ इह कीर्ति श्रियं ब्राह्मीं परत्र भवती लयम् ॥ तथा मारीचकल्पे ॥ रात्रिसूक्तं ज्पेदादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ १५० ॥ प्रान्ते तु जपनीयं वै देवीसुक्तमिति क्रमः ॥ एवं संपुटितं स्तोत्रं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥ १५३ ॥ प्रकारान्तरमपि तन्त्रोक्तम् ॥ कृष्णाष्ट्रमीं समारभ्य यावत्कृष्णचतुर्दशी ॥ वृद्धचैकोत्तरया जाप्यं पूर्वं संपुटितं तु तत् ॥१५२॥ एवं देवि मया प्रोक्तः पौरश्चर्णिकः क्रमः ॥ तद्नते इवनं कुर्यात्प्रतिश्लोकं तु पायसैः ॥ १५३ ॥ रात्रिसूक्तं प्रतिऋचं तथा देन्याश्च सूक्तकम् ॥ तथा सिद्धिभवेन्नूनं नात्र कार्या विचारणा ॥ १५४ ॥ अथ संपुटितहोमे मन्त्रसङ्ख्यानिर्णयः ॥ मन्त्रपुटं बीजपुर्ट दुर्गास्तोत्रं पठेत्सदा ॥ मन्त्रबीजपुटा दुर्गा कामनासिद्धिदा सदा ॥ १५५ ॥ होमकाले सदा मन्त्रं दुर्गामन्त्रं पृथरघुनेत् ॥ कामना बीजसंयोगो दुर्गामन्त्रेण संदुनेत् ॥ १५६ ॥ दुर्गास्तवनमन्त्राणां सङ्ख्या सप्तशतं भवेत् ॥ कामनामन्त्रसंख्या च शतं चैव चतुर्दश ॥ १५७ ॥ मध्ये मन्त्रान्सप्तशतं होमकाले तु योजयेत् ॥ पाठे मन्त्रपुटं वाच्यं होमे मन्त्राः पृथक् पृथक् ॥ १५८ ॥ होमसङ्ख्या च यन्त्राणां शतं वै चैकविंशतिः ॥ पाठे बीजपुटं वाच्यं होमे बीजपुटं हुनेत् ॥ १५९ ॥ अथ कवचाह्नतिनिषेधः ॥ तन्त्रान्तरे ॥ चण्डी स्तवे प्रतिश्लोकमेकाद्वतिरिहेण्यते ॥ रक्षाकवचगैर्मन्त्रेहींमं तत्र न कारयेत् ॥ १६० ॥ कृतत्वात्तद्वयवक्लोका एवात्र ऋच इति बोध्यम् ॥ १५३ ॥ प्रतिऋचमित्य ाप्युक्तक्षोषो बोध्यः ॥१५४॥ मन्त्रपुटं क्लोकार्धलौकिकवैदिकादिमन्त्रपुटं

बीजपुटं ऐं हीं क्की इत्यादिना संपुटम् ॥ १५५ ॥ बीजसंयोगः दुर्गामन्त्रेण संहुनत् ॥ १५६ ॥ मन्त्रसंयोगे पृथक् होमः तेषां संख्या चतुर्दशशतम्

बु.ज्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥७२॥

॥ १५० ॥ १५८ ॥ १५८ ॥ अथ कवचाहुितिनर्णयोऽभिधीयते--चण्डीस्तव इति ॥ प्रतिक्रलोक प्रतिमन्त्रम् ॥ तत्र चण्डीस्तवग्रध्ये रक्षाकवचौर्मन्त्रः स्टूलेन पिह नो देवीत्यादिचतुर्भन्त्रहें मं न कारयेत ॥ अत्र विशेषः नीलकण्ठकृतरहस्यविवरणे ॥ प्रतिक्लोकिर्मित प्रतिमन्त्रमित्वयादे ॥ ते च मन्त्राः सप्तश्तिसंविवनः कात्यायनीतन्त्रपर्शिताः सप्तश्तासंख्याकार्ष्ठ व्याच स्वाहा इत्यादिकाः ॥ अत्र केचित् कवचादित्रपत्य रहस्यत्रयस्य च प्रतिक्ष्लोकं होममन्त्रतिष्ठिति तत्र कवचांशे होमो न युक्तः तन्त्रान्तरे निषेषात् ॥ चण्डीस्तवे इत्यादिकाः १ मौर्क्यात्कवचगिरि मौर्क्यात्कवचगिरि मौर्क्यात्कवचगिरिन श्रेष्ठ विश्व ॥ स्वाहेत्यो इग्रोहोमपगयणः ॥ कवचाहुितजात्पापान्महेशेन निपातितः ॥ १६२ ॥ अत्र मतान्तरं स्कान्दे हिंगुलाद्विखण्डे उत्तरसंहितायाम् ॥ चण्डीपाठेन होतन्या कृत्वा तु कवचं पुरा ॥ ततश्चाप्यर्गलां चैव ततो वैकीलकं भवेत् ॥ १६३॥ ततः सप्तशतों चैव रहस्यं पत्नवं तथा ॥ चण्डीपाठे तथा होमे क्रम उक्तो मनीिषभिः ॥१६४॥ अथ सप्तशतीपाठेऽङ्गपट्कस्य ग्रुल्यतां तद्यठने होषं चाह ॥ अङ्गद्दितीयम् ॥ अन्यथा शापमाप्रोति हानि चैव पदे पदे ॥ १६६ ॥ रावणाद्याः स्तोत्रमेतदङ्गहीनं सिषेविरे ॥ हता रामेण ते यस्मान्नाङ्गहीनं पठेत्तः ॥ १६० ॥ अङ्गपट्कं विज्ञानीयात्कवचार्गलकीलकैः ॥ रहस्यित्रयनैव सिषेत्रके ॥ १६८ ॥ अथ रात्रमुक्त नवार्णभन्त्रयोः संपुटत्वे नर्णयः ॥ अन्यकर्ता नवार्णक्रमचं जप्ति सिपेत्रके ततः स्ववम् ॥ देवीयुक्त नवार्णं च पठेदिति क्रमोऽस्ति हि ॥ १६९ ॥

त्यादिना २ अन्धकश्चेत्यादिना ३ इति एतावदशक्तस्य पक्षान्तरमाह--जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैवेति ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ मनान्तर् माह--चण्डी पाठेनेति तृतीयापदच्छेदः ॥ शेषं स्पष्टम् ॥ चण्डीपाठ तथा होमे च षडङ्गेः सह ऋम उक्त इति द्वितीयनान्वयः ॥ अत्र नागोजीमटः ॥ अन्धकश्च महादैत्यो हुर्गाहोमपरायणः ॥ कत्रचाहुतिमात्रेण महेशेन निपातितः ॥ इति ॥ तत्र कत्रचं शूलेन पाहीत्यादिश्लोकचतुष्टयं तदाहुतिचतुष्टयं महालक्ष्म्ये स्वाहेत्येवेत्यभियुक्ताः ॥ यत्तु चण्डीपाठेन होतन्यमित्यादि ऋम उक्तो मनीषिभिरिति प्रतिश्लोकं च जुहुपादिति छद्रयामलोकं तत्र

उपा.स्त. ३ डगी-

अव १३६

IISell

मूल मृग्य बह्वसंमतत्वात॥तत्राठनुष्ठम्भा ॥१६३॥१६४॥१६५॥१६६॥१६८॥ रात्रिस् कानवार्णः विश्व हित । तत्र पाठक्रमः । कव वमर्गलां कीलकं तत ऋष्याहिँ यासपूर्वक्षमष्टीत्तरञ्ञातं नवार्णमन्त्रज्ञपः । ततो रात्रिस् कं तत् ऋष्याहिँ यासपूर्वक्षमष्टीत्तरञ्ञातं नवार्णमन्त्रज्ञपः । ततो रात्रिस् कं ततः पाठः कर्तव्यः । रात्रिस् कानन्तरं नवार्णजपमाह तदसतः " रात्रिस् कं जपेदादौ मध्ये सत्रज्ञतीस्तवम् ॥ प्रान्ते तु पठनीयं वै देवीस् किति क्षमः ॥ पवं संपुटितं स्तोत्रम् " इति वचनात् पुटितमध्यं अन्यमन्त्रस्य प्रवेशे विरुद्धत्वामिति ॥ १६९ ॥ पक्षान्तरमाह नीलकण्डव्याख्यापाठक्षमः कवचमर्गलां कीलकं ततो रात्रिस् कं तत ऋष्यादिन्यासपूर्वकमष्टोत्तरश्चत्र वा नवार्णमन्त्रज्ञपः कर्तव्यः । नवार्णमन्त्रज्ञपोत्तरं रात्रिस् क्षपाठमाह तदसत पुटितं मुलमन्त्रेणोति वचनात पुटितमध्ये अन्यमन्त्रभवेशस्य विरुद्धत्वात् शतमादौ शतं चानते इति डामरतन्त्रविरोधात्र । तत्र रात्रिस् वर्ते मुलमन्त्रज्ञेणीति वचनात पुटितमध्ये अन्यमन्त्रभवेशस्य विरुद्धत्वात् शतमादौ शतं चानते इति डामरतन्त्रविरोधात्र । तत्र रात्रिस् वर्ते मुलम् ॥ वतः सप्तशतीस्त्वम् ॥ नवार्णं देवीस् कं च पुटेदित्यि चोचिरे ॥ १७० ॥ यतस्त्योः संपुटत्वे प्रमाणं जागरूककम् ॥ तस्माद्भावस्य च देशाचारानुसारतः ॥ १७० ॥ अथ दाक्षिणात्यसंप्रदाये त्वेवं पाठक्रमः ॥ उक्तं च नागोजीभट्टिकायाम् ॥ वेदादिवीन्भवं चेव माया कामं तथेव च ॥ १७० ॥ अथ दाक्षिणात्यसंप्रदाये त्वेवं पाठक्रमः ॥ शत मादौ शतं चानते जपेन्मन्त्र वद्याद्धरम् ॥ १०० ॥ स्वया कामं नमः पश्चान्त्रते जपेन्मन्त्र वद्याद्धरम् ॥ १०० ॥ चण्डीसप्तशतीमध्ये संपुटोऽयमुद्दाह्यः ॥ सकामेः संपुटो जाप्यो निष्कामेः संपुटं विना ॥ १७५ ॥ सप्तशतीस्तोक्षरम् अप्ता महासरस्वत्ये । देवताः ऐ ही की बीजानि सौ शिवितः इष्टिसद्धयथे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ या चण्डी मधुकेटभ मदिलनी या मादिषीस्त्रतीसदिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥ १७६ ॥

रात्रिस्करेवीस्के द्विविधे वेदोक्ते तन्त्रोक्ते वैदिकानां तु प्रथमे एव मुरुषे अन्येषां तान्त्रिकाणां तु यथेच्छं विकल्पः । तत्र वैदिकं रात्रिस्क रात्री व्यख्यदा यतीत्याद्यष्टर्चमुग्वेदे प्रसिद्धं तात्रिकं तु विश्वेश्वरीमित्यादिसप्तरात्यां पठितम् । देवीस्क्रमपि अहं रुद्रेश्विरित्याद्यष्ट्रचेमुग्वेदे प्रसिद्धं तान्त्रिकं तु नमो देव्ये इत्यादि सप्तरात्यां प्रसिद्धमिति विवेकः ॥ १७० ॥ यतः हेतोः तयोः पक्षयोः ॥ १७१ ॥ अथ नवार्णमन्त्रप्रकारान्तरमाह--

वेदादिरिति ॥ अत्रापि मूलमन्त्रद्वये देशाचारतो व्यवस्था ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

ष्.क्ट्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥७३॥ ॥ १७७॥ १७८॥ १७९॥ १८०॥ १८१॥ १८२॥ १८३॥ १८४॥ १८५॥ १८६॥ लिखेदिति॥ तत्र मध्यबीजे महालक्ष्मीं तदक्षिणे

अथैतत्स्तोत्रपाठे डामरकरपोक्तनवार्णमन्त्रसंपुटीकरणप्रयोगिविधिः ॥ तत्रादौ तदुद्धारः ॥ एँ बीजमादीन्दुसमानदीप्ति ही सूर्यतेजोद्यतिमद्द्वितीयम् ॥ क्वीं सूर्तवेश्वानरतुरुयरूपं तृतीयमानन्त्यसुखाय चिन्त्यम् ॥ १७७ ॥ चा शुद्धजाम्बूनदकान्ति त्यं युं पश्चमं रक्ततरं प्रकरुप्यम् ॥ डा षद्कसुप्रातिंहरं सुनीकं य सप्तमं कृष्णतरं रिपुन्तम् ॥ १७८ ॥ वि पाण्डुरं त्वष्टममादिसिद्धं च्चे धृत्रवर्णं नवमं विशालम् ॥ १७९ ॥ नाभिमात्रे जले स्थित्वा सहस्रं प्रजपेद्यदि ॥ जायते कवितः शिक्तरसुत्तेर्वन्यमोक्षणम् ॥ १८० ॥ अस्मिन्नवाक्षरे मन्त्रे महालक्ष्मीर्व्यविध्यता ॥ तस्मात्सुसिद्धः सर्वेषां सर्वदिश्च प्रदीपकः ॥ १८० मन्त्राणां प्रणवः शिरः ॥ शिरःपञ्चवसंयुक्तो मन्त्रः कामद्वघो भवेत् ॥ १८२ ॥ वश्याकर्षण होमेषु स्वाहान्तः सिद्धिदायकः ॥ वौषट्परुलवसंयुक्तो मन्त्रः प्रष्ट्यादिसाधकः ॥ १८३ ॥ दुंकारपरुलवोपेतो मारणे बाह्मणं विना ॥ यन्त्रभञ्चनकार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ १८४ ॥ वषडन्तः प्रकरुप्यस्तु ब्रह्मवाधाविनाशकः ॥ उच्चाटने तु संप्रोक्तो मन्त्रः फट्परुलविन्तः ॥ १८५ ॥ न्यासदीनो भवेन्मूको वृतः स्याच्छिरसा विना ॥ अपरुलवस्तु नग्नः स्यात्सव्यवीजस्तु किलितः ॥ १८६ ॥ देवच्छन्दिषिती यो मन्त्रः स तु शुजंगमः ॥ लिखेद्घद्दलं पद्मं कुङ्कमागरुचन्दनैः ॥ १८७ ॥ पद्माध्ये लिखेचचकं पद्कोणं चिण्डकामयम् ॥ षटकोणचक्रमध्यस्थमाधं बीजत्रयं न्यसेत् ॥ १८८ ॥ अथ शारदातिलके अष्टाक्षर मन्त्रविधानम् ॥ ततो दुर्गामवं वक्ष्ये दृष्टादृष्टफलप्रदम् ॥ माया त्रिकर्णा विन्द्वाद्यो भूयोऽसी सर्गवान् भवेत् ॥ १८९ ॥

महाकालीं वामे सरस्वतीं पूर्वादिषट्सु कोणेषु बीजान्यन्यानि विन्यसदिति पूजायन्त्रम् ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥

हुर्गा.

॥इशा

पञ्चान्तकः प्रतिष्ठावानमारुतो भौतिकासनः ॥ तारादिहृदयान्तोऽयं मन्त्रो वस्वक्षरात्मकः ॥ १९० ॥ ऋषीश्च नारदश्छन्दो गायत्रं देवता मनोः ॥ दुर्गा समीरिता सिद्धर्डरितौघनिवारिणी ॥ १९१ ॥ नमस्कारिवयुक्तेन मूलमन्त्रेण साधकैः ॥ द्वीमाद्यैः सह कुर्वीत षडङ्गानि यथाविघि ॥ १९२ ॥ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्वतुर्भिर्भुजैः शङ्कं चक्रधनुःशरांश्च द्धती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ॥ आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीक्वणन्तूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोछसत्कुण्डला ॥१९३॥ वसुलक्षं जपेन्मन्त्रं तिलेर्मधुर लोडितैः ॥ जुहुयाद्वा पायसेन सहस्रं विजितेन्द्रियः ॥१९४॥ पीठिमित्थं यजेत्सम्यङ् नवशक्तिसमन्वितम् ॥ प्रभा माया जया सुक्ष्मा विशुद्धा नन्दिनी पुनः ॥ १९५ ॥ सुप्रभा विजया सर्वसिद्धिदा नवशक्तयः ॥ आभिर्द्धस्वत्रयक्कीबरिहतैः पूजयेदिमाः ॥१९६॥ प्रण वानन्तरं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय च ॥ महासिंहाय वर्मास्त्रं नितः सिंहमनुर्मतः ॥१९७॥ द्यादासनमेतेन मूर्ति मूलेन करुपयेत् ॥ तस्यां संपूजयेन्मूर्तौ देवीमावाह्य मन्त्रवित् ॥ १९८ ॥ अङ्गावृति पुराऽभ्यर्च्य शक्तीः पत्रेषु पूजयेत् ॥ जया च विजयाकीर्तिप्रीतयः स्वप्रभा पुनः ॥ १९९ ॥ अद्धा मेघा श्रुतिः प्रोक्ता स्वनामाक्षरपूर्वकाः ॥ पत्राग्रेष्वर्चयेद् चायुघानि यथाक्रमम् ॥ २०० ॥ शङ्कं चकं गदां खङ्गं पाशांकुशशरान्धनुः ॥ स्रोकेश्वरास्ततः पूज्यास्तेषामस्त्राण्यनन्तरम् ॥२०१॥ इत्थं जपादिभिर्मन्त्री मन्त्रसिद्धेविधान वित् ॥ कुर्यात्त्रयोगानेतेन मनुना स्वमनीषितान् ॥ २०२ ॥ प्रतिष्ठाप्य विधानेन कलशान्नव शोभनान् ॥ रत्नहेमादिसंयुक्तान् पदेषु नवसु स्थितान् ॥ २०३ ॥ मध्ये संपूजयेदेवीमितरेषु जयादिकाः ॥ संपूज्य गन्धपुष्पाद्यैरभिषिश्चेन्नराधिपम् ॥ राजानो प्रन्ति वै शत्रूनसाधको विजयश्रियम् ॥ प्राप्नोति रोगी दीर्घायुः सर्वेन्याधिविवर्जितः विधिना लभते तनयं वरम् ॥ मन्त्रेणानेन संजप्तमाज्यं क्षुद्रग्रहापहम् ॥ २०६ ॥ गर्भिणीनां विशेषेण जप्तं भस्मादिकं तथा ॥ मध्ये तारे बीजमन्तस्थसाध्यं पत्रेष्वष्टौ मन्त्रवर्णान्विलिख्य ॥ त्रिष्टुब्बीजं वेष्टितं मातृवर्णैर्यन्त्रं दौर्गे भूपुरस्थं विद्ध्यात् ॥२०७॥ श्चद्रभूतमहारोगचोरसर्पनिवारणम् ॥ विजयश्रीप्रदं पुंसां गर्भिणीनां सुतप्रदम् ॥ २०८॥ अथ दुर्गेस्मृतामन्त्रप्रयोगः ॥ दुर्गे

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥७४॥

स्मृता इति मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः उिणक् छन्दः श्रीमहामाया देवता शाकंभरी शक्तिः दुर्गा बीजं श्रीं वायुस्तत्त्वं मम चतु सिद्धये जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः ॥ दुर्गे स्मृता० अंग्रुष्ठयोः हृदये ॥ स्वस्थैः स्मृता० तर्जन्योः शिरसे स्वाहा ॥ दूरके भयं विन्दति मामिम मध्यमयोः शिखाये वषट् ॥ पवमानवितज्ञहि अनामिकयोः कवचाय हुम् ॥ दारिद्रच० । नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ सर्वोपकार० करतलकरपृष्ठयोः अस्त्राय फट् ॥ अथ ध्यानम् ॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्र । शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भ्रुवनत्रयेऽपि ॥ २०९ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य योनिमुद्रया नत्वा ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ ऐ हीं क्लीं चामुण्डायै विश्वे॥ ॐ हीं हिरण्यप्राकारामार्झा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्मवर्णी तामिहोपह्मये श्रियम् ॥ ॐ ह्वी श्री क्ली दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥ यदन्ति यञ्च दूरके भयं विन्द्ति मामिह ॥ पव मानवितज्जिहि॥ दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽर्व्हचित्ता॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्वीं स्मितां हिरण्यप्राकारामाद्रीं ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्मवर्णी तामिहोपह्नये श्रियम् ॥ ॐ ह्वीं श्रीं ण्डायै विज्ञे ॥ महत्कार्ये लक्षमयुतं सहस्रमष्टोत्तरशतं जिपत्वा सकलकार्यसिद्धिर्भवति ॥ दशांशक्षीराज्यहवनम् ॥ दशांशतर्पण मार्जनसुवासिनीब्राह्मणभोजनानि ॥ नवार्णमन्त्रोद्धारः ॥ अथ मनुः ॥ नवार्णमन्त्रमालां चामुण्डां त्रिसुरात्मिकाम् ॥ द्वीं बीजह्रपां वन्दे देवीं श्रियं पराम् ॥ २१० ॥ अथ यन्त्रोद्धारः ॥ बिन्दुत्रिकोणषट्कोणं नवार्ण यन्त्रमुत्तमम् ॥ २११ ॥ वषट् वश्ये फट् डचाटे हुं स्तम्भे खे च मारणे ॥ स्वाहा तुष्ट्ये ठः ठः पुष्ट्ये नमः सर्वार्थक्षाधने ॥ इति प्रकारः गुरुमुखादवगन्तन्यः ॥ इति षट्प्र० ॥ २१२ ॥ अथ हुर्गानवार्णषट्प्रयोगविधानमाह प्रयोगतन्त्रे ॥ वषड्वश्ये फडुचाटे हुं द्वेषे खे च मारणे ॥ ठः स्तम्भे वौषडाकर्षे नमः संगत्तिहेतवे ॥ २१२ ॥ स्वाहा पुष्टिस्तथा तुष्टिरित्येते मन्त्रपछवाः ॥

उपा.स्त. ३

अ० १२

पूर्वे चाभिमुखं पश्चादाग्रेयाकर्षणं तथा ॥ २१४ ॥ दक्षिणं मारणे विद्यान्नेर्ऋत्यां स्तम्भने तथा ॥ पश्चिमे धनकाम्ये च वायन्यो चाटनं तथा ॥ २१५ ॥ उत्तरे चोयकर्माणि ईशान्ये ज्ञानसिद्धिदम् ॥ वौषडाकर्षणे चादौ मन्त्रान्ते साध्यनामकः ॥ २१६ ॥ तदन्ते वौषडन्ते च जपे विज्ञाय मन्त्रवित् ॥ मन्त्रादौ स्तम्भनं बीजं मन्त्रान्ते साध्यनाम च ॥ २१७ ॥ नामान्ते च पुनर्बीज मिति ज्ञात्वा मनुं जपेत् ॥ वषड्द्वन्द्रं तु वश्यादि न्यसेन्मन्त्रान्त एव हि ॥ २१८ ॥ साध्यनाम तदन्ते च वषडन्ते जपेत्सुधीः ॥ मारणे बीजमादौ च साध्यनाम ततः परम् ॥ २१९ ॥ तदन्ते च मनुं जप्त्वा नाम बीजं क्रमात्पठेत् ॥ मन्त्रान्ते बीजमुज्ञार्य तदन्ते साध्यनाम च ॥ २२० ॥ नामान्ते च पुनर्वींजं द्वन्द्रमुचाटनं स्मृतम् ॥ मन्वन्तरं तथा बीजं मन्त्रान्नामानि निर्दिशेत् ॥ ॥ २२१ ॥ स्वाहा नमः स्वधा चेति मन्त्रान्ते च पठेरसुधीः ॥ एवं ज्ञात्वा प्रयोगांश्च सर्वकर्माणि साधयेत् ॥ २२२ ॥ ॐकारः पुरुषः प्रोक्तः सर्वे मन्त्राश्च सुन्दिर ॥ तयोः संगमवेलायां वस्त्रमाच्छाद्य संजपेत् ॥ २२३ ॥ अस्य मंत्रस्य स्फुटेन दर्शयित तथा वस्य माणमाह वषट् ऐं हीं क्वीं चामुण्डाये विचे अमुकनामारूयं वषट् मे वश्यं कुरु २ स्वाहेति वश्यम् ॥ २२४ ॥ अथोचाटनम् ॥ ॐ ऐं हीं कीं चामुण्डाये विचे देवदत्तं फर् उचाटनं कुरू २ स्वाहेति ॥ २२५ ॥ अथ मोहनम् ॥ क्वीं कीं ॐ ऐं हीं कीं चामुण्डाये विचे देवदत्तं क्वीं क्वीं मोहनं कुरू २ क्वीं क्वीं स्वाहेति ॥२२६॥ अथ मारणम् ॥ ॐ ऐ द्वीं क्वीं चामुण्डायै विचे देवदत्तं रं रं खें खें मारय२ रं रं शीघं भस्मीकुरु २ स्वाहेति ॥२२७॥ अथ स्तम्भनम्॥ॐ ठं ठं ऐं हीं क्वीं चामुण्डायै विचे देवदत्तं हीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय २ हीं जिह्नां कीलय २ हीं बुिं विनाशय २ हीं ॐ ठं ठं स्वाहेति ॥ २२८ ॥ अथाकर्षणम् ॐ ऍ ह्रीं क्वीं चामुण्डायै विच्चे देव दुत्तं यं यं शीव्रमाकर्षय २ स्वाहेति ॥ २२९ ॥ चण्डीमन्त्रं दुर्शयति हरगौरीतन्त्रे ॥ नमोऽन्तः शान्तिके पुष्टौ प्रणिपाते च कीर्तितः ॥ वश्याकर्षणहोमेषु स्वाहान्तः सिद्धिदायकः ॥ २३० ॥ वषट्पछ्छवसंयुक्तो मन्त्रः पुष्टचादिसाधनः ॥ हुंकारपछ्छवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना ॥ २३१ ॥ यन्त्रभञ्जनकार्येषु सुघोर भयनाशने ॥ वौषडन्तः प्रकल्प्यस्तु ग्रह्बाधाविनाशकः ॥ २३२॥ उच्चाटनेषु

बु.क्क्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥७६॥

संप्रोक्तो मन्त्रः फट्ट्पछवान्वितः।। न्यासहीनो भवेन्यूको मृतः स्यान्छिरसा विना ॥ २३३ ॥ अपछवस्तु नग्नः स्यात्स्रप्तः स्या ॥ गुरुं विना वृथा मन्त्रमार्च्यजाप्यस्तु शून्यकः ॥ २३४ ॥ निर्वीजो दुष्टदत्तः स्यात्सोऽन्यबीजस्तु कीलितः ॥ देवच्छन्दर्षिद्दीनोऽयं समुच्चोक्तो भुजंगमः ॥ २३५ ॥ पार्वत्युवाच ॥ नीलकण्ठ विरूपाक्ष कृपयाऽऽशु वदाच्युत ॥ श्रथितादिप्रयोगांश्र्य वद्द मे करुणाकर ॥ २३६ ॥ ईश्वर उवाच ॥ साधु साधु महादेवि जय पन्नगकङ्कणे श्रथितादिप्रयोगाश्च मन्त्राणां सिद्धि कारणम् ॥ २३७ ॥ श्रथितं संपुटं श्रस्तं समस्तं च विद्भितम् ॥ तथा क्रान्तममाद्यन्तं गर्भस्थं सर्वतोद्धृतम् ॥२३८॥ तथा युक्ति विदर्भ च विदर्भत्रथितं मया ॥ इत्येकादशधा मन्त्री प्रयुक्ती सर्वसिद्धिदी ॥ २३९ ॥ साध्यनामार्णमेकैकं मन्त्राणं संप्रयोजयेत ॥ यथितं तत्त्वमाद्यन्तं वश्याकर्षणकं परम् ॥ २४० ॥ मन्त्रमादौ पठेत्सर्वे साध्यसंज्ञा तदन्तरम् ॥ विपरीतं तदस्यान्ते मन्त्रं संपुटितं स्मृतम् ॥ २४१ ॥ सर्वशिष्टकरं ज्ञेयं त्रैलोक्यैश्वर्यदायकम् ॥ अथ वर्णं तथाऽऽद्यन्ते मन्त्रं कुर्याद्विचक्षणः ॥ २४२ ॥ मध्ये साध्यं भवेदद्वारं अन्थमित्यभिधीयते ॥ अभिचारेषु सर्वेषु यो जपेन्मारणेषु च ॥२४३॥ रणमारणकृत्येषु साध्यसिद्धिकरं कृतौ वदेत्पूर्वे पश्चात्स्यान्मत्रमुद्धरेत् ॥ २४४ ॥ एतत्समस्तमीशानि शत्रूच्चाटनकारकम् ॥ द्वौ द्वौ मनत्राक्षरं मध्ये एकैकं साध्यवर्णकम् ॥ २६५ ॥ विदर्भितांकुशं प्रोक्तं दुष्ट्यं शिष्टरक्षणम् ॥ मन्त्राणां त्वरितं साध्यं समन्तात्तिष्ठते यदि ॥२४६॥ आक्रान्तमभिजानीयात्सत्यं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ सकृत्पूर्वं वद्देन्मन्त्रमन्ते देवं तथा पुनः ॥ २४७ ॥ मध्ये चैव भवत्यर्धमाद्यन्त मिति तद्द्रयोः ॥ अन्योऽन्यप्रीतियुक्तानां रामलक्ष्मणयोरिष ॥ २४८ ॥ सद्यो विद्वेषणं चैव जायते नात्र संशयः ॥ आदी चान्ते तथा मन्त्रं द्विवारं संप्रयोजयेव ॥ २४९ ॥ साध्यनाम सकुन्मध्ये गर्भस्थं चतुरूच्यते ॥ मारणोच्चाटनं वश्यं प्रयुक्तं तु मया नृणाम् ॥ ॥ २५०॥ गतिर्जिह्वा गर्भरिषुं कुर्यात्स्तम्भनसंमतम् ॥ त्रिधा मन्त्रं वदेतपूर्वे तथा चान्ते त्रिधा मनुम् ॥ २५१॥ सकृत्साध्यं भवेन्मृत्योस्तिद्विद्यात्सर्वतो रजः ॥ सर्वोपसर्गशमनं महामृत्युनिवारणम् ॥ ३५२ ॥ सर्वसौभाग्यजननं मृत्युं वाचाऽमृतप्रदम् ॥ आदौ

उपा.स्त. दुर्गा.

अ॰ १२८

मन्त्रं ततो नाम पुनर्मन्त्रं समुचरेत् ॥ २५३॥ वीरमन्त्रं त्रिधा कृत्वा भवेद्यक्तिविद्यभितम् ॥ सर्वविद्याहरं प्रोक्तं भूतापरमारमर्दनम् ॥ ॥ २५४ ॥ दुववद्वथितं च स्यात्तरमाद्दते प्रकल्पयेत् ॥ विदर्भव्रथितो नाम मन्त्रलक्षणमुत्तमम् ॥ २५६ ॥ सर्वकर्महरं प्रोक्तं सर्वैश्वर्यफलपदम् ॥ एवं श्रीयतं पुरा तान्त्रिक एव च ॥ २५७ ॥ एतत्प्रयोगकर्माणि कृत्वा सिद्धिमवाष्नुयात् ॥ तत्प्रयोगं विना देवि यः करोति च साधकः ॥ २६८ ॥ प्रयोगाणि च षद् कर्म कृत्वा सिद्धिः कलौ युगे ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन प्रथितानि च साधयेत् ॥ २५९ ॥ ज्ञातव्यं ग्रुक् मार्गेण सिद्धिर्भवति शाश्वती ॥ २६० ॥ अथ दुर्गामन्त्रः तन्त्रसारे ॥ अथ दुर्गामनुं वक्ष्ये दृष्टादृष्टफलप्रदृम् ॥ मायादिकर्णबिन्द्रा ढचो भूयौऽसौ सर्गवानभवेत् ॥ २६१ ॥ पञ्चानतकः प्रतिष्ठावानमारुतो भौतिकासनः ॥ तारादिहृदयानतोऽयं मन्त्रो वस्वक्षरात्मकः । २६२ ॥ अद्रिदेकारः कर्ण उकारः पञ्चान्तको गकारः प्रतिष्ठा आकारः मारुतो यकारः भोतिक ऐकारः ॥ तारो माया स्वबीजं च दुर्गायै हृद्यं ततः ॥ २६३ ॥ इति भट्टः ॥ अथ पूजाप्रयोगः ॥ प्रातःकृत्यादि पीठकृन्यासान्तं विधाय केसरेषु मध्ये पीढशक्तीन्यंसेत् ॥ तद्यथा ॥ आं प्रभाये ई मायाये ऊं जयाये एं सूक्ष्माये ऐं विशुद्धाये ओं निन्दन्ये औं सुप्रभाये अं विजयाये अः सर्वसिद्धिदायै नमः सर्वत्र तदुपरि वज्रनखदंष्ट्रायुघाय महासिंहासनाय हुंफट् नमः इति न्यसेत् ॥ तथा च निबन्धे ॥ प्रभा याया जया सूक्ष्मा विशुद्धा निद्नी पुन ॥ सुप्रभा विजया सर्व सिद्धिदा नवशक्तयः॥ ततः ऋष्यादिन्यासः॥ ततः शिरिस नारद ऋषये नमः ॥ मुखे गायत्रीछन्दमे नमः ॥ हृदि दुर्गादेवतायै नमः ॥ तथा च निबन्धे ॥ ऋषिः स्यान्नारदश्छन्दो देवता यनोः ॥ दुर्गा समीरिता सद्भिदुरितापन्निवारिणीति ॥ २६४ ॥ ततः कराङ्गन्यासौ ॥ ह्रां ॐ ह्रों दुं दुर्गायै नमः ॥ ह्वीं ॐ ह्वीं दुं दुर्गीयै स्वाहा ॥ हूं ॐ ह्रीं दुं दुर्गाये अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ह्रीं ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ह्रः ॐ ह्रों दुं

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥७६॥

एवं हृदयादिषु ॥ ह्रां ॐ ह्रीं ढुं दुर्गीये हृदयाय नम इत्यादि ॥ तथा च निबन्धे ॥ नमस्कारविमुक्तेन मूलमन्त्रेण साधकः ॥ ह्रामाद्येः सह कुर्वीत षडङ्गानि यथाविधि ॥ २६५ ॥ आगमकल्पहुमे ॥ नमःस्थाने च दीर्घाढचं शक्तिबीजं नियोज येत् ॥ षडंगानि विधेयानि मूलमन्त्रेण साधकेः ॥ २६६ ॥ इति वचनात् ॥ ॐ ह्रीं ढुं दुर्गीये ह्रां अंग्रष्टाभ्यां नमः इत्याद्यपि वदन्ति ॥ ततो ध्यानम् ॥ सिंहस्था शिशशेखरा मरकतप्रख्येश्वतुर्भिर्भुजैः शङ्कं चक्रधनुःशरांश्व द्धती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता वि आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीकणन्तूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोछसत्कुण्डला ॥ १॥ एवं ध्यात्वामानसैःसंपृज्यशिङ्क स्थायनं कुर्यात् ॥ ततः पीठपूजां कृत्वा केसरेषु मध्ये च आं प्रभाय ई मायाय ऊं जयाये एं सूक्ष्माये एं विशुद्धाये ओं निन्दन्ये औं सुप्रभाये अ विजयाये अः सर्वसिद्धिप्रदाये तदुपरि वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुंफट् नम इति पूजयेत् ॥ तथा च निबन्धे ॥ आभिर्ह्रस्वत्रयक्लीबरहितैः पूजयेदिमाः ॥ प्रणवानन्तरं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय च ॥ २६७ ॥ महासिंहाय वर्मास्र मनुर्मतः ॥ दद्यादासनमेतेन मूर्ति मूलेन करुपयेत् ॥२६८॥ ततः पुनध्यतिवाऽऽवाहनादिपञ्चपुष्पाञ्चलिदानपर्यन्तं विधायावरणपूजा मारभेत् ॥ तद्यथा ॥ अग्निनिर्ऋतिवार्यीशानकोणेषु मध्ये दिक्षु च ॥ ह्रां ॐ ह्रीं दुं दुर्गाये हृदयाय नमः इत्यादिना पूजयेत् ॥ ततः पत्रेषु पूर्वादिषु जं जयायै विं विजयायै किं कीत्यें पं प्रीत्ये पं प्रभाये हां झुद्धाये मं मेघाये श श्रुत्ये पत्राग्रेषु ॐ शंखाय नमः॥ एवं चकाय गदायै खड़ाय अङुशाय चापाय शराय तद्राह्य इंद्रादीन् वजादिश्च पूजयेत् ॥ ततो धूपादिविसर्जनान्तं कर्म समाप येत् ॥ अस्या बलिमन्त्रस्तु एहि एहि पदद्वन्द्वम् ॥ मदीयं च बलि देवि ललाय कपद्वयम् ॥ साधयद्वितयं ब्र्यात् खाद्य द्वितयं पुनः॥ सर्वसिद्धिप्रदं देवी ततः स्वाहापदं भवेत् ॥ बलिदानस्य मन्त्रोऽयं मन्त्रिण्या परिकीर्तितः ॥ अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः तथा च ॥ वसुलक्षं जपेन्मन्त्रं तिलैर्मधुरलोडितैः ॥ पयोज्त्रमासां जुहुयात्तत्सहस्रं जितेन्द्रियः ॥ तेन वाचनिकोऽष्टसहस्रहोमः ॥ २६९ ॥ अथ सप्ताक्षरः श्रीदुर्गामन्त्रः ॥ ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ॥ अस्य नारद् ऋषिः। गायत्री छन्दः। दुर्गा देवता। दुं बीजम्। गां शक्तिः। ह्रीं कीलकम्।

उपा-स्ता- इ

अभीष्टार्थे जपे विनियोगः॥ ॐ ह्वीं दुर्गाये ह्वां ह० ॐ ह्वीं दु० ह्वीं शि० ॐ ह्वीं दु० हूं शि० ॐ ह्वीं दु० हें क० ॐ ह्वीं दु० ह्वीं नेत्र० ॐ ह्रीं दु॰ ह्रः अस्त्राय फर् ॥ ॐद्वीं दुर्गायै ह्रां ह्रीं इत्यादि दुं बीजेन सह दुंकल्पनेति द्वितीयम् ॥२७०॥ सिंहस्था शशिशेखरा मरकत प्रक्येश्रतिर्भुजेः शङ्कं चक्रधनुःशगंश्र द्धती नेत्रैश्चिभिः शोभिता ॥ आमुक्ताङ्गद्हारकङ्कणलसत्काञ्चीकणन्त्रपुरा दुर्गा दुर्गविना शिनी भवतु नो रत्नोछसत्कुण्डला ॥२७१॥ घृताक्तेन पायसेन त्रिमधुराक्तैस्तिलर्दशांशहोमः ॥२७२॥ अथ दुर्गायन्त्रोद्धारः॥ दुर्गा यन्त्रं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व हरवछ्नभे त्रिकोणं विन्यसेत्पूर्व नवकोणसमन्वितम् ॥ २७३ ॥ त्रैबिम्बसहितं सर्वमष्टपत्र समन्वितम् ॥ त्रिरेखासहितं वजनुपुरद्वयसंयुतम् ॥ २७४ ॥ समीकृत्य यथोक्तेन विलिखेद्विधिनाऽमुना ॥ ननाम्नसंयुतं लेख्यं चकं मन्त्रविभूषि तम् ॥ २७५ ॥ तत्र तां पूजयेदेवीं मूलप्रकृतिरूपिणीम् ॥ अथ दुर्गाध्यानम् ॥ सिंहस्कन्धसमारूढां नानालङ्कारभूषिताम् ॥२७६॥ चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥ रक्तवस्त्रपरीधानां बालाकेंसदृशीतनूम् ॥ २७७ ॥ नारदाद्येमुनिगणैः सेवितां भवगेहिनीम् ॥ त्रिवलीवलयोपेतनाभिनालसुवेशिनीम् ॥ २७८ ॥ रत्नद्वीपे महाद्वीपेसिंहासनसमन्विते ॥ प्रपुष्ठकमलाह्रद्धां ध्यायेतां भवगेहि नीन ॥ २७९ ॥ अथ तन्त्रान्तरोक्तदुर्गामन्त्रः ॥ ॐ रात्रीं प्रपद्ये प्रनर्भू मयोभ्रं कन्यां शिखण्डिनीं पाशहस्तां युवतीं कुमारिणीम् ॥ ॥ २८० ॥ अथ दुर्गानवार्णमहामन्त्रः ॥ ॐअस्य श्रीनवार्णमहामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ॥ महाकाली महालक्ष्मी महासर स्वती देवताः ॥ गायज्युिषणगनुषुष्छन्दासि ॥ नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयः ॥ रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामयीं बीजानि ॥ अग्निवायुस्या स्तत्त्वानि ॥ जपपूजादौ विनियोगः ॥ अथ बीजन्यासः ॥ ॐ क्वींवामनेत्रे ॥ ॐ चां दक्षिकर्णे ॥ ॐ मुं वामकर्णे ॥ ॐ डां नासिका याम् ॐ यें मुखे ॥ ॐ विं लिङ्गे॥ॐचें पादयोः ॥२८१॥ अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा करकमलधृतेष्टाभीतीयुग्माम्बुजा च ॥ मणिमुकुटविचित्राऽलंकृताऽऽकल्पजातैर्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रिये नः ॥ २८२ ॥ इन्दुप्रख्यामिन्दुखण्डार्धमौलिं शङ्काभी ष्टाभीतिहस्तां त्रिनेत्राम् ॥ हेमाब्जस्थां पीतवस्तां प्रसनां देवीं दुर्गा दिव्यरूपां नमामि ॥ २८३ ॥ पञ्चाशद्वर्णभेदैिवहितवद्नदोः

ष्ट.क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥७७॥

पादहृत्कुक्षिवक्षोदेशां भारवत्कपद्किलितशिकिलामिन्दुकुन्दावदाताम् ॥ अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां तीक्ष्णपद्मासनस्था च्छस्तनजघनभरा भारतीं तां नमामि ॥ २८४ ॥ इति ध्यात्वा ॥ अथ मन्त्रं जपेत् ॥ ए हीं नवात्मिके नवचिण्ड महामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभविद्राविणि महिषासुरमार्दिनि धूम्रलोचनसंहन्त्रि निशुम्भविध्वंसिनि देवि रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूतप्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देवि मां ॐ एँ क्वीं चामुण्डाये विचे ॥ २८५ ॥ अथ संपुटितपाठहोमेऽपि प्रयोगसंब्रहे ॥ कदाचित्संपुटैर्युरक्तं पठेत्सप्तशतीस्तवम् ॥ ससंपुटं पठेद्धोमे हुनेत्सप्तशताहुतीः ॥ २८६ ॥ अथैकस्मि पाठकरणशक्तौ पा १ ठो २८यं १ द्वि ४ प्र २ का १ रः २ एवं क्रमेण सप्तमिदिंनैरेकावृत्तिः त्रिमिर्दिनैरेकः पाठ इति केरलाः कचित् ॥ २८७॥ अथ सप्तशत्या शापोद्धारो त्कीलने कात्यायनीतन्त्रोक्ते ॥ त्रयोदशाध्यायं पिठ त्वा प्रथमं पठेत् ॥ ततो द्वादशद्वितीयौ तत एकादशतृतीयौ चतुर्थदशमौ पश्चमनवमौ षष्ठाष्टमौ सप्तमं द्विवारमिति पाठेन शापो द्धारः ॥ २८८ ॥ प्रथमं मध्यम चरित्रं पिटत्वा ततः प्रथमतृतीयौ पटेदित्युत्कीलनिमिति मूलं मृग्यम् ॥ कीलकग्रन्थे तु ॥ अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां कृष्णायां वा समाहितः ॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथेषा प्रसीदिति ॥ २८९ ॥ इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितमिति सप्तशतीस्तोत्रे शिवशापनदुद्धाराबुक्तौ ॥ शत्या मानसपाठनिषेधः ॥ प्रणवं पूर्वमुज्ञार्य स्तोत्रं वा सहितां पठेत् ॥ अन्ते च प्रणवं दद्यादित्युवाचादिपूरुषः ॥ २९१ ॥ न मानसं पटेत्स्तोत्रं वाचिकं तु प्रशस्यते ॥ यत्तु कीलके ॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सपत्तिक्चकै।रित तदत्युचैःपाठनिषेधकं त्वरानिषेधकं च ॥ २९२ ॥ अथ प्रस्तकं विना पाठनिर्णयः ॥ पुस्तके वाचनं शस्तं सहस्राद्धिकं यदि ॥ ततो न्यूनस्य तु भवेद

डण.स्त. इ दुनो. अ० १२८

neell

वाचनं पुस्तकं विना ॥२९३॥ विनाऽपीत्यर्थः ॥ ऋषिच्छन्दोऽङ्गं विन्यस्य पठेत्स्तोत्रं समाहितः ॥ स्तोत्रेण दृश्यते यत्र प्रणवन्यास माचरेत् ॥ २९४ ॥ भीष्मपर्वणि या गीता सा प्रशस्ता कलौ युगे ॥ विष्णोः सहस्रनामारूयं स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥ २९५ ॥ गजेन्द्रमोक्षणं चव तथा कारुण्यकस्तवः ॥ नारसिंहं तथा स्तोत्रं स्तोत्रं श्रीरामसंज्ञकम् ॥ २९६ ॥ देन्याः सप्तशतीस्तोत्रं तथा नामसहस्रकम् ॥ श्लोकाष्टकं नैलकण्ठं शैवं नामसहस्रकम् ॥ २९७ ॥ त्रिपुरायाः प्रसादारुयं सूर्यस्य स्तवराजकम् ॥ पैत्रो इचि स्तवो यश्च इन्द्राक्षीस्तोत्रमेव च ॥ २९८ ॥ वैष्णवं च महालक्ष्म्याः स्तोत्रमिन्द्रेण भाषितम् ॥ भार्गवाख्येन रामेण शप्तान्यन्यानि कारणात् ॥ २९९ ॥ अनेन गीतासप्तशत्यादीनां शापाभावो लभ्यते ॥ ३०० ॥ शुद्धनाचलचित्तेन पठितन्यं प्रयत्नतः ॥ न स्वयं लिखितं स्तोत्रं नाब्राह्मणलिपिं पठेत् ॥ ३०३ ॥ न च स्वयंकृतं स्तोत्रं तथाऽन्येन च यत्कृतम् ॥ यतः कलौ प्रशंसन्ति ऋषिभ र्भाषितं तु यत् ॥३०२॥ रुद्रयामले चरितत्रयरहस्यत्रयनिर्णयः ॥ प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभघातनम् ॥ द्वितीयं विद्धि चरितं महि षासुरघातनम् ॥ ३०३ ॥ उत्तरं चरितं ज्ञेयं ज्ञुम्भदैत्यवधान्वितम् ॥ चरितानि जपेत्रीणि सरहस्यान्यतन्द्रितः ॥ ३०४ ॥ रहस्यं यन्त्रान्त्याध्यायद्वयं त्रयं वा ॥ चरितं यध्यमं वाऽपि जपेद्वा चण्डिकामयम् ॥ ३०५ ॥ नमो देग्या इमं मन्त्रं जपेद्वा कालिका प्रियम् ॥ इति मार्कण्डेयपुराणखिलत्वेन प्रसिद्धे यन्थे तुक्तम् ॥ ३०६ ॥ नित्यचण्डचादिजाप्यस्य विधानं ते वदाम्यहम् ॥ <u>ञ</u>ुक्क भूतामवष्टभ्य मायां प्रतिदिनं जपेत् ॥ ३०७ ॥ सकृद्रहस्यसंयुक्तं चिण्डकाचरितत्रयम् ॥ रहस्यमन्त्रस्य स्तोत्रस्य अकितमुक्ति प्रदत्वप्रतिपादकमन्त्यमध्यायद्वयम् ॥ तद्रर्थस्य देवीमात्रवेद्यत्वाद्वहस्यत्वम् ॥ ३०८ ॥ दशांशहोमसहितं सोच्यते नित्यचण्डिका ॥ महान्याधिविनाशिनी ॥ इति कचित्पठचते ॥ ३०९ ॥ अथ प्रत्यध्याये प्रतिमन्त्रे वा विशेषस्चनामाह नागोजीभर्द्वाये ॥ केचित्तु ॥ मन्त्रं पिठत्वा तत्तद्ध्यायदेवताये स्वाहेत्येवं तत्तद्ध्यायहोमे ॥ तत्तद्ध्यायदेवतां तर्पयामि इति तर्पणे ॥ तत्तद्ध्यायदेवताये नम इति पूजने इत्याहुः ॥ परार्थप्रयोगे तु ॥ सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ इति

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥७८॥ प्रतिश्लोकं प्रत्यध्यायं वा पठेत् ॥ इदं सर्वत्र परार्थप्रयोगे बोध्यम् ॥ ३१० ॥ अथ तर्पणविधिः ॥ अयं तर्पणप्रयोगः दीपदान प्रसंगेऽपि उक्तः होमदृशांशतर्पणेऽपि विज्ञेय इति ॥ त्रयोदशाध्यायदेवतानिमित्तं त्रयोदश पात्राणि दुग्धेनापूर्य तत्पात्रेषु देवता मावाह्याद्यन्तयोः पुष्पाञ्जलि दत्त्वा प्रतिश्लोकं नाम प्रतिमन्त्रं प्रथमाध्यायदेवतां तर्पयामीति प्रयोगेण तर्पयेत् तथा होमे त्रयोदशस्विष्ठ कमात्तत्तद्ध्यायदेवता आवाह्य संपूज्य प्रतिमन्त्रमीं प्रथमाध्यायदेवताये नमः स्वाहेति मन्त्रेण पायसेन दध्यायदेवताद्रव्येण् वा जुहुयात् ॥ ३११ ॥ अथ प्रत्यध्यायान्ते महाहुतिमन्त्राः ॥ ॐ ॥ नमः प्रकृत्यै भद्राये नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ३१२ ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भववीजा घिष्ठाज्ये महाकाल्ये महाद्वति समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ ३१३॥ इत्यनेन कपित्थफलं नागवछीदलद्वयसहितं कुङ्कुमा क्षतपुष्पैरभ्यर्चितं सघृतं होमयेत् इति ॥ ३१४ ॥ एवं द्वितीयाध्यायान्ते ॥ नमो० १ साङ्गाये लक्ष्मीबीजाधिष्ठ। इये महा लक्ष्म्ये महाद्वति । २ इत्यनेन निरकेलफलं प्रथमाध्यायवत् ॥ ३१५ ॥ ततस्तृतीयाध्यायान्ते नमो । विंशतिवर्णातिमकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं० २ इत्यनेन मधुपुष्पाणि प्रथमाध्यायवत् ॥ ३१६ ॥ ततश्चतुर्थाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै॰ त्रिवर्णात्मिकायै शक्तिलक्ष्म्यै महाहुति २ इत्यनेन पूर्गीफलं प्रथमाध्यायवत् ॥ ३१७ ॥ ततः पञ्चमाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै विष्णुमायादित्रयोविंशतिदेवतायै महाहुति २ इत्यनेन बीजपूरफलं पूर्ववत् ॥ ३१८ ॥ ततः षष्टाध्यायान्ते नमो । धूम्राक्ष्य महाहुतिं इत्यनेन नारिङ्गफ्लं पूर्ववत् ॥ ३१९ ॥ ततः सप्तमाध्यायान्ते नमो १ साङ्गायै० कर्प्रबीजाधिष्ठाज्ये काळीचाषुण्डाये देव्ये महाहुति । ३ इत्यनेन कूष्माण्डफलखण्डं पूर्ववत् ॥ ३२० ॥ ततोऽहमान्ते नमो० १ अष्टमातृकासिहतायै रक्ताक्ष्यै देन्यै महाहुतिं० २ इत्यनेनेक्षुदण्डखण्ड पूर्ववत् ॥ ३२१ ॥ ततो नवमान्ते नमो० १ साङ्गाये वाग्भवबीजाधिष्ठाज्ये महाकाल्ये महाद्वति । ३ इत्यनेन पुनः कूष्माण्डखण्डमिश्चखण्डं वा पूर्ववत् ॥३२२॥ ततो दशमान्ते

डपा.स्त. व

नमो देन्यै॰ १ साङ्गायै॰ सिंहवाहनायै त्रिशूलपाशचारिण्ये महाहुतिं॰ २ इत्यनेन मातुलिङ्गफल ततः एकादशाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै० सर्वनारायण्यै महाहुति० इत्यनेन दाडिमफलं पूर्ववत् ॥ ३२४ ॥ ततो द्वादशान्ते नमो० १ साङ्गायै० बालात्रिपुरसुन्दर्ये महाहुति० २ इत्यनेन बिल्वफलं पूर्ववत् ॥ ३२५॥ ततस्त्रयोदशाध्यायान्ते नमो० १ साङ्गायै॰ श्रीत्रिपुरसुन्दर्यं श्रीविद्याये महाहुतिं॰ इत्यनेन कदलीफलं प्रथमाध्यायोक्तवद्धोमयेदिति ॥ ३२६ ॥ अथ पुनः शापो त्कीलनविषये निर्णयः ॥ आदौ प्राणं तथा शापमुत्कीलं च जपेत्पुनः ॥ पश्चात्षोडश संस्कारान्सप्तशत्याश्च सिध्यति ॥ ३२७ कीलकं मध्यमादी च पश्चात्कवचमेव च ॥ प्रथमं चरितं जप्तवा ततश्चरितमुत्तमम् ॥ ३२८ ॥ ततः परं चार्गलां च कीलकं च ततः परम् ॥ एवमुत्कीलनं प्रोक्तं पुरातनमहर्षिभिः ॥ ३२९ ॥ प्रयोगं च पठित्वा तु चानुलोमं जपेत्ततः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ३३० ॥ अथ प्रकारान्तरेण रात्रिसूक्तविचारः सामविधिब्राह्मणे ॥ अथ यः कामयते पुनर्न प्रत्याजायेय मित्यपुनर्भवमिषकृत्य तदनुसंघेयोऽस्या मन्त्र उक्तः ॥ रात्रिं प्रपद्ये पुनर्भुं मयोभूं कन्यां शिखण्डिनीं पाशहस्तां युवतीं कुमारिर्ण मादित्यः । श्रीचक्षुषे वाऽन्तः प्राणाय सोमौ गन्धायापः स्नेहाय मनोऽनुज्ञाय पृथिन्यै शरीरमिति ॥ अस्य रात्रौ जपमात्रात्सिद्धिः। अस्य फलं मरणकालज्ञानं परमफलं तु मोक्ष इति तत्रैवोक्तम् । अयं च देवीविषयो मन्त्रः ॥ कन्यकुमारि धीमहि इति तद्गाय इयर्थस्य कन्याकुमारिणीमित्यत्र प्रत्यभिज्ञानात् रात्रिं तद्रूपाम् ॥ अस्यास्तन्तस्तमोद्वारा निशादिवसनाशिनीति देवीमुपकम्य हरिवं ॥ पुनर्भः असुरवधार्थे नानावतारपरित्रहात् ॥ अत एव मयोभूः प्राणिनां सुखदात्री कन्या अजातपुंस्पर्शरतिधृष्या चाति मुन्द्रीति शैवोक्तेः ॥ शिखण्डिनी मयूरपिच्छभूषणा मयूरकलापध्वजा च ॥ भूषणैस्तु मयूराणामङ्गिदीर्घेश्च भास्वरा ॥ ध्वजेन शिखि बहाणामुच्छितेन समावृता॥इति हरिवंशोक्तेः॥ पाशहस्ता असुरबन्धनार्थे तथा युवतिः नित्यं बाल्यवाधिकयावस्थारहिता कंसमोहना वतारे क्षणं शैशवाभिनयेऽपि तदानीमेव यौवनाविष्करणोक्तेः ॥ कुमारिणी कुत्सितान् मार्यतीति तच्छीला एवंभूताया राज्य

कृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥७९॥

भिमानिदेवतायाः प्रभावादादित्यश्चश्च चक्ष्र रक्षितुं यत्नवान् भवतु इति क्रमेणार्थः ॥ यनस्तद्धिष्ठात्री देवता अनुज्ञाय अनु ज्ञानं ज्ञानमात्रं रक्षितुं भवतु ॥ पृथिव्ये शरीरमित्यस्य विभिवतिविपरिणामेन पृथिवी शरीरायेत्यर्थः ॥ एवं राज्ञी ऋग्विधाने स्पष्टम् ॥ समसञ्जाबलाद्व हाकृतप्रथमाध्यायान्तर्गतस्तुतिपाठोऽप्येतत्फलक दिकदुर्गाराधनम् ॥ शान्तिसारे शौनकः ॥ जातवेदस इत्येतत्सूक्तं सर्वार्थसाधकम् ॥ आयुरारोग्यसुखदं यद्यद्वाञ्छति वा विप्रस्तत्तदाप्नोत्यसंशयम् ॥ सूक्तेनानेन जुहुयाच्छुक्काम्बरधरः शुचिः ॥ ३३३ ॥ जपेद्वा नियतो मन्त्रं हविष्याशी जितेन्द्रियः ॥ प्राप्त्रधनार्थी च प्रत्येकं लक्षमभ्यसेत् ॥ ३३४ ॥ सर्वेषामेव देवानां विशिष्टं देवतालयम् ॥ तस्माद् देवालये कुर्वन्विशिष्टं फलमश्वते ॥ ३३५ ॥ ततः प्राची प्रशस्ता दिगाभयी च विशेषतः ॥ प्रतीची वायवीया ३३६ ॥ वश्यान्विताभिचारे च विजयोऽपि विशिष्यते ॥ कुण्डे वा स्थण्डिले वाऽपि होसं कुर्याद्तन्द्रितः ॥३३७॥ स्थिण्डिलाचाज्यभागान्तं यज्ञतन्त्रं प्रकल्पयेत् ॥ ३३८ ॥ महाद्विजः दुर्गामावाहयेरकुम्भे सायुधाष्ट्रमहायुजाम्।। ३३९ ॥ नीलोत्पलदलश्यामां किरीटायैर्विभूषिताम्।। ततश्रा तस्मिस्तीर्थोदकान्विते ॥ ३४० ॥ आवाहनेन इविषा समिद्धिश्च पृथकपृथक् ॥ मन्त्रेणानेन ॥ ततः स्विष्टकृतं चैव होमशेषं समापयेत् ॥ उत्थाप्य च जपेन्मन्त्रमेतं श्रद्धासमन्वितः ॥ ३४२ ॥ वरदा त्वत्प्रसादाच पार्वति ॥ ३४३ ॥ अथ सप्तशतीस्तोत्रान्तर्गतमन्त्राणां कामनापरत्वेन लिख्यते ॥ नागोजीभद्वव्याख्यायां प्रतिश्चोकमाद्यन्तयोः प्रणवेन जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥३४४॥ अत्रे सर्वत्र श्चोकपदं सप्रणवमनुलोमन्याहतित्रयमादौ अन्ते तु विलोमं तिहत्येवं प्रतिश्चोकं कृत्वा महास्तोत्रं पठेत् ॥ सिद्धिः ॥ ३४५ ॥ प्रणवं व्याहितत्रयं च श्लोकादी पिठत्वा जपेनमन्त्रसिद्धिः ॥ ३४६ ॥ सप्तव्याहितसंपुटितं ॥ श्लोकं कृत्वा

डपा.स्त. ३ हुर्गा. अ० ११८

जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥ ३४७ ॥ सप्तन्याहितपूर्वकं श्लोकं कृत्वा महास्तोत्रं जपेन्मन्त्रसिद्धिः ॥ ३४८ ॥ सप्तन्याहितकां गायत्रीमादा वन्ते वा कृत्वा श्लोकं जपेत् ॥ तदा महाफलम् ॥ ३४९ ॥ प्रतिश्लोकं च्याहतित्रययुतां गायत्रीं जपेत् तदेव ॥ ३५० ॥ प्रति श्लोकमादावन्ते जातवेदस इति ऋचं जपेत्।। सर्वकामसिद्धिः ॥ ३५१ ॥ अपमृत्युवारणाय शताक्षरत्र्यम्बकमन्त्रेण संपुटीकृत्य मन्त्रं पठेत्।। रोगरिक्षयमृत्यूनमूलनमभीप्सितो जपः शताक्षरो मन्त्रः।। सर्वापद्विनिवारणः शताक्षरः ॥ ३५२ ॥ प्रतिश्लोकं शरणागतदीनार्त इति श्लोकं पठेत् सर्वकार्यसिद्धः ॥ प्रतिश्लोकं करोतु सा नः अभेत्यर्ध पठेत् सर्वकामाप्तिः ॥३५३॥ स्वाभीष्टवरप्राप्तयै एवं देव्या वरं लब्ध्वेतिश्लोकं प्रतिश्लोकं पठेत् ॥३५४॥ सर्वापितवारणाय प्रति श्लोकं दुर्गे स्मृतेति पठेत् ॥ अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ॥ ३५५ ॥ सर्वाबाधा इत्यस्य लक्षजपे श्लोकोक्तं फलम् ॥ ३५६ ॥ इत्थं यदा यदेति श्लोकस्य लक्षजपे महामारीशान्तिः ॥ ३५७ ॥ ततो वन्ने नृपो राज्यमिति मन्त्रस्य लक्षजपे पुनः स्वाराज्यप्राप्तिः ॥ ३५८॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसीत्यनेन सदीपबिखदानघण्टाबन्धनेन बालग्रह शान्तिः ॥ ३५९ ॥ आद्यावृत्तिमनुलोमेन पिठत्वा ततो विपरीतक्रमेण द्वितीयां कृत्वा धुनरनुलोमेनेत्येवमावृत्तिमनुलोमेनेत्येवं दशाध्यायं पठित्वा ततो विपरीतनमावृत्तित्रये उक्तेषु प्रकारेषु शीघ्रं कार्यसिद्धः ॥ ३६० ॥ पुनः सर्वापत्तिनिवारणाय त्यर्धे ततो यद्नित यञ्च दूरके इत्युच तद्नते दारिह्यदुः खेरयर्धम् एवं कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः ॥ ३६१ ॥ कांसोरमीत्यूचं प्रतिश्लोकं पठेछक्ष्मीप्राप्तिः ॥ ३६२ ॥ प्रतिश्लोकमनृणा अस्मिन्नित्यूचं पठेत् ऋणपरिहारः ॥ ३६३ ॥ मारणार्थ मेवमुक्तवा समुत्यस्येति प्रतिश्लोकं पठेत्।। मारणोकावृत्तिभिः फलसिद्धिः।। ३६४।। ज्ञानिनामपि चेतांसीति श्लोकजप मात्रेण सद्यो मोहनमित्यनुभवसिद्धम् ॥ प्रतिमन्त्रं तत्तन्छ्लोकपाठे त्ववश्यश्च ॥३६५॥ रोगानशेषानिति श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे सकलरोगनाशः तन्मन्त्रजपेऽपि सः ॥३६६॥ इत्युक्त्वा सा तदा देवी गम्भीरेति प्रतिश्लोकं पाठे पृथकपृथक् जपे वा विद्याप्राप्तिः।

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥८०॥

वाग्वैकृतनाशन्य ॥ ३६७ ॥ भगवत्या कृतं सर्वमित्यादिर्द्दार्शोत्तरशताक्षरो मन्त्रः सर्वकामदः सर्वापन्निवारणश्च ॥ ३६८ ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षायुतसहस्रशतान्यतमे जपे प्रतिश्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च ॥ ३६९ ॥ एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाये केवलमेव वा नमस्कारकरणे अतिशीन्नं सिद्धिः ॥ ३७० ॥ प्रतिश्लाकं कीं कामबीनसंपुटितस्येक चत्वारिशद्दिनं त्रिरावृत्तौ पुत्रप्राप्तिः ॥ ३७१ ॥ एकविशतिद्विपर्यन्तमुक्तरीत्या प्रत्यहं दशावृत्त्या वशीकर्णम् ॥ ३७२ ॥ ही मायाबीजपुटितस्य फट्पञ्चवसहितस्य सप्तिदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्तौ उच्चाटनसिद्धिः ॥ ३७३ ॥ तादृशस्यैव दिनचतुष्ट्यमेका दशावृत्तौ सर्वोपद्रवनाशः ॥ ३७४ ॥ एकोनपञ्चाशदिनपर्यन्तं प्रतिश्लोकं श्रीबीजसंपुटितस्य पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ ३७५ । प्रतिश्लोकमैंबीजसंपुटितस्य शतावृत्त्या विद्याप्राप्तिः ॥३७६॥ अत्र कामनाभेदेन ध्यानभेद उत्तः ॥ वश्ये रक्ततरं ध्यानम् ॥३७७॥ पौष्टिके कर्बुरम् ॥ ३७८ ॥ उच्चाटने घौष्रम् ॥ ३७९ ॥ मारणे कृष्णम् ॥ ३८० ॥ सन्तानेच्छायां नीलोतपलश्यामम् ॥ ३८३ ॥ सर्वकामनायां रक्ताकारध्यानम् ॥ ३८२ ॥ वश्ये तु विशेषः ॥ ॐ रक्तचामुण्डे तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॥ अनेन प्रत्य ध्यायमाद्यन्तयोः पूजा ॥ सर्वान्ते अयुतं जपः ॥ अयुतमन्त्रश्च ॥ होमयेत्कटुतैलेन रक्तचन्द्नराजिकाः ॥ सहस्राह्वतिमात्रेण राजानं वशमानयेत् ॥ ३८३ ॥ मधुनाऽशोकपुष्पेश्च रात्रौ हुत्वा तु पूर्ववत् ॥ चक्रवर्ती भवेद्वश्यश्चण्डीमन्त्रप्रभावतः ॥ अन्ते शतं ब्राह्मणाः कुमार्यश्च भोजनीयाः ॥ ३८४ ॥ अपरश्च नवार्णस्य बिल्वमूले मासं जपः ॥ बिल्वदलैर्मधुरत्रययुतैर्मासहोमः दशांशेन क्षीर संयुतेः कमलैहोंमो वा लक्ष्मीप्राप्तिफलोऽयं प्रयोगः ॥ ईदृशे स्थले नमो देव्या इत्यादिमन्त्रेरेव दशांशेन होमः कार्य इति संप्रदायः ॥ ॥ ३८५ ॥ किंच रात्रिसूक्तं जपेपादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ अन्ते च देवीसूक्तानि रहस्यं तदनन्तरम् ॥ ३८६ ॥ चरिते चरिते राजन् जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ॥ शतमादौ शतं चान्ते विधानेन तु सुन्नत् ॥ ३८७ ॥ प्रणवं पूर्वसुचार्य बीजतत्त्रं समुच्चरेत् ॥ ततः श्लोकं पिंठत्वा तु श्लोकान्ते पूर्ववज्जपेत् ॥ ३८८ ॥ प्रतिलोमं सर्वत्रापि तद्यथा ॥ ॐ हसौं नमः मः न हसौं ॐ ॥

उपा.स्त.

इति प्रतिरक्तद्दन्तिकाबीजम् इत्यर्थः ॥ अनन्तभद्रं भ्रुवनमिन्दुबिन्दुयुगान्वितम् ॥ पराबीजमिति ज्ञेयं फलम् ॥ ३८९ ॥ तथा च मार्कण्डेयः ॥ चन्द्रबीजं सुचन्द्राय हसीं बीजं तु सुसंस्थितम् ॥ एतत्परात्परं तत्त्वं येन चोत्तमः ॥ ३९० ॥ विना बीजं महास्तोत्रं न सिध्यति कदाचन ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन बीजयुक्तं सदा प्रथमचरित्रे ऋष्यादिकमुच्चार्य पराबीजेन षडङ्गमिति नतमुद्रां च प्रदर्शयेत् ॥ प्रथमचरितम् ॥ प्रणवं मायाबीजं ततः परम् ॥ एवं संपुटितं कुर्यान्नमोऽन्तं मध्यमं जपेत् ॥ ३९२ ॥ सायाबीजं ह्रीं ॥ मुचार्य मायाबीजेन षडङ्गमष्टादशमुद्राः प्रदर्श्य संपुटितं जपेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ ह्रीं नमः ऋषिरुवाच ॥ मः न हीं ॐ मध्यमचरितम् ॥ प्रणवं पूर्वमुच्चार्य कामबीजं ततः परम् ॥ एतत्संपुटितं कुर्यान्नमोऽन्तमुत्तमं जपेत् ॥२९३॥ कामबीजं क्वीं उत्तमचरित्रे ऋष्यादिकमुच्चार्य कामबीजेन षडङ्गमष्टादशमुद्राश्च प्रदर्श्य संपुटितं जपेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ क्वीं नमः मः न क्वीं ॐ इति उत्तमचरितम् ॥ अथास्य कामनाप्रयोगाः ॥ पुत्रकामनया एकचत्वारिशद्दिनपर्यन्तं कामबीजपुटितुं त्रिरावृत्तिः ॥ ३९४ ॥ वश्यार्थे एकविंशद्दिनपर्यन्तं कामबीजेन पुटितं पञ्चावृत्तिः ॥ ३९५ ॥ आकर्षणार्थे द्विचत्वरिशद्दिनपर्यन्तं कामपुटित ॥ ३९६ ॥ उच्चाटनार्थे त्रिसप्तदिनपर्यन्तं मायापुटितं फट्टपछवेनावृत्तिः ॥ ३९७॥ सर्वोपद्वनाशार्थेचतुश्रत्वारिशदिन पर्यन्तं मायादौ कूर्चबीजेन संपुटितं एकादशावृत्तिः ॥ ३९८ ॥ द्रव्यकामार्थे रमाद्यन्तं नवचत्वारिशद्दिनपर्यन्तं द्विरावृत्तिः ॥३९९। अथ शीष्रकार्यसिद्धचे प्रत्यहं नवचण्डीनिर्णयः ॥ आदौ अनुलोमं त्रयोदशाध्यायान् पठित्वा पश्चाद्विलोमेन पठित्वा पुनः शापोद्धार वत्पिठित्वा एवं क्रमेण प्रत्यहं नवचण्डीं कुर्यात् ॥ अल्पकार्ये नवदिनपर्यन्तं मध्यमकार्ये एकविंशतिदिनपर्यन्तं महत्कार्येत्रयिह्नशिहन पर्यन्तं मन्त्रं सिद्धचनन्तरं जपेत् ॥ जपान्ते पायसतिलाज्यमधुपुष्परसजातीपत्रफलयवत्रीहिसितशर्करायुतैर्दशांशेन युतेऽमी जहुयात् ॥ तहशांशेन हरिद्राकुंकुमजलेन संतर्पयेत् ॥ तहशांशेन पायसलङ्डुकपञ्चखाद्यभीजयेत्

बु.ज्ज्यो.र्ज. बर्मस्कंध ८ ॥८९॥

प्रियालखण्डखर्ज्रीर्नारिकेलेः सगोस्तेनैरिति ॥ अत्र न मार्जनम् ॥एवं कृते शीघ्रं कार्यसिद्धिः॥४००॥प्रतिमन्त्रं प्रणवपुटितं जपेत् ॥ ॥ ४०१॥ व्यस्तंसमस्तव्याहृत्यनुलोमप्रतिलोमेन प्रणवपुनितं जपेत् ॥ शीष्रतरकार्यसिद्धिः ॥ अत्र त्रिमध्वकृतमलेहोमः ॥ अत्र विप्रतीर्थतीयैवा ब्राह्मणभोजनान्ते मार्जनं कुर्यात् ॥ ४०२ ॥ श्रीबीजयुतेन सद्यो मोहनसिद्धः ॥ ४०३ ॥ मायाश्रीकामेन पुटिते सर्वेष्टसिद्धिः ॥ ४०३ ॥ मम वैरिवशं यातः इति मन्त्रेण प्रतिश्लोकं संपुटिते श्लोकोक्तं फलम् ॥ ४०५ ॥ इत्यं निशम्य देवानां श्लोकं त्रिंशत्सहस्रं जपेत् ॥ संपत्समृद्धिर्भवति ॥ ४०६ ॥ अथ कामनाप्रत्वेन मन्त्रसूचनामाह ॥ वंदिमोचने अध्यायः १ मन्त्र श्लोकः ५७ राजवश्ये अ०१ श्लो० ४५ जनवश्ये अ०१श्लो०५५सर्वजनमोहने अ०१श्लो०५६ सर्वकार्यसिद्धचैअ०१श्लो०७६ दुर्जनमोहनेअ०११लो८५सुखप्राप्त्येदारिब्बदुःखभयमोचनेअ०४१लो०१०सकलकर्मसुकृतेअ०४१लो०१६शत्रुपरिहारेअ०४१लो०७६ दिग्बन्धनेअ०४१लो०२५ वाक्सिद्धचे अ०४१लो०११धनप्राप्तीअ०११लो०३४अपद्वेषनाशनेअ०५१लो०६ शत्रुपरीभवार्थम् अ०५ श्ली० इटमनोत्सवप्राप्त्यर्थे अ०५ श्लो०६०परप्रयोगशमने अ०५ श्लो०२९ आरोग्यप्राप्ती अ०१ १श्लो०२५ सर्ववाधाशमनेअ०१ १६ श्लो०३९ स्तवने अ०११ श्लो०१० पींडापरिहारे अ०११ श्लो०१२ उपस्रांशमने अ०११ श्लो०३६ भयमोचने अ०११श्लो०२६ विषमचित्तशमे अ० ११ श्लो० ४३ पुत्रप्राप्ती अ० १२ श्लो० २९ शतुमुखस्तम्भने अ० १२ श्लो० २९ देवतामुखस्तम्भने अ० १२ श्लो॰ ८ सर्ववाधानाशने अ॰ १२ श्लो०९ धनधान्यसुखप्राप्त्यै अ०१२ श्लो०१३ दुःस्वप्नपीडापरिहारे अ० १२ श्लो०१६ मनः सिद्धिप्राप्तयै अ०१३ श्लो०१३ देवीसंतोषप्राप्तौ अ०१३ श्लो० १० गतप्रयोगप्राप्तौ अ० १३ श्लो० १२ इति प्रयोगसूचकमन्त्राः ॥ ४०७॥ अथ दुर्गानामप्राप्तिजयन्तीतिथिः॥ तत्रैव च विधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।। दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ ४०८॥ तथा च हिङ्गलादिखण्डे उत्तरसंहितायाम् ॥ आश्विने तु सिताष्टम्यां सङ्गवे तु हतोऽसुरः ॥ तया देग्या महाविष्णोस्त्रैलोक्यसुखहेतवे ॥ ४०९ ॥ रुरुदैत्यस्य पुत्रो यो दुर्गसङ्गोऽतितापदः ॥ तन्नाशकरणेनैव दुर्गा नामाभवित्कल ॥४१०॥

डपा.स्त.

अथ दुर्गाविधानं मार्कण्डेयपुराणे कथं नोक्तम् ॥ तत्रानुकत्वादस्य मन्त्रस्य विधानस्य वा कथं प्रामाण्यमिति चेत् सत्यम्।। मार्कण्डेयपुराणे अपुराण्लक्षणत्वेनोच्यमानमन्वन्तरप्रसङ्गाद्ष्यमम्बः सावर्णिको वभूवेति वक्तं तस्य पूर्वजन्म नि महाराजत्वसार्वभौमत्वयुद्धपराजयवनगमनषिदशेनदेवीमहित्स्यश्रवणतदाराधन्तदर्शनानि तस्याः सकाशाद्धरप्राप्तिः पुनः स्वराज्यप्राप्तिस्तद्देहावसाने सूर्याज्जन्म मनुत्वप्राप्तिरित्यादि पुराणकथाप्रसङ्गिनोक्तं तत्र देवीमाहात्म्यमुक्तवा तासुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् आ आराधिता सेसेव वृत्रणां भोगस्वर्गापवर्गदेति। मयीम् ॥ अईणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाधितपंणैरिति ॥ एवं समाराधयतोश्चिभिवेषैंर्यतात्मनोः। पाह चण्डिकेति च पुराणकृतोक्तत्वाच राजवैश्याभ्यां विधिवदेग्याराधनं कृत्वैव स्व दृष्टं तु यत्कर्म करोत्यविधिना नरः ॥ फलं न कि तद्यनिति छशमात्रं हि तस्य तदिति याज्ञवल्क्यवचनाद्विधिना ऽऽराधनस्य फलाभावाव ॥ अत एव देवीमाहात्म्यकथनानन्तरमृषिणा तामुपैहि महाराज शरणमित्युक्तस्य समये ॥ भगव त्रवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः ॥ एतेषां प्रकृति ब्रह्मन्प्रधानं । वक्तुमईसि ॥ आराध्यं यनम्या देव्याः स्वह्रपं तद्द्रिज ॥ विधिना सक्लं बूहि यथावत्प्रणतस्य मे इति राज्ञा विधिरवश्य पृष्ट एव ॥ ऋषिणाऽपि तस्य डामरतन्त्रोक्तः स विधिरुपदिष्ट एवं ॥ स विधिर्मार्कण्डेयपुराणस्यवाध्यायसप्तकरूपः सर्वदेशेष्वपि प्रचरति ॥ तस्य पुराणान्तर्गतत्वेऽपि पुराण संख्याबहिर्भूतत्वात्तत् खिलं नाम शिष्टा वदन्ति॥ यथा वेदेषु हरिश्चन्द्रोपाख्यानश्रीसूक्तचरणव्युहाद्यः परिशिष्टाः खिलाः परिशिष्टत्वमेतेषां वेदान्तर्गतत्वेऽपि न्यासकृतशाखाप्रन्थसंख्याबहिर्भूतत्व तथाऽत्रापि ॥ यथा भारते हरिवंशः खिलस्तथैवेति तेषु सप्तस्वध्यायेषु आदितोऽध्यायत्रये रहस्य। एये देव्या मूर्तिभेदा उक्तास्तद्वन्तरमध्यायत्रये नवाक्षरमन्त्रस्तन्यास पूजादिकमुक्तं सप्तमे मनत्रप्रस्तारकम उक्तः ॥ एवमध्यायसप्तकमपि मार्कण्डेयपुगणोक्तदेवीमाहात्म्याख्यमहामालामन्त्रोपासनायां खु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥८२॥

विनियुक्तमिति ॥ ४११ ॥ देवीभागवते नवमस्कन्धे विशेषः ॥ यन्त्रमस्याः शृणु प्राज्ञ व्यस्रषट्कोणसंयुतम् ॥ ततोऽष्टदलपद्मं च चतुर्विशतिपत्रकम् ॥ ४१२ ॥ भूगृहेण समायुक्तं यन्त्रमेवं विचिन्तयेत् ॥ शालग्रामे घटे वाऽपि यन्त्रे वा प्रतिमासु वा ॥ ४१३ ॥ बाणे लिङ्गेऽथवा सूर्यं यजेहेवीमनन्यधीः ॥ जयादिशक्तिसंयुक्ते पीठे देवीं प्रयूजयेत् ॥ ४१४ ॥ पूर्वकोणे सरस्वत्या सिंहतं पद्मजं यजेत् ॥ ४१५ ॥ पार्वत्या सिंहतं शंभुं वायुकोणे समर्चयेत् ॥ देव्या उत्तरतः पूज्यः सिंहो वामे महासुरम् ॥ ४१६ ॥ महिषं पूजयेदन्ते षट्कोणेषु यजेत्क्रमात् ॥ नन्द जां रक्तदन्तां च तथा शाकंभरीं शिवाम् ॥ ॥ ४१७ ॥ दुर्गा भीमां भ्रामरीं च ततो वसुदलेषु च ॥ ब्राह्मीं माहेश्वरीं चैव कौमारीं वैष्णवीं तथा ॥ ४१८ ॥ च ऐन्द्रीं चामुण्डकां तथा ॥ पूजयेच ततः पश्चात्तत्वपत्रेषु पूर्वतः ॥ ४१९ ॥ तत्त्वपत्रेषु चतुर्विंशतिपत्रेषु पूर्वतः देव्ययपत्र मारभ्य विष्णुमाया चेतना च बुर्द्धिनद्रा क्षुघा तथा ॥ छाया शक्तिः परा तृष्णा क्षान्तिर्जातिश्च लज्जया ॥ ४२० ॥ शान्तिः श्रद्धा कीर्तिलक्ष्म्यौ धृतिर्वृत्तिः श्रुतिः स्मृतिः ॥ द्या तुष्टिस्ततः पुष्टिमीता भ्रान्तिरिति क्रमात् ॥ ४२१ ॥ ततो भूपुरकोणेषु गणेशं क्षेत्रपालकम् ॥ बटुकं योगिनीश्चापि पूजयेन्मतिमात्ररः ॥ ४२२ ॥ इन्द्राद्यानपि तद्वाह्ये वज्राद्यायुधसंयुतान् ॥ पूजयेदनया रीत्या देवीं सावरणां ततः ॥ ४२३ ॥ तद्वाह्ये भूपुरे ॥ राजोपचारान्विविधान्दद्यादुम्बाप्रतुष्ट्ये ॥ ततो जपेन्नवार्णे च मन्त्रं कम् ॥ ४२४ ॥ मन्त्रार्थपूर्वकिमिति ॥ अथ मन्त्रार्थः ॥ मन्त्रे बीजत्रयं क्रमेण महासरस्वतीमहालक्ष्मीमहाकालीनां विचे इत्यत्रापि वित् च इ इति पदत्रयं क्रमेण चित्सदानन्दानां वाचकं तच संबोधनान्तं बीजत्रयस्य क्रमेण विशेषणं चामुण्डा पदं ब्रह्मविद्यावाचकं तादर्थ्यं चतुर्थी अनुसंदध्मह इति शेषः ॥ तथा चायमर्थः ॥ हे चिद्रूपिणि महासरस्वति हे सद्रूपिणि लिहम हे आनन्दरूपिणि महाकालि त्वां चामुण्डाये ब्रह्मविद्याप्राप्त्यर्थम् अनुसंदध्महे ध्यायाम इत्यर्थः ॥ तद्यं संब्रहः ॥ महासर स्वती चेति महालक्ष्म सदात्मिके ॥ महाकाल्यानन्दरूपे तत्तत्त्वज्ञानसिद्धये अनुसंदध्महे इति । अयमर्थो ग्रुप्तवत्यामस्ति ॥ ततः

उपा.स्त.

सप्तशतीस्तोत्रं देव्या अत्रे तु संपठेत् ॥ नानेन सदृशं स्तोत्रं विद्यते भुवनत्रये ॥ ४२५ ॥ तत्रश्चानेन देवेशीं तोषयेत्प्रत्यहं नरः ॥ धर्मार्थ काममोक्षाणामालयं जायते नरः ॥ ४२६ ॥ नवरात्रे पठेदेतदेव्यवे तु समाहितः ॥ देवी मागवतं सर्वे नवमस्कन्धमेव वा ॥ ४२७ । परितुष्टा जगद्धात्री भवत्येव हि निश्चितम् ॥ नित्यमेकैकमध्यायं पठेद्यः प्रत्यहं नरः ॥ ४२८ ॥ तस्य वश्या भवेदेवी देवीप्रिय करो हि सः ॥ शकुनांश्च परीक्षेत नित्यमस्मिन्यथाविधि ॥ ४२९ ॥ कुमारिदिव्यहस्तेन यद्वा बटुकराम्बुजात् ॥ मनोरथं तु संकल्प्य पुस्तकं पूजयेत्ततः ॥ ४३० ॥ देवीं च जगदीशानीं प्रणमेच पुनः पुनः ॥ सुस्नातां कन्यकां तत्रानीयाभ्थच्ये यथाविधि ॥ ४३१ ॥ शलाकां रोपयेन्मध्ये तथा स्वर्णेन निर्मिताम् ॥ शुभं वाऽप्यशुभं तत्र यदायाति च तद्भवेत् ॥ ४३२ ॥ उदासीने व्युदासीनं कार्ये भवति निश्चितम् ॥ एवं सप्तशतीयन्थे शकुनं च विलोकयेत् ॥ ४३३ ॥ अत्र शकुनावलोकने विशेषो मया प्रश्नस्कन्धे प्रतिपादित स्तत्र दृष्टव्य इति ॥ ४३४ ॥ नारायण उवाच ॥ राजा येन क्रमेणैव भजेत्तां प्रकृतिं पराम् ॥तच्छूयतां महाभाग वेदोक्तं क्रममेव च ॥ ॥ ४३५ ॥ स्नात्वाऽऽचम्य महागजःकृत्वा न्यासत्रयं तदा ॥ स्वकराङ्गाङ्गमन्त्राणां भूतशुद्धि चकार सः ॥४३६॥ प्राणायामं तदा कृत्वा कृत्वा च स्वाङ्गशोधनम् ॥ ध्यात्वा देवीं मृन्मयीं च चकारावाहनं तदा॥४३७॥ पुनध्यत्वा च भक्तया च पूजयामास भक्तितः ॥देव्याश्च दक्षिणे भागे संस्थाप्य कमलालयाम् ॥४३८॥ संपूज्य भक्तिभावेन भक्तया परमधार्मिकः ॥ देवषट्कं समावाह्य देव्याश्च पुरतो घटे ॥ भक्तया च पूजयामास विधिपूर्व च नारद् ॥ गणेशं च दिनेशं च विद्वं विष्णुं शिवं शिवाम् ॥ ४३९ ॥ तदा ध्यायन् महादेवीं ध्यानेनानेनभक्तितः॥ ध्यानं च सामवेदोक्तं परं कल्पतरुं मनुः ॥ ४४० ॥ ध्यायेन्नित्यां महादेवीं मूलप्रकृतिमीश्वरीम् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवा दीनां पूज्या वन्द्यां सनातनीम् ॥ ४४१ ॥ नारायणीं विष्णुमायां वैष्णवीं विष्णुभिक्तदाम् ॥ सर्वस्वरूपां सर्वेशां सर्वाधारां परात्पराम् ॥ ॥ ४४२ ॥ तप्तकाञ्चनवर्णामां सूर्यकोटिसमप्रभाम् ॥ ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां भक्तानुबहकातराम् ॥ ४४३ ॥ दुर्गा शतभुजां देवीं भक्तदुर्गार्तिनाशिनीम् ॥ त्रिलोचनप्रियां साध्वीं त्रिग्रणां च त्रिलोचनाम् ॥ ४४४ ॥ विश्रतीं कवरीभारं मालतीमाल्यमण्डितम् ॥

ए.ज्ज्यो.र्ण. धंमस्कंघ ८ ॥८३॥

वर्तुलं वामवकं च शंभोर्मानसमोहनम् ॥ ४४५ ॥ नासादक्षिणभागेन विश्रतीं गजमौक्तिकम् ॥ सिन्द्रविन्दुनादश्रेद्धालमध्यस्थ लोज्ज्वलाम् ॥ ४४६ ॥ विद्विशुद्धांशुकाधानां गन्धचन्द्नचर्चिताम् ॥ विश्रतीं स्तनयुग्मं च कस्तूरीचित्रशोमितम् ॥ ४४७ ॥ विधातश्च विधात्रेश्च विधात्रीं च सर्वधात्रीं च शांकरीम् ॥ सृष्टी स्रद्धः शिल्पह्रपां दयां पातश्च पालने ॥ ४४८ ॥ संहारकाले संहतुः परां संहारह्मपिणीम् निशुम्भशुम्भमथिनीं महिषासुरमिद्दिनीम् ॥ ४४९ ॥ इति ध्यत्वा स्वशिरसि पुष्पं दत्त्वा विचक्षणः ॥ पुनध्यत्वा च अत्तया च कुर्योद्वाहंनं ततः ॥ ४५० ॥ प्रकृतेः प्रतिमां ध्यात्वा मन्त्रमेवं पठेत्ततः ॥ जीवन्यासं ततः कुर्योन्मनुनाऽनेन यत्नतः ॥ ४५१ ॥ एहोहि भगवत्यम्ब शिवलोकात्सनाति ॥ गृहाण सम पूजां च शारदीयां सुरेश्वरि ॥ ४५२ ॥ इहागच्छ जगत्यूज्ये तिष्ठ तिष्ठ महेश्वरि ॥ हे मातरस्यामर्चायां सन्निरुद्धा भवाम्बिके ॥ ४५३ ॥ इहायच्छन्तु त्वत्प्राणाश्चाधःप्राणेः सहा च्युते ॥ इहागच्छन्तु त्वारितं तत्रैव सर्वशक्तयः॥ ४५४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं छीं च दुर्गीये वहिजायान्तमेव च ॥ समुचार्योरिस प्राणाः संतिष्ठन्तु सदा शिवे ॥ ४५५ ॥ सर्वेन्द्रियाधिदेवास्ते इहागच्छन्तु चण्डिके ॥ इहागच्छनु ते शक्तया इहागच्छन्तु चेश्वरः॥ ॥ ४५६ ॥ इत्यावाह्य महादेवीं परिहारं करोति च ॥ मन्त्रेणानेन विप्रेन्द्र तच्छृणुष्य समाहितः ॥ ४५७ ॥ स्वागतं भगवत्यम्ब शिवलोकाच्छिवप्रिये ॥ प्रसादं कुरु मां भद्रे भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ४५८ ॥ धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं सफलं जीवनं मम ॥ आगताऽसि यतो मातर्माहेश्वरि ममालयम् ॥ ४५९ ॥ अद्य मे सफलं जन्म सार्थकं जीवनं मम ॥ पूजवामि यतो दुर्गी पुण्य क्षेत्रे च भारते ॥ ४६० ॥ इति कृत्रा परीहारं देव्या वामे च साधकः ॥ त्रिपद्या उपरिष्टाच कुर्याच शङ्कस्थापनम् ॥ ४६१ ॥ तत्र दस्वा जलं पूर्णं दूर्वी पुष्पं च चन्दनम् ॥ धृत्वा दक्षिणहस्तेन मन्त्रमेवं पठेन्नरः ॥ ४६२ ॥ शङ्कस्तवं शङ्कपुण्यानां मङ्गलानां च मङ्ग लम् ॥ प्रभवः शङ्खच्डस्य पुरा कल्पे पवित्रकम् ॥ ३६३ ॥ ततोऽद्येपात्रं संस्थाप्य विधिनाऽनेन पण्डितः ॥ दस्वा संपूजयेद्देवी मुपचाराणिषोडश ॥ ४६४ ॥ त्रिकोणं मण्डलं कृत्वा सजलेन कुशेन च ॥ कूर्म शेषं धरित्रीं च संपूज्य तत्र धार्मिकः ॥ ४६५ ॥

डमा.स्तः ।

HESK

त्रिपदीं स्थापयेत्तत्र त्रिपद्यां शङ्कमेव च ॥ शंखे त्रिभागतोयं च दत्त्वा संपूजयेत्ततः ॥ ४६६ ॥ गङ्के च यमुने चैव गोदाविर सर स्वित ॥ नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सिविधि कुरु ॥ ४६७ ॥ विह्नं सूर्य च चन्द्रं च विष्णुं च वर्षणं शिवम् ॥ पूजयेत्तत्र तोये च तुलस्या चन्द्रनेन च ॥ ४६८ ॥ नैवेद्यानि च सर्वाणि प्रोक्षयेत्तजलेन च ॥ असनं वसनं पाद्यं स्नानीयमनुलेपनम् ॥ ४६९ ॥ अधुपर्क गन्धमध्ये पुष्पं नैवेद्यमीप्सितम् ॥ पुनराचमनियं च ताम्बूलं वस्त्रभूषणम् ॥ ४७० ॥ धूपः प्रदीपस्तल्पं चेत्युपचारासतु षोडश ॥ अमृल्यरत्निर्माणं नानाचित्रविराजितम् ॥ ४७७ ॥ वरं सिहासनं श्रेष्ठं गृह्मतां शंकरित्रये ॥ अतन्तुसूत्रप्रभवमीश्वरेच्छा विनिर्मितम् ॥ ४७२ ॥ ज्वलद्गिविशुद्धं च वसनं गृह्यतां शिवे ॥ अमूल्यरत्नपात्रस्थं निर्मलं जाह्नवीजलम् ॥ ४७३ ॥ पादप्रक्षाल नार्थाय दुर्गे पाद्यं च गृह्यताम्।। सुगन्ध्यामलकीस्निग्धद्रव्यमेव सुदुर्लभम्।। ४७३ ॥ सुपक्कविष्णुतेलं च गृह्यतां प्रमेश्वरि। कस्तूरीकुङ्कुमाक्तं च सुगन्धि चन्दनं इवम् ॥ ४७५ ॥ सुवासितं जगन्मात्र्येद्यतामनुळेपनम् ॥ माध्वीको रत्नपात्रस्थः सुपवित्रः सुमङ्गलः ॥ ४७६ ॥ मधुपर्को महादेवि गृह्यतां प्रीतिपूर्वकम् ॥ पवित्रः शङ्कपात्रस्थः सुपवित्रः सुमङ्गलः ॥ ४७७ ॥ मधुपर्को महादेवि दुर्वापुष्पाक्षतान्वितः ॥ स्वर्गमन्दाकिनीतोयमर्घ्यं चण्डि गृहाण मे ॥ ४७८ ॥ मालत्यादिपुष्पमाला गृह्यतां परमेश्वरि ॥ दिव्यं स्निम्धान्नसामान्नं पिष्टकं पायसादिकम् ॥ ४७९ ॥ मिष्टान्नं लड्डुकफलं नैवद्यं मृह्यतामुमे ॥ सुवासितं शीतोयं कर्पूरादि सुसंस्कृतम् ॥ ४८० ॥ यया निवेदितं अत्तया गृह्यतां शैलकन्यके ॥ गुवाकपर्णचूर्ण च कर्पूरादिसमन्वितम् ॥ ४८१ ॥ सर्वभोग परं रम्यं ताम्बूळं देवि गृद्यताम् ॥ एवं संपूज्यं तां दुर्गा दद्यात्पुष्पाञ्चिलि सुने ॥ ४८२ ॥ ततोऽष्ट नायिका देव्या यत्नतः परि पूजयेत् ॥ उम्रचण्डां प्रचण्डां च चण्डोमां चण्डनायिकाम् ॥ ४८३ ॥ अतिचण्डां च चामुण्डां चण्डां चण्डतीं तथा । पद्मस्याष्ट्रले चैताः प्रागादिकपशस्ततः ॥ ४८४ ॥ पञ्चोपचारैः संपूज्य भैरवानमध्यदेशतः ॥ आदौ महाभैरवं च संहारभैरवं तथा ॥ ४८५ ॥ असिताङ्गं भैरवं च इहमैरवमेव च ॥ ततः कालं भैरवं च कोधं भैरवमेव च ॥ ४८६ ॥ एतान् संपूज्य

हःज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥८४॥ मध्ये च नवशक्तिश्च पूजयेत् ॥ततः पद्मं चाष्ट्दले मध्ये च मिक्तपूर्वकम् ॥ ४८७ ॥ वैष्णवीं चैव ब्रह्माणीं रौद्रीं माहेश्वरीं तथा ॥ नारिसंहीं च वाराहीमिनद्राणीं कार्तिकीं तथा ॥ ४८८ ॥ सर्वशिक्तस्वरूपां च प्रधानं सर्वमङ्गलम् ॥ शंकरं कार्तिकेयं च सूर्यं सोमं हुताशनम् ॥ ४८९ ॥ वायुं च वर्षणं चैव देव्याश्चेटिं बटुं तथा ॥ चतुःषष्टियोगिनीश्च संपूज्य विधिपूर्वकम् ॥४९०॥ यथाशक्ति बलिं दत्त्वा करोति स्तवनं बुधः ॥ कवचं च गले बद्धा पिठत्वा मिक्तपूर्वकम्॥४९१॥ततः कृत्वा परीहारं नमस्कुर्याद्विचक्षणः॥४९२॥इति श्रीहरिकृष्णविरचिते बृ॰ घ॰ उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्यायेऽनेकतन्त्रगृहीतसप्तशतिदुर्गापटलनिह्नपणं नाम त्रिंशं प्रकरणम् ॥३०॥ अथ नित्यचण्डीविधानं तत्रेव ॥ नित्यचण्डचादिजाप्यस्य विधानं ते वदाम्यहम् ॥ क्रमेण सर्वकार्याणां सिद्धये यज्ञपुण्यदम् ॥ १ ॥ पूर्वोक्तविधिना कृत्वा चण्डिकातर्पणादिकम् ॥ ज्ञुक्कभूतामवष्टभ्य मासं प्रतिदिनं जपेत् ॥ २ ॥ रहस्यत्रयसंयुक्तं चण्डिका चरितत्रयम् ॥ दशांशहोमसहितं सोच्यते नित्यचिण्डका ॥ ३ ॥ धनषुत्रयशोदात्री महान्याधिविनाशिनी ॥ महाभयमहादुःख हन्त्री सौरूयप्रदायिनी ॥ ४ ।' अथास्याः प्रयोगः ॥ तत्र साधकः कृतनित्यिक्रियः पूजास्थानं प्रविश्य पूर्वाभिमुख स्वासने समु पविश्य कुशहस्तः प्राणानायम्य स्वेष्टदेवतां स्मरन् अद्यामुकमासपञ्चतिथिवारक्षयोगकरणादिषु अमुकराशिगते सवितारि पक्षे चतुर्दश्यां विशेषक्षेत्रे अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहममुकफलात्रये अद्यारभ्य मासमात्रं नित्यचण्डिजपं करिष्ये इति संकल्प्य पाग्वतपूजादिकं कृत्वा प्राग्वत्मूलमन्त्रं जिपत्वा देव्या यञ्चरितत्रयं नवाणीदिन्यासपूर्वकं सरहस्यं सकुज्जपेत् ॥ कवचार्गला कीलककपूर्वकमपि पठेत् ॥ इति डामरे ॥ आदौ नारायणं नमस्कृत्येति पठित्वा पाठः कार्यः ॥ तत्र चरितत्रयस्य ऋष्यादिकं पठित्वा पाठं कुर्यात् ॥ एवमेकमासं जिपत्वा मासानन्तरं वक्ष्यमाणविना कुण्डे स्थिण्डले वाऽिंग संस्थाप्य सघृतपायसैस्तिल मिश्रेर्म्लमन्त्रस्य जपदेशांशहोमपुरःसरं वक्ष्यमाणविधिना हुत्वा पूर्णाहुति च हुत्वा ब्राह्मणान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च संपूज्य भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः परितोष्य प्रणम्य विसृजेत् ॥ एवं स्वयं कर्तुमशक्तश्रेद्वाह्मणद्वारा कारियत्वा तं वस्त्रालंकारा

उपा.स्त. इ दुर्गा. अ० १२८

दिभिर्दक्षिणाभिर्भूयसीभिः परितोषयेत् ॥ इति महालक्ष्मीपूजाक्रमकल्पवस्च्यां नित्यचण्डीविधानम् ॥ अथ नित्यनवचण्डी वियानं दुर्गापटले मया प्रतिपादितं तत्र द्रष्टव्यमिति ॥ इति श्रीहरिकृष्ण० वृ० घ० उपासनास्तवके दुर्गोपासनाध्याये चण्डीविधानप्रयोगकथनं नामैकत्रिशं प्रकरणम् ॥३१॥ अथ नवरात्रिनवचण्डी दुर्गाविधानम् ॥ उक्तं च नागोजीभट्टीये ॥ अथातः संप्र वक्ष्यामि नवरात्रिविधानकम् ॥ जपेदेकोत्तरां वृद्धि दिनानि नव संख्यया ॥ १ ॥ नवाक्षरीविधानेन संपूज्याथ विचक्षणः । सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं प्रत्येकं च यथाविधि ॥ २ ॥ मध्ये चैकोत्तरां वृद्धि जपेदेव्याः स्तवं मनुम् ॥ हुत्वा दशांशतो होमं तत्र सिद्धि समाप्तुयात् ॥ ३ ॥ आश्विनस्य सिते पक्ष आरभ्यामितिथि सुधीः ॥ अष्टम्यन्तं जपेछक्षं दशांशं होममाचरेत् ॥ ४ ॥ अथ नवदुर्गाविधिः ॥ महालक्ष्मीपूजाक्रमकल्पवछचाम् ॥ शुक्लाष्ट्मीमवष्टभ्य यायच्छुक्लचतुर्द्शी ॥ कामफलार्थिभिः ॥ ५ ॥ अथ प्रयोगः ॥ तत्र साधकः कृतनित्यिक्रयः प्राग्वित्थयाद्युल्लेखनं कृत्वा इति संकरूप्य प्राग्यदेवीं संपूज्य देव्यये शालिपुञ्जोपरि स्वर्णादिरचितं कुम्भं नवतन्तुना वेष्टितं चन्दनादिचर्चितं रण्यं वज्रमुक्ताफलपद्मरागनीलमरकतैः पञ्चरत्नैः समायुक्तम् ॥ मही चौरिति भूमिं स्पृष्टा ॥ ओषधयः स्पृष्टा ॥ आजित्र कलशम् इति कलशं संस्थाप्य ॥ इमं मे गङ्गे इति जलेनापूर्य ॥ तत्र कुङ्कमागरूकर्प्रचन्दनपङ्कं च निक्षिप्य तस्य मुखे आम्रदलानि निधाय तदुपरि नालिकेरफलाढचं सतन्दुलं कलशजातीयं पात्रं मन्त्रेण मन्त्रयेत् ॥ युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेणावेष्टच कुम्भस्य दशदिक्षु पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादिदशदिक्पालान् संपूज्य स्वयं चन्द्रनागरुकुङ्कमादिलिप्ताङ्कः सुवस्त्रमाल्याद्यलंकृतः प्राग्वत्कृतन्यासः सप्तशतीपाठं मूलमन्त्रजपपुरःसरं मौनी प्रत्यहमेकैकामावृत्ति पठित्वा दशमे दिवसे वक्ष्यमाणविधिना कुण्डादाविम संस्थाप्य प्राग्वद्धोमं कृत्वा ब्राह्मणान् कुमारिकाः वासिनीश्व पूजाभोजनताम्बूलद्क्षिणादिभिः परितोष्य प्रणम्य विसृजेत् ॥ अत्रापि स्वयमशक्तश्चेद्वाह्मणद्वारा यथोक्तविधिन

इ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥८५॥

जपादि कारियत्वा तं दक्षिणादिभिः परितोषयेदिति ॥ एतस्यैव विधानस्य कृष्णपक्षे षष्टचादिचतुर्दश्यन्तं कियमाणस्य काल कियते जाप्यः कालरात्रिरुदीरिता ॥ महाकालोद्भवं दुःखं पि यत्फलं परिकीर्तितम् ॥ कालरात्रिविधानेऽपि तत्फलं लभते ध्रुवम् ॥ एतञ्चिग्रुणिः कथितं तदवाप्नोति नित्यचप्डीजपे कृते॥ इति नवदुर्गाविधिः॥ अथ नवचण्डीविधिः लभते ध्रुवम् ॥ एतत्रिगुणितं ॥ प्रतिपत्तिथिमारभ्य नवचण्डीं समारभेत् ॥ १ ॥ तोरणाढचे पूर्वादिक्रमयोगेन दिग्देवीभ्यो बलिं हरेत् ॥ २ ॥ गन्धपुष्पाक्षतैर्धपदिपिश्चक्रिभक्तमः ॥ श्विनशुक्लमतिपदि पूर्वाह्ने तिलतेलेन कृताभ्यङ्गो यजमानः साधकः कृतनित्य क्रियः सुसंस्कृते शुभे चलंकृते कदलीस्तम्भमण्डिते सुधूपद्रव्यधूपिते सुदीपप्रकाशाढचे स्वासने प्राङ्मुखः समुपविश्याचम्य प्राणानायम्य एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभितयो श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं वा कालीसरस्वतीष्रीत्यर्थं सकलमनोरथफलावाप्त्यर्थं चतु विंघपुरुषार्थसिद्धचर्थे नवचण्डीविधानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गणेशपूजनादि कृत्वा तस्मिन् गृहे पूर्वस्यां दिशि गुजवाहनां ध्यात्वा कादम्बरि देवि इहागच्छेत्यावाह्य कचित्पीठे संस्थाप्य श्रीकादम्बरि एष ते गन्धः ॥ एवम् इमानि ते पुष्पाणि वौषट् ॥ एष ते धूपो नमः ॥ एष ते दीपो नमः ॥ तद्ये पात्रान्तरे चृतशर्करासहितं पायसं नानान्यञ्जनादिसहितं निधाय ॥ श्री कादम्बरि एष ते बर्लिनमः इति बलिमुत्सृज्य क्षमस्वेति प्रणमेत् ॥ एवमाग्रेय्यामुल्कामजवाहनां संपूज्य बलि दत्त्वा ॥ दक्षिणे महिषाह्रढां करालीं संपूज्य बलि दत्त्वा ॥ नैऋते प्रेतवाह्रनां रकताक्षीं संपूज्य बलि दत्त्वा ॥ पश्चिमे श्वेतकौलीरवाहनां श्वेतां संपू ज्य ॥ वायच्ये मृगवाहनां हरिताम् ॥ उदीच्यां सिंहवाहनां यक्षिणीम् ॥ ईशान्यां वृषवाहनां कङ्कालीं संपूज्य ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये इंसवाहनां सुरज्येष्टामावाह्य सं ।। निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये अहिवाहनां सर्पराज्ञीं संपूज्य बलिं दत्त्वा ॥ दशदिक्षु यथाऋमेणेन्द्रादी

उपा.स्त. इ हुर्गा.

निप संपूज्य गृहमण्डले स्वशाखोक्तविधिना नव ग्रहान् यथास्थानं संपूज्य चतुरस्रचतुईस्तवेदिकायां सर्वतोभद्रं वाऽष्टदलं विधाय तत्र मही द्यौरिति वरुणपूजान्तं कलशस्थापनं कुर्यात् ॥ कलशस्तु देव्यत्रे शालिपुञ्जोपरि स्वर्णोदिरचितो वेण्टितश्चन्दनादिचर्चितः सुधूपितः ॥ तत्र वत्रमुक्ताफलनीलपद्मरागमरकताख्यपञ्चरत्नानि क्षिपेत् ॥ मुखे आम्रदलानि तडुपरि नालिकेरफलाढचं सतन्दुलं कलशसजातीयमुत्तमं वा पात्रं निधाय ॥ रक्तवस्त्रणावेष्टच कुम्भदशदिक्षु पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादि दशदिक्पालान्संपूज्य तत्र देवीप्रतिमायामग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा स्थापयेत् ॥ महिषासुरमर्दिनीमूर्तिलक्षणं मूर्तिलक्षणा ध्याये प्रतिपादितम् ॥ तादृशं ध्यात्वा ॥ एहि हुर्गे महाभागे रक्षार्थ मम सर्वदा ॥ आवाद्याम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ अस्यां मूर्ती समागच्छ स्थिति मन्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वश्वरि नमोऽस्तु ते ॥ इति आवाहनम् ॥ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ अनेन पूजां कुर्यात् ॥ उपासनापद्धतिज्ञान वांश्चेत्पूर्वोक्तप्रकारेण न्यासादिपात्रासादनपूजनावरणपूजनानि कुर्यात् ॥ ततः प्रार्थयेत् ॥ मालिनि ॥ द्रव्यमारोग्यविजयं देहि देवि नमः सदा ॥ भूतप्रेतिपशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि ॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्ष मां सदा ।। सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये॰ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ।। पुत्रान् देहि मे ॥ इति संप्रार्थ्य मूलमन्त्रजपं कृत्वा आदौ नारायणादीन् नमस्कृत्य कवचार्गलाकीलकपूर्वकं चण्डीचरित्रत्रयं जिपत्वा स्वयमशक्तुवंश्रेद्वाह्मणं संपूज्य चण्डीपाठार्थे त्वामहं वृणे ॥ इति पूगीफलं सदक्षिणं तत्करे दत्त्वा जापयित्वा पुष्पाञ्जलि दत्त्वा नमस्कुर्यात् ॥ अथ कुमारीपूजनम् ॥ पूजादिनातपूर्वदिने गन्धपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवति कुमारि पूजार्थे त्वं मया निम न्त्रिताऽसि मां कृतार्थयेति निमन्त्रितां प्रातराहूयाभ्यङ्गादिपरिष्कृतां समलंकृतां पूजागृहं नीत्वा अष्टदलपद्मोपरि सपादपीठे समु पवेश्य तस्याः पादाबुष्णेन वारिणा मण्डलोपरि प्रक्षाल्य वस्त्रेण प्रोञ्छच स्वस्तिकासनोपविष्टां तां महालक्ष्मीस्वरूपां ध्यायेत्

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥८६॥ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम् ॥ नव दुर्गातिमकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ इत्यावाह्य आवाहनादिपरमीकर णान्ता सुद्राः प्रदर्श्य ध्यानपुरःसरं मूलमन्त्रेण दीपान्तं संपूज्य षड्सोपेतं पञ्चविधं नैवेद्यं समर्प्य यावद्रोजनं करोति तावन्मौनी नशक्षरं मूलं जपेत् ॥ पानीयं दत्त्वा इस्तप्रशालनं करोद्वर्तनम् आचमनं च समर्प्य सकर्प्रताम्बूलविशिष्टवस्तुदक्षिणाप्रदक्षिणा नमस्कारेः संतोष्य हर्षपूर्वकं तां विसर्जयेदिति कुमारीपूजनविधिः ॥ अत्र कुमारीलक्षणम् ॥ नामानि कामनाभेदेन पूजनमन्त्राश्च अस्मिन् श्रन्थे कुमारीपूजनाध्याये प्रतिपादिता द्रष्टच्याः ॥ कुमारीपूजनफलं डामरे ॥ यं यं प्रार्थयते कामं देवानामपि दुर्लम् ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा तं तं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ शतकतुफलं तस्य यः कुमारीं प्रपूजयेत् ॥इत्यादि॥ ततः श्रीगुरुपूजनं यथावत्कृत्वा ब्राह्मण पूजनं विधाय ब्राह्मणान् भोजयित्वा ताम्बूलद्क्षिणादिभिः परितोषयेत् ॥ एवं प्रतिपत्कृत्यं विधायैवमेव द्वितीयायां द्विगुणं त्रिगुणं तृतीयायां चतुर्गुणं चतुर्थ्यामेवमेकोत्तरवृद्धचा कुमारीपूजनं ब्राह्मणसमाराधनं च नवम्यन्तं नवम्यां नवगुणं यथा भवति तथा कुर्यात् ॥ ततो नवम्यां कृतजपद्शांशहोमः कार्यः ॥ तत्र नवचण्डचां हस्तमात्रं समन्ताञ्चतुर्विशहयंगुलं कुण्डं स्थण्डिलं वा विधाय ॥ तत्र पायस तिलाज्यद्रव्याणि फलपुष्पादिसंभाराच् संपाद्य पूर्वोच्चारितैवंग्रुणविशेषण० मया कृतस्य कारितस्य वा जपस्य साङ्गतासिद्धचर्थ दशांशेन तिलाज्यपायसादिद्वव्यैः होमं करिष्य इति संकल्प्य ॥ स्वगृद्योक्तविधिना आगमोक्तविधिना वा अग्रिमुखं कुर्यात् ॥ तत्र आगमोक्तं यथा मूलेन कुण्डं वीक्ष्याह्मेण संप्रोक्ष्य तेनैव द्भैः संताब्य कवचेनाभ्युक्ष्य अश्वत्थसमिघो मूलेन प्रागया उद्गयाश्च तिस्रो लेखाः कृत्वा प्रागबासु विष्णुशिवशकान् उदगबासु ब्रह्मयमचन्द्रान् अभ्यच्यं मध्ये ज्यसषट्कोणाष्ट्रत्वृत्तचतुरस्राणि लिखित्वा योगपीठे वागीश्वरीं च संपूज्याग्रेवींक्षणादि कृत्वा यथा वामनासया हीमिति आकृष्य भूमध्यस्थेन हीमिति अंकुशमुद्रया रेचकेन अं हीं विह्निचैतन्याय नम इति विहरशौ प्रविष्टं ध्यात्वा मूलेनाभिमन्त्रय संरक्ष्य कवचेनावगुण्ठच गन्धाद्यैः संपूज्य मुलेन प्रतिष्ठाप्य ॐ चितिपङ्गल इन २ दह २ पच २ सर्व ज्ञापय २ स्वाहा ॥ ज्वालिनी

डपा,स्त. ३

मुद्रां प्रदर्श्य मध्यमे मीलितं कृत्वा तन्मध्येऽङ्गुष्ठको क्षिपेत् ॥ मुद्रेयं सप्तजिह्वा स्याद्रशयेजातवेदसे ॥ इति ॥ इन्धनैः सिमधा ऽस्त्रेण प्रज्वालय दृग्योः कंकणं बद्ध्वा अग्नेर्गर्भाधानादिसंस्कारान्कुर्यात् ॥ प्रतिसंस्कारं मुलेनाज्येन त्रिर्जुहुयात् ॥ नामकर्मणि तु शतमङ्गला नामाऽसि त्वं हुताशनेति नाम कृत्वा जहुयात् ॥ अथ स्वदेहे न्यासः ॥ ॐ स्त्र्यं पद्मरागाये नमोऽग्निजिह्वाये नमः लिद्गे ॥ ॐ श्र्रं सुव्णाये नमोऽग्निजिह्वाये नमः हृद्ये ॥ ॐ श्र्यं भद्नलोहिताये नमोऽग्निजिह्वाये नमः शिरिस ॥ ॐ ल्रं लोहि ताय नमोऽग्निजिह्नाय नमः मुखे ॥ ॐ ल्यूं श्वेताय नमोऽग्निजिह्नाय नमः त्राणे ॥ ॐ म्रूं धूमिन्य नमोऽऽग्निजिह्नाय नमः नेत्रयोः ॥ ॐ म्रूं कराल्य नमोऽग्निजिह्नाय नमः सर्वाङ्गे ॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥ ॐ सहस्राचिषे नमः हृदयाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति पूर्णाय नमः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उत्तिष्ठ पुरुषाय नमः शिखाय वषट् ॥ ॐ धूमन्यापिने नमः कवचाय हुम् ॥ ॐ सप्तजिह्नाय नमः नेत्रत्रयाय वीषट् ॥ ॐ धनुर्धराय नमः अस्त्राय फट् ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ ॐ अन्नये जातवेदसे नमः मूर्षि ॥ सप्तजिह्वाय नमः दक्षिणांसे ॥ ॐ अग्नये हन्यवाहनाय नमः दक्षिणकटचाम् ॥ ॐ अग्नये अश्वोदराय नमः लिङ्गे ॥ ॐ वैश्वानराय नमः वामकटचाम् ॥ ॐ अग्रये कौमारतेजसे नमः वामपार्श्वे ॥ ॐ अग्रये विश्वमुखाय नमः वामांसे ॥ 🕉 अग्रये देवमुखाय नमः शिखायाम् ॥ ततोऽग्नि चत्वारि शृङ्गिति ध्यात्वा परिसमुद्य परिस्तीर्य पर्युक्ष्य मेखलासु क्रमेण ब्रह्मविष्णु महेश्वरान् योनी गौरीं च संपूज्य वह्नी यन्त्रं विचिन्त्य आग्नेयादिषट्कोणेषु पुरतः पश्चात् मध्ये इत्यादिपूर्वीक्तसप्तजिह्याः संपूज्याग्नेयादिकोणेषु पुरतः पश्चाच सहस्राचिषे इत्यादिषडङ्गानि संपूज्य पूर्वाद्यष्टदलेषु अग्रये जात वेदसे नम इत्याद्यष्टी मूर्तीः संपूज्य चतुरस्रे इन्द्रादीन् सायुधान् संपूज्य कुण्डं नवसूत्र्या संवेष्ट्य पात्रासादनादि स्वगृद्योक्तं कृत्वा निर्वापादिना प्रभृतं पायसं अपयित्वाऽऽज्यं चकं ह्रीमित्यभिमः ज्य घेनुसुद्रां प्रदर्श्य स्विष्टकुन्मीनी वह्नौ अयाधाय वामदक्षिणयोरिडां पिङ्गलां मध्ये सुषुम्नां च ध्यात्वा चुश्चवी हुत्वा अग्नीषोमाभ्याम् अग्नये स्विष्टकृते मध्ये च हुत्वा पूर्वोक्त

बु.क्यो.र्ज. धर्मस्कं घट ॥८७॥

सप्तजिह्वाभ्यः मूर्तिभ्यश्च तत्तन्मन्त्रेरेककामाज्याहुति हुत्वा सर्पेभ्यः पितृभ्यो गन्धर्वेभ्यः पक्षिभ्यो नागेभ्यः पिशाचेभ्यो राक्ष सेभ्यो हत्वा श्रीगणेशमन्त्रेण जहुयात् ॥ ततः पूर्वोक्तसर्वन्यासान् कृत्वा वह्नौ पीठपूजां कृत्वा देवीमावाह्यावाहनाद्गुद्धाः प्रदर्श्य षडङ्गं कृत्वा षोडशोपचारैः संपूज्य मूलेन शतमेकादशाधिकमाज्याहुतीर्द्वत्वा नवग्रहेभ्यो लोकपालेभ्यश्व तत्तन्यन्त्रः समिदाज्य चह्न हुत्वा पायसतिलपालाशपुष्पसर्षपपूर्गीफललाजादूर्वोद्धरयविब्चफलरक्तगुग्गुलद्रन्याणि तिलमिश्रपायसमेव र्गलाकीलकरहरूयैः प्रतिश्लोकं हुत्वा जपस्य दशांशेन प्रतिश्लोकं सप्तशतीयन्त्रोक्तद्रव्याणि तिलपायसं वा जहुयात् ॥ अध्याय समाप्तौ उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलेहींमः ॥ यद्वा तिलेदैं च्या इत्यनेन नवाणिन वा जपदशांशहोमः॥एवं प्रधानहोमं कृत्वा नामिभः सुवेणाज्यं पायसं च जुहुयात् ॥ यथा ॐ काद्मवर्थे स्वाहा ॥ ॐ उल्काये स्वाहा ॥ ॐ कराल्ये॰ ॥ ॐ हरिताये॰ ॥ ॐ यक्षिण्ये॰ ॥ ॐ कङ्काल्ये॰ ॥ ॐ सुरश्रेष्ठाये ॥ ॐ सर्पराइये॰ ॐ ब्राह्मये॰ ॥ ॐ माहेश्वर्ये॰ ॥ ॐ कीमायें॰ ॥ ॐ वैष्णच्ये॰ ॥ ॐ वाराह्ये॰ ॥ ॐ ऐन्द्रचे॰ ॥ ॐ नारसिंह्ये॰ ॥ ॐ चामुण्डाये॰ ॥ ॐ घात्रे॰ ॥ ॐ विघात्रे॰॥ ॐ शङ्कानिघये॰ ॥ ॐ पद्मनिधये ।। ॐ द्वारश्चिये ।। ॐ वास्तुपुरुषाय ।। ॐ ऐरावताय ० ॐ पुण्डरीकाय ।। ॐ वामनाय ।। ॐ कुमुदाय ।।। ॐ अञ्जनाय० ॥ ॐ पुष्पदन्ताय० ॥ ॐ सार्वभौमाय० ॥ ॐ सप्रतीकाय० ॥ ॐ दमनाय० ॥ ॐ पुण्डरीकाय० ॥ ॐ गुग्गु लाय॰ ॥ ॐ कुरण्टकाय॰ ॥ ॐ ऋग्वेदाय॰ ॥ ॐ यजुर्वेदाय॰ ॥ ॐ सामवेदाय॰ ॥ ॐ अथर्वणवेदाय॰ ॥ नवग्रहाणां दिक्पालानां च नामिभः ॥ ॐ असिताङ्गभैरवाय० ॥ ॐ रुरुभैरवाय० ॥ ॐ चण्डभैरवाय० ॥ ॐ क्रोधभैरवाय० ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय० ॥ ॐ कपालभैरवाय ।। ॐ भीषणभैरवाय ।। ॐ संहारभैरवाय ।। ततः पूर्वोक्ताधारशक्तयादिपीठदेवताभ्यः आवरणदेवताभ्यश्च हुत्वा स्विष्टकृतं हुत्वा ॥ ॐ ह्रीं ब्राह्मी माहेश्वरी कीमारी वैष्णवी वाराही नारसिंही ऐन्द्री चामुण्डाये विच्चे स्विष्टकृते स्वाहा इति स्विष्टकृतं द्वुत्वाऽऽज्यं जुदुयात ॥ ॐ ह्वीं नन्दाय विच्चे स्वाहा ॥ ॐ ह्वी रक्तद्नितकाये॰ ॐ ह्वीं शाकंभर्यें॰ ॥

डपा.स्त. इ हुर्गा.

हीं दुर्गायै ।। ॐ हीं भीमाये ।। ॐ हीं श्रामये ।। ॐ हीं कालिकाये ।। ॐ हीं शिवदूत्ये ।। ॐ हीं प्रजापते स्वा हेति हुत्या प्रायश्चित्ताज्याहुतीईत्वा दिक्पालनवयहविनायकादिक्षेत्रपालादिभ्यो माषभक्तवलीनदत्त्वा द्वादशगृहीतेनाज्येन समुद्रा दुर्मिरिति मंत्रेण मुर्धानं दिवो ॰ पुनस्त्वाऽऽदित्या ॰ पूर्णा दिवं ॰ सप्त ते अमे ॰ धामन्ते ॰ इत्येतैर्मूलेन च पूर्णाहुतिं हुत्वा इद ममये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतकतवे सप्तवते अमये महालक्ष्म्ये च न ममेति त्यजेत् वसोर्घारां जहुयात् । संस्रवान् प्राश्य प्रणीताविमोकः ॥ कर्मशेषं समाप्य मूलमन्त्रेण होमदशांशेन दुग्धेन जलेन वा तर्पणं कृत्वा तदशांशेन मार्जयेत् ॥ ततः श्रेयःसंपादनम् ॥ तत आचार्यादीन्वस्राद्येः संपूज्याचार्याय शतं तद्धं तद्धंमष्टौ वा गोमिथुनानि सुवर्णचतुष्ट्यं द्यात् ॥ ब्रह्मणे निष्कर्द्यं गोद्रयं च ऋत्विग्भ्यः प्रत्येकं निष्कत्रयं गोमिथुनं च सहस्रचण्डचां तद्र्धं शतचण्डचां तद्र्धं नवचण्डचामशक्तौ सुवर्णे ततः दानान्याचार्यादिभ्योऽन्येभ्यो वा दद्यात् ॥ किपला्घेतुं नीलरतनं श्वेताश्वं छत्त्रं चामरं भूमि शय्यां सप्त धान्यानि दद्यात् तेषां मन्त्राः दुर्गामखोत्सवे प्रतिपादिता द्रष्ट्वाः ॥ ततो द्वारपालकेभ्योऽन्येभ्यश्च दक्षिणां द्यात् ॥ ततः सर्वकलशोदकेन यज सपरिवारं बेदोक्तमन्त्रैः पौराणैश्वाभिषिश्चेयुः ॥ ततो यजमानो नवग्रहाणामुत्तरपूजां कृत्वा विसृज्य आचार्यहस्ते दत्त्वा देवीं संपूज्य बिलं द्यात् ॥ तत्र क्षित्रयादिनाऽश्वमेषच्छागमहिषाणामन्यतमो देयः विष्रेण तु कूष्माण्डं बिल्विमक्षुश्च देयः ॥ यथा देवीं द्रोणपुष्पिबल्वाम्रदलजातिचम्पकैः संपूज्य उदङ्मुखः कर्ता पूर्वाभिमुखं देवीमुखं वा बलि गन्धाद्यरभयर्च्य । प्रमुस्तवं बलिह्रपेण मम भाग्यादुपस्थितः ॥ प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥ चिण्डकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ॥ चामुण्डाबलिह्याय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥ यज्ञार्थे बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वांघातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ इत्यभि मन्त्र्य ऐं हीं श्रीमिति तत्र पुष्पं क्षिप्त्वा रसना त्वं चिण्डकायाः सुरलोकप्रसाधिका ॥ ॐ हीं हीं खड्नं आं फट्ट इति खड्नं वाऽन्यं शस्त्रं संपूज्य ॐ ॐ कालि कालि यज्ञेश्वरि लोहदण्डाये नमः इति च्छेदयित्वा हीं ऐ ॐ कौशिकीरूपिण्याप्यायतामिति

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥८८॥ देन्ये निवेद्य शेषं गृहीत्वा ॥ ॐ पूतनाये नमः ॥ ॐ चरक्ये॰ ॐ विदार्थे॰ ॥ ॐ पापराक्षस्य नम इति निवेद्य माषिष्टमयशत्रं कृत्वा खड़ेन छेदियत्वा स्कन्दाय॰ ॥ विशाखाय॰ ॥ दत्त्वा शेषं रक्षोभ्यो हरेत् ॥ मन्त्रस्तु ॥ ॐ ह्रीं स्फुर २ कुम्भ २ स्तन २ गुलु २ धतु २ मारय २ विद्वावय २ कम्पय ३ कम्पातय २ कन्तापय २ पूरय २ ॐ ह्रीं ॐ हूं कुं फट् २ हं मर्दय २ हुं इति ॥ ततः शेषेण बिलं द्यात् ॥ तत्र मन्त्राः बिलं गृह्णन्तिसमं देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मक्तो येऽश्विनौ रुद्धाः सुपर्णाः पन्नगा ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डािकन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ जृम्भिकाः मछिविद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विन्नविनाशकाः ॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेतसुखावहाः ॥ इति ॥ ततः स्नात्वा तिलकं धृत्वा खिङ्गनी शूलिनी पाहि नो देवीति चतुष्ट्येन नमो देव्ये इति पञ्चकेन सर्वस्वह्रपे इति पञ्चभिश्च स्तुत्वा नमस्कृत्य पुष्पाञ्चलि दत्त्वा प्रार्थयेत ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ महिषप्रि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्य देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ततः गुह्मातिगुह्मगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु में देवि प्रसादात्तव सुन्दिर ॥ इति देव्ये निवेद्य सूलेन पुष्पेण देवीसुद्वास्य नासया हृदि प्रविष्टां विभाव्य षडङ्गं कृत्या उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते इति विस्उय ॥ आचार्याय दत्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥ त्रेलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतद्यान्विते ॥ दानेनानेन संतुष्टा सुप्रीता वरदा भवेति॥ नवरात्रकृतनवचण्डचां दशम्यां देवीं विसर्जयेत् ॥ मन्त्रस्तु ॥ उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सहेति॥ उत्थाप्य॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देविचण्डिके॥ ब्रज स्रोतोजलं वृद्धचै स्थीयतां च जले हिन्ह ॥ दुर्गे देनि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ॥ संवत्सरे ज्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥ इमां पूजां मया देनि यथा शक्तयुपपादिताम् ॥ रक्षार्थे त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥ इति जलेन प्रवाहयेत् ॥ ततोऽग्नि संपूज्य विभूति धृत्वा गच्छ

उपा.स्त. १ दुर्गाः २४० ११४

गच्छेति विसृज्य कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धचर्थे यथाशक्ति महालक्ष्मीप्रीत्यर्थे ब्राह्मणान् भोजयिष्ये इति संकरूप । स्मृत्या च नामोक्त्या॰ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्॰ ॥ इति श्लोकौ पठित्वा यित्वा सर्वे कर्मेश्वरापेणं कृत्वा सुनाह्मणान् भोजयित्वा हीनदीनान्धकृपणेभ्योऽत्रं दत्त्वा ताम्बूलद्क्षिणादिभिः इति उक्लकर-गोविन्द्कृतनवरात्रवार्षिकपूजाविधिनिह्नपणम् ॥ अथ नियमग्रहणमन्त्रः ॥ निराहारः स्थास्यामि नियतः शुचिः॥ ततो भोक्ष्ये नवम्यां तु तव प्रीत्यै महेश्वरि ॥ १ ॥ इदं व्रतं मया देवि कृतं प्रीत्ये तव प्रभो ॥ न्यूनं संपूर्णतां यातु त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ २ ॥ विधिनाऽविधिना वाऽपि कृतमेतन्मया वृतम् ।। सर्वदेवस्वरूपा मे प्रीयतां परमेश्वरी ॥ ३ ॥ देवीसन्तोषणार्थं तु मया सो नियमः कृतः ॥ तमद्याहं विमु आमि तव तुष्टचे महेश्वरि ॥ ४ ॥ अथ नवरात्रिशारदोत्सवघटस्थापनादिनिर्णयः ॥ उक्तं च समयमयुखे हेमाद्रौ च ॥ आश्विने शुक्रपक्षे तु कर्तव्यं नवरात्रकम् ॥ प्रतिपदादिकमेणैव यावच नवमी भवेत् ॥ ५ ॥ तत्र सा पूर्वाह्नव्यापिनी प्राह्मा ॥ सिते पक्षे नवरात्रमुपोषितः ॥ सुरुनातस्तिलतेलेन पूर्वाह्णे पूजयेच्छिवाम् ॥ ६ ॥ इति देवीपुराणे तस्य कर्मकालतोक्तेः ॥ कर्मणो यस्य यः कालस्तरकालन्यापिनि तिथिरित्यनेन कर्मकालन्यापिन्यामेव कर्तन्योक्तः ।। न चात्रोपवासानुरोधेन निर्णयः ॥ तस्य पूजयेदित्यादिदेवीपुराणादौ सहितो भवति ॥ नखानि निकृन्तति स्नातीत्यादिवत्फलसंस्कारत्वेन पूजाङ्ग त्वावगमात् ॥ अतः प्रधानभूतपूजाकारुस्य पूर्वाह्नव्यापित्वेनैव निर्णयः ॥ पूजायास्तु प्राधान्यं फलसंबन्धात् सा च स्कान्दे ॥ आश्विन मासि मेवान्ते महिषासुरमिंद्नीम् ॥ देवीं संपूजियत्वा ये अर्घरात्रेऽष्ट्रमीषु च ॥ ७ ॥ क्रीडिन्त विविधैभींगैर्देवलोके सुदुर्लभे ॥ नाधयो व्याधयस्तेषां न च शत्रुभयं भवेदिति ॥ ८ ॥ यत्रु गोविन्दार्णवे देवीपुराणे ॥ शरतकाले महापूजा कियते या च वार्षिकी ॥ सा कार्योदयगामिन्यां न तिथेस्तत्र युगमतेति ॥ ९ ॥ तत्रोदयगामित्वमपि प्रायः पूर्वाह्नव्यापित्व एव भवतीति

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥८९॥

न निरोधाशङ्का ।। युग्मता युग्मनाक्यानुरोधेन निर्णय इत्यर्थः ।। नार्षिकीत्यनेन संवत्सरस्यादौ चैत्रशुक्कप्रतिपद्यपक्रम्य नवम्यन्ता पूजाऽभिधीयते ।। ततश्च शरद्वसन्तयोस्तुल्य एव दुर्गोत्सवः कार्यः ॥ यानि तु—यो मां पूजयते नित्यं द्वितीयादिगुणान्विताम् ॥ प्रतिपच्छारदे ज्ञात्वा सोऽश्नुते सुखमन्ययम् ॥ १० ॥ यदि कुर्यादमायुक्ता प्रतिपत्स्थापने मम ॥ तस्य शापायुतं दत्त्वा अस्मशेषं करोम्यहम् ॥ ११ ॥ आश्रहात्कुरुते यस्तु कलशस्थापनं सम् ॥ तस्य संपद्विनाशः स्याज्ज्येष्टः पुत्रो विनश्यति ॥ १२ ॥ तथा ॥ न दर्शकलया युक्ता प्रतिपचण्डिकार्चने ॥ उदये द्विमुहूर्ताऽपि श्राह्मा सोदयगामिनी ॥ १३ ॥ या चाश्वयुजमासे स्यातप्रतिप द्धद्रयाऽन्विता ॥ शुद्धमम्बार्चनं तस्यां शतयज्ञफलप्रदमित्यमायोगनिषेधकानि ॥ १४ ॥ यानि च ॥ द्वितीयाशेषसंयुक्ता प्रतिप चण्डिकार्चने ॥ मोहादथोपदेशाद्वा कृता पुत्रविनाशिका ॥ १५ ॥ आरम्भे नवरात्रस्य द्वितीया त्रुटिसंयुता ॥ न केवलं तिथि हन्ति वेधात्सा पुत्रसंपदमित्यादीनि द्वितीयायोगनिषेधकानि ॥ १६ ॥ तान्युभवविधान्यपि सर्वाणि निर्मूलानि ॥ समूलत्वेऽपि स्परं सत्प्रतिपक्षत्वाद् निर्णायकानि ॥ चन्द्रप्रकाशे ॥ प्रातरावाहयेहेवीं प्रातरेव प्रवेशयेत् ॥ प्रातः प्रातश्च संपूज्य प्रातरेव विस र्जयेदित्युक्तम् ॥ १७ ॥ सित संभवे प्रतिपदः आद्यं नाडीषोडशकं त्यक्त्वा कलशं स्थापयेत् ॥ आद्याः षोडश् नाडीस्तु लब्ध्वा यः कुरुते नरः ॥ १८ ॥ कलशस्थापनं तत्र ह्यरिष्टं जायते ध्रुविमति देवीपुराणवचनात् ॥ कलशस्थापने वैधृतिचित्रादियोग निषेधकानि वचनानि निर्मूलानि ॥ यथा तानि—भद्रायुता चेत्प्रतिपत्तुं लभ्यते विरुद्धयोगैरपि संगता सती ॥ सैवापराह्ने विबुधे विंघेया खीपुत्रराज्यादिविषृद्धिहेतुरिति ॥ १९ ॥ कलशस्थापनं तु दिवैव कार्यम् ॥ न रात्रो तदुक्तं मारस्ये ॥ कार्यं न च कुम्भाभिषेचनमिति ॥ अत्र त्रिरात्रमप्युक्तं धौम्येन ॥ त्रिरात्रं चापि कर्तव्यं सप्तम्यादि यथाक्रममिति ॥ २०॥ अथ विस्तरेण नवरात्रकृत्यम् ॥ देवीपुराणे ॥ कन्यासंस्थे रवौ ज्ञुकज्जुक्कामारभ्य नन्दिकाम् ॥ अयाचित्वाऽथवेकाशी नक्ताशी वाऽथ वाय्वदः॥२१॥ प्रातःस्नायी जितद्रन्द्रस्त्रिकालं शिवपूजकः ॥ जपहोमसदायुक्तः कन्यकां भोजयेन्मुदा॥२२॥ शिवश्र शिवा च शिवौ

ड्या.स्त.

तयोः पूजकः ॥ नन्दा च प्रतिपदेव प्रथमोपस्थितत्वात् ॥ भविष्ये ॥ त्रिरात्रं चापि कर्तव्यं सप्तम्यादि यथाक्रमम् ॥ तत्र प्रतिपदि पूर्वाह्ने तिलतेलेन स्नातो यजमानो गणपति संपूज्य देशकालौ निर्दिश्य नवमीपर्यन्तमुपवासाद्यन्यतरनियमोपेतो दुर्गापूजनममुक फलकामः परिसंकरपयेत्।।ततः कदलीस्तम्भवस्त्रादिमण्डिते गृहे चतुरस्रचतुईस्तवेदिकोपरि सर्वतोभद्रादिमण्डलं विधाय तत्र महीद्यौ रित्यादिवरूणपूजान्तं कलशस्यापनं कुर्यात् ॥ सौवर्णादिप्रतिमापूजार्थं पूज्या मण्डलकुम्भस्थेति देवीपुराणात् ॥ मृनमयादिका कल शस्य पश्चादासने स्थाप्या वेदिकोणेष्वपि चत्वारः कलशाः स्थाप्याः॥चतुरः कलशान्यस्तु दद्याद्देवगृहे नरः॥ चतुःसमुद्रवलयां तु अङ्कते वसुधरामिति॥२३॥विष्णुधर्मोत्तरात् ॥ प्रतिमा च हेमादिमयी देवीपुराणे ॥ हेमराजतमृद्धातुशैलचित्रार्पिताऽपि वा॥ खङ्गे **ञ्चलार्चिता देवी सर्वकामफलप्रदा॥२४॥मृन्मयीं प्रतिमां कृत्वा बिल्वे वा यस्तु पूजयेत् ॥ आत्मवित्तानुसारेण स लभेन्मौक्तिकं फल** मिति॥२५॥प्रतिमालक्षणम् ॥ मन्स्यपुराणे ॥ जटाज्र्टसमायुक्तामधैन्दुकृतलक्षणाम् ॥ लोचनत्रयसंयुक्तां पद्मेन्दुसदशाननाम् ॥२६॥ अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् ॥ नवयौवनसंपन्नां सर्वाभरणभूषिताम्॥२७॥सुचारुदर्शनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम्॥त्रिभङ्ग स्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम्॥२८॥त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात्खङ्गं चक्रं तथैव च ॥ तीक्ष्णं बाणं तथा शक्ति वामतोऽपि निवेशयेत्॥ २९ ॥ खेटकं पूर्णचापं च पाशमंकुशमूर्धजम् ॥ घण्टां वा परज्ञुं वाऽपि वामतः सन्निवेशयेत् ॥ ३० ॥ अधस्तान्महिषं तद्व द्विशिरस्कं प्रदर्शयेत ॥ शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खङ्गपाणिनम् ॥ ३१ ॥ हृदि शुलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्रविभूषितम् ॥ रक्तरकी कृताङ्गं च रक्तविस्फारितेक्षणम् ॥ वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननम् ॥ ३२ ॥ सपाशवामहस्तेन धृतकेशं द्विधिरवक्रं च देन्याः सिंहं प्रदर्शयेत् ॥ ३३ ॥ देन्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिंहोपरि स्थितम् ॥ किंचिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठं महि बोपरि ॥ ३४ ॥ स्तूयमानं च तदूपममरैः सन्निवेशयेदिति ॥ ध्यानमध्येवम् ॥ एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थ मम सर्वदा ॥ ३५ । आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ अस्यां मूर्ती समागच्छ स्थिति मत्कृपया कुरू ॥ ३६ ॥ रक्षां कुरू सदा भद्रे विश्वे

ब.क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥९०॥ श्विर नमोऽस्तु ते ॥ ३७ ॥ इत्यावाहनम् ॥ भगवति दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि स्थिरा भव सुप्रसन्ना भव इत्यपि पठिन्त ॥ पूजादिमन्त्रश्च कुर्याहेन्याश्च मन्त्रेण इत्यभिधाय ॥ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ ३८ ॥ अनेनैव तु मन्त्रेण जपहोमादि कारयेदिति पुराणोक्तेः ॥ तिष्ठिङ्गेः पूजयेन्मन्त्रेः सर्वदेवान् समाहितः ॥ ३९ ॥ अग्निपुराणाद्दैदिक आगमिको वा ॥ नान्नां सर्व समापयेदिति साधारणवाक्यात्प्रणवादिचतुर्थ्यन्तनमोऽन्तनाम मन्त्रो वा ॥ स्कान्दे तु दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखिवनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्तया दुर्गी अनेनैव तु मन्त्रेण जपहोमादि कारयेत् ॥ छत्रचामरादिभी राजोपचारैः पूजा ॥ तदन्ते प्रणम्य देवीं प्रार्थयेदनेन षित्र महामाये चासुण्डे सुण्डमालिनि ॥ ४१ ॥ द्रव्यमारोग्यविजयं देहि देवि नमः सदा ॥ भूतप्रेतिपशाचेभ्यो श्वरि ॥ ४२ ॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भ्येभ्यो रक्ष मां सदा ॥ ४३ ॥ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सुर्वार्थसाधिके ॥ गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४४ ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि ४५ ॥ ततो दुर्गामन्त्रं वैदिकमागिमकं वा जपेत् ॥ दुर्गात्रतो जपेन्मन्त्रमेकचित्तः समाहित इति देवीपुराणात् ॥ यद्वा माहात्म्यं भगवत्यास्तु पुराणादिषु कीर्तितम् ॥ पठेच शृणुयाद्वाऽपि सर्वकामसमृद्धये ॥ ४६ ॥ तथा एकोत्तराभिवृद्धचा तु नवमी याव देव हि ॥ चण्डीपाठं जपेञ्चैव जापयेद्वा विधानतः ॥ ७७ ॥ यद्यपि देवीपुराणे जपपूजादिवद्वोमोऽपि प्रत्यद्वमुक्तस्तथापि अष्टम्यां वा कार्यः ॥ ब्रह्मपुराणे तत्राष्टम्यां भद्रकालीत्युपक्रम्य होमैर्बाह्मणतर्पणीरित्यष्टमीकृत्यमध्ये वै यथाविधि ॥ जपं होमं च विधिवत्कुर्यात्तत्र विभूतये ॥ ४८ ॥ इति कालिकापुराणात् ॥ शिष्टाचाराच्च ॥ बलिदानमप्यष्टमीनवम्योरेव वा ॥ पुनः पूजां तथाऽष्टम्यां विशेषेण समाचरेत् ॥ ४९ ॥ जागरं च स्वयं कुर्याद्वलिदानं महा निशि ॥ प्रभूतबलिदानं च नवम्यां विधिवचरेत् ॥ इति कालिकापुराणवचनात् ॥ ५० ॥ अत्र यद्यपि शिष्टपरिगृहीतकालिका

डपा.स्त. इ

पुराणादिषु मद्यस्वगात्ररुधिरपञ्जघातादिकष्ठुकम् ॥ तथापि ब्राह्मणस्य न भवति ॥ मद्यं दत्त्वा ब्राह्मणस्तु ब्राह्मण्यादेव द्वीयते ॥ स्व गात्रक्षिरं दत्त्वा ब्रह्महत्यामवाष्त्रयादिति कालिकापुराण एव निषेधात् ॥ ५१ ॥ सात्त्विकी जपयज्ञाधैनैवेद्यैश्च निरामिषीरत्येतत्प्र कारकसात्त्विकपूजाया भगवद्गीतादिषु ब्राह्मणाधिकारिकृताया एवोक्तेः ॥ पशुबलिदानस्य विजयार्थे नृपोत्तम इति राजपुरस्का रेणेव विहितत्वाच ॥ ब्रह्महत्यामवाप्तुयादिति कालिकापुराणे निषिद्धत्वात् ॥ अतो माषभक्तादिना तेन बलिदानं कार्यम् ॥ माष कुमापमांसाचैर्देयो दिश्च बिलिनिशि ॥ कूष्माण्डश्रेश्चदण्डश्च मद्यमासव एव च ॥ ५२ ॥ एते बिलसमा ज्ञेयास्तृतौ छागसमाः स्मृता इति कालिकापुराणात् ॥ ५३ ॥ अथ देवीगृहे दीपा अहोरात्रं ज्वालनीयाः ॥ मतस्यपुराणे ॥ गीतवादित्रनिर्घोषं देवस्यामे च कारयेत् ॥ घण्टा भवेदशक्तस्य सर्ववाद्यम्यी यत इति ॥ ५४ ॥पूजा च प्रत्यहं त्रिकालं कार्या ॥ त्रिकालं शिवपूजक इति पूर्वोक्तदेवीपुराणात् ॥ ज्योतिःशास्त्रे सप्तम्यां बिरुवशाखापूजोक्ता ॥ आश्विनस्य सिते पक्षे सुमुहूर्तेन सप्तमी ॥ तस्यां च पत्रिका पूजा कर्तव्या नवनायकैः ॥ ५५ ॥ प्रशस्तां सफलां बिल्वशाखामाहृत्यः पूजयेदिति ॥ ५६ ॥ अथ बोधनप्रकारः ॥ तत्कालो लिङ्गपुराणे ॥ कन्यायां कृष्णपक्षे तु पूजयित्वाऽऽरभेदिवा ॥ नवम्यां बोधयेदेवीं महाविभवविस्तरैः ॥ ५७ ॥ भविष्ये ॥ षष्टयो बिल्वतरौ बोधं सायं संध्यासु कारयेत् ॥ देवीपुराणे ज्येष्ठानक्षत्रयुक्तायां षष्ठचां बिल्वाभिमन्त्रणम् ॥ ५८ ॥ बिल्ववृक्षाय नम इति बिल्वतरं संपूज्य बिल्ववृक्षे जयन्तीत्यादि ।। दुर्गे इहागच्छेत्यादिना दुर्गामावाह्य पूजियत्वा गीतवाद्यघोषपुरः सरं देवीं विबोधयेत्। मन्त्रस्तु ॥ रावणस्य वधार्थाय रामस्यानुत्रहाय च ॥ अकाले ब्रह्मणा बोधो देव्यास्त्विय कृतः पुरा पक्षे नवम्यां मार्गयोगतः ॥ श्रीवृक्ष बोधयामि त्वां यावतपूजां करोम्यहमिति ॥ ६० ॥ षष्ट्यां तु इष इत्यादेः मप्याश्विने षष्ट्रचां सायाह्ने बोधयाम्यत इति ॥ ततो बिल्वतरोरामन्त्रणम् ॥ मेरुमन्दारकैलासिहमविच्छखरे गिरौ। जातः श्रीफलवृक्ष त्वमम्बिकायाः सदा प्रियः ॥ ६१ ॥ श्रीशैलशिखरे जातः श्रीफलं श्रीनीकेतनः

बृ.क्क्यो.र्फ. धर्मस्कंध ८ ॥९१॥

वृक्ष पूज्यो दुर्गास्वरूपत ॥६२॥ इति॥ अपरेद्युः पुनरपि संपूज्य कृताञ्जलिः प्रसादयेत्॥ बिल्ववृक्षमहाभाग सर्वदा शंकरित्रय ॥६३॥ गृहीत्वा तव शाखां तु दुर्गापूजां करोम्यहम् ॥ शाखाच्छेदोद्भवं दुःखं न च कार्यं त्वया प्रभो ॥ ६४ ॥ ततः फलयुतामपराजित्। दिग्गतामेकां शाखां छेदयेद्वानस्पत्येन मन्त्रेण ॥ कचित्तु छिन्धि फटू ॐ हुंफटू ॐ हुंफट्र स्वाहेति मन्त्रः ॥ ततः शाखां गृहे बिल्वशाखाये नम इति पूजियत्वा बिल्वशाखायां मृन्मयप्रतिमायां च देवीमावाहनपुरः सरं पूजियत्वा माषभकादि बिल च दत्त्वा दोलादिना शाखां प्रतिमां च पूजागृहद्वारदेशे स्थापियत्वा माषभक्ता देवलि दत्त्वा पूजागृहस्थानि भूतानि भूतेभयो नम इति गन्धादिभिः संपूज्य । भूताः प्रेताः पिशाचाश्च ये वसन्त्यत्र भूतले ॥ ते गृह्णनतु मया दत्तो बलिरेष प्रसाधितः ॥ ६५ ॥ पूजिता गन्धपुष्पाद्यैर्वेलिभिस्तिपितास्तथा ॥ देशाद्समाद्विनिःसृत्य पूजां पश्यन्तु मत्कृताम् ॥ ६६ ॥ भूतेभ्य एष माषभक्तविलर्नम अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिपालकाः ॥ भूतानामिवरोधेन पूजाकर्म करोम्यहम् ६७ ॥ फहिति तान्यपसारयेत् ॥ स्थितेषु तत्र भूतेषु नैवेद्यं मण्डलं तथा ॥ विल्डम्पन्ति महालुब्धा न च गृह्णन्ति देवताः ॥ ६८ ॥ तस्माद्यत्नेन कर्तव्यं भूतनामपसारणमिति कालिकापुराणात् ॥ सर्षपादीश्च विकिरेत् ॥ ततः पुनः शाखायां प्रतिमायां वाद्यादिपुरःसरं पूजागृहं प्रवेश्य ॥ आरोपिताऽसि दुर्गे त्वं मृन्मये श्रीफलेऽपि च ॥ कैलासशिखराद्देवि विनध्यादेहिमपर्वतात् ॥६९॥ आगत्य विरुवशाखायां चिण्डके कुरु सन्निधिम् ॥ भगवति दुर्गे इहागच्छेत्युभयोरावाह्य ॥ स्थापिताऽसि मया देवि श्रीफले मृनमयेऽपि च ॥ आयुगरोग्यमेश्वर्य देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ७० ॥ भगवति दुर्गे इह तिष्ठेति स्थापयित्वा ॥ दुर्गे दुर्गस्वह्रपाऽसि सुरतेजो महाबले ॥ सदानन्दकरे देवि प्रसीद मम सिद्धये ॥७१॥ ष्ह्येहि भगवत्यम्ब शत्रक्षयजयप्रदे ॥ भिक्ततः पूजयामि त्वां दुर्गे देवि सुरार्चिते ॥ ७२ ॥ प्रह्वेश्च फलोपेतेः पुष्पेश्च सुमनोहरैः ॥ प्रह्ववे संस्थिते देवि पूजये त्वां प्रसीद् मे ॥ ७३ ॥ दुर्गे देवि इहा गच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥ यज्ञभागानगृहाण त्वं योगिनीकोटिभिः सह ॥ ७४ ॥ इति कृताञ्जलिः पठेत् ॥ ततो जयन्त्यादिदुर्गाये

उपा.स्त. हुर्गा.

्पाद्यपुष्पगन्घाक्षतकुङ्कमद्धिद्वोकुशतिलबिह्वपत्रसहितजब्देनार्घ्यमाचमनीयं पञ्चामृतस्नानीयपुनराचमनीयवस्त्र दुर्गाये नम इति पुष्पाञ्चलित्रयं दद्यात् ॥ ततः अमृतोद्भवं श्रीवृक्षोत्थं शंकरस्य सद प्रियम् ॥ बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥ ७५ ॥ इति बिल्वपत्रम् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवादीनां द्रोणपुष्पं सदा प्रियम् ॥ तत्ते दुगैं प्रयच्छामि सर्वकामार्थिसिद्धये ॥ ७६ ॥ इति द्रोणपुष्पं च निवेद्य ॥ जयन्तीत्यादिना पुष्पधूपदीपनैवेद्यपुनराचमनीयताम्बू लानि दत्त्वा ॥ पूजासाद्गुण्यार्थं दक्षिणां दत्त्वा स्तुतिभिः स्तुत्वा प्रणम्य बद्धांञ्जलिः प्रार्थयेत् ॥ महिषप्ति महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ॥ द्रव्यमारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ ७७ ॥ कुंकुमेन समालब्धे चन्दनेन विलेपिते ॥ बिल्वपञ्चतापीडे दुर्गेऽहं शरणं गतः ॥ ७८ ॥ सर्वमङ्गलेति रूपं देहि इति च श्लोकं पठेत् ॥ बलिं च दद्यात् ॥ एवमेव महाष्टम्यामिप देवीपूजनं विशे षतस्त्वर्धरात्रे जागरणं च राजा विजयकामोऽर्धरात्रे विशेषपूजापूर्वकं बिलं दद्यात् ॥ तद्र्धयामिनीशेषे विजयार्थं नृपोत्तमः ॥ पञ्चाब्दं लक्षणोपेतं गन्धधूपस्रगार्चितम् ॥ ७९ ॥ विधिवत्कालि कालीति जप्त्वा खङ्गेन घातयेत् ॥ इति देवीपुराणात् ॥ पञ्चाब्दं महिषमजं वा ॥ तत्रैव शस्त्रादिपूजनं च कुर्यात् ॥ महानवम्यामेव पूजाबिलदानं होमश्र ॥ होममनत्रश्च जयन्तीत्यादिः ॥ अने नैव तु मन्त्रेण जपहोमादि कारयेदिति देवीपुराणात् ॥ द्रव्यं च तत्रैवोक्तम् ॥ पूजयेत्तिलहोमैश्च दिधक्षीरघृतादिभिः ॥ ८० ॥ केचित्तु च जुहुयात्पायसं तिलसपिंषेति रहस्यश्रन्थवचनात् सप्तशतीस्तवेन प्रतिश्लोकं च तिलसपिंमिश्रपायसेन होमं क्कर्वन्ति ॥ राज्ञा त्वश्वपीडाशान्तये ब्रह्मपुराणोक्तारैवतपूजाऽपि कार्या ॥ स च वडवारूपायां मुखायां सूर्याद्वत्पन्नो वाजिगणाधिपतिः॥ पूजामन्त्रः शालिहोत्रे ॥ नमो देवाधिदेवाय तुरङ्गबलचारिणे ॥ सूर्यपुत्राय देवाय तुरङ्गसहिताय च ॥८१॥ तुरङ्गपरिपद्यस्य नृगजोपरि घावति ॥ साश्वमश्वाधिपं रक्ष सतूणं त्वां व्रजाम्यहम् ॥८२॥ मन्त्रेणानेन देवं तं पाद्याद्यैरर्चयेत्सुधीः ॥ प्रातर्दशम्यां पूजा च विधाय च विसर्जयेत् ॥ ८३ ॥ संपूज्य प्रेषणं कुर्यादृशम्यां शाबरोत्सवैरिति भविष्यपुराणात् ॥ तत संप्रेषिता देवी दशम्यां शाबरोत्सवैरिति

इ.क्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥९२॥

कालिकापुराणाञ्च ॥ ८४ ॥ एवं पूजां विघाय प्रणम्य ॥ दुर्गा शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदा शिवाम् ॥८६॥ मङ्गलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्ववन्द्यां चिष्डकां प्रणमाम्यहम् ॥८६॥ सर्वदेव मयीं देवीं सर्वरोगभयापहाम् ॥ ब्रह्मेशविष्णुनिमतां प्रणमामि सदा उमाम् ॥ ८७ ॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिन्यस्थान निवासिनीम् ॥ योगिनीं योगिवद्यां च चिष्डकां प्रणमाम्यहम् ॥ ८८ ॥ ईशानमातरं देवीमिश्वरीमिश्वरिप्रयाम् ॥ प्रणतोऽस्मि सदा हुर्गा संसाराणवतारिणीम् ॥ ८९ ॥ य इदं पठित स्तोत्रं शृणुयाद्वाऽिष यो नरः ॥ स मुक्तः सर्वपापेभ्यो दुर्गया सह मोदते ॥ ९० ॥ इत्यादिभिः स्तोत्रेः स्तुत्वा बद्धाञ्चलिमीहष्व्रीत्यादिश्लोकचतुष्टयेन प्रार्थ्य ॥ विधिहीनं कियाहीनं भिक्तहीनं यदिनतम् ॥ भवतु तत्सर्वे त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ९१ ॥ इति प्रसाद्य क्षमस्वेत्युक्तवा एकं पुष्पम् ॐ दुर्गाये नमः इत्येशान्यां निक्षिप न्विसृज्य ॥ उत्तिष्ठ देवि चण्डिशि शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ ९२ ॥ गुच्छ गुच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चिण्डिके ॥ वज स्रोतोजले वृद्धचै तिष्ठ गेहे च भूतये ॥ ९३ ॥ इत्युत्थाप्य गीतवाद्यब्रह्मघोषपुरःसरं स्रोतो जलसमीपं नीत्वा दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ॥ संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥ ९४ ॥ इमां पूजां मया देवि यथाशक्ति निवेदिताम् ॥ रक्षणार्थं समादाय ब्रज स्वस्थानमुत्तममिति प्रवाहयेत् ॥ ९५ ॥ ततो देवीपूजास्थाने शान्ति कलशोदकेन ब्राह्मणैरभिषिक्तस्तेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणान्भोजियत्वा बन्धुभिः सार्धे सुस्रीत ॥ इति श्रीह० वृ० घ० उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये नवरात्रीनवचण्डीदुर्गाविधानप्रयोगनिरूपणं नाम द्वात्रिशं प्रकरणम् ॥३२॥ अथ शतचण्डीविधानम्॥ उक्तं च कोडतन्त्रे ॥ यदा यदा सतां हानिरात्मनो ग्लानिरेव च ॥ तदा कार्या शतावृत्ती रिष्ठुन्ना भूतिवर्धना ॥ ३ ॥ दुःस्वप्न दर्शने घोरे महामारीसमुद्भवे ॥ पुष्टिप्रदा शतावृत्तिः कार्या चायुःक्षये तथा ॥ २ ॥ महाभये छेदयोगे दुर्भिक्षे मरणेऽपि च ॥ कुर्यात्तत्र शतावृत्ति देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥ अद्भुते च समुत्पन्ने बान्धवानां महोत्सवे ॥ कुर्याचण्डीशतावृत्ति सर्वसंपत्तिकार

उपा.स्त. ३

<mark>त्रिपञ्चसप्तिभिरिति ॥ एतच्</mark>छ्रोकत्रयं क्रोडतन्त्रनाम्ना पठचते तत्तु निर्मूलमिति नागोजीभट्टेन स्वकृतदुर्गाव्याख्यायां प्रतिपादितं तत्र मूलं मृग्यम्

णम् ॥ ४ ॥ शतावृत्त्या भवेदायुः शतावृत्त्या समागमः ॥ वश्या भवन्ति राजानः श्रियमाप्नोति संपदाम् ॥ ५ ॥ धनार्थी प्राप्तुया दर्थं पुत्रकामो लभेत्सुतम् ॥ विद्यार्थी प्राप्तुयाद्विद्यां रोगी रोगात्प्रमुच्यते ॥ ६ ॥ चतुर्वर्गफलावाप्तिकारणं रिष्ठुनाशनम् ॥ चण्डी शतावृत्तिफलं नास्ति यज्ञे वरानने ॥ ७ ॥ विधिमत्र प्रवस्यामि शृणुष्व वर्रवर्णिनि ॥ निमन्त्रयेत पूर्वेद्युर्विप्रान्निद्यासमन्वितान् ॥ ॥ ८ ॥ अलोलुपावृत्त्व्य शान्तान् देण्या भक्तिसमन्वितान् ॥ मन्त्रोपतन्त्रतन्त्रज्ञान् शतावृत्तौ नियोजयेत् ॥ ९ ॥ उत्तराशास्थिते हंसे श्रुक्वपक्षे तथा श्रुभे ॥ ज्ञार्केन्द्वभ्रगुर्जावेष्ठ सुयोगे सुतियौ तथा ॥ १० ॥ पातककचचण्टादिदोषहीने स्थिरोद्ये ॥ स्थापयेदवर्णं कुम्भमुत्तराभिमुखं स्वयम् ॥ १९ ॥ न विद्ध्याद्यर्शे सुप्ते भूकम्पाकालवर्षणे ॥ वत्रपाते महोत्पाते गुर्वादित्यादिके तथा ॥ १२ ॥ महाग्रुरौ विपन्ने च संवेशे कार्यवस्तुनः ॥ शतावृत्त्यादियागं तु न विद्ध्यात्कदाचन ॥ १३ ॥ त्रिपञ्चसप्तिर्वाऽपि नवेकादशिष्टित्या ॥ अदीर्घदिवसः क्षिप्रं विद्ध्याचिष्टकामसम् ॥ १४ ॥ अयुग्मबाह्मणः कार्या शतावृत्ति सुतिनाशः प्रजायते ॥ १६ ॥ अष्टमी नवमी वाऽपि यदि स्याद्रा चतुर्दशी ॥ शतावृत्तिर्नवावृत्तिः पक्षावृत्तिः क्षमेण च ॥ १७ ॥ शताश्वसेघणोमेथवाजपेयफल प्रदा ॥ अतः कि बहुनोक्तेन चण्डीपाठफलं प्रिये ॥ १८ ॥ प्रत्येकावर्तनं देवि हयमेधेन संमितम् ॥ त्रिरावृत्त्या लभेत्कामान्पञावृत्त्या रिष्ठस्येत् ॥ १९ ॥ अतः कि बहुनोक्तेन चण्डीपाठफलं प्रिये ॥ १८ ॥ प्रत्येकावर्तनं देवि हयमेधेन संमितम् ॥ त्रिरावृत्त्या लभेत्कामान्पञावृत्त्या रिष्ठस्येत् ॥ १९ ॥ अतः कि बहुनोक्तेन चण्डीपाठफलं प्रिये ॥ १८ ॥ प्रत्येकावर्तनं देवि हयमेधेन संमितम् ॥ त्रिरावृत्त्या लभेत्कामान्यञावृत्त्या रिष्ठस्येत्र । १० ॥ भिष्ठसे प्रतिविधानं तु प्रवक्ष्ये प्रीतये नृणाम् ॥ नृपोपद्रव आपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने ॥२०॥

॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ द्यातेति तत्र निमित्तान्याह -नृपोपद्रव इति ॥ २० ॥

बु:कच्चो.र्ज. धर्मस्वंध ८ ॥९३॥

॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ अथ प्रयोगः ॥ शास्त्रोक्तावधिना शंकरालये भवान्यालये वा मण्डपं वेदिभध्यं निर्माय प्रतीच्यां कुण्डं मध्ये कृत्वा कृतनित्यक्रियोऽसुककामः शतचण्डीविधानमहं करिष्य इति संकल्पं विधाय मातृस्थापननान्दीश्राद्धे विधाय स्वस्तिवाचनं कृत्वा अतिवृष्ट्यामनावृष्ट्रो परचक्रभये क्षये॥ सर्वे विद्या विनश्यन्ति शतचण्डीविधौ कृते ॥२१॥ रोगाणां वैरिणां नाशो धनपुत्रसमृद्धयः॥ शंकरस्य भवान्या वा प्रासादनिकटे शुभम् ॥२२॥ मण्डपद्वारवेद्यादचं कुर्यात्सध्वजतोरणम् ॥ तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रताच्यां मध्यतो वा ॥२३॥ स्नात्वा नित्यकृतिं कृत्वा वृणुयादश वाडवान् ॥ जिते न्द्रयान्सदाचारान्कुलीनान्सत्यवादिनः ॥२३॥ व्युत्पन्नांश्चण्डिका पाठरताँ छजादयावतः ॥ मधुपर्कविधानेन वस्नस्वर्णादिदानतः ॥ २५ ॥ जपार्थमासनं मालां द्वात्तेभ्योऽपि भोजनम्॥ मश्रन्तो मन्त्रार्थगतमानसाः ॥२६॥ भूमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चिष्ट्कास्तवम् ॥ माकण्डेयपुराणोक्तं दशकृत्वः सुचेतसः ॥२७॥ अथ कुमारिकापूजने मन्त्रादिकं कुमारीपूजनाध्याये द्रष्ट्व्यम् ॥ नवार्णे चिण्डिकामन्त्रं जपेयुश्चायुक्तं पृथक् ॥ यजमानः कन्यानां दशकं शुभम् ॥२८॥ वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वतोभद्रमण्डले ॥ घटं संस्थाप्य तद्रेय कन्यकश्चापि पूजयेद्वास्रणानिप ॥ उपचारैस्तु विविधेः पूर्वोक्तावरणान्यपि ॥ ३० ॥ एवं चतुर्दिनं कृत्वा पायसात्रैस्त्रिमध्वक्तैर्दाक्षारम्भाफलैरपि ॥ ३१ ॥ मातुलिङ्गीरक्षुखण्डैर्नारिकेलैः ३२ ॥ सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिश्लोके हुतं चरेत् ॥ अयुतं च नवाणैन स्थापितायौ तन्नाममन्त्रतः ॥ कृत्वा पूणोहुति सम्यग्देवमगिन विसृज्य च ॥ ३४ ॥ अभिषिश्रेच यष्टारं विप्रौधः भोजयेच्च शतं विप्रान्भक्ष्यभोज्यैः पृथिग्विधैः ॥ तेभ्योऽपि दक्षिणां दत्त्वा गृह्णीयादाशिषस्ततः ॥ ३६ ॥ एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः ॥ राज्यं धनं यशः पुत्रानिष्टमन्यस्त्रभेत सः ॥ उक्तलक्षणान् दश विपान् मधुपर्क वस्त्रहेमदानादिना वृणुयात् ॥ ते च यजमानदत्तासनेषु दत्तमालाभिः समाहिताः समनसो भगवतीं स्मरन्तः सप्तरातीमूलमन्त्रेण वैद्यां कुम्भं स्थापियत्वा तत्र दुर्गा मावाह्य षोडशोपचारेः संपूज्य तद्ये प्रत्येक दशकृत्वः सप्तशतीमयुतं च नवार्ण जपेयुः। ह्विष्यभोज्यभोजनब्रह्मचर्यभूशयनास्पृश्यास्पर्शादिनियमांश्चरेयुः॥ २०॥

डपा.स्त. । हुर्गा. २४० १२८

॥९३।

अथ गोविन्द्कृतकरूपवरूरयुक्तशतचण्डीप्रयोगः ॥ तत्र अनावृष्टचाद्यखिलदुरितशान्त्यर्थे राज्यावाप्त्यादिसकलकामनासिद्धचर्थे यजमानः शिवालयसमीपे सुसमे भूभदेशे मण्डपं चिकीर्षुर्गणेशकूर्मशेषवसुधानां पूजनं कृत्वा शृतचण्ड्यां षोडशहस्तं सहस्र चण्ड्यां विंशतिहरूतं मण्डपं प्रसाध्य तदाग्नेयस्तम्भे वडवागणेशकूर्मशेषवसुधानां पूजां कृत्वा ताम्रपात्रेऽर्घ्यमादाय जातुभ्यामवनीं गत्वा आगच्छ सर्वेकल्याणि वसुघे लोकचारीणि ॥ उद्धृताऽसि वराहेण सशैलवनकानना ॥ मण्डपं कारयाम्यद्य त्वदूध्वे शुभलक्ष णम् ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भवेति भूम्ये अर्ध्य दत्त्वा मण्डपं विधाय तन्मध्ये ईशान्यां हस्तमात्रां खङ्गुलदप्रां यहवेदीं कृत्वा तत्पिश्यमे शतचण्ड्यां दिहस्तं सहस्रचण्ड्यां चतुर्हस्तं कुण्डं स्थण्डिलं वा चतुरस्रं पद्मकुण्डं वा कुर्यात् ॥ कुण्डं कुण्डग्रन्थोक्तविधिना कृत्वा शतचण्ड्यां पलेन सहस्रचण्ड्यां पलपञ्चकेन मूर्त्यध्यायोक्तध्यानप्रतिपादितां महिषमार्दिनीप्रतिम कारयित्वा प्रारम्भिदने कर्ता सपत्नीकस्तिलतेलेन कृताभ्यङ्गो भूषिताङ्गः संपूर्णकलशहस्तो भद्रं कर्णेभिरिति सण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्योपविश्य देशकालौ स्मृत्वा ममामुककामनासिद्धचर्थ सनवग्रहमखां शतचण्डीं सहस्रचण्डीं वा ब्राह्मणद्वारा कार यिष्ये ॥ तदङ्गतया विहितं गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं चाहं करिष्ये इति संकल्प्य तानि यथावत्कृत्वा आचार्य वृत्वा प्रार्थयेत् ॥ आचार्यः सर्वदेवानां ० ततो ब्रह्माणं सदस्यमृत्विजश्च वृत्वा प्रार्थयेत् ॥ अत्र शतचण्डिजिपे ऋत्विजो नव आचार्यो दशमः सहस्रचण्ड्यां शतमृत्विजः अष्टौ लोकपालाः सर्वेषां मधुपकीदिना पूजां कृत्वा आसनम् ॥ अर्घ्यपात्रजलपात्रांगुलीयककर्णभूषणादि दद्यात् ॥ आचार्याय तु द्विगुणम् ॥ ततः आचार्यः यदत्र संस्थितं सूतं ।। इत्युक्तवा सर्षपान्विकीर्य पञ्चगन्यैः कुशैः आपो हि छेति ज्युचेन मण्डपं प्रोक्ष्य स्वस्त्ययनम् इति मन्त्रद्वयं पठेत् ॥ ततः पूर्वस्याम् ॥ ॐ कादम्बरि गजाह्रढे वज्रहरूते एहाहि गन्धपुष्पसहितिममं क्षीगन्नं बिलं गृहाण २ ममेष्सितं कुरू कुरु स्वाहेति बिलं दत्त्वा द्वारशाखयोः ब्राह्मै नमः ॥ माहेश्वर्ये नमः ॥ चिच्छक्त्यै नमः ॥ मायाशक्त्यै नमः ॥ धात्रे नमः ॥ विधात्रे नमः ॥ शङ्किनिधये बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥९८॥

नमः ॥ पद्मिनघये नमः ॥ द्वारिश्रये नम इति संपूज्य ॥ अधः वास्तुपुरुषमिताङ्गिरवं च संपूज्य ॥ आग्नेध्याम् ॥ उल्के अजा हृदे शक्तिहस्ते एहाहि गन्धपुष्पमहितमिमं क्षीराञ्चबिल गृहाण २ ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा ॥ तत्र रुहमेरवं च संपूज्य ॥ दक्षिण स्याम् ॥ करालि महिषाहृदे दण्डहस्ते एहाहि॰ स्वाहा ॥ इति बिल दत्त्वा द्वारशाखयोः ॥ कौमार्ये नमः ॥ वैष्णव्ये नमः ॥ चिच्छक्तये नमः ॥ वाष्ट्रभरवाय नमः ॥ चिच्छक्तये नमः ॥ मायाशक्तये नमः ॥ धात्रे नमः ॥ विधात्रे नमः ॥ शङ्किष्यये नमः ॥ पद्मिष्यये नमः ॥ चण्डभरवाय नमः ॥ इत्यधः पूजयेत् ॥ नैर्न्नहत्ये ॥ स्काक्षि प्रेतवाहने खङ्गहस्ते एहाहि॰ स्वाहा ॥ इति बिल दत्त्वा क्रोधभैरवाय नमः इति संपूज्य ॥ पश्चिमायाम् ॥ कौबेरि अश्वारूढे पाशहस्ते एद्योहि० स्वाहा ॥ इति बल्ठि दत्त्वा द्वारशाखयोः ॥ वाराह्यै नमः ॥ ऐन्द्री नमः ॥ चिच्छत्तये नमः ॥ मायाशक्तये नमः ॥ धात्र नमः ॥ विचात्रे नमः ॥ शङ्किनिघये नमः ॥ पद्मिनिघये नमः ॥ इति संपूज्य ॥ उन्मत्तभैरवं च संपूज्य ततो वायव्यां हरिते मृगवाहने अङ्कशहरते एहोहि॰ स्वाहा इति विलं दत्त्वा ॥ कपालभैरवाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ उत्तरस्यां यक्षिणि सिंहवाहने गदाहस्ते एह्मेहि॰ स्वाहा ॥ इति बलि दत्त्वा द्वारशाखयोः चामुण्डाये नमः ॥ महालक्ष्म्ये नमः ॥ चिच्छक्त्ये नमः ॥ मायाशक्त्ये नमः ॥ धात्रे नमः ॥ विधात्रे नमः ॥ शङ्कानिधये नमः ॥ पद्मनिधये नमः भीषणभैरवाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ईशान्यां कालि वृषाइहे ज्ञूलहरूते एह्योहि॰ स्वाहा इति वलिं दत्त्वा संहारभैरवं च संपूज्य॥ ईशानपूर्वयोर्माप्ये वैष्णिवि गरुडाहरे चकहरते एहाहि॰ स्वाहा इति बल्जि दत्त्वा भूमि संपूज्य ॥ ततः पूजावेद्यामाग्रेय्यां इंसवाहने अक्षसूत्रकमण्डलुहरूते एह्योहि॰ स्वाहा इति बलिं दत्त्वा ॥ अन्तरिक्षाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ ततः पूजावेद्यामाग्रेय्यां विष्णवे नमः ॥ पूर्वस्यामिन्द्राय नमः ॥ ईशान्यां ब्रह्मणे नमः ॥ पश्चिमायां गणेशाय नमः ॥ सध्ये महाकाल्ये महालक्ष्म्ये महा सरस्वत्यै नमः इहि संपूज्य बृहद्ध्वजो रक्तः सिंहाङ्कितः । ध्वजपताकोच्छ्यणं कृत्वा । आचार्यो ब्रहवेद्यां ब्रहान् संस्थाप्य संपूज्य मध्यवेद्यां पीठे सुखासने उपविश्य ॥ ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥ द्वारिश्रये नमः ॥ दुं दुर्गाये नमः ॥

उपा.स्त. ।

क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ हः अल्लाय फट् ॥ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ श्रीमहालक्ष्मये नमः ॥ इति नत्वा पूर्वोक्तनित्यपूजापद्धतिप्रकारेण आसनादिभृतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकादिमूलविद्यान्यासान् पूर्वीकान्सर्वान्कृत्वा श्रीमहालक्ष्मीध्यानं जपं कृत्वा देव्ये निवेद्यान्तर्यागं कृत्वा वेद्यां सर्वतोभदं कृत्वा तत्र देवताः स्थापयेत् ॥ सध्ये ब्रह्माणणमुत्तरादिषु वायुसोम्मध्यादिक्रमेण अपः वस्त् रहात् द्वादशादित्यान् यक्षान् सर्पान् अप्सरसः गन्धर्यान् ब्रह्मसोममध्ये कुमारमृषभमदिति बह्मन्द्रयोर्मध्ये दुर्गा विष्णु ब्रह्मायिमध्ये स्वधां ब्रह्मयममध्ये मृत्युं रोगं ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपति ब्रह्मवरूणमध्ये अपः ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः ब्रह्मपाद्मुले भूमि तत्रैव गङ्गादिनदीः धाम्नोधाम्न इति सप्त सागरान् बहिः सोमादिसंनिधौ क्रमेण गदां त्रिशूलं वज्रं शक्ति दण्डं खड्गं पाशमङ्कशं पुनरुत्तरादिषु गौतमं अरद्वाजं विश्वामित्रं कश्यपं जमदिष्टं वासिष्ठमत्रिमहृन्धतीं च पूर्वादिषु ऐन्द्रीं कीमारी त्राह्मीं वाराहीं चामुण्डां वैष्णवीं माहेश्वरीं वैनायकीम् इत्यावाह्य संपूज्य बिंह दत्त्वा तनमध्ये मही द्यौरिति भूमि यसीति सप्त घान्यानि क्षित्वा तदुपरि आकलशेष्विति हैमराजतताम्रमृनमयान्यतमं वा कलशं संस्थाप्य इमं मे वहण इति जलेनापूर्य गन्धद्वारासिति गन्धं या ओषधीरिति सर्वौषधीः काण्डात्काण्डादिति दूर्वाः अश्वत्थे वो इति पश्चपछवान् स्योना पृथिवीति सप्त मृदः याः फलिनीरिति फलं परिवाजपितरिति पञ्चरत्नानि हिरण्यगर्भ इति हिरण्यं युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेण संवेष्टच पूर्णा द्वीति पात्रं निधाय तत्र रक्तवस्त्रे यन्त्रं लिखेत्।। तद्यथा चतुर्द्धारं चतुरस्रं यन्त्रं कृत्वा मध्ये त्रिकोणं कृत्वा तत्पिश्रमार्धे त्रिकोणं व्यस्तं कृत्वा पूर्वस्य पश्चिमरेखांसंलग्नमन्यित्रकोणं कृत्वा तत्कोणसंलग्नान्यन्यानि त्रिकोणानि कृत्वा तेन बहिः षट् कोणाः सध्ये षट्काश्च संपद्यन्ते ॥ तन्मध्ये चान्यत्रिकोणिमिति यन्त्रं विलिख्य शतचण्डचां पलेन सहस्रचंडचां पञ्चपलेन तद्धेन तद्धींनं वा प्रतिमां पूर्वीक्तध्यान्यतां काग्यित्वा अग्न्युत्तारणप्रतिष्ठापूर्वकं तस्मिन्कलशे यन्त्रं स्थापयित्वा नित्यपूजाप्रकारेण पात्रासादनपूर्वकं पीठपूजनावरणदेवता पूजनयुतं श्रीमहालक्ष्मीपूजनं कृत्वा राजोपचारान् निवैद्य नीराजनं कृत्वा प्रदक्षिगानमस्कारान् कृत्वा चतुःषियोगिनीपूजामारभेत ॥

ष्ट-क्यो.र्ण.' धर्मस्कंघ ८ ॥९५॥

तत्र देव्यमे रक्तवस्त्रे अष्टौ पत्राणि कृत्वा तस्योपरि उपरि एवमष्टौ पत्रपङ्कीः विधाय तत्र ग्रुक्कवर्णे ग्रूलडमरूपाशासिधरे सवा लंकारभूषिते ससैन्यजये इहागच्छागच्छेमं पायसविलं गृहाण२ स्वाहा इत्यावाह्य संपूज्य पायसविलं दस्वा १ एवं विजये २जयनित ३ अपराजिते ४ दिव्ययोगिनि ५ महायोगिनि ६ सिद्धयोगिनि ७ गणेश्वरि ८ इति प्रथमाष्ट्रकम् ॥१॥ ततो गौरवणं अक्षमालांकुश पुस्तकवीणाधरे प्रेतासने एहोहि इमं पायसबिल गृहाण २ स्वाहा १ एवं डािकिनि २ कािल ३ कालराित ४ निशाचिरि ५ टंका रिणि ६ रहवेतािलिनि ७ हुंकािरिणि ८ इति द्वितीयाष्ट्रकम् ॥ २ ॥ ततो रक्तवर्णे ज्वालाशक्त्यभयवरदे ऊर्ध्वकेशि एहोहीत्यादि प्राग्वतस्वाहान्तमुचार्य बिल निवेद्य १ एवं विरूपिक्षि २ झुक्काङ्गि ३ नरभोजिनि ४ फट्रकारिणि ६ वीरभद्रे ६ धूमाङ्गि ७ कलह प्रिये ८ इति तृतीयाष्ट्रकम् ॥ ३ ॥ ततो विद्युत्सिन्नभे ध्वजबाणधनुष्पाशहस्ते राक्षसि एह्मोहि॰ स्वाहान्तमुचार्य बिल निवेद्य १ एवं रक्ताक्षि २ विश्वरूपे ३ भयंकरि ४ वीरकोमारि ६ चिण्डके ६ वागहि ७ मुण्डधारिणि ८ इति चतुर्थाष्ट्रकम् ॥ ४ ॥ तत आ दित्यवर्णे कमलाक्षमालाभयवरदकरे भरवि एह्मोहि॰ स्वाहा बिल निवेद्य १ एवं ध्वाङ्किणि २ धूब्राङ्गि ३ प्रेतवाराहि ४ खिङ्गिन ६ दीर्घलम्बोष्टि ६ मालिनि ७ मन्त्रयोगिनि ८ इति पश्चमाष्टकम् ॥ ५ ॥ ततः सुनीले शङ्कचक्रगदाभयकरे कालिनि एह्योहि॰ स्वाहा इति बिंछ निवेद्य १ एवं चिक्रणि २ कङ्कालि ३ श्रुवनेश्विर ४ शटिक ५ महामारि ६ यमदृति ७ करालिनि ८ इति षष्टाष्टकम् ॥ ६ ॥ ततोऽञ्जनिमे खद्भखेटपिंहशपरशुहस्ते केशिनि एह्मोहि॰ स्वाहा इति बिंछ निवेद्य १ एवं मिदिन २ रोमजङ्घ ३ निवा रिणि ४ विशालिनि ५ कार्मुकि ६ लोलि ७ अघोमुखि ८ इति सप्तमाष्ट्रकम् ॥ ७ ॥ ततो धूम्रवर्णे कुन्तखेटिमिण्डिपालमाला करे मुण्डायधारिण एहोहि॰ स्वाहा इति बल्लि निवेद्य १ एवं व्याघ्र २ कांक्षिणि ३ प्रेतहृपिणि ४ धूर्जिट ५ घोरि ६ करास्ति ७ विषलम्बनि ८ इति अष्टमाष्ट्रकम् ॥८॥ इति चतुःषष्टियोगिनीष्ठलक्षमः ॥ एवं चतुःषष्टियोगिनीपूजां विधाय बल्लि दत्त्वा गणपतये नमः वं बदुकाय पिंगलभासुरनेत्राय बलिं गृहाण २ अक्ष २ कन्ड्न २ ह्वीं हूं स्वाहा इति बदुकाय क्षेत्रपालाय च बलिं दत्त्वा भूतविंछ द्यात् ॥

उपा.स्तं.

तत्र मन्त्रः ॥सर्वपीठोपपीठानि द्वारोपस्तरणेऽपि च ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंदोद्धः सर्वे दिग्भागसंस्थिताः॥१॥योगिनीयोगवीरेन्द्राः सर्वे यन्त्रसमा गताः॥ नगरे त्वथवा यामे अटन्यां सरितस्तटे॥२॥ वापीकूपेषु वृक्षेषु श्मशाने च चतुष्पथे॥नानाह्मपथरा ये च बटुह्मपथराश्च ये॥३॥ सर्वे तत्रैव संतुष्टा बलि गृह्ण-तु मे सदा ॥ शरणागतोऽस्म्यहं तेषां ते सर्वे मे सुखप्रदाः ॥४॥ बलिदानेन संतुष्टाः प्रयच्छन्तु ममेप्सि तम् ॥ सर्वकार्याणि कुर्वन्तु दोषांश्च प्रन्तु मे सदा ॥६॥ इति सर्वेभ्यो बल्लि द्यात् ॥ ततः कुमार्यः प्रत्यहं शतं नव वा पूज्याः तल्लक्षणादीनि कुमारीपूजनाध्याये द्रष्टन्यानि ॥ एवं कुमारीपूजनं सुवासिनीपूजनं च विधाय ॥ द्वितीयदिने त्रिगुणं चतुर्थं चतुर्गुणम् इति शतचण्डचां सहस्रचण्डचां दशोत्तरा वृद्धिः कार्या ॥ पूजां देव्ये समर्प्य सर्वे विप्राः शतं नवार्णमन्त्रं कवचार्गलाकीलकानि सकुज्जपित्वा सप्तशतीं जिपत्वाऽन्ते रहस्यानि नवार्ण शतं जिपयः ॥ कवचादीनां प्रत्या नावृत्तिः ॥ एवं प्रथमे एकाऽऽवृत्तिः १ द्वितीये २ तृतीये ३ चतुर्थे ४ एवं शतसहस्रावृत्तयः संपद्यन्ते ॥ भोजनमशक्ती हविष्यान्नं सर्वेषां प्रत्यहं शतं सहस्रं वा ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ पञ्चमेऽह्नि होमः कार्यः ॥ नवरात्रे तु नवम्यामेव होमः॥ होमस्तु नवचण्डीविधानोक्तप्रकारेण कार्यः॥ पूजास्विष्टकृदादि सर्वे तद्वरक्वर्यात् ॥ अथ शतचण्डीसहस्रचण्डचादी पूजासामग्री ॥ अशीतिगुञ्जाप्रमाणा कस्तूरी तावन्मानं केशरं तावजातीफलं तावान् कर्पूरः एतचतुष्टयं पलमात्रं चन्दनेन येत् तेन पलद्वयमनुलेपनं भवति पलं तु विंशत्युत्तरत्रिंशद्भुआमितं वस्नस्य तु मानानुक्तेः स्त्रीजनपरिधानयोग्यं गाह्म निर्मितालंकाराः स्त्रीजनोचिताः गद्याणमानं तु लोकिकतौलस्यार्धे पुष्पाणि २५००० पलद्वयमितः गुग्गुलुः पूरिताः कुम्भप्रमाणं घृतं कुम्भस्तु विंशतिद्रोणः द्रोणस्तु खार्याः खलु षोडशांशः कुडवद्वयमात्रं इविष्यात्रभोजनं चतुष्कं कुडवः शतद्वयं नागवल्लीद्लं तद्वुह्रपं पूगीफलादिकं कर्पूरादि च याह्यम् ॥ इति पूजासामग्री ॥ अन्यापि याह्या ॥ इति गोविन्दकृतकरुपवरुत्युक्तशतचण्डीसहस्रचंडीप्रयोगः ॥ शान्तिवारे रुद्रयामले विशेषः ॥ शतचण्डीविधानं च

शु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥९६॥

तत् ॥ सर्वोपद्रवनाशार्थे शतचण्डीं समारभेत् ॥१॥ षोडशस्तम्मसंयुक्तं मण्डपं पल्लवीज्जवलम् ॥ वसुकोणयुतां वेदीं मध्ये कुर्या त्रिभागतः ॥ २ ॥ पक्षेष्टकचितां रम्यामुच्छाये इस्तसंमिताम् ॥ पञ्चवर्णरजोभिश्च कुर्यानमण्डलकं ग्रुभम् ॥ ३ ॥ आचार्येण सम विप्रान्वरयेद्दश सुत्रताच ॥ ईशान्यां स्थापयेत्कुम्भं पूर्वोक्तविधिनाऽऽहरेत् ॥ ४ ॥ वारुण्यां च प्रकर्तेव्यं कुण्डं लक्षणसम्मितम् ॥ स्ति देन्याः प्रकुर्वीत सुवर्णस्य पलेन वै ॥५॥ तर्चेन तर्चेन तर्चेन महामते ॥ अष्टादशसुजां देवीं कुर्याद्वाऽष्टकरामिष ॥६॥ पट्ट कूलयुगच्छन्नां वेदीमध्ये निधापयेत् ॥ देवीं संपूज्य विधिवज्ञपं कुर्युर्दश द्विजाः ॥ ७ ॥ शतमादौ शतं चान्ते जपेनमन्त्रं नवार्ण कम् ॥ चण्डीसप्तशतीमध्ये संपुटोऽयमुदाहतः ॥ ८ ॥ एकं द्वे त्रीणि चत्वारि जपेदिनचतुष्ट्यम् ॥ ह्रपाणि कमशस्तद्वतपूजना दिकमाचरेत् ॥ ९ ॥ पञ्चमे दिवसे प्रातहोंमं कुर्याद्विधानतः ॥ गुडूचीं पायसं दूर्वास्तिलाञ्छुक्कान्यवानिष ॥ १० ॥ चण्डी पाठस्य होमे तु प्रतिश्लोकं दशांशतः ॥ होमं कुर्याद्वहादिभ्यश्चर्वाज्यसिमधेः क्रमात् ॥११॥ हुत्वा पूर्णाहुतिं दद्याद्विप्रभयो दक्षिणां कमात् ॥ कपिलां गां नीलमणि श्वेताश्वं छत्रचामरम् ॥ १२ ॥ अभिषेकं ततः कुर्युर्यजमानस्य ऋत्विजः ॥ एवं कृतेऽसरेशान सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥१३॥ इति श्रीह० वृ० घ० उपासनास्तवके दुर्गोपासनाध्याये शतचण्डीविधानप्रयोगकथनं नाम त्रयिक्षशं प्रकरणम् ॥ ३३ ॥ अथ सहस्रचण्डीविधानम् ॥ उक्तं च सन्त्रमहोदधौ ॥ एतह्शगुणं कुर्याच्चण्डीसाहस्रतं विधिम् ॥ विद्यावतः सदाचारान्त्राह्मणान्वृणुयाच्छतम् ॥ १ ॥ प्रत्येकं चिण्डकापाठम् विदध्युस्ते दिशामितान् ॥ अयुतं प्रजपेयुस्ते प्रत्येकं नववर्ण कम् ॥ २ ॥ पूर्वोक्ताः कन्यकाः पूज्याः पूर्वमन्त्रैः शतं शुभाः ॥ एवं दशाहं संपाद्य होमं कुर्युः प्रयत्नतः ॥ ३ ॥ सहस्रचण्डीविधानमाह--एतद्रशुणिमिति ॥ शतचण्डीविधानिमत्यर्थः ॥ तत्र शतविष्रवर्णम् ॥ १ ॥ ते शतविष्राः दशदशसप्तशतिपाठाने क्कर्युः ॥ अयुतमयुनं नवार्णजपं क्कर्युः ॥ २ ॥ शतं कन्याश्च भोन्याः प्रवाः एवं दशदिनेषु संपाद्य एकादशेऽद्वि सप्तश्तीशतावृत्या प्रतिक्लोकं

उपा.स्त. ₹

सप्तशत्याः शतावृत्या प्रतिश्लोकं विधानतः ॥ लक्षसंख्यं नवार्णेन पूर्वोक्तैईव्यसंचयैः ॥ ४ ॥ होतृभ्यो दक्षिणां दत्त्वा पूर्वो कान्भोजयेद्द्विजान् ॥ सहस्रसंमितान्साधून् देव्याराधनतत्परान् ॥ ५ ॥ एवं सहस्रसंख्याके कृते चण्डीविधौ नृणाम् ॥ सिद्धच त्यमीप्सितं सर्वे दुःखीचश्च विनश्यति ॥ ६ ॥ मारीदुर्भिक्षरोगाद्या नश्यन्ति व्यसनोच्चयाः ॥ नेमं विधि वदेदुष्टे खले चौर गुरुद्वहि ॥ ७ ॥ साघौ जितेन्द्रिये दान्ते वदेद्विधिमिमं परम् ॥ एवं सा चिण्डका तुष्टा वक्तूञ्छ्रोतृश्च रक्षति ॥ ८ ॥ शान्तिसार रुद्रयामले ॥ सहस्रचण्डीं विधिवच्छ्णु विष्णो महामते ॥ राज्यश्रंशो ह्यकस्माच्चेजनमारे महाभये ॥ ९ ॥ गजमारेऽश्वमार च परचक्रभये तथा ॥ इत्यादिविविधे दुःखे क्षयरोगादिजे भये ॥ १० ॥ सहस्रं चिण्डकापाठं कुर्याद्वा कारयेत्तथा ॥ जापकास्तु शतं प्रोक्ता विशाद्यस्तस्तु मण्डपः ॥ ११ ॥ भोज्याः सहस्रं विप्रेन्द्रा गोशतं दक्षिणां दिशेत् ॥ गुरवे द्विगुणं देयं शय्यादानं तथैव च ॥ ॥ १२ ॥ सप्तधान्यं च भूदानं श्वेताश्वं च मनोहरम् ॥ पञ्चनिष्कमिता मूर्तिः कर्तव्या वर्धमानतः ॥१३॥ अष्टादशभुजां देवीं सर्वा युधविभूषिताम् ॥ अत्रं वारि च दातव्यं सहस्रं प्रत्यहं विभो ॥ १४ ॥ शतं वा नियताहारः पयोमानेन वर्तयेत् ॥ एवं यश्चिष्डिका पाठं सहस्रं तु समाचरेत् ॥ १५ ॥ तस्य स्यात्कार्यसिद्धिस्तु नात्र कार्या विचारणा ॥ १६॥ अन्येऽपि विशेषाः योगिनीभैरवीवाराही तन्त्रेषु देवीकालिकापुराणयोश्चानुसंघेयाः ॥ ते च प्रयोगे स्पष्टाः ॥ वयं तु यामलायुक्तं नानुतिष्ठामहे यामलस्य मोहनशास्त्र त्वेनाप्रामाण्यात् ॥ १७ ॥ इति शान्तिसारोक्ता सहस्रचण्डी ॥ अन्यत्र एतदृशगुणो विधिरयुतचण्ड्यां एतदृशगुणो विधिर्रक्षचण्ड्यां शतब्राह्मणेरेव वा चत्वारिंशिदिनैरयुतचंडी कार्या ॥ तत्र प्रथमदशके एकैवावृत्तिः द्वितीयदशके द्वे तृतीये तिस्रः चतुर्थे चतस्रः तैरेव तळ्कासंख्यं नवाणेंन च होमः ॥३॥४॥ ऋत्विग्भ्योऽपि दशदशनिष्कमितं सुवर्णं प्रत्येकं द्यात् शेषं पूर्वोक्तवत् ॥ इति सहस्रादिविधिः ॥ ५॥ प्तत्फलमाह--एवं सहस्रसंख्याकम् इति ॥ एतद्युतचण्डीविधानलक्षचण्डीविधानयोरुपलक्षकं सहस्रचण्डीद्रागुणोऽयुतचण्डीविधिः ॥ तहश्रुणो लक्षचण्डीविधिः जपे होमे दक्षिणायां कन्यास्त्रवासिनीविप्रभोजने च दशागुणत्वम् ॥ ६॥ ७॥ ८॥

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥९७॥

चतुःशतिदनैर्वा लक्षचण्डीत्यादि बोध्यम् ॥ १८॥ शेषं शतचण्डीवत् ॥ इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मिते० वृ० घ० उ० स्त० दुर्गोपा सनाध्याये सहस्रायुतलक्षचण्डीविधानकथनं नाम चतुिह्मशं प्रकरणम्॥३४॥अथ दुर्गामखमहोत्सवः प्रारभ्यते॥ तत्रादौ नित्यचण्डीनव चण्डचादिविधानं स्पर्धिकियते ॥ अथ नवाणिविधानपद्धितं व्याख्यास्यामः ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि श्रीलक्ष्म्याः पद्धितं शुभाम् ॥ साधकानां सपर्यार्थे संक्षेपादुच्यते मया ॥ १ ॥ डामरोक्तदुर्गाक्रूपे ॥ अत्र मूलवचनानि अपेक्षितानि चेत्पूर्व दुर्गाकल्पे प्रति पादितानि तत्र दृष्टव्यानि ॥ प्राचीनदुर्गामखमहोत्सवपुस्तके तु मूलवचनसिहतं पुस्तकं लिखितं सर्वत्र वर्तते ॥ मया तु मूलवचनानि त्यक्तवा केवलं प्रयोगो लिखितः ॥ यतोऽस्मिन्नध्याये दुर्गाकल्पः संपूर्णः प्रतिपादितोऽस्ति तेनात्र खण्डित इति शङ्का न कार्या ॥ राजोवाच ॥ पुनस्त्वां परिषृच्छामि चण्डिकापूजनं शुभम् ॥ नित्यचण्डिचादिजाप्यस्य विधानं च द्विजोत्तम ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच परिषृच्छिसि यत्नेन चिण्डिकापूजनादि यत् ॥ तद्हं ते प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ॥ ३॥ ततो दीक्षाकालिनयमाः ॥ चैत्रे मासि जपं कुर्यात्पुत्रलाभो भवेद् ध्रुवम् ॥ वैशाखे धनधान्यं स्याज्ज्येष्ठे श्रेष्ठपलं लभेत् ॥ ४ ॥ आषाढे सर्वनाशः स्याच्छावणे लभते सुखम् ॥ भाद्रे मासि प्रजानाश आश्विने संपदः श्रियः ॥ ५ ॥ कार्त्तिके ज्ञानसिद्धिः स्यान्मार्गशीर्वे बहुप्रजाः ॥ पौष ज्ञाननाशः स्यानमाघे मेघाविवर्धनम् ॥ ६ ॥ फाल्गुने सर्वसिद्धिः स्यात्क्षयाधिकौ तु मृत्युदौ ॥ रवौ गुरौ सिते सोमे कर्तव्यं बुधगुकयोः ॥ ७ ॥ गुभयोगे गुभे लग्ने सुप्रसन्ने प्रसन्नधीः ॥ जुक्कपक्षे जुभे चन्द्रे दीक्षा कार्या सदा बुधैः ॥ ८ ॥ आकर्षणं वसन्ते च योष्म विद्वेषणं स्मृतम् ॥ जारणोच्चाटनं मौनं वर्षतीं योजयेद् बुधः ॥ ९ ॥ शरद्यां शान्तिकं कर्म हेमन्ते च सपौष्टिकम्॥ प्रावृट् कालेऽभिचारे च शिशिरे मारणं तथा ॥ १० ॥ शीघं प्रयोगसिद्धचर्थमृतवः परिकीर्तिताः ॥ स्थिराश्विकर्णद्वयपौष्णसौम्यमघाके चित्रानिलम्लिघण्यैः ॥ कुजार्किरिकाकुलिकादिदोषैहीनः शुभः शान्तिककर्महोमः ॥ ११ ॥ यदा कदाचिच्छुभमासि शुक्कचतु देशीमारभ्य पुनः शुक्कचतुर्दशीपर्यन्तं त्रिंशिद्दनात्मिका नित्यचंडी कर्तव्या ॥ आश्विनशुक्कप्रतिपदमारभ्य नवमीपर्यन्तं नव

उपा.स्त. व दुर्गा.

दिनात्मकं नवरात्रिविधानं नवचण्डी च कर्तन्या ॥ यस्मिनकस्मिन्नत्तमे मासि जुक्कषष्ठीमारभ्य जुक्कचतुर्दशीपर्यन्तं नवदुर्गा विधानं कर्तन्यं च ॥ तथैन कृष्णपष्ठीमारभ्य कृष्णचतुर्दशीपर्यन्तं नवदिनात्मकं कालरात्रिविधानं कर्तन्यम् ॥ अथोदगयन आपूर्य माणपक्षेऽथवा शरत्काले उक्ते मास्युक्तक्षं सुमुद्दतं चन्द्रताराबलान्विते पुण्याहे सद्वती भूत्वा भगवतीमहोत्सवं कुर्यात् ॥ अन्यतमे जुभदिने वाऽक्षरकरूपप्रयोगेण च सप्तश्तीमाहात्म्यमालास्तोत्रपाठेन श्तुसहस्रलक्षकोटिचण्डिकाविधानं कर्तन्यमिति न्यायकमः॥ एवं भगवतीमहोत्सवं यःकरोति स कर्ता सर्वेप्सितभोक्ता भवति ॥ आदौ नत्वा महालक्ष्मीं कर्त्त कर्त्री सदोदिताम् ॥ यन्नमस्कारतो यज्ञा भवन्ति सुकृताः सकृत् ॥ अथ मन्त्रोद्धारस्तु दुर्गाकरुपे ज्ञेयः ॥ मन्त्रप्रकाशः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्वीं चामुण्डाये विचे ॥ अथ ब्राह्मे मुहुतै चोत्थाय महालक्ष्मीं मनसा ध्यात्वा गुरुचरणी स्मृत्वा नत्वा च ॥ सहस्रदलपङ्कुजे सकलशीतरश्मिप्रभं वराभय कराम्बुजं विमलगम्बपुष्पाम्बरम् ॥ प्रसन्नवद्नेक्षणं सकलदेवतारूपिणं स्मरेच्छिरसि हंसगं तद्भिधानपूर्वे गुरुम् ॥ १ ॥ प्रातः शिरसि शुक्काब्जं द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम् ॥ वराभयकरं शान्तं स्मरेत्तन्नामपूर्वकम् ॥ २ ॥ तत्पादोदकजा घारा निपतन्तु स्वमूर्धनि ॥ चिन्तयेद्वस्यरम्प्रेण प्रविशन्तीं स्वकां तनुम् ॥ ३ ॥ तनुं संक्षालयेन्नित्यमन्तर्देहगतं मलम् ॥ तत्क्षणाद्विरजा मन्त्री जायते स्फिटिको पमः ॥ ४ ॥ इत्येवं गुरुपादुकां ध्यात्वा ॥ सदाचाराः कुलीनाश्च ह्वीमन्तः सत्यवादिनः ॥ चण्डिकापाठसंपूर्णा दयावन्तो जिते न्द्रियाः ॥ ५ ॥ ईहम्लक्षणसंपूर्णा दम्भमोहविवर्जिताः ॥ दश विप्राः समभ्यच्यी महालक्ष्मीस्वरूपिणः ॥ ६ ॥ ब्रह्मचारिणौ समाहूय सोपाध्यायौ विशेषतः ॥ एवं द्वादशसंख्याकान्नवार्णेन समन्त्रितान् ॥ ७ ॥ विद्यागमसमायुक्तान्मन्त्रविद्याविशारदान् ॥ इति विप्रान समाहूय तैलाभ्यञ्जनपूर्वकम् ॥ ८ ॥ ततः सभार्यः सम्रातः सबान्धवः कर्ता तैलस्नानं कुर्यात् ॥ पट्टकूलक्षीरोद्शुक्र वाससां परिधानं कृत्वा नित्यकर्म विधाय अथानन्तरं देव्यागारे स्वमन्दिरे शुचौ देशे गोमयलिप्ते रङ्गमालाभिरलंकृत्य तत्र मण्डपं षोडशस्तम्भनिर्मितं यथोक्तसंख्याकं षतुर्दिश्च चतुर्द्वारोपशोभितम् ॥ तोरणानि यथोक्तानि सुवितानध्वजपताकादिभिरलंकृतयच्छत्र

बु.क्ज्बो.र्ण. बर्बस्कंध ८ ॥९८॥

चामरमण्डितानि तन्मध्ये वेदिकामुक्तलक्षणां कुर्यात् ॥ ततः पूजोपचारानादाय उपवेशनार्थे विष्टरद्वयं प्रतिब्राह्मणम् ॥ अध्य दानार्थं शङ्कः ॥ आचमनार्थं ताष्रकृतकमण्डलुं पादप्रक्षालनार्थं कांस्यपात्रं पयोद्धिवृतमधुशर्करासहितं पञ्चामृतं स्नानार्थमुण्णो दकं शीतोदकं च चन्दनादीनि च दशपदानि आसाद्य तत्र भूमौ तन्दुलाष्ट्रहलं विरचय्य तस्योपिर कलशद्वयं विन्यस्य ॥ उक्तं च ॥ सुस्नातस्तिलतैलेन पूर्वाह्ने च नृपोत्तम ॥ पुण्याहवाचनं कृत्वा द्विजांश्चेव प्रपूजयेत् ॥ ९ ॥ ततश्च कारयेदेदीं सप्तधान्य पञ्चरत्नसमन्वितम् ॥ १० ॥ वस्त्रे चारक्तके चैव संलिखेद्यन्त्रसत्तमम् ॥ गर्भे संस्थापयेहेवी चिंदकां हेमरूपिणीम् ॥ ११ ॥ पञ्चामृताद्येः सुस्नातां चर्चितां गन्धकुंकुमैः ॥ तथा रक्तेन वस्त्रेण प्रच्छन्नां भक्तवत्सलाम् ॥१२॥ गुरूपदेशविधिना पूजनीया प्रयत्नतः ॥ नवरात्रविधिरयं कलशस्थापनं स्मृतम् ॥ १३ ॥ अथ यजमानः साङ्गमण्डपयागपिश्रम द्वारं प्रविश्य पाणिभ्यां महाफलं गृहीत्वा पित्रोपार्जितं देवाय समर्प्य उक्तासने प्राङ्मुख वेशयेत् ॥ १४ ॥ ॐ गणपतयेनमः ॥ ॐ कुलदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥ ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः ॐ सर्वाभ्यो देवताभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणेभ्यो नमः ॥ इति सर्वान्प्रत्येकं नमस्कृत्य महा काल्यादिदेवतात्रयं मनसा ध्यात्वा प्रयोगमारभेत् ॥ देशकालौ स्मृत्वा तत्त्वत्रयेण चम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा शिखां बद्ध्या कर्मा रम्भेषु सर्वेषु आचम्यासून्नियम्य च ॥ कार्योद्देशप्रयत्नेन ततः संकल्पमार्भेत् ॥ एवंगुणविशेष्णविशिष्टे कालेऽस्मिन्पुण्याहे अस्य यजमानस्य सकलपरिवारस्यायुरारोग्येश्वर्यसंपदां वृद्धचर्थं प्रत्रपेत्रादिसमृद्धचर्थं सर्वेष्सितसिद्धचर्थं धनधान्यसमृद्धचर्थं रथावाध्यर्थे आघिदैविकाधिमौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं मम जन्मराशेः सकाशाहुष्टस्थानस्थिता श्रहाः ये के चित्क्रर अहास्तत्सर्वारिष्टोपशान्त्यर्थे तृतीयैकादशफलप्राप्त्यर्थ सर्वकामनासंपूर्णतासिद्धचर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे मया च ऋत्विग्द्वारा असुककामनया यथोक्तं नवचण्डीमखं शतचण्डीमखं सहस्रचण्डीमखं लक्षचण्डीमखं कोटिचण्डीमखं करिष्य

उपा.स्त. व दुर्गा.

इति सकामसंकरूपः ॥ तथा निष्कामसंकरूपस्मरणम् ॥ मया च ऋत्विग्द्वारा कृतसंकरूपसिद्धयेऽधुना वा अमुकचण्डीमखं महा काल्यादिप्रीत्यर्थं करिष्ये तद्द्रभूतमादौ ब्राह्मणप्रार्थनामर्घ्यदानं च करिष्ये ॥ पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मह्रपिणः ॥ अनु गृह्ण-तु मामद्य महाचण्डचारूयकर्मणि ॥ १५ ॥ चण्डीकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥ श्रोत्रियाः सत्यवादाश्च देवध्यान रताः पराः ॥ १६ ॥ यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धि यान्ति नरद्वमाः ॥ अङ्गीकुर्वन्तु मत्कर्म कल्पहुमसमाश्रिताः ॥ १७ ॥ यथोक्त नियमैथुका मन्त्रार्थस्थिरबुद्धयः ॥ मत्कृपालोचनात्सर्वा वृद्धयो ऋद्धिमाप्तुयुः ॥ ५८ ॥ महाचण्डीजपे पूज्याः सन्तु मे नियमा न्विताः ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मवादिनः ॥ १९ ॥ चण्डीध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ माऽलीकभाषिणः सन्तु मा सन्तु परवादकाः ॥ २०॥ ममापि नियमा ह्यते भवनतु भवतामपि ॥ इति विपानपि स्तुत्वा कृत्वा चार्ध्य निवेदयेत ॥ तत्रा द्भणेकुङ्कमेन चतुरस्रं मण्डलं इस्तमात्रं विधाय ॥ तत्र ब्रह्मादीनां चरणी स्थाप्य तचरणेसमीपे अर्घ्य दत्त्वा ॥ स्वागतं भो द्विज श्रेष्ठा मदनुत्रहकारकाः ॥ इदमर्घ्यमिदं पाद्यं भवद्भिः प्रतिगृह्यताम् ॥ यथावृद्धिः निधातन्यं पादक्षालनमृत्विजाम् ॥ आत्मनश्च रणौ धृत्वा गत्वा मण्डपमध्यतः ॥२१॥ पुनरूपविश्याचम्य प्राणानाम्य देशकालौ स्मृत्वा प्रारिप्सितकर्मणोऽङ्गभूतमादौ निर्विघ्नता सिध्यर्थं गणपतिपूजनं करिष्ये ॥ गणेशं संपूज्य मातृपूजनमारभेत्॥कर्मारम्भेषु सर्वेषु मातरःसगणाधिपाः॥पूजनीयाःप्रयत्नेन पूजिताः पूजयन्ति ताः ॥ २२ ॥ तासामधिष्ठानमाह ॥ प्रतिमासु च शुश्रासु लिखित्वा वा पटादिषु ॥ अथवाऽक्षतपुञ्जेषु पृथग्विधैः ॥ २३ ॥ ताश्च ॥ गौरी पद्मा शची मेघा सावित्री विजया जया ॥ देवसेना स्वधा स्वाहा मातरोलोकमारः ॥ २४ ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टि रात्मनः कुलदेवता ॥ गौर्यादितुष्टिपर्यन्ता आत्मदेवतया सह ॥२५॥ गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्चतुर्दशण्इति॥ब्राह्मा माहेश्वरीचैव कामारीवेष्णवी तथा ॥ वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा चण्डिकेति च ॥२६॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिमैघा पुष्टिः श्रद्धा किया मितः ॥ बुद्धि र्छजा श्रिया कान्तिः शान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥२७॥ एताश्चतुर्दशाख्याताः कुण्डचाख्या मातरः शुभाः ॥ इति ॥ कीर्तिर्रुक्ष्मीर्धृमेघा

ए.स्ज्यो.र्ज. **वर्ष**स्कंध ८ ॥९९॥

बुद्धिः प्रज्ञा सरस्वती ॥ आज्यमातरस्तथैव स्युर्वसोर्धारासमन्विताः ॥ २८ ॥ इति ॥ महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती तथा ॥ वाग्भवं तारया कामं न्यसेद्वीजानि कालिके ॥ इति ॥ अत्र पृथक्प्रतिष्ठापूजनम् ॥ प्रारिप्सितकर्मणोऽङ्गभृतं मातृकाप्रतिष्ठापूजनं करण्ये ॥ इति संकल्प ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौरि इहागच्छेह तिष्ठ गन्धाणुपचारानसमर्पयामि नमः १ एवं ॐ भू० पद्मे इहा० २ ॐ भू० शचीहा० ३ ॐ भू० मेघे इहा० ४ ॐ भू० सावित्रि इहा० ५ ॐ भू० विजये इहा० ६ ॐ भू० जये इहा० ७ ॐ भू० देवसेने इहा० ८ ॐ भू० स्वधे इहा० ९ ॐ भू० स्वाहे इहा० १० ॐ भू० मातलोकमातिरहा० ११ ॐ भू० धृते इहा० १२ ॐभू॰ पुष्टे इहा॰ १३ ॐ भू॰ तुष्टे इहा॰ १४ ॐ भू॰ आत्मकुलदेवते इहा॰ १५ ॐ भू॰ गणेश इहा॰ १६ एवं गौर्यादिषोडश मातृकाः तथा ॐ भू० ब्राह्मि इहा० १ ॐ भू० माहेश्वरि इहा० २ ॐ भू० कौमारि इहा० ३ ॐ भू० वैष्णवि इहा० ४ ॐ भू० वाराहि इहा॰ ५ ॐ भू॰ इन्द्राणि इहा॰ ६ ॐ भू॰ चामुण्डे इहा॰ ७ ॐ भू॰ चण्डिके इहा॰ ८ एवं ब्राह्म्याद्यप्टस्थलमातृका तथा ॐ भू॰ कीतें इहागच्छ इह तिष्ठ॰ १ ॐ भू॰ लिह्म इहा॰ २ ॐ भू॰ धृते इहा॰ ३ ॐ भू॰ मेघे इहा॰ ४ ॐ भू॰ पुष्टे इहा॰ ५ ॐ मू॰ श्रद्धे इहा॰ ६ ॐ भू॰ किये इहा॰ ७ ॐ भू॰ मते इहा॰ ८ ॐ भू॰ बुद्धे इहा॰ ९ ॐ भू॰ लजे इहा॰ १० ॐ भू० श्रीरिहा॰ ११ ॐ भू० शान्ते इहा॰ १२ ॐ भू० कान्ते इहा॰ १३ ॐ भू० तुष्टे इहा॰ १४ एवं कीर्त्यादिकुडचचतुर्दश मातृकाः तथा च ॐ भू० कीर्ते इहागच्छ० १ ॐ भू० लिह्म इहा० २ ॐ भू० धृते इहा० ३ ॐ भू० मेघे इहा० ४ ॐ भू० बुद्धे इहा॰ ५ ॐ भू॰ प्रज्ञे इहा॰ ६ ॐ भू॰ सरस्वित इहा॰ ७ एवं वसोधीरासप्तचृतमातृकाः तथा च प्रधानमातृकाः ॐ भू॰ ऐ मह कालि विचे इहा॰ १ ॐ भू॰ हीं महालिक्ष्म विचे इहा॰ २ ॐ भू॰ क्वीं महासरस्वति विचे इहा॰ ३ एवं प्रतिष्ठाप्य गन्धादिभि रुपचारैः संपूज्य ततः प्रणामः ॥ इस्तैः पद्मं रथाङ्गं ग्रुणमथ हरिणं पुस्तकं वर्णमालां टङ्कं श्रूलं कपालं दरममृतलसद्धेमकुम्भं वह न्तीम् ॥ मुक्ताविद्युत्पयोधेः स्फटिकनवजपाबन्धुरैः पञ्चवक्रेस्च्यक्षेविक्षोजनम्नां सकलशशिनिभां मातृकां तां नमामि ॥ अस्य श्री

डपा.स्त.

मातृकापूजनविधेर्न्यूनातिरिक्तं ब्राह्मणनां प्रसादात्सर्वे संपूर्णमस्तु इति मातृकापूजनम् ॥ अद्य पूर्वोक्तेवंग्रणविशेषणविशिष्टायां पुण्य तिथौ प्रारिप्सितकर्मणोऽङ्गभृतं ब्राह्मणैः सह स्वस्तिपुण्याह्वाचनमहं करिष्ये इत्यक्षतोदकेन संकल्प्य समाप्य तथा नान्दीश्राद्धं कृत्वा समाप्य ॥ तत्र ब्राह्मणवरणम् ॥ आवाहयामि देवेशं ब्रह्माणं कमलोद्भवम् ॥ सप्तब्रह्माण्डयोर्मध्ये यः कुयाद्धौतकर्मभिः ॥ ६४ ॥ दक्षिणे अक्षसूत्रं च वामे चैव कमण्डलुम् ॥ याम्ये पाणौ सुवो यस्य सुचिवीमे धृता प्रभो ॥ ६५ ॥ आज्यस्थालीं कुशमुष्टि होम द्रव्याणि सर्वशः ॥ ६६ ॥ इंसासनसमाहृद्ध ब्रह्मन लोकपितामह ॥ ६७ ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ चत्वारि वेदवक्राणि नानाध्यानपरायणम् ॥ ६८ ॥ यद्गोत्रप्रवरं विष्र स्वशाखाध्ययने रतम् ॥ कर्मिणं विष्णुशर्माणं ब्रह्माणं त्वामहं वर्णे अमुकचण्डचारुये कर्मणि कृताकृताबैक्षणार्थममुकसगोत्रममुकसप्रवरान्वितममुकशर्माणम् अमुकशाखाध्यायिन मेभिः पुष्पचन्दनवासोऽलंकरणादिभिर्ब्रह्मपदत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति प्रतिवाच्यम् ॥ अथाचार्यवरणम् ॥ देवेशमाचार्यं विविधेर्युणैः ॥ पादप्रक्षालने प्रोक्तं आचार्यः पूर्वमेव हि ॥ ७० ॥ गुरुणा नामशेषं च शिवनिर्माणदीक्षितम् ॥ स्मृतयो Sष्टादशविधा अष्टादशपुराणकम् ॥ ७९ ॥ चत्वारो वेदाः साङ्गाश्च शास्त्रं चैवमनेकधा ॥ पद्मपत्रविशालाक्ष त्रस्रवंशसम् द्भव ॥ ७२ ॥ अमुकगोत्राभिधानाख्यमाचार्य त्वामहं वृणे ॥ यजुर्वेदमधीयानं शाखां वाजसनेयिनाम् ॥ महाचण्डीजपार्थ जापकं कृष्णसंज्ञकम् ॥ ७३ ॥ उत्तमश्रीसुखाप्त्यर्थमाचार्यं त्वामहं वृणे ॥ तत्रासुकचण्डचाख्ये कर्मणि तदङ्गभूतं सकलकर्म कर्तु ममुकसगोत्रममुकसप्रवरान्वितममुकशर्माणममुकशाखाध्यायिनं नवार्णसमन्वितसप्तशतीमालासहितैः एभिः पुष्पचन्दनवासोऽलंक रणादिभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति प्रतिवाच्यम् ॥ एद्द्रिगुणितमाचार्याय दत्त्वा वरयेत् ॥ अथ ऋत्विग्वरणम् ॥ एवं यस्य च यद्गोत्रं यद्यावत्प्रवरं वरम् ॥ यद्वेदाध्यायिनं विष्रं यच्छाखाध्यायिनं पुनः ॥ जिपनं शतचण्डीनामृत्विजं त्वामहं वृणे ॥ ७४ ॥ वृतोऽस्मीति द्विजेनोक्ते ब्रुवते वर्णकारणात् ॥ तत्रामुकसगोत्रममुकसप्रवरान्वितममुकशाखाध्यायिनममुकशर्माणम् ॥

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१००॥

अस्मिन् शतचण्डचाख्ये कर्मणि सप्तशतीमालाजपार्थमैभिः पुष्पचन्दनवासोऽलंकरणादिभिः ऋत्विकत्वेन त्वामहं वृणे वृतोऽस्मीति प्रतिवाच्यम् ॥ एवं सर्वेषामृत्विजां वरणं कुर्यात् ॥ ततः कर्ता अमुकसगोत्रममुकप्रवरान्वितममुकशाखाध्यायिनममुकशर्माणमस्मिन कर्मणि दाताऽहम् इति विप्राः नवार्णोपासका वरणीयाः ॥ एवं वरणं समाप्य मधुपर्कणार्चयिष्ये ॥ ततः सर्वेषां मधुपर्कपूजनं कुर्युः ॥ सुगुप्ते शोभने स्थाने स्वरूपं यज्ञमण्डपे ॥ आसयेदासने विप्रान्कोमले रक्तकम्बले ॥७५॥ प्राङ्मुखाय नमः कर्ता ब्राह्मणास्ते उद् इमुखाः ॥ विशिष्टकालपर्यन्तं कालज्ञानं प्रकीतयेत् ॥ ७६ ॥ ततश्चण्डीकलशं पूर्वोक्तवत्प्रतिष्ठाप्य कुमारीपूजनमारभेद ॥ तत्र कुमारीलक्षणम् ॥ एकवर्षा तु या कन्या पूजार्थ तां विवर्जयेत् ॥ गन्यपुष्पफलादीनां प्रीतिस्तस्या न विद्यते ॥ ७७ ॥ द्विवर्षोत्तर मारभ्य दशवर्षाविध क्रमात् ॥ पूजयेत्सर्वकार्येषु यथाविध्युक्तमार्गतः ॥ ७८ ॥ कुमारिका द्विवर्षा तु त्रिवर्षा च विमूर्तिनी ॥ चतु र्वर्षा तु कल्याणी पञ्चवर्षा तु रोहिणी ॥ ७९॥ षड्वर्षा तु भवेत्काली सप्तवर्षा तु चण्डिका ॥ शांभवी चाष्टवर्षा तु दुर्गा तु नवमी स्मृता ॥८०॥ दशवर्षा सुभद्रेति नामभिः परिकीर्तिताः॥ तत्तत्कामनया वयोऽवस्थाविशेषेण पूजनम् ॥ दुःखदारिद्रचनाशाय शत्रूणां नाशहैतवे ॥ ८१ ॥ आयुष्यबलवृद्धचर्थ कुमारीं पूजयेन्नरः ॥ आयुष्कामिस्मृतिं तु त्रिवर्गस्य फलानये ॥ ८२ ॥ अपमृत्युच्याचि पीडाहुःखानामपनुत्तये ॥ सौख्यधान्यधनारोग्यपुत्रपौत्रादिवृद्धये ॥८३॥ कल्याणी पूजयेद्धीमान् नित्यं कल्याणवृद्धये ॥ आराग्यसख कामी च जयकामी तथैव च ॥८४॥ यशस्कामी नरो नित्यं रोहिणीं परिपूजयेत् ॥ विद्यार्थी च जयार्थी च राज्यार्थी च विशेषतः ॥ ॥ ८५ ॥ शत्रूणां च विनाशार्थं कालिकां पूजयेत्ररः ॥ ऐश्वर्यज्ञुभकामी च स्वर्गकामी च यो नरः ॥ ८६ ॥ संत्रामे जयकामी च चिण्डकां परिपूजयेत् ॥ दुःखदारिद्यनाशाय नृपसमोहनाय च ॥८७॥ महापापिवनाशाय शांभवीं च प्रपूजयेत् ॥ सबलोत्कटशत्रूणा मुत्रसाधनकर्मणि ॥ ८८ ॥ दुर्गा दुर्गविनाशाय पूजयेद्यत्नतो बुधः ॥ सौभाग्यधनधान्यादिवाञ्छितार्थफलाप्तये ॥ ८९ ॥ सुभद्रां पूजयेन्मत्यों दासीदासविवृद्धये ॥ ९० ॥ पूज्यापूज्यस्वरूपमाह ॥ हीनाधिकाङ्गी कुष्ठीं च विलासकुलसंभवाम् ॥ अन्थिरफुटित

उपा.स्त. इ दुर्गाः

शीर्णाङ्गी रक्तपूयवणाङ्किताम् ॥ ९१ ॥ जात्यन्यां केकरां काणीं कुरूपां तनुरोमशाम् ॥ संत्यजेद्रोगिणीं कन्यां दासीगर्भसयुद्ध वाम् ॥ ९२ ॥ अरोगिणीं सुप्रष्टाङ्गीं सुरूपां त्रणवर्जिताम् ॥ एकवंशसमुद्भूतां कन्यां सम्यक् प्रपूजयेत् ॥९३॥ ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थं नृपवंशजाम् ॥ लाभार्थं वेश्यवंशोत्थां सुतार्थं झूडवंशजाम् ॥ ९४ ॥ दारुणे चान्त्यजातीयां पूजयेद्विधिना नरः ॥ ९५ ॥ रुद्दां चण्डां प्रचण्डां च चण्डोत्थां चण्डनायकाम् ॥ चण्डावतीं चण्डह्मपां सहचण्डां प्रयूजयेत् ॥ ९६ ॥ उप्रचण्डां च तामष्टादश इस्तामलंकृताम् ॥ खङ्गबाणिञ्जञ्ञलानि मुसलं चक्रमंकुशम् ॥ ९७ ॥ शक्तिमुद्गरवज्ञाणि विश्रतीं दक्षिणे करे ॥ खेटकं च घनुद्ण्डं घण्टां परशुतर्जनीम् ॥ ९८ ॥ महापाशं च डमरूं विश्रतीं वामपाणिना ॥ पीताऽरूणा च कृष्णा च नीला शुश्रा च धार्मिका ९९ ॥श्यामा श्वेता च विज्ञेया सिन्धुज्वाला च सा क्रमात् ॥ वृत्रस्था चात्र पात्रस्था पूज्या सर्वोपचारतः ॥ १०० ॥ पूजकं पूजयेत्सा तु सर्वसंपद्भिवृद्धिभिः ॥ निन्दंकं निर्देहत्याशु दारिद्यव्याधिवह्निभिः ॥ १०१ ॥ तत्र मण्डपाभ्यन्तरे कुंकुमादिभिवि रचितेऽष्टदले तदुपरि स्थापितपीठे कुमारीमुपवेश्य स्वयमासन उपविश्य प्राणानायम्य समयस्मरणं विधाय कुमारीपूजनं करिष्ये इति संकल्प्य पाद्यादिभिरूपचारैः पूजयेत् ॥ कंचुकैश्चेव वस्त्रश्च गन्धपुष्पाक्षतादिभिः॥ नानाविधैर्भक्ष्यभोजयेभीजयेत्यायसा दिभिः ॥१०२॥ आवाहयेत्ततः कन्यां मन्त्रेणानेन सुव्रत ॥ ततस्तु पूजयेद्धीमान् मन्त्रैरेभिः पृथकपृथक् ॥ कुमारीणां तैलाभ्यक्नं कुर्यात् ॥ तत्रापि प्रत्येकं कुमारीपूजने आवाहनमन्त्रा उक्ताः ॥ मन्त्राक्षरम्यीं लक्ष्मीं मातृणां ह्रपधारिणीम् ॥ नवदुर्गातिमकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम् ॥१०३॥ अनेनाद्यवर्षाऽऽवाहनमन्त्रः ॥ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूर्ता जगन्मातनिमोऽस्तु ते ॥ १०४ ॥ अनेन द्विवर्षावाहनमन्त्रः ॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं मार्गज्ञानस्वरूपिणीम् ॥ त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमृति पूजयाम्यहम् ॥१०५॥ अनेन तृतीयाम् ॥ कालिकां तु कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ॥ कल्याणजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ १०६ ॥ अनेन चतुर्थीम् ॥ अणिमादिगुणोदारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ॥ अनन्तराक्तिभेदां तां कामाल्यां

हु.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥१०१॥

पूजयाम्यहम् ॥ १०७॥ अनेन पश्चमीम् ॥ कामचारीं महामायां कार्रणयहृदयां शिवाम् ॥ कामदां करुणोदारां गायत्रीं पूजया म्यहम् ॥१०८॥ अनेन षष्ठीम् ॥ चण्डवीरां महामायां चण्डमुण्डप्रभिञ्जनीम् ॥ तां नमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥१०९॥ अनेन सप्तमीम् ॥ सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वधृतात्मिकां देवीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ॥११०॥ अनेनाष्टमीम् ॥ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुर्गविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा अत्तया दुर्गी दुर्गीतिंहारिणीम् ॥१९१॥ अनेन नवमीम् ॥ सुन्दरीं स्वर्ण वर्णाङ्गीं सुखसौभाग्यदायिनीम्।।सन्तोषजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ ११२॥ अनेन दशमीम्।।इत्यावाहनमन्त्राः ॥ कुमारीं लक्ष्मी स्वरूपां ध्यात्वा तत्र कुमार्या दक्षिणभागे ब्रह्मचारिणमेकं वामे चैकं तथैकं पुरतः एवं बटुकत्रयं ध्यात्वा वक्ष्यमाणनमत्रेण पाद्यादिभि इपचारैः संपूज्य ॥ ॐ हं हः अनेन मन्त्रेण सर्वेषां वह्मालंकारादीनि दत्त्वा गन्धपुष्पधूपदीपैनैविद्योपहारैनीनाफलैः पञ्चखाद्यश्च ताम्बूलनीराजनैः पुष्पाञ्चलि च दत्त्वा ॥ एवमभ्यर्चनं कुर्यात्कुमारीणां प्रयत्नतः । इति कुमारीपूजनं समाप्यानन्तरं सुत्रासिनीहिरिद्रो द्वर्तनादिभिः संपूज्य ब्राह्मणांश्च संपूज्य ॥ तत्र नवरात्रनवदुर्गाकालरात्रीपूजासुप्रतिदिनमेका कुमारी तथा प्रतिदिनं बटुकत्रयं प्रतिदिनं सुवासिन्येका प्रतिदिनमेकं ब्राह्मणमेवं प्रतिदिनमेकोत्तरवृद्धचा कार्या ॥ शतचण्डचादिपूजायां प्रत्यहं दशोत्तरवृद्धचा कुमार्यादि ॥ एवं सप्तशतिकामः रूपशतं कुमारीणामिष शतम् ॥ ब्राह्मणतर्पणं तावदेव॥तहुक्तं करूपे ॥ कुमार्यो दश संभोज्या भोज्या विप्रा दशोत्तमाः॥ भोजयेत्परया भक्तया देशिकादिदशद्विजान् ॥ ११२ ॥ ततो वन्धुसमायुक्तो भुश्लीयाद्यज्ञकृत्पुमान् ॥ सत्कथाभिः सुगीतैश्व सर्व वादिञ्जनिःस्वनैः॥११४॥ पूजनैः प्रदक्षिणीयैश्च वेदपाठैनिंशां नयेत्॥द्वितीये दिवसे स्नात्वा विधिवत्ते द्विजा दशेति॥११५॥इति कुमारी पूजनम् ॥ ततो द्विजमुखादारीर्त्रिहणम् ॥ ततः पूजासंभृतसंभारो यजमानः बल्ठिप्रदानार्थे दृध्यक्तमोदनं दीपांश्च गृहीत्वा सर्वे महानद्यादौ ब्रजेयुः ततो वक्ष्यमाणविधिप्रकारेण स्नानं विधाय ॥ पुण्यागारे महारम्भे स्वं स्वमासनमास्थिताः ॥ जपन्ति

डमा-स्त-

जय चण्डीति नवदुर्गाप्रपूजनम् ॥ ११६ ॥ अथ होमद्रव्याणि ॥ कुङ्कमं केसरं चैव चन्दनं रक्तचन्दनम् ॥ कस्तूरी गर्ह्वला द्वाभ्यां कर्पूरं नागकेशरम् ॥ १९७॥ नखं कृष्णागरं बाला गोरोचनमतः परम् ॥ हरिद्रौद्वयसिन्द्रं गौरसर्षपगुग्गुलम् ॥ ११८॥ नारिकेलं लवङ्गेलादशाङ्गं पञ्चखाद्यजम् ॥ जातीफलं जातिपत्रं गन्धराजादिकं तथा ॥ ३१९ ॥ तजपत्रं जटामांसी मोहं चैव शतोषधी ॥ कूष्माण्डमिश्चुदण्डं च जम्बीरं दाडिमं तथा ॥ १२०॥ रम्भाफलानि निम्बानि पुष्पाणि नागविक्षका ॥ गलसरी चोलिकादि पूगानि अम्बराणि च ॥ पायसं शर्करायुक्तं द्धिमध्वाज्यसंयुतम् ॥ पञ्चामृतमिदं प्राहुः पञ्चगव्यं तथा खल्लु ॥ १२१ ॥ धान्यानि मृत्तिकाः सप्त पञ्चपञ्चविल्वजम् ॥ शाल्योदनं च दध्यक्तं क्षीरान्नं घृतसंयुतम् ॥ १२२ ॥ बलिप्रदानार्थमिदं माष्युद्रसदी पकान् ॥ एतान्यादाय ॥ इति श्रीडामरतन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे प्रारम्भविधिर्नाम प्रथमावसरः ॥ १ ॥ अथादौ ब्राह्मे सुहूर्ते चोत्थाय श्रीगुरुपादौ स्मृत्वा श्रीमहाकाल्यादिदेवतात्रयं ध्यात्वा नत्वा च तदनुज्ञया नित्यकर्मानुष्ठानं कृत्वा तृणान्तरितभूमो मलमूत्रादिविसर्जनं विधाय ततः शौचादिकं स्मृत्युक्तमार्गेण मूळजेर्दन्तान् संशोध्याचम्य मुखं प्रक्षाल्य तत्प्रकारमाह ॥ विध्युक्तं शौचमादाय कुर्याद्दन्तविशोधनम् ॥ दन्तकाष्ठग्रहणमन्त्रः॥ आयुर्बलं॰ इति मूलेन वा प्रार्थ्य वाग्भवबीजेन दन्तधावनं कुर्यात् ॥ ततः कामराजबीजेन प्रक्षालितमुखो नयादौ स्थितः दशाञ्जलिभिरात्मानं नवबीजेन पावयेत् ॥ कृत्वा माध्याह्निकं सर्वमुद्कान्ते समाहितः॥ तपेणाय महालक्ष्म्याः षड्क्कन्यासमाचरेत् ॥ १२३ ॥ इति डामरोक्तम् ॥ ततो महानद्यादौ वापीकूपतडागादीनां तीरमागत्यानेन प्रकारेण देशकालसंकीर्तनपूर्वकं प्रयोगं स्मृत्या ॥ यथा अद्यपूर्वोक्तेवंग्रणविशिष्टेऽस्मिन् पाणिपादौ विशोध्याचम्य मुलेन प्राणानायम्य पुण्याहे अस्य यजमानस्य सर्वेप्सितसिद्धचर्थ चण्डीविधानशुद्धचर्थ तत्रादौ स्वसूत्रोक्तविधिना स्नानमहं करिष्ये॥ तथा च शत

कचोरा । २ इलद और दारुहलद ।

ब.ज्यो.र्ण. अर्थस्कंघ ८ ॥१०२॥

चण्डीपूजनाङ्गनवाणीविधिना स्नानं करिष्ये इति संकरूपपूर्वकं स्वसूत्रोकतिविधिना वैदिकमन्त्रेः संस्नाय पश्चान्नवाणीमन्त्रेण स्नानं कुर्यात् तद्यथा नाभिमात्रेऽम्भसि स्थित्वा नवबीजेन प्राणानायम्य उपास्यदेवताप्रीतयेऽहं स्नास्ये तत्रादौ प्राणायामं कृत्वा यथा ॥ अथास्य श्रीनवाक्षरमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः गायञ्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः ॥ शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाश्रामयों बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि आत्मनः सर्वकामनासिद्धचर्थं श्रीमहा काल्यादिदेवतात्रयप्रीत्यर्थे प्राणायामादिकरणे विनियोगः ॥ मूलेन प्राणायामत्रयं विधाय ततोऽर्कमण्डलाह्या स्वहृदयानमुलेन क्रोमित्यङ्कशमुद्रया तीर्थान्यावाद्य ॥ आधारः सर्वभृतेषु शक्तेरतुलतेजसः ॥ तद्रपाश्च ततो ज्ञाता आपस्तत्प्रणमाम्यहम् ॥ १२४ ॥ ब्रह्माण्डोद्रतीर्थानि करैः स्वृष्टानि ते रवे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थे देहि दिवाकर ॥ १२५ ॥ आवाहयामि देवि स्नानार्थमिह सुन्दिर ॥ एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमिनवते ॥ १२६ ॥ गङ्गे च० सन्निघौ भवेति ॥ तत्रात्मनः पुरतः जले त्रिकोणं तदुपरि षट्टकोणं चतुरसं च चतुर्द्वारसहितं यन्त्रमालिष्य तत्र मूलविद्यां विभाग्य मूलमन्त्रेण देवतां संचिन्तयेतु ॥ ततो मुद्रां संप्रदर्श ।। यथा महाकाल्यादिदेवतात्रयमूलसहिताऽत्र स्वागता अवेति संस्थाप्य सन्निहितो अव सन्निरुद्धो अव सम्मुखो भव ततो महामुद्धां मूलसमन्वितः दर्शयेत् ॥ तज्जलं विमिति बीजेन घेनुमुद्दया उद्क्रमाप्लाच्य कवचेनावगुण्का हंफहित्यस्त्र मन्त्रेण संरक्ष्य ततो घेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ततो दक्षिणपाणिना तज्जलं मूलेन द्वादशवारमभिमन्त्र्य ततो जलस्थमण्डलात्स्वदेहे षडङ्गं विन्यस्य मायाबीजेन यथा च ॥ ॐ ह्रीं चिण्डकाये हृदया ।। ॐ ह्रीं चिण्डकाये शिरसे ।। ॐ ह्रीं चिण्डकाये शिखा॰ ॥ ॐ ह्रीं चिण्डकायै कवचा॰ ॥ ॐ ह्रीं चिण्डकायै नेत्र॰ ॥ ॐ ह्रीं चिण्डकायै अह्ना॰ ॥ एवमंगुष्टादिषु न्यसेत् ॥ अनन्तरं जलस्थयन्त्रदेवतानां स्वहृदये ऐक्यं विभाग्य ॥ अहमस्मि ॥ चण्डीऋणोऽहमस्मि इति संभाग्यैवं तत्त्वत्रयेणाचम्य एँ आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः ॥ द्वीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ क्वीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वधा

उपा.स्त. इ दुर्गा. अ० ११८

मुलेन त्रिः प्राणायामं विधाय ॥ तत ओं नमश्चण्डिकाये इति मन्त्रमेकवारं जपन्निमज्ज्योन्मज्ज्याचम्य ततो दक्षिणपाणिना वाम करतले जलं निधाय तत्करस्थजलगलितोदकेन सूलेन द्वादशवारं वक्ष्यमाणप्रकारेण स्वाङ्गं मार्जयेत् ॥ ततश्चिण्डकायै नवबीजेन दशाञ्जलिभिः कलशमुद्रया सर्वाङ्गमात्मानमभिषिच्य ततस्तीर्थोदकेन मुलेन शङ्कमुद्रया द्वादशवारं स्वशिरिस अभिषिच्य तथा योनिमुद्रया षड्वारं बाहुभ्यां प्रोक्ष्य तथा धेनुमुद्रया षड्वारं चक्षुभर्यां प्रोक्ष्य तथाऽङ्कशमुद्रया त्रिप्रकारेण हत्संप्रोक्ष्य तथा कुम्भ बद्भया आपादमस्तकाविध त्रिवारमभिषिश्चेत् ॥ ततो मूलेन निमज्ज्योन्मज्ज्याचम्य ततो जलमन्त्रोपरि जलतर्पणं कार्यम् । महाकाल्यम्बादेग्ये नमस्तर्पयामि ॥ ह्रीं विद्यातत्त्वग्यापिन्ये श्रीमहालक्ष्म्यम्बादेग्ये स्वाहा तर्प यामि ॥ क्वीं शिवतत्त्वव्यापिन्यै श्रीमहासरस्वत्यम्बादेव्यै स्वधा तर्पयामि ॥ इति तत्त्वत्रयेण जलतर्पणं विधायोत्तीर्य धौते वाससी परिधाय मूलेन तत्रोपविश्याचम्य मूलेन वामकरतले तिलकं निधाय स॰यहस्तकनिष्ठिकया व्कोणं यन्त्रं विलिख्य षट्कोणे षडङ्गानि विन्यस्य अष्टाविंशतिवारं मुलेनाभिमन्त्र्य यथोक्तं तिलकं धारयेत् ॥ चन्दनादीनाह चन्दनमृगमदकुं कुमकेशरेः सर्वाङ्गमनुलिप्य तथा चोक्तम् ॥ कस्तूरी कुकुमं चैव चन्दनं च यथेच्छया ॥ सर्वोङ्गमनुलिप्यं च मार्कण्डेयो वचोऽब्रवीत् ॥ १२७ ॥ न तिर्यङ् मृत्तिका धार्या न चोध्वं भस्मना क्वचित् ॥ न शून्यमस्तकं चैव ऋषीणां च वचो यथा ॥ १२८ ॥ एवं तिलकधारणं कृत्वाऽनन्तरं मन्त्रसन्ध्यामुपास्य पूर्ववत्तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन षड्वारं वा संभावितप्राणायामं कुर्यात् ॥ पूर्ववहिषच्छन्दोदेवता उच्चार्य षडङ्गं कुर्यात् ॥ ततो दक्षिणहस्ते जलमादाय वामकरतले निधाय पुनः दक्षिणपाणिना तज्जलमाच्छाद्य मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रय तद्दक्षिणपाणिनाऽङ्कष्टानामिकाभ्यां मुखादिना प्रत्येकं संप्रोक्ष्य यथा जलेन मुखं प्रमुज्य तथा नासिकायां चक्षुभ्यां श्रोत्राभ्यां बाहुभ्यां शिरश्च शिखायां जल प्रमुज्य ततःशेषोदकं दक्षिणे गृहीत्वा नासांग्रसमीपमानीय वामनासया अन्तराकृष्य देवीं ध्यात्वा क्षालितैः पापसंचयेस्तदुद्कं कृष्णवर्णे दक्षिणनासया रेचितं

कृ.क्ज्यो.र्ग. धर्मस्कंध ८ ॥१०३॥ ध्यार गडिह्नाय फडिति मन्त्रेण वज्रशिलायां जलं क्षिपेत्।। अन्यब्बलं दक्षिणे गृहीत्वा मुलेन सकृदिभमन्त्रय मूलमन्त्रेण सकृत्प्राश्या चम्य ततः सुर्यमण्डलस्थायै देग्यै नम इति त्रिवारं जलमुत्क्षिपेत्।।ततोमूलगायञ्या त्रिरघर्ये दत्त्वा पुनराचम्यादि।।यथाच ए महाकालीवि महालक्ष्मी धीमि ॥ क्वी तन्नः सरस्वती प्रचोदयात् ॥स्वयहतिथिनक्षत्रयोगकरणसपरिवारायै सूर्यमण्डलस्थश्रीमहाकारुयै नम एवं श्रीमहालक्ष्म्ये नम इद० एवं महासरस्वत्ये नम इद० इत्यच्येत्रयं दत्त्वा पुनराचम्यादित्याभिमुखस्तिष्टन् जातवेद्स इति दुर्गासुक्तेनोपस्थाय सोऽहमस्मीत्यघ्वसुपसंहत्याचम्य मूलेन प्राणान।यम्य प्राग्वत्षदङ्गं कृत्वा गायत्रीं संप्रार्थ्य आयात् वरदा देवीत्यनेन तत्र यन्त्रसमीपे कात्यायनायेति दुर्गागायत्रीं दशवारं जिपत्वा यथाशक्त्या तत भिमुखस्तिष्ठन् गायत्रीं शतशो जपेत् ॥ गायत्र्या नित्यमुक्तस्य ज्ञानमुत्पद्येऽचिरात् ॥ उत्तिष्ठ देवि हृद्यं मम ॥ इति एह्मेहि महाकालि महालिक्ष्म महासरस्वति सम हृद्यं प्रविश्य स्वाहा ॥ यथा च दुर्गा गायत्री ॥ विद्महे कन्यकुमारि धीमहि ॥ तन्नो दुर्गिः ॥ प्रचोद्यात् अनया गायत्र्या यथाशक्तिसंख्याकाः श्रीमहाकाल्यादिदेवताः एवं दुर्गागायत्रीं विज्ञाप्य संप्रार्थ्य ध्यायेत् ॥ एवं न्यासिकयां ध्यात्वा ब्रह्माद्यमरवन्दिताम् ॥ १२९ ॥ इति ध्यात्वा विसृजेत् ॥ ततस्तर्पणमाचरेत् ॥ पूर्ववत्तत्त्वत्रयेणाचम्य स्नानवत्तीर्थमाकृष्य ततः जलयन्त्रोपरि तर्पणं कृत्वोत्तरास्यः दर्भपवित्रीकृतपाणिः शुचिर्भृतः इति संभाग्यः पूर्ववहष्यादि स्मृत्वा षडङ्गः विन्यस्य पश्चा पूर्वोक्तां ध्यात्वा चण्डितर्पणं करिष्य इति संकल्प्य आवाइनादिसुद्धाः प्रदर्श्य ततो नवबीजमन्त्रान्ते चण्डिका तृप्यताम् इति जलाञ्जलीनपृशतं सुगन्धकुसुमान्वितान् ॥ अशक्तश्चेत्तद्धेन तद्धेनाथवा पुनः ॥ महालक्ष्मीं तर्पयित्वा मन्त्रविदित्युक्तम् ॥ गन्धपुष्पसहितान् जलाञ्जलीब्नवबीजमन्त्रान्ते तृप्यतामिति अष्टोत्तरशतं तद्र्धे तद्र्धे वाऽष्टाविंशति वारं वाऽष्ट्वारं वा यथाशक्ति तर्पयेत् ॥ एवं समाप्याथ सूर्यपूजां समारभेत् ॥ यथा हि तत्रैव ॥ ततो भूमो

हुणा.स्त. व हुणा.

विलिख्य वा रक्ततन्दुलेन तत्राष्ट्रनामभिरभ्यच्ये तानि यथा ॥ मार्तण्डं भानुमादित्यं इंसं सूर्य दिवाकरम् ॥ तपनं भास्करं चैव दलेष्वेतांश्व पूजयेत् ॥ तथा च तत्रैव मार्तण्डभैरवं वक्ष्यमाणमन्त्रेण संपूज्य ॥ यथा ॥ ऐ ह्रां ह्रीं नम इति गन्चपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् तत्र कर्णिकायां प्रत्येकां परमेश्वरी मूलमन्त्रेणाचयेत् इति सूर्यपूजां विधाय ॥ ततः भूत्वा पूजाद्रव्याणि सम्पाद्य संगृह्म बाह्मजनं नावलोकयेत् ॥ यागमन्दिग्मागत्य बहिः पाणिपादौ प्रक्षाल्याचम्य ॥ श्रीडामरादितन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे स्नानसन्ध्यातर्पणसूर्यपूजाविधिर्नाम द्वितीयावसरः ॥ २ ॥ अथ मण्डपपक्षे गारं मण्डपादिकदलीस्तम्भविराजितं नानावितानशोभितं सतोरणं मण्डपं कृत्वा तन्मध्ये वेदिकामुक्तलक्षणां बद्धदीपविराजित दिव्यधूपधूपितांकृत्वा उक्तं च-प्रविश्य देवतागारं वितानोपरिशोभितम् ॥ पूजाद्रव्यैः प्रपूरितम् ॥ १३० ॥ बहुदीपप्रकाशाद्यं दिन्यधूपैः सुधूपितम्॥ एवं मण्डपद्वारदेशमागत्य औं हः द्वाराधि साधया मीति मन्त्रेण तत्र जलमापूर्य अंकुशमुद्रया गंगे च यमुने चैवेतिमन्त्रेण तीर्थान्यावाह्य मूलबीजेन गन्धपुष्पे निक्षिप्य धेनुमुद्रया ऽभिमन्त्रयेत् ॥ तेन जलेन मण्डपोरि ॥ ॐ श्रिये नमः ॥ मण्डपाधः ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय० ॥ मण्डपदक्षिणांसे ॥ ॐ मायाशक्तयै॰ ॥ ॐ दुर्गायै॰ ॥ ॐ गंगायै॰ ॥ ॐधात्रे॰ ॥ॐ पद्मनिधाये॰ ॥ मण्डपवामांसे ॥ ॐ चिच्छक्तयै॰ ॥ ॐ क्षेत्र पालाय ।। ॐ यमुनाये ॰ ॥ ॐ विधात्रे ॰ ॐ शङ्कानिधये ॰ ॥ एवं तिष्ठन्सन्मण्डपाची विधायाथ दक्षिणपादपुरःसरं वामांगसंकोच नेनान्तः प्रविश्य यागमण्डपं गत्वा मण्डपाय नम इति संपूज्य द्वारपूजामारभेत् ॥ तत्रादौ पूर्वद्वारे ॥ ॐ श्रियै॰ ऊर्ध्वे देहल्यै॰ दक्षिणवामशाखयोः न्यत्रोधमध्ये संपूज्य एं हीं कीं गं गणपितनाथपादुकां पूजयामि नमः ॥ तद्रस्रभाम्बापादुकां ।। तत्र दक्षिण वामी द्रौ कलशो ॥ ॐ गं गंगायै० ॥ ॐ यं यमुनायै० ॥ ततो दक्षिणद्वारे ॥ ॐ श्रियै० सःध्वें देहल्यै० ॥ दक्षिणवामशाखयो बटुकनाथश्रीपादुकां॰ ॥ तद्वल्लभाम्बाश्रीपादुकां॰ ॥ तत्र दक्षिणवामौ द्रौ कलशौ

बु.क्क्बो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥१९०४॥

ॐ गं गंगायै॰ ॥ ॐ यं यमुनायै॰ ॥ ततः पश्चिमद्वारे ॥ ॐ श्रियै॰ ॥ ऊर्ध्वं देहल्यै॰ ॥ दक्षिणवामशाखयोः अश्वत्थतोरणमध्ये संपूज्य॰ ॥ ऐं हीं क्वीं कामनाथदेवश्रीपाडुकां॰ ॥ तद्वछभाम्बापाडुकां॰ ॥ तत्र दक्षिणवामौ द्वौ कलशौ ॥ ॐ गं गंगायै॰ ॥ ॐ यं यमुनाये॰ तत उत्तरद्वारे ॥ ॐ श्रिये॰॥ऊर्ध्वदेहलीं देहल्ये नमःइतिपूजयेत् ॥ दक्षिणवामशाखयोः पालाशतोर्णे ऐं हीं क्वीं क्षेत्रनाथश्रीपादुकां॰ ॥ तद्रस्त्रभाम्बापादुकां॰ ॥ तत्र दक्षिणावामी हो कलशो ॥ ॐ गं गंगयि॰ ॥ ॐ यं यमुनाये॰ ॥ मण्ड पाधः ॥ ॐ श्रिये॰ ॥ ,ऊर्ध्वदेहलीमध्ये ऐं हीं क्षीं वं वसन्तनाथश्रीपादुकां॰ ॥ तद्रस्त्रभम्बाश्री॰ ॥ एवं पूर्वद्वारादिक्रमेण चतुर्द्वार पालपूजां समाप्यानन्तरं पूर्वाद्यष्टदिश्च कमेण ब्राह्मयाद्यष्टदेवताः संपूज्य ताः यथा ॐ ब्राह्मये॰ ॥ ॐ माहेश्वर्ये॰ ॥ ॐ कौमार्ये॰ ॥ ॐ वैष्णन्ये॰ ॥ ॐ वाराह्मै॰ ॥ ॐ ऐद्रचे ॥ चामुण्डाये॰ ॥ ॐ चण्डिकाये॰ ॥ एवं संपूज्यानन्तरं मण्डप पश्चिमद्वारं प्रविशेत् ॥ आचार्यप्रमुखऋत्विग्भ्यो जपार्थ देग्या अनुज्ञां लब्ध्वा कामकोधादीन् त्यक्त्वा धृतिमान् श्वेतकम्बला ढचासनात्पश्चात्प्रत्येकसुपविश्य स्वस्वासनपूजां कुर्यात् ॥ उत्पर्तान्त्वह भूतानि पृथिव्यन्तरवासिनाम् ॥ आसनं किल्पतं यनमे सर्वकर्म समारभेत् ॥ १३१ तत्रोपविश्य विधिना पूजयित्वा हरीश्वरौ ॥ चतुरस्रे समे शुद्धे सर्वदोषविवार्जिते ॥ १३२ ॥ लिखे दष्ट्र पद्मं चन्द्नाबरुकुंकुमैः ॥ पद्ममध्ये लिखेचकं षट्कोणं चण्डिकामयम् ॥ १३३ ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थमाद्यवीजत्रयं न्यसेत् ॥ पूर्वादिषद्सु कोणेषु बीजान्यन्यानि विन्यसेत् ॥ १३४ ॥ गुद्मेद्रान्तरं वामपादमूलेन पीडितम् ॥ वामपादोपरि स्थाप्य दक्षिणं चरणं दृढम् ॥ १३५ ॥ एतद्वजासनं नाम जरामरणवर्जितम् ॥ मौनी बद्धासनी ज्ञानी निश्चलवित्रहः ॥ १३६ ॥ अनाहताद्विशुध्याज्ञां भेदियत्वा यथाक्रमम् ॥ स्वशरीराद्विनिर्गत्य सूक्ष्मरूपार्घमार्गतः ॥ १३७ ॥ एतद्देग्यासनलक्षणम् ॥ एवं देग्या सनादीनि पुजयेत् ॥ यथा च ॐ नागाधिपतये नमः ॥ ॐ कूर्मासनाय ।। ॐ वराहाय ।। ॐ पृथि वै ।। ॐ वास्तु पुरुषाय ।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ ॐ ऐं हीं क्वीं आधारशक्त्यासनाय ।। ॐ अनन्तासनाय ।। ॐ विमलासनाय ।।

डपा.स्त. व

1111 - 21

ॐ पद्मासनाय ।। ॐ सिंहासनाय ।। ॐ कमलासनाय ।। इत्यासनेषु कुशान्द्यात् ।। एवं कृत्वा स्वासने प्राङ्मुखाः पद्मासनस्था उद्रमुखा वा उपवेशयेत्स्वासनेषु निश्चलां महालक्ष्मीं ध्यायेत् ॥ ततः पृथ्वि त्वयेति मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूमीं देवता आसने विनियोगः ॥ पृथ्वि त्वया कुरु चासनमिति मन्त्रेणासने उपविश्य ॥ ततः सर्षपाक्षतान्गृहीत्वा निर्विघ्नभूतानु त्सार्य ॥ अपसर्पन्तु॰ हः अस्त्राय फट् ॥ इत्यनेन मन्त्रेण दशदिश्च वामपार्षिणघातत्रयेणोध्वे तालत्रयं कृत्वा सुदर्शनेनावोरेण वाऽष्ट दिश्च सर्षपैर्भुतोत्सारणं कृत्वा ॥ ततो वामपादपार्षिणना त्रिवारं भूमेस्ताडनं कृत्वा भौमभूतान् अस्त्रमन्त्राभिमन्त्रितजलेन परितः क्षिप्तवाडन्तरिक्षचरान् ऊर्ध्वमधः अष्टदिश्च दिन्यहृद्षृष्टिनिरीक्षणेन दिन्यान् भूतान् छोटिकया उत्सार्यतत्र सुदर्शनमन्त्रेण अन्तरितः रक्षोन्तरिता अरातयः शारङ्गाय सुदर्शनाय अस्त्राय हुंफट् स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेण सुदर्शनं नमस्कृत्य भूतादीनि निर्गतानि स्मृत्वा निर्गच्छतां भूतानां वामाङ्गसंकोचनेन मार्गं दत्त्वाऽस्त्रमन्त्रेण तालत्रयं विधाय ॥ ततोऽनुज्ञामनुपाप्य वेद्यामाचार्यसित्रिधौ शुश्रे भृद्वा सने सर्वाच ब्राह्मणाजुपवेशयेदिति ॥ १३८ ॥ ततस्तीक्ष्णदंष्ट्र० भैरवाजुज्ञां लब्ध्वा क्षेत्रपालं नमेत् ॥ तत्र मन्त्रो यथा स्य पितना॰ हरो इति ॥ ततः नाराचमुद्रां प्रदर्श्य गणेशादिकान् यजेत् ॥ यथा स्वदक्षिणभुजे ॥ ॐ गं गणपतये॰ ॥ वामभुजे दुं दुर्गायै॰ ॥ दक्षिणजान्वोः क्षं क्षेत्रपालाय॰ ॥ वामजान्वोः सं सरस्वत्यै॰ ॥ स्वशिरिस मं महाकाल्यै॰ ॥ मुखे पं परमात्मने॰ ॥ हृदये मं मातृभ्यो नमः ॥ पं पितृभ्यो नमः ॥ अं आचार्यभ्यो नमः ॥ गुं गुरुभ्यो नमः ॥ पं परमगुरुभ्यो॰ ॥ पं परमेष्टि गुरुभ्यो॰ इति गुरुत्रयं वामस्कन्धे न्यस्य ॥ श्री नाथादिगुरुत्रयं गणपति पीठत्रयं भैरवं सिद्धेभ्यो बटुकत्रयं पद्युगं दूतिक्रमं शाम्भ वम् ॥ वीरे चाष्ट्चतुष्कषष्टिवनकं वीरावलीसप्तमं श्रीमन्मालिनि मन्त्रराजसहितं वन्दे गुरुरोर्मण्डलम् ॥ १३९ ॥ इति श्रीडामरादि तन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे मण्डपप्रवेशादिविधिर्नाम तृतीयावसरः ॥३॥ ग्रुर्वादीनेवं नत्वाऽनन्तरं पापपुरुषं दहेत् ॥ यथा ॥ अथास्य शरीरस्यात्मा ऋषिः प्रतिपुरुषश्छन्दः सत्यं देवता देहस्य सुयोग्यतासिद्धचर्थं विनि०॥ ब्रह्महत्याशिरस्कं च स्वर्णस्तेयभुज

अर्थरकं ध ८ 119-611

द्वयम् ॥ सुरापानहृदा युक्तं ग्रुरुतल्पकिटद्वयम् ॥ १४० ॥ तत्संयोगिपद्द्वन्द्वमङ्गप्रप्रत्यङ्गपातकम् ॥ उपपातकरोमाणं द्रग्वश्मश्रु विलोचनम् ॥ १४१ ॥ अचेतनमधोवक्रं द्रग्धपाद्पसित्रभम् ॥ द्रग्धवामधरं कृष्णं कुक्षौ पापं विचिन्तयेत् ॥ १४२ ॥ एवं पाप पुरुषं संचिन्त्य ॥ ततः स्वशरीरे एवं वक्ष्यमाणभावनां संभावयेत् ॥ हिद् स्थितं पङ्कजमष्ट्पत्रं सकर्णिकं केसरपद्मनालम् ॥ अधो सुखं तु हत्पद्मं प्रणवेनोर्ध्वमुत्रयेत् ॥ तत्रस्थं चिन्तयात्मानं हंसोऽहिमति भावयेत् ॥ १४३ ॥ पार्श्ववातकरस्कोटं दिग्यदृष्टिविलो चनम् ॥ ततः प्रणवेनोध्वं मुखीकृत्य प्रणवेन विकासीकृत्य ॥ ॐ मूलाधार उत्थितां प्राणशक्ति ॐ ह्रीं इंसः सोऽहमिति मन्त्रेण सुषुम्ना मार्गेण ब्रह्मरश्रं नीत्वा तत्र परमात्मिनि संयोज्य स्थूलदेहोपसंहारं भावयेत् ॥ अथ तत्त्वत्रयेण पूर्ववदाचम्य मूलेन वारत्रयं प्राणा नायम्य देशकालौ संस्मृत्य ॥ कर्ताऽमुकनामधेयस्य मम सकलमनोरथावाप्त्यर्थमभीष्टदेवतामुद्दिश्य महाकाल्यादिदेवतात्रयप्रीत्यर्थ महाकाल्यादिप्रतिष्ठापूजनं करिष्ये ॥ तदङ्गमादौ जपयोग्यदिष्यदेहावातये भूतशुद्धि करिष्ये ॥ तथा च प्राणप्रतिष्ठाऽन्तमातृका बहिर्मातृकान्यासपूर्वकान् करुपोक्तन्यासानहं करिष्य इति संकरुप्य ॥ अथ भूतशुद्धिमारभेत् ॥ पादादिजानुपर्यन्तं पृथ्वीस्थानं चतु रस्रं पीतवर्ण वत्रलाञ्छितं तन्मध्ये लं बीजं ध्यायेत् ॥ पार्थिवमन्त्रस्य अत्रिऋषिः गायत्री च्छन्दः ॥ भूमिर्देवता पार्थिवास्य भूतशुद्धचर्थे जपे वि॰ ॥ ॐ लंफट् ॥ इति तेन पञ्चगुणा पृथ्वी अप्सु उपसंहरामि षड्द्वातप्रयोगेण शोषयेत् ॥ जान्वादिनाभिपर्यन्त मपां स्थानं तत्र वरुणमण्डलं धनुराकारमुभयोः कटचोः श्वेतवर्णं पद्मलाञ्छितं तन्मध्ये वं बीजं ध्यायेत्॥वरूणमन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः वरुणो देवता वरूणारुयभूतशुद्धचर्थं जपे वि०॥ ॐ वं हुंफट् ॥ इति तेन चतुर्गुणा आपः रमिश्रमुपसंहरामि पश्चोद्धात प्रयोगेण प्रावयेत ॥ नाभ्यादिहदयपर्यन्तमिष्ठस्थानं तत्र त्रिकोणमण्डलं रक्तवर्णे स्वस्तिकाङ्कितं तन्मध्ये रं बीजं ध्यायेत् ॥ अग्नि बीजस्य ब्रह्मा ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः अग्निद्वता आग्नेयाख्यभूतशुद्धचर्थे जपे वि० ॥ ॐ यं हुंप्पट् ॥ इति तेन द्विग्रुणं वायुमाकाशे उपसंहरामि त्रिरुद्धातप्रयोगेण पिण्डीं कारयेत् ॥ भ्रमध्यादारभ्य ब्रह्मरभान्तमाकाशस्थानं वृत्तमण्डलं षड्बिन्दुलाञ्छतं धूम्रवर्ण

बर्गा.

तन्मध्ये हं बीज ध्यायेत्।। आकाशबीजस्येश्वर ऋषिः जगती छन्दः महदाकाशो देवता आकाशाख्यभूतज्ञुद्धचर्यं जपे वि०॥ ॐ हुं हुफट् ॥ इति सर्ववर्ण तेनैकगुणं नभो द्विरुद्धातप्रयोगेण आकाशमहङ्कारे उपसंहरामि ॥ एवं स्वशरीरे पश्चमहाभूतानि ज्ञात्वा वायु बीजेन शोषयेत्॥ अमृतबीजेनाप्लावयेत्॥ अग्निबीजेन दाहयेत्॥ पृथ्वीबीजेन पिण्डीं कारयेत्॥ आकाशबीजेन देहं निष्पादयेत्॥ अस्मन्मनोवाक्कायकृतपापस्य शोषणाप्लावनदहनपिण्डीकरणदेहस्थापनानि करिष्ये ॥ इंस इति मन्त्रस्य इंस ऋषिः अध्यक्तगायत्री छन्दः परमहंसो देवता हंस इति बीजं सोऽहमिति शक्तिः ब्रह्मबीजं मायाशिक्तः जीवो बीजं बुद्धिः शिक्तः उदानो बीजं सुषुम्ना शिक्तः सर्वमन्त्राङ्गत्वे जपे वि॰ ॥ तत्र हंसस्य षडङ्गन्यासः ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा हृद्द ॥ ॐ सोमाय स्वाहा शिर०॥ ॐ निरञ्जनाय स्वाहा शिखा॰॥ॐ निराभासाय स्वाहा कव०॥ॐ अतनतनुसूक्ष्मतनुनेत्र०॥प्रचोदयादस्त्राय०॥ॐ हंसः सोऽहमिति मन्त्रः ॥ ॐ अग्नीषोमाभ्यां वौषट् ॥ अनेन सर्वाङ्गव्यापकमेवमंगुष्ठादिन्यासेन कूर्परादिकरतलान्तं नयसेत् ॥ एवं नयासं कृत्वा ततः सोऽहमिति मंत्रेण द्वादशान्त स्थितं जीवत्वं नाशय सहपरमात्मानं स्वहृदये अष्टदले समानीय प्रकाशयेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ अग्नीषोमौ पञ्जौ ॥ ॐ कारशक्तिं विन्दुत्रिनेत्रं मुखं रुद्दः रुद्दो रुद्दाणी चरणौ ॥ कालश्चामिश्च उमे पार्श्वे सोऽहं हंसः परमहंसो भानुकोटिसहस्रवकाशात् येनेदं व्याप्तम्॥ इत्यनेन ध्यात्वा ततो वासनामयं पापपुरुषं कृष्णं भीमम् इति वामकुक्षौ विचिन्त्य पूरकेण वायुकीजम् ॥ ॐ यं हुंफट् इति षोडश वारं ध्यात्वा शोषयेत् ॥ वरुणबीजम् ॥ ॐ वं हुंफट् इति षोडशवारं पूरकेण ध्यात्वा प्लावयेत् ॥ ॐ रं हुंफट् इत्यिमबीजं कुम्भकेन चतुःषष्टिवारं ध्यात्वा पापं दुग्धं विचिन्त्य ॥ ॐ यं फिडिति द्वात्रिंशद्वारं ध्यात्वा तेन वायुना तद्भस्म रेचकेन दक्षिणनाडचा बिहिनिंगीतं विचिन्त्य ॥ ॐ वं हुंफट् इत्यमृतबीज सस्तके ध्यात्वाऽमृतधारासजीवनीं विचिन्त्य इत्याधारे ॥ ॐ छं फट् इति पृथ्वीबीजं तेन देहिपण्डं विचिन्त्य ॥ ॐ हं फट् इत्याकाशबीजं तेन देहाकारानवयवान् ध्यात्वा हृदये च स्वजीवकलां ह्रीं सोऽहं इस इति मंत्रेण स्वदेहोपविष्टं ध्यात्वा ॥ श्रीमहालक्ष्मीरूपा ब्रह्मणः प्रकृतेर्महत् महतोऽहंकारः अहंकारादाकाशः

ब्र.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१०६॥

द्वायुः वायोरिमः अमेरापः अद्धः पृथिवी पृथिन्या ओषधयः ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नाद्देतः रेतसः पुरुषः इति कमाद्देहादिरूपेण परमात्मरूपेण श्रीमहालक्ष्मीरूपोऽहमिति ध्यायेत् एतेभ्यः पञ्चमहाभूतेभ्यः सकाशात्म्वशरीरं तेजोमयं पुण्यात्मकं सर्वरूपार्थं साधनं देवताराधनं स्वपरामुत्पन्नमिति ॥ उक्तम् आकाशाद्वायुरिति श्रुतिः ॥ इति भूतशुद्धिः ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठान्यासः ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रष्य न्नस्वरूपिणी प्राणशिकतं श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रष्य न्नस्वरूपिणी प्राणशिकतं देवता आं बीजं हीं शिक्तः को कीलकं स्वाहा शिक्तः हं बीजं सः शिक्तः अस्य प्राणप्रतिष्ठाकरणे वि० तत्र करषडङ्गः ॐ आं हीं कों अं कं खं गं घं डं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने नमः ॥ आं कों हीं आं ॐ अंगु०हृद्व।। ॐ आं हीं कीं इं चं छं जं झं अं शब्दस्परीह्रपरसगन्धात्मने ।। ई कों हीं आं ॐ तर्ज शिरसे ।। ॐ आं हीं कों उं टं ठं डं ढं णं त्वक्चक्षःश्रोत्रजिह्वात्राण प्राणात्मने ॰ ऊं कों हीं आं ॐ मध्य ॰ शिखाये ॰ ॥ ॐ आं हीं कों एं तं थं दं घं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ॰ ऐं कों हीं आं ॐ अना॰ कवचाय हुम् ॥ ॐ आं हीं कों ओं पं फं बं भं मं वचमादानगमनविसर्गानन्दात्मने॰ ओं कों हीं आं ॐ कनि॰नेत्र॰॥ ॐ आं हीं कों अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनोबुद्धचहंकारचित्तात्मने ।। अः क्रों हीं आं ॐ कर अश्ला ।। अथ ध्यानम् ॥ रक्ताम्भोधिस्थपोतोछसदरूणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्डमिश्चद्भवनमथगुणानङ्कुशं पञ्चवाणान् ॥ विश्वाणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलिसता पीनवक्षोक्रहाट्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशिक्तः परा नः ॥ एवं ध्यात्वाऽनन्तरं प्राणप्रतिष्ठा कार्या ॥ अं हीं कों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं सोऽहं हंसः हंसः सोऽहम् इति मन्त्रं जिपत्वाऽन्ते सम प्राणाः सम इह स्थितः मम सर्वेन्द्रियाणि मम बाङ्मनश्रक्षुःश्रोत्रजिह्वाद्याणप्राणा इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा एवं हृदये हस्तं दत्त्वा वारत्रयं जपेत् इति प्राणप्रतिष्ठा ॥ अथान्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृकासग्स्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः छं कीलकं मातृकान्यासे विनियोगः ॥ ॐ अं कं ५ आं अंग्रुष्टाभ्यां नमः हृद्याय० ॐ इं चं ५ ईं तर्जनीभ्या

उपा.स्त. **१** इनीई अ॰ ११६

11905H

नसः शिर् ॐ उं टं ६ ऊं मध्यमाभ्यां नमः शिखायै॰ ॐ एं तं ६ एं अना॰ कवचाय हुं ॐ ओं एं ६ औं कनिष्ठि॰ नेत्र॰ ॐ अं ये॰ अः कर॰ नमोश्चाय फट् ॥ इति करषडङ्गः ॥ पुनः अकारादिषोडशस्त्रराः कण्ठपद्मे अं आं ई ई उं ऊं ऋं ऋं ॡं ॡं एं ऐं ओं ओं अं अः कण्ठे वं शं षं सं अपाने बं भं मं यं रं लंलिङ्गे डं ढं णं तं थं दं घं नं एं फं नाभौ कं खं गं घं ङं चंछं जं झं ञं टं ठं हृदये हं भूमध्ये क्षं ब्रह्मरन्ध्रे एवं न्यासं कृत्वाऽन्ते ध्यात्वा ॥ व्योमेन्दौ रसवर्णिकर्णिकमचद्वनद्वे स्फुरत्केशरं पात्रान्तर्गत पञ्चवर्गयशलावर्णादिवर्गकमात् ॥ आशास्विष्ठेषु लांनलाङ्गवियुतक्षोणीपुरेणावृतं वर्णाद्यं शिवसंस्थितं विषगतप्रध्वंसिमृत्युञ्जयम्। इत्यन्तर्मातृकान्यासः ॥ अथ बहिर्मातृकान्यासस्य प्रासाद्यनारायण ऋषिः निवृत् गायत्री छन्दः बहिर्मातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः बिन्दवः कीलकं बहिर्मातृकान्यासे वि॰ ॥ अथ स्नानलक्षणमाहः ॥ आद्यौ मौलिरथापरो मुखिम नेत्रे च कर्णे उ ऊ नासावंशपुटे ऋ ऋ तद्बुजौ वर्णी कपोलद्वये ॥ दन्ताश्चोर्ध्वमधस्तथौष्ठयुगलं संध्यक्षराणि क्रमाजिह्वामूलमुद्र बिन्दुरिप च श्रीवा विसर्गः स्वराः ॥ एतत्प्रकटीकृतम् अं शिरिस आं मुखे इं ई नेत्रयोः उं ऊ कर्णयोः ऋं ऋं नासापुटयोः ऌं ऌं कपोलद्वये ए एं दन्तपंक्ती ओं औं ओष्टयुग्मे अं जिह्वामूले अः श्रीवायाम् ॥ अथ वर्गमातृकान्यासः ॥ कादिर्दक्षिणतो भुजस्तद परो वर्गश्च वामो मुजष्टादिस्तादिरनुक्रमेण चरणौ कुक्षिद्वयं ते पफौ ॥ वंशः पृष्ठिभवोऽथ नाभिहृद्यं वादित्रयं धातवो याद्याः सप्त समीरणश्च पुरतः क्षकोध इत्यम्बिके ॥ एतत्प्रकटीकृतं कं दक्षिणबाहुमुले खं दक्षिणकूर्परे गं दक्षिणमणिबन्धे घं याम्याङ्गुलि मूले॥ इं दक्षिणाङ्गुल्यत्रेषु चं वामबाहुमूले छं वामकूर्परे जं वाममणिबन्धे झं वामांगुलिमूले ञं वामाङ्गुल्यत्रेषु टं दक्षिणपाद मूले ठं दक्षजातुनि इं दक्षिणगुल्फे ढं दक्षिणपादाङ्गुलिमूले णं दक्षिणपादङ्गुल्यग्रेषु तं वादपादमूले थं वामजातुनि इं वामगुल्फे धं वामपादाङ्गुलिमूले नं वामपादाङ्गुल्यग्रेषु पं दक्षिणपार्श्वे फं वामपार्श्वे बं पृष्ठिवंशे भं नाभौ मं हृदये यं त्वगात्मने नमः॥श्रीवा मूळे रं असुगात्मने ।। श्रीवादिदक्षिणभागे लं मांसात्मने नमः ॥ श्रीवादिपृष्टिवंशे वं मेदात्मने ॥ अंसादिदक्षिणहस्ते शं अस्थ्या बु.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१०७॥

त्मने ।। श्रीवोत्तरभागे वं मजात्मने ।। वामहस्ते सं शुक्लात्मने दक्षिणपादम्लादशपर्यन्तं न्यसेत् ।। हं प्राणात्मने ।। वामपादमूलादारभ्य मस्तकपर्यन्तं क्षं परमात्मने ।। मस्तकादिचरणपर्यन्तं न्यसेत्।। अथ ध्यानम् ॥ पञ्चाशद्वर्ण ।। इति बहि र्मातृकावर्णमातृकान्यासः ॥ इति डामरादितन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे भृतशुद्धचादिवर्णमातृकान्यासान्तविधिर्नाम ४॥ अथैकादशन्यासक्रमः ॥ तत्रादौ मातृकान्यासः प्रथमः ॥ अकारादिक्षकारान्ता मायाबीजयुक्ताः सृष्टिमातृकोक्तस्था नेषु न्यसेत् ॥ तद्यथा अस्य श्रीमातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः देवी गायत्री च्छन्दः श्रीमातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः अनुष्ठीयमानचण्डीमखसिद्धचर्थं नवार्णमन्त्राङ्गत्वेन मातृकान्यासे वि॰ ॥ ॐ ऐं हीं क्वीं अं कं एं हीं कीं इं चं ५ ई तर्ज ॰ शिरसे॰ ॥ ॐ ऐं हीं कीं उं टं ५ ऊं मध्य ॰ शिखा ॰ ॥ ॐ ऐं हीं कीं ऐं तं ॰ ५ ऐं अना ॰ कव ॰ क्वीं ओं पं॰ ५ औं किनि॰ नेत्र॰॥ ॐ ऐं हीं क्वीं अं यं ५ अः कर॰ अह्या॰ इति अग्रे सर्वत्र योजयेत् ॥ यथा च ४ अं नमः शिरिस ४ आं नमः मुखे ४ इं नमः दक्षिणनेत्रे ४ इं नमः वामनेत्रे ४ इं नमः दक्षिणकर्णे ४ ऊं नमः वामकर्णे ४ ऋं नमः दक्षिणनासाषुटे ४ ऋं नमः वामनासाषुटे ४ ऌं नमो दक्षिणगण्डे नमः वामगण्डे ४ एं नमः ऊर्ध्वोष्टि ४ एं नमः अधरोष्टे ४ ओं नमः उर्ध्वदन्तपङ्कौ ४ अं नमः अधोदन्तपङ्कौ ४ अं नमः जिह्वायाम् ४ अः नमः ब्रह्मरन्त्रे ४ कं खं गं घं डं दक्षिणहस्ते ४ चं ५ नमः वामहस्ते ४ टं ५ नमः दक्षिणपादे ४ तं दक्षिणकुक्षो ४ फं नमः वामकुक्षौ ४ बं नमः पृष्ठवंशो ४ मं नमः नाभौ ४ मं नमः उद्रे ४ यं त्वगात्मने नमः आधारे ४ असृगात्मने ॰ स्वाधिष्ठाने ॰ ४ लं मांसात्मने ॰ मणिपूरके ४ वं स्नाय्वात्मने नमः अनाहते ४ शं अस्थ्यात्मने नमो विशुद्धौ ॥ ॐ ३ षं मजात्मने नमः तालौ ॥ ॐ ३ सं शुक्रात्मने नमः आज्ञाचके १ हं प्राणात्मने नमो ललाटे १ नमो ब्रह्मरन्त्रे ॥ इति मातृकान्यासः प्रथमः ॥ अयं ते मातृकान्यासः प्रथमः परिकीर्तितः ॥ साङ्गवेदसमाभिकतर्भूषितो येन

उपा.ज्ञा.

मान्त्रिकः ॥ अथ सारस्वतो न्यासो द्वितीयस्तु प्रकथ्यते ॥ उक्तमन्त्रस्य बीजानां नवानां देशतार्चने ॥ ततः वाग्भवमायाकाम राजबीजानि प्रणवपूर्वकानि नामाक्षराणि नमोऽन्तानि कनिष्ठिकादि अंग्रुष्ठान्तं करतलपृष्ठाभ्यां च कराभ्यां कूर्पराभ्यां मणि बन्धाभ्यां च हृदि मूर्धि शिखायां कवचनेत्रत्रयास्त्रदिग्बन्धान्तं न्यासं प्रवक्ष्ये ॥ ॐ ऐ ह्वीं क्वीं चां नमः कनि० ॥ ओं ३ मुं नमः अना० ॥ ॐ ३ डां नमो मध्य० ॥ ॐ ३ यें नमस्तर्ज्ञ० ॥ ॐ ३ विं नमोंऽग्र० ॥ ॐ ३ चें नमः करतल० ॥ एवं विपरीतषडङ्गः ॥ ॐ ३ चां मुं नमः कराभ्यां नमः ॥ ॐ ३ डां यें नमः कूर्परयोनीमः ॥ ॐ ३ विं चें नमः मणिबन्धाभ्यां ०ततः हृद्यादि॥ॐ३ चां नमो हद ० ॐ ३ मुं नमः शिरिस ॥ ॐ ३ डां नमः शिखाये व० ॥ ॐ ३ यें नमः कवचा० ॥ ॐ ३ विं नमो नेत्रत्रया० ॥ ॐ ३ ज्ञें नमोऽस्त्राय फट् ॥ ॐ फडिति सर्वासु दिश्च दिग्बन्धः ॥ भृशं सारस्वतो न्यासो महत्यस्मिन्कृते सति ॥ त्वरितं विलयं याति जाडचं प्राक्रपाप संभवम् ॥ इति सारस्वतन्यासो द्वितीयः॥तृतीयं ते प्रवक्ष्यामिन्यासं मातृगणान्वितम्॥मायाबीजसमायुक्तं सर्वदेवित्रयो यतः॥ब्राह्यया द्यष्टसु पूर्वादीन् ब्रह्माणी पातु ते नमः ॥ एवमीशानपर्यन्तमष्टी मातृः प्रपूजयेत् ॥ ऊर्ध्वं व्योमेश्वरी पातु सप्तदीपेश्वरी सुवि॥नागेश्वरी च पाताले न्यासकर्ता सुनिर्भयः ॥ जायते त्रिषु लोकेषु सर्वदेविप्रयोयतः ॥ ॐ ह्रीं ब्राह्मये नमः ब्रह्माणी पातु पूर्वे॥ॐ ह्रीं माहे श्वयेँ नमः माहेश्वरी पातु आग्नेय्याम्॥ॐ ह्वीं कौमार्ये नमः कौमारी पातु दक्षिणस्याम् ॥ ॐ ह्वीं वैष्णव्ये नमःवैष्णवी पातु नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ ह्वीं वाराह्ये नमः वाराही पातु पश्चिमायाम्॥ॐ ह्रीं ऐन्द्रचै नमः ऐन्द्री पातु वायन्याम्॥ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः चामुण्डा पातु उत्तरस्याम्॥ ॐ क्ष्मीं नारसिंही नमः नारसिंही पातु ईशान्याम् ॥ ॐ हीं न्योमेश्वरीं नमः न्योमेश्वरी पातु उध्वें ॥ ॐ हीं सप्तद्वीपेश्वरीं नमः सप्तद्वीपे नागे वर्षे नमःनागे वरी पातु पाताले ॥ इति मातृगणन्यासस्तृतीयः ॥ षट्देवीनां पुनर्न्यासं चतुर्थे विचम भूमिप ॥ पूर्वाङ्कं नन्दजा पातु कमलांकुशमण्डिता ॥ खङ्गपात्रधरा पातु दक्षाङ्गं रक्तद्नित का ॥ पुष्पपञ्चनमूळादिइस्ता शाकंभरी परा ।। धनुर्बाणधरा दुर्गा वामे दुर्गार्तिनाशनी ॥ शिरःपात्रधरा भीमा मस्तकाखरणा

ब्.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥१९८॥

विधि ॥ चरणाद्याशिरो यावत् श्रामरी चित्रकान्तिभृत् ॥ श्वेतानना नीलबाहुः पातु मां खङ्गधारिणी॥ शताक्षी व्यापके पातु सहस्रे रक्षरैश्चिता ॥ अनेन न्यासयोगेन जरामरणवार्जतः निर्भयश्चाियचोराभ्यां मान्त्रिकस्तत्क्षणाद् भवेत् ॥ एतत् प्रकटीकृतम् ॥ ॐ हीं नं नन्दजाये नमः पूर्वाङ्गं पातु ॥ ॐ हसीं रं रक्तद्नितकाये नमःदक्षिणा पातु ॥ ॐ हीं शां शांकभर्ये नमः पश्चिमांगं यातु ॥ ॐ हीं दुं दुर्गाये नमः उत्तराङ्गं पातु॥ ॐहीं भीं भीमाये नमः मस्तकाञ्चरणपर्यन्तं पातु ॥ ॐ श्रां श्रामये नमः पादादारभ्य शिरःपर्यन्तं पातु ॥ ॐ ह्रीं शं शताक्ष्ये वमः सर्वांगं व्यापकं पातु ॥ अथ विरञ्च्यादिहरिहरन्यासः पञ्चमः ॥ पादादि नाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु सन्यं ततः ॥ नाभेविंशुद्धिपर्यन्तं पातु नित्यो जनार्दनः ॥ विशुद्धेस्तु शिखामूले पातु रुद्दिस्रलोचनः ॥ हंसः पातु पद् इन्द्रं वैनतेयः करद्रयम् ॥ चक्षुषी वृषभः पातु सर्वाङ्गानि गजाननः ॥ एवं परंपरां पातु सर्वानन्दमयो हरिः ॥ मस्तकाचरणपर्यन्तं चरणान्मस्तकावि ॥ अभेद्यः पश्चमो न्यासः कर्तृकामदुघाफलः ॥ एतत्स्पष्टम् ॥ ॐ ह्वीं ऐ ब्रं ब्रह्मणे नमः पादाभ्यां नाभिपैर्यन्तं पातु ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जं जनार्दनाय नमः नाभोर्विशुद्धिपर्यन्तं पातु ॥ ॐ ह्रीं हं हंसाय नमः पादद्वयं पातु ॥ ॐ नमः करद्वर्य पातु ॥ ॐ ह्रीं वृं वृषभाय नमः चक्षुषी पातु ॥ ॐ ह्रीं गं गजाननाय नमः सर्वोङ्गानि पातु ॥ ॐ ह्रीं रं रत्ये हिर भ्यां मस्तकाचरणान्तं चरणान्मस्तकपर्यन्तं व्यापकं पातु ॥ अथ वैकुण्ठमुखन्यामः षष्ठः ॥ महापापोपपापाभ्यां प्रायश्चित्त मसौ भवेत् ॥ मध्यं पातु महालक्ष्मीरष्टादशभुजा ध्रवम् ॥ ऊर्ध्वं सरस्वती पातु भुजैरष्टाभिद्धार्जेता ॥ अधः पातु महाकाली त्रिंशछोचनमण्डिता ॥ सिंहो इस्तद्रयं पातु परहंसोऽक्षिमण्डलम् ॥ माहिषेण समायुक्तं प्रेतं पातु पदद्रयम् ॥ सर्वाङ्गानि महेशान अण्डिका च परंपराम् ॥ वैकुण्ठमुखकुन्न्यासः षष्ठः कष्टोपशान्तये ॥ एतत्स्पष्टम् ॥ ॐ ह्रीं मं महालक्ष्म्ये नमः मध्यं पातु ॥ ॐ हीं मं महासरस्वत्ये नमः उध्वे पातु ॥ ॐ हीं छीं मं महाकाल्ये नमः अधः पातु ॥ ॐ क्ष्त्रीं सं सिंहाय नमः हस्तद्वयं ॥ ॐ हं हंसाय नमः नाभिमण्डलं पातु ॥ ॐ ह्रं प्रेतमहिषाभ्यां नमः पादाभ्यां पातु ॥ ॐ मं महेशाय नमःसर्वाङ्गं पातु ॥

उपा.स्त. इ दुर्गा. अ० १२८

🕉 ह्रीं चं चिण्डकाये नमः मस्तकाञ्चरणपर्यन्तं चरणान्मस्तकपर्यन्तं च्यापकं पातु ॥ अथ सप्तमो बीजन्यासः ॥ ब्रह्मरन्ध्रात्पायुपर्य न्तं नवद्वारेषु विन्यसेत् ॥ उक्तमन्त्रस्य बीजानि प्रणवाद्यं पृथकपृथक् ॥ ॐ ऍ नमो ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ॐ हीं नमो दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ हीं नमो वामनेत्रे ॥ ॐ चां नमो दक्षिणकर्णे ॥ ॐ मुं नमो वामकर्णे ॥ ॐ डां नमो दक्षिणनासापुटे ॥ ॐ यें नमो वामनास ॥ ॐ विं नमो मुखे ॥ ॐ च्चें नमः पायौ ॥ अथाष्टमो विपरीतन्यासः ॥ पायुतो ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं विन्यसेत्तानि पूर्ववत् ॥ न्यास इयमिदं प्रोक्तं सुगोप्यं सप्तमाष्टमम् ॥ महाभयान्महान्याधिशत्रचोरविचातिने ॥ महारक्षोगणानां च करुपं नातिसमं भवेत् ॥ ॐ ऐं नमः पायौ ॥ ॐ द्वीं नमो सुखे ॥ ॐ क्वीं नमो वामनासाषुटे ॥ ॐ चां नमो दक्षिणनासाषुटे ॥ ॐ सुं नमो वामकर्णे ॥ ॐ डां नमो दक्षिणकर्णे ॥ ॐ यैं नमो वामनेत्र ॥ ॐ विं नमो दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ चें नमो ब्रह्मरन्त्रे ॥ अथ समग्रमन्त्रन्यासो नवमः ॥ पूर्वाङ्गं विन्यसेन्मन्त्रं मस्तकाचरणाविध ॥ दक्षिणे पश्चिमे वामे तथा लोमविलोमयोः ॥ अस्मिनन्यासे कृते राजन्नवमे देविवद् भवेत ॥ समग्रं शिरिस समग्रं ललाटे समग्रं श्रुवोर्मध्ये समग्रं मुखे समग्रं दन्तपङ्की समग्रं जिह्नायां समग्रं कण्ठे समग्रं हृदये समग्रं नामी समग्रं लिङ्गे एवं पूर्वाङ्गम् ॥ समग्रं दक्षिणगण्डे समग्रं दक्षिणनेत्रे समग्रं दक्षिणकर्णे समग्रं दक्षिणस्कन्धे समग्रं दक्षिणबाइमूले समग्रं दक्षिणभुजे समग्रं दक्षिणकूर्परे समग्रं दक्षिणमणिबन्धे समग्रं दक्षिणाङ्गुलिमूले समग्रं याम्याङ्गुल्यम समग्रं याम्यङ्कक्षो समग्रं याम्यस्तने समयं याम्यजानुनि समयं याम्योरी समयं याम्यमेढ्रे समयं याम्यगुरुफे समयं याम्यपादे समयं याम्यपादांगुलिमूले समग्रं याम्यपादांग्रल्यमेषु एवं दक्षिणाङ्गम् ॥ समग्रं वामगण्डे समग्रं वामनेत्रे समग्रं वामकर्णे समग्रं वामस्कन्धे समग्रं बाहुमूले समत्रं वामभुजे समत्रं वामकूर्परे समत्रं वाममणिबन्धे समत्रं वामांगुलिमूले समत्रं वामांगुल्यत्रे समत्रं वामकुक्षौ समत्रं वामस्तने समयं वामकटचां समयं वामजानुनि समयं वामोरौ समयं वाममेद्रे समयं वामगुरुफे समयं वामपादे समयं वामपादांगुलियले समयं वामपादांगुरुययेषु एवं वामाङ्गम्।। समयं शिरःपश्चिमे समयं पृष्ठभागे समयं सर्वपश्चिमाङ्गं यः कश्चिदशक्तश्चेत्तदा काय

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१०९॥ वश्यमाणन्यासः ॥ नव बीजान्युचार्य मस्तकाचरणपर्यन्तं पूर्वोगे नयसेत् ॥ पुनर्मूलेन मस्तकाचरणपर्यन्तं दक्षिणांगे न्यसेत् ॥ पुनस्त थेव वामांगे न्यसेत् ॥ पुनर्मूलेन पश्चिमांगे न्यसेत् ॥ अथ मन्त्रषडंगन्यासो विशेषन्यासो दशमः ॥ हृच्छिरःशिखास्वेनं कवचे लोचनद्वये ॥ अस्त्रे सर्वासु काष्ठासु पृथङ्मन्त्रं विनिक्षिपेत् ॥ नमोऽन्तं प्रथमं प्रोक्तं स्वाहाऽन्तं तत्परं न्यसेत् ॥ वषडन्तं च हूमन्तं वौषडन्तं फडन्तकम् ॥ पूज्यस्त्रेलोक्यदेवानां दशमेऽस्मिन्कृते सित् ॥ कृतन्यासः प्रविष्टो वै यद्वदेत्तत्तथा भवेत्॥यत्पश्यित यथा दृष्टा तद्भवेताहशं किल ॥ तेन सार्धे महालक्ष्मीः स्वयं वद्ति यत्फलम् ॥ अविष्यमभविष्यं वा तं पालयित पुत्रवत् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवास्त्वेनं विष् पालयन्त्यात्मनः सदा ॥ त्रिषु लोकेषु पश्यन्ति तदाधिक्यं न किंच यत् ॥ दशन्यासे कृते पापं दशजनमार्जितं क्षणात् ॥ सुतीत्रं विलयं याति तामिस्रं तु रवौ यथा॥सन्नद्धो दशभिन्यसिश्चण्डीसप्तशतीं जपन् ॥ असाध्यं साधयत्याशु कार्यं लोकत्रयेऽपि यत् ॥ साधवे मासि मध्याह्ने तपन्तं निर्मलं रिवम् ॥ दिवानधास्तं न पश्यिनत सर्वदा सर्वथा यथा॥ चण्डीसप्तशतीजाप्ये दशन्यासैः समुज्जव लम् ॥ त्रिलोक्यां सर्वेदुष्टास्तं न पश्यन्ति सद्। तथा॥ हृदयादिकमेण षडङ्गः॥ नव बीजान्युचार्य हृदयाय नमः॥ पुनर्म्लेन शिरसे स्वाहा ॥ पुनर्मूलेन शिखाये वषट् ॥ पुनर्मूलेन कवचाय हुम् ॥ पुनर्मूलेन नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ पुनर्मूलेन अस्त्राय फट् ॥ ॐ ९ शिरसे नमः मूलेन ॥ ॐ ९ मूलेन मुखे स्वाहा ॥ ॐ ९ हृदये वषट् ॥ अन्यूलन नत्रत्रयाय वाषट् ॥ पुनसूलन अस्त्रायफट् ॥ ॐ ९ तारास मूलेन ॥ ॐ ९ मूलेन मुखे स्वाहा ॥ ॐ ९ हृदये वषट् ॥ ॐ ९ बाह्वोः हुम् ॥ ॐ ९ उदरे वौषट् ॥ ॐ ९ नामो फट् पुनस्तथेव ॥ ॐ ९ कूर्परयोर्नमः ॥ ॐ ९ कर्णयोः स्वाहा ॥ ॐ ९ नेत्रयोर्वषट् ॥ ॐ ९ कर्पालयोः हुम् ॥ ॐ ९ गुदे वौषट् ॥ ॐ ९ लिङ्गे फट् पुनस्तथेव ॥ ॐ ९ पाद्योर्नमः ॥ ततः नव बीजान्युच्चार्य प्रणवादि पृथक् पृथक् कनिष्टिकादि अंगुष्टान्तं करतल पृष्टान्तमेवं कार्यं तथा च ॥ ॐ ९ किनिष्टिकाभ्यां नमः ॥ ॐ९ अनामि० ॥ ॐ९ मध्यमा० ॥ ॐ९ तर्जनी० ॥ ॐ ९ अंगु० ॥ ॐ९ कर् ० ॥ इति दशमन्यासः ॥ अथेकादशन्यासः ॥ चण्डीसप्तशातीजाप्ये सरहस्ये नृपोत्तम ॥ न्यासं ते संप्रवक्ष्यामि ब्रह्म विष्णुशिवेः कृतम् ॥ अंगेषु सर्वसिद्धचर्थे वन्नामृतमनःसुखम् ॥ अस्मिन्न्यासे दश श्लोका ब्रह्मविष्णुशिवोदिताः ॥ खङ्गिनी

डपा.स्त. व हुर्गा. अ० १२८

शुलिनी श्लोकमार्च कृष्णतरं न्यसेत् ॥ शूलेन पाहि नो देवि पुनः श्लोकचतुष्ट्यम् ॥ बालार्कसदृशं न्यासे चिन्तनीयं महत्तरम् ॥ सर्वस्वरूप इत्यादिश्चोकानां पञ्चकं पुनः ॥ जुद्धस्फटिकसङ्काशं न्यासं त्रैलोक्यकामदम् ॥ ॐ ३ खङ्किनी श्लूलिनीत्येकश्चोकेन दशभुजां दशाननां महाकालीं कृष्णतरां विचिन्त्य किनष्टिकाभ्यां नमो हृदयाय नमः ॥ ॐ ३ शुलेन पाहि नो देवीत्यादि चतुर्भिः श्लोकेः अष्टादशभुजां बालार्कप्रभां महालक्ष्मीं विचिन्त्य अनामिकाभ्यां नमः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ३ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादिपञ्चभिः श्लोकेः अष्टभुजां शुद्धस्फटिकसर्त्रिभां महासरस्वतीं विचिन्त्य मध्य० शिखाये० ॥ ॐ ३ खङ्गिनी शूलिनीत्येक श्रोकेन दराश्रुजां दशाननां महाकालीं कृष्णतरां विचिन्त्य तर्जनीभ्यां नमः कवचाय हुम् ॥ ॐ ३ शूलेन पाहि नो देवीत्यादि चतुर्भिः श्लोकः अष्टादशश्रुजां बालार्कप्रभां महालक्ष्मीं विचिन्त्य अंग्रु० नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ३ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादि पश्चिमिः श्लोकैः अष्टभुजां शुद्धस्फटिकसन्निमां महासरस्वतीं विचिन्त्य करतलकरपृष्ठाभ्यां नमोऽस्त्राय फट् एवं देवतात्रय ध्यानपूर्वकं षडंगन्यासं विधायानन्तरमंगन्यासमारभेत् ॥ ॐ ३ खिद्गिनी शूलिनी घोरा दक्षिणपादतले ॥ ॐ ३ गदिनी चिक्रणी तथा दक्षिणपादार्घे ॥ ॐ ३ शंखिनी चापिनी बाणा वामपादजानुनि ॥ ॐ ३ भुज्जुण्डीपरिघायुघा वामपादमूले ॥ ॐ ३ खद्भिनी शुलिनी इत्येकश्चोकेन शिरिस ॥ ॐ ३ शूलेन पाहि नो देवि इत्येकश्लोकेन दक्षिणनेत्रे ॥ ३ ॐ प्राच्यां रक्षेत्येकेन वामनेत्रे ॥ ॐ ३ सौम्यानि यानि इपाणीत्येकेन दक्षिणकर्णे ॥ ॐ ३ खङ्गशूलगदादीनीत्येकेन वामकर्णे ॥ ॐ ३ सर्वतःपाणिपादान्तेति दक्षिणनासापुटे ॥ ॐ ३ सर्वस्वहृषे सर्वेशे इत्येकेन वामनासापुटे ॥ ॐ ३ हिनस्ति दैत्यतेजांसीत्येकेन लिंगे ॥ ॐ असुरासृ ग्वसापंकेति आधारे ॥ ॐ ३ खिंद्रिनी शूलिनीति शिरिस ॥ ॐ ३ शूलेन पाहि नो देवीति ललाटे ॥ ॐ ३ प्राच्यां रक्षेति मुखे ॥ ॐ ३ सौम्यानि यानीति हृद्ये ॥ ॐ ३ खंड्रशूलगद्दिनीति उद्रे ॥ ॐ सर्वतःपाणिपादान्तेति नाभौ ॥ ॐ ३ सर्वस्वरूपे इति कटचाम् ॥ ॐ ३ एतत्ते वदनमित्यूर्वीः ॥ ॐ ३ ज्वालाकरालेति जङ्घयोः ॥ ॐ ३ असुरासृग्वसेति मस्तकाचरणाविध पुनर्न्यासः ॥

बु.ज्जो.र्ज. बर्मस्कंध ८ ॥११०॥

ॐ ३ खद्भिनीति हीं जयायै नमः पूर्वींगे ॥ ॐ ३ सौम्यानीति हीं विजयायै नमः पृष्ठे ॥ ॐ ३ यञ्च किंचिदिति हीं अजितायै नमः ऊर्ध्व पातु ॥ ॐ ३ शूलेनेति हीं जयन्त्यै नमो वामपार्थे ॥ ॐ यया त्वयेति हीं अपराजिताये नमो दक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ ३ विष्णुः शरीरश्रहणा ति हीं व्यापिन्ये नमः सर्वागं पातु ॥ ॐ ३ प्राच्यां रक्षेति मुखे ॥ ॐ३सीम्यानीति हृदये॥ॐ३खद्ग शूलेति नाभौ ॥ ॐ ३ सर्वस्वरूपे इति लिंगे ॥ ॐ ३ एतत्ते इत्यूवींः ॥ ॐ ३ ज्वालाकरालेति जंघयोः ॥ ॐ ३ हिनस्ति दत्यतेजांसीति गुल्फयोः ॥ ॐ ३ अमुरासूरवसेति पादयोः ॥ अथ महाकाल्यादिदेवतां ध्यायेत ॥ श्वेतानना नीलभुजा इत्यादि ध्यात्वा ॥ तत्र प्रणामः ॥ लक्ष्मीं कोल्हापुरस्थां भुवि गणपतिनाऽये च पार्श्वद्वये तां काल्या वाण्या समन्तात्परिजन निकरैः सेवितां देवताभिः ॥ नागं लिङ्गं च योनिं स्वशिरसि द्धतीं मातुलिङ्गं गदां तत्खेटं श्रीपानपात्रं त्रिभ्रवनजननीं नौमि दोभिश्चतुभिः ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा एकाकारां सूर्ति मनसा ध्यात्वा मनसा संपूज्य संप्रार्थ्य नमेत् ॥ दश-यासकृतौ यद्यज्ञपकत फलं लभेत् ॥ तत्सर्वे लभते पुण्यमस्मिन्नेकादशे कृते ॥ नवाक्षरस्य मन्त्रस्य जाप्ये सर्वफलप्रदे ॥ एते न्यासाः प्रकर्तव्याश्चण्डी सप्तरातीं जपेत् ॥ एवं न्यासविधि कृत्वा सृष्टिमुद्रां विलोकयेत् ॥ तस्या विलोकने राजन् कृतो न्यासः स्थिरो भवेत् ॥ अयमेका दशो न्यासः ॥ इति श्रीडामगदितन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे एकादशन्यासविधिनाम पञ्चमावसरः ॥ ५ ॥ अथ कामकला न्यासः ॥ प्रणवादिवी जत्रयसहितं सर्वत्र योजयेत् ॥ ॐ ऐं ह्रीं छीं श्रद्धायै नमो दक्षपादे एवं प्रीत्यै नमो दक्षजङ्घायां रत्यै नमो दक्षजानुनि स्मृत्ये नमो दक्षोरौ कात्यायन्ये नमो दक्षवक्षसि मनोरमाये नमो दक्षवाहो मनोहराये नमो दक्षमुखे मनोरथाये नमो दक्ष मस्तके ॥ अथैतद्विपरीतं पुनः मायायै नमो वाममस्तके मोहिन्यै नमो वाममुखे दीपिन्यै नमो वामबाही शेषिण्यै नमो वामवक्षसि शांकर्ये नमो वामोरी रजन्ये नमो वामजानुनि सुभगाय नमो वामजङ्घायां प्रीत्ये नमो वामपादे ॥ इति कामकलान्यासः॥ पुष्पाये नमो द्शपृष्ठवंशे यशोवत्ये नमो दशपृष्ठे यशाये नमो दशयीवायां प्रीत्ये नमो दशिणनेत्रे धृत्ये नमो दशनासायां हद्ये नमो दशललाटे

डपा.स्त. ह

सोम्याये नमो दक्षमस्तके पुनः पूर्ववदुत्कमः ॥ मरीच्ये नमो वाममस्तके अंशुमालिन्ये नमो वामललाटे गिराये नमो वामनासा पुटे शिङ्किन्ये नमो वामनेत्रे छायाये नमो वामकर्णे संपूर्णमण्डलाये नमो वामग्रीवायां तृष्ट्ये नमो वामपृष्ठे अमृताये नमो वाम पृष्ठवंशे ॥ अयं तु रतिकलान्यासः ॥ अथानन्तरं देव्यगारमण्डपे जपस्थले वा स्वपुरतः उक्तलक्षणां वेदिकां विधाय तत्र सप्त धानयानि मिलित्वा राशि कृत्वा तदुपरि ताम्रकलशं कृत्वा निर्मलोदकपूरितं गङ्गाद्यावाहितमभिमन्त्र्य पञ्चपछवान्वितपञ्चरत्नसमन्वितोक्त द्रव्यान्वितरक्तवस्रवेष्टितं चन्दनपुष्पाद्यलंकृतं विधाय तस्योपरि पूर्णपात्रं विन्यस्य तन्मध्ये दुकूलादिवस्रं विरचय्य तत्र चण्डिका यन्त्रं वक्ष्यमाणप्रकारेण गोरोचनकेशरकुङ्कमचन्दनेन वा संलिख्य देवीमृतिं संस्थाप्य वक्ष्यमाणविधिनाऽर्चयेत् ॥ तत्र यन्त्रो द्वारः ॥ चतुरस्रे समे शुद्धे चन्दनागरुकुङ्कमैः ॥ लिखेद्षद्छं तत्र मध्ये देवीं प्रयूजयेत् ॥ शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि चण्डिका यन्त्रमुत्तमम् ॥ वश्चे चारक्तके चैव संलिखेद्यन्त्रमुत्तमम् ॥ यन्त्रोद्धारं प्रयत्नेन ज्ञातव्यं भो नृपात्मज ॥ चतुरस्राष्ट्रकं षट्कं त्रिकोणं संलिखेत्ततः ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थमाद्यबीजत्रयं न्यसेत् ॥ पूर्वादिषद्सु कोणेषु बीजान्यन्यानि वेशयेत् ॥ प्रथमं च चतुर्द्वारं सुन्दरं भूगृहं लिखेत् ॥ तथा चोक्तं विशेषो गन्धः ॥ कुङ्कमागरुकपूरैश्चन्दनैश्च सितासितैः ॥ चम्पकैर्मिछिकाभिश्च तथा दिभिः ॥ केसरैविंलिखेयन्त्रं हेमाभा लेखनी शुभेति चण्डिकायन्त्रोद्धारः ॥ तत्र प्रतिमालक्षणम् ॥ आमाषात्पलपर्यन्ता चण्डिका प्रतिमा बुचैः ॥ कर्तन्या च तद्धां तु यथाशक्त्या नराधिप ॥ मध्ये तु स्थापयेद्देवीं चिण्डकां हेमरूपिणीम् ॥ पञ्चामृतादैः सुस्नातां चर्चितां चन्दनोत्तमैः ॥ तथा रक्तासने वस्त्रे प्रसन्नां भक्तवत्सलाम् ॥ गुरूपदेशमार्गेण पूजनीया प्रयत्नतः ॥ इति लक्षणमुक्तम् ॥ अथ पूजाविधिर्लिख्यते ॥ स्वपुरतः देवतायाः वामभागे ताम्रकृतकमण्डली तीर्थोदकपूरितास्त्रप्रक्षालितमूलमन्त्रेण संस्थाप्य तेनैव मन्त्रेणार्कमण्डलादिदशमुद्रया गङ्गादीनावाह्य ॥ गङ्गे च यमुने चैवेति गन्धादि निक्षिप्य ॐ वारिधान्ये नम इति संपूज्य ततो देवीदक्षिणभागे प्रक्षालितगन्धाक्षतपुष्पाद्यर्चितं शङ्कं मूलमन्त्रपुरःसरं कलशोदकेनापूर्य गन्धपुष्पादिना शङ्कजलमर्चयेत् ॥ तत्रादा

इ.ज्ज्यो.र्ज. **वर्मस्कं**ध ८ **॥९९**९॥

वावाहनादिसुद्राः प्रदर्श्य आवाहनी स्थापनी संनिरोधिनी सन्निधिः सम्सुखी चेति ॥ एताः पञ्च सुद्राः कलशशङ्काभ्यां दर्शयित्वा शिखामन्त्रेण मालिनीमुद्र्या निर्विषत्वं भाव्य गरुडमुद्र्या सुपरिपूर्ण भव सुरभिमुद्र्या इदममृतीभवेति अमृतमुद्रां च दर्शयेत् ॥ एवं कलशशङ्खाभ्यां मुद्रा दर्शयित्वाऽनन्तरं शङ्खास्थतजले त्रिकोणषट्कोणवृत्तचतुरस्रमण्डलं मतस्यमुद्र्या दक्षिणकरेण संभाष्य पुनः शङ्क्षमुद्रामाबध्य तत्र यन्त्रेष्वधितदेवताः गन्धपुष्पाक्षतादिभिर्यजेत् ॥ तथा च तत्र त्रिकोणमध्ये च प्रागादिक्रमेण रं विद्वदशकलातमने नमो मध्ये प्रागादि ८ धूब्रायै॰ ऊष्मायै॰ जवलिन्यै॰ जवालिन्यै॰ विस्फुलिङ्किन्यै॰ श्रियै॰ हव्यवाहनायै॰ कव्यवाहनायै॰इत्यनेन त्रिकोणं समभ्यच्ये ततः षट्कोणेषु समग्रनवबीजेनाग्ने य्यादिकोणेषु हृदयादिकवचचतुष्ट्यम् ॥ तेनैव पुरतो नेत्रमुलेनास्त्रं तिर्यक् एवं षट्टकोणे षडङ्गानि विन्यस्य ततो वृत्तेषु प्रागादि हं भानुद्वादशकलात्मने विपन्ये वापिन्ये धृत्राये मरीच्ये ज्वालिन्ये रुचिराये सुषुत्रा यै॰ भोगदायै॰ विश्वायै॰ बोधिन्यै॰ धारिण्यै॰ क्षयायै॰ ततश्चतुरस्रे प्रागादिक्रमेण यजेत् ॥ अं नमः ॥ आं॰ इं॰ इं॰ छं॰ ऋं ऋं छं छं एं एं भें औं औं अं अः नमः ॥ एवं प्रतिलोममातृकाः समभ्यच्ये ततश्चतुरस्राह्यास्परिधौ उं सोमः षोडशकलात्मने अमृतायै मानदायै पूषायै तुष्ट्यै रत्यै धृत्यै शिशन्ये चिन्द्रकायै कान्त्यै॰ ज्योत्स्रायै॰ श्रियै॰ प्रीत्यै॰ अङ्गदायै॰ पूर्णायै॰ पूर्णामृतायै॰ कामदायै॰ ॥ १८ ॥ इत्येवं शङ्कजलमभ्यर्च्य शङ्कं गन्धादिना संपूज्य ततः मूलेन जलगतदोषं दग्धं सभाव्य वं बीजेन धेनुसुद्याऽमृतीकृत्य ततः नयनमन्त्रसुच्चरन् अमृतदृष्ट्या पंवीक्ष्य ॐ हीं चामुण्डाये विचे नेत्रत्रयाय वीषट् ॥ इति नयनमन्त्रः ॥ कवचमन्त्रमुचारयन् संन्याप्य संकलीकृत्य ॥ ऐ चामु ण्डाये विचे कवचाय हुं इति कवचमन्त्रः ॥ अस्त्रमन्त्रेण दिग्बन्धः ॥ ॐ क्वीं चामुण्डाये विचे अस्त्राय फडित्यस्त्रमन्त्रः॥हदयमन्त्रेण गन्धं शिरोमन्त्रेणाक्षतान् शिखामन्त्रेण पुष्पं शिखामन्त्रेणैव तेजोमयं ध्यात्वा यथा च ॥ ॐ ऐं चामुण्डाये विज्ञे हृदयाय नमः॥

उपा.स्त. । दुर्गा.

इति हृदयमन्त्रः ॥ ॐ ह्रीं चामुण्डाये विचे शिरसे स्वाहा इति शिरोमन्त्रः ॥ ॐ क्कीं चामुण्डाये विचे शिखाये वषट् ॥ इति शिखा मन्त्रः ॥ ततः शङ्कं हस्तेनाच्छाद्य मूलेनाष्ट्रवारमभिमन्त्रय चक्रमुद्रया संरक्ष्य ततस्तच्छङ्कस्थं किंचिजलं कलशे मिश्रयित्वा तत्क लशजलं पूर्ववन्मुद्राभिः संस्कृत्य संप्रदृश्य सूलेनाभिमन्त्र्य ततः पुनः शङ्कजलेनात्मानं च यागभुवं पूजोपकरणानि द्रव्याणि अस्त्र मन्त्रमुचारयन् फडन्तेनादिप्रणवेन संप्रोक्ष्य मूलेन षडङ्गं विधाय ततः गन्धपुष्पाक्षतैः आत्मानं संकलीकृत्य ततः पीठपूजनमारभेत्॥ पञ्चामृतैः संस्नाप्य कलशवारिणा जलं प्रोक्ष्य गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपान् पकल्प्य मूलमुज्ञार्यन् अमृतमास्थाय नैवेद्यं प्रकल्प उप चारादिकं दद्यात् ॥ ततो नीराजनं दर्शयेत् ॥ मूलमन्त्रेण त्रिभिर्देवतापीठशिरसि पुष्पाञ्चलि विधाय देवताविष्रहः सन् मूलमन्त्रं यथाशक्ति जपेत् ॥ जपं देवतायै निवेदयेत् ॥ ततः पुष्पादिकमात्रायः कुम्भोदराय नमः इति वामभागे निक्षिप्य हस्तप्रक्षालनं स्थलशुद्धि च विधाय ततः पूजामूर्तेर्मलापकर्षस्नानं कृत्वा ॥ यथा च मूलमन्त्रेण पञ्चगन्येन पृथक्तवेन मूर्ति मार्जयेत् ॥ ततः सप्तमृतिकाभिः संघर्षणं मुले ओषधिभिरेव हरिदातैलोइर्तनं कृत्वा उष्णोदकेन स्नापयित्वा तां मृतिं पीठे अष्टद्ले स्थापयित्वा तत्र पुष्पादिकं प्रक्षिप्य पीठपूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा तत्र देव्या दक्षिणभागे इष्टदेवतामयं स्वगुर्क ध्यात्वा गन्धादिभिरभ्यच्यं गुरु पंक्ति यजेत् ॥ प्रणवं सर्वत्र योजयेत् ॥ गुरवे० परमगुरवे०परमेष्टिगुरवे० गुरूपंक्ती० मातापितृभ्यां० उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो० ततो वामभागे गं गणपतये ॰ दुं दुर्गाये ॰ सं सरस्वत्ये ॰ क्षं क्षेत्रपालाय ॰ । ततो मध्ये आधारशक्त्ये ॰ मूलप्रकृत्ये ॰ कालागि रुद्राय॰ तदुपरि आदिकूर्माय॰ अनन्ताय॰ आदिवराहाय॰ तदंष्ट्रोपरि पृथिन्यै॰ तदुपरि अमृतार्णवाय॰ रत्नद्वीपाय॰ हेमगिरये॰ नन्दनोद्यानाय॰ कल्पवृक्षाय॰ मणिभूतलाय॰ दिव्यमण्डपाय॰ स्वर्णवेदिकायै॰ रत्नसिंहासनाय॰ आग्नेय्यादिकोणे धर्माय ॰ दक्षिणाधरपादे ज्ञानाय ॰ उत्तराधरपादे वैगग्याय ॰ उत्तराग्रपादे ऐश्वर्याय ॰ पीठपूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तर भागेषु अधर्माय ॰ अज्ञानाय ॰ अवैराग्याय • अनेश्वर्याय तन्मध्येऽष्टद्छं तस्य दुछकेसरकार्णकासु सं सत्त्वाय ॰ प्रबोधात्माने ॰ रं रजसे ॰ ब्र.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥११२॥

प्रकृत्यारमने॰ तं तमसे॰ मोहात्मने॰ सोममण्डलाय॰ सूर्यमण्डलाय॰ विह्नमण्डलाय॰ मे मायातत्त्वाय विं विद्यातत्त्वाय॰ शं शिव तत्त्वाय श्रह्मणे विष्णवे महेश्वराय आत्मने अन्तरात्मने परमात्मने जीवात्मने ज्ञानात्मने कं कन्दाय नं नीलाय प्याप्त पद्माय महापद्माय दलेश्यो केसरेश्यो किणिकाये एवं मण्डलादिपीठदेवताः संपूज्य ततः पूर्वाद्यष्टदलेषु कार्णिकायां तत्त त्कल्पोक्तनवशक्तीः पूजयेत् ॥ यथा नन्दाय भगवत्ये रक्तदन्तिकाये शाकंभये दुर्गाये भीमाये कालिकाये आम्ये शिव दूत्यै॰ तत्पीठमन्त्रेण गन्धादिभिः पीठं पूजयेत् ॥ परिषिञ्चति पूजार्थं दृष्याणि नवबीजकम् ॥ तलपृष्ठोद्भवां मुद्रां दत्त्वाऽस्त्रेणावगुण्ठ येत्॥ अर्घ्यपात्रं प्रतिष्ठाप्य पूजयेच्छु भवारिणा॥ गन्यपुष्पाक्षतांस्तत्र विन्यसेन्तृ गनन्दन॥ ध्यात्वा सर्वाणि तीर्थानि हस्तो दत्त्वाऽभि मन्त्रयेत् ॥ रक्षार्थे तस्य कर्तन्या चक्रमुद्राऽस्त्रतंयुता ॥ अच्योदकेन संस्कारं पूजाद्रन्यस्य पूर्ववत् कृत्वा लोमविलोमाभ्या मात्मानं सम्यगचियेत् ॥ प्रत्यद्यं संप्रतिष्ठाप्य मध्ये पीतार्घपात्रयोरिति ॥ एतत्स्पष्टम् ॥ अथ देव्या वामभागे पात्रचत्रष्ट्यं पात्राणि संस्थाप्य तचैवाह ॥ ततोऽर्घ्यपाद्याचमनमधुपर्कार्थं चत्वारि पात्राण्यासाद्य तत्पात्रचतुष्ट्यमानीय फडन्तेन प्रक्षालितद्रव्याणि मूलमन्त्रेण प्रक्षिप्य तथा च देव्याः पुरतः दक्षिणोद्गायतपंक्तिक्रमेण षट् पात्राण्यानीय अस्त्रपक्षालितमुलमन्त्रेणासाद्य तानि कानि गन्धपुष्पधूपद्रापनैवेद्यताम्बूलानि एतानि पात्राणि दशपरिमितानि पीतित्रकोणोपरि स्थापितानि पूर्वोक्तशङ्कजलस्थगन्धादिभिः मूलेन संस्कृत्याभिमन्त्रयेत् ॥ तत्र गन्धाक्षतपुष्पयवपञ्च हुशायविस्वत्वषपदूर्वाष्ट्रद्वयाणि अर्घ्यपात्रजले प्रक्षिपेत् ॥ द्वीविष्णु कान्ताश्यामाकपद्मानि पाद्यपात्रजले विनिक्षिपेत् ॥ जातीकलकङ्कोललवङ्गान्याचमनपात्रजले प्रक्षिपेत् ॥ पयोदिधचृतमधुखण्डं मधुपर्कपात्रे प्रक्षिपेत् ॥ एवं पात्रचतुष्ट्यप्रयोगः ॥ तथा चोक्तं गन्धाष्ट्रकं भविष्ये ॥ चन्द्रचन्द्रनकस्तूरीरोचनागरुकुंकुमम् ॥ किप चोरजटामांसी शक्तिगन्धाष्टकं स्मृतम् ॥ (कर्षूर चन्दन कस्तूरी गोरोचन अगरु कुंकुम केसर रक्तचन्दन जटामांसी)॥ फेत्कार तन्त्रे विकरूप उक्तः ॥ रोचनाकिपकाश्मीरमांसीत्वगरूचन्दनैः ॥ कचोरैरिप गन्धोऽयं शैवे शाक्ते च शस्यते ॥ गोरोचना

उपा.स्त.

रक्तचन्द्रनकेशरजटामांस्यगरुचन्द्रनकचोरकपुरैः एभिरुकाष्ट्रगन्धेरासाच जात्यादिऋतुकालोद्भवैः पुष्पेः पञ्चवेश्च दिन्यवासा स्याभरणानि धूपार्थं दशाङ्गं दीपवर्तिकाऽऽज्याका षड्ग्सौदनादि पक्वं लेह्मपेयात्मकं नैवेद्यं लक्षणोक्तं ताम्बूलं सीवर्णि दक्षिणां कर्पूरनीराजनं पञ्चरत्नानि पुष्पाञ्चलिमेवं पूजामासाद्य ततोऽग्रष्ठाद्यङ्गुलिदशकमुभयकरात्तमुभयकरबाह्ययोरूभयकरपाश्वयोः फडन्तेन मन्त्रेण व्यापकन्यासहृपां करशुद्धि जलेन कृत्वा ततः फडन्तमन्त्रेणाधकर्ध्वतालत्रयं कृत्या ॥ ॐ ह्नः अह्नाय फट् इत्यनेन दश दिशो बद्ध्वा त्रैलोक्यं रक्ष २ हुं फट् स्वाहेति मन्त्रेणाग्निप्राकारत्रयं कृत्वा पीठस्थयन्त्रेऽछाऽऽवरणदेवताः स्थापयेत् । तद्यथा उक्तं च ॥ षट्कोणचक्रमध्यस्थां मध्यबीजव्यवस्थिताम् ॥ महाकाल्या सरस्वत्याऽलंकृतां दक्षिणान्ययोः ॥ संयुक्तां दक्षिणे वामे सिंहेन महिषेण च ॥ अष्टादशभुजां ध्यात्वा महालक्ष्मीं प्रणम्य च ॥ पीठादिपूजनं कुर्यात्स्ववीजेन पृथक् पृथक् ॥ ॐकार बीजमध्यस्थं नामधेयाद्यमक्षरम् ॥ देवतानां स्वबीजं तत्पूजायामृद्धिदम् ॥ ॐकारः प्रथमं पीठं पूर्णपीठं ततः परम् तृतीयं कामपीठं च पूज्येत्संप्रदायतः ॥ कोणत्रयेऽपि संन्यासः कर्तव्यं पीठकत्रयम् ॥ चतुरस्रे पूर्वदिशि न्यसेदुडचानपीठकम् ॥ नाथं मुण्डेश्वरं चैव मुण्डाम्बापादुकां तथा ॥ न्यसेच्च मातृकापीठमाग्नेय्यां पृथिवीपते ॥ मातृकेश्वरोपनाथं मातृकाम्बोपपादुकाम् ॥ पीठं जालन्धरं चैव दक्षिणे तु तथैव च ॥ नाथं ज्वालामुखं चापि ज्वालाम्बापादुकां तथा कोल्हापुरोपपीठं च नैवर्ऋत्ये विन्यसेन्नृप ॥ कोल्हेश्वरोपनाथं च कोल्हाराम्बोपपादुकाम् पीठं पूर्णागरीशं च पश्चिमे स्थापयेन्नृप नाथं पूर्णश्वरं चैव पूर्णाम्बापादुकां तथा ॥ सीहारमुपपीठं तु वायव्यां चैव पूजयेव ॥ सीहारमुपनाथं च सीहाराम्बोपपादुकाम् ॥ कोल्हागिरिभवं पीठं सोम्ये चैव तु पूजयेत् ॥ नाथं कोल्हेश्वरं चापि कोल्हाम्बापादुकां तथा ॥ कामरूपोपपीठं च ईशान्ये पूजयेत्ततः ॥ रामेश्वरोपनाथं च कामा म्बा चोपपादुकाम् पूर्वादिदिश्च पीठस्य गणेशादिचतुष्टयम् ॥ गणेशक्षेत्रपालौ च पादुके बटुकत्रयम् ॥ आग्नेध्यादिचतुष्कोणे पूज्यं देवीचतुष्ट्यम् । आद्या तत्र जया प्रोक्ता द्वितीया विजया स्मृता ॥ जयन्ती तत्परा भूप चतुर्थी चापराजिता ॥ पूज्या

ष्ट.क्व्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥११३॥

नामपदैर्देवी पीठपङ्कजमध्यगा ॥ आग्नेय्यादिक्रमेणेव वेतालानां चतुष्टयम् ॥ आग्नेय्यामग्निमुखं चैव नैर्ऋत्यां प्रेतवाहनम् ॥ ज्वाला मुखं च वायन्यां धूस्राक्षं त्वीशतस्तथा ॥ कोणे चतुष्ट्ये चापि वेतालानां चतुष्ट्यम् ॥ पूर्वपत्रादितः पूज्यं मातुणां मण्डलं 💐 शिवम् ॥ रहस्यकथितैर्वीजैः स्वबीजेनाथवा नृप ॥ आद्यपत्रे समभ्यच्यी ब्रह्माणी इंसवाहिनी ॥ माहेश्वरी वृषारूढा पूज्या सा हुत भुग्दले ॥ मयूरवाहना पूज्या कौमारी दक्षिणे दले ॥ नैऋत्ये वैष्णवी पूज्या गरूडोपरि संस्थिता ॥ पश्चिमे यज्ञवाराही दंष्ट्रोद्धृत वसुंघरा ॥ समीरणद्ले स्थाप्या नारसिंही विभीषणा ॥ गजराजसमारूढा इन्द्राणी सौम्यदिग्दले ॥ गणनाथपरीवारा सदा रुद्रेण संयुता ॥ ईशपत्रे समभ्यच्या चामुण्डा चण्डमुण्डिता ॥ नन्दाद्याः कर्णिकामध्ये क्रमात्षद्कोणपूजने ॥ नन्दजा हेमवर्णाभा सरक्ता रक्तदन्तिका ॥ नीला शाकंभरी दुर्गा सर्वेह्रपाऽऽतिंहारिणी ॥ दंष्ट्राचिंतरवी भीमा नीलपात्रशिरोधरा ॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा अमरी वरदाऽचिंता ॥ चके त्वष्टदले चैव शक्तयष्टकमुदाहतम् ॥ यक्षिणी कालिका चैव सुरश्रेष्ठा दशानना ॥ रतिः प्रीतिश्र विश्वेष्टा दशभुजा मनोभवा ॥ अणिमा महिमा चैव लिघमा गरिमा तथा॥प्राप्तिः प्राकाम्येशिता च वशिता चाष्ट सिद्धयः ॥ चके त्वष्टदला त्रेषु सिद्धचष्टकमितीरितम् ॥ भैरवाष्टकं च ततो लोकपालाष्टकं तथा ॥ असिताङ्गो हरूश्चण्डः क्रोध उन्मत्तभैरवः ॥ कपाली भीषणश्चेव संहारश्चाष्ट भैरवाः ॥ इन्द्रश्चाभिर्यमश्चेव नैऋतो वरूणस्तथा ॥ वायुः सोमस्तथेशानो लोकपालाः प्रकीर्तिताः ॥ गुरुं परमगुरुं च परमेष्टिगुरुं तथा ॥ गणेशं हार्रहरौ च षड्दले चैव पूजयेत् ॥ बाह्य त्रिकोणके चक्रे प्रधानस्य च पृष्ठतः ॥ पूजः येच महाकालीं रुद्रो गौर्या तथा सह ॥ महालक्ष्म्या हषीकेशो लक्ष्म्या च सहितस्तथा ॥ सरस्वत्याः पृष्ठभागे विरिधाः स्वरया सह ॥ कालश्च दक्षिणे पूज्यो रुद्रश्चापि नृपात्मज ॥ सिंहश्चापि नृणामत्र पूजनीयः प्रयत्नतः ॥ मृत्युर्वामे च विजया गणेशो महिष स्तथा ॥ मातृकामन्ततश्चापि त्रिकोणे बाह्यतस्तथा ॥ मध्ये त्रिकोणके चक्रे प्रधानं चण्डिकां नृप ॥ अधिदेवीं महाकालीं दक्षिणे चैव पूजयेत् ॥ प्रत्यधिदेवतां चैव वामभागे सरस्वतीम् ॥ पूजयेच वृपश्रेष्ठ वेदगर्भामनिन्दिताम् ॥ एवं यन्त्रावरणदेवताः संपूज्य

हुमां.

अनन्तरं चतुरस्राद्वाद्यपरिधौ प्रगादिकमयोगेन पञ्च षट् षट् च षट् ॥ तथा ॥ प्रथमा विष्णुमाया च द्वितीया चेतना स्मृता ॥ बुद्धिर्निद्रा क्षुघा छाया शक्तिस्तृष्णाऽष्टमी भवेत् ॥ क्षान्तिर्जातिस्तथा लजा शान्तिः श्रद्धा त्रयोदशी ॥ कान्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्वृत्ति स्वृतिरेव दया तथा ॥ तुष्टिः पुष्टिश्च माता च भ्रान्तिनीम पद्कमः ॥ त्रयोविंशति संख्योऽयं ब्रह्मणा पूजितः स्तुतः ॥ नालमुले च संपूज्यमाधारादिचतुष्ट्यम् ॥ आधारःकूर्मशेषौ च चतुर्थीपृथिवी नृप ॥ ततः पद्मं महापद्मं सुसंपूज्य प्रयत्नतः ॥ द्लेभ्यश्चैव पत्रेभ्यः केसरेभ्योऽथ कर्णिका ॥ एताः ख्याता मया राजन् यन्त्रे संपूज्य यत्नतः ॥ ॥ तत्रादौ त्रिकोणात्रे ॥ ॐकारपीठाय० ॥ पूर्णपीठाय० ॥ ॐ कामपीठाय॰ ततश्चतुरस्रे न्यसेत् ॥ तत्र प्राच्याम् ॥ उं उडचानपीठाय॰ ३ उडचानेश्वरोपनाथाय॰ २ उडचानाम्बापादुकां पु॰ ३॥ आग्नेय्याम्॥ ॐ मं मातृपीठा॰ ४ मातृपीठे॰वरोपनाथा॰ ५ मातृकाम्बापा॰ ६॥ याम्यायाम्॥ॐ जं जालन्वरपीठाय॰ ७ जालन्धरेश्वरोपनाथा ०८ जालन्धराम्बापा० ९ ॥ नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ कं कोल्हापुरोपपीठा० १०॥ कोल्हापुरपीठोपनाथाय० १ १ कोल्हापुर पीठाम्बापा॰ १२॥ वारुण्याम् ॥ ॐ पूर्णगिरिपीठा॰ १३ पूर्णगिरिपीठेश्वरोपनाथा॰ १४ पूर्णगिरिपीठाम्बा॰ १५ ॥ वायन्याम् ॥ १६ सौहारोपपीठोपनाथा० १७ सौहारोपपीठोपनाथाम्बापा० १८॥ उदीच्याम् ॥ ॐ १९ कोल्हागिरिपीठोपनाथा ॰ २० कोल्हागिरिभवपीठेश्वराम्बापा ॰ २१॥ ईशान्याम् ॥ ॐ कं कामह्रपोपपीठा ॰ २२ कामरूपोपपीठनाथाय २३ कामरूपपीठेश्वर्यम्बापा २२४ धौतचतुरस्रे तदन्तराले गणेशचतुष्ट्यं प्रागादि ॥ गं गणेशाय ० क्षेत्रपालायं २ पं पादुकेभ्यो ॰ ३ वं बदुकत्रयाय ॰ ४॥ ततश्चतुरस्रे तदन्तराले आग्नेयादिकोणेषु देवी चतुष्ट्यम् ॥ जं जयाये विजयायै॰ २ जं जयन्त्यै॰ ३ अं अपराजितायै॰ ४॥ तथा तत्रैव वेतालचतुष्टयम् ॥ आग्नेयादिकोणे अं अग्निमुखवेताला २ जं ज्वालामुखवेतालाय॰ ३ धूं धूम्रमुखवेतालाय॰ ४ ॥ ततश्चतुरस्रे तदन्तराले बाह्रया द्यष्टमामृकाः प्रागादि ॥ ॐ ऐं इंसवाहिन्ये॰ ब्राह्ये विचे नमः १ इसें वृषवाहिन्ये॰ मं माहेश्वर्ये

ब.ज्ज्यो.र्ज. अर्मस्कंघ ८ ॥१११॥

हिन्ये॰ कं कौमार्ये विचे नमः ३॥ ॐ श्रीं गरुडवाहिन्ये॰ वं वैष्णव्ये वि॰ ४॥ ॐ हुं दंष्ट्रोद्धृतवसुंधराये॰ वां वाराह्ये विचे नमः ५ ॥ ॐ क्ष्मीं स्तम्भोद्रवाय मं महानारसिंह्य विचे नमः ६ ॥ ॐ लीं गजवाहिन्ये॰ ऐ ऐन्द्रचे विचे नमः ७ ॥ एक्षें गणनाथपरिवाराये सदा रुद्देण संवृताये चण्डमुण्डमण्डिताये सिंहाक्टाये चां चामुण्डाये विचे नमः ८ ॥ षट्कोणकर्णिकायां नन्दायाः षट्ट न्यसेत् ॥ ॐ हीं हेमगर्भाये॰ नं नन्दाये॰ विचे नमः १ ॥ ॐ हीं सुरक्ताये॰ रं रक्तदन्तिकाये॰ विचे नमः २ ॥ हीं नीलायै॰ शां शांकभर्य विच्चे॰ ३॥ ॐ हीं सर्वह्मपातिंहारिण्यै॰ दुं दुर्गायै विच्चे नमः ४॥ ॐ हीं दृष्ट्राचितमुखायै नील पात्रशिरोधरायै॰ भीं भीमायै विच्चे नमः ६॥ ॐ हीं तेजोमण्डलदुर्द्धर्षायै॰ भ्रां भ्रामयेँ विच्चे नमः ६॥ ततोऽष्टद्ले प्रागादि शक्त्यष्टकं न्यसेत् ॥ यं यक्षिण्ये नमः १ कं कालिकायै॰ २ सं सुरश्रेष्ठायै॰ ३ दं दशाननायै॰ ४ रं रत्यै॰ ५ प्रं प्रीत्यै॰ ६ वं विश्वेश्वर्ये ७ अं अष्टादशधुजां मनोभवाये॰ ८ ततः सिद्धचष्टकं दलात्रेषु प्रागादि ॥ अणिमाये॰ ॰ ३ गरिमायै॰ ४ प्राप्तयै॰ ५ प्राकाम्यै॰ ६ ईशितायै॰ ७ वशितायै॰ ८ ॥ अथाष्ट्रदलकर्णिकायां भैरवाष्ट्रकं प्रगादिषु ॥ अं असिताङ्गमै॰ १ कं क्रमे॰ २ चं चण्डमै॰ ३ कं कोडमैरवा॰ ४ उं २ उन्मत्तमैर॰ ६ कं कपालमै॰ ६ भीं भीषणमै ॰ संहारभै० ८ ॥ पुनस्तत्रैव इन्द्राद्यष्टलोकपालाः लं वज्रहरूताय सुराधिपतये इन्द्राय० १ रं शक्तिहरूताय तेजोऽधिपतयेऽमये० २ दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये यमाय० ३ क्षं खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये निर्ऋतये० ४ वं पाशहस्ताय जलाधिपतये वक्षणाय० ५ वं अंकुशहस्ताय सुराधिपतये वायवे॰ ६ सं गदाहस्ताय नक्षत्राधिपतये सोमाय॰ ७ इं त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये ईशानाय॰८॥ ततः षड्दले गुं गुरुभ्यो॰ १ पं परमगुरुभ्यो २ पं ॰ परमेष्ठिगुरुभ्यो॰ ३ गं गणपतये॰ ४ हं हरये ५ हं हराय॰ ६ ॥ अथ त्रिकोणमध्ये देग्याः पुरत ॐ हीं महालक्ष्म्ये विज्ञे नमः १ ॥ तद्दक्षिणभागे ॐ एँ महाकाल्ये विज्ञे॰ २ ॥ देग्या वामभागे ॐ क्ष्रीं महासरस्वत्ये वि॰ ३ पुनस्तत्रेव दक्षिणभागे ॐ क्ष्रीं सिंहाय॰ ॥ देग्या वामभागे ॐ हूँ महिषाय॰ २ तत्र देग्याः पृष्ठ

उपा.स्त. इ दुर्गी.

भागे महाकालीसांनिध्ये ॐ ह्स्रीं ह्स्रीं गौरीहदाय० ३ ॥ देव्याः पृष्ठभागे लक्ष्मीसान्निध्ये ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीहषीकेशाय ० ४ ॥ देन्याः पृष्ठभागे ॐ ऍ स्वराविरिज्न्ये॰ ५ ॥ तथा देन्याः दक्षिणे ॐ हूं कं कालाय॰ ३ ॐ रूं ह्वाय॰ २ ॐ सं सिंहाय॰ ३ ॥ तथा वामे मं मृत्यवे॰ ४ वं विजयाय॰५गंगणेशाय ६मं महिषाय॰ ७ ॥ पुरतिश्चवेदभैरवाय॰८ ॥ ततश्चतुरस्राद्वाह्मपरिघी प्रागादि विष्णुमायाद्याश्चतुरस्रभुवि त्रयोविंशतिमातृकाः स्थापयेत् ॥ ताश्च प्रणवादि सर्वत्र ॥ ॐ विष्णुमायायै० चेतनायै० बुद्धयै० निद्रायै० स्थुधायै० एताः पञ्च पूर्वे ॥ छायायै० शक्तये० तृष्णायै० सान्तयै० जात्ये० लजायै० एताः षड्दक्षिणे॥शान्तयै०श्रद्धायै०कान्तयै० लक्ष्मयै० धृत्यै० वृत्ये० एताः षड्तिः ॥ अथ षड्दल लक्ष्मयै० धृत्यै० वृत्ये० एताः षड्तरे ॥ अथ षड्दल मूले षडंगानि विन्यसेत् ॥पश्चिमायाम् ॐ इस्रां हदयाय॰ १ ॥आग्नेय्याम् ॐ हस्रीं शिरसे॰ २ ॥ ईशान्याम्ॐह स्रूंशिखायै॰ ३। नैर्ऋत्याम् ॐ ह्स्रैं कवचाय॰ ४ ॥ वायन्याम् ॐ हस्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॥ पुरतः ॐ हस्रः अस्त्राय॰ ६ ॥ अथभूगृहंसमभ्यर्च्य नालाबाष्टकं पूर्वीदि ॥ नालाय ॰ नमः १ मूलाय २ पद्माय ॰ ३ महापद्माय ॰ ४ आधारशक्तये ॰ ५ कूमीय ॰ ५शेषाय ॰ ७ पृथिन्ये ॰ ८ । सर्वाकारदलेषु दलेभ्यो । सर्वाकारपत्रेषु पत्रेभ्यो । सर्वाकारकेसरेषु केसरेभ्यो । सर्वाकारकर्णिकायां कर्णिकाये ।। ततो देव्याः पदस्थाने ॐ हीं सर्वशक्तिकमलासनयोगपीठात्मने नमः ॥ ॐ नमश्रण्डिकायै॰ सायुधायै सपरिवारायै साभरणायै सवाहनायै इह मण्डले प्रोह्मागच्छ २ श्रीचामुण्डाये नमः ॥ इति पुष्पाञ्चलि दत्त्वा जयजयशब्दान् कारयेत् ॥ इत्यावरणदेवताः अथ प्रतिबीजेन देवतां ध्यात्वा निश्चलं भूत्वा ॥ आद्यबीजे महाकालीं ध्यानपूर्व समर्चयेत् ॥ तृतीयेऽष्टभुजां ध्यात्वा समभ्यर्च्य सरस्वतीम् ॥ ततः पृथक् पृथक् पूजां कृत्वा महिषसिंहयोः ॥ मध्यबीजे चिरंध्यात्वा महालक्ष्मीं समात्मनः ॥ इत्यावरण संस्थाप्यानन्तरं वक्ष्यमाणविधिना देवीं ध्यायेत् ॥ योगनिद्रा हरेक्का इत्यादिचतुर्भिः ध्यात्वा सर्वदेवशरीरेभ्य श्चोकैर्मध्यबीजपूर्वकं इत्यादिषड्भिः

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥११५॥

ध्यात्वा गौरीदेहात्ससुद्धृतेत्यादिश्चोकत्रयाणां तृतीयबीजपूर्वकं प्रणवादिं च महासरस्वतीं ध्यात्वा एवं समय्रनवबीजेन योगनिद्रा हरेहका इत्यारभ्य त्रयोदशश्चोकैः पुनः पिठत्वा महाकाल्यादिदेवतात्रयं चिरं ध्यात्वा स्वहृदयात्रासात्रमानीय पुनर्नासात्रा दूर्ध्वश्वासमार्गेण पीठमानीय आवाहनमुद्रया अध्यवीजेन महालक्ष्मीं आवयेत्।। ततो मूलं समयमुचार्य एहाह्यागच्छा गच्छ सित्रिधि क्रहर २ इत्यावाह्य प्रतिमायां विन्यस्य संभाग्य एताश्चिमूर्तयः एकाकारा ध्यात्वा प्रतिमायामावाह्य मूलमन्त्रपूर्वकं चण्डिके प्रतिष्ठिता भव सिन्निहिता भव सिन्निह्हा भव सम्मुखा भव सुप्रसन्ना भव वरदा भव इति क्रमेणोच्चरन्मुद्धाः कृत्वा देव मूर्तेर्मृलमन्त्रेण षडंगन्यासं कृत्वा देवतासुद्रातदायुधसुद्धाश्च दर्शयित्वा प्रणमेत् ॥ ततस्तां प्रतिमां ताम्रपात्रे संस्थाप्य समग्र मूलेन जलधारया अग्न्युत्तारणं कृत्वा तत आवाहनादि पूजनमारभेत् ॥ तथा चोक्तम् ॥ आह्वानपूर्वकं दद्यादासनं मणिभूषितम् ॥ पीठस्थाः सर्वतः रिथताः ॥ महालक्ष्म्या सहैक्येन चिन्तयेद्योगमुद्रया ॥ एकाकारं महालक्ष्मीक्षं ध्यात्वा परात्परम् ॥ मुद्राभुजायुधाकारांश्चण्डिकाभे प्रदर्शयेत् ॥ अष्टादशाक्षमालाद्यास्ततः पाद्यं प्रकल्पयेत् ॥ वारिपुष्पाक्षतेर्युक्तं चन्दनेन प्रमोदितम् ॥ अर्घ्यं दत्त्वा महालक्ष्म्ये घेनुसुद्धां प्रदर्शयेत् ॥ संकल्पाचमनं भूप स्नानपुष्पाभिषेचनम् ॥ विद्ध्याच्छ्यसी सुद्रां यथा माता प्रतुष्यति ॥ महाईचित्रिते वस्त्रे चित्राण्याभरणानि च ॥ कस्तूरीकुंकुमोपेतं कर्पूरागरुचन्दनम् ॥ सुरभीणि सुपुष्पाणि बिल्वपत्राक्षतानि च ॥ निवेद्य चण्डिकां भूप दिन्यैर्धूपैः सुधूपयेत् ॥ ज्वलन्मणिशिखाकारैदीपैनीराजनैः शुभैः ॥ यथा वर्ण कमोपेतैनैवेद्यैः पायसादिभिः ॥ अनेकरसपकान्नैर्महालक्ष्मीं प्रतोषयेत् ॥ प्रणम्याचमनं दत्त्वा चन्दनं सुखवासनम् ॥ सकर्पूरं च ताम्बूलं भक्तिभावसमन्वितम् ॥ इति ॥ अथ पूजनम् समग्रं मूलमुचार्य प्रत्युपचारैः ॥ अथ ध्यानम् ॥ शाङ्कचकगदाहस्ते ग्रुश्र वर्णे ग्रुभासने ॥ मम देवि वरं देहि सर्वसिद्धिप्रदायिनि ॥ अथासनम् ॥ नानावरप्रदां देवीं समाराधय सुत्रताम् ॥ पीताम्बरधरां देवीं पञ्चक्षोभविवर्जिताम् ॥ पूर्वस्थापितान्यर्घ्यपात्रादीनि तान्यपि संपूजयेत् ॥ एवं पूजिते पीठे स्वहृदयस्थितां मूलमन्त्रमारिणीं

हुर्गा. हुर्गा. क्ष० १२८

ज्योतिर्मयीं सपरिवारां श्रीमहालक्ष्मीं श्वेताननां नील्धुजेत्यादिपूर्ववद्रहस्योक्तदेवतां ध्यात्वा सकाशान्निर्गतां देवतां देवतामूर्ति सुबुन्नानाडचां बहिर्निर्गमे पत्रपुष्पसहितमञ्जलौ गुरुस्वह्रपां अक्त्यवुगृहीतिविश्रहां ज्योतिर्मश्री सर्वमंगलातिमकां श्रीमहालक्ष्मीमस्मिन्महोत्सवे सपरिवारां भव इत्युचरन्नावाहिन्या सुद्रया करणीसित्ररोधिन्यवगुण्ठिनीसम्मुखीकरणीप्रसाधिनीयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् ॥ अक्षमालाद्यष्टादशमुद्राः पात्रं गृहीत्वा मूलेन महालक्ष्म्ये नम इदमर्घ्यं समर्पयामि ॥ चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च वरसिंहार्यपाणिनीम् ॥ सिंहारूढां महादेवीं सर्व सिद्धिप्रदायिनीमित्यर्घम् ॥ ततः पाद्यपात्रं गृहीत्वा पुनर्भूलेन महालक्ष्म्ये नम इदं पाद्यं समर्पयामि ॥ तप्तकाञ्चनसङ्काशां कमलां कमलालयाम् ॥ रक्ताम्बरधरां देवीं कमलाक्षीं वरप्रदाम् ॥ इति पाद्यम् ॥ अथाचमनपात्रं गृहीत्वा इदमाचमनीयं समर्पे० ॥ विद्या घरीं महादेवीं पद्माक्षीं लोकमातरम् ॥ सर्वैश्वर्यप्रदां देवीमाचम्यादिषु पूजयेत् ॥ ततो मधुपर्कपात्रं गृहीत्वा मूलमन्त्रेण महालक्ष्मेय नम इदं पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ शङ्कोदकेन मूलमन्त्रेण महालक्ष्म्ये नमः शुद्धोदकस्नानमिदं समर्पयामि ॥ स्थापितकलशो दुर्गासुक्तलक्ष्मीमुक्तदेवीसूक्तसरस्वतीसूक्तेदेवीमभिषेचयेत् ॥ तुषारिकरणाभासां जलहपां त्रिलोचनाम् ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ पुनराचमनीयम् ॥ ततो वस्त्रं सूलेन महालक्ष्मीं शंकरार्घशरीरिणीम् ॥ जगनमातां महाकालीं वन्दे तां विष्णुवछभाम् ॥ इति वस्नम् ॥ अथ कञ्चुकादि मूलेन महालक्ष्म्यै॰ इदं कञ्चुकादि सम॰ ॥ नानासिद्धिप्रदां देवीं नानागर्भप्रदायिनीम् ॥ नानासुत्रधरां देवीं सर्वलोक वस्त्राणि विचित्राणि॥ ततः मूलेन इरिद्रोद्धर्तनं कृत्वा परिमलसुगन्धतैलादिभिरुद्धर्तनमेव॥ चन्दनागरुकस्तूर्या कुङ्कमं रोचनं तथा ततश्चन्दनं गृहीत्वा मूलेन पूर्ववत् ॥

बु.क्क्बो.र्ग. धर्मस्कंघ ८ ॥११६॥

अक्षताः ॥ अक्षतास्तन्दुलाश्चेव कुंकुमाका विलेपयेव् ॥ इति गन्धम् ॥ तथा महालिक्ष्म सर्वसिद्धिप्रदा भवेत्यक्षताः ॥ सुरभीणि सुपुष्पाणि समर्प्य मुलेन महालक्ष्म्ये नमः इति पुष्पम् ॥ मन्दारपारिजाताद्य पाटली केतकी तथा ॥ मोगरं मरुपुष्पं च सर्वपुष्पेः सुशोभनैः ॥ इति पुष्पाणि ॥ अस्मिन्नवसरे महालक्ष्म्या अङ्गपूजा कर्तव्या ॥ चश्चलाये नमः पादौ पू० ॥ आषाढाये नमो जानुद्धयं पू० ॥ कमलवासिन्ये नमः किं पू० ॥ जनन्ये नमो नाभि पू० ॥ मन्मथाये नमः स्तनौ पू० ॥ एकनाभ्ये नमो हृदयं पू० ॥ लिलताये नमः पाणी पू० ॥ उनमत्तकण्ठाये नमः कण्ठं पू० ॥ भूभृत्ये नमो सुखं पू० ॥ गोर्ये नमो नेत्रे पू० ॥ धात्र्ये नमो नासापुरौ पू० ॥ विधात्र्ये० नमः कणीं पू० ॥ सर्वसौवर्णाये नमो ललादं पू॰ ॥ सर्वनिष्करुङ्कायै नमो मस्तकं पू॰ ॥ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः सर्वाङ्कं पूजयामि॥इत्यङ्कानि पुष्पैः संपूज्य ॥ धूपं दर्शयित्वा ॥ दशाङ्कं गुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम् ॥ सर्वेषामुत्तमं धूपं महालक्ष्मेये निवेदयेत् ॥ मूलेनैव महालक्ष्मेये नम इदं धूपम् ॥ ततो दीपाति गृहीत्वा मुलेन महालक्ष्म्ये नमः इदं दीपं स॰ ॥ घृताद्यैर्वितिश्चैव महातेजोमयि ज्वलन् ॥ महान्तमन्धकारं च निवार यति भूतले ॥ इति दीपम् ॥ अथ पायसादि पूर्वोक्तं नैवेद्यं गृहीत्वा मूलेन अर्घोदकेन संप्रोक्ष्य कवचेनावगुण्क्य योनिसुद्वां यित्वा ॥ सर्वे अक्ष्यं च भोज्यं च सर्वरससमन्वितम् ॥ नैवेद्यं मनसाऽभीष्टं महालक्ष्म्यै निवेद्येत् ॥ इमं नैवेद्यं गृहाण स्वाहेति घेत्र मुद्र्या श्रासमुद्रां द्शीयत्वा अथवा दक्षिणहरूतेन प्राणाशिहोत्रोक्तमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ उद्कं वामहरूतेन दत्त्वा करद्वयेनांग्रष्टद्वयाना मिकाइयं स्पृष्टाऽमृतसुद्रया परिवारदेवतातृप्तिं विभाव्य मध्ये पानीयसुत्तरापोशनं दत्त्वा इस्तप्रक्षालनार्थे चन्दनेन करोद्वर्तनं कृत्वा उष्णोदकेनाचामियत्वा ततः फलं समर्प्य ॥ फलं च पुरनारङ्गेः कदली मधुरं तथा ॥ नारिकेलसमायुक्तं फलं च प्रतिगृह्मतामिति फलम् ॥ ततस्ताम्बूलम् ॥ कर्पूरं नागवछीं च क्रमुकादि च संयुतम् ॥ विष्णुवक्षस्थले देवि ताम्बूलं च समर्पयेत् ॥ ततः सौवणीं दक्षिणां द्यात् ॥ ततः कर्पूरयुक्तदीपैनीराजयेत् ॥ सूलेन पुष्पाञ्जलि द्यात् ॥ ततो नमस्काराः ॥ दामोदरे नमस्तुभ्यं नमस्ते लोक

डवा.स्त. १ डुग्र्म. नायिके॥नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वारे॥इति नमस्कृत्य॥अथ प्रार्थना॥ मूलाधारस्थितां देवीं व्यासादिमुनिसेविताम्॥ आगच्छ वरदे देवि वरत्रयमुदाहताम् ॥ जपकाले च सान्निध्यं प्रसादं कुरू मे सदा ॥ इति प्रार्थ्य ॥ ततः प्रदक्षिणेका कर्तव्या ॥ तथा चोक्तम् ॥ एका चण्डी रवेः सप्त तिस्रो दद्याद्विनायके ॥ चतस्रः केशवं दद्याच्छिवस्यार्धप्रदक्षिणेति ॥ एतत्कृतभगवतीपूजायाँ विनियोगं स्मृत्वा गन्धाक्षतपुष्पैर्युक्तचुलकोदकधारया श्रीमहालिध्म कृतामिमां पूजां गृहाण स्वाहेति पूजां निवेदयेत् ॥ इत्येवं देवीपूजां समाप्यानन्तरं कुमारीपूजनं कुर्यात् ॥ प्राणानायम्य पूर्वोक्तन्यासान्संस्मृत्य चात्मवान् ॥ नवाक्षरस्य मन्त्रस्य देवतां न्यसेत् ॥ जपेन्नवाक्षरं मन्त्रमथवाऽष्टोत्तरं शतम् ॥ शतमादौ शतं चान्ते मध्ये सप्तशतीं जपेत् ॥ प्रतिरूपं विधानं च एवं जाप्यविधिनैरैः ॥ तथा सप्तशतीमालाछन्दर्षिदेवतास्तथा ॥ चरितानां त्रयं स्मृत्वा विशेषो विनियोगकम् ॥ प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभघातनम् ॥ महिषासुरनिर्नाशं चरितं विद्धि मध्यमम् ॥ चारितं चोत्तरं विद्धि निशुम्भादिवधाश्रितम् ॥ चरितानि जपेत्रीणि सरहस्यान्यतिन्द्रतः ॥ चरितं मध्यमं चैषां जपेद्वा चण्डिकामयम् ॥ तत्र कामश्चेत् शतमादौ शतं चान्ते जपेनमन्त्रं सकामः संपुरं जपेन्निष्कामः संपुरं विनेति॥अस्य श्रीनवाक्षरमन्त्रस्य हिरण्यगर्भवासुदेवरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः शेषाः शक्तयः परिशवलिङ्गं बीजम् अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि कार्यनिर्देशे योगः ॥ अथ षडक्रन्यासः ॥ ॐ ऍ चामुण्डायै विचे अंगु॰ हृद॰ ॥ ॐ ह्रीं चामुण्डायै विचे तर्ज॰ शिर॰ ॥ ॐ क्वीं चामुण्डायै विचे मध्य शिखाये ।। ॐ ऍ चामुण्डाये विचे अना कवचा ।। ॐ हीं चामुण्डाये विचे कनि नेत्र ॥ ओं कीं चामु ण्डायै विचे करतल अस्ता ।। एतद्विपरीतेन सृष्टिन्यासं विधाय ॥ अथ तत्त्वन्यासः ॥ ॐ ३ श्रीचिण्डकायै नमो हृदये ॥ ॐ ३ मिथ्यातत्त्वन्यापिन्यै श्रीचिण्डकायै नमः शिरिस ॥ॐ ४ सर्वतत्त्वन्यापिन्यै श्रीचिण्डकायै नमः सर्वाङ्गे इति तत्त्वन्यासः ॥ ततो ध्यात्वा त्रिगुणा तामसी इत्यादिचतुर्दशश्चोकैर्महाकाल्यादिदेवतात्रयं ध्यात्वा ॥ ततो जपः ॥ एकाश्रमनाः संभाषणादि परि ह.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कं ध ८ 119 9७॥

इरन् दिशोऽनवलोकयन् देवीं मनसा ध्यायन् ॥ संपूर्णवर्णस्वरोचारतत्पद्मात्राविभक्तिविवेकज्ञानवान् पठेदिति ॥ तथा ॐअस्य श्रीसप्तशतीमालामाहात्म्यस्य चितत्रयाणां मार्कण्डेयमेधसत्यादयो ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः मध्ये नानाछन्दांसि अन्ते Sवुष्टुष् छन्दः ॥ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाश्रामयों बीजानि हूँ इति शक्तिः ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं स्वाहा इति बीजम् ॥ अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि श्रीचण्डिकाप्रीत्यर्थे कवचादि पूर्वकदेवीमाहात्म्यजपे विनियोगः ॥ अथ षडङ्गः ॥ ॐ ह्राँ हृद्द० ॐ ह्रीं शिरसे० ॐ हूँ शिखा० ॐ ह्रें कवचा० ॐ हीं अस्त्राय फट् ॥ अयमेव करन्यासः अथं ध्यानम् ॥ प्रथमचरित्रेऽष्टादशभुजेत्यादि दशभुजाम् उत्तमचरित्रेऽष्ट्रभुजाम् एवं ध्यायअपेद्रती रहस्योक्तां ध्यात्वा अनन्तरं जपारम्भः ॥ अथ नियमाः ॥ निराहारो यताहारो नक्तभोजी अधःशायी अविरोधी ब्रह्मचारीति यावत्॥ ततः एवं गुणेत्यादि मम सकलकुटुम्बस्यायुरारोग्यैश्वर्याभिबृद्धचर्यं सकलदुरितो पशान्त्यर्थं शक्तित्रयप्रीत्यर्थं नवार्णमन्त्रजपपूर्वकसप्तशतीमालाया अमुकसंख्यया जपमहं वा ऋत्विग्द्वारा करिष्य इति संकल्प्य जप ॥ नवचंडीसंकरुपे प्रतिपदमारभ्य नवमीपर्यन्तमेकोत्तरबृद्धचा यथाकथंचित्रित्यचंडीसंकरुपे अमुकसंख्याका पञ्चचत्वारिंशद्रूपसंख्या वा यथाकथंचिच्छतचण्डीसंकरुपे प्रतिदिनं सकृद्रहरूयं कवचार्गलाकीलकं च ॥ सप्तशतीमालामन्त्रः प्रथमे 🐰 सकृत्सकृज्जपः द्वितीयेऽद्वि प्रत्येकंद्विरावृत्तिस्तृतीयेऽद्वि प्रत्येकं त्रिरावृत्तिश्चतुर्थेऽद्वि प्रत्येकं चतुरावृत्तिः सर्वे क्रपशतावृत्तिर्जपः कार्यः ॥ तथा च सहस्रचण्डचादिजपेऽप्येवम् ॥ सर्वे पृथकपृथक् कृत्वा दिग्देवीपूजनादिकम् ॥ बहिर्भूतबिल दत्त्वा कृत्वा देवीप्रदक्षिणाम् ॥ पूर्वस्मात्पूजनात्कुर्याद्द्रिगुणं पूजनं क्रमात् ॥ आचार्यः सुस्थिरः शान्तश्चण्डिकायाः प्रतोषणम् ॥ सुकृते पूजने वित्रा जपेयुर्द्विगुणं जपम् ॥ द्विगुणं च प्रकर्तव्यं कुमारीद्विजतर्पणम् ॥ तृतीयेऽहानि कर्तव्यं त्रिगुणं च सजागरम् ॥ चतुथं दिवसे सर्व सम्यगर्थ चतुर्गुणम् ॥ महाजागरणोपेतं होमः स्यात्पश्चमेऽहनीति पूर्वीदिक्रमयोगेन दिग्देवीभ्यो बिछं हरेत्॥

उपा.स्त. ३ दुर्गा.

गन्धपुष्पाक्षताधूपदीपेश्वक्रिमरुत्तमेः ॥ दृध्यकं शालिभकं च माष्मुद्रसमन्वितम् ॥ कादम्बरी गजाहृदा पुनरुक्काऽजवाहिनी ॥ कराली महिषाह्र है। रक्ताक्षी प्रेतसंस्थिता ॥ श्वेतनकोरगाह्र हो हिरता मृगवाहिनी ॥ यक्षिणी सिंहपृष्ठस्था कङ्काली वृषवाहना ॥ इंसपृष्ठे सुरज्येष्ठा सर्पराइयहिवाहिनी ॥ अनेन विधिना दत्त्वा दिग्देवीभ्यो बल्लि जपी ॥ नवत्रहाँ छोकपालान्दिकपालांश्च प्रपूजयेत्॥ कलशं सर्वरत्नाढ्यं हेमवस्त्रोदकान्वितम् ॥ संप्रतिष्ठाप्य संपूज्य चण्डिकार्चनमारभेत् ॥ पूर्वोक्तेन विधानेन गन्धपुष्पैरनुत्तमेः ॥ वस्त्रालंकारकस्तूरीसिन्दूरागरुकुङ्कमेः ॥ धूपैर्वहुविधदैपिनैवेद्यैर्वर्णसंख्यया ॥ कृत्वा च पूर्ववत्सर्वे जपेदेकात्रमानसः ॥ सकृद्रहस्य संयुक्तं चिण्डकाचरितत्रयस् ॥ कुमारीं विष्रमुख्यांश्च भोजयेद्विधिपूर्वकम् ॥ यदाद्यदिवसे कुर्याच्चिण्डकापूजनादिकम् ॥ द्रिगुणं तद् द्वितीयेऽह्मि त्रिगुणं तत्परेऽइनि ॥ नवमीतिथिपर्यन्तं कृत्वा पूजाजपादिकम् ॥ एकाहारं व्रती कुर्यात्सत्यादिनियमैर्युतः ॥ नव चण्डचादिकंकार्यमेवंविधि नरैरिति ॥ अथ बलिदानं प्रागादि ॥ ॐ भूभुवः स्वः गजारूढे कादम्बरि एह्मह्मागच्छागच्छ गन्धाद्यपचार सहितसदीपमाषभक्तविर्निमः १ ॥ ॐ भू० अजारूढे उल्के एहोह्यागच्छागच्छ० २ ॥ ॐ भू० महिषारूढे करालि एहो ॐ भू॰ प्रेतारूढे रक्ताक्षि एहा॰ ४ ॥ ॐ भू॰ उरगारूढे श्वेतवक्रे एहा॰ ५ ॥ ॐ भू॰ मृगारूढे इरिते एहा॰ ६ ॥ ॐ भू॰ सिंहारूढे यक्षिणि एहो ॰ ७ ॥ ॐ भू ॰ वृषारूढे कङ्कालि एहो ॰ ८ ॥ ॐ भू ॰ हंसारूढे सुरज्येष्ठे एहो ॰ ९ ॥ ॐ अहिवाहिनि सर्प राज्ञि एह्मे॰ १०॥ एवं दिग्देवीनां बलिदानम् ॥ अथ नवत्रहाणां बलिदानम् ॥ मध्ये वृत्तमण्डले सप्ताश्वरथाहृद ॐ भू० सूर्य एहो ॰ १ ॥ आग्नेयकोणे चतुरस्रपीठे ॐ भू० मृगाहृद सोम एहो ॰ २ ॥ दक्षिणे त्रिकोणे पीठे ॐ भू० मेषाहृद अङ्गारक एहो ०३॥ ईशान्यकोणे वाणाकृतिपीठे ॐ भू॰ सिंहारूढ सौम्य एहा॰ ४॥ उत्तरे पहिशाकारपीठे ॐ भू॰ हयारूढ आङ्गिरस एहा॰ ५॥ प्राच्यां पञ्चकोणपीठे ॐ भू॰ श्वेताश्वारूढ भागव एहा॰ ६॥ पश्चिमे धनुराकारपीठे ॐ भू॰ गृञ्जारूढ मन्द एहा ॰ ७॥ नैर्ऋत्यकोणे शूर्पाकारपीठे सिंहारूढ राहो पृद्धे ॰ ८ ॥ वायुकोणे ध्वजाकारपीठे केतो पृद्धे ॰ ९ ॥ ततः पञ्चलोकपालानां नैर्ऋत्य

ब.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥११८॥

शूर्पाकृतिपीठे डन्डुराह्रढ गणेश एह्मे १।। पश्चिमे धनुराकृतिशनिपीठे सिंहाह्रढे दुगें एह्मे २।। मध्ये वृत्ताकृतिपीठकेसरेषु कृष्णमृगसमारूढ वायो एहो ॰ ३ ॥ नैर्ऋत्ये झूर्णाकारराहुपीठे आकाश एहो ॰ ४ ॥ वायव्ये ध्वजाकृतिकेतुपीठे अश्वनीकुमारो एतम् ॰ ५ ॥ ततो दिक्पालानां प्रागादि ॥ ॐ भू॰ कौशिक गजारूढ इन्द्र एहो ॰ १ ॥ ॐ भू॰ मेषारूढ अग्ने एहो ॰ २ ॥ ॐ भू॰ महिषारूढ यम एहो ॰ ३ ॥ ॐ भू॰ कौशिकारूढ नैर्ऋते एहो ॰ ४ ॥ ॐ भू॰ मकरारूढ वरूण एहो ॰ ५ ॥ ॐ भू॰ मृगा रूढ वायो एहो ॰ ६ ॥ ॐभू॰ दशाश्वसमारूढ कुवेर एहो ॰ ७ ॥ ॐभू॰ वृषारूढ ईश्वर एहो ०८ ॥ ॐभू० हंसारूढ ब्रह्मन् एहो ॰ ९ ॥ ॐभू॰ गरुडारूढ अनन्त एहो ॰ ९ ॥ इति विलिदानं समाप्य ॥ ततः पूर्ववत्कलशं प्रतिष्ठाप्य ॥ तत्र कलशे वरुणं संपूज्य तेनोदकेन पूर्ववचण्डिकार्चनं कृत्वाऽष्ट्रगन्धैः संपूज्य वासोऽलंकरणादिभिः पूजयेत् ॥ पूर्वदेवतास्त्रिसूर्तीरेकाकारा ध्यात्वा एकात्रमना भूत्वा वक्ष्य माणलक्षणोक्तजपं कुर्यात् ॥ कवचार्गलाकीलकं सकुज्जिपत्वा ततः सप्तशतीमालास्तोत्रं त्रयोदशाध्यायात्मकं जपेत्संपुटीकरणं रहस्यत्रयेण कृत्वा एवमेक रूपकं मवति ॥ नवचण्डीप्रीत्यर्थमेवं प्रतिदिनमेकसंख्यापरिमित रूपकं कृत्वा सर्व मिलित्वा नवरूपसंख्यां कृत्वा दशमरूपेण होमं कृत्वा शतमादौ शतं चान्ते नवाणं कामनया जिपत्वा ॥ एवं नवचण्डीविधाने ॥ नित्यचण्डीविधानेऽप्येवं नवदुर्गाविधानेऽप्येवं कालरात्रिविधानेऽप्येवम् ॥ अथ शतचण्डचादिविधाने रूपकप्रत्येकं कवचार्गलकीलकादि कृत्वा मध्ये 🗳 चरितत्रयमालां कृत्वा रहस्यसहितां जिपत्वा शतावृत्तिजपं कृत्वा तहशग्रणितं सहस्रचण्डचादिविधानेऽप्येवम् ॥ शतमादौ शतं 🗳 चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ॥ सकामः संपुटं जपेन्निष्कामः संपुटं विनेति ॥ इति डामरादितन्त्रसारे भगवतीमहोत्सवे काम कलान्यासादिजपलक्षणविध्यन्तविधिनीम षष्ठावसरः ॥ ६ ॥ अथ यागभूमि संशोध्य षोडशस्तम्भसहितं मण्डपं सवितानं विच्छारे तोरणविष्टितं कृत्वा दिन्यवस्त्रपष्टडकुलादीनि देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तम्भविराजितं सुमनोहरं पुष्पमालोप शोभितं मण्डपं विधाय तन्मध्ये होमानुसारतः कुण्डं चतुरस्रं मेखलात्रययुतं योनिसहितं यथोक्तं कुर्यात् ॥ ततोऽन्यवेदिकां कुर्यात् ॥

उपा.स्त. ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तद्यथा ॥ ईशान्ये चिण्डकापीठं त्रहपीठं तु पूर्वतः ॥ आग्नेम्यां मातृकापीठं हस्तमुचं समन्ततः ॥ नैऋते वास्तुपीठं तु सर्वयज्ञेष्वयं विधिः ॥ कुण्डात्पश्चिमतः कार्या स्वस्तिवाचनवेदिका ॥ यथोक्तोच्छ्रायविस्तारवेदिकानामयं क्रमः ॥ ततो यजमानः सुस्नातः कलत्रपुत्रादियुतः शुचिः स्त्रियः वस्त्राभरणगन्धपुष्पैरलंकृत्य गलितस्वादुज्जलं कलशं संपूर्य ॥ तन्मुखे महाफलं प्रतिष्ठाप्य पाणि भयां गृहीत्वा मनत्रवाद्यघोषेण कर्ताऽभीष्टदेवतां ध्यात्वा यागभूमिगत्य पश्चिमद्वार्मण्डपं प्रविशेत् ॥ कलशं कुण्डात्पश्चिमे तन्दुलाष्ट्रदलोपरि संस्थाप्य एवं गन्धादिभिः शान्तिकलशं संपूज्य तत्र देवतां विन्यसेत् ॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ ॐ सं सरस्वत् नमः ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ एवं पञ्चदेवताः संपूज्य स्थिरासनं संभा व्य ॥ इति शान्तिकलशप्रतिष्ठापूजनन् ॥ ततः पूर्वोक्तासने कर्मभूमाबुपविश्य पूर्वोक्तप्रकारेण गणेशादीन् नमस्कृत्य तत्त्वत्रयेणा चम्य मूलेन प्राणानायम्य प्राणायामत्रयं विधाय समयस्मर्णं विधाय देशकालौ संकीत्यं अस्मिन् प्रण्याहे श्रीमहाकाल्यादि देवतात्रयप्रीतये मया अमुककामनया ब्राह्मणद्वारा कृत्जपदशांशेन क्रियमाणामुकचण्डीयागसिद्धये होममहं करिष्य इत्यक्षतोद केन संकरूप्य तद्ङ्गभूतमादौ गणेशपूजनं भूमिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं ब्राह्मणप्रार्थनापूर्वकं करिष्ये ॥ तत्रादौ ब्राह्मण प्रार्थना ॥ ब्राह्मणाः सन्तु मे शस्ताः पापात्पान्तु समाहिताः ॥ देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम् ॥ इति संप्रार्थ्य ततः गणेश पूजनादि कमेण कुर्यात् ॥ पूर्वोक्तैवं गुण॰ प्रारिप्सितकर्मणोङ्गऽभूतां मण्डपशुद्धि कुण्डशुद्धि च करिष्ये ॥ ततः स्थापितकल शोदकमन्यपात्रे गृहीत्वा औदुम्बरशमीदुर्वासहितजलेन भूमि त्रिवारं प्रोक्ष्य ॥ तत्र मन्त्रः ॥ यदत्र १ अपकामन्तु ० २ ॥ तथा तेनोदकेन मण्डपं प्रोक्ष्य आपो हिष्ठेति तिसृभिः शत्र इन्द्राग्नी इति मन्त्रेण ततो गौरसर्षपैः सर्वतो मण्डपान्तः विकिरेत् ॥ रक्षो हणं वलगहनिमत्यादिना तथा प्राच्यां रक्षः सौम्यानि यानिः सर्वत इत्यनेन दिग्बन्धनं कुर्यात् ॥ ततः पञ्चगन्यमन्त्रः पञ्च गन्येन मण्डपं प्रोक्ष्य ॥ अथ कुण्डं प्रार्थ्य ॥ हे कुण्ड तव निर्माणं यथामति मया कृतम् ॥ कृपया भव संपूर्ण कुरु सिद्धिं नमो

ब्र.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥११९॥ उस्तु ते ॥ ततः कृताञ्जितः स्वस्ति नः इति मन्त्रं जपेत् ॥ कुण्डं गन्धादिना संपूज्य ततः कुण्डमेखलासु महाकाल्यदिदेवतात्रयं संचिन्त्य संभाष्य संपूज्य ॥ कुंकुमाक्षतपुष्पैर्मण्डपदेवताः संपूज्य ॥ यथा मण्डपेषु ॥ ॐ रत्नमण्डपाय० दक्षिणवामशाखा याम् ॥ ॐ द्वारिश्रये० गं गणपतये० मण्डपोपिर ॥ ॐ तत्त्वमण्डपाय० देहल्याम् ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय० मण्डपान्तः ॐ ब्रह्मणे॰ इति संपूज्य ॥ अथ द्ध्योदनमाषभक्तसहितसदीपपात्राण्यादाय गन्धादिपात्रं जलपात्रं च गृहीत्वा मण्डपाद्वहिर्वलिदानं कुर्यात्॥ यथा च ॥ मण्डपस्य चतुर्दिश्च द्याद्भृतबलि बहिः ॥ बलि गृह्णन्तिसमे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतश्चाश्विनौ देवाः सुपर्णाः पन्नगा यहाः ॥ द्वौ द्वौ प्रागादि संपूज्य मम यज्ञसुखावहाः ॥ याम्योत्तरविभागेषु चतुर्द्वारैः पृथक् पृथक् एतत्स्पष्टतरम् ॥ तत्र भूमौ कुशानास्तीर्य बलिं दत्त्वा ॐ देवेभ्यो नमःगन् वाद्यपचारसिंहतसदीपदध्योदन एतन्माषभक्तबिलनमः १ आदित्येभ्यो॰ २ इति प्राग्हारे दक्षिणवामशाखयोः ॥ अथ याम्यहारे दक्षि॰॥ ॐ वसुभ्यो॰ ३॥ ॐ मरुद्धचो॰ ४॥ ततः पश्चिमद्वारे दक्षि॰ ॥ ॐ अश्विभ्यां देवाभ्यां॰ ६ ॥ ॐ सुपर्णेभ्यो॰ ६ ॥ तत उत्तरद्वारे दक्षि॰ ॥ ॐ पन्नगेभ्यो॰ ७ ॥ ॐ यहेभ्यो॰ ८॥ एवं चतुर्दिक्ष क्षेत्रबलिः ॥ तथा च पूर्वोक्तविहग्दिवीनां बलिदानं यहाणां लोकपालानां दिक्पालानां यथाक्रमेण पूर्वोक्तवत्कुर्यात् ॥ तत आचम्य प्राणानायम्य वास्तुपीठसमीपे गत्वा वास्तुमण्डले वास्तुमूर्तिं प्रतिष्ठाप्य संपूज्य तत्र यथोक्त बलिदानं कृत्वा समाप्य ॥ अथानन्तरं साचार्यब्रह्मऋत्विक सपवित्रकरो यजमानः सपत्नीकः ब्रह्मादीनां प्रार्थनां यथा ॥ ॐ उत्तिष्ठन्तु महाभागा अर्चिताः प्रार्थिता यया ॥ ऋद्धचर्थ कर्मणस्त्वस्य कुरुध्वं मण्डपं द्युमम् ॥ इति संप्रार्थ्य समारभेत ॥ पूर्वोक्तंव गुणेति० ॥ श्रीमहाकाल्यादिदेवतात्रयश्रीत्यर्थम् अमुकचण्डीमहोत्सवसिद्धचर्थं षोडश स्तम्भप्रतिष्ठां तोरणप्रतिष्ठां ध्वजं पताकां प्रतिष्ठाप्य चतुर्दिश्च द्वारपालकसहितकलशसुप्रतिष्ठा अत्र प्रतिष्ठितदेवतानां पूजनं 🎇 बिलदानं च करिष्य इत्यक्षतोदकेन संकल्प्य ॥ ईशानस्तम्भे० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः प्रथमस्तम्भे ब्रह्मव्रिहागच्छ प्रतिष्ठितो भव ॥

उपा.स्त. इ

तत्राधिदेवताः संपूज्य साविज्यै नमः ॥ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ ब्राह्मयै० ॥ स्तम्भशिरसि नागमात्रे नमः ब्रह्मणस्पते त्वमस्येति गृत्समद् ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः ब्रह्मा देवता पूजने विनियोगः ॥ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य । मन्त्रः ॐ ब्रह्मणे वेदाधिपतये इंसासनसमाह्रदाय साङ्गाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपद्ध्योदनमाषभक्तविर्नमः ब्रह्मा प्रीयतां ब्रह्मा सप्रीतो वरदो भवतु ॥ १ ॥ अथ आम्रेयस्तम्भे ॥ ॐ भू० द्वितीयस्तम्भे ॥ विष्णो इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव ॥ तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ लक्ष्म्ये ॥ आदित्यनन्दाये ॥ वैष्णव्ये ॥ स्तम्भशिरसि नागमात्रे ॥ इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दः विष्णुदेवता पूजने विनियोगः ॥ इदं विष्णु० ॥ मन्त्रः ॥ ॐ विष्णवे यज्ञाधिपतये चक्रहस्ताय गरुडासनसमारूढाय सांगाय विष्णुः प्री विष्णुः सुप्रीतो भव ।। २ ॥ अथ नैर्ऋतस्तम्भे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तृतीयस्तम्भे हृद इहागच्छ भव ॥ तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ गीर्थै० ॥ शौभनायै० ॥ माहेश्वर्यै० ॥ स्तम्भशिरसि नागमात्रे० ॥ परिणो रुद्रस्येति गृतसमद ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता पूजने वि॰ परि णो रुद्रस्य हेतिः । मन्त्रः ॥ ॐ रुद्राय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय वृषकन्ध समारूढाय सांगाय । रुद्रः प्रीय । रुद्रः सुप्रीतो । । ३ ॥ ततो वायन्यस्तम्भे ॥ ॐ भूभुवः स्वः चतुर्थस्तम्भे इन्द्र इहागच्छ प्र॰ तत्राधिदेवताः संपूज्य इन्द्राण्ये॰ आनन्दाये॰ विभूत्ये॰ स्तम्भशिरसि॰ नागमात्रे॰ इन्द्र आसां नेतेति अप्रतिरथ ऋषिःत्रिष्टुप छन्दः इन्द्रो देवना पूजने वि॰ ॥ इन्द्र आसाम्॰ मन्त्रः ॥ ॐ इन्द्राय सुराधिपतये वत्रहस्ताय ऐरावतसमाहृद्धाय सांगाय॰ इन्द्रः प्री॰ इन्द्रः सुप्री॰ ॥ ४ ॥ पुनस्तद्वहिरीशानकोणे ॥ ॐ अर्धुवः स्वः पञ्चमस्तभ्मे सूर्य इहागच्छ प्र॰ तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ सौर्ये ॥ भूत्ये॰ सावित्र्ये॰ मंगलाये॰ ॥ स्तम्भिशरिस नागमात्रे॰ चित्रं देवानामिति कुत्सांगिरस ऋषिः त्रिष्टुए छन्दः सूर्यो देवता पूजने वि॰ ॥ चित्रं देवानासु॰ मन्त्रः ॐ सूर्याय प्रहाधिपतये पद्महस्ताय अश्वगृष्टिसमधिक्दाय सांगाय॰ सूर्यः प्री॰ सूर्यः सुप्रीतो ।। ५ ॥ तत ईशप्राच्यन्तराले ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः षष्ठस्तभ्भे गणपते इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य सिद्धचै० बुद्धचै०

बु.ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ - ॥१२०॥

विष्नहारिण्ये॰ जयाये॰ स्तम्भशिरसि नागमात्रे॰ गणानां त्वेति गृत्समद ऋषिः गायत्री छन्दः गणपतिर्देवता पूजने वि॰ ॥ ॐ गणानां त्वा॰ मन्त्रः ॥ गणपतये अङ्कशहस्ताय चतुर्दशिवद्याप्रदायकाय विव्वहराय मूषकसमिधि हृदाय सांगाय॰ गणपितः प्री॰ गणपितः सुप्रीतो॰ ॥ ६ ॥ ततः पूर्वाव्ययान्तराले ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तमस्तम्भे धर्मराज इहागच्छ प्र॰ तत्राधिदेवताःसंपूज्य धर्म राइये॰ प्राक्सन्ध्याये॰ अञ्चनाये॰ ऋराये॰ स्तम्भिशरिस नागमात्रे॰ ॥ यमाय त्वेति प्रजापित्ऋषिः गायत्री छन्दः यमो देवता पूजने वि॰ ॥ यमाय त्वा॰ मन्त्रः ॥ ॐ धर्मराजाय प्रेताधिपतये दण्डहस्ताय महिषस्कन्धसमधिहृ्दाय सांगाय॰ धर्मराजः प्री॰ धर्मराजः सुप्रीतो भव ॥ ७ ॥ अथाग्नेय कोणे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टमस्तम्भे नागराज इहागच्छ प्र॰ ॥ तत्राधिदेवताःसंपूज्यमध्यम सन्ध्यायै॰ पद्मिन्यै महापद्मिन्यै॰ अंगनायै॰ स्तम्भशिरसि नागमात्रे॰ नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दःनाग मन्त्रः ॥ नागाधिपतयेनागकन्यासमन्विताय राजो देवता पूजने वि॰ नमोऽस्तु सर्पेभ्यः ॰ नागराजः प्री० नागराजः सुप्रीतो०॥ ८ ॥ ततः आग्नेययाम्यान्तराले ॥ ॐ भू० नवमस्तम्भे स्कन्द् इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य स्कन्दिप्रयाये॰ पश्चिमसन्ध्याये॰ स्तम्भशिरसि नागमात्रे॰ यदकन्देति भागव ऋषिः त्रिष्टुपू छन्दः स्कन्दो देवता पूजने विनियोगः ॥ यदक्रन्दः ॰ मन्त्रः ॥ ॐ स्कन्दाय सेनाधिपतये शक्तिहस्ताय मयूरसमाधिहृद्धाय साङ्गाय ॰ स्कन्दः प्री ॰ स्कन्दः सुप्रीतो ।। ९ ॥ ततो याम्यनैर्ऋत्यान्तराले ॥ ॐ भू० दशमस्तम्भे वायो इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ वायुप्रियायै० वायन्ये॰ कौमार्ये॰ स्तम्भशिरिस नागमात्रे॰ वायो ये ते इति गृत्समद् ऋषिः गायत्री छन्दः वायुर्देवता पूजने विनियोगः॥ वायो ये ते॰ मन्त्रः ॥ ॐ वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय वृगपृष्ठसमाधिरूढाय साङ्गाय॰ वायुः प्री॰ वायुः सुप्रीतो॰ ॥ १० ॥ ततो 👹 नैर्ऋत्यकोणे ॥ ॐ भू० एकादशस्तम्भे सोम इहागच्छ प्र॰ तत्राधिदेवताः संपूज्य सोमप्रियाये० सोम्ये० अमृतकलाये० विज याये० स्तम्भिशरिस नागमात्रे० वय॰ सोमिति बन्धुर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता पूजने वि० वय॰ सोम० मन्त्रः॥

उपा.स्त. व

ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये गदाहस्ताय मृगवाहनाय साङ्गाय सोमः प्री सोमः सुप्री । ११ ॥ ततो निर्ऋतिवरूणान्तराले ॐ भूः द्वादशस्तम्भे वरूण इहागच्छ प्र० ॥ तत्राधिदेवताः संपूज्य ॥ वरूणिप्रयायै० वारूण्ये० बृहस्पत्यै० स्तम्भिशारिस नाग मात्रे ।। तत्त्वा यामीति शुनःशेप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वरूणो देवता पूजने विनियोगः ॥ तत्त्वा यामि० मन्त्रः ॥ ॐ वरूणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय मकरवाहनसमधिरूढाय साङ्गाय० वरूगः प्री० वरूणः सुप्रीतो० ॥ १२ ॥ ततः पश्चिमवायव्यान्तराले ॥ 🕉 भू॰ त्रयोदशस्तम्भे वसवः इहागच्छत प्र॰ तत्राधिदेवताः संप्रच्य सिध्यमृकायै॰ विततायै॰ विभूत्यै॰ स्तम्भशिरसि नागमात्रे नमः ॥ निवेशन इत्यग्निर्ऋषिः त्रिष्टुण् छन्दः वसवो देवताः पूजने विनियोगः ॥ निवेशनः संगमनो० मन्त्रः ॐ वसुभ्यः उत्कृष्ट पराक्रमेभ्यः अष्टसिद्धचिषितभ्यः शरहस्तेभ्यः साङ्गभ्यः साभरणेभ्यः सशक्तिभ्यः एष चन्द्नाक्षतपुष्पधूपदीपद्ध्योदनयुक्तमाष भक्त बिर्नमः वसवः प्रीयन्तां वसवः प्रीता वरदा भवन्तु ॥१३॥ ततो वायुकोणे ॥ ॐ भू० चतुर्दशस्तम्भे बलदेव इहागच्छ प्र० तत्राधिदेवताः संपूज्य तित्रयाये ॰ आदित्ये ॰ लिघम्नैये नमः सिनीवाल्ये ॰ स्तम्भशिरसि नागमात्रे नमः॥बण्महामिति जमद्शिर्ऋषि बृहती छन्दः बलदेवो दे० पूजने वि० ॥ बण्महाँऽअसि० मन्त्रः ॥ बलदेवाय रेवत्यधिपतये लाङ्गलहस्ताय रत्नाङ्कितरथयुक्ताश्व समधिरूढाय सांगाय॰ बलदेवः प्री॰ बलदेव सुप्री॰ ॥१४॥ ततः वायन्योदीच्यन्तराले ॥ ॐ भू॰ पञ्चदशस्तम्भे बृहस्पते इहागच्छ प्र॰ तत्राधिदेवताः संपूज्य पौर्णमास्यै॰ साविज्यै॰ स्तम्भशिरसि नागमात्रे॰ बृहस्पत इति गृतसमद ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता पूजने विनियोगः ॥ ॐ वृहस्पतेऽअति ॰ मन्त्रः ॥ ॐ वृहस्पतये सर्वदेवेन्द्राधिपतये पुस्तकशुक्शुवहस्ताय हंसपृष्ठसमधिरूढाय साङ्गाय ॰ बृहस्पतिः प्रीय ॰ बृहस्पतिः सुप्रीतो ॰ ॥१५॥अथोदगीशान्यन्तराले ॥ ॐ भू ॰ षोडशस्तम्भे विश्वकर्मन्निहागच्छ प्र ॰ तत्राधि देवताः संपूज्य गायत्र्यै । वास्तव्ये । स्तम्भशिरसि नागमात्रे नमः ॥ विश्वकर्मन्हविषेति विश्वकर्मा भौवन ऋषिः त्रिष्टुण् छन्दः विश्व कर्मा देवता पूजने वि॰ ॥ ॐ विश्वकर्मन्हविषा॰ यन्त्रः ॥ ॐ विश्वकर्मणे विश्वाधिपतये दण्डहस्ताय साङ्गाय॰ विश्वकर्मा प्री॰

ह.क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१२१॥ विश्वकर्मा सुप्री० ॥ १६ ॥ इति स्तम्भप्रतिष्ठा ॥ अथ तोरणध्वजपताकाप्रतिष्ठ।पूजाबिलदानम् ॥ पूर्वद्वारे ॥ सुदृढतोरणं पूर्वे न्यशेषं काञ्चनप्रभम् ॥ रक्षार्थे चैव बध्नीयाच्चण्डीपूजाख्यकर्मणि ॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितमिति मन्त्रं जपेत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वद्वारे सुदृढप्रीतये इमं न्यग्रोधतोरणं चन्द्रनाक्षतपुष्पपृदीपघृताकक्षीरात्रयुक्तमाषभक्तबिलनमः सुदृढः प्री० सुदृढः सुप्री० ॥ १ ॥ तत्रेव दिक्षणवामशाखयोध्वेजपताका उच्छ्यामि स्थापयामि नमः ॥ घतुः प्रभापताकां च सिन्दूराक्रणभं ध्वजम् ॥ स्थापयामि महे नद्राय शक्तियुक्ताय विश्वणे ॥ आग्रुः शिशान इति मन्त्रद्वयेन ध्वजपताकयोभहेन्द्र इहागच्छ प्र० ॥ ॐ भू० महेन्द्राय ऐरावतसिहताय इमं गन्धाद्यपचारसहितं क्षीराञ्चकुक्तमाषभक्तबलिनं ममेदं महेन्द्रः प्री० महेन्द्रः सुप्री० ॥ २ ॥ तत्र देवताः सं० पूर्वद्वारपार्थे ॥ ॐ कादम्बर्ये गजारूढाये वत्रहस्ताये एहाह्यागच्छागच्छ गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितिममं क्षीरान्नबिल गृह्य २ मम ईप्सितं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ३ ॥ तत्र द्वारदक्षिणांसे ॐ ब्राह्मि इहागच्छ प्र॰ दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रमथाभयाम् ॥ विश्रतीं कनकच्छायां ब्राह्मीं बालां च कृष्णभाम् ॥ ह्री ऐ ब्राह्मि एह्मह्मागच्छागच्छ वामे ज्ञूलं परश्वधं क्षुद्रदुन्दुभिनृकरोटीनावहन्तीं हेमसङ्काशां ध्यायत्रिमं क्षीरान्नबिल गृह्म २ मम ईिप्सतं कुक्त २ स्वाहा ॥ ४ ॥ तत्र द्वारवामांसे माहेश्वरि ज्ञुभा इहागच्छ प्र॰ ह्वीं ए माहेश्वरि एह्यह्यागच्छागच्छ ॥ ततः पूर्वद्वारे कलशद्वयं संस्थाप्य मही चौरित्यादि सरत्नप्रक्षेपगतं पूजयेत् ॥ कलशद्वये गङ्गाये० यमुनाये० ॥ ॐ अग्निमीले तत्र ऋग्वे दिनौ ऋत्विजौ पूर्वद्वारे शान्तिसूक्तजपार्थ युवामहं वृणे ॥ ऋग्वेदः । पद्मपत्राक्ष० गन्धायुपचारसहितम् एहि इमं क्षीरान्नबल्लि गृह्य२ मम ईिप्सतं कुरू २ स्वाहा ॥ ६ ॥ तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे आवाहयाम्यहं धात्रे निधीनां पतये प्रभो ॥ इहागत्य बलि गृह्य यज्ञविन्न 🥻 निवारय ॥ २० भू० धात्रे एह्यह्यागच्छागच्छ इमं गन्धाछुपचारसिहतं क्षीरान्नबिलं गृह्य २ मम ईप्सितं कुरू २ स्वाहा ॥६॥तत उत्त रांसे ॥ विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो ॥ स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविन्नं निवारय ॥ ॐ भू० विधात्रे एह्यह्या० ॥ ७ ॥ तत्र द्वारस्य पुनर्दक्षिणभागे ॥ वेदीमध्ये लिलतकमले कर्णिकायान्तरस्थः सप्ताश्वोऽकींऽक्रणक्रचिरवपुः सप्तरज्जिदिबाहुः । गोत्रे मे

उपा.स्त. ३ दुर्गा.

ऽस्मिन् बहुविधगुणः काश्यपाख्ये प्रसृतः कालिङ्गाख्याविषयजनितः प्राङ्मसुखः प्रदाहरतः ॥ ॐ भू॰ सूर्य अधिदेवताप्रत्यधि देवतासहित एहोह्या ।। ८॥ तत्र द्वारस्य वामभागे शुक्रं यजेत् ॥ प्राच्यां भृगुर्भोजकटे प्रजातः सभार्गवः पूर्वमुखः सिताभः ॥ सपञ्चकोणे सरथाधिरूढो दण्डाक्षमालावरदाङ्कपत्रः ॥ ॐ ५० ज्ञुक अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्य ।। १॥ तन्त्रद्वारतः देवताद्वयं यजेत् ॥ तत्र दक्षिगभागे ॥ पानपात्रं च खङ्गं च अक्षमालां कमण्डलुम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ ॐ भू० दिगम्बर एह्येह्या॰ ॥ १० ॥ ततः उत्तरभागे ॥ ब्रह्माणीशक्तिसंयुक्तं हंसवाहनभूषितम् ॥ श्वेतवर्णमहं वन्दे असिताङ्गं भैरवम् ॥ ॐ भू॰ असिताङ्गभैरव एह्येह्या॰ ॥ ११ ॥ तत्र गन्धपुष्पाक्षतैश्चिच्छक्त्यादिदेवताः संपूज्य यथा ॥ ॐ ॐ मायाशक्तयै॰ द्वारपार्श्वे ॥ ॐशङ्क्वनिधये॰ द्वारपुरतः ॥ ॐपद्मनिधये॰ द्रध्वे ॥ ॐ श्रिये॰ अधो देहल्याम् ॥ ॐ वास्तुपुरु षाय॰ इति देवताः संपूज्याभिवन्द्य ॥ इति पूर्वद्वारे बलिदानम् ॥ अथाग्नेयकोणेषु ॥ प्राणानायम्य उं उल्के अजारूढे शक्तिहस्ते एह्येहीत्यादि ॥ रक्तां पताकामाय्रेये ध्वजं चैवायिसन्निभम् ॥ स्वाहायुक्ताय देवाय स्थापयामि पताकां रक्तध्वजं च पञ्चहस्तदण्डे उच्छ्येत् ॥ ततः त्वन्नोऽअग्ने इति मन्त्रेणान्नि दिग्गजं लक्ष्मीगजमावाह्य ॥ ॐ भू० अग्नये पुण्डरीकदिग्गजसिहताय अयं गन्धाद्यपचारसिहतः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिनम अग्निः प्रीयताम् ॥ अग्निः ष्तु ॰ तु ॥ आग्नेये ॥ अनादिपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः ॥ धूमकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ रुरुभैरवाय अयं गन्धाद्यपचारसहितः क्षीरात्रयुक्तमाषभक्तबिर्लनमः भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो त ॥ प्रत्यङ्मुखचतुरस्र पीठे यमुनातीरोद्रवमात्रेयगोत्रं सोममधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितमाप्यायस्वेति मन्त्रेण पूजयेत् ॥ अनादिपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयो हि सः ॥ धूमकेतुरनाध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमौ नमः ॥ त्वन्नो अग्ने इत्यन्निमावाह्य ॥ रं अग्नये एह्यहीत्यादि ॥ परश्वधायुधधर्तारं खङ्गपात्रघरं तथा ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ माहेशीशक्तिसंयुक्तं वृषवाहनभूषितम् ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं वन्देऽहं

बु.क्क्यो.र्ण. बर्मस्कंध ८ ॥१२२॥

रुरुभैरवम् ॥ ततः दक्षिणद्वारे ॥ औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् ॥ रक्षार्थं चैव बन्नामि चण्डीपूजाल्यकर्मणि ॥ इषे त्वेति मन्त्रेण ॥ ॐ भूभ्रेवः स्वः दक्षिणद्वारे विकटपीतये अयम् औदुम्बरतोरणचन्दनाक्षतपुष्पपृपदीपष्टताकक्षीरात्रयुक्तमापभक्त बर्लिनमः विकटः प्रीयतां विकटः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ तत्रैव दक्षिणवामशाखयोः ध्वजपताका उच्छ्यामि स्थापयामि नमः॥ धूम्र वर्णपताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा ॥ यमाय स्थापयामीति निहन्त्रे कर्मसाक्षिणे ॥ स इष्डहस्तैः ॥ आयं गौरिति मन्त्रेण भूभ्रुव यमाय वामनदिग्गजसहिताय अयं गन्धाद्यपचारसहितः क्षीरात्रयुक्तमाषभक्तविलिनमः यमः प्रीयतां यमः सु ॥ तत्र देवताः सं॰ दक्षिणद्वारपार्श्व ॥ ॐ कं करालि महिषारूढे दण्डहस्ते एख्राहि इमं गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपसहितिममं क्षीरात्रबलि गृह्य २ मम ईिप्सितं कुरु२ स्वाहा ॥ तत्र द्वारदक्षिणांसे ॥ ॐ अङ्कुशं दण्डखट्वाङ्गौ पाशं च द्धतीं करैः ॥ ध्येयां बन्धूकसङ्काशां कीमारी कामदायिनीम् ॥ ॐ हीं क्षीं कौमारि एहोहि इमं क्षीराञ्चबिल गृह्य २ मम ईप्सितं कुरू २ स्वाहा ॥ तत्र द्वारवामांसे ॥ ॐ श्रीं वैष्णवि एहि २ गन्धासुपचारसहितमिमं क्षीरात्रबलिं गृह्म २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ पूर्ववत् कलशावावाह्य स्थाप येत् ॥ द्वारस्थितकलशद्वये गोदायै नमः कृष्णायै० ॥ ततो यज्ञवैदिनौ ऋत्विजो शान्तिसूक्तजपार्थत्वेन युवामहं वृणे॥ इषे त्वोर्जे त्वेति गन्धादिभिः उपचारैः प्रपूजयेत् ॥ याम्ये गदाशक्तिगदांश्च शूरो वरप्रदो याम्यसुखोऽतिरक्तः ॥ कुजोऽस्त्यवन्तीविषये त्रिकोणे तस्मिन् भरद्वाजकुले प्रसृतः ॥ ततः दक्षिणे त्रिकोणे त्र्यङ्गुलमण्डले दक्षिणसुखं भौमं गन्धपुष्पाक्षतेः अग्निमूध विरूपोऽङ्गारको गायत्री अङ्गारकावाहने वि॰ ॥ ॐ अग्निर्मूर्धा॰ सन्त्रः॥ ॐ भू॰ अवन्तिसमुद्भवं भारद्वाजगीत्रं भौमं प्रपूजयेत्॥ घउर्बाणघरं देवं खङ्गपात्रघरं तथा ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ दिगम्बर एह्मोहि॰ ॥ कौमारीशक्तिसंयुक्तं शिखि वाहनभूषितम् ॥ गौरवर्णधरं देवं वन्दे श्रीचण्डभैरवम् चण्डभैरव एह्योहि॰ ॥ ततः गन्धपुष्पक्षितैः चिच्छक्तयादिदेवताः संपूज्य ॥ तद्यथा ॥ ॐ चिच्छक्तये॰ ॐ मायाशक्तये॰ द्वारपार्श्व ॥ ॐ शङ्क्वनिधये॰ द्वारपुरतः ॥ ॐ पद्मनिधये॰ उद्दे ॥

उपा.स्त. व हुग्री.

अ० १२८

ॐ श्रिये॰ अधोदेहरूये॰ ॐ वास्तुपुरुषाय॰ ॥ इति देवताः संपूज्याभिवन्द्य ॥ इति दक्षिणद्वारे बिलदानम् ॥ ततः नैर्ऋती दिश मागत्य प्राणानायम्य संक॰ रक्ताक्षि प्रेतारूढे खद्गहरूते एह्यहि॰ ॥ पताकां निर्ऋतीशाय कृष्णनीलमयं ध्वजम् ॥ स्थापयामि सदा रक्षोगणाधीशाय चैव हि ॥ ॐ वृहरूपते परि दी॰ मन्त्रः ॥ ॐ असुन्वन्तेति निर्ऋतिप्रीत्यर्थ कृष्णनीलध्वजपताकाः स्थाप यामि ॥ तत्र कुमुदं दिग्गजं पुण्डरीकं लक्ष्मीगजमावाह्य ॥ पैठीनसो वर्बग्देशजातः श्रूपांसने सिंहगमः सुधूम्रः ॥ याम्याननो रक्ष गणस्तु मह्यं वरप्रदः श्रूलसचर्मखद्भः ॥ युष्पाक्षतैः कया नो वामदेवो राहुर्गायत्री राह्वावाहने विनियोगः ॥ ॐ क्या नः॰ मन्त्रः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुगेद्रव पैठीनसगोत्र राह्ये अधिदेवताप्रत्यिचेदेवतासिहत एह्योहि इमं शीरात्रसहितविलं नमः राहुः प्रीयतां राह्ये सु॰ ॥ शङ्कचकधरं देवं पानपात्रगदाधरम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ कुमार दिगम्बर एह्यहि॰ ॥ वैष्णवीशक्ति संयुक्तं गरुडासनभूषितम् ॥ नीलवर्णधरं देवं वन्दे श्रीकोधभैरवम् ॥ कोधभैरव एह्यहि ॥ भैरवः प्रीयतां भैरवःसु॰॥ततः पश्चिमद्वारे ॥ अश्वत्थं पश्चिमे भीमे तोरणं रत्नसन्निभम् ॥ रक्षार्थं चैव बन्नामि चण्डीपूजारूयकर्मणि ॥ अग्नआयाहि॰ मन्त्रं जपेत् ॥ ॐ भू॰पश्चिम द्वारे भीमप्रीतये अयमश्वत्थतोरणचन्दनाक्षतपुष्पपूपदीपघृताकक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिनेमः भीमः प्रीयतां भीमः सु॰ ॥ तत्रेव दक्षिण वामशाखयोर्ध्वजपताका उच्छ्यामि स्थापयामि नमः । श्वेतवर्णपताकां च ध्वजं पीतमयं तथा ॥ वरुणाय जलेशाय स्थापयामि शुभाय मे।। बलविज्ञायः ।। इसं मे वह्रण ।। वह्रणाय श्वेतवर्णा पताकां पीतमयध्वजं च ॰ वह्रणः प्रीयताम् ॥ वह्रणः सुप्रीतो भवत् ॥ तत्र देवताः संपूज्य ॥ पश्चिमद्वारे ॥ कौबेरि श्वेतश्वाहृहे पाशहस्ते एह्मेहि इमं गन्धाक्षतपुष्पपूपदीपसहितमिमं क्षीगन्नबिलं गृह्म २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ तत्र द्वारदक्षिणांसे ॥ ॐ मुसलं करवालं च खेटकं द्विती हलम् ॥ करैश्चतुर्भिवीराही ध्येया कालघनच्छिवः ॥ हीं हूं वाराहि एह्मेहि इमं क्षीरात्रबलिं गृह्म २ मम ईिप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ पूर्ववत्कलशमावाह्म स्थापयेत् ॥ द्वारस्थितकलशद्वये रेवाये नमः ॥ ताप्ये नमः ॥ ततः सामवेदिनी ऋत्विजी शान्तिसृक्तजपार्थत्वेन युवामहं वृणे ॥ सामवेदस्त

बु.ज्ज्यो.जे. **धर्मस्कं**ध ८ **119२**३॥

पिङ्गाक्षो जागतः शक्रदैवतः ॥ भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥ गन्धाद्यपचारैः पूजयेत् ॥ तत्र अञ्जनं दिग्गज मावाद्य ॥ चापासनो गृध्रमयः सुनीलः प्रत्यङ्मुखः काश्यपजः प्रतीच्याम् ॥ समूलचापेषुवरपदश्च सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च सौरी ॥ ॐ शं नो देवी॰ मन्त्रेण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र शनैश्चरेहागच्छेत्यावाद्य पूजयेत् ॥ शनैश्चराय अधि देवताप्रत्यिदेवतासहित क्षी॰ ॥ नमः शनैश्चरः प्रीयताम् शनैः॰ सु॰ ॥ वरुणो धवलो विष्णुः पुरुषो निर्मलो नभः ॥ पाशहस्तो महाभीमस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ॐ तत्त्वा यामीति मन्त्रेण० ॥ वरूण एहोहि० ॥ खटूवाङ्गं मुसलं चैव करवालं च पात्रकम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं भीमं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ कुमार दिगम्बर एह्मोहि॰ ॥ हेमवर्णधरं देवं तथा महिषवाहनम् ॥ वाराहीशक्तिसंयुक्त वन्दे उन्मत्तभैरवम् ॥ उन्मत्तभैरव एह्ये० ॥ ततश्चिच्छत्तयादिदेवताः संपूज्य ॥ तद्यथा ॥ ॐ चिच्छत्तयै० ॥ ॐ मायाशत्तयै० ॥ द्वारपार्श्वे ॥ ॐ शङ्क्वनिधये० ॥ द्वारपुरतः ॥ ॐ पद्मनिधये० ॥ ऊर्ध्वे ॥ ॐ श्रियै० ॥ अधोदेहल्यां वास्तुपुरुषाय० ॥ इति देवताः संपूज्याभिवन्द्य ॥ इति पश्चिमद्वारे बलिदानम् ॥ अथ वायन्ये ॥ हं हरितमृगवाहिनि अङ्कशहस्ते एह्यहि॰ वायवे श्वेतां ध्वजं पीतमयं तथा ॥ स्थापयाम्यनु चक्षु द्रप्राणदाय सदैव हि ॥ ॐ गोमदृषुणा॰ ॥ आनो प्रीत्यर्थे श्वेतां पताकां पीतं ध्वजं स्थापयामि ॥ वायवे अयं गन्धाद्यपचारसहितसघृतक्षीरान्नसहितमाषभक्तबिर्नमः प्रीयतां वायुः सु॰ ॥ तत्र पुष्पदन्तदिग्गजं लक्ष्मीसहितमावाद्य ॥ ध्वजासनो जैमिनिगोत्रजातोऽन्तर्वेद्यधीशोऽथ विचित्रवर्णः ॥ याम्ये गतो वायुदिशीन्द्रखङ्गश्चर्मे सुरा चाष्ट्रशतोऽन्धनेकः ॥ केतुं कृण्वन्निति मन्त्रेण सूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिससुद्भव जैमि निसगोत्र केतो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एहे। इमं नमः केतुः प्रीयताम् केतुः सु ॥ वायुमाकाशगं चैव पवनं वेगवद्गतिम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृद्यताम् ॥ ॐ तव वायवृतस्पते॰ वायवे इमं॰ नमः वायुः प्रीयतां वायुः सु॰ ॥ कुमार दिगम्बर प्रहोहि॰ कपालभैरव एहोहि॰ इमं ग॰ नमः ॥ ततः उत्तरद्वारे आचम्य प्राणा॰ सुप्रभं तोरणं प्राक्षमुत्तरे च शिश

डपा.स्त. इ

प्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव बधामि चण्डीपूजारूयकर्मणि ॥ ॐ शन्नो देवीति मन्त्रेण पूजयेत् ॥ ॐ भूः सुप्रभतोरणप्रीतये अयं प्राक्ष तोरणचन्दनाक्षतपुष्पपूपदीपघृताक्तक्षीरात्रयुक्तमाषभक्तविकिनमः ॥ सुदृढः प्रीयतां सु॰ प्री॰ ॥ तत्रेव दक्षिणवामशाख्यो ध्वजपाताकामुच्छ्यामि स्थापयामि ॥ श्वेतार्णवपताकां च पद्याभवध्वजं तथा ॥ सोमाय स्थापयाम्येव धनधान्यसमृद्ध्ये ॥ ॐ वय सोम ॥ अभि गोत्राणि० मन्त्रद्वयेन कुबेरप्रीत्यर्थे हरितध्वजं हरितपताकां च० कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ॐ कुबे राय सार्वभौमदिग्गजसहिताय अयं गन्धायुपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबिर्नमः कुबेरः प्रीयतां कुबेर सुप्रीतो भव ॥ उत्तरद्वारपार्श्वे यं यक्षिणि सिंहवाहिनि गदाहस्ते एह्येहि आगच्छागच्छ गन्धपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबिंछ गृह्व २ मम ईिप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ तत्र द्वारदक्षिणांसे ॥ अक्षस्रजं बीजपूरं कपालं पङ्कजं करैः ॥ वहन्तीं हेमसङ्काशां महालक्ष्मीं समी समाम् ॥ ॐ ह्वीं क्ष्म्रीं नारसिंहि एह्योहि इमं ग॰ सहितं क्षीरात्रबलिं गृह्ण २ मुम ईिप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ ह्वीं खेंप्रे चामुण्डे एह्येहि इमं स्वाहा ॥ पूर्ववत्कलशाराधनं स्थापयेत् ॥ उत्तरद्वारस्थितकलशद्वये वाण्यै॰ वेण्यै॰ ॥ कर्मनिष्ठौ तपोयुक्तौ ब्राह्मणौ वेद पारगौ ॥ सरस्वतीसुक्तपाठार्थं द्वारे भवत ऋत्विजौ ॥ शत्रौ देवीरिति मन्त्रेण अथर्ववेदऋत्विजौ उत्तरद्वारे शान्तिसुक्तजपार्थत्वेन युवामहं वृणे ॥ बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो इद्देवतः ॥ वैशम्पायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥ प्रत्येकं पूजनं कृत्वा सार्व भौमदिग्गज एहोहि ॥ सौम्येत्यदीर्घे चतुरस्रपीठे रथेऽङ्गिराः सौम्यमुखः सुपीतः ॥ दण्डाक्षमालाम्बुजपात्रहस्तः सिन्ध्वाख्य देशो वरदः सुजीवः ॥ पुष्पाक्षतेः बृहस्पते गृतसमदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुण् बृहस्पत्यावाहने वि० ॥ ॐ बृहस्पते अति० ॐ भू० सिंधुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ इमं गन्धा० नमः ॥ शूलायुधं चण्डमत्तं शक्ति चैव च पात्रकम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शान्तं कुमारं च दिगम्बरम् ॥ शान्त कुमार दिगम्बर एह्मोहि॰ ॥ चामुण्डाशक्ति संयुक्तं प्रेतवाइनभूषितम् ॥ रक्तवर्णघरं देवं वन्दे भीषणभैरवम् ॥ भीषणभैरव एह्यहि॰ ॥ ततश्चिच्छक्त्यादिदेवताः संपूज्य ॥ तद्यथा ॥ ॐ

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१२४॥

क्त्ये॰ ॥ ॐ मायाशक्त्ये॰ द्वारपार्श्वे ॥ ॐ शङ्क्वनिधये नमः द्वारपुरतः ॥ ॐ पद्मनिधये॰ उद्ध्वे ॥ ॐ द्वारिश्रये॰ अधः ॥ वास्तुपुरुषाय ॰ इति उत्तरद्वारे ॥ अथैशान्ये ॥ कङ्कालि वृषभारूढे ग्लूलहरूते एहोहि ॰ ॥ ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां चैव वै तथा ॥ स्थापयामि महेशाय वृषाह्रढाय ग्लूलिने ॥ ॐ आवो राजानम् ॰ ॥ ॐ तमीशानं ॰ ॥ ईशानप्रीत्यर्थे श्वेतपताकां स्थापयामि ॥ ईशानाय अयं गन्धाद्यपचारसहितसघृतक्षीरान्नसहितः बलिनेमः ईशानः प्रीयताम् ॥ ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ तत्र सुत्रतीकं दिग्गजं लक्ष्मीगजमावाह्य ॥ उदङ्गुखो मागधजो हरिस्थश्चात्रेयगोत्रः शरमण्डलस्थः ॥ सखङ्ग चर्मोऽपि गदाधरो ज्ञस्त्वीशानभागे वरदः सुपीतः ॥ पुष्पाक्षतैः उद्बुध्यस्व सौम्यो बुधिस्चष्टुप् बुधावाहने विनियोगः ॥ ॐ उद बुध्यस्व ।। ॐ भूर्भुवः स्वः मगचदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुध इहागच्छ इह तिष्ठ ईशान एह्योहि॰ ॥ ज्ञूलं डमफ्गं चैव शङ्कं चक्रं गदाधरम् ॥ खङ्गपात्रं च खट्वांगपाशाङ्कशधरं तथा दिगम्बरं कुमारं च सिंहवाहनभूषितम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनमष्टिश्वर्य सुखप्रदम् ॥ दिगम्बर कुमार एह्मोहि० ॥ घारयन्तं मदोन्मत्तं वडवानलभैरवम् ॥ चिण्डकाशिक्तसंयुक्तं वन्दे संहारभैरवम् ॥ ॐ संहारभैरव एहोहि॰ ॥ ततःईशानपूर्वमध्ये सं सर्वराज्यचक्रहस्त एहोहि ॥ भूमे त्वं सर्वलोकानामाधारशिरसि प्रदे ॥ पञ्चवर्ण पताकां च स्थापयामि ध्वजं तथा ॥ ॐ अमीषां चित्तं ।। ॐ मही द्यौः भूमिप्रीत्यर्थे ध्वजं पताकां स्थापयामि ॥ विशाल वसुधा भूमी बत्रगर्भा रियपदा !! विष्णुप्रिये जगद्धंसवाहने अक्षसूत्रकमण्डलुहस्ते एह्योहि० ॥ स्थापयाम्यन्तरिक्षाय पताकां सार्ववाणा काम् ॥ कनकाकारहृपाय निराकाराय च ध्वजम् ॥ ब्रह्मणे सार्ववर्णिकां कनकहृपां ध्वजं स्थापयामि ब्रह्मा प्रीयतां ब्रह्मन् सुप्रीतो भव ॥ ततो मण्डपमध्यदेशे ॥ आदित्या वसवो रुद्दा वषटूकारः प्रजापितः ॥ ध्वजं चित्रपताकां च स्थापयामि हि भो सुराः ॥ आदित्यादिदेवताप्रीत्यर्थे ध्वजं पताकां स्थापयामि ॥ आदित्यादिदेवताभ्यः अयं गन्धाक्षतपुष्पपूर्वपसघृतक्षीरात्रसहितमाष भक्तबिलनमः ॥ आदित्यादिदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ आदित्याद्या देवताः सुप्रसन्ना वरदा भवन्तु ॥ प्रार्थना ॥ यज्ञभागभुजो देवाः

उपा.स्त. ६

सर्वकर्मफलप्रदाः ॥ यज्ञं पातुमिहागत्य नमस्तेभ्यो सयाऽद्य वै ॥ इति श्रीडामरादितन्त्रसारे भगवतीमहोत्सवे षोडशस्तम्भप्रतिष्ठा तोरणप्रतिष्ठा ध्वजपताकाप्रतिष्ठा चतुर्दिश्च द्वारपालकसहितकलशप्रतिष्ठा अत्र प्रतिष्ठितदेवतापूजा बलिविधानादिविधिनीम सप्तमो उवसरः ॥ ७ ॥ अथातः कुण्डं सन्यं प्रदक्षिणीकृत्य कुण्डस्य पश्चिमगागे उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य समयस्मरणं विधाय मया सह त्राह्मणेः कृतानां कारितानां च असुकचण्डीजपानां संपूर्णतासिद्धचर्थ जपदशांशेन उक्तहविद्वन्येहींममहं करिष्ये ॥ तदङ्गभूतमादाविस्मन्कृते विध्युक्तमार्गेण परिसमूहनादिसंस्कारान्करिष्ये इति संकल्प्य ॥ तत आचार्यो मूलमन्त्रेण कुण्डं वीक्ष्य ततः ॐ इति तोरणकुण्डभुवं त्रिभिद्भैंः परिमार्जयेत् ॥ गोमयेनोपलिप्य ॐ क्वीं चायुण्डाये विचे अस्त्राय फडित्यस्त्रमन्त्रेण गामयोदकं संप्रोक्ष्य !! ॐ ऐं चामुण्डायै विच्चे हृदयाय नम इति हृदयमन्त्रेण कुण्डे कुशमूलेन वा सुवमूलेन प्रागमा वोदगमा स्तिस्रो रेखाः कार्याः । तत्र प्रागगरेखासु मुकुन्दपुरन्दरावभ्यच्यं उदगगरेखासु ब्रह्मवैवस्वतेन्द्रनभ्यच्ये तैरेव दुर्भैः संताडच ॥ ॐ चामुण्डायै विच्चे कवचाय हमित्यनेन मन्त्रेण दक्षिणत आरभ्योदक्रंसस्थं प्रतिरेखायामनामिकाङ्कष्टेनोद्धृत्य पुरोभागे क्षिपेत्।। मूळेन सर्वानभ्युक्ष्य ॥ एवं पंचमसंस्काराः ॥ ततः मायाबीजेन कुण्डं गन्धादिना पूज्य इति षष्टः ॥ तत आवाहनादिसप्त सुद्राः प्रदर्शयेदिति सप्तमः ॥ अख्वेणावगुण्का इति कुण्डेऽष्टमसंस्कारः ॥ ततस्तन्मध्ये त्रिकोणषट्कोणवृत्तसाष्ट्रपत्रचतुरस्रयन्त्रं संलिखेत् ॥ तन्मध्ये सुवर्णस्य नाभिशकलं विधाय गन्धादिना संपूज्य तत्र कुण्डेऽष्ट संस्कारा मायाबीजेन कर्तन्याः॥ ॐ तदुक्तं—संस्कारैरष्टभिः कुण्डं संस्कृत्यागिन प्रतिष्ठयेत्॥ मायाबीजसमायोगैस्तत्कुर्यात्तत्र साधकः ॥ कुण्डमध्ये भ्रवं दर्भैः परिमा ज्योंपलेपयेत् ॥ प्रागवाः सुवमूलेन रेखास्तिस्रः समुद्धिखेत् ॥ पांशुमुब्हत्य रेखाणामभ्युक्षणमतः परम् ॥ कुण्डस्य पूजने षष्टः सप्तमः सप्तमुद्रया ॥ अस्त्रावगुण्ठनं कुण्डे संस्कारश्चाष्टमः स्मृत इति ॥ तत्र कुण्डस्थयन्त्रे योगपीठाख्यं विधाय तद्योगपीठं प्रोक्ष्य तोरणं पूज यित्वा ॥ तत्र वागीश्वरीमृतुस्नातां नीलेन्दीवरसुप्रभाम् ॥ वारेश्वरेण संयुक्तासुपचारैः प्रपूजयेत् ॥ सूर्यकान्तादिसंभूतं यद्वा श्रोत्रिय बृ.क्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१२५॥

गेहजम् ॥ आनीयारिन च पात्रेण कव्यादांशं पारित्यजेत् ॥ तत इति सूर्यकान्तोद्भवं श्रोत्रियागाराद्वा पात्रेण विद्वं समानीय कव्यादांशं परित्यज्य वहेः संस्कारो वीक्षणादिभिः कार्यः ॥ औदार्यचैवाग्निभ्यां भौमस्य श्रोत्रियागारादानीतस्य वहेरेक्यं स्मरित्रत्यनेन १ ॥ तद्यथा वामनाड्या प्राणपूरणसमं मायाबीजेन संहारमुद्रया तमश्चिमन्तः समाकृष्य भूमध्ये बिन्दुसंबन्धिनाऽभिना चैकीकृत्य उद्भवसुद्रया मायाबीजेन पिङ्गलया रेचयेत् ॥ ॐ हीं विह्नचैतन्याय नमः ॥ इत्यनेन मन्त्रेण बहिः स्थिते वाऽम्रो चैतन्यं जनयेत ॥ ततो मूलेनाभिमन्त्रय धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य अस्त्रमन्त्रेण संरक्ष्य कवचेनावगुण्ट्य गंधादिभिरभ्यच्ये कुण्डस्योपिर त्रिश्चीम्य भूमिस्थजानुकः देशिकः मूलमन्त्रपूर्वकमात्मसंमुखं विह्नं शिवबीजिधया देग्या योनौ विनिक्षिपेत् ॥ शतमङ्गलनामानं कुण्डे अग्नि संप्रतिष्ठापयेत्।।ततस्तत्साभिमत् कुण्डं नवसूत्रेण वेष्टयेदिति॥त्रिसूत्रीकरणमित्यन्ये ॥ अथाभिजननम् ॥ कुण्डमध्ये नाभेरुपिर यन्त्रं तद्वपरि प्रतिष्ठापयेत् ॥ पश्चाहेवस्य देव्याश्च आचमना दिकं दद्यात् ॥ ततः प्रज्वाळनं कृत्वा तत्र मन्त्रः ॥ ॐ चित्पिङ्गले हन२पच२ दह २ सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा ॥ इत्यनेन मन्त्रेण प्रज्वालिन्या मुद्रया प्रज्वालनम् ॥ ततः गर्भसंरक्षणार्थमिन्धनैराच्छाद्य ॥ तत उपस्थानं कृत्वा अर्गिन प्रज्विलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ॥ सुवर्णवर्णमनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इत्यनेन मन्त्रेणोपस्थानं वह्नेः कार्यम् ॥ ततो देशिकः स्वशरीरे विभावसीर्जिह्नां वक्ष्यमाणमन्त्रैर्विन्यसेत् ॥ न्यासस्थानान्याह ॥ लिङ्गपायुशिरोवऋष्राणनेत्रेषु सर्वतः इति॥ अथ मन्त्रप्रकारः ॥ विह्नराचीशसंयुक्ताः सादियान्ताः सबिन्दवः ॥ मन्त्रवर्णाः समुद्दिष्टा जिह्नानां सप्त देशिकः ॥ अस्यार्थः ॥ विह्नरकारः ईकारो यकारः अर्चीशः उकारः एतद्वर्णत्रयं प्रातिलोम्येन सप्तमु वर्णेषु संधितं कृत्वा बिन्दुना युक्तं योजयेत् ॥ अथ जिह्वाः पद्मरागादीत्यादिदेशिकाङ्गे समन्त्रो जिह्वान्यासः कर्तव्यः ॥ यथा च ॥ अथ यन्त्रस्थापनप्रकारमाह ॥ मध्ये षट्टस्विप कोणेषु जिह्वा ज्वाला ऋचो यजेत् ॥ केसरेषूक्तमार्गेण पूजयेदङ्गदेवताः ॥ दलेषु पूजयेनमूर्तीः शिक्तस्वस्तिकधारिणीः ॥ लोक पालांस्तथा दिक्षु पूजयेदुक्तलक्षणादिति जिह्वा सादिना यन्त्रस्थापनविचारणया कर्तव्या ॥ यन्त्रषड्दले ॥ ॐ ह्यूँ पद्मरागाये

डपा.स्त.

अ० १२

अग्निजिह्नाये नमो लिङ्गे १ ॥ ॐ इयुँ सुवर्णाये अग्निजि॰ पायो २॥ॐ श्रूँ भद्रलोहिताये अग्निजि॰ शिरिस ३ ॥ॐ इयूँ लोहि तायै अग्निजि॰ मुखे ४ ॥ ॐ ल्यूं श्वेतायै अग्निजि॰ त्राणे ५ ॥ ॐ ह्यूँ धूमिन्यै अग्निजि॰ नेत्रयोः ६ ॥ ॐ ज्यूँ कटालिन्ये अग्निजि॰ सर्वाङ्गन्यापके ७ ॥ षड्दलकर्णिकायां जिह्वाधिदेवताः संपूजयेत् ॥ अमत्यीपितृगन्धवयक्षनागपिशाचकाः ॥ राक्षसाः सप्तजिह्वानामीरिता अधिदेवताः ॥ इति तत्र षड्दलकेसरेष्वप्यङ्गदेवताः पूजयेत्सहस्रशीर्षेत्यादिषडंगः ॥ यथा ॥ ॐ सहस्रार्चि स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै० ३ ॥ ॐ धूमन्यापिने ॐ सप्तजिह्वाय मेत्रत्र ०६॥ॐधनुर्धरायास्त्राय ०६॥इत्यित्रष्डङ्गं न्यसेत् । अग्निशरीरे तन्नामभिःकुर्यात् ॥ ततःवह्नेरष्टौ सूर्तयोदेशिकः स्वशरीरे प्राद्क्षिण्येन भागद्वये न्यसेजातवेद्सेऽग्रय इत्यादि ॥ यथा ॥ ॐ अग्रये जातवेद्से जिह्वाय नमो दक्षिणांगे ॥ ॐ अग्नये हन्यवाहनाय नमः कटचाम् ॥ ॐ अग्नये अश्वोदराय ॐ अन्नये विश्वमुखाय नमः कीमारतेजसे नमी वामकटचाम् ॥ शिखायाम् ॥ इत्यष्टमूर्तिन्यासः ॥ अथाष्ट्रलाग्रेष्विन्द्रादीन् ॥ ॐ वह्नये तेजोऽधिपतये सुराधिपतये वज्रहस्ताय नमः प्रेताधिपतये दण्डहस्ताय ।। नैर्ऋतये रक्षोऽधिपतये खङ्गहस्ताय ।। ॐ वरुणाय पाशहस्ताय ।। ॐ वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय ।। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये गदाहस्ताय ।। ॐ ईशानाय विद्य धिपतये त्रिशुलहस्ताय इति ॥ अथाग्नि ध्यायेत् ॥ इष्टं शक्ति स्वस्तिकाभीतिमुच्चैदींचैंदींभिर्घारयन्तं जपाभम् ॥ पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्विह्नं बद्धमौिलं जटाभिः ॥ १ ॥ जिह्ना सप्तैव देहे वदनयुगयुतं नेत्रषट्कं त्रिनासं शृङ्गेर्युक्तेश्रवार्भिस्तस्भि रिह वृतं मेखलाभिम्निपादम् ॥ दक्षे हस्ते चतुर्भिस्तिसृभिरपि भुजैर्वामनं मेषवाहं शक्त्याऽग्नि सुक्सुवांश्च व्यजनमु द्धतं तोमरं

बु.ज्ज्यो.र्ण. अर्थस्कंध ८ ॥१२६॥

चान्यपात्रम् ॥ २ ॥ वामे पार्श्वे स्वघाढचं तद्वु च सहितं स्वाह्या दक्षपार्श्वे दीप्ताभिश्वोध्वेगाभिार्वेलसितममलं संस्तुवंस्तिच्छ खाभिः ॥ विद्गाक्षं स्वर्णवर्णं मणिमुकुटजटाभूषणाढचं सुदीप्तं विप्राःप्रत्यक्शिरस्कं स्मरत यजत भो हन्यवाहं सुसिद्धचे ॥ ३ ॥ इत्यरिन ध्यात्वा वक्ष्यमाणमन्त्रेणारिन गन्धादिना सम्पूज्य ॥ ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि परिस्तीर्य मेखलात्रयं च ऊर्ध्वाधःऋमेण ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् गन्धादिना आवरणदेवतापूजनं प्रतिदिनं न कृतं चेत्तर्हि अग्निस्थापनानन्तरं कर्तव्यं पूर्ववत् देवताभिध्यानं वर्तव्यम् ॥ तत्र वैकल्पिकावधारणं पूर्वेण ब्रह्मणो गमनमग्नेकत्तरतः पश्चाद्वा पात्रासादनं द्वे पवित्रे मृन्मयी आज्यस्थाली ताष्ट्रमयी चरूस्थाली पालाश्यः समिधः आज्यभागो वरो दक्षिणा तिलाज्यादि इविर्द्रव्यमेतान्वेकल्पिकानपदार्थानहं करिष्य इति संकल्पयेत अथ पात्रासादनमारभेत ॥ कुण्डं नवसूत्रेण संवेष्ट्य ब्रह्माणं दक्षिणे उपवेश्य संप्रदायाद्वस्वरणमिति केचित् कुण्डाद्वत्यागे प्रणीतासने कुशानास्तीर्य तत्र प्रणीतामुदकपूर्णी निद्ध्यात् ॥ तदुत्तरतः पश्चिमत आरभ्य पात्राणि ऽघोषुखानि पश्चादुत्तानानि यावत्प्राचीं स्थापयेत् ॥ प्रणीतापात्रात्पूर्वतः पात्राण्यासादयेत् ॥ ईशानादिप्रागत्रेरुद्गत्रेर्वा कुशाना स्तीर्य पिवत्रच्छेदनार्थे दर्भास्त्रयः पिवते द्वे प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली चह्नस्थाली समार्गकुशाः उपयमनकुशाः शतदर्भसंख्याकं कि कुरापूलकं सिमघः पालाश्यः सुक्सुवी आज्यं गव्यं पूर्णपात्रं पिवत्रकरणं ततः प्रोक्षणीसंस्कारः प्रोक्षण्या पात्रान्तरेण प्रणीतोदक मादाय वक्ष्यमाणमन्त्रेण सप्तद्वीपेश्वरीं ध्यात्वेति ॥ ततः देवतां मनसि ध्यायन् तं कुशपूलकं गृहीत्वा वारुणं बीजमुचरेत्॥ प्रोक्षणीपात्रे निक्षिपेत ॥ तेन दर्भपूलकेन प्रोक्षणीपात्रवारिणा हृन्यन्त्रेण क्रमात्पात्रगणं प्रोक्षयेत् ॥ तदुक्तम् आगम्संयहे अथवा स्वगृद्योक्तविधानेन पात्रासादनं कर्तःयं देवताभिधानं च ॥ तत्र प्रजापति इन्द्रमिन सोममेता आघारावाज्यभागौ आज्येन

उपा.स्त. १ दुर्गा.

अ० १२६

रविं चन्द्रं भीमं बुधं ग्रुकं शुक्रं शिनं राहुं केतुं कृदं गौरीं स्कन्दं विष्णुं ब्रह्माणियन्द्रं यमं कालं चित्रगुप्तमपः भूमिं नारायण मिन्द्राणीं वरुणं संपे ब्रह्माणमननतं वासुकिं तक्षकं कर्कोटकं पद्मं महापद्मं शङ्खपालं कम्बलं पुलकं गणपति दुर्गी वायुमाकाश मिश्वनौ देवो एता अर्कोदिसिमधादिभिस्तिलाज्येर्वा ॥ अथ मण्डूकाद्याः ॥ मण्डूकं कालं छदं कूममाधारशिक्तमनन्तं शेवं पृथ्वीं पद्मनालं धर्मं ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यमधर्ममज्ञानमवैराग्यमनैश्वर्यं सं सत्त्वं रं रजसं तं तमसं षोडशकलात्मकं रविमण्डलं द्वादशक्ला त्मकं चन्द्रमण्डलं दशकलात्मकं वह्निमण्डलमात्मानमन्तरात्मानं एरमात्मानं ज्ञानात्मानं मायातत्त्वं कलातत्त्वं विद्यातत्त्वं परम तत्त्वं ग्रुकं परमग्रुकं परमेष्टिग्रकं गणेशं दुर्गा सरस्वतीं क्षेत्रपालं वेदिकां रत्नसिंहासनं दिन्यसिंहासनं कमलासनं योगपीठासनं रत्नमण्डपं वास्तुपुरुषमेताः आज्येन ॥ अथ मुख्यावरणदेवताः ॥ ॐकारपीठं पूर्णपीठं कामपीठं ॥ ॐकारपीठोपनाथम् ॥ ॐकार श्वराम्बापादुकाभ्याम् उद्घाणेश्वरपीठमुङ्घाणेश्वरोपनाथमुङ्घाणाम्बापादुकाभ्यां मां मातृपीठं मातृकेश्वरोपनाथां मातृकेश्वरोपनाथाम्बापादु काभ्यां जां जालन्धरपीठं जालन्धरेश्वरोपनाथं जालाम्बापादुकाभ्यां कोल्हागिरिपीठं कोल्हेश्वरोपनाथं काभ्यां पुं पूर्णगिरिपीठं पूर्णगिरीश्वरोपनाथं पूर्णाम्बापादुकाभ्यां सौहारपीठं सौहारपीठोपनाथं सौहाराम्बापादुकाभ्यां कोल्हापुरेश्वर्यम्बापादुकाभ्यां कामगिरिपीठं कामगिर्युपनाथं कोल्हापुरपीठोपनाथ गणेशं दुर्गी सरस्वतीं क्षेत्रपालं पादुकाभ्यां बदुकत्रयं जं जयां वि विजयां जं जयन्तीम् अं अपराजिताम् अग्निमुखवेतालं प्रेत वाहनवेतालं जं ज्वालामुखवेतालं धूं धूम्राक्षवेतालं इंसवाहिनीं ब्राह्मीं स्तम्भोद्भवां नारसिंहीं गजवाहिनीमैन्ट्रीं गणनाथपरिवार चण्डसुण्डमण्डितां सिंहाह्रदां चासुण्डां हेमगर्भाये न नन्दाये सुरक्ताये र रक्तदन्तिकां नीलाये शां शाकंभरीं सर्वह्रपार्ति दंष्ट्राचितमुखाये नीलपात्रशिरोधरां भीमाये तेजोमण्डलदुर्धर्षाये वरदाये श्रामर्थे यक्षिणीं कालिकां सुरश्रेष्ठा प्रीति विश्वश्वरीम् अष्टादशभ्रजां मनोभवम् अणिमां महिमां लिघमां गरिमां प्राप्ति

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१२७॥

विशितां भैरवाष्टकम् असिताङ्गभैरवं रुरुभै॰ चण्डभै॰ क्रोधभै॰ उन्मत्तभै॰ कपालभैरवं भीषणभै॰ संहारभैरवम् इन्द्राद्यष्टलोक पालान इन्द्रमि यमं निर्ऋति वर्षणं वाशुं सोममीशानं ततः षड्देवताः गुं गुरुं पं परमगुरुं पं परमेष्टिगुरुं गं गणेशं हं हिर्दे हरं ततस्तिसः महालक्ष्मीं महाकालीं महासरस्वतीं ततः आवाहनं सिंहं महिषं गौरीरुद्रं लक्ष्मीहषीकेशं स्वराविरश्चि कालीरुद्रं सिंहं मृत्युं विजयां गणेशं महिषं त्रिक्षिवेद्भैरवं ततः विष्णुमायाद्याश्चतस्रः भुवं विष्णुमायां चेतनां बुद्धं निद्रां क्षुधां छायां शक्ति वृष्णां कान्ति जाति लजां शान्ति श्रद्धां क्रान्ति लक्ष्मीं धृति वृत्ति स्मृति दयां तृष्टि पुष्टि मातरं श्रान्मिमेताः देवता एकैकाभि अरुतिलाज्याद्वतिभिः शेषेणायिं स्विष्टकृतम् ॥ अयि वायुं सूर्यमयीवरुणौ २ अयि वरुणं मरुतः स्वर्कान वरुणं प्रजापतिमेताः देवताः आज्येन अस्मिन्कर्मण्यहं यक्ष्ये ॥ ततः ब्रह्मवरणादिपर्यक्षणान्तं कर्म कृत्वा ततः गर्भाघानादिसंस्कारान् कुर्यात् ॥ मूलेन प्रणवेन वा गर्भाधानं संपद्यतां स्वाहा ॥ सूलेन पुंसवनं सं० सूलेन सीमन्तोन्नयनं० जातकर्म० ततः शतमङ्गलनामासि इताशनेति नाम कृत्वा नामकर्भ॰ निष्क्रमणं सं॰ अन्नप्राशनादिविवाहान्तदशकर्माणि च आघारावाज्यभागी जुहुयात् ॥ ब्रह्मणाऽन्वारब्धः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये॰ ॥ॐइन्द्राय॰ इदिमन्द्राय न मम ॥ॐ अव्यये॰इदमव्यये॰॥ॐसोमाय॰इदं सोमाय॰॥ततः सप्त जिह्नादिमूर्तिभ्यस्तन्मत्रेरेकैकामाज्याहुति हुत्वा तद्यथा ॥ ॐ स्ट्यूं पद्मरागाये अग्निजिह्नाये स्वाहा इदं पद्मरागाये न मम ॥ ॐस्ट्यूं सुवर्णाये अग्निजिह्वाये स्वाहा इदं ।।ॐ१र्यु भद्रलोहिताये अग्निजिह्वाये स्वाहा इदं भद्रलोहिताये॥ॐब्यूं लोहिताये अग्निजिह्वाये ।।। इदं लोहिताये अमिजिह्नाये॰ रुयूं श्वेताये अमिजिह्नाये॰ इदं श्वेताये अ॰ ॥ ॐ व्यूं धूमिन्ये अमिजिह्नाये॰ इदं धूमिन्ये अ॰ ॥ ॐ ज्यूं करालिन्ये अ०॥ इदं करालिन्य अ०॥ ततः अमयुपितृगन्धर्वयक्षनागिपशाचकाः॥ राक्षसाः सप्तजिह्वानामीरिता अधि देवता इति ॥ चतुर्ग्रहीतं गृहीत्वा वैश्वानर् जातवेद ॰ इडावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साध्य २ स्वाहा गणेशमन्त्रेण गणपतये स्वाहा ततः पूर्वोक्तसर्वन्यासांश्र कृत्वा वह्नौ पीठपूजां कृत्वा देवीमावाह्यावाहनादिमुद्धाः प्रदर्श्य षडङ्गं कृत्वा षोडशोपचारैः संपूज्य

उपा.स्त. ३ हुर्गा. अ० १२८

शतमेकादशाधिकमाज्याद्वतीर्द्वत्वा नवग्रहेभ्यो लोकपालेभ्यस्तत्तनमन्त्रैः समिदाज्यचरून् द्वत्वा पायसतिलपलाशपुष्प सर्षपपूर्गीफललाजादूर्वाङ्करयविब्वफलरक्तचन्द्रनगुग्गुलद्रव्याणि तिलिमश्रपायसमेव वा कवचार्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्चोकं हुत्वा कृतस्य जपस्य दशांशेन प्रतिश्चोकं सप्तशतीमन्त्रेणोक्तद्रुग्याणि तिलपायसं वा जुहुयात् ॥ अध्यायसमाप्तौः उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलेहीमः यद्वा नमो देव्या इत्येतेन नवाणैन वा जपदशांशहोमः एवं प्रधानहोमं कृत्वा ततः नामिभः स्रवेणाज्यं पायसं जुहुयात् ॥ यथा ॥ ॐ कादम्बर्यें ॰ उल्काये ॰ कराल्ये ॰ रक्ताये ॰ श्वेतकोबेरें ॰ हरिताये ॰ यक्षिण्ये ॰ कङ्काल्ये ॰ सुरश्रेष्ठाये ॰ सर्पराइयै॰ ब्राह्मयै॰ माहेश्वर्यै॰ कीमार्यै॰ वैष्णव्यै॰ वाराह्मे॰ ऐन्द्री॰ नारसिंह्मे॰ चामुण्डायै॰ धात्रे॰ पद्मनिधये॰ द्वारश्रिये॰ वास्तुपुरुषाय॰ ऐरावताय॰ पुण्डरीकाय॰ वानाय॰ कुमुदाय॰ अञ्जनाय॰ पुष्पदन्ताय॰ माय॰ सुप्रतीकाय॰ दमनकाय॰ पुण्डरीकाय॰ गुग्गुलाय॰ कुरण्टकाय॰ ऋग्वेदाय॰ यर्जेंदाय॰ सामवेदाय॰ अथर्ववेदाय॰। अथ नवत्रहाः ॥ आदित्याय० सोमाय० भौमाय० बुधाय० बृहस्पतये० शुकाय० शनैश्वराय० राहवे० केतवे० रुद्राय० गीर्ये० स्कन्दाय॰ विष्णवे॰ ब्रह्मणे॰ इन्द्राय॰ यमाय॰ कालाय॰ चित्रगुप्ताय॰ अम्रये॰ अद्भचः स्वाहा॰ भूम्ये॰ नारायणाय॰ इन्द्राय॰ इन्द्राण्ये॰ वरुणाय॰ सर्पाय॰ ब्रह्मणे॰ अनन्ताय॰ वासुकये॰ तक्षकाय॰ कर्कोटकाय॰ पद्माय॰ सहापद्माय॰ शङ्कपालाय॰ कम्बलाय॰ कुलिकाय॰ गणपतये॰ दुर्गाय॰ वायवे॰ आकाशाय॰ अश्विभ्यां देवाभ्यां स्वाहा॰ ॥ अथ मण्डूकाद्याः ॥ ॐ मण्डू काय॰ कालाग्निरुद्राय॰ कूर्माय॰ आधारशक्तये॰ अनन्ताय॰ शेषाय॰ पृथिन्यै॰ पद्माय॰ नालाय॰ धर्माय॰ ज्ञानाय॰ वैराग्याय॰ ऐश्वर्याय॰ अधर्माय॰ अज्ञानाय॰ अवैराग्याय॰ अनैश्वर्याय॰ सं सत्त्वाय॰ रं रजसे॰ तं तमसे॰ षोडशकलात्मने रविमण्ड लाय॰ द्वादशकलात्मने चन्द्रमण्डलाय॰ दशकलात्मने बह्मिण्डलाय॰ आत्मने॰ अन्तरात्मने॰ परमात्मने॰ ज्ञानात्मने॰ तत्त्वाय॰ कलातत्त्वाय॰ विद्यातत्त्वाय॰ परतत्त्वाय॰ गुरवे॰ परमगुरवे॰ परमेष्टिगुरवे॰

इ.ज्ज्बो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१२८॥

पालाय॰ वेदिकायै॰ रत्नसिंहासमाय॰ दिञ्यसिंहासनाय॰ कमलासनाय॰ योगपीठासनाय॰ रत्नमण्डपाय॰ अथावरणदेवताः ॥ ॐ कारपीठाय॰ पूर्णपीठाय॰ कामपीठाय॰ उडचाणपीठाय॰ स्वा॰ उडचाणेश्वरोपनाथाय॰ पादुकाभ्यां मातृपीठाय मातृपीठेश्वरोपनाथाय मातृकाम्बापादुकाभ्याम् ॥ ॐ जालन्धरपीठाय जालन्धरेश्वरोपना थाय जालन्धरेश्वरोपनाथाय कोल्हापुरपीठाय सोहारपीठोपनाथाय सोहारपीठोपनाथाय मिठाय कोल्हागिरिभवपीठाय कोल्हागिरिभवपीठाय कोल्हागिरिभवपीठेश्वर्यम्बापा ॥ ॐ कोल्हागिरिभवपीठाय कोल्हागिरिभवपीठाय कोल्हागिरिभवपीठाय कोल्हागिरिभवपीठेश्वर्यम्बापा ॥ ॐ कामह्रपोपपीठाय कोल्हागिरिभवपीठेश्वर्यम्बापा ॥ कामह्मपोपपीठनाथाय॰ कामह्मपपीठेश्वर्यम्बापादुकाभ्यां ॥ गं गणेशाय॰ क्षं क्षेत्रपालाय॰ जं जयायै॰ विं विजयायै॰ जं जयन्त्यै॰ अं अपराजितायै॰ अं अग्निमुखबेतालाय॰ प्रं प्रेतवाहनवेतालाय॰ जं ज्वालामुखवे॰ धूम्राक्षवे॰ षे हंसवाहिन्ये॰ बं बाह्ये॰ विचे नमः स्वाहा ॥ ॐ हस्रें वृषभवाहिन्ये मं माहेश्वयें विचे नमः स्वाहा ॥ ॐ कौमार्यं विज्ञे नमः स्वाहा ॥ ॐ श्रीगरूडवाहिन्ये वं वैष्णव्ये वि॰ ॥ ॐ वि॰ ॥ ॐ ६म्रों स्तम्भोद्भवाय नारसिंही वि॰ ॥ ॐ लीं जगवाहिन्ये ऐ ऐन्ह्ये वि॰ ॥ खें तायै चण्डसुण्डमण्डितायै सिंहारूढायै चासुण्डायै वि० ८॥ ॐ हीं हैमगर्भायै नं नन्दायै वि० १॥ ॐ दन्तिकाय चामुण्डाये वि॰ २ ॥ ॐ हीं नीलाये शाकंभर्ये वि॰ ३ ॥ ॐ हीं सर्वरूपार्तिहारिण्ये दुं दुर्गाये विञ्च॰ ४ देष्ट्राञ्चितमुखाये नीलपात्रशिरोधराये भीं भीमाये वि॰ ५ ॥ ॐ हीं तेजोमण्डलदुर्धर्षाये वरदाये आं आमर्ये यं यक्षिण्यै॰ १ कं कालिकायै॰ २ सं मुरश्रेष्ठायै॰ ३ दं दशाननायै॰ ४ रं रत्यै॰५ प्रं प्रीत्यै॰ ६ वं विश्वेश्वर्यै॰ दशस्रजामनोभवायै० ८॥ अणिमायै० १ महिमायै० २ लिघमायै० ३ गरिमायै० ४ प्राप्त्यै० ५ प्राकाम्यै०

उपा.स्त. व दुर्गा.

विशितायै॰ ८॥ अं असिताङ्गभैरवाय॰ १ कं इरुभैरवाय॰ २ चं चण्डभैरवाय॰ ३ कं कोधभैरवाय॰ ४ उं उन्मत्तभैरवाय॰ ५ कं कपालभैरवाय॰ ६ मं भीषणभैरवाय॰ ७ सं संहारभैरवाय॰ ८॥ पुनस्तत्रैविमिन्द्राद्यष्टी लोकपालाः ॥ लं वज्रहस्ताय सुराधिपतये इन्द्राय॰ १ रं अथ्रये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपत्येऽयये॰ २ मं दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये यमाय॰ ३ क्षं खङ्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये निर्ऋतयै॰ ४ वं पाशहस्ताय जलाधिपतये वरुणाय॰ ५ यं अंकुशहस्ताय प्राणाधिपतये वायवे ६ सं गदाहस्ताय नक्षत्राधिपतये सोमाय॰ ७ हं त्रिशुलहस्ताय विद्याधिपतये ईशानाय॰ ८ गुं गुरु-यो॰ १ पं परमगुरु॰ २ पं परमेष्टिगुरु॰ ३ गं गणेशाय॰ ४ इं इरये॰ ५ हं इराय॰ ६ ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे नमः १ तद्दक्षिणभागे ॐ ऐं महाकाल्यै विच्चे॰ २ देग्या वामभागे ॥ ॐ ङ्वी महासरस्वत्यै विच्चे॰ ३ पुनस्तत्रैव देव्या दक्षिणभागे ॥ ॐ ६भ्रीं सिंहाय॰ १ ॐ हूं महिषाय २ ॐ हसीं हसीं गौरीकदाय॰ ३ देन्याः पृष्ठभागे लक्ष्मीसान्निध्ये ॥ ॐ श्रीलक्ष्मीहषीकेशाय० ४ देन्याः पृष्ठभागे ॐ ए स्वराविरञ्चये० ५ ॐ हूं कङ्कालाय० ॥ ॐ रुं रुद्राय॰ ॥ ॐ मं सिंहाय॰ ॥ ॐ मं मृत्यवे॰ ॥ ॐ वं विजयाय॰ ॥ ॐ गं गणेशाय॰ ॥ ॐ मं महिषाय॰ ॥ ॐ त्रिवेद भैरवाय ।। ॐ विष्णुमायायै ।। ॐ चेतनायै ।। ॐ बुद्धचै ।। ॐ निद्रायै ।। ॐ क्षुघायै ।। ॐ छायायै ।। ॐ शक्त्ये॰ ॥ ॐ तृष्णाये॰ ॥ ॐ क्षान्त्ये॰ ॥ ॐ जात्ये॰ ॥ ॐ लजाये ॥ ॐ शान्त्ये॰ ॥ ॐ श्रद्धाये॰ ॥ ॐ कान्त्ये॰ ॥ ॐ लक्ष्म्ये॰ ॥ ॐ धृत्ये॰ ॥ ॐस्मृत्ये॰ ॥ ॐदयाये॰ ॥ॐ तुष्ट्ये॰ ॥ ॐपुष्ट्ये॰ ॥ ॐमात्रे॰ ॥ॐ भ्रान्त्ये॰॥ॐ हस्रां हः॥ ॐ हस्रीं शिरसे॰ ॥ हस्रूं शिखायै॰ ॥ ॐ हस्रें कव॰ ॥ ॐ हस्रीं॰ नेत्रत्र॰ ॥ ॐ हस्रः अस्राय फट् ॥ ॐ नालाय॰ ॥ ॐ मूलाय॰ ॥ ॐपद्माय॰ ॥ ॐमहापद्माय॰ ॥ ॐआधारशक्तये॰ ॥ ॐकूर्माय॰ ॥ॐशेषाय॰ ॥ ॐ पृथि॰ये॰ ॥ सर्वाकारदलेषु सर्वाकाग्पत्रेषु सर्वाकारकेसरेषु ॥ केसरेभ्यः ॥ सर्वाकारकर्णिकायां कर्णिकाये ॥ ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनयोगपीठात्मने ॥ ॐ नमश्रण्डिकाये सायुधाये सपरिवाराये सवाहनाये साभरणाये श्रीचण्डिकाये नमः इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा जयजयशब्दान् कार

ब्र.क्क्यो.र्ज. धर्मस्कंघ ८ ११२९॥

येत् ॥ इत्यावरणदेवताहोमः ॥ ततः अग्निपूजनं ग्रहपूजनं पीठे वरूणदेवतापूजनं कृत्वा ॥ ततः स्विष्टकृद्धोमः —ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ ततश्च प्राजापत्यान्ता नवाहुतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये ॥ ॐ भ्रुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ॐह्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ॐत्वन्नो अ० स्वाहा इदमग्नीवरू० ॐस त्वन्नो अ०इदमग्नीवरू०॥अयाश्चा ग्नेऽस्य० स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥ ये ते शतं वरूण० स्वाहा इदं वरूणाय सवि० ॥ उदुत्तमं० स्वाहा इदं वरूणाय अदितये० ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये० ॥ तदनन्तरं दिक्पालनवग्रहविनायक।दिक्षेत्रपालादिभ्यो माषभक्तविल दत्त्वा ॥ आयतनस्य समन्तादिश्च विदिश्च च माषभक्तबिंह सदीपं दिक्पालेभ्यो दद्यात् ॥ त्रांतारिमिति मन्त्रेण इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय स्रशिककाय एव सदीपमाषभक्तबिलने मम ॥ भो इन्द्र दिशं रक्ष बिल भक्ष मम यजमानस्याभ्युद्यं कुरू ॥ आयुष्कर्ता शुभकर्ता शान्तिकर्ता तृष्टिदः पुष्टिदो भव ॥ पुष्पाक्षतजलं पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्॥त्वन्नो अग्ने॰ अग्नये॰साङ्गाय॰ भो अग्ने दिशं अग्निः ग्रीय ताम् अग्ने सुप्रीतो वरदो भव ॥ सुगं नु पन्थामिति मन्त्रेण यमाय॰ भो यम दिशं॰ यमः प्रीयतां यमः सु॰ ॥ असुन्वन्तमिति मन्त्रेण निर्ऋतये॰ सा॰ भो निर्ऋते दि॰ नैर्ऋतिः प्री॰ निर्ऋते सु॰ ॥ तत्त्वा यामीति मन्त्रेण वरूणाय॰ भो वरूण॰ वरूगः प्री॰ वह्रण सु॰ ॥ आ नो नियुद्धिरिति मन्त्रेण वायवे॰ भो वायो॰ वायुः प्रीयतां वायो सु॰ ॥ वय सोमेति मन्त्रेण॰सोमाय॰ भो सोम दिशं॰ सोमः प्री॰ सोम सु॰ ॥ तमीशानमिति मन्त्रेण ईशानाय सा॰ भो ईशान॰ ईशानः प्रीयतामीशान सु॰ अस्मे रुद्रा इति मन्त्रेण ब्रह्मणे॰ साङ्गाय॰ इमं सदीपं॰ भो ब्रह्मन् दिशं॰ ब्रह्मा प्रीयतां ब्र॰ सु॰ ॥ स्योना पृथि॰ इति मन्त्रेण अनन्ताय सा॰ भो अनन्त दिशं अनन्तः प्री अ० सु ।। आकृष्णेनेति मन्त्रेण अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहिताय सूर्याय इमं सदीपं मा० भो सूर्य दिशं । इमं देवा इति मन्त्रेण सोमाय० भो सोम० अग्निर्मूर्घा दिव इति मन्त्रेण भौमाय० भो भौम दि० उद्बुध्यस्वेति मन्त्रेण बुधाय० ॥ भो बुध दिशं बृहस्पते इति मन्त्रेण० बृहस्पतये० सा० भो बृहस्प० अन्नात्परिश्वत इति मन्त्रेण शुक्राय० भो शुक्र शन्नो देवीरिति

उपा.स्त. । दुर्गा.

मन्त्रेण शनैश्वराय भो शनै कया नश्चित्रेति मन्त्रेण राहवे केतुं कृण्वन्निति मन्त्रेण केतवे सा० त्र्यम्बक इति मन्त्रेण त्र्यम्ब काय॰ वास्तोष्पते इति मन्त्रेण वास्तोष्पतये साङ्गाय॰ योगेयोगे इति मन्त्रेण जयादियोगिनीभ्यः इमं सघृतं माषात्रपायसात्र क्षीरसिंदतिममं बिलं गृह्म २ मम ईप्सितं कुरु २ स्वाहा ॥ इति योगिनीभ्यः बिलं दत्त्वा ॥ ततः नवरात्रनिर्णयोक्तविधिना माषभक्तकूष्माण्डादिबलिं दत्त्वा पूजां समर्पयेत् ॥ ततो महाबलिं कुंकुमादिपुष्पयुतं सदीपं दक्षिणासहितं क्षेत्रपालाय द्यात् । ॐ न हि स्परोति मन्त्रेण॰ ॥ ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालाय भूतप्रेतिपशाचराक्षसशाकिनीडाकिनीवेतालादिपरिवारयताय इमं सदीपं माषात्रसहितं बिलं गृह्य २ सम ईिप्सितं कुरू २ स्वहा बिलं समर्पयामि ॥ भो भो क्षेत्रपाल मम यजमानस्य च आयु च्कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिद्र तुष्टिदो भव ॥ इमं बलि शुद्रेण दुर्बाह्मणेन वा चतुष्पथे क्षिपेत् ॥ ततः प्रक्षालितपाणिपादः आचम्य देशकालौ स्मृत्वा कृतस्य अमुकचण्डीहोमस्य संपूर्णतासिद्धचर्यं पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये ॥ निरुप्याज्यमधिश्रित्य सुक् मुवं संमृज्योद्वास्योत्प्रयावेक्ष्य चतुर्गृहीतं गृहीत्वा वस्त्रमुतं नारिकेलादिफलं चन्दनमालादिगुतं तदुर्पारे निधाय यजमानान्या रब्ध आचार्यो जहुयात् ॥ तत्र मन्त्रः सप्त ते अग्ने॰ पूर्णा द्वीति मन्त्रेण॰ धामं ते इत्येतैर्मूलेन च पूर्णाहुति हुत्वा ॥ इदम्मये वैश्वानराय तेभ्यः शतकतवे सप्तवतेऽमये महालक्ष्म्ये न मम ॥ ततो वसोधीरां हुत्वा वैदिकैर्मन्त्रैर्वा लक्ष्मीसूक्तेन वा चण्डीस्तोत्रैव संस्रवप्राशनमाचम्य पवित्रयोर्मार्जनान्ते अग्रो पवित्रप्रतिपत्तिः प्रणीताविमोकादिकं होमदशांशेन गोदुग्धेन जलेन वा तर्पयित्वा तदशांशेन मार्जयेत् ॥ ततः श्रेयः संपाद्याचार्यादीन्वस्राद्यैः संपूज्य आचार्याय शतं तद्धं तद्धंमष्टौ च गोमिथुनानि सुवर्णचतुष्टयं च द्यात् ॥ ब्रह्मणे निष्कद्वयं गोद्वयं च ऋत्विग्भ्यः प्रत्येकं निष्कत्रयं गो मिथुनं च दद्यात् ॥ इदं सहस्रचण्डचां तद्धं शतचण्ड्यां तद्धं नवचण्डचामशक्तौ सर्वभ्यः सुवर्णम् ॥ ततो दानान्याचार्यादिभ्यो Sन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् ॥ यथा विवं संपूज्य कपिलां गां सुवर्णादियुक्तां दद्यात ॥ आदित्यपुराणे ॥ कपिलां ये प्रयच्छिनत ब्र.ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१३०॥

चैलच्छन्नां स्वलंकृताम् ॥ स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां मुक्तालाङ्गूलभूषिताम् ॥ श्वेतवस्त्रपरिच्छन्नां चण्टास्वनरवैर्युताम् ॥ घण्टास्वनरवैः कोलाहलैः ॥ सहस्रं यो गवां दद्यातकपिलां चापि सुन्नत् ॥ सममेव पुरा प्राह ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥ याविन्त रोमकूपानि किप लाङ्गे वसन्ति हि ॥ तावतकोटिसहस्राणि वर्षाणां दिवि मोदते ॥ यमः ॥ हक्मशृङ्गीं रौप्यखुरां मुकालाङ्गूलभूषिताम् ॥ कांस्योपदो इनां धेनुं वस्त्रच्छन्नामलंकृताम् ॥ दानं दत्त्वा द्विजेन्द्राय स्वर्गलोके महीयते ॥ दशधेनुप्रदानेन तुल्येका किपला मता ॥ याज वल्क्यः ॥ हेमशृंगी शफे रौप्यैः सुशीला वस्त्रसंयुता ॥ सकांस्यपात्रा दातन्या क्षीरिणी गौः सदक्षिणा ॥ दाता च स्वर्गमात्रोति वतस रान् रोमसंमितान् ॥ कपिला चेत्तारयित भूयस्त्वासप्तमं कुलम् ॥ व्यासः ॥ रुकमशृङ्गी रोप्यखुरां वस्नकांस्योपदोहनाम् ॥ सवत्सां कपिलां दत्त्वा वंशान् सप्त समुद्धरेत् ॥ यावन्ति तस्या रोमाणि सवत्साय भवन्ति हि ॥ सुरभीलोकमासाद्य रमते तावतीः समाः ॥ कालोत्तरे ॥ घण्टाचामरसंयुक्ता किङ्किणीजालमण्डिता ॥ दिन्यवस्त्रसमायुक्ता हेमदर्पणभूषिता ॥ पयस्विनी सुशीला च तरुणी वत्सकान्विता ॥ कपिला च प्रदातन्या शिवस्याये विधानतः ॥ दानमन्त्रस्तु मत्स्यपुगणे ॥ कपिले सर्वभूतानां पुज नीया शिरोमणे ॥ तीर्थदेवमयी यस्मादतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ इति कपिलादानविधिः ॥ कूर्मपुराणे-दशसीवर्णिके शृंगे खुराः पञ्चपलान्विताः ॥ पञ्चाशत्पलिकं ताम्रं कांस्यं वै ताबदेव तु ॥ वस्त्रं तु त्रिगुणं घेन्वा दक्षिणा च चतुर्गुणा ॥ एतेरलंकृतां घेतुं घण्टाभरणभूषिताम् ॥ कपिलां विप्रमुख्याय दत्त्वा मोक्षमवाप्नुयात् ॥ द्विगुणोपस्करोपेता महती कपिला स्मृता ॥ दत्ता सा विप्र मुख्याय स्वर्गमोक्षफलपदा ॥ सप्तजनमकृतात्पापानमुच्यते दशसंयुतः ॥ यान्यानपार्थयते कामांस्तांस्तानपाप्रोति मानवः ॥ अनते स्वर्गापवर्गी च फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ इति महाकपिलादानविधिः ॥ ततः रत्नदानम् ॥ यथा रत्नेषु सर्वेषु सर्वे देवाः व्यवस्थिताः ॥ तथा शान्ति प्रयच्छन्तु रत्नदानेन मे सुराः ॥ इति नीलमणिदानम् ॥ अथ श्वेताश्वदानम् ॥ विप्रं संपूज्य ॥ अश्वं हेमपल्याण रोप्यकण्ठगजदम्भवजनेत्रताष्ट्रमयखुरक्षोमपुच्छसस्वर्णललाटपृहसुकक्षास्वायुध्यवेयसुवस्त्रयुतं धान्यरत्नोपरिस्थं

उपा.स्त. ६

मार्तण्डायुष्वेगाय काश्यपाय त्रिमूर्तये ॥ जगदीपाय सूर्याय त्रिवेदाय नमो नम इत्युक्त्वाऽमुकशर्मणे अमुकशाखाध्यायिन सूर्य लोकनिवासकामनया देवीप्रीतिकामनया वा श्वेताश्वं तुभ्यमहं संप्रददे न ममेत्युक्तवा दक्षिणकर्णे विप्रदस्ते दत्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥ महार्णवे समुत्पन्न उच्चेःश्रवसपुत्रक ॥ मया त्वं विष्रमुख्याय दत्तो हय मुखी भव ॥ इमं विष्र नमस्तुभ्यमश्वं ते प्रतिपादितम् ॥ प्रतिगृह्णीष्व विष्रेन्द्र मया दत्तं सुशोभनमिति ॥ ततः सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ ततः छत्रदानम् ॥ छत्रं वर्षातपत्राणं भूषणं सर्व वामनप्रीतये दत्तं ब्राह्मणाय सया सह ॥ इति छत्रदानम् ॥ अथ चामरदानम् ॥ शशाङ्करसङ्काशं डिण्डीरपाण्डुरम् ॥ प्रोत्सारयाशु दुरितं चामरं वछभेति च ॥ इति चामरम् ॥ अथ भूमिदानम् ॥ नमस्ते देवदेवश त्वमेव भगवान पतिः ॥ सर्वभूतचरा धात्री जगन्मातस्त्वमेव वा ॥ वायुरग्निश्च वसवः शकाद्याः सर्वदेवताः ॥ खेचरा भूचराः सर्वे त्वमेव परमेश्वरि ॥ एताभिर्मूर्तिभिः पाहि देवि संसारसागरात् ॥ भूप्रार्थना ॥ सर्वसस्याश्रया भूमिर्वराहेण सस्यफलदा अतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ इति भूमिदानम् ॥ अथ शय्यादानम् ॥ अज्ञून्यं शयनं ञ्जभम् ॥ प्राणिनां सुखदं नित्यमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ इति शय्यादानम् ॥ अथ धान्यदानम् ॥ तृप्ति मिह लोके परत्र च ॥ तस्मात्प्रदीयते धान्यमतः शानित प्रयच्छ मे ॥ सप्तधान्यानि द्यात् ॥ ततो ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः सर्वकलशोदकेन सामात्यं संसिच्य यजमानं देवस्य त्वेत्यादिभिवेदमन्त्रेः सुगस्त्वेत्यादि पौराणिश्वासिषिञ्चेयुः ॥ ततो यजमानो नवबहाणामुत्तरपूजां कृत्वा विसृज्याचार्यहस्ते दत्त्वा ॥ ततः देवीं संपूज्य बलि दत्त्वा ॥ तत्र क्षत्रियादिनाऽश्वमेषच्छागमिद्दषाणामन्यतरद्देयम् ॥ विष्रेण तु कूष्माण्डं बिल्विमक्षवश्च देयाः ॥ यथा ॥ देवीं द्रोणपुष्पिबल्वाञ्र दलजातिचम्पकैः इति ब्राह्मणान् संपूज्य ॥ उदङ्मुखः कर्ता पूर्वमुखं देवीमुखं वा बलि गन्धादिनाऽभ्यच्य ॥ पशुस्तवं बलि रूपेण मम भाग्यादवस्थितः ॥ प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥ चंडिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ॥ चामुण्डा

बु.ड्च्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१३१॥

बलिह्नपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥ यज्ञार्थे बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतहत्वां घातयाम्यद्य तस्माद्यज्ञे वघोऽवधः 🗗 इत्यभिमन्त्र्य ऐं हीं श्रीमिति तत्र पुष्पं क्षिप्त्वा ॥ रसना त्वं चिण्डकायाः सुरलोकप्रसाधकः ॥ हीं हीं खड्ग आं हुंफर् फडिति विडिति खङ्गमन्यद्वा शस्त्रं॰संपूज्य ॐ कालिकाकालियज्ञेश्वरीलोहदण्डायै नम इति छेदयित्वा ॥ ॐ ह्रीं ऐ ह्रीं कौशिकी रुधिरेण वृप्यतामिति देव्ये निवेद्य शेषं गृहीत्वा पूतनाये चरक्ये विदार्थे पापराक्षस्य च निवेद्य माषिष्टमयं शत्रं कृत्वा खङ्गेन त्वा स्कन्दाय विशाखाय च दत्त्वा बलिशेषं रक्षोभ्यो हरेत् ॥ मन्त्रस्तु ॥ ॐ ह्रीं स्फुर २ कुम्भ २ मुन २ गुल २ घनु २ मारय २ विद्वावय २ कम्पय २ कम्पातय २ कन्तापय २ पूरय २ ॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं हुं फट् फट् ॥ मर्दय मर्दय हुं इति ॥ ततः शेषेण बहिर्दद्यात ॥ तत्र मन्त्रः बल्जि गृह्णनित्वमे देवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतोऽथाश्विनौ रुद्दाः सुपर्णाः पन्नगा ब्रहाः ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ जृम्भिकाः सिद्धगन्धर्वा माला विद्याधरा नगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विन्नविनायकाः ॥ जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥ मा विन्न मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ॥ ततः स्नात्वा तिलकं धृत्वा श्रूलिनीत्येकेन शुलैन नो देवीति चतुष्ट्येन नमो देन्या इति पञ्चकेन प्रार्थयेत ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ महिषन्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्य देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥ एतत्क्षत्रियविषयं बिलदानं न ब्राह्मणविषयम् ॥ ततः गुह्मातिगुह्मगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिभवतु मे देवि प्रसादं कुरू सुंदिर इति ॥ देन्ये निवेद्य मुखेन पुष्पेण देवीमुद्रास्य नासात्रं नीत्वा अवत्राण कृत्वा हिद् प्रविष्टां विभाग्य षडङ्गं कृत्वा उत्तिष्ठ० अभ्यार० विसृज्याचार्याय दत्त्वा मन्त्रं पठेत् ॥ त्रैलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतद्यान्विते ॥ दानेनानेन संतुष्टा सुप्रीता वरदा भव ॥ नवरात्रे विशेषः दशम्यां देवीं विसर्जयेत् ॥ मन्त्रस्तु-उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्म च ॥ कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः

डपा.सा. व

44 4 4 4 4

शक्तिभिः सह ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके ॥ संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै ॥ इमां पूजां मया देवि यथाशक्तयुपपादिताम् ॥ रक्षार्थं त्वं समादाय ब्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥ जले प्रवाहयेत् ॥ ततोऽप्तिं संपूज्य विभूतिं धृत्वा गच्छ गच्छेति विसृज्य ततो ब्राह्मणानां भोजनम् ॥ सहस्रचण्डचां सहस्रब्राह्मणानां भोजनम् ॥ लक्षचण्ड्यां लक्षब्राह्मणानां भोजनम् ॥ कोटिचण्डचां तथैव च ॥ शतचण्ड्यां शतम् ॥ नवचण्ड्यां नवब्राह्मणानां भोजनम् ॥ यथाशक्ति वा ब्राह्मणान्संभोज्य एवं सुवा सिनीनां भोजनं पूजनं च कुमार्यादिपूजनं च ॥ तत्र सुगन्धतेलेनाभ्यंङ्गं कारियत्वा अलंकृत्य पीठे उपवेश्य देशकालौ स्मृत्वाऽसुक फलसिद्धचर्थमुककर्मणि कुमारीणां पूजनं करिष्ये ॥ मूलेन षडङ्गं कृत्वा मूलमन्त्रमुचार्य ॥ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूप धारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ आवाह्यासनं पाद्यं च दत्त्वा उष्णोदकेन पादौ प्रक्षाल्याच्याचमनं स्नानं पट्टदुक्लवस्त्रं कञ्चकालंकारादि दत्त्वा सुगन्धेनानुलिप्य हरिद्राकुङ्कमिसन्दूरालक्तकाञ्जनपुष्पमालाभिरभ्यच्ये पायसान्नैभक्ष्यभीजयेत् ॥ भोजनकाले च मूलमन्त्रं सप्तशतीं वा पठेत् ॥ ततो नानाफलताम्बूलदक्षिणानीराजनपुष्पाञ्चलीन द्यात् ॥ एवमन्याः पूजयेत् ॥ आवाहने तु मन्त्रभेदः-मन्त्राक्षरमयीमिति सर्वत्रोक्त्वा जगतपूज्येति । ताश्च प्रत्यहं शतं वा नव व पूज्याः ॥ ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् ॥ लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्ये शूद्रवंशजाम् ॥ दारुणे चान्त्यजातीयां पूजयेद्विधिन नर इत्युक्ता प्राह्माः ॥ नवभिर्लभते भूमिमैश्वर्य द्विगुणेन तु । एकवृद्धचा लभेत्क्षेममैकैकेनाश्रयं लभेत् ॥वर्जयेत्सर्वकार्येषु दासीगर्भसमु द्रवामिति ब्राह्मणभोजनं सुवासिनीभोजनं कुमार्या भोजनं पूजनं च नवरात्रेऽपि प्रत्यहं कार्यम् ॥ यस्य दात्कुर्वतामिति जिपत्वा पूर्णतां वाचियत्वा कर्म ईश्वरापेणं कृत्वा सुदृद्धतो सुञ्जीत ॥ इदमेव पूजाहोमबल्यादिविधानं नवरात्रेऽपि ज्ञेयम् ॥ इति श्रीडामारादितन्त्रसारे चण्डीमखमहोत्सवे नित्यचण्डीनवचण्डीशतचण्डीसहस्रचण्डीलक्षचण्डीकोटिचण्डीविधानम् ॥ एतत् सर्वे नवचण्डीवद्धोमविधानं नामाष्टमोऽवसरः ॥८॥ इति हरिकृष्णवि॰ बृ॰ध॰ड॰ हुर्गोपासनाध्याये पञ्चित्रशं प्रकरणम् ॥३५॥

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१३२॥

अथ दुर्गादीपदानविधिः ॥ नागोजीभट्टीये ॥ पूर्वाह्ने षोडशाङ्गुलमितां चतुरङ्गुलोन्नतां मृदा चतुरस्रां वेदीं स्थण्डिलं कृत्वा तत्र शुद्धगो घृतेन एकस्मिन्पात्रे त्रयोदशमुखान त्रयोदशदीपान् सूत्रवर्तिषु प्रत्येकं दीपे रुद्रवर्तिषु वा (अनेन त्रिचत्वारिशदुत्तरशतवर्तिर्भवति वा त्रयोदश वर्तयः) प्रज्वाल्य प्रथमदीपे प्रथमाध्यायदेवतामावाह्यासनपाद्याच्याचमनस्नानगन्धदानान्तां पूजां कृत्वा पुष्पसमर्पण समये वक्ष्यमाणेनवभिः श्लोकैः प्रतिश्लोकं पुष्पाणि समर्पयेत् ॥ ततः प्रथमाध्यायं पठित्वा प्रथमाध्यायसमाप्ती तैरेव वक्ष्यमाणे नेविभः श्लोकैः प्रतिश्लोकं पुष्पाणि समर्प्य धूपदीपौ दत्त्वा पायसं नैवेद्यं दत्त्वा ताम्बूलं च दत्त्वा नीराज्य एकं ब्राह्मणं कुमारी सुवासिनीं च भोजयेत् ॥ संकल्पयेद्वा सद्यः भोजयिष्ये समयान्तरेण भोजयिष्ये इति वा संकल्पः ॥ १ ॥ एवं तत्तद्रध्याय देवतावाहनादिब्राह्मणभोजनपर्यन्तं प्रत्यध्यायं कुर्यात् ॥ अन्ते प्रभूतनैवेद्यादिभिर्महापूजा अनुब्रहे पूर्वाह्ने पूजासमाप्तिः निब्रहे अप राह्ने समाप्तिः ॥ श्लोकास्तु ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ९ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकेटभौ ॥ २ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वममीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ३ ॥ या साम्प्रतं रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव इन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ४ ॥ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलो क्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ५ ॥ अत्र वैरिविनाशनमित्यत्र रोगविनाशनमित्याद्युहः कार्यः ॥ एवं 🎼 दैत्यतापितैरित्यत्रापि ॥ सर्वमङ्गलमांङ्गरूये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये ज्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ६ ॥ सृष्टिस्थिति 👹 विनाशानां शक्तिभूते सनातनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ८ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ अयेभ्यस्नाहि नो देवि हुर्गे देवि ९ ॥ एते अनुग्रहे नव श्लोकाः धनार्थ बिल्वदुलैः पूजा वश्यार्थ कर्रवारैर्जपाकुसुमैर्वा पुत्रार्थ तुलसीदुलैः पुष्टचर्थ पङ्कजैः

उपा.स्त. १ दुर्गी. अ० १२८

महाकार्यार्थं प्रयोगे तु षोडशमाषैः स्वर्णमूर्ति कृत्वा कलशस्थापनं कृत्वा अग्न्युत्तारणं प्रतिमाप्राणप्रतिष्ठां पूजनं च कृत्वा तुद्ये घण्टार्गलयन्त्रे षट्कोणयन्त्रे वा दीपं स्थापयेत् ॥ यावत्त्रयोगसमाप्तिः तावत्कलशस्थापनम् ॥ यन्त्रमन्त्रसर्वसाधारणं महति कार्ये तुनपञ्चाशिद्दनानि मध्ये चतुर्विशितिः तद्धमरूपे एवमेव मूर्तेः स्वर्णपरिमाणमपि बोध्यम् ब्राह्मणास्त्रयो महत्कार्यं प्रयोगकर्तारः ॥अरूपे एकः ॥नित्रहे तु सर्वाबाधाप्रशमनमित्यस्यात्रे एवसुकत्वा ससुत्पन्नेति पठेत् ॥ अत्र प्रयोगे कचित्तर्पणमप्युक्तम् ॥ तत्प्रयोगश्च पटले प्रतिपादितो द्रष्टन्यः ॥ अत्र त्रयोदशपात्रेषु त्रयोदश दीपा त्रयोदश दीपा इति मध्यमः पक्षः ॥ एकस्मिन्नेव दीपपात्रे त्रयोदशदीपा इत्यधमः पक्षः ॥ पक्षोऽयं विधिदींपेषु अक्षतपुञ्जेषु जलपात्रेषु अग्निषु कुमारीषु वा कार्य इत्युपदेशः ॥ प्रत्यहं यावत्प्रयोगसमाप्ति खयोदश ब्राह्मणाः सुवासिनी कुमार्येको ज्वपनीतो ऽष्टवर्ष एक उपनीत श्र भोजनीयः इति श्रीह० बृ० घ० उ० दुर्गोपा० दुर्गादीपदानविधिः नाम षट्त्रिंशं प्रकरणम् ॥३६॥ अथ दुर्गानित्याचनपद्धतिः ॥उक्तं च श्रीनिवासभट्टकृतचण्डीसपर्याक्रमकरूपवल्ल्याम् ॥ तत्र श्रीमत्साधको रजनीतुर्ययामे विद्युध्यावश्यकं कृत्वा इस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य घौते वाससी परिधायाचम्यासने समुपविश्य स्वशिरसि श्वेतसहस्रारविन्दग्रुरुचरणारविन्दे ध्यात्वा ॥ नमोऽस्तु गुरवे तस्मै इष्टदेव स्वरूपिणे ॥ यस्य वागमृतं इन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ॥ इति प्रणम्य ॥ मानसोपचारैः संपूज्य मूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तं मूलमन्त्रं तेजोमण्डलमयसुयतसूर्यसहस्रभासुरं ध्यात्वा तत्तेजसा व्याप्तं स्वशरीरं पारिचिन्त्य हृदयकमले महालक्ष्मीं वक्ष्यमाणकृपां ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य मूलमन्त्रं यथाशक्ति जिपत्वा जपं समर्प्य स्तुत्वा प्रणम्य भगवति नित्यानुष्ठानार्थमाज्ञां देहीति प्रार्थ्य पर्वतस्तनमण्डले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्परी क्षयस्व मे ॥ इति भूमि प्रणस्य श्वासानुसारेण तस्य पादं निधायोत्थाय बहिर्निर्गत्य विहितशौचाचमनिकयः क्वीं कामदेवाय सर्वजनिप्रयाय नमः इति मन्त्रेण दन्तधावनं विधाय मूलमन्त्रेण मुखं प्रक्षारयाचम्य मृद्रोमयकुशतिलादिकं गृहीत्वा जलाशयं गत्वाऽह्याभिमन्त्रितजलेन तीरं प्रक्षाल्य तत्राह्याभि

बृ.क्क्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१३३॥

मन्त्रितं कुशादिकं निधाय तैः स्वशाखोक्तं वैदिकस्नानं विधाय तान्त्रिकस्नानं कुर्यात् ॥ तत्र नाभिमात्रजले स्थित्वा मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिकरषडक्कन्यासांश्च कृत्वा स्वपुरतो मूलमन्त्रेण हस्तमात्रं चतुरस्रं तीर्थ परिकल्प्य क्रोमित्यङ्कशमुद्रया सूर्यमण्डलं भित्त्वा॥ गङ्को च यमुने चैव गोदाविर सरस्वति ॥ नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सिन्धि क्रिक् ॥ इति सूर्यमण्डलात्तीर्थमावाद्य पुरः किल्पततीर्थमण्डले मूलमन्त्रेण संयोज्य विमत्याष्ट्राच्य कवचेनावगुण्ठचा स्त्रेण संरक्ष्य घेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मूलेनाष्ट्रवारमभिमन्त्र्य तत्र स्वेष्टदेवतां ध्यायंश्चरणतले देवतामन्त्रस्मरणपूर्वकं त्रिानमज्ज्यो नमज्ज्य कुम्भमुद्रया मूलेन स्विशारिस दशवारमभिषिच्य मूलेन स्वाहान्तं त्रिराचम्य मूलेनैव त्रिदेवतां सन्तर्प्य तीरमागत्य घौते वाससी परिधायाचम्य ऊरू करौ च मृदाऽद्भिः प्रक्षाल्य मूलमन्त्राभिमन्त्रिततीर्थमृदादिनोर्ध्वमृदं विधाय मूलमन्त्रेणाभि मन्त्रितचन्द्रनादिसुगन्धद्रन्येण त्रिपुण्ड्धारणं विधाय वैदिकसन्ध्यां कृत्वा तान्त्रिकसन्ध्यां कुर्यात् ॥ तत्र मूलमन्त्रेण शिखां बद्ध्वा मूलेनैव प्राणायामत्रयं कृत्वा मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिकरषडङ्गन्यासान्विन्यस्य तत्पुरुतो घेनुसुद्र्या जलममृतीकृत्य मूलमन्त्रेणाष्ट्रवार मिमन्त्र्य तज्जलिन्दुभिः कुशैरकारादिक्षकारान्तैरेकपञ्चाशद्क्षरैः सिबन्दुभिः प्रत्यक्षरं स्विशारः प्रोक्ष्य मूलेन च त्रिः प्रोक्ष्य सूर्यमण्डले यथोक्तरूपां देवीं ध्यात्वा दक्षिणकरे जलमादाय वामकरेण स्पृशन् लंवं रं यं हं इति पाञ्चमौतिकवींजैः सप्तवार मिमिमन्त्र्य मूलमन्त्रेण च त्रिरिममन्त्रेय तज्जलं वामकरे निघाय तहलितविन्दुभिर्मूलमन्त्रेण च दक्षिणकरात्रेण स्वशिरिस प्रोक्ष्या वशिष्टं वामकरस्थं जलं वामानासासमीपं नीत्वा तेजोह्मपं वामनासारन्श्रेण स्वदेहान्तः प्रविष्टं ध्यात्वा तेन जलेन स्वदेहस्थं सकल कळुषं प्रक्षाल्य कृष्णवर्ण तज्जलं दक्षिणनासारन्ध्रेण विनिर्गतं विभाव्य दक्षिणकरेणादाय स्ववासभागे ज्वलद्वज्रिशालां ध्यात्वाऽस्त्र मन्त्रेण तस्यामास्फाल्य हस्तौ प्रक्षाल्य पुनर्दक्षिणकरेण जलमादाय दक्षिणनासारन्ध्रण प्रविश्य ब्रह्मरन्ध्रस्थं चिच्चन्द्रमण्डल मध्यगतपीयूषवारिधौ मिलित्वा तन्मयेन राजदत्तविवराब्रेत्राभ्यां विनिर्गतं विभाग्य तज्जलं वामकरे निधाय तज्जलं बिन्दुभिः

उपा.स्त. इ हुर्गा.

1,1661

ॐ अमृतमालिनि स्वाहा इति मन्त्रेण त्रिः शिरः प्रोक्ष्य मूलमन्त्रेण त्रिराचम्याञ्जलिना जलमादायोत्थाय वक्ष्यमाणगायत्री सुचाय भगवति एष तेऽघः स्वाहा इति त्रिधाऽञ्जलि सुयाभिमुखमुत्क्षिप्य मूलमुचार्य श्रीमहालक्ष्मीस्तृप्यतामिति त्रिः संतर्प्य प्राग्वत्प्राणायामादिकं कृत्वा सूर्यमण्डले देवीं ध्यायेत् ॥ ॐ कात्यायनाय विद्यहे कन्यकुमारि धीमहि ॥ तन्नो दुर्गिः प्रचोद यात् ॥ इति गायत्रीं यथाशक्ति जिपत्वा मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतवारं जिपत्वा जपं समर्प्य स्तुत्वा सुर्यमण्डलात्स्वहिंद् देवी विसृज्य श्रीगुरुं प्रणमेदिति त्रिष्ठु कालेषु तान्त्रिकसन्ध्याविधिः॥ इयं गायत्री त्रैवर्णिकैरेव जाप्या॥ वस्तुतस्तु अस्य नायां शूद्राणामधिकारो नास्त्येव सप्तशतीपाठस्यात्र प्रधानत्वात् ॥ सप्तशतीपाठे शूद्राणामधिकाराभावात् ॥ तथा च पुराणे ॥ मोहाद्वा कामतः शूद्रः पुराणं संहितां स्मृतिम् ॥ पठत्ररकमाप्नोति पितृभिः सह पापकृदिति पाठनिषेघदर्शनात् ॥ ततः प्रातःसन्ध्यानन्तरं वैदिकतर्पणं विनिर्वत्यं स्वपुरतो जलमेवमिति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य देवीं ध्यात्वा मूलमन्त्रमुञ्चार्य श्रीचण्डिका तृप्यतामित्यष्टोत्तरशतवारं तद्धमष्टाविंशतिवारं वा पराष्ट्रतबुद्धचा तत्तीर्थजलैः सन्तर्पाङ्गावरणदेवताश्चामुक्यस्तृष्यन्तामिति सन्तर्प्य देवीं स्वहृदि विसूज्य तीर्थ गुरुदिक्प्रतिश्रहणात् प्रणम्य शुद्धोदकपूर्णपात्रमादाय हृदि स्वेष्टदेवतां स्मरन् मौनी स्वपद्मात्रहृष्टिः स्तोत्रादिकं गच्छेत् ॥ ततो द्वारे स्थितः स्वपापं स्मरन् ॥ ॐ देव त्वं प्रकृतं चित्तं पापाकान्तमभूनमम् ॥ तन्निःसार्य चित्तानमे पापं फट् फट् कृते सम ॥ १ ॥ सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पश्च च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥ इति पिठत्वा हुं फडिति कोधदृष्ट्या पार्श्वद्रयमुर्ध्वमधश्रावलोक्य सुमना भूत्वा गृहान्तः प्रविश्याङ्गणे स्थित्वा पादौ प्रक्षाल्याचम्याङ्गणभूमौ गोमयोप लिप्तायां सिन्दुरादिना रचितवृत्तमण्डलमध्ये स्वासनमास्तीर्य ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नम इत्यासनं संपूज्य तत्र प्राङ्सुख उपविश्य वक्ष्यमाणसूर्यमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा शिरसि अजाय ऋषये नमः हृदये सूर्याय नमः देवतायै नम इति विन्यस्य सूर्या

इ.ज्ज्यो.र्ण. **धर्मस्कं**ध ८ ॥**१३**८॥

यार्घ्यदाने विनियोगः इति कृताञ्चलिवदेत् ॥ अंग्रुष्टयोःह्रां हृदयाय नमः॥तर्जन्योः ह्रीं शिरसे स्वाहा॥मध्यमयोःह्रं शिखायै वष्ट् ॥ अनामिकयोः हैं कवचाय हुम् ॥ कनिष्ठयोः हीं नेत्रत्रवाय वौषट् ॥ करतलपृष्ठयोः ह्रः अस्त्राय फट् ॥ इति करयार्विन्यस्य हृदयादि षडङ्गेष्विप न्यसेत्॥ततोऽस्त्रमन्त्रेण तालत्रयं दशदिग्बन्धनं च कृत्वा ॥ रक्ताम्बुजासनमशेषग्रुणैकसिन्धुं भानुं समस्तजगतामिष्यपं भजामि ॥ पद्मद्रयाभयवरान्द्धतं कराब्जैर्माणिक्यमोलिमरुणाङ्गरुचि त्रिनेत्रम् ॥ इति सूर्यं तन्मण्डले साङ्गावरणं ध्यात्वा स्वपुग्त अतुरस्रवृत्तिकोणात्मकं मण्डलं कृत्वा श्रीसूर्यात्मकाधारमण्डलाय नमः ॥ इति मण्डलं सपूज्य तत्र साधारं प्रस्थजलयाहिताम्रपात्रं निधाय सूर्यमन्त्रेण ग्रुद्धोदकेनापूर्य तिलयवसर्पिःश्यामाककुशाश्रगन्धाक्षतरक्तपुष्यचन्दनानि निक्षिप्य कुशैराच्छाद्य तत्पात्रं कराभ्या माच्छादयन् सूर्यमन्त्रमष्टोत्तरशतवारं जिपत्वा जानुभ्यामवनी गतस्तत्पात्रं कराभ्यामामस्तकमुद्धृत्य पूर्वोक्तरूपं सूर्यं निजेष्टदेवतो द्भेदे ध्यायन् ॥ ह्रीं हीं सः ब्रह्शशिनक्षत्रयोगकरणपरिवृतासनसंस्थित श्रीसूर्य एष तेऽघः स्वाहा इति सूर्यायार्घ्य दत्त्वा सूर्यप्रन्त्रं यथाशक्ति जिपत्वा जपं समर्प्य सूर्य स्तुत्वा प्रणम्य पूजामण्डपद्वारं गत्वा तत्र वक्ष्यमाणविधिना सामान्यार्घ्य संस्थाप्य तदशक्ती ताम्रादिपात्रस्थं जलं घेतुमुद्दयाऽमृतीकृत्य विंशतिः अनेन जलेन पूजामण्डपस्य मूलमन्त्रेणाष्ट्रवारमभिमन्त्र्य पश्चिमद्वारं प्रोक्ष्य द्वारस्योध्वंशाखायां मध्ये ॐ विं विष्ठराजाय नमः ॥ दक्षिणे मं महालक्ष्म्ये नमः ॥ पुनर्मध्ये द्वां द्वारिश्रये नमः ॥ द्वारस्य वाम दक्षिणशाख्योः ॐ गं गणपतये नमः ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ शं शङ्कानिधिवसुधाराभ्यां नमः ॥ ॐ मतीभ्यां नमः ॥ ॐ गं गंगाये नमः ॥ ॐ यं यसुनाये नमः ॥ ॐ घां घात्रये नमः ॥ ॐ वं विधात्रे नमः ॥ इति द्वन्द्वक्रमेणा घोऽघः संपूज्याघः दं देहत्ये नमः ॥ तस्या वामदक्षिणपार्श्वयोः आं ब्रह्माण्ये नमः ॥ ई साहेश्वर्ये नमः ॥ इति द्वारपालिके संपृ ज्योत्तरद्वारं गत्वा तद्रघोम्बुनाऽभ्युक्ष्य प्राग्देहरूयनंत संपूज्य द्वारपार्श्वयोः कुं कौमार्ये नमः ॥ ॐ ऋं वैष्णव्ये नमः ॥ इति संपूज्य पूर्वद्वारं गत्वा तथेवाभ्युक्ष्य तत्र विन्नादिदेहरूयन्तमभ्यचर्य द्वारपार्श्वयोः लं वागह्यै नमः ॥ ए इन्द्राण्यै नमः इति द्वार

उपा.स्त. ३ दुगर्ध.

पालिकां संपूज्य दक्षिणद्वारं गत्वा तथैवार्घादिभिरभ्युक्ष्य विन्नादिदेहल्यन्तं संपूज्य द्वारपार्श्वयोः ॐ चामुण्डायै नमः ॥ ॐ महा लक्ष्म्ये नमः ॥ इति द्वारपालिके संपूज्य पुनः पश्चिमद्वारे गत्वाऽस्त्रेण तालत्रयपूर्वकं द्वारमुद्धात्व सर्वपाक्षतभस्मकुशकुसुमा न्यादायास्त्रमन्त्रेण सप्तधाऽभिमन्त्र्य ॥ अपकामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेतगुद्यकाः ॥ ये चात्र निवसन्त्यन्ये देवता भ्रुवि संस्थिताः ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विष्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ इत्येतदस्त्रमन्त्रान् जपन् नागचधुद्रया मण्डवान्तः प्रक्षिप्य ॥ तस्मान्निर्गच्छतां विव्वसंघानां स्ववामाङ्गसंकोचेन मार्ग दत्त्वाऽस्त्रमन्त्रं स्मरन् वामपार्षिणघातत्रयेण भौमा नूम्वीर्घ्वतालत्रयेणान्ति सिगान् तीक्षणदृष्ट्यवलोकनेन दिन्यानिति त्रिविधविद्यानुत्सार्य वामपादपुरस्मरं देहलीमुळंच्य वाससा द्वारमाच्छाद्य पञ्चगव्यार्घतोयाभ्यां घण्टावादनपूर्वकं मण्डपाभ्यन्तरं प्रोक्ष्य मण्डपस्य नैर्ऋतिकोणे वां वास्तुपुरुषाय नमः ॥ तत्रैव वास्त्वधीश्वराय ब्रह्मणे नमः ॥ इति संपूज्य मण्डपस्येशानकोणे रक्तवर्णाय रक्तद्रादशशक्तिसहिताय श्रीदीपनाथाय नमः ॥ इति दीपनाथं संपूज्य ॥ तीक्ष्णदंष्ट्र भहाकाय कल्पान्तदहनोपम ॥ भैरवाय नमस्त्रभ्यमनुज्ञां दातुमईसि ॥ इति भैरवाज्ञां गृहीत्वा अः फट्र इति पूजावेदीं गत्वा तत्र स्थित्वा शिरसि मेरुपृष्ठाय ऋषये नमः ॥ मुखे मुतलाय छन्दसे नमः ॥ हृदये पृथिन्ये देवताये नमः ॥ इति न्यस्यासनार्थे पृथिवीप्रार्थने विनियोग इति कृताञ्जलिवेदेदिति ऋष्यादिकं विन्यस्य पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति पृथिवीं प्रार्थ्य स्वासनस्थानं मूलमन्त्रेण वीक्ष्यास्त्रेण प्रोक्ष्यास्त्रेणैव कुशैः संताझ कवचेनाभ्युक्ष्य तत्र चैलाजिनकुशकम्बलनिर्मितं हस्तद्रयमात्रं चतुरस्रं चतुरंगुलोच्छ्तं स्वासन माम्तीर्य मूलमन्त्रेण दशघाऽभिमन्त्रितजलेनाभ्युक्ष्य हीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ इत्यासनं संपूज्य तत्र प्राङ्गुखः पद्म स्वस्तिकसिद्धवीगद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य आसनस्य दक्षिणाये चतुष्कोणेषु प्रादक्षिण्येन गं गणपतये नमः ॥ दुं दुर्गाये नमः सं सरस्वत्ये नमः ॥ क्षं क्षेत्रपालाय नमः इतिः संपूज्य गन्यपुष्पाक्षतादीनि स्वदक्षिणहस्ते निधाय हां हुं फिडिति दिन्यहृच्या

प्र.ज्यो.र्ज. **प्रमेर**कंघ ८ **19३**६॥

विलोक्य कर्प्रादिवासितशुद्धोदकपूर्ण वामभागस्थं कुम्भम् आं इति वामपाणि संस्पृश्य दक्षिणकरांगुल्यमेण क्ष्रीं इति कुम्भस्थं जलं संस्पृश्य रं इति दीपशिखां स्पृष्टा इस्तं प्रक्षाल्य कृताञ्जलिः वामे गुरूभ्यो नमः ॥ दक्षिणे गणपतये नमः ॥ अये श्रीमहा लक्ष्म्ये नमः इतिप्रणम्य शरीरे पादादिजान्वन्तं जान्वादिनाभ्यन्तं नाभ्यादिकण्ठान्तं कण्ठादिश्रूमध्यान्तं श्रूमध्यादिब्रह्मरध्रान्तंच थेन्यादिपञ्चभ्रतानि ध्यात्वा स्वहृदयकमले जीवात्मानं प्रदीपकल्पिकार्भ्यासुरमारात्रमात्रं ध्यात्वा तं सुषुव्रामार्गेण ब्रह्म रन्ध्राद्वहिः परमाकाशे निःसार्य सोऽहं मन्त्रेण परमशिवे संयोज्य पृथिन्यादिशिवान्तानि षट्त्रिंशत्तत्त्वानि च तत्रैव विलीना केवलदेहे वामकुक्षौ पापपुरुषं ध्यायेत् ॥ यथा ॥ वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषं कजलप्रभम् ॥ स्कन्धं स्वर्णस्तेयभुजद्वयम् ॥ सुरापानहदा युक्तं गुरुतरूपकटिद्वयम् ॥ तत्संसार्गेपदद्वनद्वमङ्कप्रत्यंगपातकम् ॥ रोमाणं रक्तश्मश्रविलोचनम् ॥ खङ्गचर्मघरं ऋदमनादिभवसंभवमिति ध्यात्वा वामनासापुटेन विमिति वायुमापूर्य नाभिस्थं पट् कोणाकारवायुमण्डले संयोज्य तत्र जं बीजं कृष्णवर्णे ध्यायन्कुम्भकेन यं बीजमावर्तयन तद्वत्पन्नेन महावायुना सपापपुरुषं स्वदेहं पोषयित्वा तं वायुं दक्षिणया विरेच्य पुनर्दक्षिणनासया रिमिति वायुमापूर्य स्वाधिष्ठानस्थं विह्नमण्डलं संयोज्य तत्र रं बीजं रक्तवर्णं स्मरन्कुम्भकेन रं बीजमावर्तयन् तदुर्भूतेन महाविह्नना सपापपुरुषं स्वदेहं संद्ह्य पापपुरुषभस्मना संहतं वायुं वामनासया विरेच्य पुनर्वामया विमिति वायुमापूर्य ब्रह्मर-ध्रस्य चन्द्रमण्डले संयोज्य तत्र वं बीजं शुक्कवर्णे स्मरन् कुम्भकेन वं बीजमादर्तियंस्तन्निर्गतामृतधारया स्वदेहं अस्म संसिच्य पुनस्तं वायुं दक्षिणया विरेच्य पुनर्दक्षिणया लिमिति वायुमापूर्य मूला धारे पार्थिवमण्डले चतुरस्रे संयोज्य तत्र लं बीजं पीतवर्णं संचिन्त्य कुंभकेन लं बीजमावर्तयन्नमृतप्नावितं घनीकृत्य तं वायुं वामया विरेच्य पुनर्वामया वायुमापूर्य सूलाधारे संयोज्य तत्र मायाबीजमुद्यतसूर्यसमप्रभं संचिन्त्य कुंभकेन मायाबीजमावर्तयन् तेन करचरणादिनिखिळावयवसमेतं स्वदेहं विभाग्य तं वायुं दक्षिणया विरेच्य परमशिवे योजितं

डपा.स्त. इ डुर्गा.

जीवात्मानं इंस इति मन्त्रेण हृदयकमलमानीय संस्थाप्य शिवादिक्षित्यन्तानि च षट्त्रिंशतत्त्वानि स्वस्वस्थाने स्थापयेत्॥ इति भूतशुद्धि विधाय शिरिस ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यः ऋषिभ्यो नमः मुखे ऋग्यज्ञःसामभ्यश्छन्दोभ्यो नमः हृदये श्रीप्राणशक्तयै देव ताय नमः गुह्य आं बीजाय नमः पादयोः हीं शक्तये नमः नाभौ क्रों कीलकाय नमः इति विनयस्य प्राणप्रतिष्ठार्थे विनियोगः॥ इति कृताञ्चलिरुक्तवा ॥ ॐ आं हीं कौं अं कं ६ आकाशवाय्विमसिललपृथिव्यात्मने आं हृदयाय नमः ॥ ॐ आंह्रींकौंइं चं ६ शब्दस्परीह्मप्रसगन्धात्मने ई शिरसे स्वाहा ॥ ॐ आं ह्रीं ऋं ं दं ५ श्रोत्रत्वक् चश्चार्जह्मात्राणात्मने छं शिखाय वषट् ॥ ॐ आं हीं कौं एं तं ५ वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम् ॥ ॐ आंह्रीं कौंओं पं फं बं भं मं वचनादानविस्र्गगमनानन्द त्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ॐआं हीं कौं अं यं १० मनोबुद्धचहंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् ॥ इति मन्त्रानंगुष्ठादितलान्तं करयोविंन्यस्य दृदयादिषडक्नेष्विप विन्यस्य ॥ रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कशाविश्वशरासबाणान् ॥ शूलं कपालं द्धतीं कराब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम् ॥ वामाद्यूर्ध्वयोराद्ये तदाद्यधस्थयोरपरे इत्यायुधध्यानम् ॥ बाणान् पुष्पबाणान् इक्षुशरा सनयोगादिति ॥ इति ध्यात्वा ॥ ॐ आं ह्रीं कीं यं रं लं वं शं षं सं हों हंसः सोऽहं मम प्राणा इह प्राणा मम जीवइहस्थितः मम सर्वेन्द्रियाणि मम वाङ्मनश्रक्षःश्रोत्रजिह्वात्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ इति मन्त्रं हृद्यं स्पृशन् जपेदिति ॥ ततो मातृकावणैः प्राणायामत्रयं कृत्वा मातृकान्यासं कुर्यात् ॥ तत्र स्वरैः पूरकः काद्यः कुम्भको याद्यैः रेचक प्राणायामो ज्ञेयः ॥ ततः शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः ॥ मुखे गायत्रीछन्दसे नमः ॥ हदि मातृकासरस्वत्ये देवताये नमः ॥ गुह्ये इल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ॥ पाद्योः स्वरेभ्यः शिक्तभ्यो नमः ॥ नाभौ व्यक्तये कीलकाग नम इति विन्यस्य मम मातृकान्यासे विनियोगः इति कृताञ्चलिरुक्तवा ॥ ॐ अं कं ५ आं हृदयाय नमः ॥ ॐ इं चं ५ ई शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उं टं ५ ऊं शिखायै वषद् ॥ ॐ एं तं ५ ऐं कवचाय हुम् ॥ ॐ ओं एं ५ औं नेत्रत्रयाय वौषद् ॥ ॐ अं यं १० अः अस्त्राय फट् ॥ इत्यंगुष्ठादितलान्तं बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१३६॥

करयोविन्यस्य त्हदयादिषडङ्गेष्वपि न्यसेत् ॥ ततः पञ्जाशद्वर्णभेदैविहितवदनदोःपाद्युक्कुक्षिवक्षोदेशां आस्वत्कपदीक्लित शशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ॥ अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरा त्रीक्षणां पद्मसंस्थामच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि॥ दक्षोध्वकरमारभ्य दक्षाधःकरपर्यन्तमायुधध्यानं चिन्तालिखितं पुस्तकं कुम्भः सुधाकुम्भ इति ध्यात्वा शिगसि अं नमः मुखावृत्ते आं नमः दक्षनेत्रे इं नमः वामनेत्रे ईं दक्षिणकर्णे उं वामकर्णे ऊं दक्षनासापुटे ऋ वामे ऋं दक्षगण्डे ऌं वामगण्डे ॡं एं अधरे ऐं सर्ध्वदन्ते ओं अधोदन्ते औं जिह्वाये अं तालुमूले अः दक्षबाहुमूले कं कूपरे खं मणिबन्धे गं अंगुलीमूले घं अंगु ल्यये ङं वामबाहुमूले चं कूपरे छं मणिबन्धे जं अंगुलिमूले झं अंगुल्यये जं दक्षिणमूले टं जानुनि ठं गुल्फे डं अंगुलीमूले ढं अंगुल्यमे णं वामपादमूले तं जानुनि थं गुल्फे दं अंगुलीमूले धं अंगुल्यमे नं दक्षपार्श्वे पं वामपार्श्वे फं पृष्ठे बं नामौ भं उदरे मं हिद यं दक्षिणांसे रं ककुदि लं वामांसे वं दक्षभुजे शं वामे षं दक्षपादे सं वामे हं उत्तरे लं सर्वाङ्गे क्षम् ॥ यदा हृदय एव यकागिहि दशाक्षगणि ॥ त्वगस्रमांसमेदोऽस्थिमजाग्रुक ऊर्जेत्राणशक्त्याख्येऽप्येकमेकमक्षरं न्यसेत ॥ यथा त्वचि यं असृति रं इत्यादि न्यसेदिति मातृकां विन्यस्य मूलमन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा शिरसि ब्रह्मविष्णुक्रद्रेभ्यः ऋषिभ्यो नमः ॥ मुखे गायत्रयुष्णिगनुष्टुण् छन्दोभ्यो नमः ॥ ग्रह्मे परमशिवलिङ्गाय बीजाय नमः ॥ पादयोः कार्लाशिवदूतीभ्य अजावतीभ्यः शक्तिभ्यो नम इति विन्यस्य मम सर्वाभीष्टिसिद्धये जपे विनियोगः ॥ इति कृताञ्जलिक्दनवा ॐ ऐं ह्रीं क्वीं हृदयाय नमः । एवं िगरसे स्वाहा शिखाये वषट् कवचाय हुं नेत्रत्रयाय वौषट् अस्त्राय फट्॥इति कि शिष्ठकादितलांतं करयोविन्यस्य हृदयादिषडंगेष्वपि न्यसेत्॥अत्र करन्यासैः कर तलकरपृष्टकरभमणिबन्धेष्वस्त्रं न्यसेदिति विवेकः ॥ अथ पूर्वाङ्गे ॐ ह्रीं ब्रह्माणि मे पूर्वे पातु नमः ॥ आग्नेये ॐ ह्रीं माहेश्वरी मे अग्नेये पातु नमः ॥ एवं कौमारी में दक्षिणे पातु॰ वैष्णवी में नैर्ऋत्यां पातु॰ वाराही में पश्चिमे पातु॰ इन्द्राणी में वायन्यां पातु॰ वागु३६॥ चामुण्डा में उत्तरे पातु महालक्ष्मीमें ईशान्यां पातु॰ न्योमेश्वरी में उर्ध्व पातु॰ सप्तद्वापेश्वरी में मध्यं पातु॰ नागेश्वरी में

उपा.स्त. ह प्रका. 3.F P = 18

अधः पातु॰ नमः इति ।। स्वशरीरे पूर्वाद्यष्टदिक्कलपनया स्वायाद्यष्टस्थानानि प्रादक्षिण्येन परिकल्पितेषु स्थानेषु शिरो गुह्मपादेषु चैकादशस्थानेष्वेकादशं देवीन्यसेत् ॥ इति प्रथमो न्यासः ॥ १ ॥ ततः पूर्वाङ्गे ॥ ॐ हीं मम पूर्वाङ्गं नन्दजा पातु नमः एवं दक्षिणांगं रक्तदिनिका पश्चिमांगं शाकंभरी वामांगं दुर्गा मूर्घादिपादान्तं भीमा पादादिमूर्घान्तं भ्रामरी इति द्वितीयो न्यासः ॥ २ ॥ पादादिनाभिपर्यन्तं ब्रह्मा पातु नमः ॥ नाभेः कण्ठपर्यन्तं विष्णुः पातु नमः ॥ कण्ठाद्वह्मरन्भ्रान्तं रुद्दः पातु नमः ॥ पाद्योः हंसः पातु नमः ॥ करद्वये वैनतेयः पातु नमः ॥ नेत्रयोः वृषभः पातु नमः ॥ सर्वागे जनादेनः पातु नमः ॥ ब्रह्मरन्ध्रे हरिः पातु नमः ॥ इति तृनीयो न्यायः ॥ ३ ॥ मध्यदेशे महालक्ष्म्यै नमः ॥ मस्तके सरस्वत्यै नमः ॥ पादयोः महा काल्ये नमः ॥ करयोः सिंहाय नमः ॥ नेत्रयोः परमहंसाय नमः ॥ पाद्योः महिषसहिताय प्रेताय नमः ॥ सर्वांगे महेशाय नमः ॥ पुनः सर्वागे चण्डिकायै नमः ॥ इति चतुर्थो नयासः ॥ ४ ॥ ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ॐऐं नमः दक्षकर्णे ॥ ॐ हीं नमः वामे ॥ ॐ क्वीं नमः दक्षनेत्रे॥ ॐ चां नमो वामे॥ ॐ मुं नमः दक्षनामायाम्॥ ॐ डां नमः वामे॥ ॐ यें नमः मुखे॥ ॐ विं नमः लिंगे ॐ चें नमः गुदे॥ इति पञ्चमन्यासः॥ ५॥ ॐ ऐं नमः लिंगे॥ ॐ ह्रीं नमः मुखे॥ ॐ क्वीं नमः वामनासायाम्॥ ॐ चां नमः दक्षनासायाम् ॥ ॐ मुं नमः वामनेत्रे ॥ ॐ डां नमः दक्षनेत्रे ॥ ॐ यें नमः वामकर्णे ॥ ॐ विं नमः दक्षकर्णे ॥ ॐ च्चें नमः ० इति षष्ठन्यासः ॥ ६ ॥ स्वपूर्वांगे मूर्द्धादिपादान्तं मूरुमन्त्रमुचार्यं नमः ॥ एवं दक्षपार्श्वे पृष्ठभागे वामभागे पुनर्वामे पृष्ठे दक्षभागे पूर्वागे च व्यापकत्वेन न्यसेत् ॥ इति सप्तमः ॥ ७ ॥ ततो मूरुमन्त्रमुचार्य हदयाय नमः ॥ एवं शिरमे स्वादेत्यादिषडंगक्रम मुचार्य ह्दयाय नमः एवं शिरसे स्वाहेत्यादिषडङ्गकमयोगेन न्यसेत् ॥ इति अष्टमः ॥ ८ ॥ खङ्गिनी श्रूलिनी घोरा गदिनी चिकणी तथा ॥ शङ्किनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा ॥ इति ध्यात्वा श्लोकं कृष्णवर्णे ध्यायनसर्वागे सूर्घादिपादान्तं व्यापकत्वेन विन्यस्य पुनः शुलेन पाहि नो देवि पाहि खङ्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ १ ॥ प्राच्यां

रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ श्रामणेनात्मज्ञूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥ २ ॥ सौम्यानि यानि ह्रपाणि त्रेलोक्ये विच पु. ज्यो.र्ण. पि. पि. यानि चात्यन्तघोराणि ते रक्षारमांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥ खङ्गश्चलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपञ्चनसंगीनि धर्मस्कंघ ८ वित्यस्य पुनः सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसम विवते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥ १ ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तुते ॥ २ ॥ ज्वालाकरालमत्युत्रमशेषासुरसूद्नम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेभद्रकालि नमोस्तु ते ॥ ३ ॥ हिनिस्त दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ४ ॥ असुरासुग्वसापङ्कचाँचत स्ते करोजनलः ॥ शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ६ ॥ इति श्लोकपञ्चकम् ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं शुद्धविद्या प्रदायकम् ॥ शुद्धपूर्णेचिदानन्दं सदाशिवमहं अजे ॥ ६ ॥ ध्यायन्सर्वागे व्यापकत्वेन विनयस्य योनिमुद्धां बद्ध्वा स्वातमानं देवीरूपं ध्यायन् दर्शयित्वा हदि महालक्ष्मीं ध्यायेत् ॥ इति नवमः ॥ ९ ॥ अत्र पूर्वोक्तमातृकान्यासषडङ्गन्यासाभ्यां सह एकादश न्यासा वोद्धन्याः ॥ अथ ध्यानम् ॥ तत्र स्वहृद्ये वक्ष्यमाणं पूजापीठं विभान्य तन्मध्ये वक्ष्यमाणं मूलमन्त्रस्य बीजत्रयं ध्वात्वा तत्र मध्य बीजेन श्रीमहालक्ष्मीं सर्वदेवशरीरतेजसोद्धृतां ध्यायेत् ॥ यथा सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविभूताऽमितप्रभा ॥ त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ श्वेतानना नीलधुजा सुश्वेतस्वनमण्डला ॥ रक्तमध्या रक्तपादा विचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ॥ चित्रावुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ अष्टादशश्रुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ॥ चकं त्रिशूलं परशुः शङ्को घण्टा च पाशकः ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ॥ अलंकृतभ्रुजामेभिरायुधेः कमलासनम् ॥ सर्वदेव मयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृष ॥ पूजयन्सर्वदेवानां लोकानां च प्रभुभेवेत् ॥ इति महालक्ष्मीं स्वैक्येन ध्यात्वा तस्या

उपा.स्त. व दुर्यो.

दक्षिणे प्रथमबीजे महाकालीं ध्यायेत् ॥ दशवक्रा दशसुजा दशपादाऽञ्जनप्रभा ॥ विशालया राजमाना रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम् स्फुरद्दशनदृष्ट्रां सा भीमरूपाऽपि भूमिप भुशुण्डिभृत् ॥ परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्चोतद्वधिरं दघौ ॥ एषा सा वैष्णवी माया कालरात्रिद्वरत्यया ॥ आराधिता वशीकुर्यात्पूजा महाकालीं ध्यात्वा महालक्ष्म्या वामभागे सरस्वतीं तृतीयबीजे ध्यायेत् ॥ यथा-गौरीदेहात्समुद्धता य सत्त्वेकगुणान्विता ॥ साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबाईणी ॥ दघौ साऽष्ट्रभुजा बाणान्सुसलं चक्रशूलभृत् ॥ शङ्कः लाङ्गलं घण्टां कार्मुकं वसुधाधिप ॥ एषा संपूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति ॥ दक्षिणाधःकरक्रमादिति तिसृणामिप देवान मायुघध्यानं ज्ञेयम् ॥ दक्षिणाधःकरादि वामाधःकरान्तमित्यर्थः ॥ ९ ॥ इति श्रीमहासरस्वतीं पुरःसरं महालक्ष्मीं सांगां सावरणां मानसैरुपचारैः संपूज्य स्वमूलाधारे आत्मान्तरातमपरमातमज्ञानात्मरूपं कुण्डल्यगिन समुज्जवलं ध्यात्वा मूलमन्त्रमुखार्य अहन्तां जहोमि स्वाहा ॥ पुनर्मूलम् असत्यं जहोमि ऽसत्यपैशुन्यकामकोधलोभमोहमद्मत्सर्याणि सुषुम्नासुग्युक्तमनःसुवेण पृथकपृथग्धत्वा मूलमन्त्रं यथाशक्ति जिपत्वा जपं देव्ये समर्प्य बाह्यपूजामारभेत् ॥ तत्र स्वर्णादिरचिते पीठे चन्दनकुंकुमकर्पूरादिसुगन्धद्रव्ये कर्णिकाकेसरदलदलात्रपरिशेषयुक्तमष्टदलकमलं निर्माय तत्कर्णिकायां षट्कोणमण्डलं कृत्वा तन्मध्ये स्ववामादिक्रमेण पङ्कत्याकारेण विलिख्य स्वाग्रादिषट्कोणेषु प्रादक्षिण्येन चतुर्थवर्णाद्यक्षरषट्कं विलिख्य बहिश्चतुर्द्वारयुक्तचत रस्रत्रयेण वेष्टयेदिति पूजाचकं निर्माय स्वपुरतः चन्दनादि पीठे संस्थाप्य तदुपरि मूलमन्त्रेण कृताञ्जलि चन्द्नेनालिप्तभूमौ चतुरस्रावर्त अष्टदलषट्कोणत्रिकोणमण्डलं कृत्वा तन्मध्ये मूलमुचार्य श्रीमहालक्ष्म्या नमः इत्यभ्यर्च्य त्रिषु कोणेष्वाद्यवीजत्रयेण संपूज्य षट्कोणेषु शिष्टवर्णेः संपूज्य चतुरस्रे अग्नीशासुरवायन्यकोणेषु

ख. उच्चो. र्ज. धर्मस्कंघ ८ ॥१३८॥

र्दिश्च च क्रमेण षडंगानि संपूज्य मूलमन्त्रेणाधारं प्रक्षाल्य ॐ महालक्ष्म्या अर्घाधारं संस्थापयामीति मण्डलमध्ये संस्थाप्य ॐ मं वं विह्नमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहालक्ष्म्या अर्घाधाराय नमः ॥ इत्याधारं संपूज्य तत्र धूम्राचिरित्यादिवहेर्दशकला इहागच्छत तिष्ठतेति वहेर्दश कलाः समावाह्य संस्थाप्य तत्र पूर्वोक्तप्राणप्रतिष्ठामन्त्रे ममपदस्थाने धूम्राचिरादीनामिति पदं दत्त्व प्राणप्रतिष्ठामन्त्रजपं तासां प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ॥ यं धूम्राचिषे नमः ॥ रं ऊष्माय नमः ॥ लं ज्वलिन्ये नमः नमः ॥ शं विस्फुलिंगिन्ये नमः ॥ षं सुश्रिये नमः ॥ सं सुह्रपाये नमः ॥ इंकपिलाये नमः॥ लं हन्यवाहाये नमः ॥ क्षंकन्यवाहाये नमः ॥ इति वृत्ताकारेण वामादिप्रादक्षिण्येन संपूज्य स्वर्णादिरचितं पात्रमह्मेण क्षालितं धूपवासितं गृहीत्वा महालक्ष्म्या अर्घ पात्रं संस्थापयामीति तस्मिन्नाधारं संस्थाप्य अं अर्कमण्डलायाधिषद्द्वादशकलात्मने श्रीमहालक्ष्म्या अर्धपात्राय नम इति संपूज्य तत्र भूमौ लिखितं मण्डलं विभाग्य तथैव मध्यादिचतुरस्रान्तं सम्पूज्य तत्र सूर्यस्य द्वादश कलाः समावाद्य संस्थाप्य प्राग्वतापिन्या दिना प्राणप्रतिष्ठां विधाय वृत्ताकारेण ॐ कं भं तिपन्ये नमः ॐ खं बं तापिन्ये नमः ॥ ॐ गं फं धूस्राये नमः ॥ ॐ घं पं मरीच्ये नमः ॥ ॐ इं नं ज्वालिन्यै नमः ॥ चं घं रूच्ये नमः ॥ ॐ छं दं सुषुष्रायै नमः ॥ ॐ जं थं भोगदायै नमः॥ॐ झं तं विश्वायै नमः ॥ 🕉 ञं णं बोधिन्य नमः ॥ टं ठं धारिण्य नमः ॥ ॐ डं ढं क्षमाय नमः ॥ इति प्रादक्षिण्येन संपूज्य कुम्भस्थ जलं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं घं दं थं तं णं ढं डं ठं टं जं झं जं छं चं डं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ॡं ऋं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं इति विलोममातृकान्ते पुनर्मूलमन्त्रमुचारयन् तेन जलेनार्घपात्रमापूर्य ॐ सोममण्डलाय कामप्रद्वोडशकलात्मने श्रीमहालक्ष्म्या अर्घामृताय नमः ॥ हत्यर्घजलं संपूज्य तत्र प्रागुक्तमण्डलं विभाग्य तथैव संपूज्य तत्र सोमस्य अमृतादिषोडशकलाः प्राग्वद्वाह्ये संस्थाप्य प्राग्वत्तासां प्राणप्रतिष्ठां विधाय बहिर्वृत्ताकारेण ॥ ॐ अं अमृताये नमः ॐ आं मानद्यि नमः ॥ ॐ इं इष्यि नमः ॥ ॐ ईं तुष्ट्ये नमः ॥ ॐ उं पुष्ट्ये नमः ॥ ॐ उं

उपा.स्त. ३ दुर्गी.

अ० १२८

रत्ये नमः ॥ ॐ ऋं धृत्ये नमः ॥ ॐ ऋं विशन्ये नमः ॥ ॐ ऌं चिण्डकाये नमः ॥ ॐ ॡं कान्त्य नमः॥ ॐ एं ज्योत्स्नाये नमः॥ ॐ ऍ श्रिये नमः ॥ ॐ ओं प्रीत्ये नमः ॥ ॐ ओं अङ्गदाये नमः ॥ ॐ अं पूर्णाये नमः ॥ ॐ अः पूर्णामृताये नमः ॥ इति प्राद्क्षिण्येन सोमस्य पोडश कलाः संपूज्य तत्र प्राग्वतसूर्यमण्डलात्तीर्थमावाह्य तत्र मूलमन्त्रेण योनिमुद्रया संयोज्य मन्त्रेण ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य तत्र देवीं ध्यात्वा षडङ्गानि विन्यस्य शङ्कमुद्रयाऽऽवष्टभ्य योनिमुद्रयोहिश्य घेनुमुद्रयाऽमृती कृत्य मूलमन्त्रेणाष्ट्रवारमभिमन्त्र्यास्त्रमन्त्रेण चऋमुद्रया संरक्ष्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्येदित्यर्घपात्रं संस्थाप्य तस्योत्तरतिस्त्रकोण मण्डलत्रयं कृत्वा मण्डलत्रये साधारं सजलं पात्रद्वयं द्धिमधुषृतयुक्तकांस्यपात्रमेकमिति पात्रत्रयं संस्थाप्य तेषु किचित्किचिद्दर्धोदकं गन्धादिकं च दत्त्वा मुलेन पृथकपृथगष्ट्वारमिमन्त्रयेत् ॥ अत्र तृतीयं मधुपर्कपात्रं ततः स्वदक्षिणात्रे त्रिकोणमण्डलद्वये निधाय तत्रार्घजलपात्रान्तरेणोद्धृत्य किंचितिकचिद्दत्त्वा गन्धाक्षताभिराक्षिप्य मूलेनाष्ट्वारमित्यभिमन्त्रयेदिति पुनराचमनीयपात्रं प्रोक्षणीपात्रं च संस्थाप्य प्रोक्षणीजलेन स्वात्मानं पूजोपकरणानि च प्रोक्ष्य स्वशरीरं स्वातमानं देवीरूपं ध्यायन् शिरोहृदयगुद्यपादसर्वाङ्गेषु पुष्पाञ्चलीनमूलेन दत्त्वा पूर्ववनमूलाधारे चतुरस्रकुण्डं कुण्डलिनीं विह्ना विभाव्य मूलमन्त्रान्तर्धर्माधर्मे हि विदीत आत्माये मनसा स्तुत्वा सुषुम्नावत्रमना नित्यमक्षवृत्ती जहोम्यहम् ॥ पुण्यं जहोमि स्वाहा एवं पुण्यापुण्यकृत्याकृत्यसंकरूपविकरूपधर्मानपृथवपृथग्युत्वा पुनर्भूलसुच्चार्य प्रकाशामशहस्ताभ्यामवलम्ब्या त्मिन सुचं धर्माधर्मकलास्नेहं पूर्णवह्नी जहोम्यहम् ॥ अधर्मं जहोमि स्वाहा ॥ इति पूर्णाहुति हुत्वा श्रीमहालक्ष्या रूपमात्मानं ध्यायेत् ॥ मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतं जिपत्वा जपं समर्प्य पूजापीठमघींदकेनाभ्युक्ष्य षट्कोणे ॐ ओंकाराय पीठाय नमः ॥ अष्टदल कमले ॐ पूर्णगिरिपीठाय नमः ॥ चतुरस्र ॐ कां कामरूपपीठाय नमः ॥ इति संपूज्य पूजापीठस्य बहिश्चतुर्दिश्च स्वात्रमारभ्य प्रादिक्षण्येन ॐ गं गणेशाय नमः ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ दुं दुर्गाये नमः ॥ ॐ वं बटुकाय नमः ॥ इति संपूज्य पीठस्या

बृ. ५५ यो. र्ण. **धर्म**स्कंध ८ ॥१३९॥

प्रेयकोणेषु ॐ जं जयाये नमः ॥ ॐ विं विजयाये नमः ॥ ॐ अं अपराजिताये नमः ॥ ततः पद्मनालमूले ॐ आं आधार शक्तये नमः ॥ ॐ वृं कूर्माय नमः ॥ ॐ शें शेषाय नमः ॥ ॐ पृं पृथिन्ये नमः ॥ ॐ नां नालाय नमः ॥ॐ पं पद्माय नमः ॥ इति संप्र्ज्याष्ट्रदलकणिकायां षट्कोणाद्धाः पूर्वदिशि स्वद्क्षिणादिवामान्तम् ॐ विं विष्णुमायाये नमः ॥ ॐ वें चेतनाये नमः ॥ ॐ वुं बुद्धये नमः॥ ॐ विं विष्णुमायाये नमः ॥ ॐ वें चेतनाये नमः ॥ ॐ वुं बुद्धये नमः॥ ॐ विं विष्णुमायाये नमः ॥ ॐ वें चेतनाये अं शं शक्तिः संप्र्ज्य दक्षिणदिशि ॐ छां छायाये ० ॥ ॐ शं शक्त्ये ० ॥ ॐ छं लक्ष्ये ० ॥ ॐ छां छायाये ० ॥ ॐ शं शक्त्ये ० ॥ ॐ छं लक्ष्ये ० ॥ ॐ छां छायाये ० ॥ ॐ वृं वृत्त्ये नम इति संप्र्ज्योत्तरिद्दिश ॐ सृं स्मृत्ये ० ॥ ॐ वं द्याये ० ॥ ॐ तुं तुष्ट्ये ॥ ॐ पुं पुष्ट्ये ० ॥ ॐ मां मात्रे ० ॥ ॐ वृं वृत्त्ये नमः इति संप्र्ज्योत्तरिद्दिश ॐ सृं प्राप्त्योत्तरिक्षण्ये न्त्रयोविंशदेवताः संप्र्ज्य कर्णिकामध्यस्य मध्यवीजे मूल मुज्ये श्रीमहालक्ष्य्या मूर्ति ध्यायामि नमः ॥ इति ध्यानोक्तमूर्ति परिकल्प्य पुनर्मूलमुच्याच्या श्रीमहालक्ष्य्या मूर्तिये नमः ॥ इति भाति संप्रच्या कराध्या प्राप्त्यायामि नमः ॥ इति भाति संप्रच्या स्वर्था प्राप्त्यायाम् विवर्था स्वर्था स्वर्था विवर्था स्वर्था प्राप्त्यायाम् विवर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स मूर्ति संपूज्य कराभ्यां पुष्पाञ्चलिमादाय हृदयकमले यथोक्तरूपां साङ्गां सावरणां महालक्ष्मीं ध्यात्वा तेजोरूपामावाद्यापाद्य सुषु म्नावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा प्रवहन्नासारन्ध्रेण करस्थपुष्णाञ्चलि मूलेनैतत्तेजः समानीय ॥ ॐ महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्द विब्रहे ॥ सर्वभूतहिते मातरेहोहि परमेश्वारे ॥ इति पठित्वा मूलमुच्चार्य श्रीमहालक्ष्मि इहागच्छागच्छेति कल्पितमूर्तेः शिरसि पुष्पा अलिपक्षेपेण तत्तेजस्तस्यां मृतौ ब्रह्मरन्ध्रे संयोज्यावाहनीं मुद्रां प्रदर्श्य ॥ ॐ देवेशि भिक्तमुलभे सर्वावरणसंयुते ॥ यावस्वां पूज यिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भवेति प्रार्थ्य मूलसुच्चार्य श्रीमहालिक्ष्म इह तिष्ठ तिष्ठेति स्थापनीसुद्रां प्रदर्श्य मूलं श्रीमहालक्ष्मीः इह सित्रधेहि इति सित्रधापनसुद्रया सित्रधाप्य पुनर्मूलं श्रीभगवित इह सित्रिरुद्धा भव सित्रिरुद्धा भवेति सिन्नरोधनीसुद्रया सिन्नरुध्य पुन मूलं श्रीभगवित इह संसुर्खीभव संसुर्खीभवेति संसुर्खीकरणसुद्रया संसुर्खीकृत्य पुनर्मूलं श्रीभगवित इहाग्रुण्ठिता भवेत्यवगुण्ठनसुद्र याऽवगुण्ठच देव्या अङ्गेषु षडङ्गानि विन्यस्य मूलसुच्चार्य श्रीभगवित संकलीकृता भवेत्युक्त्वा पुनर्मूलं श्रीभगवत्यमृतीकृता भवेति

उपा-स्त. ३ दुर्गा. क्षर १२८

1135211

देव्याः शिरसि घेनुमुद्दां प्रदर्शयन्नमृतवृष्टि सिञ्चन्त्य पुनर्मूलं श्रीभगवति प्रमीकृता भवेति प्रमीक्रणमुद्धां बद्ध्वा प्रमामृतम्थीभाव नव मुद्रा प्रदश्यांचांदकेन देवीं संप्रोक्ष्य पूर्वोक्तप्राणपतिष्ठामन्त्रेण मम पदस्थाने श्रीमहालक्ष्म्या इति पदं दत्त्वा प्राण प्रतिष्ठामन्त्रं जपन् देन्या हद्यं स्पृशन देन्याः प्राणप्रतिष्ठां विधाय अक्षमालाकमण्डलुबाणखङ्गवत्रगदाचकत्रिशूलपरशुशङ्क घण्टापाशशक्तिदण्डचर्मचापपानपात्रकमण्डल्वाख्या अष्टादश मुद्राः प्रदर्श्य मूलेन संपूज्य योनिमुद्रां च प्रदर्श्य मूलसुच्चार्य नमः इति पुष्पाञ्चलित्रयेण संपूज्य मूलमुच्चार्य श्रीभगवति एतत्ते आसनं नम इति पुष्पादिकमासनं दत्वा पुनर्भूलं श्रीभगवति एष तेऽर्घः स्वाहा इत्यर्घपात्रात्पात्रान्तरेण जलसुद्धृत्य देव्याः शिरसि प्रदर्श पुनर्मूलं देवीं संपूज्य पुनर्मूलं श्रीभगवति एतते पाद्यं नमः इति पाद्यपात्राज्यलमुद्धृत्य देव्याः देवीं संपूज्य पुनर्मूलमुद्यार्थ श्रीभगवति एतत्ते आचमनीय सुधेत्याचमनीयपात्राज्ञलमुद्धृत्य देव्या मुखकमले संपूज्य पुनर्मूलं श्रीभगवति एष ते मधुपर्कः सुघेति देव्या मुखकमले दिघमधुचृतात्मकं मधुपर्क दत्त्वा पुनर्मूलेन देवीं संपूज्य पुनराचमनीयपात्रातपूर्ववदाचमनीयं निवेद्य तथेव संपूज्य श्रीभगवति एतत्ते स्नानीयं नमः इति सुगन्धघृततेलेनाभ्यज्य कमलाचुद्वर्तनं परिकल्प्य शुद्धजलेरभिषिच्य प्राग्वदाचमनीयं दत्त्वा प्राग्वमूलेन संपूज्य श्रेयसीं मुद्रां वति एतत्ते वासो नमः इति चित्रदुकूलद्वयं परिधाप्य प्राग्वदाचमनीयं दत्त्वा मूलेन संपूज्य श्रीभगवति एष इति गन्धं समर्प्य गन्धमुद्रां प्रदृश्य पुनर्मूलेन संपूज्य श्रीभगवति इमानि पुष्पाणि वौषडिति नानाविधानि समर्प्य पुष्पमुद्रां प्रदर्श्य श्रीभगवति परिवारपूजार्थमनुज्ञां देहीति प्रार्थ्य देग्या दक्षिणभागे प्रथमबीजे स्थितां महाकाली ॐ ऐं काल्ये नम इति गन्धादिभिः संपूज्य देव्या वामभागे तृतीयबीजे स्थितां महासरस्वतीं पूर्वोक्तरूपा क्कीं महासरस्वत्ये नम इति गन्धादिभिः संपूज्य महालक्ष्म्याः पृष्ठे ॐ

बृ.च्डबो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१८०॥

पृष्ठे ॐ रुद्रगौरीभ्यां नमः महासरस्वत्याः पृष्ठे ॐ हृषीकेशलक्ष्मीभ्यां नमः इति संपूज्य महालक्ष्म्यप्रदक्षात्रे ॐ सिंहाय नमः वामात्रे ॐ महिषासुराय नमः षट्कोणेषु देन्यत्रकोणमारभ्य प्रादिक्षण्येन ॐ नं नन्दजाये नमः ॥ ॐ रं रक्त दिन्तकाये नमः ॥ ॐ शां शाकंभर्ये नमः ॥ ॐ दुं दुर्गाये नमः ॥ ॐ भीं भीमाये नमः ॥ ॐ भ्रां भ्रामर्ये नमः इति संपूज्य षट्कोणाद्वहिः कर्णिकायामेव आग्नेये ॥ ॐ आद्यवीज्ञयं हृदयाय नमः एवमेव ईशाने शिरसे नमः ॥ नैर्ऋत्यां शिखाये नमः ॥ वायन्यां कवचाय नमः ॥ देन्यत्रे नेत्रत्रयाय नमः ॥ देन्यत्रादिचतुर्दिश्च अस्त्राय नमः इति षडङ्गानि संपूज्याष्ट्दले देन्यत्रमारभ्य प्रादक्षिण्येन ॐ त्रं त्रह्माण्ये नमः ॥ ॐ मां माहेश्वर्ये नमः ॥ ॐ कीं कीमार्ये नमः ॥ ॐ वें वष्णन्ये नमः ॥ ॐ वां वाराह्म नमः ॥ ॐ नां नारसिंही नमः ॥ ॐ इं इन्द्राण्ये नमः ॥ ॐ चां चामुण्डाये नमः ॥ इति संपूज्य चतुरस्रप्रथमवीथ्यां देव्यश्रमारभ्य प्राद क्षिण्येन ॐ लं इन्द्राय नमः ॥ ॐ रं अश्रये नमः ॥ ॐ टं यमाय नमः ॥ क्षं निर्ऋतये नमः ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ॥ ॐ यं वायवे नमः ॥ ॐ सं सोमाय नमः ॥ ॐ ई ईशानाय नमः ॥ इति संपूज्य पूर्वेशानयोर्मध्ये आं ब्रह्मणे नमः ॥ निऋतिवरुण योर्मध्ये हीं अनन्ताय नमः ॥ इति संपूज्य वीथ्याम् ॐ वं वज्राय नमः॥ ॐ शं शक्त्ये०॥ ॐ दं दण्डाय०॥ ॐ खं खड्गाय०॥ ॐ पां पाशाय नमः ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥ ॐ गं गदाये नमः ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ॐ चं चकाय नमः इति संपूज्य मूलमुचार्य साङ्गायै सपरिवारायै श्रीमहालक्ष्म्यै नम इति जिः पुष्पाजिलि श्रीभगवति एष ते धूपो नमः ॥ इति धूपं निवेद्य धूपभाजनं स्वदक्षिणाये निवेश्य धूपमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन देवीं संपूज्य मूलमुचार्थ श्रीभगवति एष ते दीपो नम इति दीपं निवेद्य स्ववामात्रे दीपभाजनं निवेश्य दीपमुद्रां प्रदर्श्य नानाविधं नैवेद्यं स्वर्णादिपात्रे निधाय देन्याः पुरतः चतुरस्न मण्डले साधारं पात्रं संस्थाप्य अस्त्रेण प्रोक्ष्य विमिति धेनुसुद्रयाऽमृतीकृत्य सुलेनाष्ट्रवारमभिमन्ज्य इस्तेनाचींद्रकमादाय ॥ हेमपात्रगतं दिन्यं परमात्रं सुसंस्कृतम् ॥ पश्चधा षड्सोपेतं गृहाण परमेश्वरि इति नैवेद्योपिर चुलुकोद्कं

डपा.स्त. ३

समर्प्य ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहेति जलं दत्त्वा प्राणादिपञ्चमन्त्रैस्तत्तनसुद्रया पञ्च ग्रासान्त्राहियत्वा देवीं भुञ्जानां भावयन् मूलं दशवारं जापत्वा स्वर्णादिपात्रे कर्प्रादिस्वासितं सुशीतं जलमानीय मूलेन भगवत्यै निवेस स्मार्ताय्रौ मूलमन्त्रेण पश्चिविंश त्याहुती ईत्वा षडङ्गमन्त्रेः षडाहुती । वरणदेवतानां तत्तन्नाममन्त्रेरेकैकाहुती ईत्वा पूजास्थानमागत्य स्ववामाये त्रिकोणं यन्त्रं विभान्यात्रन्यञ्जनयुतं साधारं बलिपात्रं निधाय शुद्धोदकेनापूर्य गन्धपुष्पादिकं निक्षिप्य बलिपात्रं तत्र सर्वभूतानि ध्यात्वा सर्व भूतेभ्यो बलि।मति गन्धाक्षतैः संपूज्य ॐ भूता ये विविधाकारा दिग्बिद्ध स्थिताश्च ये ॥ पातालतलसंस्थाश्च ये चापि गगना श्रिताः ॥ योगिन्योऽप्युत्रह्रपाश्च गणानामधिपाश्च ये ॥ सर्वेऽप्येते सुमनसो भूता गृह्णान्त्वमं बलिम् ॥ इति भूतेभ्यो बलि दत्त्वा पुष्पाञ्जलिमादाय भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलि गृहीत्या विधिवच तानि संतोषमासाद्य त्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु तान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥ इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा क्षमाप्य नाराचमुद्रया भूतानि विसृज्य मूलमन्त्रेण शुद्धजलेनात्मानमभ्युक्ष्य देग्यै ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहेति उत्तरापोशनजलं दत्त्वा करस्य क्षालनं गण्डूषान्कारियत्वा आचमनीयं दत्त्वा सकर्पुरं ताम्बूलं निवेद्य छत्रचामरादिराजोपचारात्रिवेद्य कांस्यादिबृहत्स्थाल्यां चन्दनादिनाऽष्ट्रदलं कृत्वा तन्मध्येऽष्ट्रसु दलेषु पिष्टमयात्रव दीपान् घृतपूर्णान्कर्पुरगर्भवर्तिसहितान्निक्षिप्य हीसिति प्रज्वाल्य कचिचतुरस्रमण्डलं निधाय विसिति घेतुसुद्रयाऽष्ट्रतीकृत्यास्त्रमन्त्रेण चक्र मुद्रया संरक्ष्य श्रीं हीं ग्लूं म्लूं म्लूं म्लूं द्वीं श्रीं इति ग्रनेश्वरीविद्यया मूलमन्त्रेण च पृथकपृथगभ्यचर्य तत्पात्रं कराभ्यामादा यात्थाय मूलमुचरन् देग्याश्वरणान्मूर्धान्तं मूर्धादिचरणान्तं च पुनः पुनर्श्वामयन् नवकृत्वो नीराजयेत् इति आरार्तिकं कृत्वा मूल मन्त्रेण प्राणामत्रयं कृत्वा प्राग्रुक्तऋष्यादिन्यासं विधाय देवीं ध्यायन् मूलमन्त्रमष्टोत्तरसहस्रं तद्धी त्रिंशतमष्टोत्तरशतं वा जिपत्वा ऋषिच्छन्दोदेवतादिन्यासपूर्वकं देवीमाहात्म्यचरितत्रयं रहस्यसहितं पठित्वा तदशक्तौ मध्यमचरितं वा पठित्वा पुनः प्राग्वन्मूलमन्त्रं जिपत्वा तत्सर्व भववत्ये समर्प्य शुलेन पाहि नो देवीत्यादिचतुर्भिः श्लोकैः प्रदक्षिणानि

धर्माकंध ८ M38311

देन्यै इत्यादिभिः पञ्चभिः श्लोकैः पञ्चनमस्कारैः परितोष्य पुनः पुनः प्रणम्य सर्वस्वरूप इत्यादिषड्भिः कृताञ्जलिरिष्टार्थानां प्रार्थना कृत्वा कुमारीं सुवासिनीं वक्ष्यमाणविधिना संपूज्य भोजनादिभिः परितोष्य प्रणम्य ताम्बूलादिकं दत्त्वा विसृज्य अर्ध्यपात्रं संस्थाप्य साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्व भगवत्यम्ब गृहाणाराधनं परिमिति देव्ये किंचिदघीदकं दत्त्वा पुनः प्राग्वदघोंदकं दत्त्वा तत्पात्रं स्वस्थाने निवेश्य तज्जलं किंचिद्वामकरे निधाय पूजावशिष्टगन्धिम तन्मूलेन त्रिरिभमन्त्रय तेन स्वात्मानं प्रोक्ष्य पुष्पाञ्जलिमादाय रश्मिक्षपा महादेग्यः सन्तु सर्वाः शुभोदयाः इति पुष्पाञ्जलि दत्त्वा देग्यङ्गे परिवारदेवतां विलीनां विभाव्य देवीं तेजोह्रपां ध्यायन् संहारमुद्रया निर्माल्यपुष्पेण सह तत्तेजः समुद्धृत्य ॥ ॐगच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं । परमेश्वरि ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदमित्युचार्य वहन्नासारन्ध्रेण ब्रह्मरधं नीत्वा सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मरन्ध्रात हृदयकमल मानीय ॥ ॐ तिष्ठ तिष्ठ परे स्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि ॥ यत्र ब्रह्माद्यः सर्वे सुरास्तिष्ठन्ति मे हिद् ॥ इति संस्थाप्य यथोक्त ह्रपां देवीं ध्यायन् तन्मयः सुखं विहरेदिति ॥ अथ नित्यपूजाफलमाह ॥ अनेन विधिना नित्यं यः कुर्याञ्चिण्डकार्चनम् ॥ तस्य तुष्टा महालक्ष्मीयञ्च द्याच्छृणुष्व तत् ॥१॥ महदैश्वर्यमतुलं त्रैलोक्ये तस्य जायते ॥ धर्मराजसमायुक्तं पुत्रपौत्रसमाकुलम् ॥ २ ॥ करोति महालक्ष्मीर्बह्मविष्णुशिवोपमम् ॥ रिपवः संक्षयं यान्ति तत्स्थानाच्छतयोजनम् ॥ ३ ॥ तेनैक्येन वसन्तोऽपि न तं पश्यन्ति दस्यवः ॥ तस्य स्मरणमात्रेण विद्यानां जायते क्षयः ॥४॥ त्रिषु लोकेषु यत्किचित्ससुरासुरदुर्लभम् ॥ तत्सर्वे तं समायाति 🐰 महालक्ष्मीवसादतः ॥ ५ ॥ यो जपेन्परया भक्तया महालक्ष्मीं तु पूजयन् ॥ स नरो लभते नित्यं पूजाफलमनुत्तमम् ॥ ६ ॥ इति श्रीह॰ बृ॰ घ॰ उपा॰ श्रीदुर्गोपा॰ श्रीनिवासविरचितदुर्गापद्धतिनि॰ सप्तित्रिंशत्प्र॰ ॥ ३७ ॥ अथ दुर्गानैमित्तिककाम्यार्चन पद्धतिः ॥ उक्तं तत्रैव ॥ साधकैनैंमित्तिकं काम्यं चार्चनं कार्यं तत्रादों नैमित्तिकार्चनं तच्च विशेषदिवसेष्ठु रात्रो कार्यं नित्यार्चनं 💹 ॥१४१॥ दिवा कुर्याद्वात्री नैमित्तिकार्चनम् ॥ उभयोः कर्माणि चेति शाम्नस्य निर्णयः ॥ इति कुलार्णववचनात् ॥ विशेषदिवसास्त

उपा.स्न. ह हर्गी.

गुरुप्रमगुरुप्रमेष्टिगुरूणां दिनं च अष्टमीनवमीकृष्णचतुर्दशीपूर्णिमाऽमावस्यारविसंक्रमणेषु पुष्यनक्षत्ररविवासरयुगादिमन्वादी त्यादिषुण्यदिनानि तेषु नित्यपूजानन्तरं विशेषेण नानाविधेर्गन्धणुष्पादिभिर्महतीं पूजां कृत्वा नित्यजपात्रिगुणं जपं रहस्यचण्डी पाठादिकं च कुर्यात ॥ इति श्रीहृ॰ वृ॰ घ॰ उपा॰ स्त॰ दुर्गोपा॰ दुर्गानैमि॰ पद्धति॰ अष्टतिंशं प्रकरणम्॥३८॥अथ दुर्गादमनपूजा पद्धतिः ॥ उक्तं चण्डीसपर्याक्रमकल्पवछचाम् ॥ तत्र चैत्रे वैशाखे ज्येष्ठे वा मासे पक्षद्वयस्याष्टमीनवमीचतुर्दशीपूर्णिमाऽन्यतम तिथौ सा कार्या ॥ तत्र पूजादिनात्पूर्वेद्युः सायंकाले साधकः कृतनित्यिकयः सामयिकैः सार्धे दमनसमीपं गत्वा शिवप्रसाद संभूत अत्र सन्निहितो भव ॥ शिवकार्ये समुच्छिद्य नेतन्योऽसि शिवाज्ञया ॥१॥ इति दमनमामन्त्रय तत्र कामदेवं रितं च वक्ष्यमाण संपूज्य गृहमागच्छेत्ततः पूजादिनात्पूर्वदिने कृतनित्यिकयः समियिभिः सार्धे पुनर्दमनसमीपं विगत्वाऽस्त्रमन्त्रेण दमनं समूलमुत्पाटच शस्त्रण वा गृहमानीय अचोरे एं ॐ घोरे ह्रीं घोर घोरत्र श्रीसर्वतः शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्रह्रपेभ्यः ह्री श्रीं इति मन्त्रेण दमनमभ्युक्ष्य पूजास्थाने कचित्पात्रे दमनं नवधा विभज्य मध्ये चाष्ट्रसु दिश्च च संस्थाप्य हनमन्त्रेण चन्द्रना गरुकपूरकुङ्कमादिपङ्करालिप्य मध्यमारम्य स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन नवधा विभक्तं दमनम् ॐ हं नमः॥ ॐ सं नमः॥ ॐ क्षं नमः ॥ ॐमं नमः ॥ ॐलं नमः ॥ ॐवं नमः ॥ ॐवं नमः ॥ ॐरं नमः ॥ ॐमं नमः ॥ इति संपूज्यास्त्रमन्त्रेण संरक्ष्य कराभ्यां त्रिशूलमुद्रां बद्ध्वा कवचमन्त्रेण दमनोपरि भ्रामियित्वा नृतनविश्वणाच्छाद्य रहसि स्थापयेदित्यिघवासनं रात्रो कुर्यात् ॥ तत्राश्च मन्त्रहन्मन्त्रकवचमन्त्रादयो मूलमन्त्रस्य षडङ्गप्रोक्ता ज्ञेयाः ॥ एतं पूर्विदिने निमन्त्रणाधित्रासने न कृते चेतप्रजादिने वा तद्द्रयं कार्यमिति ॥ ततः पूजादिने प्रातः साधकः स्नानादिनित्यपूजां निर्वत्यं समियभिः सह स्वस्तिवाचनपूर्वकं दमनं पूजास्थानमानीय शुचिस्थिसिन्दूरेण चतुरस्रवृत्तद्वयवेष्टितमष्टद्लकमलं विधाय तन्मध्येऽष्टमु दुलेषु च स्वर्णोदिरचिनात्रव कलशान्बक्ष्यमाणैविधिना संस्थाप्य तदशक्तौ एकं वा कुम्भं मध्ये संस्थाप्य स्वासनपूजादिपीठपूजान्तं प्राग्नुकविधिना कृत्वा स्वद्शिणभागे सर्वतोभद्रमण्डलं

ब.ज्ज्यो.णं. धर्मस्कंध ८ 1198511

प्राग्वद्ष्ट्रदलं कमलं वा सिन्दूरादिना कृत्वा तन्मध्ये पञ्चवर्णरजोभिरशोकतकं कृत्वा तस्याभितस्त्रिकोणमण्डले कामदेवं तरुणमुक्रण वर्ण रक्तवस्त्राभरणमाल्यानुलेपनालंकृतं ध्यात्वा वं वसन्ताय नमः इति मन्त्रेण पञ्चोपचारैः संपूज्य पुनः कामदेवं तन्मन्त्रेण संपूज्याष्टदलकेसरेषु अग्नीशासुरवायव्यमध्ये चतुर्दिश्च च क्वां हृदयाय नमः ॥ क्वीं शिरसे नमः ॥ क्लूं शिखाय नमः ॥ क्कें कवचाय नमः ॥ क्वीं नेत्राय नमः ॥ क्वः अस्त्राय नमः ॥ इति षडङ्गानि संपूज्याष्ट्रदलकेसरेषु देवात्रादिप्रादक्षिण्येन ॐ कामाय नमः ॥ ॐ भस्मशरीराय नमः ॥ ॐ अनङ्गाय नमः ॥ ॐ मन्मथाय नमः ॥ ॐ वसन्ताय नमः ॥ ॐ स्मराय नमः ॥ ॐ यक्ष धनुधराय नमः ॥ ॐ पुष्पबाणाय नमः ॥ इत्यष्टी कामान्संपूज्य चतुरस्रे लोकपालांस्तदस्त्राणि च संपूज्य पुनः कामदेवं तन्मन्त्रेणाभ्यच्यं धूपदीपादिताम्बूलान्तानुपचारानुपच्यं प्रणम्य कामदेवाय विद्यहे पुष्पवाणाय धीमहि ॥ तन्नोऽनद्भः प्रचोदयात ॥ इति कामगायत्रीं यथाशक्ति जिपत्वा जपं समर्प्य ॥ नमोस्तु पुष्पबाणाय जगदानन्ददः यिने ॥ मनमथाय जगन्नेत्रेत्रे रतिप्रीतिप्रियाय च ॥ इति कामदेवं प्रणम्य ऋष्यादिन्यासं कृत् । सध्यकुम्भे देवीमावाह्य प्राग्वत्सर्वोपच्हिः साङ्गां सावरणां मदनैः संपूज्य ॥ आवाहिताऽसि देवेशि सद्यःकाले मया शिवे ॥ कर्तव्यं तु यथालाभं पूर्णे पूर्व त्वदाज्ञया इति विज्ञाप्य साङ्गां सावरणां देवीं दमनैः संपूज्य धूपदीपनैवेश्वीनित्यहोमविधिना यदुकं द्रव्यं तित्रगुणमंख्यं द्वत्वा नित्यजपसंख्यातः त्रिगुणसंख्यं जपं च कृत्वा पूजाशेषं च समाप्य स्वगुरुं वित्तादिभिः परितोष्य कुमारिका ब्राह्मणांश्वात्रा दिभिः परितोषयेदिति दमनपूजाविधिः॥ इति श्रीह० बृ० घ० ड० श्रीदु० दमनपूजाविधिनि० एकोनचत्वारिंशं प्रकरणम् ॥३९॥ अथ दुर्गापवित्रारोपणप्रयोगस्नेत्रव ॥ तत्र मिथुनसंक्रममारभ्य तुलासक्रमणाविध मासचतुष्ट्यं च पक्षद्रयगते चतुर्थ्यष्टमीनवमी चतुर्दशीपूर्णिमाऽन्यतमतिथी पवित्रेदेंवीं पूजयेत् ॥ पवित्राणि तु स्वर्णरजतताम्रपद्दस्त्रसरित्पद्मसूत्रदर्भमुअशणवल्कल 🖟 ॥१४२॥ कार्पाससूत्रेष्वन्यतमसूत्रैः कुर्यात् ॥ कार्पाससूत्रं चेत्कामिनीभिः सधवाभिः कर्तितं त्रिगुणं त्रिगुणीकृत्य नवसूत्रस्यैकसरत्वेन किल्प

उपा.स्त. श दुर्गाद

तैरुक्तसंख्येः सूत्रेः पवित्राणि कुर्यात् ॥ तत्राष्टोत्तरशतं सूत्रैहत्तमानि चतुष्पश्चाशद्धिमध्यमानि सप्तविशतिभिः कनिष्ठानि ताव त्तावदंगुरुदैष्यीणि दशदशत्रन्थियुक्तानि पवित्राणि कुर्यात् ॥ इत्थं पूजावरणदेवतावृन्दसमसंख्यानि पवित्राणि कृत्वाऽष्टोत्तर शतसरय्रिययुक्तं वितानात्पूजाविष्टरमानदैष्यमेकं बृहत्पवित्रं कृत्वाऽऽत्मनश्चागमनज्ञानां कमज्ञानां शिष्याणां च स्कन्धादिनाभि पर्यन्तं दैर्घ्ययुक्तं पक्षत्रये चैकपक्षानुसारयन्थियुक्तानि पवित्राणि कुर्यात् ॥ अन्येषां सामान्यपवित्राणि एकयन्थियुक्तानि यथेष्ट संख्यातन्तुभिः परिधानप्रमाणदैर्घाणि पवित्राणि कुर्यात् ॥ अत्र यन्थिषु सूत्रवेष्टनसंख्या तृत्तमपवित्रे षट्त्रिशनमध्येषु चतुर्वि शतिः कनिष्ठेषु द्वादशेति कवचमन्त्रेण यन्थयः कार्याः ॥ इत्थं पवित्राणि विधाय पवित्रारोपणदिनातपूर्वदिने साधकः कृतनित्य कियो रात्रो समयिभिः सार्धे पत्राणि पूजास्थानमानीय तत्र सिन्द्रकुंकुमरक्तचन्द्रनकस्तूरीकर्प्रलाक्षागैरिकाद्यैर्पन्थिस्थानेषु विचि त्राणि पवित्राणि संस्थाप्य तेषां सुत्रेषु ॐकाराय नमः ॥ चन्द्रमसे नमः ॥ वह्नये नमः ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ नागाय नमः॥ गुरवे नमः ॥ रवयेनमः ॥ सदाशिवायनमः ॥ सर्वदेवेभ्यो नमः ॥ इति संपूज्य शिरोमन्त्रेणाभिमन्त्र्य हन्मन्त्रेणाभ्युक्ष्यास्त्रमन्त्रेणावरुध्य तेषां दश ग्रन्थिषु ॐ क्रियाये नमः ॥ ॐ पीरुटये नमः ॥ ॐ वीराये नमः ॥ ॐ गायञ्ये नमः ॥ ॐ अपराजिताये नमः ॐ नमः ॥ ॐ जयाये नमः ॥ ॐ मुक्तिदाये नमः ॥ ॐ सदाशिवाये नमः ॥ ॐ मनोन्मन्ये नमः॥इतिदशशक्तीःसंपूज्यपवित्रेणमूल मन्त्रेण षडंगमन्त्रेश्च संपूज्य सुगन्धपुष्पाणि पञ्च रत्नानि सर्वोषधीश्च निक्षिप्य नृतनवस्त्रद्वयेनाच्छाद्येदित्यधिवासनंविधाय परेद्यः साधकः कृतनित्यक्रियः समयिभिः सार्घे पूजास्थानं वितानादिभिरलंकृतं प्रविश्य पूजाविष्टरादूर्ध्ववितानात्पूजाविष्टरपयेन्तं बृहत्पवित्रमालम्बयित्वा स्वासनपूजादिन्यासजातं विधाय दुमनकपूजावत्कुम्भं स्थापयित्वार्धस्थापनाद्यातमपूजां पीठपूजां तन्त्रोक्तविधिना विधाय तस्मिन्कुम्भे देवीमावाह्म सांगां साबरणां संपूज्य देन्यै मूलमन्त्रेण पवित्रं सर्वागावृतिदेवतानां च पवित्राणि समप्यं धूपदीपनैवेद्यनैमित्तिकहोमान्कृत्वा ग्रुकं सन्तोष्य तस्मे पवित्रं दत्त्वा पूर्णाहुतिं दत्त्वाऽम्रये पवित्रं समप्यं गुर्वेतुज्ञ्या स्वयमपि

पवित्रधारणं सामयिकानन्यानपि ब्राह्मणादीन् पवित्रदानदक्षिणादिमिः पि तोष्य पूजाशेषं समाप्य ब्राह्मणादीन्तं मोज्यभूरिदक्षिणा दिभिः परितोषयेदिति ॥ इति श्रीह० वृ० घ० उ० श्रीदुर्गापवित्रारोपण यथोगनि० चत्वारिंशं प्रकरणम् ॥ ४० ॥ अथ जयदुर्गामन्त्र विधानम् ॥ उक्तं च शारदातिलके ॥ तारो दुर्गे युगं रक्तमतष्ठान्तं सलोचनम् ॥ द्विठान्ता जयदुर्गेयं विद्या वेददशाक्षरी॥ १॥तारादि ।॥ १८३॥ दुर्गे ह्वरं दुर्गे शिर उदीरितम् ॥ दुर्गाये स्याच्छिखा वर्म भूतरिक्षणि कीर्तितम् ॥ २ ॥ तारादि दुर्गे युगलं रक्षण्यस्त्रमुदीरि तम् ॥ तारादि दुगै द्वितयं रक्षिण्यक्षि स्नमीरितम् ॥ ३ ॥ कालाश्राभां कटासैररिकुलभयदां मौलिमाबद्धरेखां शङ्कं ुवकं कपालं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमिखलं तेजसा पूरयन्ती ध्यायेदुर्गी जयाँख्यां त्रिदश परिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥ ४ ॥ बाणलक्षं जपेन्मन्त्रं घृतेन जुहुयात्ततः ॥ दशांशं संस्कृते वह्नो बाह्मणानिप ॥ ५ ॥ अष्टाक्षरोदिते पीठे पूजयेत्पूर्ववत् धर्धाः ॥ मन्त्रं जपन्विशे गुद्धं शत्रून्हन्यादशेषतः ॥ ६ ॥ प्रजपेद्दशंघा रात्रौ तत्रापि विजयी भवेत् ॥ अस्त्रयेदस्रशस्त्राणि जयार्थी विद्ययाऽनया ॥ ७ ॥ अस्य पूजाप्रयोगः तन्त्रसारे ॥ प्रातःकृत्यादि दुर्गा मन्त्रोक्तऋष्यादिन्यासान्तं कर्म कृत्वा कराङ्गन्यासौ कुर्यात् ॥ यथा ॐ दुर्गे अंग्रष्टाभ्यां नमः ॥ ॐ दुर्गे तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ॐ दुर्गे मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ॐ भूतरक्षिणि अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ॐ दुर्गे दुर्गिरिक्षिणि किनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ॐ दुर्गे दुर्गे रिक्षणि करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ ८ ॥ तथा निबन्धे ॥ तारादि दुर्गे हृदयं दुर्गे च शिर ईरितम् ॥ दुर्गाये स्याच्छिखा वर्म भूतरिक्षणि कीर्तितम् ॥ तारादि हुर्गे द्वितयं रक्षिण्यञ्चमुदाहतम् ॥ ९ ॥ ततो ध्यानम् ॥ कालाञ्चाभां कटाक्षेरिकुलभयदां मौलि बद्धेन्दुरेखां शङ्कं चकं कृपाण त्रिशिखमपि करैरुद्रहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंहस्कन्धाधिहृदां त्रिश्चवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ध्याये हुर्गो जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥ ३०॥ एवं ध्यात्वा मानसैरुपचारैः संपूज्यार्घस्थापनं कुर्यात् ॥ ततः पूर्वोक्तपीठ पूजां विधाय पूर्ववत्पूजां कुर्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं पञ्चलक्षजपः ॥ चृतेन दशांशहोमः ॥ तथा निबन्धे ॥ बाणलक्षं जपेनमन्त्रं

घृतेन जुहुयात्ततः ॥ ११ ॥ दशांशं संस्कृते वह्नौ ब्राह्मणानिप भोजयेत् ॥ अष्टाक्षरोदिते पीठे पूजयेत्पूर्ववतसुधीः ॥ १२ ॥ अथ जयदुर्गामन्त्रो दशाक्षरः मन्त्रकोशे ॥ ॐ दुर्गे दुर्गे रिक्षणि स्वाहा ॥ ऋषिच्छन्दसी न हृष्टे जयदुर्गा देवता इष्टार्थे जपे विनि योगः ॥ ॐ दुर्गे हृ॰ दुर्गे शि॰ रिक्षणि शि॰ स्वाहा क॰ दुर्गे रिक्षणि अस्त्रं मन्त्रान्तरैरिति पञ्चाङ्गं दुर्गे दुर्गे नेत्रमिति तेन शार दायां षडङ्गं ध्यानम् ॥ कालाश्राभां कटाक्षेररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां शङ्कं चक्रं कपालं त्रिशिखमपि करैरुद्रहन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा प्लावयन्तीं ध्यायेहुगी जयाख्यां त्रिदशपरिणुतां सेवितां सिद्धवन्य ॥ लक्षं पुरश्च रणं घृतेन पायसेन वा दशांशहोमः ॥ मन्त्रं जिपत्वा शत्रुघं शत्रूच् हन्यादशेषतः ॥ आहवे प्रविशेद्यो वे तत्रापि विजयी भवेत् ॥ ॐ नमो दुर्गे दक्षिणि स्वाहा इत्यपि कथयन्ति द्वादशाक्षरं मन्त्रम् ॥ ऋष्यादिकं पूर्ववत् ॥ ॐ नमो ह॰ दुर्गे शि॰ दुर्गे शि॰ रक्षिणि॰ क॰ स्वाहा नेत्र॰ ॥ ॐ नमो दुर्गे दुर्गे रिक्षणि स्वाहा अस्त्रं पूर्ववद्धचानादिकं कार्यम् ॥ अस्मिन्पक्षे अष्टभुजा ॥ इति श्रीह॰ बृ॰ घ॰ उपासनास्तबके दुर्गोपासनाध्याये जयदुर्गामन्त्राराधनविधानप्रयोगवर्णनं नाम एकचत्वारिंशं प्रकरणम् ॥ ४१ ॥ अथ दुर्गाषोडशनामस्तोत्रम् ॥ उक्तं च ब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखण्डे ॥ नारद उवाच ॥ सर्वाख्यानं श्रुतं ब्रह्मन्नतीव परमाद्भुतम् ॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि दुर्गोपाख्यानमुत्तमम् ॥ १ ॥ दुर्गा नारायणीशाना विष्णुमाया शिवा सती ॥ नित्या सत्या भगवती शर्वाणी सर्वमङ्गला ॥ २ ॥ अम्बिका वैष्णवी गौरी पार्वती च सनातनी ॥ नामानि कौथुमोक्तानि शुभानि शुभदानि च ॥ ३ ॥ अर्थ षोड शनामां च सर्वेषामी दिसतप्रदम् ॥ ब्रूहि वेदविदां श्रेष्ठ वेदोक्तं सर्वसंमतम् ॥ ४ ॥ केन वा पूजिता साँऽऽदौ द्वितीये केन वा पूरा ॥ तृतीये वा चतुर्थे वा केन वा सर्वपूजिता ॥ ५ ॥ नारायण उवाच ॥ अर्थ षोडशनाम्नां च विष्णुर्वेदे चकार सः ॥ पुनः पृच्छिस ज्ञात्वा च कथयामि यथागमम् ॥ ६ ॥ दुर्गे दैत्यमहाविघ्ने भववहुर्गकर्मिण ॥ शोके दुःखे च नरके यमदण्डे च जन्मिन ॥ ७ ॥ महाभयेऽतिरोगे वै चाशब्दो इन्तृवाचकः ॥ एतान् इन्त्येव या देवी सा दुर्गा परिकीर्तिता ॥ ८ ॥ यशसा तेजसा रूपैर्नारायण

बु.ज्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥१४४॥

समा गुणैः ॥ शक्तिर्नारायणस्येयं तेन नारायणी स्मृता ॥ ९ ॥ ईशानः सर्वसिद्धार्थश्वाशब्दो दातृवाचकः ॥ प्रिये दातिर चा शब्दः शिवा तेन प्रकीर्तिता ॥ १० ॥ सद्बुद्धचाधिष्ठातृदेवी विद्यमाना युगे युगे ॥ सृष्टा माया पुरा सृष्टा विष्णुना परमात्मना ॥ ॥ ११ ॥ मोहितं च यया विश्वं विष्णुमाया च कीर्तिता ॥ शिवा कल्याणह्नपा च शिवदा च शिवपिया ॥ १२ ॥ प्रिये दातिर चाशब्दः शिवा तेन प्रकीर्तिता ॥ प्रिवृता सुशीला या सा सती परिकीर्तिता ॥ १३ ॥ यथा नित्यो हि भगवान् नित्या भग वती तथा ॥ स्वमायया तिरोभूता तत्रेशे प्राकृते लये ॥ १४ ॥ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं सव मिथ्यैव कृत्रिमम् ॥ दुर्गा सत्यस्वरूपा सा प्रकृतिभगवान्यथा ॥ १५ ॥ सिद्धैश्वर्यादिकं सर्वे यस्यामस्ति युगे युगे ॥ सिद्धादिके भगो ज्ञेयस्तेन भगव ी स्मृता ॥ १६॥ सर्वान्मोक्षं प्रापयति जन्ममृत्युजरादिकम् ॥ चरा चरांश्च स्वस्थानं शर्वाणी तेन कीर्तिता ॥ १७ ॥ मङ्गलं मोक्षवचनं चाशब्दो दात्वाचकः ॥ सर्वान्मोक्षाय ददित सा एवं सर्वमङ्गला ॥ १८ ॥ हर्षे संपत्तिकल्याणे मङ्गलं परिकीर्तितम् ॥ तान्ददाति च सा देवी सा एवं सर्वमङ्गला ॥ १८ ॥ अम्बेति मातृवचना वन्दने पूजनेऽपि च ॥ पूजिता वन्दिता माता जगतां तेन साऽम्बिका ॥ २०॥ विष्णुभक्तिर्विष्णुरूपा विष्णोः शक्तिस्वरूपिणी ॥ सृष्टौ च विष्णुना सृष्टा वैष्णवी तेन कीर्तिता ॥ २१ ॥ गौरपीते च निर्लिप्ते परे ब्रह्मणि निर्मले ॥ तस्यात्मनः शक्तिरियं गौरीति तेन कीर्तिता ॥ २२ ॥ गुरूः शंभुश्च सर्वेषां तस्य शक्तिः प्रिया । सती ॥ गुरुः कृष्णश्च तन्माया गौरीति तेन कीर्तिता ॥ २३ ॥ तिथिभेदे कल्पभेदे सर्ववेद्प्रभेदके ॥ तद्धातौ तेषु विख्याता पार्वती ॥ तेन कीर्तिता ॥ पर्वतस्य सुता देवी साऽऽविभूता च पर्वते ॥ २४ ॥ पर्वताधिष्ठातृदेवी पार्वती तेन कीर्तिता ॥ सर्वकाले सना पोक्ता विद्यमाना सनातनी ॥ २५ ॥ सर्वत्र सर्वकाले सा विद्यमाना सनातनी ॥ अर्थः षोडशनाम्नां च कीर्तितश्च महामुने ॥ २६ ॥ यथा गमं च वेदोक्तमाख्यानं च निशामय ॥ प्रथमे पूजिता सा च कृष्णेन परमात्मना ॥ २७ ॥ वृन्दावने च सृष्ट्यादौ गोलोके रास मण्डले ॥ मधुकेटभभीतेन ब्रह्मणा सा द्वितीयके ॥ २८ ॥ त्रिपुरप्रेरितेनैव तृतीये त्रिपुरारिणा ॥ श्रष्टश्रिया महेन्द्रेण शापाहुर्वाससः

डपा.स्त. इ दुर्गाः अ० १२८

113881

पुरा ॥ २९ ॥ चतुर्थे पूजिता देवी अत्तया अगवती सती ॥ तदा मुनीन्द्रेः सिद्धेन्द्रैर्मनुना नरैः ॥ ३० ॥ पूजिता सर्व विश्वेषु वभूव सर्वतः सदा ॥ तेजःमु सर्वदेवानां साऽऽविर्भूता पुरा मुने ॥ ३१ ॥ सर्वे देवा दृदुस्तस्ये शस्त्राणि भूषणानि च ॥ दुर्गा दयश्च दैत्याश्च निहता गदया तया ॥ ३२ ॥ दत्तं स्वराज्यं देवेभ्यो वरं च यदभीष्मितम् ॥ कल्पान्तरे पूजिता सा मुरथेन महा त्मना॥३३॥इति श्रीह० ह० घ० उपा० स्त० श्रीदुर्गीपा० ध्या० ब्रह्मवै० दुर्गाषोडशनामस्तोत्रनिरूपणं नाम द्विचत्वारिंशं प्रकरणम्॥ ॥ ४२ ॥ अथ दुर्गास्तोत्रं तत्रैव ॥ परशुराम उवाच ॥ श्रीकृष्णस्य च गोलोके परिपूर्णतमस्य च ॥ आविर्भृता विश्रहतः परा सृष्ट्युन्मुखस्य च ॥ ॥ ३ ॥ सूर्यकोटिश्रभायुक्ता रत्नालङ्कारभूषिता ॥ विह्नगुद्धांशुकाधाना सस्मिता सुमनोहरा ॥ २ ॥ नः यौवनसंपन्ना सिन्दूरविन्दुशोभिता ॥ लल्झा कवरीभारमालतीमाल्यमण्डिता ॥ ३ ॥ अहो निर्वचनीया त्वं चार्वी मूर्ति च विश्रती ॥ मोक्षप्रदा मुमुक्षुणां महाविष्णुविधिः स्वयम् ॥ ४ ॥ मुमोह क्षणमात्रेण हङ्घा त्वां सर्वमोहिनीम् ॥ रासे संभूय सहसा सिस्मताऽऽराधिता पुरा॥ ५॥ सद्भिः ख्याता तेन राथा मूलप्रकृतिरीश्वरी॥ कृष्णस्त्वां सहसाऽऽज्ञाय वीर्याधानं चकार ह॥ ६॥ ततो डिम्भं महो जज्ञे वतो भूतो महाविराद् ॥ यस्यैव लोमकूपेषु ब्रह्माण्डान्यखिलानि च ॥ ७ ॥ तच्छुङ्गारश्रमेणैव त्वन्निश्वासो बभूव ह ॥ ततस्त्वं पञ्चघा भूत्वा पश्चमूर्ति च विश्रती ॥८॥ प्राणाधिष्ठात्री या मूर्तिः कृष्णस्य परमात्मनः ॥ कृष्णप्राणाधिकां राधां तां विदन्ति पुराविदः ॥९॥ वेदाधिष्ठात्री या सूर्तिवेदशास्त्रप्रसूरि ॥ तां सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ १० ॥ ऐश्वर्याधिष्ठात्री सूर्तिर्या शान्तिः शान्तिरूपिणी ॥ लक्ष्मीं विदन्ति सन्तरत्वां शुद्धसत्त्वस्वरूपिणीम् ॥११॥ रागाधिष्ठात्री या देवी शुक्लमूर्तिसुताप्रसुः ॥ सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञाः प्रवदन्ति अहो भ्रवि ॥१२॥ बुद्धिविंद्या सर्वशिक्तिज्यों मुक्तिरिधदेवता ॥ सर्वमङ्गलरूपाणि सर्वमङ्गलकारिणी ॥१३॥ सर्वमंगलबीजस्य शिवस्य मिद्रिरेऽधुना ॥ शिवे शिवस्वरूपा त्वं लक्ष्मीनीरायणान्तिके ॥ १४ ॥ सरस्वती च सावित्री वेदस व्रह्मणः प्रिया ॥ राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च ॥१५॥ परमानन्द्रह्मपाणि च्छाया चन्द्रस्य रोहिणी ॥ शची शकस्य कामस्य

धर्मस्कंध ८ ॥१४५॥

कामिनी रतिरीश्वरी ॥ १६ ॥ वरुणानी जलेशस्य वायोःस्त्री प्राणवछभा ॥ वहेः प्रिया या स्वाहा च कुवेरस्य च सुन्द्री ॥ १७ ॥ यमस्य च सुशीला च नैर्ऋतस्य च कोटभी ॥ ईशानस्य शिकला शतरूपा मनोः प्रिया ॥ १८ ॥ देवहूतिः कर्दमस्य बसिष्ट स्याप्यरुन्धती ॥ अदितिर्देवमाता या सुद्राऽगस्त्यसुनेः प्रिया ॥ १९ ॥ अहल्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुधरा ॥ गंगा च तुलसी चापि पृथिन्यां या सिरद्ररा ॥ २० ॥ एताः सर्वाश्च या अन्याः सर्वास्त्वत्कलयाऽम्बिके ॥ गृहलक्ष्मीगृहं नृणां राज लक्ष्मीश्च राजसु ॥ २१ ॥ तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च ॥ सतां सत्यस्वरूपा त्वं हास्तां कलहांकुरा ॥२२॥ ज्योति रूपा निर्गुणस्य शक्तिस्त्वं सगुणस्य च ॥ सूर्यं प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने ॥ २३ ॥ जले शैत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे ॥ त्वं भूमौ गन्धरूपा च गगनाकाशरूपिणी ॥२४॥ स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वा ज्ञानशक्तिर्विपश्चिताम् ॥ कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रस्ः शुभा ॥२५॥ शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युअये शिवे ॥ सृष्टिपालनसंहारशक्तयिश्वविधाश्व याः ॥ २६ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोऽस्तु ते ॥२७॥ मधुकैटभभीतो च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः ॥ स्तुत्वा मुमोच यां देवीं तां सूर्प्रा प्रणमाम्यहम् ॥ २८ ॥ मधुकैटभयोर्थुद्धे प्राप्तोऽसौ विष्णुरीश्वरि ॥ बभूव शक्तिमाच् स्तुत्वा यां हुर्गा तां नमाम्यहम् ॥ २९ ॥ त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे ॥ यां तुष्टुवुः सुराः सर्वे तां हुर्गा प्रणमाम्यहम् ॥ ३० ॥ विष्णुना वृषद्धपेण स्वयं शंभुः समुत्थितः ॥ जघान त्रिपुरान्स्तुत्वा यां हुर्गा तां नमाम्यहम् ॥ ३१ ॥ कलाचकं च जगति शश्वद्धमित वेगतः ॥ मृत्युश्चरित जन्त्वोघे तां दुर्गी प्रणमाम्यहम् ॥ ३२ ॥ स्रष्टा सृजति सृष्टं च पाता पाति यदाज्ञया ॥ संहर्ता संहरेत्काले तां दुर्गी प्रणमाम्य हम् ॥ ३३ ॥ ज्योतिःस्वरूपो भगवान् श्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम् ॥ यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम् ॥ ३४ ॥ रक्ष रक्ष जगन्मातरपराधान् क्षमस्व मे ॥ श्रुलिनामपराधेन तांश्च माता न कुप्यति ॥ ३५ ॥ इत्युक्तवा पर्शुरामश्च तां प्रणम्य हरोद च ॥ तुष्टा दुर्गा संभ्रमेण चाभयं च वरं ददी ॥३६॥ अमरो भव रे पुत्र वत्स सुस्थिरतां वज ॥ सर्वप्रसादात्सर्वत्र जयोऽस्तु तव

हुगाई ख॰ १२८

1138611

संततम् ॥ ३७ ॥ सर्वान्तरात्मा भगवांस्तुष्टोऽस्तु सततं हरिः ॥ भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ ॥ ३८ ॥ इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिभेवति शाश्वती ॥ तं हन्तुं न हि शक्ताश्च रुष्टाश्च सर्वदेवताः ॥ ३९ ॥ श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यस्त्वं शङ्करस्य च॥ गुरुपत्नी भयात्सा हि कस्त्वां हन्तुं महेश्वरः ॥ ४० ॥ अहो न कृष्णभक्तानामश्चभं विद्यते कचित् ॥ अन्यदेशेषु भक्ता वा न भक्ता वा निरङ्कशाः ॥ ४१ ॥ चन्द्रमा बलवांस्तुष्टो येषां भाग्यवतां भृगो ॥ तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वन्ति च दुर्बलाः ॥ ४२ ॥ यस्य तुष्टः सभायां चेन्नरदेवो महान् सुखी।। तस्य किं वा करिष्यन्ति रुष्टा भृत्याश्च दुर्वलाः ॥४३॥ इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामं शुभाशिषम् ॥ जगन्मातुः पुरं तूर्णं हरिशब्दो बभूव इ ॥ ४४ ॥ काण्वशाखोक्तस्तोत्रं च पूजाकाले च यः पठेत् ॥ यत्राकाले च प्रातर्वा वाञ्छितार्थं लभेद् ध्रुवम् ॥४५॥ पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी कन्यकां लभेत् ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी लभते प्रजाम्॥ ॥ ४६ ॥ अष्टराज्यो लभेद्राज्यं धनं अष्टधनो लभेत् ॥ यस्य तुष्टो गुरुर्दैवो राजानो बान्धवास्तथा ॥४७॥ तस्य तुष्टश्च वरदः स्तोत्र राजप्रसादतः ॥ दस्युत्रस्तोऽहित्रस्तश्च शत्रुत्रस्तो भयानकः ॥ ४८ ॥ व्याधित्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः ॥ राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बन्धने ॥ ४९ ॥ जलराशौ निमयश्च मुक्तो भवति स्तोत्रतः ॥ स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदेऽतिदारुणे ॥५०॥ स्तोत्र स्मरणमात्रेण वाञ्छितार्थं लभेर ध्रुवम् ॥ कृत्वा इविष्यं वर्षे च स्तोत्रराजं शृणोति या ॥५१॥ भक्ता दुर्गो च संपूज्य महावन्ध्या प्रसू यते ॥ लभते सा दिन्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम् ॥ ५२ ॥ असीभाग्या च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाञ्चभेत् ॥ नवमासं काक वन्ध्या मृतवत्सा च भक्तितः ॥ ५३ ॥ स्तोत्रराजं या शृणोति सा पुत्रं लभते भुवम् ॥ कन्यामाता पुत्रहीना पञ्चमासं शृणोति या ॥ ५४ ॥ घटे संपूज्य दुर्गा च सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ ५५ ॥ इति श्रीहर बूर घर उपासनास्तबके दुर्गीपासनाध्याये परशुराम प्रोक्तं दुर्गास्तोत्रं नाम त्रिचत्वारिशं प्रकरणम् ॥४३॥ अथ दुर्गाकवचं तत्रैव ॥ नारद उवाच ॥ कवचं कथितं ब्रह्मन् पद्मायाश्च मनो हरम् ॥ परं दुर्गतिनाशिन्याः कवचं कथय प्रभो ॥ १ ॥ पद्माक्षः प्राणतुल्यं च जीवनाय चकार यम् ॥ कवचानां च यत्सारं दुर्ग

बृ.ज्ज्बो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१४६॥

नाशनकारणम् ॥ २ ॥ नारायण उवाच ॥ शृणु नारद् वक्ष्यामि दुर्गायाः कवचं शुभम् ॥ श्रीकृष्णेनैव यद्त्तं गोलोके ब्रह्मणे पुरा ॥ ३ ॥ ब्रह्मा त्रिपुरसंत्रामे शंकराय ददौ पुरा ॥ जघान त्रिपुरं रुद्रो यद्धृत्वा भक्तिपूर्वकम् ॥ ४ ॥ हरो ददौ गौतमाय पद्मा क्षाय च गौतमः ॥ यतो बभूव पद्माक्षः सप्तद्वीपेश्वरो महान् ॥ ५ ॥ यद्धृत्वा पठनाद्वसा ज्ञानवान् शक्तिमान्त्रभुः ॥ शिवो बभूव सर्वज्ञो योगिनां च ग्रुरुर्वतः ॥ ६ ॥ शिवतुल्यो गौतमश्च बभूव ग्रुनिसत्तमः ॥ यतो बभूव पद्माक्षः सप्तद्वीपेश्वरो जयी ॥ ७ ॥ ब्रह्माण्डविजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ॥ ऋषिश्छन्दश्च गायत्री देवी दुर्गतिनाशिनी ॥ ८ ॥ ब्रह्माण्डविजयेष्वेव विनियोगः प्रकी तितः ॥ पुण्यजीवश्च महतां कवचं परमाद्धतम् ॥ ९ ॥ दुर्गादुर्गतिनाशिन्ये स्वाहा मे पातु मस्तकम् ॥ ह्वीं मे हीं श्रीं पातु लोचने ॥ १०॥ पातु मे कर्णथुग्मं चं दुं दुर्गाये नमः सदा ॥ एँ ह्रां श्रीं इति नासां मे सदा मां पातु सर्वतः ॥ ११ ॥ दुर्गे दुर्गे रक्षणीति स्वाहा चास्य सदाऽवतु ॥ श्रीं हीं क्वीं इति दन्तालीं पातु हीमोष्ठयुग्मकम् ॥ १२ ॥ हीं हीं हीं पातु कण्ठं च दुर्गे रक्षतु गण्डकम् ॥ स्कन्धं दुर्गविनाशिन्यै स्वाहा पातु निरन्तरम् ॥ १३ ॥ वक्षो विपद्धिनाशिन्यै स्वाहा मे पातु सर्वतः ॥ दुर्गे दुर्गे रक्षणीति स्वाहा नाभि सदा वतु ॥ १४ ॥ दुर्गे दुर्गे रक्ष रक्ष पृष्ठं मे पातु सर्वतः ॥ ॐ दुं दुर्गाये स्वाहा च हस्ती पादी सदाऽवतु ॥ १५ ॥ श्रीं ह्रां दुर्गायै स्वाहा च सर्वाङ्गं में सदाऽवतु ॥ प्राच्यां पातु महामाया चामेथ्यां पातु कालिका ॥ १६ ॥ दक्षिणे दक्षकन्या च नैर्ऋत्यां शिवसुन्दरी ॥ पश्चिमे पार्वती पातु वाराही वारुणे सदा ॥ १७ ॥ कुबेरमाता कौबेर्यामीशान्या मीश्वरी सदा ॥ ऊर्ध्व नारायणी पातु ह्याञ्चिकाऽधः सदाऽवतु ॥ १८ ॥ ज्ञानं ज्ञानप्रदा पातु स्वप्ना स्वप्ने सदाऽवतु ॥ इति ते कथितं वत्सं सर्वमन्त्रीचिवत्रहम् ॥ १९ ॥ ब्रह्माण्डविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥ स स्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वपानेषु यत्फलम् ॥२०॥ सर्वत्रतोपवासे च तत्फळं लभते नरः ॥ गुरुसभ्यच्यं विधिवद्वज्ञालंकारचन्द्नैः ॥२१॥ कण्ठे वा दक्षिणे बाही कवचं धारयेत्तु यः ॥ कवर्च कण्वशाखोक्तमुक्तं नारद सुन्दरम् ॥२२॥ यस्मै कस्मै न दातन्यं गोपनीयं सुदुर्लभम् ॥ २३ ॥ इति श्रीह० बृ० घ० उपासना

डपा.स्त**. १** दुर्का,

1138811

स्तबके दुर्गोपासनाध्याये गणपतिखण्डोक्तदुर्गाकवचनि॰ नाम चतुश्चत्वारिंशं प्रकरणम् ॥३४॥ अथ् दुर्गासहस्रनामस्तोत्रम् ॥ उक्तं च कुलाणिवे ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ मम नामसइसं च शिवपूर्विविनिर्मितम् ॥ तत्पठचतां विधानेन तदा सर्वे भविष्यति ॥ १ ॥ इत्युक्तव पार्वती देवी श्रावयामास तच्च तान् ॥ तदेव नामसइसं दकारादि वरानने ॥ २ ॥ रोगदारिद्यदीभाग्यशोकदुःखिवनाशकम् ॥ सर्वास पूजितं नाम श्रीदुर्गा देवता मता ॥ ३ ॥ निजवीजं भवेर्द्वाजं मन्त्रं कीलकमुच्यते ॥ सर्वाशापूरणे देवी विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ दुर्गा दुर्गतिहरा दुर्गाचलिनवासिनी ॥ दुर्गमार्गत्रवेशिनी ॥ दुर्गा मार्गकृतावासा दुर्गमार्गजयप्रिया ॥ ६ ॥ दुर्गमार्गगृहीताची दुर्गमार्गस्थितातिमका ॥ दुर्गमार्गस्तुतिपरा दुर्गमार्गस्पृतिः परा ॥ ७ दुर्गमार्गसदास्थाली दुर्गमार्गरितिप्रिया ॥ दुर्गमार्गस्थलस्थाना दुर्गमार्गविलासिनी ॥ ८ ॥ दुर्गमार्गत्यक्तवस्था दुर्गमार्गप्रवर्तिनी दुर्गासुरिनहन्त्री च दुर्गासुरिनषूदिनी ॥ ९ ॥ दुर्गासुरहरा दूर्ती दुर्गासुरिवनाशिनी ॥ दुर्गासुरवधोन्मत्ता दुर्गासुरवधोत्सका ॥१०॥ दुर्गासुरवधोत्साहा दुर्गासुरवधोत्सका ॥ १०॥ दुर्गासुरवधोत्साहा दुर्गासुरवधोद्यता ॥ दुर्गासुरवधप्रेपसुर्दुर्गासुरमखान्तकृत् ॥ ११ ॥ दुर्गासुरध्वंसतोषा दुर्गदानवदारिणी ॥ दुर्गविद्रावणकरी दुर्गविद्रावणी सद् ॥ १२ ॥ दुर्गविक्षोभणकरी दुर्गशिकिनकृत्तनी ॥ दुर्गविद्रावणी सद् ॥ १२ ॥ दुर्गविक्षोभणकरी दुर्गशिकिनकृत्तनी ॥ दुर्गविध्वंसनकरी दुर्गदैत्यिनकृत्तनी ॥ १३ ॥ दुर्गदैत्यप्राणहरा दुर्गदैत्यान्तकारिणी ॥ दुर्गदैत्यहरत्राता दुर्गदैत्यासृगुन्मदा ॥ १४ ॥ दुर्गदैत्याशनकरी दुर्गचर्माम्बरावृता ॥ दुर्गयुद्धोत्सवकरी दुर्गा युद्धविशारदा ॥ १५ ॥ दुर्गयुद्धासवरता दुर्गयुद्धविमदिनी ॥ दुर्गयुद्धहास्यरता दुर्गयुद्धहिसी ॥ १६ ॥ दुर्गयुद्धमहामत्ता दुर्गयुद्धा वसारिणी दुर्गयुद्धोत्सवोत्साहा दुर्गदेशनिषेविणी ॥१७॥ दुर्गदेशवासरता दुर्गदेशविलासिनी॥दुर्गदेशार्चनरता दुर्गदेशजनिपया॥१८॥ दुर्गमस्थानसंस्थाना दुर्गमध्यात्तसाधना॥ दुर्गमा दुर्गमध्याना दुर्गमात्मस्वरूपिणी॥१९॥ दुर्गमागमसंधाना दुर्गमागमसंस्तुता॥ दुर्गमा गमडुर्ज्ञेया दुर्गमश्रुतिसंमता ॥ २० ॥ दुर्गमश्रुतिमान्या च दुर्गमश्रुतिपूजिता ॥ दुर्गमश्रुतिसुप्रीता दुर्गमश्रुतिहर्षदा ॥ २१ ॥ दुर्ग मश्रुतिसंस्थाना दुर्गमश्रुति गानिता ॥ दुर्गमाचारसन्तुष्टा दुर्गमाचारतोषिता ॥ २२ ॥ दुर्गमाचारनिर्वृत्ता दुर्गमाचारपूजिता ॥ दुर्ग

ब्र.डच्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ 1108611

माचारकलिता दुर्गमस्थानदायिनी ॥ २३ ॥ दुर्गमप्रेमनिरता दुर्गमद्रविणप्रदा ॥ दुर्गमाम्बुजमध्यस्था दुर्गमाम्बुजवासिनी ॥ २८ ॥ 🖔 दुर्गनाडीमार्गगतिदुर्गनाडीप्रचारिणी ॥ दुर्गनाडीपद्मरता दुर्गनाडचम्बुजिस्थिता ॥ २५ ॥ दुर्गनाडीगतायाता दुर्गनाडीकृतास्पदा ॥ दुर्गनाडीरतरत दुर्गनाडीशसंस्तुता ॥ २६ ॥ दुर्गनाडीश्वरता दुर्गनाडीश्वरता दुर्गनाडीशसंस्तुता ॥ २६ ॥ दुर्गनाडीश्वरता दुर्गनाडीशचुम्बिता ॥ दुर्गनाडीशकोडस्था दुर्गनाडचित्रतात्मुका ॥ ॥ २७ ॥ दुर्गनाडचारोहणा च दुर्गनाडीनिषेविता ॥ द्रिस्थाना द्रिस्थानवासिनी द्रुजान्तकृत् ॥ २८ ॥ द्रीकृततपस्या च द्री द्रीजापितदिष्टा च द्रीकृतरतिकिया ॥ २९ ॥ द्रीकृतहराही च द्रीकीडिपुत्रिका ॥ द्रीसंदर्शनरता द्रीरोपित वृश्चिका ॥ ३० ॥ द्रीग्रुप्तिकौतुकाढ्या द्रीश्रमणतत्परा ॥ द्वुजान्तकरी दीना द्वुसंतानदारिणी ॥ ३ ॥ द्वुजध्वंसिनी दूना द्वुजेन्द्रविनाशिनी ॥ दानध्वंसिनी देवी दानवानां भयंकरी ॥ ३२ ॥ दानवी दानवाराध्या निहन्त्री च दानवद्वेषिणी सती ॥ ३३ ॥ दानवारिप्रेमरता दानवारिप्रपूजिता ॥ दानवारिकृतार्चा च दानवारिविभूतिदा ॥ ३४ ॥ दानवारिमहानन्दा दानवारिरतिप्रिया ॥ दानवारिदानरता दानवारिकृतास्पदा ॥ ३६ ॥ दानवारिस्तृतिरता दानवारिस्मृतिप्रिया दानवार्याहाररता दानवारिप्रबोधिनी ॥ ३६ ॥ दानवारिधृतप्रेमा दुःखशोकविमोचिनी ॥ दुःखहन्त्री दुःखदात्री दुःखनिर्मूल कारिणी ॥ ३७ ॥ दुःखनिर्मूलनकरी दुःखदार्यारेनाशिनी ॥ दुःखहरा दुःखनाशा दुःखग्रामा दुरासदा ॥ ३८ ॥ दुःखहीना दुःख धारा द्रविणाचारदायिनी ॥ द्रविणोत्सर्गसन्तुष्टा द्रविणत्यागतोषिका ॥ ३९ ॥ द्रविणस्पर्शसन्तुष्टा द्रविणस्पर्शमानदा ॥ द्रविण स्पर्शहर्षाढचा द्रविणस्पर्शतिष्टिदा ॥ ४० ॥ द्रविणस्पर्शनकरी द्रविणस्पर्शनातुरा ॥ द्रविणस्पर्शनोत्साहा द्रविणस्पर्शसाधिता ॥ ॥ ३१ ॥ द्रविणस्पर्शनमता द्रविणस्पर्शेषुत्रिका ॥ द्रविणस्पर्शरिक्षणी द्रविणस्तोमदायिनी ॥ १२ ॥ द्रविणाकर्षणकरी द्रविणोघ विसर्जनी ॥ द्रविणाचलदानाढ्या द्रविणाचलवासिनी ॥ ४३॥ दीनमाता दीनबन्धुदीनविघ्नविनाशिनी ॥ दीनसेन्या दीनसिद्धा दीन साध्या दिगम्बरी ॥ ४४ ॥ दीनगेहकृतानन्दा दीनगेहविलासिनी ॥ दीनभावप्रेमरता दीनभावविनोदिनी ॥ ४५ ॥ दीनमानव

उपा.स्न. ह हर्गी.

चेतःस्था दीनमानवहर्षदा ॥ दीनदैन्यनिघातेच्छुदीनद्रविणदायिनी ॥ ४६ ॥ दीनसाधनसंतुष्टा दीनदर्शनदायिनी ॥ दीनपुत्रादि दात्री च द्विसंपद्विधायिनी ॥ ४७ ॥ दत्तात्रेयध्यानरता दत्तात्रेयप्रपूजिता ॥ दत्तात्रेयपिसंसिद्धा दत्तात्रेयकृताही च दत्तात्रेयप्रसाधिता ॥ दत्तात्रेयहर्षदात्री दत्तात्रेयसुखपदा ॥ ४९ ॥ दत्तात्रेयस्तुता चैव दत्तात्रेयनुता सदा ॥ दत्तात्रेयप्रेमरता दत्तात्रेयानुमानिता ॥ ५० ॥ दत्तात्रेयसमुद्गीता दत्तात्रेयकुटुम्बिनी ॥ दत्तात्रेयप्राणतुल्या दत्तात्रेयशरीरिणी दत्तात्रियदुःखहरा दत्तात्रेयवरप्रदा ॥ ५३ ॥ दतात्रेयज्ञानदात्री दत्तात्रेयभयापहा ॥ देवकन्या देवमान्या देवदुःखवि देवपूज्या देवेज्या देववन्दिता ॥ देवमान्या देवधन्या देवविन्नविनाशिनी ॥ ५५ ॥ देवकामा देवरामा देवद्विष्टविनाशिनी ॥ देवदेवप्रिया देवी ५९ ॥ देवदेवकोडरता देवदेवसुखप्रदा ॥ देवदेवमहानन्दा देवदेवप्रचु ॥ देवदेवगतप्राणा देवदेवगतारिमका ॥ ६२ ॥ देवदेवधर्मपत्नी देवदेवमनोगता ॥ देवदेववधूर्वैवदेवदेवार्चनिप्रया ॥ ६३ ॥ देवदेवाङ्कनिलया देवदेवाङ्क देवाङ्गसुखिनी देवदेवाङ्गवासिनी ॥ ६४ ॥ देवदेवाङ्गभूषा च देवदेवाङ्गभूषणा ॥ देवदेवप्रियकरी देवदेवाप्रियान्तकृत् ॥ ॥ देवदेवप्रियप्राणा देवदेविषयात्मिका ॥ देवदेवार्चकप्राणा देवदेवार्चकप्रिया ॥६६॥ देवदेवार्चकोत्साहा देवदेवार्चकिष्रया द्वदेवार्चकाविष्ठा देवदेवप्रसुरि ॥६७॥ देवदेवस्य जननी देवदेविधायनी ॥ देवदेवस्य रमणी देवदेवहृदाश्रया ॥६८॥ देवदेवेष्टदेवी देवतापसपातिनी ॥ देवताभावसंतुष्टा देवताभावतोषिता ॥६९॥ देवताभाववरदा देवताभावसिद्धिदा ॥ देवताभावसंसिद्धा देवता ब.ज्ज्यो.णं. धर्मस्कंध ८ 1138511

भावसंभवा॥ ७० ॥ देवताभावसुखिनी देवताभाववन्दिता देवताभावसुप्रीता देवताभावहर्षदा ॥ ७१ ॥ देवताविष्नहन्त्री च देवता दिष्टनाशिनी ॥ देवतापूजितपदा देवताप्रेमतोषिता ॥ ७२ ॥ देवतागारिनलया देवतासौरूयदायिनी ॥ देवतानिजभावा च देवता तमानसा ॥ ७३ ॥ देवताकृतपादाची देवताहृतभक्तिका ॥ देवतागर्वमध्यस्था देवतादेवतातनुः ॥ ७४ ॥ दुं दुर्गायै नमो नाम्नी हुंफण्मन्त्रस्वरूपिणी ॥ दूं नमो मन्त्ररूपा च दूं नमो मूर्तिकात्मिका ॥ ७५ ॥ दूरदर्शिप्रिया दुष्टा दुष्ट्भूतनिषेविता ॥ दूरदर्शिप्रेमरता दूरदर्शिप्रियंवदा ॥ ७६ ॥ दूरदर्शिसिद्धिदात्री दूरदर्शिप्रतोषिता ॥ दूरदर्शिकण्ठसंस्था दूरदर्शिप्रहर्षिता ॥ ७७ ॥ दूरदर्शिगृहीतार्चा दूरदर्शिप्रतर्पिता ॥ दूरदर्शिप्राणतुल्या दीर्घदर्शिसुखपदा ॥ ७८ ॥ दूरदर्शिश्चान्तिहरा दूरदर्शिहदास्पदा ॥ दूरदर्शिवद्भावा दीर्घ द्शिंप्रमोदिनी ॥ ७९ ॥ दीवेद्शिंप्राणतुल्या दीवेद्शिंवरप्रदा ॥ दीवेद्शिंद्रधेदात्री दीवेद्शिंप्रहाषिता ॥ ८० ॥ दीवेद्शिंमहानन्दा दीर्घदर्शिगृहालया ॥ दीर्घदर्शिगृहीतार्चा दीर्घदर्शिहताईणा ॥ ८१ ॥ द्या दानवती दात्री द्यालुदीनवत्सला ॥ द्याद्वी च द्या शीला द्याढ्या च द्यात्मिका ॥ ८२ ॥ द्या दानवती दात्री द्यालुदीनवत्सला ॥ द्याद्वी च द्याशीला द्याढ्या च त्मिका ॥ ८३ ॥ द्याम्बुधिर्वयासारा द्यासागरपारगा ॥ द्यासिन्धुर्दयाभारा द्यावत्करुणाकरी ॥ ८४ ॥ द्यावद्वत्सला देवी दया दानरता सदा ॥ दयावद्गिक्तसुखिनी दयावत्परितोषिता ॥ ८५ ॥ दयावत्स्नेहनिरता दुयावत्प्रतिपादिका ॥ दयावञ्चाणकर्ञी च द्यावन्मुक्तिदायिनी ॥ ८६ ॥ द्यावद्भावसंतुष्टा द्यावत्परितोषिता ॥ द्यावत्तारणपरा द्यावित्सिद्धिदायिनी ॥ ८७ ॥ द्या वत्पुत्रवद्भावा दयावत्पुत्ररूपिणी ॥ दयावदेहनिलया दयावन्धुर्दयाश्रया ॥ ८८ ॥ दयालुवात्सल्यकरी दयालुसिद्धिदायिनी ॥ दयालु शरणाशक्ता दयालुदेहमन्दिरा ॥ ८९ ॥ दयालुभिक्तभावस्था द्यालुप्राणकृषिणी ॥ दयालुप्रखदा दम्भा दयालुप्रेमवार्षेणी ॥ ९० ॥ दयाळुवशागा दीर्घा दीर्घाक्जी दीर्घळोचना ॥ दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्दीर्घबाहुळतात्मिका ॥ ९१ ॥ दीर्घकेशी दीर्घमुखी दीर्घ ॥१८०॥ घोणा च दारुणा ॥ दारुणासुरहन्त्री च दारुणासुरदारिणी ॥ ९२ ॥ दारुणाहवकत्री च दारुणाहवहर्षिता ॥ दारुणाहवहोमाढ्या

उपा.स्त. ह बुगींद्र अर १२६

दारुणाचळनाशिनी ॥ ९३ ॥ दारुणाचारनिरता दारुणोत्सवहर्षिता ॥ दारुणोद्यतरूपा च दारुणारिनिवारिणी ॥ ९४ ॥ दारुणे क्षणसंयुक्ता दोश्चतुष्किवराजिता ॥ दशदोष्का दशभुजा दशबाहुविराजिता ॥ ९५ ॥ दशास्त्रधारिणी देवी दशदिक्ख्यात विकमा ॥ दशरथाचितपदा दाशरथिप्रिया सदा ॥ ९६ ॥ दाशरथिप्रेमतुष्टा दाशरथिरतिप्रिया ॥ दाशरथिप्रियकरी दाशरथिप्रियं वदा ॥ ९७ ॥ दाशरथीष्टसंदात्री दाशरथीष्टदेवता ॥ दाशरथिद्वेषिनाशा दाशरथ्यानुकूल्यदा ॥ ९८ ॥ दाशरथिप्रियतमा दाश रथिप्रपूजिता ॥ दशाननारिसंपूज्या दशाननारिदेवता ॥ ॥९९॥ दशाननारिप्रमदा दशाननारिजनमभूः ॥ दशाननारिस्तिदा दशा ननारिसेविता॥ १००॥ दशाननारिसुखदा दशाननारिवैरिहत्॥ दशाननारीष्टदेवी दशत्रीवारिवन्दिता॥ १॥ जननी दशत्रीवारिभाविनी ॥ दशत्रीवारिसहिता दशत्रीवसभाजिता ॥ २ ॥ दशत्रीवारिग्मणी दशत्रीववधूरिप ॥ दशत्रीवनार्श कर्जी दशत्रीववरप्रदा ॥ ३ ॥ दशत्रीवपुरस्था च दशत्रीववधोत्सुका ॥ दशत्रीवप्रीतिदात्री दशत्रीविवनाशिनी ॥ ४ ॥ दशत्रीवाहव करी दशब्रीवानपायिनी ॥ दशब्रीविषया वन्द्या दशब्रीवहृता तथा ॥ ५ ॥ दशब्रीवाहितकरी दशब्रीवेश्वरिषया ॥ दशब्रीवेश्वरप्राणा दशयीववरप्रदा ॥ ६ ॥ दशयीवे वररता दशवषीयकन्यका ॥ दशवषीयबाला च दशवषीयवासिनी ॥ ७ ॥ दशपापहरा दम्या दश इस्तविभूषिता ॥ दराशस्त्रलसद्दोष्का दशदिक्पालवन्दिता ॥ ८ ॥ दशावतारह्मपा च दशावतारह्मपिणी ॥ दशविद्याभिन्नदेवी दश प्राणस्वरूपिणी ॥ ९ ॥ दशविद्यास्वरूपा च दशविद्यामयी तथा ॥ हक्स्वरूपा हक्प्रदात्री हयूपा हक्प्रकाशिनी ॥ ११० । दिगन्तरा दिगन्तस्था दिगम्बरविलासिनी ॥ दिगम्बरसमाजस्था दिगम्बरप्रपूजिता ॥ ११ ॥ दिगम्बरसहचरी दिगम्बरकृतास्पदा॥ दिगम्बरहृतचित्ता दिगम्बरकथाप्रिया ॥ १२ ॥ दिगम्बरग्रुणरता दिगम्बरस्वरूपिणी ॥ दिगम्बरशिरोधार्या दिगम्बरहृता श्रया ॥ १३ ॥ दिगम्बरप्रेमरता दिगम्बररतातुरा ॥ दिगम्बरीस्वरूपा च दिगम्बरीगणार्चिता ॥ १४ ॥ दिगम्बरीगणप्राणा दिग म्बरीगणप्रिया ॥ दिगम्बरीगणाराध्या दिगम्बरगणेश्वरी ॥ १५ ॥ दिगम्बरगणस्पर्शामदिरामानविह्वला ॥

बुःज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१८९॥

दिगम्बरीगणावृता ॥ १६ ॥ दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्या दुरितकमा ॥ दुरन्तद्वानवद्वेष्टी दुरन्तद्वुजान्तकृत् ॥ १७ ॥ दुरन्त पापहन्त्री च दस्र मिस्तारकारिणी ॥ दस्र मानससंस्थाना दस्रज्ञानिवार्धनी ॥ १८ ॥ दस्रसंभोगजननी दस्रसंभोगदायिनी ॥ दस्र संभोगभवना दस्रविद्याविधायिनी ॥ १९ ॥ दस्रोद्रेगहरा दस्रजननी दस्रसुन्द्री ॥ दस्रभितविधाज्ञाना दस्रद्विष्टविनाशिनी ॥ ॥ १२० ॥ दस्रदिष्टविनाशिनी ॥ १२० ॥ दस्रदेन्यहरा चैव दस्रतातिषे ॥ १२० ॥ दस्रपितृशत्ज्योतिदस्रकौशल्दायिनी ॥ दस्रताराधीता च दस्रमातृप्रपूजिता ॥ २१ ॥ दस्रदेन्यहरा चैव दस्रतातिषे विता ॥ दस्रपितृशत्ज्योतिदस्रकौशल्दायिनी ॥२२॥दशर्शीर्षारिसहिता दशर्शीर्षारिकामिनी ॥ दशर्शीर्षपुरी देवी दशर्शीर्षसभाजिता २३॥ दशशीर्षारिस्प्रप्रीता दशशीर्षवधूप्रिया ॥ दशशीर्षशिरश्छेत्री दशशीर्षनितम्बिनी ॥ २४ ॥ दशशीर्षहरप्राणा दशशीर्ष हरात्मिका ॥ दशशीर्षहराराध्या दशशीर्षरिवन्दिता ॥ २५ ॥ दशशीर्षारिसुखदा दशशीर्षकपालिनी ॥ दशशीर्षज्ञानदात्री दश शीर्षारिदेहिनी ॥ २६ ॥ दशशीर्षवधोपात्तश्रीरामचन्द्रहूपता ॥ दशशीर्षराष्ट्रदेवी दशशीर्षारिसारिणी ॥ २७ ॥ दशशीर्षश्रात तृष्टा दशशीर्षवधूप्रिया ॥ दशशीर्षवधूपाणा दशशीर्षवधूरता ॥ २८ ॥ दैत्यगुरुरता साध्वी दैत्यगुरुपपूजिता ॥ दैत्यगुरूपदेष्टी च दैत्य गुरुनिषेविता ॥ २९ ॥ दैत्यगुरुगतत्राणा दैत्यगुरुतापनाशिनी ॥ दुरन्तदुःखशमनी दुरन्तद्मनी तसी ॥ १३० ॥ दुरन्तशोकशमनी दुरन्तरोगनाशिनी ॥ दुरन्तवैरिद्मनी दुरन्तदैस्यनाशिनी ॥ ३१ ॥ दुरन्तकळुषन्नी च दुष्कृतिस्तोमनाशिनी ॥ दुराशया दुराधारा दुर्जया दुष्टकामिनी ॥ ३२ ॥ दर्शनीया च हश्या च हश्या च हिंगोचरा ॥ दूतीयागिष्रया दूती दूतीयागकरिषया ॥ ३३ ॥ द्तीयागकरानन्दा दूतीयागसुखपदा ॥ दूतीयागकरायाता दूतीयागप्रमोदिनी ॥ ३४ ॥ दुर्वासःपूजिता चैव दुर्वासोसुनिभाविता ॥ हुर्वासोऽर्चितपादा च हुर्वासोमीनभाविता ॥ ३५ ॥ हुर्वासोमुनिबम्या च हुर्वासोमुनिदेवता ॥ हुर्वासोमुनिमाता च हुर्वासोमुनि सिद्धिदा ॥ ३६ ॥ हुर्वासोमुनिभावस्था हुर्वासोमुनिसेविता ॥ हुर्वासोमुनिचित्तस्था हुर्वासोमुनिमण्डिता ॥ ३७ ॥ हुर्वासो सुनिसंचारा दुर्वासोहृदयंगमा ॥ दुर्वासोहृदयाराध्या दुर्वासोहृत्सरोजगा ॥ ३८ ॥ दुर्वासस्तापसाराध्या

डपा.स्त. ३

300 M

हुर्वासस्तापसरता हुर्वासस्तापसेश्वरी ॥ ३९ ॥ हुर्वासोद्धनिकन्या च हुर्वासोद्धतसिद्धिद्दा ॥ दररात्री दरहरा दरयुक्ता दरापहा ॥ ॥ १४० ॥ दरस्री दरह्री च दरयुक्ता दराश्रया ॥ ४१ ॥ दरस्मेरा दरापांगी दया दात्री दयाश्रया ॥ दस्रपूज्या दस्रमाता दस्र देवी दुरोन्मदा ॥ ४२ ॥ दस्रसिद्धा दस्रसंस्था दस्रतापविमोचिनी ॥ दस्रक्षोभहरा नित्या दस्रलोकगतात्मिका ॥ ४३ ॥ दैत्य गुर्वगनावन्द्या दैत्यगुर्वगनाप्रिया।। दैत्यगुर्वगनासिद्धा दैत्यगुर्वगनोत्सुका ॥ ४४ ॥ दैत्यगुरुप्रियतमा गुरुप्रसुरूपा देवगुरुकृताईणा ॥ ४५ ॥ देवगुरुप्रेमगुता देवगुर्वनुमानिता ॥ देवगुरुप्रभावज्ञा देवगुरुसुखप्रदा दात्री देवगुरुप्रमोदिनी ॥ दैत्यस्त्रीगणसंपूज्या दैत्यस्त्रीगणपूजिता ॥ ४७ ॥ दैत्यस्त्रीगणरूपा च दैत्यस्त्रीचित्तहारिणी पुज्या च देवस्त्रीगणवन्दिता ॥ ४८ ॥ देवस्त्रीगणचित्तस्था देवस्त्रीगणभूषिता ॥ देवस्त्रीगणसंसिद्धा देवस्त्रीगणतोषिता ॥ ४९ । देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुचामरवीजिता ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थचारुगन्धविलेपिता ॥ १५० ॥ देवांगनोत्स्रष्टनागवछीदलकृतोत्सुका ॥ ६३ ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थं दीपमाला विलोकना ॥ देवस्त्रीगणहस्तस्थधपत्राणविनोदि द्वनारीकरगतवासकासवपायिनी ॥ द्वनारीकङ्कातिकाकृतकेशनियार्जना ॥ ॥ देवनारीविरचितपुष्पमालाविराजिता ॥ ५४ ॥ देवनारीविचित्रांगी देवस्त्रीदत्तभोजना ॥ गीतसोत्सुका ॥ ५५ ॥ देवस्त्रीनृत्यसुखिनी देवस्त्रीनृत्यदर्शिनी ॥ देवस्त्रीयोजितलसद्दनपादूपद्म्बुजा ॥ चारुतल्पनिषेदुषी ॥ देवनारीचारुकराकलितांत्रचादिदेहिकाः ॥ ५७ ॥ देवनारीकरव्ययतालवृन्तमरुत्सुखा नाद्सोत्कण्ठमानसा ॥ ५८ ॥ देवकोटिस्तुति नुता देवकोटिकृताईणा ॥ देवकोटिगीतगुणा दृष्टचोद्रेगफला देवकोलाकुला ॥ द्रेषरागपरित्यक्ता द्रेषरागविवर्जिता ॥ १६० ॥ दामपूज्या दामोद्रप्रेमरता दामोद्रभिगन्यपि ॥ ६१ ॥ दामोद्रप्रसूर्दामोद्रपत्नीपतित्रता ॥ दामोद्राभिन्नदेहा दामोद्ररितिप्रया

ब.ज्ज्यो.र्ज. धर्मस्कंध ८ ॥१६०!!

दामोदराभिन्नतनुद्धिमोदरकृतास्पदा ॥ दामोदरकृतप्राणा दामोदरगतात्मिका ॥ ६३ ॥ दामोदरकौतुकाढचा दामोदरकलाकला ॥ लिंगितांगी दामोदरकुतृहला ॥ ६४ ॥ दामोदरकृताह्नादा दामोदरसुचुम्बिता ॥ दामोदरसुताकृष्टा दामो । दामोदरसहाढचा च दामोदरसहायिनी ॥ दामोदरगुणज्ञा च दामोदरवरप्रदा ॥ ६६ ॥ दामोदरानुकूला नेतिम्बिनी ॥ दामोद्रजलकीडाकुशला दर्शनिषया ॥ ६७ ॥ दामोद्रजलकीडात्यक्तस्वजनसौहदा ॥ दामोद्रलसदासकेलि कौतुकिनी तथा ॥ ६८ ॥ दामोद्रश्रातृका च दामोद्रपरायणा ॥ दामोद्रधरा दामोद्रवैरिविनाशिनी ॥ ६९ ॥ दामोद्रोपजाया च दामोद्रनिमन्त्रिता ॥ दामोद्रपराभूता दामोद्रपराजिता ॥ १७० ॥ दामोद्रसमाकान्ता दामोद्रहताञ्चभा ॥ रता दामोद्रोत्सवावहा ॥ ७१ ॥ दामोद्रस्तन्दात्री दामोद्रगवेषिता ॥ दमयन्तीसिद्धिदात्री दमयंतीप्रसाधिता ॥ ७२ ॥ दम यन्तीष्टदेवी च दमयन्तीस्मरूपिणी ॥ दमयन्तीकृताची च दमनिषिविभाविता॥७३॥दमनिषेप्राणतुल्या दमनिषस्वरूपिणी ॥ दमनिष स्वरूपा च दम्भपूरितवित्रहा ॥ ७४ ॥ दम्भहन्त्री दम्भधात्री दम्भलोकविमोहिनी ॥ दम्भशीला दम्भहरा दम्भवत्परिमार्दिनी ॥ ॥ ७६ ॥ दम्भरूपा दम्भकरी दम्भसन्तानदारिणी ॥ इत्तमोक्षा दत्तधना दत्तारोग्या च दाम्भिका ॥ ७६ ॥ दत्तपुत्रा दत्तदारा दत्त हारा च दारिका ॥ दत्तभोगा दत्तशोका दत्तहस्त्यादिवाहना ॥७७॥ दत्तमतिर्दत्तभार्या दत्तशास्त्रावबोधिका ॥ दत्तपाना दत्तदाना दत्तदारिद्यनाशिनी ॥ ७८ ॥ दत्तसौधावनीवासा दत्तस्वर्गां च दासदा ॥ दास्यतुष्टा दास्यहरा दासदासीशतप्रदा ॥ ७९ ॥ दारह्रपा दारवासा दारवसिहदास्पदा ॥ दारवासिजनाराध्या दारवासिजनितया ॥ १८० ॥ दारवासिविनिर्मिता दारवास्याहतप्राणा दारवास्यरिनाशिनी ॥ ८१ ॥ दारवासिविष्ठहरा दारवासिविष्ठिक्तिदा ॥ दाराष्ट्रिक्षिणी दारा दारकार्थरिनाशिनी ॥ ८२ ॥ दम्पती दम्पतीष्टा च दम्पतीप्राणकिपिका ॥ दम्पतीक्षेहिनरता दाम्पत्यसाधनिपया दाम्पत्यसुखदायिनी ॥ दम्पत्याचारनिरता दम्पत्यामोदमोदिता॥ ८४ ॥ दम्पत्यामोदसुखिनी

उपा.स्त. इं दुर्गा.

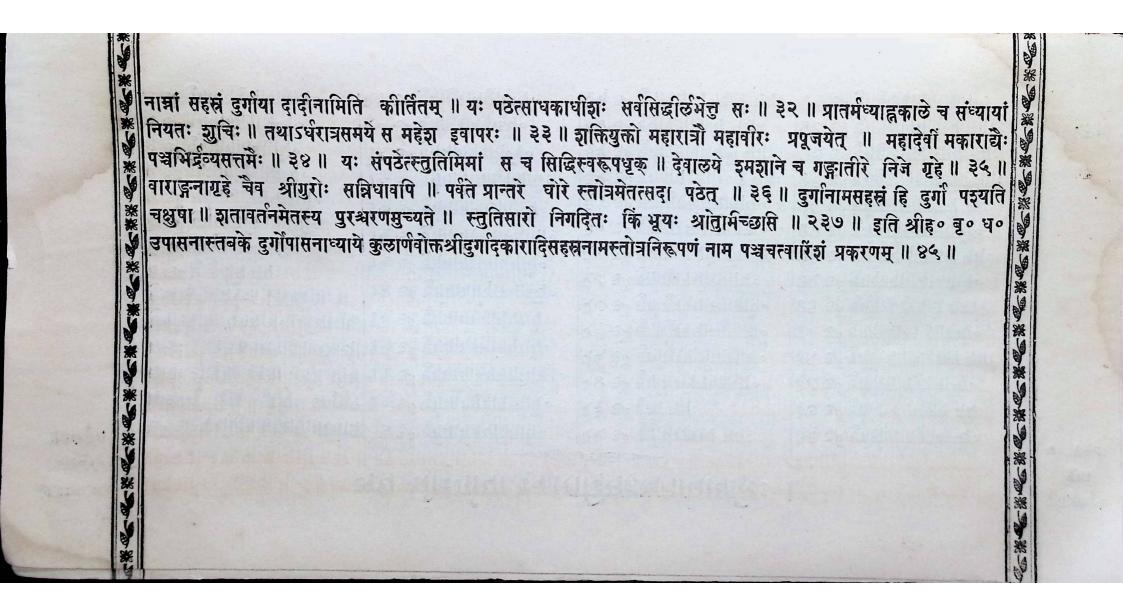
अ० १२८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafqarh Delhi Collection

दाम्पत्यप्रेमरूपिणी ॥ ८५ ॥ दाम्पत्यभोगभवना दाडिमीफलभोजिनी ॥ दाडिमीफलसंतुष्टा दाडिमीफलमानसा ॥ ॥ ८६ ॥ दाडिमीवृक्षसंस्थाना दाडिमीवृक्षवासिनी ॥ दाडिमीवृक्षरूपा च दाडिमीवनवासिनी ॥ ८७ ॥ दाडिमीफलसाम्योरूपयो धरसमन्विता ॥ दक्षिणा दक्षिणारूपा दक्षिणारूपधारिणी ॥ ८८ ॥ दक्षकन्या दक्षपुत्री दक्षमाता च दक्षसूः ॥ दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ८९ ॥ दक्षयज्ञनाशकर्जी दक्षयज्ञान्तकारिणी ॥ दक्षप्रसृतिर्दक्षेज्या दक्षवंशैकपावनी ॥ १९० ॥ दक्षात्मजा ॥ दक्षजन्मा दक्षजनुर्दक्षदेहसमुद्भवा॥ ९१ ॥ दक्षजनिर्दक्षयागध्वंसिनी दक्षकन्यका ॥ दक्षिणाचार निरता दक्षिणाचारतुष्टिदा ॥ ९२ ॥ दक्षिणाचारसंसिद्धा दक्षिणाचारभाविता ॥ दक्षिणाचारसुलिनी दक्षिणाचारसाधिता ॥ ९३॥ दक्षिणाचारमोक्षाप्तिर्दक्षिणाचारवन्दिता ॥ दक्षिणाचारश्ररणा दक्षिणाचारहर्षिता ॥ ९४ ॥ द्वारपाछित्रया द्वारवासिनी द्वारसंस्थिता ॥ द्वाररूपा द्वारसंस्था द्वारदेशनिवासिनी ॥ ९५ ॥ द्वारकरी द्वारधात्री दोषमात्रविवर्जिता ॥ दोषाकरा दोषहरा दोषराशिविनाशिनी ९६॥ दोषाकरिवभूषाढ्या दोषाकरकपाछिनी॥ दोषाकरसहस्राभा दोषाकरसमानना॥ ९७॥ दोषाकरमुखी दिन्या दोषाकरकरा ॥ ९८ ॥ दोषाकरश्रेणिदोषसदृशापाङ्गवीक्षणा ॥ दोषाकरेष्टदेवी दोषाकरप्राणरूपा दोषाकरमरीचिका ॥ दोषाकरोञ्जसद्राटा दोषाकरसुहर्षिणी ॥ दोषाकरवधूप्रिया ॥ दोषाकरवधूप्राणा दोषाकरवधूमता ॥ ३ ॥ दोषाकरवधूप्रीता दोषाकरवधूरि ॥ दोषापूज्या तथा दोषापूजिता दोषहारिणी ॥२॥ दोषाजापमहानन्दा दोषाजापपरायणा ॥ दोषापुरश्चाररता दोषापूजकपुत्रिणी ॥ ३ ॥ दोषापूजकवात्सल्यकारिणी दोषापूजकवैरिन्नी दोषापूजकविन्नहत् ॥ ४ ॥ दोषापूजकसंतुष्टा दोषापूजकमुक्तिदा ॥ दमप्रसूनसंपूज्या प्रिया सदा ॥ ५ ॥ दुर्योधनप्रपूज्या च दुःशासनसमर्चिता ॥ दण्डपाणिप्रिया दण्डपाणिमाता द्यानिधिः ॥ ६ ॥ दण्डपाणिसमाराध्या दुण्डपाणिप्रपूजिता ॥ दण्डपाणिगृहासका दण्डपाणिप्रियंवदा ॥ ७ ॥ दण्डपाणिप्रियतमा दण्डपाणिमनोह्रा ॥ दण्डपाणिहतप्राणा ब्र.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१६१॥

दण्डपाणिसुसिद्धिद्। ॥ ८ ॥ दण्डपाणिपरामृष्टा दण्डपाणिप्रहार्षिता ॥ दण्डपाणिविघ्नहरा दण्डपाणिशिरोधृता ॥ ९ ॥ दण्डपाणि प्राप्तचर्चा दण्डपाण्युन्सुखी सदा ॥ दण्डपाणिप्राप्तपदा दण्डपाणिवरोन्सुखी ॥ २१० ॥ दण्डहरूता दण्डपाणिर्दण्डबाहुर्दरान्तकृत् ॥ दण्डदोष्का दण्डकरा दण्डिचत्तकृतास्पदा ॥ ११ ॥ दण्डिविद्या दण्डिमाता दण्डिखण्डकनाशिनी ॥ दण्डिप्रिया दण्डिपूज्या दण्डि सन्तोषदायिनी ॥ १२ ॥ दस्युपूज्या दस्युरता दस्युद्रविणदायिनी ॥ दस्युवर्गकृताही च दस्युवर्गविनाशिनी ॥ १३ ॥ दस्युनिर्णा शिनी दस्युकुळनिर्णाशिनी तथा ॥ दस्युप्रियकरी दस्युनृत्यदर्शनतत्परा ॥ १४ ॥ दुष्टदण्डकरी दुष्टवर्गविद्राविणी तथा ॥ दुष्टवर्ग नियहाही दृष्कप्राणनाशिनी ॥१५॥ दूषकोत्तापजननी दूषकारिष्टकारिणी॥ दूषकद्वेषणकरी दाहिका दहनात्मिका ॥१६॥ दारुकारि निइन्त्री च दारुकेश्वरपूजिता ॥ दारुकेश्वरमाता च दारुकेश्वरवन्दिता ॥ १७ ॥ दर्भहरूता दर्भयुता दर्भकर्मविवर्जिता ॥ दर्भमयी दर्भतजुर्दभिसर्वस्वरूपिणी ॥ १८ ॥ दर्भकर्माचाररता दर्भहरूतकृताईणा ॥ दर्भाजुकूला दार्भर्या द्वीपात्राजुदामिनी ॥ १९ ॥ द्मघोष द्मघोषसमाराध्या दावाभिक्षपिणी तथा॥ २२०॥ दावाभिक्षपा दावाभिनिणीभितमहाबला दंशासुरकछा दन्तचर्चितहस्तिका ॥२१॥ दन्तदंष्ट्रस्यन्दना च दन्तिनिर्णाशितासुरा॥ द्धिपूज्या द्धिप्रीता द्धीचिवरद्। दंधीचीष्टदेवता च दंधीचिमोक्षदायिनी ॥ दंधीचिदैन्यहन्त्री च दंधीचिद्ररदारिणी ॥ २३ ॥ दंधीचिभक्तिसुखिनी दंधीचिमुनिसेविता ॥ द्धीचिज्ञानदात्री च द्धीचिग्रणदायिनी ॥२४॥ द्धीचिकुलसंभूषा द्धीचिभ्रुक्तिम्रक्ति ॥ द्धीचिकुलदेवी च द्धीचिकुलदेवता च द्धीचिकुलपूजिता ॥ द्धीचिसुखदात्री च द्धीचिदैन्यहारिणी ॥ ,२६ ॥ द्धीचिदुःखहन्त्री च सुन्द्री ॥ द्धीचिकुलसंभूता द्धीचिकुलपालिनी ॥ २७ ॥ द्धीचिद्।नगम्या च द्धीचिद्।नमानिनी ॥ द्यीचिजपसंप्रीता द्यीचिजपमानसा ॥ द्यीचिजपपूजाढ्या द्यीचिजपमालिका संतुष्टा द्धीचिजपतोषिणी ॥ द्धीचितापसाराध्या द्धीचिञ्जभदायिनी ॥ २३० ॥ दूर्वी दूर्वीद्छश्यामा दूर्वीद्छसमद्युतिः

उपा.स्त. १ दुर्गा.



बृ.ज्ज्यो. जी धर्मस्कंध ८ 1194211

अथ श्रीदुर्गाया दकारादिसहस्रनामावलिः ।

पुष्पाक्षतसमूर्पणे विानियोगः॥ ॐ दुं दुर्गाये नमः ॐ दुर्गतिहराये नमः ॐ दुर्गाचलनिवासिन्यै॰ ४ ॐ दुर्गमार्गानुसंचारायै॰ , ॐ दुर्गमार्गनिवासिन्यै॰ ॐ दुर्गमार्गप्रविष्टायै॰

७ ॐ दुर्गमार्गप्रवेशिन्यै॰

८ ॐ दुर्गमार्गकृतावासायै॰

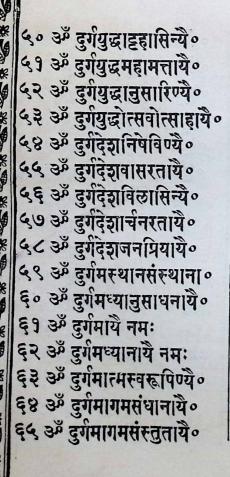
ॐ अस्य श्रीदुर्गासहस्रन।मस्तोत्र ९ ॐ दुर्गमार्गनयप्रियाये॰
मन्त्रस्य शिव ऋषिः अनुषुप् १० ॐ दुर्गमार्गम्हिताचीये॰
छन्दः श्रीदुर्गा देवता निजं बीजं ११ ॐ दुर्गमार्गस्थतात्मिका॰
मन्त्रः कीछकं सर्वाज्ञापूरकश्री १२ ॐ दुर्गमार्गस्तुतिपराये॰
दुर्गादेवीप्रीत्यर्थमेभिर्नामभिरमुक १३ ॐ दुर्गमार्गस्मृतिपराये॰
पष्पाक्षतसमर्पणे विनियोगः॥ १४ ॐ दुर्गमार्गसद्गरथाल्ये॰ १५ ॐ दुर्गमार्गरतिप्रियायै॰ १६ ॐ दुर्गमार्गस्थलस्थाना० १७ ॐ दुर्गमार्गविलासिन्यै॰ १८ ॐ दुर्गमार्गत्यक्तवस्त्रायै॰ १९ ॐ दुर्गमार्गप्रवर्तिन्यै॰ २० ॐ दुर्गासुरनिहन्त्र्यै० २१ ॐ दुर्गासुरानिषुदिन्यै॰

|२२ ॐ दुर्गासुरहराये नमः २३ ॐ दूत्ये नमः २४ ॐ दुर्गासुरविनाशिन्यै॰ २५ ॐ दुर्गासुरवधोन्मत्तायै॰ २६ ॐ दुर्गासुरवधोत्सुकायै॰ २७ ॐ दुर्गासुरवधोत्साहायै॰ २८ ॐ दुर्गासुरवधोद्यतायै॰ २९ ॐ दुर्गासुरवधप्रेप्सवे नमः ३० ॐ दुर्गासुरमखान्तकृते० ३१ ॐ दुर्गासुरध्वंसतोषायै॰ ३२ ॐ दुर्गदानवदारिण्ये नमः ३३ ॐ दुर्गविद्वावणकर्ये नमः ३४ ॐ दुर्गविद्राविण्ये नमः ३५ ॐ दुर्गविक्षोभणकर्ये नमः

३६ ॐ दुर्गशीर्षनिक्वन्तिन्यै॰ ३७ ॐ दुर्गविष्वंसनकर्ये नमः ३८ ॐ दुर्गदैत्यनिक्वन्तिन्यै॰ ३९ ॐ दुर्गदैत्यप्राणहरायै नमः ४० ॐ दुर्गदैत्यान्तकारिण्ये॰ ४१ ॐ दुर्गदैत्यहरत्रात्रे नमः ४२ ॐ दुर्गदैत्यासृगुन्भदायै॰ ४३ ॐ दुर्गदैत्याज्ञनकर्ये नमः ४४ ॐ दुर्गचमीम्बरावृतायै॰ ४५ ॐ दुर्गयुद्धोत्सवकर्ये नमः ४६ ॐ दुर्गयुद्धविज्ञारदाये नमः ४७ ॐ दुर्गयुद्धासवरताये नमः ४८ ॐ दुर्गयुद्धविमार्दिन्ये नमः ४९ ॐ दुर्गयुद्धहास्यरताये॰

उपा.स्त. ३ दुर्गी. अ० १२८

1194211



६६ ॐ दुर्गमागमदुर्ज्ञेयायै० ६७ ॐ दुर्गमश्चतिसंमतायै॰ ६८ ॐ दुर्गमश्चितमान्यायै॰ ६९ ॐ दुर्गमश्चतिपूजितायै॰ ७० ॐ दुर्गमश्चतिसुप्रीतायै० ७१ ॐ दुर्गमश्चतिहर्षदायै॰ ७२ ॐ दुर्गमश्चतिसंस्थानायै॰ ७३ ॐ दुर्गमश्रुतिमानितायै॰ ७४ ॐ दुर्गमाचारसंतुष्टायै॰ ७५ ॐ दुर्गमाचारतोषितायै॰ ७६ ॐ दुर्गमाचारनिर्वृतायै॰ ७७ ॐ दुर्गमाचारपूजितायै॰ ७८ ॐ दुर्गमाचारविशतायै॰ ७९ ॐ दुर्गमस्थानदायिन्यै॰ ८० ॐ दुर्गमप्रेमानिरतायै० ८१ ॐ दुर्गमद्रविणप्रदायै॰

८२ ॐ दुर्गमाम्बुजमध्यस्थाये॰ ८३ ॐ दुर्गमाम्बुजवासिन्यै॰ ८४ ॐ दुर्गनाडीमार्गगत्यै॰ ८५ ॐ दुर्गनाडीप्रचारिण्यै॰ ८६ ॐ दुर्गनाडीपद्मरतायै॰ ८७ ॐ दुर्गनाडचम्बुजस्थिता॰ ८८ ॐ दुर्गनाडीगतायातायै॰ ८९ ॐ दुर्गनाडीकृतास्पदायै॰ ९० ॐ दुर्गनाडीरतरतायै० ९१ ॐ दुर्गनाडीश्रसंस्तुतायै॰ ९२ ॐ दुर्गनाडीश्वररतायै० ९३ ॐ दुर्गनाडीश्चस्बतायै० ९४ ॐ दुर्गनाडीशकोडस्थायै० ११० ॐ द्रीभ्रमणतत्परायै० ९५ ॐ दुर्गनाडचित्थितोत्सुका० १११ ॐ दुनुजान्तकर्यें नमः ९६ ॐ दुर्गनाडचारोहणायै० ११२ ॐ दीनायै नमः ९७ ॐ दुर्गनाडीनिषेवितायै० ११३ ॐ द्वसंतानदारिण्यै०

९८ ॐ दरिस्थानायै नमः ९९ ॐ दरिस्थानवासिन्यै॰ १०० ॐ दनुजान्तकृते नमः १०१ ॐ द्रीकृततपस्यायै० १०२ ॐ द्रीकृतहरार्चनायै॰ १०३ ॐ द्रीजापितदिष्टायै॰ १०४ ॐ द्रीकृतरतिकियायै॰ १०५ ॐ दरीकृतहराहीयै॰ १०६ ॐ द्रीकीडितपुत्रिकायै॰ १०७ ॐ दरीसंदर्शनरतायै॰ १०८ ॐ दरीरोदितवृश्चिकायै॰ १०९ ॐ द्रीग्रिप्तिकौतुकाढ्या॰

वृ,ज्ज्यो, र्ण. धर्मस्कंध ८

🖔 ११४ ॐ दनुजध्वंसिन्यै० 💥 ११५ ॐ दूनाये नमः ॥१५३॥ ११६ ॐ द्वुजेन्द्रविनाशिन्यै॰ ११७ ॐ दानवध्वंसिन्ये नमः ११८ ॐ देव्ये नमः ११९ ॐ दानवानां भयंकर्यें॰ १२० ॐ दानव्ये नमः १२१ ॐ दानवाराध्यायै॰ १२२ ॐ दानवेन्द्रवरप्रदायै० १२३ ॐ दानवेन्द्रनिहन्ड्ये॰ १२४ ॐ दानवद्वेषिणीसत्यै॰ १२५ ॐ दानवारिप्रेमरतायै॰ १२६ ॐ दानवारिप्रपूजितायै॰ १२७ ॐ दानवारिकृताचीयै॰ १२८ ॐ दानवारिविभूतिदा॰ १२९ ॐ दानवारिमहानन्दा०

१३० ॐ दानवारिरतिप्रियायै० । १४६ ॐ दुःखश्रामायै नमः १३१ ॐ दानवारिदानरतायै॰ १३२ ॐ दानवारिकृतारपदा॰ १३३ ॐ दानवारिस्तुतिरता॰ १३५ ॐ दानवार्याहाररतायै॰ १३६ ॐ दानवारिप्रबोधिन्यै॰ १३७ ॐ दानवारिधृतप्रेमायै॰ १३८ ॐ दुःलशोकविमोचि॰ १३९ ॐ दुःखहुन्त्रये नमः १४० ॐ दुःखदाःयै नमः १४२ ॐ दुःखनिर्मूलनकर्ये १४३ ॐ दुःखदार्यारेनाजिन्यै० १४४ ॐ दुःखहरायै नमः १४५ ॐ दुःखनाज्ञायै नमः

१४७ ॐ दुरासदाये नमः १४८ ॐ दुःबहीनायै नमः १४९ ॐ दुःखधाराये नमः १३४ ॐ दानवारिस्मृतिप्रिया । १५० ॐ द्रविणाचारदायिन्यै । १५१ ॐ द्रविणोत्सर्गसंतुष्टा॰ १५२ ॐ द्रविणत्यागतोषिका० १६८ ॐ द्रविणाचलवासिन्यै० १५३ ॐ द्रविणस्पर्शसंतुष्टा॰ १५४ ॐ द्विणस्पर्शमानदायै० १७० ॐ दीनबन्धवे नमः १५५ ॐ द्विणरूपर्शहर्षाढचायै १७१ ॐ दीनविन्नविनाज्ञान्यै॰ १५६ ॐ द्विणरूपर्जातुष्टिदायै० १७२ ॐ दीनसेन्याये नमः १४१ ॐ दुःखिनमूलकारिण्ये॰ १५७ ॐ द्विणस्पर्शनकर्यें॰ १७३ ॐ दीनसिद्धाये नमः १५८ ॐ द्विणस्पर्शनातुरायै० १७४ ॐ दीनसाध्यायै नमः १५९ ॐ द्विणस्पर्शनोत्साहा० १७५ ॐ दिगम्बयें नमः १६० ॐ द्विणस्पर्शसाधितायै १७६ ॐ दीनगेहकृतानन्दायै० १६१ ॐ द्रविणरूपर्शनमतायै० १७७ ॐ दीनगेहविलासिन्यै०

। १६२ ॐ द्रविणरूपर्शपुत्रिका॰ १६३ ॐ द्रविणरूपर्शरक्षिण्यै॰ १६४ ॐ द्रविणस्तोमदायिन्यै॰ १६५ ॐ द्रविणाकर्षणकर्यै॰ १६६ ॐ द्रविणौषविसर्जिन्यै॰ १६७ ॐ द्रविणाचलद्रानाढ्या॰ १६९ ॐ दीनमात्रे नमः

उपा स्त. ३ दुर्गा अ० १२८

॥१५३॥



१९४ ॐ दत्तात्रेयहर्षदात्र्ये नमः २१० ॐ दत्तात्रेयदुःखह्राये० १९५ ॐ दत्तात्रेयसुखपदायै॰ २११ ॐ दत्तात्रेयवरपदायै॰ १९६ ॐ दत्तात्रेयस्तुतायै नमः २१२ ॐ दत्तात्रेयज्ञानदात्र्ये॰ १९७ ॐ दत्तात्रेयसदानुतायै॰ २१३ ॐ दत्तात्रेयभयापहायै॰ १९८ ॐ दत्तात्रेयप्रेमरतायै ० २१४ ॐ देवकन्यायै नमः १९९ ॐ दत्तात्रेयानुमानिता॰ २१५ ॐ देवमान्यायै नमः २०० ॐ दत्तात्रेयसमुद्गीतायै० २१६ ॐ देवदुःखविनाज्ञान्यै० २०१ ॐ दत्तात्रेयकुटुम्बन्यै॰ २१७ ॐ देवसिद्धायै नमः २०२ ॐ दत्तात्रेयप्राणतुल्यायै० २१८ ॐ देवपूज्यायै नमः

२२५ ॐ देवरतायै नमः

२२६ ॐ दैवकौतुकतत्परायै० २२७ ॐ देवकीडायै नमः २२८ ॐ देवब्रीडाये नमः २२९ ॐ देववैरिविनाशिन्यै॰ २३० ॐ देवकामायै नमः २३१ ॐ देवरामाये नमः २३२ ॐ देवद्विष्टविनाशिन्यै॰ २३३ ॐ देवदेवप्रियायै नमः २३४ ॐ देव्ये नमः २३५ ॐ देवदानववन्दितायै॰ २३६ ॐ देवदेवरतानन्दायै॰ २३७ ॐ देवदेववरोत्सुकायै॰ २३८ ॐ देवदेवप्रेमरतायै॰ २३९ ॐ देवदेविष्रयंवदायै॰ २४० ॐ देवदेवप्राणतुल्यायै० २४१ ॐ देवदेवनितम्बन्यै॰

人派へ来の一般の一般の

बृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ 1196811

२४२ ॐ देवदेवहृतमनसे॰ २४३ ॐ देवदेवसुखावहायै॰ २४४ ॐ देवदेवको डरतायै॰ २४५ ॐ देवदेवसुखप्रदायै॰ २४६ ॐ देगदेवमहानन्द्रायै॰ २४७ ॐ देवदेवप्रचाम्बतायै॰ २४८ ॐ देवदेवोपभुक्तायै॰ २४९ ॐ देवदेवानुसेवितायै॰ २५० ॐ देवदेवगतप्राणायै० २५१ ॐ देवदेवगतात्मिकायै॰ २५२ ॐ देवदेवहर्षदाञ्ये नमः २५३ ॐ देवदेवसुखप्रदाये नमः २५४ ॐ देवदेवमहानन्दायै॰ २५५ ॐ देवदेवविलासिन्यै॰ २५६ ॐ देवदेवधर्मपतन्यै॰ २५७ ॐ देवदेवमनोगतायै॰

|२५८ ॐ देवदेववध्वे नमः २५९ ॐ देवदेवार्चनप्रियायै० २६० ॐ देवदेवाङ्कानिलयायै० २६१ ॐ देवदेवाङ्गशायिन्यै॰ २६२ ॐ देवदेवाङ्गसुखिन्यै० २६३ ॐ देवदेवाङ्गवासिन्यै॰ २६४ ॐ देवदेवाङ्गभूषायै० २६५ ॐ देवदेवाङ्गभूषणायै॰ २६६ ॐ देवदेवप्रियकर्यें॰ २६७ ॐ देवदेवाप्रियान्तकृते॰ २६८ ॐ देवदेवप्रियप्राणायै॰ २६९ ॐ देवदेवप्रियात्मिकायै॰ २८५ ॐ देवताभावसिद्धिदायै॰ ३०१ ॐ देवताहृतभक्तिकायै॰ २७० ॐ देवदेवार्चकप्राणायै० २७१ ॐ देवदेवार्चकिषयायै॰ २७२ ॐ देवदेवार्चकोत्साहायै० २८८ ॐ देवताभावसुखिन्यै० ३०४ ॐ देवतायै नमः २७३ ॐ देवदेवार्चकप्रियायै० |२८९ ॐ देवताभाववन्दितायै० |३०५ ॐ दनवे नमः

२७४ ॐ देवदेवार्चकाविद्या॰ २७५ ॐ देवदेवप्रस्वे नमः २७६ ॐ देवदेवस्य जनन्यै॰ २७७ ॐ देवदेवविधायिन्यै॰ २७८ ॐ देवदेवस्य रमण्ये॰ २७९ ॐ देवदेवहदाश्रयायै० २८० ॐ देवदेवेष्टदेव्ये नमः २८१ ॐ देवतापसपातिन्यै॰ २८२ ॐ देवताभावसंतुष्टायै॰ २८३ ॐ देवताभावतोषितायै॰ २९९ ॐ देवताहतमानसायै॰ २८४ ॐ देवताभाववरदायै॰ २८६ ॐ देवताभावसंसिद्धायै० ३०२ ॐ देवतागर्वमध्यस्थायै० २८७ ॐ देवताभावसंभवायै० ३०३ ॐ देवतायै नमः

२९० ॐ देवताभावसुप्रीतायै० २९१ ॐ देवताभावहर्षदायै॰ २९२ ॐ देवताविन्नहन्त्रये नमः २९३ ॐ देवताद्विष्टनाशिन्यै॰ २९४ ॐ देवतापूजितपदायै॰ २९५ ॐ देवताप्रेमतोषितायै॰ २९६ ॐ देवतागारानिलयायै॰ २९७ ॐ देवतासौ ख्यदायिन्यै॰ २९८ ॐ देवतानिजभावायै॰ ३०० ॐ देवताकृतपादाचीयै०

उपा.स्त. ३

दुर्गी.

अ० १२६

1196811

३०६ ॐ दुं दुर्गायै नमोनाम्न्यै० ३२२ ॐ दूरदिश्चिष्ठाखप्रदायै० |३३८ ॐ द्यालवे नमः ३०७ ॐ दुं फट् मन्त्रस्वरूपिण्ये ३२३ ॐ दूरदाईाश्चान्तिहराये॰ ३३९ ॐ दीनवत्सलाये नमः ३०८ ॐ दूनमो मन्त्रस्वरूपाये॰ ३२४ ॐ दूरदाईाह्दास्पदाये॰ ३४० ॐ द्याद्वीये नमः ३०९ ॐ दूं नमो मूर्तिकात्मि॰ ३२५ ॐ दूरद्इर्यरिविद्वावायै॰ ३४१ ॐ द्याशीलायै नमः ३१० ॐ दूरद्शिप्रियायै नमः ३२६ ॐ दीर्घदर्शिप्रमोदिन्यै॰ ३४२ ॐ द्याढ्यायै नमः ३११ ॐ दुष्टाये नमः ३२७ ॐ दीर्घदिशिप्राणतुल्या॰ ३४३ ॐ दयात्मिकाये नमः ३१२ ॐ दुष्टभूतनिषेविताये॰ ३२८ ॐ दीर्घदिशिवरप्रदाये॰ ३४४ ॐ दयाये नमः ३१३ ॐ दूरदर्शिप्रमरतायै॰ ३१४ ॐ दूरदर्शिप्रियंवदाये॰ ३३० ॐ दीर्घदर्शिप्रहर्षिताये॰ ३४६ ॐ दात्र्ये नमः ३१५ ॐ दूरदर्शिसिद्धिदाज्यै० ३३१ ॐ दीर्घदर्शिमहानन्दा० ३४७ ॐ दयालवे नमः ३१६ ॐ दूरदार्शिप्रतोषितायै॰ ३१७ ॐ दूरदार्शिकण्ठसंस्थायै॰ ३३३ ॐ दीर्घदिशिगृहीताचीयै॰ ३४९ ॐ द्याद्रीयै नमः ३१८ ॐ दूरदर्शिप्रहर्षिताये॰ ३३४ ॐ द्विद्शिह्तताईणाये॰ ३५० ॐ द्याशीलाये नमः ३१९ ॐ दूरदर्शिगृहीताचीयै॰ ३३५ ॐ द्यायै नमः ३२० ॐ दूरदाईाप्रतिपतायै० ३२१ ॐ दूरदार्शिप्राणतुल्यायै० ३३७ ॐ दाज्ये नमः

३२९ ॐ दीर्घदिशिहर्षदा इये ० ३४५ ॐ दानवत्ये नमः ३३२ ॐ दीर्घदिशिगृहालयायै० ३४८ ॐ दीनवत्सलायै नमः ३३६ ॐ दानवत्यै नमः

३५१ ॐ दयादचाये नमः ३५२ ॐ द्यात्मिकाय नमः ३५३ ॐ द्याम्बुधये नमः

३५४ ॐ द्यासारायै नमः ३५५ ॐ दयासागरपारगायै॰ ३५६ ॐ दयासिन्धवे नमः ३५७ ॐ द्याभाराये नमः ३५८ ॐ द्यावत्करूणाकर्यें॰ ३५९ ॐ द्यावद्वत्सलाये नमः ३६० ॐ देव्ये नमः ३६१ ॐ दयाये नमः ३६२ ॐ दानरतायै नमः ३६३ ॐ दयावद्रिक्सिष्ठिवन्यै॰ ३६४ ॐ दयावत्परितोषितायै॰ ३६५ ॐ द्यावत्स्नेह्निरतायै॰ ३६६ ॐ दयावत्त्रातिपादिका ॰ ३६७ ॐ दयावत्राणकर्न्ये नमः ३६८ ॐ दयावन्मुक्तिदायि॰ ३६९ ॐ द्यावद्भावसंतुष्टायै॰

张 张 张 张 张 张 张 张 是

ह.ज्ज्यो. र्ण धर्मस्कंध ८ 1199911

३७२ ॐ दयावित्सिद्धिदायिन्यै॰ ३८८ ॐ दीर्घाये नमः ३७३ ॐ दयावत्पुत्रवद्भावायै॰ ३८९ ॐ दीर्घाङ्गचे नमः ३७४ ॐ दयावत्पुत्रकृषिण्यै॰ ३७५ ॐ दयावदेहनिलयायै॰ ३७६ ॐ दयाबन्धवे नमः ३७६ ॐ दयाबन्धवे नमः ३७७ ॐ दयाश्रयाये नमः ३७८ ॐ द्यालुवात्सल्यकर्यें॰ ३९४ ॐ दीर्घकेइये नमः ३७९ ॐ दयालुसिद्धिदायिन्यै० ३९५ ॐ दीर्घमुख्ये नमः ३८० ॐ दयालुशरणासकायै० ३९६ ॐ दीर्घघोणाये नमः ३८१ ॐ दयाळुदेहमन्दिरायै॰ ३८३ ॐ दयालुप्राणहापिण्यै॰ ३८४ ॐ दयालुसुखद्यि नमः ३८५ ॐ दम्भाये नमः

३७० ॐ द्यावत्परितोषितायै० |३८६ ॐ द्याळुप्रेमवर्षिण्यैनमः ।४०२ ॐदारुणाइवहोमाटचायै० |४१८ ॐ दाशरिथप्रेमतुष्टायै० ३८७ ॐ दयालुवज्ञागाय नमः ३९० ॐ दीर्घलोचनायै नमः ३९१ ॐ दीर्घनेत्रायै नमः ३९२ ॐ दीर्घचक्षुषे नमः ३९३ ॐ दीर्घबाहुलतातिमका॰ ३९७ ॐ दारुणायै नमः ३८२ ॐ दयालुभक्तिभावस्था० ३९८ ॐ दारुणासुरहन्ज्ये नमः ४१४ ॐ देज्ये नमः ३९९ ॐ दाहणासुरदारिण्यै॰ ४०० ॐ दारुणाइवक च्यें नमः ४१६ ॐ द्श्रारथाचितपदाये न० ४३२ ॐ द्शाननारिरतिदाये॰

४०३ ॐ दारुणाचलनाशिन्यै० ४१९ ॐ दाशरथिरतिप्रियायै० ४०४ ॐ दारुणाचारनिरतीय० ४२० ॐ दाशर्थिप्रियक चैं० ४०५ ॐ दारुणोत्सवहिषतायै० ४२१ ॐ दाश्रायिप्रयंवदायै० ४०६ ॐ दारुणोद्यतस्त्रपायै॰ ४०७ ॐ दारुणारिनिवारिण्ये॰ ४२३ ॐ दाश्राधीष्टदेवताये॰ ४०८ ॐ दार्रणेक्षणसंयुक्तायै॰ ४२४ ॐ दाश्राथिद्वेषिनाशा॰ ४०९ ॐ दोश्चतुष्कविराजिता० ४२५ ॐ दाञ्चरथ्यानुकूल्यदा० ४१० ॐ दहादोच्काय नमः ४११ ॐ दश्भुजाय नमः ४२७ ॐ दाश्रायेप्रपूजितायै॰ ४१२ ॐ दशबाहुविराजितायै० ४२८ ॐ दशाननारिदेवतायै० ४१३ ॐ द्शास्त्रधारिण्ये नमः ४२९ ॐ द्शाननारिसंपूज्या० ४१५ ॐ दशदिक्ष्यातिक॰ ४३१ ॐ दशाननारिजन्ममु॰ ४०१ ॐ दारुणाह्वहर्षितायै० ४१७ ॐ दाशरिथिप्रियायै नमः ४३३ ॐ दशाननारिसेवितायै०

४२२ ॐ दाश्राशीष्टसंदात्र्ये॰ ४२६ ॐ दाज्ञरथिप्रियतमायै॰ ४३० ॐ दुज्ञाननारिप्रेमदायै॰

उपा.स्त. ३ अ० १२८ 1196611

दुर्गा.

器 ४३४ ॐ दशाननारिसुखदायै॰ ४५० ॐ दशश्रीवाहवकर्ये नमः ४६६ ॐ दशदिक्पालवन्दिता॰ ४८२ ॐ दिगम्बरसहचर्ये नमः ४३५ ॐ द्शाननारिवैरिहते॰ ४५१ ॐ द्श्यीवानपायिन्यै॰ ४३६ ॐ द्ज्ञाननारीष्टदेव्यै॰ ४३७ ॐ द्श्रश्रीवारिवन्दिता॰ ४३८ ॐ दुश्यीवारिजनन्यै॰ ४३९ ॐ दश्यीवारिभाविन्यै॰ ४४० ॐ दुज्ञश्रीवारिसहितायै० ४४१ ॐ दुश्यीवसभाजिता॰ 882 ॐ द्श्रयीवारिरमण्ये॰ 8५८ ॐ द्श्रयीवेश्वररताये॰ । ४४३ ॐ द्श्याविवध्वे नमः ४५९ ॐ द्श्वर्षीयकन्यकायै॰ ४४४ ॐ दशग्रीवनाशक व्यें॰ ४४५ ॐ द्श्रयीववरप्रदाये नमः ४६१ ॐ द्श्रवर्षीयवासिन्यै॰ ४४६ ॐ दुश्यीवपुरस्थायै नमः ४६२ ॐ दुश्पापहरायै॰ ४४७ ॐ द्श्यीववधोत्सुका॰ ४६३ ॐ दुम्यायै नमः ४४८ ॐ दश्यीवप्रीतिदात्र्ये॰ ४६४ ॐ दशहस्तिविभूषितायै॰ ४८० ॐ दिगम्बरसमाजस्था॰ ४४९ ॐ दश्यीवविनाशिन्ये॰ ४६५ ॐ दशशस्त्रलसदोष्का॰ ४८१ ॐ दिगम्बरप्रपूजिताये॰ ४९७ ॐ दिगम्बरगणेश्रयें नमः

४५२ ॐ दश्यीविषयावन्द्या ॰ ४५३ ॐ दश्यीवहतायै॰ ४५४ ॐ दश्यीवाहितकर्यै॰ ४५५ ॐ दश्रश्रीवेश्वरियायै॰ ४५६ ॐ दश्रश्रीवेश्वरप्राणाये॰ ४५७ ॐ द्श्यीववरप्रदाये नमः ४७३ ॐ दक्स्वह्रपाये॰ ४६० ॐ दश्वषीयबालायै०

४६७ ॐ द्शावतारह्मपायै॰ ४६८ ॐ द्शावतारक्षिण्ये॰ ४७० ॐ द्शप्राणस्वरूपिण्यै० ४८६ ॐ दिगम्बरगुणरतायै० ४७२ ॐ दशविद्यामय्यै॰ ४७४ ॐ हक्प्रदात्र्ये नमः ४७५ ॐ ह्यूपाये नमः ४७६ ॐ हक्प्रकाशिन्ये नमः ४७७ ॐ दिगन्तराये नमः ४७८ ॐ दिगन्तस्थायै नमः ४७९ ॐ दिगम्बरविलासिन्यै॰ ४९५ ॐ दिगम्बरीगणप्रिया॰

४८३ ॐ दिगम्बरकृतास्पदा॰ ४८३ ॐ दिगम्बरहृतचित्तायै॰ ४६९ ॐ दश्विद्याभिन्नदेव्यै॰ ४८५ ॐ दिगम्बरकथाप्रिया॰ ४७१ ॐ द्शविद्यास्वरूपाये॰ ४८७ ॐ दिगम्बरस्वरूपिण्ये॰ ४८८ ॐ दिगम्बरिशरोधार्या॰ ८८९ ॐ दिगम्बरहताश्रयायै॰ ४९० ॐ दिगम्बरप्रेमरतायै० ४९१ ॐ दिगम्बरस्तातुरायै॰ **४९२ ॐ दिगम्बरीस्वरूपायै**० ४९३ ॐ दिगम्बरीगणाचिता॰ ४९४ ॐ दिगम्बरीगणप्राणायै॰ ४९६ ॐ दिगम्बरीगणाराध्या॰

४९८ ॐ दिगम्बरगणस्पर्शामिदि ५१३ ॐ दस्रसंभोगभवनायै० |५२९ ॐ दश्शीपीरिकामिन्यै० |५४५ ॐ दश्शीपीवधोपात्रश्री-रापानिविह्नलायै नमः ५१४ ॐ दस्रविद्याविधायिन्यै० ५३० ॐ दस्रह्यािषपुर्ये नमः ५१५ ॐ दस्रह्याविधायिन्यै० ५३० ॐ दस्रह्यािषपुर्ये नमः ५४६ ॐ दस्रह्यािषपाष्ट्रदेन्यै० ५१६ ॐ दस्रह्यािषपाष्ट्रदेन्ये० ५१६ ॐ दस्रह्यािषपाष्ट्रदेन्ये० ५१६ ॐ दस्रह्यािषपाष्ट्रदेन्ये० ५१६ ॐ दस्रह्यािषपाष्ट्रदेन्ये० वर्मस्कंध ८ ४९९ ॐ दिगम्बरीकोटिवृता॰ 1199511 ५०० ॐ दिगम्बरीगणवृता० ५०१ ॐ दुरन्ताय नमः ५१७ ॐ दस्रसुन्द्ये नमः ५३२ ॐ दश्रशीर्षारिसुप्रीता ० ५४८ ॐ दश्रशीर्षभातृतुष्टाये ० ५२२ ॐ दश्रशीर्षभातृतुष्टाये ० ५३२ ॐ दश्रशीर्षभातृतुष्टाये ० ५३८ ॐ दश्रशीर्षवधूपियाये ० ५०३ ॐ दुर्ध्याय नमः ५१९ ॐ दस्रद्विष्टिविनाशिन्ये॰ ५३५ ॐ दश्रशिषिशिरइछे ३यै॰ ५५० ॐ दश्रशिषिवधूपाणाये॰ ५०४ ॐ दुश्रशिषिवधूपाणाये॰ ५२० ॐ दस्रशिषिवधूरताये॰ ५०५ ॐ दुरन्तदानवद्रेष्ट्रचै नमः ५२१ ॐ दस्रसिद्धिविधायिन्यै० ५३७ ॐ दश्शिष्ह्ररात्मिकायै० ५५२ ॐ दैत्यगुरुरतासाध्वयै० ५०६ ॐ दुरन्तद्वुजान्तकृते ५२२ ॐ दस्रताराराधितायै ५३८ ॐ दश्रशीर्षहरप्राणायै ५५३ ॐ दैत्यगुरुप्रपूजितायै ५०७ ॐ दुरन्तपापहन्त्रये नमः ५२३ ॐ दस्रमातृप्रपूजिताये॰ ५३९ ॐ दशक्षिहराराध्याये॰ ५५४ ॐ दैत्यगुरूपदेष्ट्रचे नमः ५०८ ॐ दस्निन्स्तारकारिण्यै० ५२४ ॐ दस्नदैन्यहराये नमः ५४० ॐ दश्जीर्षारिवन्दितायै० ५५५ ॐ दैत्यग्रुक्तिषेवितायै० ५०९ ॐ दस्रमानससंस्थाना० ५२५ ॐ दस्रतातनिषेवितायै॰ ५४१ ॐ दशक्षीषीरिसुखद्यि॰ ५५६ ॐ दैत्यगुरुगतप्राणायै॰ ५१० ॐ दम्रज्ञानविवधिन्यै० ५२६ ॐ दम्निपितृज्ञतज्योतिषे० ५४२ ॐ दृज्ञज्ञीर्षकपालिन्यै० ५५७ ॐ दैत्यग्रुकतापनाज्ञिन्यै० ५११ ॐ दस्रसंभोगजनन्ये॰ ५२७ ॐ दस्रकोश्रलदायिन्ये॰ ५४३ ॐ दश्रशिष्ज्ञानदात्र्ये॰ ५५८ ॐ दुरन्तदुःखशमन्ये॰ ५१२ ॐ दस्रसंभोगदायिन्ये॰ ५२८ ॐ दशशीर्षारिसहितायै॰ ५४४ ॐ दशशीर्षारिदेहिन्ये॰ ५५९ ॐ दुरन्तद्मनीतम्ये॰

उपा.स्त. ३ दुगी. अ० १२८

५६० ॐ दुरन्तज्ञोकज्ञामन्यै॰ ५६१ ॐ दुरन्तरोगनाशिन्यै॰ ५६२ ॐ दुरन्तवै रिदमन्ये नमः ५६३ ॐ दुरन्तदैत्यनाशिन्यै॰ ५६४ ॐ दुरन्तकलुषदन्यै॰ ५६५ ॐ दुष्कृतिस्तोमनाशि॰ ५६६ ॐ दुराज्ञयायै नमः ५६७ ॐ दुराधारायै नमः ५६८ ॐ दुर्जयायै नमः ५६९ ॐ दुष्टकामिन्ये नमः 🎇 ५७० ॐ दर्शनीयायै नमः ५७१ ॐ हर्याये नमः ५७२ ॐ अहर्यायै नमः ५७३ ॐ दृष्टिगोचरायै नमः ५७४ ॐ दूतीयागित्रयाये नमः ५७५ ॐ दृत्ये नमः

५७७ ॐ दूतीयागकरानन्दा॰ ५८७ ॐ दुर्वासोमुनिमात्रे न० ६०३ ॐ द्रराज्ये नमः ५८८ ॐ दुर्वासोम्रुनिसिद्धिदा० ६०४ ॐ द्रहरायै नमः ५८९ ॐ दुर्वासोम्रिनिभावस्था॰ ६०५ ॐ द्रयुक्तायै नमः ५९० ॐ दुर्वासोम्रिनिसेवितायै॰ ६०६ ॐ द्रापहायै नमः ५९१ ॐ दुर्वासोम्रनिचित्तस्था० ६०७ ॐ द्रहन्ये नमः

५७६ ॐ दूतीयागकरियायै० ५९२ ॐ दुर्वासोमुनिमण्डिता० ६०८ ॐ द्रहन्त्र्ये नमः ५९३ ॐ दुर्वासोमुनिसंचारा० ६०९ ॐ द्रयुक्तायै नमः ५७८ ॐ दूतीयागसुखप्रदायै॰ ५९४ ॐ दुर्वासोहृदयङ्गमायै॰ ६१० ॐ द्राश्रयायै नमः ५७९ ॐ दूतीयागकरायाता॰ ५९५ ॐ दुर्वासोहृदयाराध्या॰ ६११ ॐ दरस्मेरायै नमः ५८० ॐ दूर्तीयागप्रमोदिन्यै० ५८१ ॐ दुर्वासःपूजिताये० ५८२ ॐ दुर्वासोमुनिभाविता० ५८८ ॐ दुर्वासोमुनिभाविता० ५८३ ॐ दुर्वासोऽचितपादायै० ५९९ ॐ दुर्वासस्तापसरतायै० ६१५ ॐ दस्रपूज्यायै नमः ५८४ ॐ दुर्वासोमीनभाविता० ६०० ॐ दुर्वासस्तापसेश्वर्यै० ६१६ ॐ दस्रमात्रे नमः ५८५ ॐ दुर्वासोमुनिवन्द्यायै० ६०१ ॐ दुर्वासोमुनिकन्यायै० ६१७ ॐ दस्रदेव्ये नमः ५८६ ॐ दुर्वासोम्रुनिदेवतायै॰ ६०२ ॐ दुर्वासोऽद्धतसिद्धिदा॰ ६१८ ॐ द्रोन्मदायै नमः

६१९ ॐ दस्नसिद्धाये नमः ६२० ॐ दस्रसंस्थाये नमः ६२१ ॐ दस्रतापविमोचिन्यै॰ ६२२ ॐ दस्रक्षोभहरानित्यायै॰ इ२३ ॐ दस्रकोकगतात्मिका॰

ब.ज्ज्यो.र्ण. 🎇 ६२४ ॐ दैत्यगुर्वद्गनावन्द्या० । ६४० ॐ दैत्यस्त्रीगणरूपाये० षर्मस्केष ८ । इर५ ॐ दैत्यग्रर्वङ्गनाप्रियाये० ६४१ ॐ दैत्यस्त्रीचित्तहारिण्ये० । १४९ ॐ दैत्यस्त्रीगणपूज्याये० 🔻 ६२७ ॐ दैत्यगुर्वङ्गनोत्सुकायै० ६४३ ॐ देवस्त्रीगणवन्दितायै० ६२८ ॐ दैत्यगुरुपियतमायै० ६४४ ॐ देवस्त्रीगणिवत्तस्था० ६२९ ॐ देवगुरुनिषेवितायै नमः ६४५ ॐ देवस्त्रीगणभूषितायै॰ ६३१ ॐ देवगुरुकृताईणायै नमः ६४७ ॐ देवस्त्रीगणतोषितायै० ६३२ ॐ देवगुरुप्रेमयुताय नमः ६४८ ॐ देवस्त्रीगणहरूतरूथचा- ६५६ ॐ देवनारीसेन्यगात्रा० ६३३ ॐ देवगुर्वनुमानितायै॰ ६३४ ॐ देवगुरुप्रभावज्ञायैनमः ६४९ ॐ देवस्त्रीगणहरूतस्थचा- ६५८ ॐ देवनारीविरचितपुष्प- ६६९ ॐ देवनारीवेणुवीणाना-६३५ ॐ देवगुरुसुखप्रदाये नमः ६३९ ॐ दैत्यस्त्रीगणपूजितायै॰

रुगन्धविलेपितायै०

६५३ ॐ देवस्त्रीगणहस्तस्थ-भूपप्राणविनोदिन्यै॰ ६५४ ॐ देवनारीकरगतवास-कासवपायिन्ये नमः ६३० ॐ देवगुरुप्रसूरूपायै नमः ६४६ ॐ देवस्त्रीगणसंसिद्धायै० ६५५ ॐ देवनारीकङ्कातिकाक्त- ६६७ ॐ देवनारीचारुकराक-तकेशनिमार्जनायै॰ ह्यामरवीजितायै ६५७ ॐ देवनारीकृतोत्सुकायै॰ मालाविराजितायै॰ ्र हीद्रुक्ततोत्सुकायै॰ ६६२ ॐ देवस्त्रीगीतसोत्सुका॰ ६७३ ॐ देवकोटिकृतस्तुत्यै॰

[६५२ ॐ देवस्त्रीगणहरूतस्थदी- [६६३ ॐ देवस्त्रीनृत्यसाविन्यै॰ पमालाविलोकनायै० ६६४ ॐ देवस्त्रीनृत्यद्शिन्यै० ६६५ ॐ देवस्त्रीयोजितसम् त्रपादूपदाम्बुजायै० ६६६ ॐ देवस्त्रीगणविस्तीर्ण-चारुतल्पानिषेदुष्यै नमः खिताङ्**ष्यादिदेहिकायै**॰ ६६८ ॐ देवनारीकरव्यव्रताल-वृन्तमरुत्सुखाये नमः दसोत्कण्ठमानसायै॰ ६३६ ॐ देवगुरुज्ञानदात्रये नमः ६५० अ देवाङ्गनाधृतादर्शह- ६५९ ॐ देवनारीविचित्राङ्गचै० ६७० ॐ देवकोटिस्तुतिनुताये०

उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ० १२८

६७४ ॐ दन्तदृष्ट्योद्देगफलायै ६९० ॐ दामोद्रकृतप्राणायै० ६७६ ॐ देवकोलाहलाकुला॰ ६७६ ॐ देवरागपरित्यकायै॰ ६७७ ॐ द्वेषरागविवर्जितायै॰ ६७८ ॐ दामपूज्यायै नमः ६७९ ॐ दामभूषायै नमः ६९५ ॐ दामोदरकुत्रहलायै॰ ६८० ॐ दामोदरविलासिन्यै॰ ६९६ ॐ दामोदरकृताह्वादायै॰ ६८१ ॐ दामोद्रप्रेमरतायै नमः ६९७ ॐ दामोद्रसुचुंबितायै० ७१० ॐ दामोद्रश्चातृकायै० ७२५ ॐ दमयन्तीप्रसाधिता० ६८२ ॐ दामोद्रभागिन्ये नमः ६९८ ॐ दामोद्रसुताकृष्टाये॰ ७११ ॐ दामोद्रपरायणाये॰ ७२६ ॐ दमयन्तीष्टदेव्ये नमः ६८३ ॐ दामोदरप्रस्वे नमः ६८४ ॐ दामोद्रपत्न्यै नमः ६८५ ॐ दामोद्रपतित्रतायै॰ ६८६ ॐ दामोदराभिन्नदेहायै॰ ६८७ ॐ दामोद्ररतिप्रियायै॰ ६८८ ॐ दामोदराभिन्नतनवे॰ ७०४ ॐ दामोदरानुकूछायै॰ ७१६ ॐ दामोदरपराभूताये॰ ७३२ ॐ दमनिष्ट्रिक्षपायै॰ ६८९ ॐ दामोदरकृतास्पदायै॰ ७०५ ॐ दामोदरिनतिम्बन्ये॰ ७१७ ॐ दामोदरपराजिताये॰ ७३३ ॐ दमभपूरितिविग्रहाये॰

६९४ ॐ दामोदरालिङ्गिता॰ ६९९ ॐ दामोद्रसुखप्रदायै॰ ७१२ ॐ दामोद्रधरायै नमः ७०० ॐ दामोद्रसहादचायै० ७०१ ॐ दामोद्रसहायिन्यै॰ ७०२ ॐ दामोद्रगुणज्ञायै नमः ७१४ ॐ दामोद्रोपजायायै० ७३० ॐ दमनिषप्राणतुल्या० ७०३ ॐ दामोद्रवरप्रदाये नमः ७१५ ॐ दामोद्रनिमन्त्रिता॰

कौतुकिन्यै नमः ७१३ ॐ दामोद्रवैरिविनाशि

७०६ ॐ दामोदरजलकीडाकु- ७१८ ॐ दामोद्रसमाकान्ता० ६९१ ॐ दामोद्रगतात्मिका० श्राह्याये नमः ७१९ ॐ दामोद्रह्ताशुभाये० ६९२ ॐ दामोद्रकौतुकाढ्या० ७०७ ॐ दर्शनित्रयाये नमः ७२० ॐ दामोद्रोत्सवरताये० ६९३ ॐ दामोद्रकलाकलायै॰ ७०८ ॐ दामोद्रजलकी डात्य- ७२१ ॐ दामोद्रोत्सवावहायै॰ क्तस्वजनसोहृदाय नमः ७२२ ॐ दामोद्रस्तन्यदाञ्ये॰ ७०९ ॐ दामोद्रलपदासकेलि- ७२३ ॐ दामोद्रगवेषितायै॰ ७२४ ॐ दमयन्तीसिद्धिदात्रयै॰ ७२७ ॐ दमयन्तीस्वस्विपण्यै॰ ७२८ ॐ दमयन्तीकृताचीयै॰ ७२९ ॐ दमनिषविभावितायै॰ ७३१ ॐ दमनिषस्वस्विपण्यै॰

बृ.ज्ज्यो र्ण ७३४ ॐ दम्भहन्ज्ये नमः धर्मस्कंष ८ 💥 ७३५ ॐ दम्भद्विये नमः ॥१५८॥ 💆 ७३६ ॐ दम्भलोकविमोहि॰ ७३७ ॐ दम्भज्ञीलायै नमः ७३८ ॐ दम्भहरायै नमः ७३९ ॐ दम्भवत्परिमार्दिन्यै॰ ७४० ॐ दम्भरूपायै नमः ७४१ ॐ दम्भकर्ये नमः ७४२ ॐ दम्भसन्तानदारिण्यै॰ ७४३ ॐ दत्तमोक्षाये नमः ७४४ ॐ दत्तधनाये नमः ७४५ ॐ दत्तारोग्याये नमः ७४६ ॐ दाम्भिकायै नमः ७४७ ॐ दत्तपुत्राये नमः ७४८ ॐ दत्तदाराये नमः ७४९ ॐ दत्तहाराये नमः

७५० ॐ दारिकायै नमः ७५१ ॐ दत्तभोगायै नमः ७५२ ॐ दत्तज्ञोकायै नमः ७५४ ॐ दत्तमत्ये नमः ७५५ ॐ दत्तभार्यायै नमः ७५६ ॐ दत्तशास्त्रावबोधिका॰ ७५७ ॐ दत्तपानायै नमः ७५८ ॐ दत्तदानाये नमः ७५९ ॐ दत्तदारिद्यनाशिन्यै॰ ७६० ॐ दत्तसोधावनीवासा० ७६१ ॐ दत्तस्वर्गाये नमः ७६२ ॐ दासदाये नमः ७६३ ॐ दास्यत् ष्टाये नमः ७६४ ॐ दास्यहराये नमः ७६५ ॐ दासदासीज्ञातप्रदायै० ७८१ ॐ दम्पतीष्टायै नमः

७६६ ॐ दाररूपाये नमः ७६७ ॐ दारवासाये नमः ७६८ ॐ दारवासिहदारपदा॰ ७५३ ॐ दत्तहरूत्यादिवाहना० ७६९ ॐ दारवासिजनाराध्या० ७७० ॐ दारवासिजनप्रिया॰ ७७२ ॐ दारवासिसमर्चिता॰ ७७३ ॐ दारवास्याहतप्राणा॰ ७७४ ॐ दारवास्यारेनाज्ञिन्यै॰ ७७६ ॐ दारवासिविस्नुक्तिदा॰ ७७८ ॐ दाराये नमः ७८० ॐ दम्पत्ये नमः

। ७८२ ॐ दृम्पतीप्राणह्मपिका॰ ७८३ ॐ दम्पतीस्रोहनिरतायै॰ ७८४ ॐ दाम्पत्यसाधनि्रया॰ ७८५ ॐ दाम्पत्यसुखसेनायै॰ ७८६ ॐ दाम्पत्यसुखदायिन्यै ७७१ ॐ दारवासिविनिर्भिता० ७८७ ॐ दम्पत्याचारनिरतायै० ७८८ ॐ दम्पत्यामोदमोदिता॰ ७८९ ॐ दम्पत्यामोदसुविन्यै ॰ ७९० ॐ दाम्पत्याह्वादकारि॰ ७७५ ॐ दारवासिविघ्रहरायै० ७९१ ॐ दम्पतीष्ट्रपादपद्मायै० ७९२ ॐ दाम्पत्यप्रेमह्पिण्यै॰ ७७७ ॐ दाराशिक्षपिण्यै नमः ७९३ ॐ दाम्पत्यभोगभवनायै॰ ७९४ ॐ दाडिमीफलभोजिन्यै॰ ७७९ ॐ दारकार्यरिनाज्ञिन्यै॰ ७९५ ॐ दाडिमीफलसंतुष्टायै॰ ७९६ ॐ दाडिमीफलमानसा॰ ७९७ ॐ दाडिमीवृक्षसंस्थाना ॰

उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ० १२८

७९८ ॐ दािंडमीवृक्षवािंसन्यै० |८१३ ॐ दक्षयज्ञान्तकािरिण्यै० ७९९ ॐ दाडिमीवृक्षरूपायै॰ ८०० ॐ दािंडमीवनवासिन्यै० ८१५ ॐ दस्नेज्यायै नमः ८०१ ॐ दािंडमीफलसाम्योक्त- ८१६ ॐ दक्षवंशैकपावन्ये नमः ८३२ ॐ दक्षिणाचारसाधिता० ८४८ ॐ दोषराशिविनाशि० पयोधरसमन्वितायै नमः ८०२ ॐ दक्षिणायै नमः ८०३ ॐ दक्षिणाह्यपायै नमः ८०४ ॐ दक्षिणारूपधारिण्यै० ८०५ ॐ दक्षकन्यायै नमः ८०६ ॐ दक्षपुत्रये नमः ८०७ ॐ दक्षमात्रे नमः ८०८ ॐ दक्षस्वे नमः ८०९ ॐ दक्षगोत्राये नमः ८१० ॐ दक्षसुताये नमः ८११ ॐ दक्षयज्ञविनाश्चिन्यै॰ ८१२ ॐ दक्षयज्ञनाञ्चकर्ये नमः ८२८ ॐ दक्षिणाचारत्रष्टिदा॰

८१४ ॐ दक्षप्रसूत्ये नमः ८१७ ॐ दक्षात्मजायै नमः ८१८ ॐ दक्षसूनवे नमः ८१९ ॐ दक्षजाये नमः ८२० ॐ दक्षजातिकायै नमः ८२१ ॐ दक्षजन्मने नमः ८२२ ॐ दक्षजनुषे नमः ८२३ ॐ दक्षदेहसमुद्भवायै॰ ८२४ ॐ दश्चननुषे नमः ८२५ ॐ दक्षयागध्वंसिन्यै॰ ८२६ ॐ दक्षकन्यकाये नमः ८२७ ॐ दक्षिणाचारनिरतायै॰ ८४३ ॐ द्वारकर्ये नमः

८३० ॐ दक्षिणाचारभाविता० ८४६ ॐ दोषाकराये नमः ८३१ ॐ दक्षिणाचारसुखिन्यै॰ ८४७ ॐ दोषहरायै नमः ८३४ ॐ दक्षिणाचारवन्दिता॰ ८३५ ॐ दक्षिणाचारश्ररणायै॰ ८३७ ॐ द्वारपालित्रयायै नमः ८३८ ॐ द्वारवासिन्यै नमः ८३९ ॐ द्वारसंस्थितायै नमः ८४० ॐ द्वारह्वपायै नमः ८४१ ॐ द्वारसंस्थाये नमः ८४२ ॐ द्वारदेशनिवासिन्यै॰ ८४४ ॐ द्वारधात्र्ये नमः

८२९ ॐ दक्षिणाचारसंसिद्धा० |८४५ ॐ दोषमात्राविवार्जतायै० ८३३ ॐ दक्षिणाचारमोक्षाह्यै० ८४९ ॐ दोषाकरविभूषाढचा० ८५० ॐ दोषाकरकपाछिन्यै० ८५१ ॐ दोषाकरसहस्राभायै॰ ८३६ ॐ दक्षिणाचारहार्षिताये॰ ८५२ ॐ दोषाकरसमाननाये॰ ८५३ ॐ दोषाकरमुख्ये नमः ८५४ ॐ दिव्यायै नमः ८५५ ॐ दोषाकरकराग्रजायै॰ ८५६ ॐ दोषाकरसमज्योतिषे॰ ८५७ ॐ दोषाकरसुज्ञीतला॰ ८५८ ॐ दोषाकरश्रेण्ये नमः ८५९ ॐ दोषसहज्ञापाङ्गवीक्ष॰ ८६० ॐ दोषाकरेष्टदेव्ये नमः

बु.ज्ज्यो र्ण.

८६१ ॐ दोषाकरनिषेवितायै० ८७७ ॐ दोषापुरश्चाररतायै० वर्मस्कंघ ८ 💥 ८६२ ॐ दोषाकरसुहार्षिण्ये॰ ॥१५९॥ ४ ८६३ ॐ दोषाकरमरीचिकायै॰ ८६४ ॐ दोषाकरोछसद्राला॰ ८६५ ॐ दोपाकसुहार्षण्ये॰ ८६६ ॐ दोषाकरशिरोभूषायै॰ ८६७ ॐ दोषाकरवधूप्रियायै॰ ८६८ ॐ दोषाकरवधूप्राणायै॰ **९** ८६९ ॐ दोषाकरवधूमतायै॰ ८७० ॐ दोषाकरवधूप्रीतायै० ८७१ ॐ दोषाकरवध्वे नमः ८७२ ॐ दोषापूज्याय नमः ८७३ ॐ दोषापूजिताये नमः ८७४ ॐ दोषहारिण्ये नमः ८७५ ॐ दोषाजापमहानन्दा॰ ८७६ ॐ दोषाजापपरायणायै० ८९१ ॐ दण्डपाणिसमारा०

८७८ ॐ दोषापूजकपुत्रिण्यै॰ ८७९ ॐ दोषापूजकवात्सल्य-८८० ॐ दोषापूजकवेरिध्नये॰ ८८१ ॐ दोषापूजकाविम्नहते॰ ८८२ ॐ दोषापूजकसंतुष्टायै॰ ८८३ ॐ दोषापूजकमुक्तिदायै॰ ८८४ ॐ दमप्रसूनसम्पूज्यायै॰ ८८५ ॐ दमपुष्पियाये नमः ८८६ ॐ दुर्योधनप्रपूज्यायै॰ ८८७ ॐ दुःज्ञासनसमीचता ॰ ८८८ ॐ दण्डपाणिप्रियायै॰ ८८९ ॐ दण्डपाणिमात्रे नमः ८९० ॐ दयानिधये नमः

८९२ ॐ दण्डपाणिप्रपूजिता॰ ८९३ ॐ दण्डपाणिगृहासका॰ ८९४ ॐ दण्डपाणिप्रियंवदा० कारिणीजगद्म्बिका॰ ८९५ ॐ दण्डपाणिप्रियतमा॰ ९११ ॐ दण्डदोष्कायै नमः ८९६ ॐ दण्डपाणिमनोहरायै॰ ९१२ ॐ दण्डकरायै नमः ८९७ ॐ दण्डपाणिहतप्राणा॰ ८९८ ॐ दण्डपाणिसुसिद्धिद्।॰ ९१४ ॐ दण्डविद्याये नमः ८९९ ॐ दण्डपाणिपरामृष्टा० ९१५ ॐ दण्डमात्रे नमः ९०० ॐ दण्डपाणिप्रहार्षितायै० ९१६ ॐ दण्डिखण्डकनाशि॰ ९०१ ॐ दण्डपाणिविद्यहरायै० ९१७ ॐ दण्डिप्रियायै नमः ९०२ ॐ दण्डपाणिशिरोधृता० ९१८ ॐ दण्डिपूज्यायै नमः ९०४ ॐ दण्डपाण्युन्सुरूयै नमः ९२० ॐ दस्युपूज्यायै नमः ९०५ ॐ दण्डपाणिप्राप्तपदा० ९२१ ॐ दस्युरतायै नमः ९०६ ॐ दण्डपाणिवरोन्युख्यै० ९२२ ॐ दस्युद्रविणदायिन्यै० ९०७ ॐ दण्डहरूताये नमः

९०८ ॐ दण्डपाये नमः ९०९ ॐ दण्डबाह्वे नमः ९१० ॐ द्रान्तकृते नमः ९१३ ॐ दण्डचित्तकृतास्पद्।॰ ९०३ ॐ दण्डपाणिप्राप्तचर्या॰ ९१९ ॐ दण्डिसंतोषदायिन्यै॰ ९२३ ॐ द्स्युवर्गकृतार्हाये नमः

उपा स्त ३ दुर्गा. अ० १२६

९२४ ॐ द्र्युवर्गविनाशिन्यै० |९४० ॐ दारुकेश्वरमात्रे नमः ९२५ ॐ दस्युनिर्णाञ्चिन्ये॰ ९२६ ॐ दस्युकुलनिणांशि॰ ९२७ ॐ द्स्युप्रियकर्यें नमः ९२८ ॐ दस्युनृत्यद्र्भनतत्प॰ ९२९ ॐ दुष्टदण्डकर्यें नमः ९३० ॐ दुष्टवर्गविद्राविण्यै॰ ९३१ ॐ दुष्टवर्गनियहाईायै॰ ९३२ ॐ दूषकप्राणनाशिन्यै॰ ९३३ ॐ दूषकोत्तापजनन्यै॰ ९३४ ॐ दूपकारिष्टकारिण्यै॰ ९३५ ॐ दूषकद्वेषणकर्यें नमः ९३६ ॐ दाहिकायै नमः ९३७ ॐ दहनात्मिकायै नमः ९३८ ॐ दारुकारिनिहन्ज्यै॰ ९३९ ॐ दारुकेश्वरपूजिताये॰ । ९५५ ॐ दमघोषसमाराध्या॰

९४१ ॐ दारुकेश्वरवन्दितायै॰ ९४२ ॐ दर्भहरूतायै नमः ९४३ ॐ दर्भयुतायै नमः ९४४ ॐ दर्भकर्मविवर्जितायै॰ ९४५ ॐ दर्भमय्ये नमः ९४६ ॐ दर्भतनवे नमः ९४७ ॐ दर्भसर्वस्वहृषिण्यै॰ ९४८ ॐ दर्भकर्माचाररतायै॰ ९४९ ॐ दर्भहरूतकृताईणायै॰ ९५० ॐ दर्भानुकूलायै नमः० ९५१ ॐ दार्भर्याये नमः ९५२ ॐ द्वींपात्रानुदामिन्यै० | ९६७ ॐ द्वीचिमोक्षदायि० ९५३ ॐ दमघोपप्रपूज्यायै नमः ९६८ ॐ द्धीचिदैन्यहन्ज्यै॰ ९५४ ॐ दमघोषवरदाये नमः १६९ ॐ दधीचिद्रदारिण्ये॰

१९५६ ॐ दावामिह्मपिण्ये नमः ९५७ ॐ दावाभिरूपायै नमः ९५८ ॐ दावाग्निनिर्णाशित-महाबलायै नमः ९५९ ॐ दन्तदंष्ट्रामुरकला॰ ९६० ॐ दंतचर्चितहस्तिकायै॰ ९६१ ॐ दन्तदंष्ट्रस्यन्दनायै॰ ९६२ ॐ दन्तनिनीशितासुरा० ९६३ ॐ द्धिपूज्यायै नमः ९६४ ॐ द्धिप्रीतायै नमः ९६५ ॐ द्धीचिवरदायिन्यै॰ ९६६ ॐ दधीचीष्टदेवतायै॰

९७१ ॐ दधीचिम्नानिसेविता॰ ९७२ ॐ द्धीचिज्ञानदाऱ्ये॰ ९७३ ॐ द्धीचिगुणद्यिन्यै॰ ९७४ ॐ द्धीचिकुलसम्भूषा॰ ९७६ ॐ द्धीचिभुक्तिमुक्तिदा॰ ९७६ ॐ दंधीचिकुलदेव्यै नमः ९७७ ॐ द्धीचिकुलद्वतायै॰ ९७८ ॐ द्धीचिकुलगम्यायै॰ ९७९ ॐ द्धीचिकुलपूजिता॰ ९८० ॐ द्धीचिसुखद्ग्ये नमः ९८१ ॐ दधीचिदैन्यहारिण्यै॰ ९८२ ॐ दधीचिदुःखहन्त्र्यै॰ ९८३ ॐ द्धीचिकुलसुन्द्यैं॰ ९८४ ॐ द्धीचिकुलसंभूतायै॰ ९८५ ॐ द्धीचिकुलपालिन्यै॰ ९८६ ॐ द्धीचिदानगम्यायै॰ ९७० ॐ द्धीचिभक्तिसुबिन्यै० ९८७ ॐ द्धीचिदानमानिन्यै०

बु.ज्ज्यो र्ण. । वर्मस्कंध ८ 119年011 ※

९८८ ॐ दधीचिदानसंतुष्टा॰ ९८९ ॐ द्धीचिदानदेवतायै॰ ९९० ॐ द्धीचिजयसंप्रीतायै० ९९१ ॐ द्धीचिजपमानसायै॰ ९९२ ॐ द्धीचिजपपूजाढ्या॰ ९९३ ॐ दधीचिजपमाछिका॰ ९९४ ॐ दधीचिजपसंतुष्टा॰ ९९५ ॐ दंधीचिजपतोषिण्यै॰ ९९६ ॐ द्धीचितापसाराध्या० ९९७ ॐ द्धीचिशुभदायिन्यै॰ ९९८ ॐ दूर्वीये नमः ९९९ ॐ दूर्वाद् छ इयामाये ॰ १००० ॐ दूर्वादलसमद्यतये॰ इति श्रीहरिकृष्णविरचिते बृ॰ धर्मस्कन्धे उपासनास्तबके श्रीदु ११ ॐ देवयोनये नमः भू गोंपासनाध्याये श्रीदुर्गासहस्रना १२ ॐ अयोनिजाये नमः माविलकथनं नाम प्रकरणम् ४६ १३ ॐ भूमिजाये नमः

अथ दुर्गाऽष्टोत्तरशत १४ ॐ निर्युणाय नमः नामावली।

१ ॐ दुर्गायै नमः २ ॐ ज्ञिवाये नमः ३ ॐ महालक्ष्म्ये नमः ४ ॐ महागौर्ये नमः ५ ॐ चिण्डकाये नमः ६ ॐ सर्वज्ञाये नमः ७ ॐ सर्वलोकेशायै नमः ८ ॐ सर्वकर्मफलपदायै॰ ९ ॐ सर्वतीर्थमयायै नमः १० ॐ पुण्याये नमः

१५ ॐ आधारशत्तये नमः १६ ॐ अनीश्वर्य नमः १७ ॐ निर्गुणाय नमः १८ ॐ निरहङ्काराये नमः १९ ॐ सर्वगर्वविमर्दिन्ये नमः २० ॐ सर्वलोकप्रियायै नमः २१ ॐ वाण्ये नमः २२ ॐ सर्वविद्याधिदेवतायै॰ २३ ॐ पार्वत्ये नमः २४ ॐ देवमात्रे नमः २५ ॐ वनीज्ञायै नमः २६ ॐ विन्ध्यवासिन्ये नमः २७ ॐ तेजोवत्ये नमः २८ ॐ महामात्रे नमः २९ ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाये॰

३० ॐ देवतायै नमः ३१ ॐ वहिरूपाये नमः ३२ ॐ सदोजसे नमः ३३ ॐ वर्णरूपिण्ये नमः ३४ ॐ गुणाश्रयाय नमः ३५ ॐ गुणमध्यायै नमः ३६ ॐ गुणत्रयविवर्जितायै॰ ३७ ॐ कर्मज्ञानप्रदृश्ये नमः ३८ ॐ कान्ताय नमः ३९ ॐ सर्वसंहारकारिण्ये नमः ४० ॐ धर्मज्ञानायै नमः ४१ ॐ धर्मनिष्ठायै नमः ४२ ॐ सर्वकर्मविवर्जितायै॰ ४३ ॐ कामाक्ये नमः ४४ ॐ कामसंहर्ज्ये नमः ४५ ॐ कामक्रोधविवर्जितायै॰

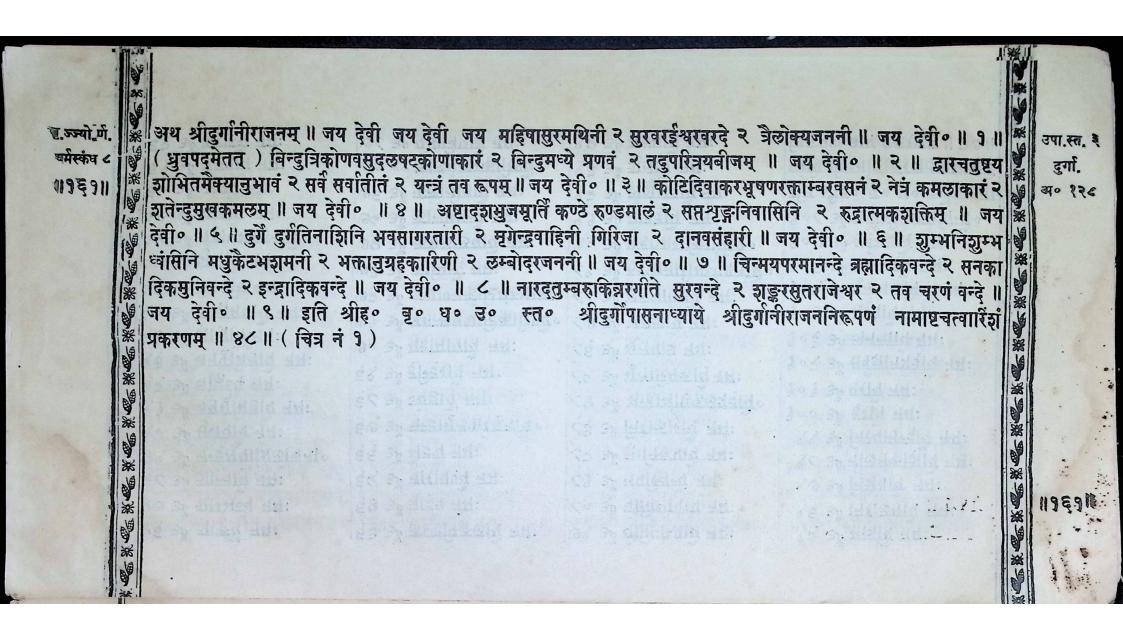
उपा.स्त. इ दुर्गा. अ० १२८ 1136011

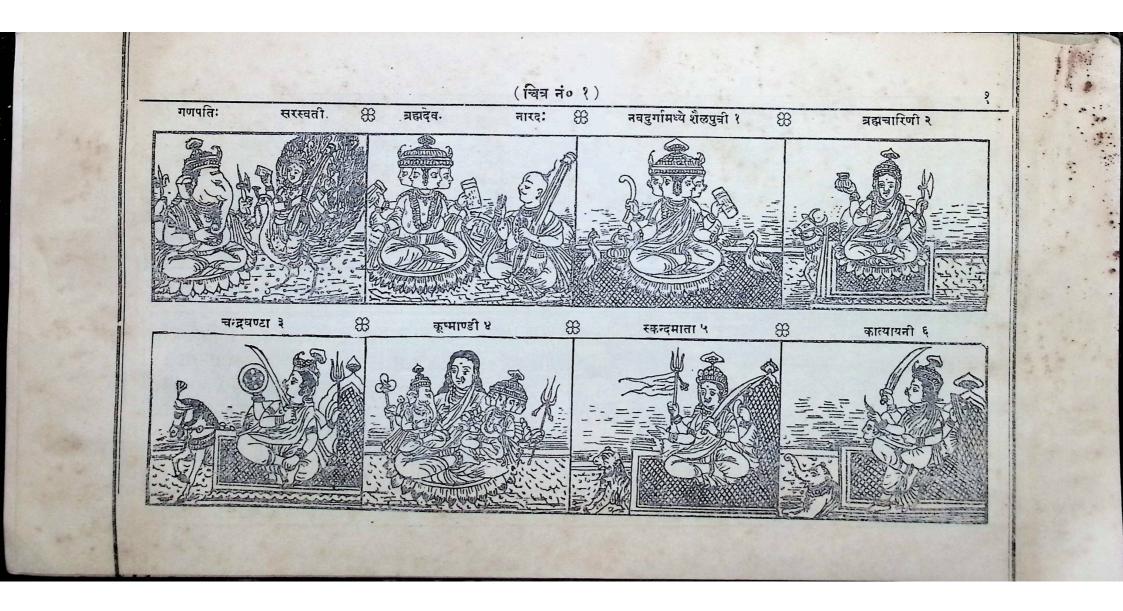
※	४६ ॐ शाङ्कर्यें नमः
N. S.	४७ ॐ ज्ञाम्भव्ये नमः
**	४८ ॐ ज्ञान्तायै नमः
	४९ ॐ चन्द्रसूर्यामिलोचन
 	५० ॐ सुजयाय नमः
	५१ ॐ जयभूमिष्ठायै नमः
**	५२ ॐ जाह्नव्ये नमः
	५३ ॐ जनपूजितायै नमः
	५४ ॐ ज्ञास्त्राये नमः
器	५५ ॐ ज्ञास्त्रमयायै नमः
	५६ ॐ नित्याय नमः
総	५७ ॐ शुभायै नमः
	५८ ॐ चंद्रार्धमस्तकायै॰
 	५९ ॐ भारत्यै नमः
	६० ॐ भ्रामर्ये नमः
	६१ ॐ कल्पायै नमः
. 82	६२ ॐ कराल्ये नमः
	The second secon

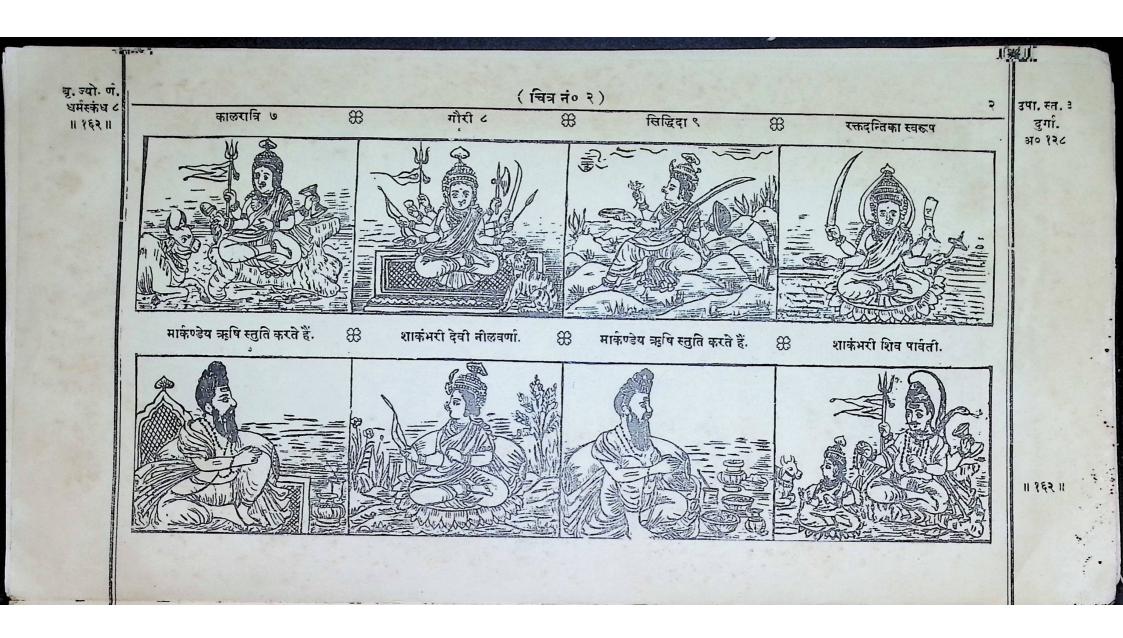
६३ ॐ कृष्णपिङ्गलायै नमः ६४ ॐ ब्राह्ये नंमः ६५ ॐ नारायण्ये नमः ६६ ॐ रौद्रचै नमः ६७ ॐ चन्द्रामृतपरिस्रुतायै॰ ६८ ॐ ज्येष्ठायै नमः ६९ ॐ इन्दिरायै नमः ७० ॐ महामायायै नमः ७१ ॐ जगत्सृष्ट्यादिकारिण्यै॰ ८७ ॐ भूतेज्ञायै नमः ७२ ॐ ब्रह्माण्डकोटिसंस्थाना० ८८ ॐ भूतधारिण्ये नमः ७३ ॐ कामिन्ये नमः ८९ ॐ स्वधानारीमध्यगतायै० ७४ ॐ कमलालयायै नमः ७५ ॐ कात्यायन्ये नमः ७६ ॐ कलातीतायै नमः ७७ ड्रु कालसंहारकारिण्यै॰ ७८ अ योगनिष्ठायै नमः

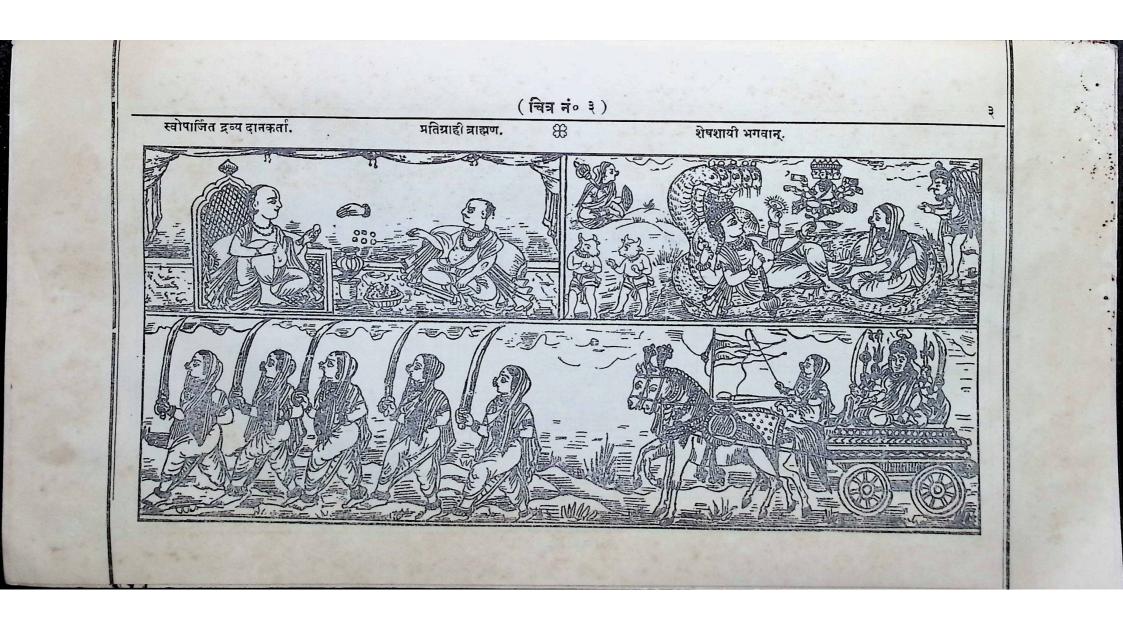
७९ ॐ योगिगम्यायै नमः ८० ॐ योगिध्येयायै नमः ८१ ॐ तपस्विन्ये नमः ८२ ॐ ज्ञानिह्नपायै नमः ८३ ॐ निराकाराये नमः ८४ ॐ भक्ताभीष्टफलप्रदायै॰ ८५ ॐ भूतात्मिकायै नमः ८६ ॐ भूतमात्रे नमः ९० ॐ षडाधारादिवार्तिन्यै० ९१ ॐ मोहदायै नमः ९२ ॐ अंशुभवाये नमः ९३ ॐ शुभ्राये नमः ९४ ॐ सूक्ष्मायै नमः

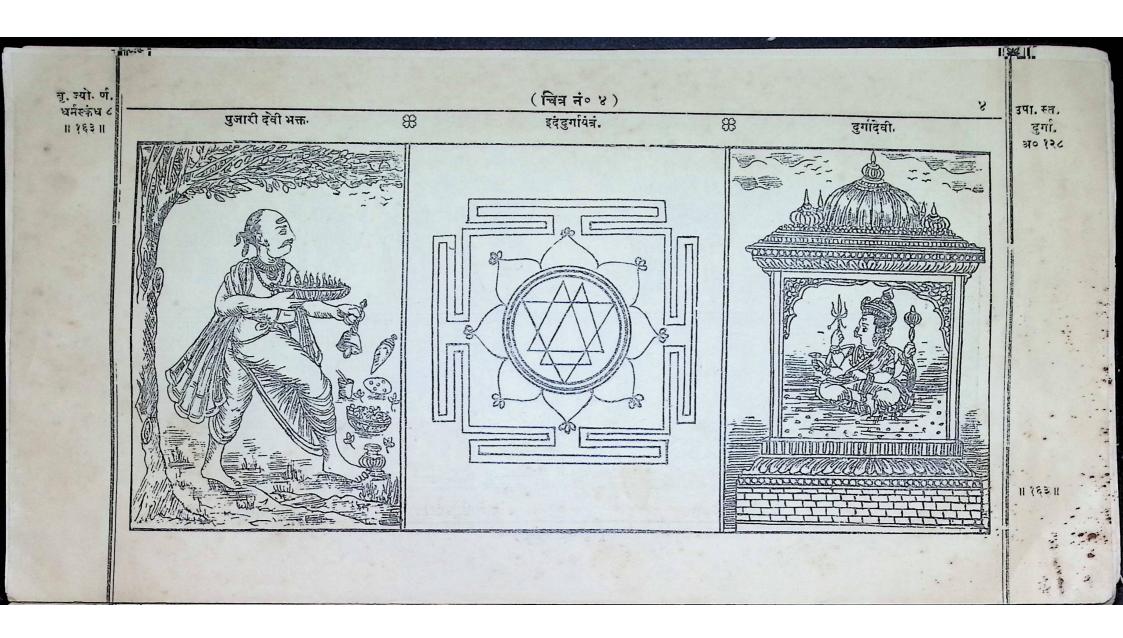
९५ ॐ मात्राये नमः ९६ ॐ निरालसायै नमः ९७ ॐ निम्नगायै नमः ९८ ॐ नीलसंकाशायै नमः ९९ ॐ नित्यानन्दाये नमः १०० ॐ हराये नमः १०१ ॐ पराये नमः १०२ ॐ सर्वज्ञानप्रदायै नमः १०३ ॐ अनन्तायै नमः १०४ ॐ सत्यायै नमः १०५ ॐ दुर्छभह्मपिण्ये नमः १०६ ॐ सरस्वत्ये नमः १०७ ॐ सर्वगताय नमः १०८ ॐ सर्वाभीष्टप्रदायिन्यै० इति श्रीह० वृ० घ० दुर्गीपासना च्याये श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामावाळे निह्मपणं नाम प्रकरणम् ॥ ४७॥











श्रीगणेशाय नमः श्रीसरस्वत्ये नमः (श्रीबद्कभैरवाय नमः अथ दुर्गासप्तश्रातीपाठपकरणं प्रारम्यते ॥ तत्राद्री दुर्गाब्रह्मकवचम् ॥ अर्गलाकीलकं चादौ पठित्वा कवचं पठेत् ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कम एष शिवोदितः ॥ १ ॥ अर्गला दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत् ॥ कवचं रक्षयेत्रित्यं तस्मादेतत्रयं पठेत् ॥ २ ॥ अर्गला हृदये यस्य तस्मादर्गलवानसौ ॥ भविष्यति न संदेहो नान्यथा शिवभाषितम् ॥ ३ ॥ कीलकं हदये यस्य स कीलितमनोरथः ॥ कवचं हृदये यस्य स वत्रकवचः प्रभुः ॥ ४ ॥ ॐ अस्य श्रीदेव्या वज्रकवचमालामन्त्रोत्तमाङ्गस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्ठुप् छन्दः ॐ रूके चामुण्डारूया महालक्ष्मीर्देवता ॐ हीं हस्नीं हस्कीं हीं अङ्गन्यस्ता देव्यः ज्ञाक्तयः ॐ ऐं हस्स्री हस्क्वीं श्री हस्यूं क्ष्मीं लीं रूकें सायुधा मातरो देव्या बीजानि ॐ ऐं अं आं ईं ई ऋं ऋं ऌं ॡं एं ऐं ओं ओं अं अः ऐं ॐ ब्राह्म्ये नमः ॥ हस्रीं कं खं गं घं डं हस्रीं ॐ माहेश्वर्ये नमः ॥ ॐ हस्क्वीं चं छं जं झं अं हस्क्वीं ॐ कीमार्ये नमः ॥ ॐ श्रीं टं ठं डं ढं णं श्रीं ॐ वैष्णव्ये नमः ॥ ॐ हस्व्युं तं थं दं घं नं हस्त्युं ॐ वाराह्मी नमः ॥ अहमीं पं फंबं भं मं क्ष्मों अनारसिंही नमः॥ अँ हों यं रं हं वं शं पं सं हों अहमी नमः॥ अँ हों हं क्षं हमें अनामण्डाये नमः॥ अँ हं इन्द्राय नमः॥ अँ रं अथ्रये नमः॥ अँ टं यमाय नमः॥ अँ क्षं निर्ऋतये नमः॥ अँ वं वरुणाय नमः॥ अँ यं वायवे नमः॥ अँ सं सोमाय नमः॥ अँ हों ईशानाय नमः॥ अँ आं ब्रह्मणे नमः॥ अँ हीं अनन्ताय नमः॥ एवं दिग्बन्धदेवता स्तत्त्वं सर्वरक्षार्थं जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानं रहस्ये ॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूवणा ॥ रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशाऽतिभी षणा ॥ १ ॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तरसना रक्तदन्तिका ॥ पति नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेजनम् ॥ २ ॥ वसुधेव विशालाक्षी सुमेर युगलस्तनी ॥ दीवौँ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरी ॥ ३ ॥ कर्कशावितकान्ती तौ सर्वानन्द्रपयोनिधी ॥ भकान् संपायये देवी सर्वकामदुषौ स्तनौ ॥ ४ ॥ खङ्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभार्ति सा ॥ आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ५॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ इमां यः पूजयेद्धत्तया स व्याप्नोति चराचरम् ॥ ६ ॥ इति ध्यानम् ॥

बु.ज्ज्यो.र्ण. वर्भस्कंध ८

हस्सीं हस्छीं हस्व्यूं क्ष्मों छों क्ष्में मूछं क्ष्में छों क्ष्मों हर्व्युं श्री हस्छीं हस्सीं एं ॐ एवं आदावन्तेऽधौ मातृकाबीजानि दत्त्वा छोम अपित्र प्रात्ते सम्प्रिटीकरणम् ॥ नारंद उवाच ॥ यद्ध्यां परमं छोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ यत्र करूयचिदाक्यातं तन्मे ब्रहि पितामह॥१॥ ब्रां व्यास्त ब्रह्मोवाच ॥ अस्ति ग्रह्मतमं वित्र सर्वभूतोपकारकम् ॥ देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छ्णुष्व महामुने ॥ २ ॥ प्रथमं शिष्ठपुत्रीति द्वितीयं अ० १२८ ब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयं चंद्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ॥ सप्तमं कालरात्रिश्चे महागौरीति चाष्ट्रमस् ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धिदा प्रोक्ता नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥ अग्निना दह्ममानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ॥ विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥ न तेषां जायते किञ्चिद्शुमं रणसङ्कटे ॥ नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं निह्॥ ७॥ यैस्तु भक्तया स्वृता चूनं तेषां सिद्धिः प्रजायते ॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ॥ ८ ॥ ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥ ९ ॥ त्राह्मी हंस समारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ छक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महरूता हरित्रिया ॥ १० ॥ इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ॥ नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः॥ ११॥ दृश्यन्ते रथमारूढा दृब्यः क्रोधसमाकुछाः॥ शङ्कां चक्रं गदां शक्ति इछं च सुसछायुधम्॥ १२॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ॥ कुन्तायुधं त्रिशूछं च शार्क्तमायुधमुत्तमम् ॥ १३॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च॥ धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय व ॥ १४॥ नमस्तेऽस्तु महारोदे महाघोरपराक्रमे। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ १५ ॥ त्राहि मां देवि दुष्त्रेक्ष्ये शत्रूणां भयविधिनी ॥ त्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्या अस्त्रिस्यां मान्नेदेवता ॥ १६ ॥ दक्षिणे रक्ष वाराहि नैर्ऋत्यां खङ्गधारिणी ॥ त्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्रायव्यां मृगवाहिनी ॥ १७ ॥ उदीच्यां रक्ष कौबेरी ईज्ञान्यां गुलधारिणी ॥ ऊर्ध्व ब्रह्माणी मे रक्षेद्धस्ताद्वैष्णवी तथा॥ १८॥ एवं दृज्ञ दिज्ञो रक्षेचामुण्डा ज्ञववाह्ना ॥ 🎉 ॥१६४॥ १ पाठान्तरम्-प्रार्कण्डेय उवाच । २ रात्रीति । ३ युधान्येवं ।

जया में चायतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ १९ ॥ अजिता वामपार्थे च दक्षिणे चापराजिता ॥ शिखां में द्योतिनी रक्षेदुमा मूर्षि व्यवस्थिता ॥ २० ॥ मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी ॥ त्रिनेत्रा नेत्रयोर्मध्ये यमघण्टा च नाप्तिके ॥ २१ ॥ शङ्किनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वाराती ॥ कपोली कालिका रक्षेत्कर्णमुले तु ज्ञाङ्करी ॥ २२ ॥ नासिकायां सुगन्धा उत्तरोष्टे च चर्चिका ॥ अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ २३ ॥ दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठमध्ये च चण्डिका घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ २४ ॥ कामांक्षी चिबुकं रक्षेद्राचं मे सर्वमङ्गला ॥ श्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठ वंशे धनुर्धरी ॥ २५ ॥ नीलश्रीवा बिहः कण्ठे नलिकां नलकूबरी ॥ खङ्गधारिण्युभी स्कन्धी बाहू मे वत्रधारिणी ॥ २६ ॥ इस्तौ तु दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्कलीस्तथा ॥ नखाञ्चलेश्वरी रक्षेत्कुक्षी रक्षेत्रलेश्वरी ॥ २७ ॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोक विनाशिनी ॥ हदये छिछता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ २८ ॥ नाभि च कामिनी रक्षेद् ग्रह्मं ग्रह्मेश्वरी तथा ॥ कट्य रक्षेजानुनी विन्ध्यवासिनी ॥ २९ ॥ जङ्के महाबला प्रोक्ता सर्वकामप्रदायिनी ॥ ग्रल्फयोनीरसिंही च पादपृष्ठेऽमितौजसी पादाङ्कर्छाः श्रीधरी च पादाधस्तरुवासिनी ॥ दंष्ट्राकरारिनी रक्षेत्केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ॥ ३१ ॥ रोमकूपाणि वागीश्वरी तथा ॥ रक्तमजावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ॥ ३२ ॥ अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा॥ ३३ ॥ ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ शुक्रं ब्रह्माणी में रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा॥ ३४ ॥ अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मचारिणी॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ॥ ३५ ॥ वज्रहस्ता च मे रक्षेत्राणं केल्याणशोभना ॥ रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ॥ ३६ ॥ सत्त्वं रजस्तमश्रीव रक्षेत्रारायणी सदा आयुर्मे रक्ष वाराहि धर्मे रक्षतु भैरवी ॥ ३७ ॥ यशः कीर्ति च लक्ष्मीं च सदा रक्षन्तु मातरः ॥ गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत्पञ्चनमे पाठान्तरम्-१ प्राणकल्पं च ।

रक्ष चण्डिक ॥ ३८॥ पुत्राच् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्या रक्षतु भैरवी ॥ धनेश्वरी धनं रक्षेत्कीमारी कन्यकास्तथा॥ ३९॥ मार्ग क्षेम अर्थ करी रक्षेद्रिजया सर्वतः स्थिता ॥ राजद्वारे महालक्ष्मीः संग्रामे जयवधिनी ॥ ४०॥ सर्वरक्षाकरं पुण्यं कवचं सर्वदा जपेत् ॥ १९॥ १९६८॥ इदं रहस्यं विप्रषे भक्तया तव मयोदितम् ॥ ४९॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्षितं कवचेन तु ॥ तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥ पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥ कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्र हि गच्छित ॥ ४३ ॥ तत्र ॥ तत्रार्थलाभश्च विजयः सर्वकामिकः ॥ यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति लीलया ॥ ४४ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संयामेष्वपराजितः ॥ ४५ ॥ त्रैलोक्ये तु अवेरपूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामिष दुर्लभम् ॥ ४६ ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयाऽन्वितः ॥ देवी कला भवेत्तस्य त्रेलोक्ये त्वपराजितः ॥ ॥ ४७ ॥ जीवेद्वर्षशतं सात्रमपर्यत्युविवर्जितः ॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविरूफोटकाद्यः ॥ ४८ ॥ स्थावरं जङ्गमं वौऽपि कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ॥ ४९ ॥ भूचराः खेचराश्चेव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥ सहजा कुलजा माला डाकिनी ज्ञाकिनी तथा ॥ ५० ॥ अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ग्रह्भूतिपज्ञाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ५१ ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥ मङ्यन्ति दुर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥ ५२ ॥ मानोन्नतिर्भवेदाज्ञ र्रेतेजोवृद्धिकरं परम् ॥ यशसा वर्धते सोऽपि कीार्तिमण्डितभूत्छे ॥ ५३ ॥ जपेत्सप्तश्तीं चण्डीं कृत्वा तु केवचं पुरा द्धमण्डळं धत्ते सञ्चेलवनकाननम् ॥ ५४ ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्तितिः पुत्रपीत्रिकी ॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरिष भम् ॥ ५५ ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥ ५६ ॥ इति श्रीवराहपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं संपू णम् ॥ कवचेऽस्मिन् सार्घपञ्चाज्ञात्संख्यश्चोकसंग्रह इत्युक्तम् ॥ अन्ये क्षेपकाः ॥ इति श्रीहरिकृष्णवि० वृ० घ० उ० श्रीदुर्गोपासना

पाठान्तरम् - १ अल्पमृत्यु । २ चापि ३ । शाकिनी डाकिनी । ४ राज्ञां तेजो । ५ कीर्ति विन्दाते । ६ कवचमादितः ।

उपा.स्त. ३ दुर्गा.

उध्याये ब्रह्मकवचं प्रथमाङ्गं नाम एकोनपञ्चाशं प्रकरणम् ॥ ४९ ॥ अथार्गछास्तोत्रम् ॥ ॐ अस्य श्रीअर्गछास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महालक्ष्मीर्देवता नवार्णमन्त्रः शक्तिः मन्त्रोदिता देव्यो बीजानि सप्तशतीमन्त्रस्तत्त्वमिष्टार्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानं रहस्ये ॥ शाकम्भरी नीखवर्णा नीखोत्पखिवछोचना ॥ गम्भीरनाभिस्त्रिवछीविभूषिततनूद्री ॥ १ ॥ सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्त पीनचनस्तनी ॥ मुधि शिलीमुखापूर्णी कमलं कमलालया ॥ २ ॥ पुष्पपञ्चवमूलादि फलाद्यं शाकसञ्चयम् ॥ काम्यानन्त रसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युजरापहम् ॥ ३ ॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति विभाति परमेश्वरी ॥ ज्ञाकम्भरी ज्ञाताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ ॥ ४ ॥ उमा गौरी सती चण्डी कालिका सापि पार्वती ॥ शाकम्भरी स्तुवन्ध्यायन् जपन् संपूजयन्नमन् ॥ ५ ॥ अक्षय्य मञ्जुते नित्यमन्नपानामृतादिकम् ॥६॥ इति ध्यानम् ॥ ततः ॐ ऐं हीं क्वीं चामुण्डाये विचे त्रैलोक्यं वशं कुरु कुरु ॥ ॐ ऋषि हवाच ॥ ॐ समलवरफ्रींचामुण्डाये विचे नमः ॥ एवं प्रतिश्चोंके संपुटितं कार्यमिति ॥ ऋषिहवाच ॥ या देवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेन्द्रमुनिकिन्नरैः ॥ सा मे भवतु जिह्वाये ब्रह्मरूपा सरस्वती ॥ १ ॥ जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतोपकारिणि ॥ जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ जयन्ती मङ्गला कृष्णा भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ मधुकैटभविद्रावि विधातृवरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि दिषो जहि ॥ ४ ॥ महिषासुर निर्नाशिविधात्रि वरदे नमः ॥ रूपं॰ ॥ ५ ॥ रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविमार्दिनि ॥ रूपं॰ ॥ ६ ॥ निशुम्भशुम्भनिणीशि तथा धूम्राक्षमर्दिनि ॥ रूपं० ॥ ७ ॥ वन्दितांत्रियुगे देवैदेंवि सौभाग्यदायिनि ॥ रूपं० ॥ ८ ॥ अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशृञ्च विनाशिनि ॥ रूपं॰ ॥ ९ ॥ नतेभ्यः सर्वदा अक्त्या चण्डिके दुरितापहे ॥ रूपं॰ ॥ ० ॥ स्तुवद्भचो भक्तिपूर्व त्वां चण्डिके पाठान्तरम्-१ विनाशिनि । २ देवदेवि । ३ प्रणताय मे ।

च.ज्ज्यो.णी. वर्मस्कंघ ८ अ१६६॥

💆 व्याधिनाज्ञिनि ॥ रूपं० ॥ १९ ॥ चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ॥ रूपं० ॥ १२ ॥ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि देवि 🎉 परं सुखम् ॥ रूपं ० ॥ १३ ॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि विपुछां श्रियम् ॥ रूपं ० ॥ १४ ॥ विधेहि द्विषतां नाज्ञं विधेहि बर्छ असम् असम् ॥ रूपं ० ॥ १८ ॥ सुरासुरिज्ञारीरत्निच्छ चरणेऽम्बिके ॥ रूपं ० ॥ १६ ॥ विद्यावन्तं यज्ञारुवन्तं छक्ष्मीवन्तं जनं कुर्दे ॥ रूपं ० ॥ १८ ॥ प्रचण्डदैत्यद्पंघ्ने चण्डके प्रणताय मे ॥ रूपं ० ॥ १८ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वके संरुत्ते परमेश्वारे ॥ रूपं ० ॥ १८ ॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्रद्धत्तया त्वमम्बिके ॥ रूपं० ॥ २० ॥ हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वारे ॥ रूपं० ॥२१॥ इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वारे ॥ रूपं० ॥ २२ ॥ देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यद्पीविनाशिनि ॥ रूपं० ॥ २३ ॥ देवि अक्तजनोद्दामदत्तानन्दोद्देपेऽम्बिके ॥ रूपं० ॥ २४ ॥ पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ॥ तारिणीं रूपं० ॥ २४ ॥ पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ॥ तारिणीं र्दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २६ ॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ स तु सप्तशतीसंख्या वरमाप्नोति संप दम् ॥२७॥ इति आगमान्तरे विष्णु ॰ अर्गलास्तुतिः संपूर्णा ॥ त्रयोविंज्ञतिसंख्यानां श्लोकानामत्र संग्रहः ॥ इति उक्तम् ॥ अन्ये ॥ क्षेपकाः ॥ इति श्रीहृ॰ वृ॰ घ॰ उ॰ श्रीदुर्गोपासनाध्याये दुर्गागेलास्तोत्रनिरूपणं द्वितीयाङ्गं नाम पंचाशं प्रकरणम् ॥ ५० ॥ अथ श्रीदुर्गाकीलकस्तोत्रम् ॥ ॐ नमश्रण्डिकायै ॥ ॐ अस्य श्रीकीलकारुयस्तोत्रमन्त्रस्य शिव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः महासरस्वती देवता नवार्णमन्त्रः शक्तिः मन्त्रोदिता देव्यो बीजं सप्तशतीमन्त्रस्तत्त्वसुत्किलिनार्थे जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ शाकम्भरी नीलवर्णा इत्याद्यर्गलोक्तं ध्यानम् ॥ ॐ ऐं हीं क्वीं चासुण्डायै विचे ॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ चेवियेडासुंचा क्वीं हीं ऐं ॐ प्रतिश्चोंके लोमिनलोमेन संपुटीकरणम् ॥ ॐ मार्कण्डेय उनाच ॥ निशुद्धज्ञानदेहाय त्रिनेदीदिन्यचक्षुषे ॥ श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय ॥ नमः सोमार्धधारिणे ॥ १ ॥ सर्वमेतद्विनां यस्तु मन्त्राणामपि कीलकम् ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ २ ॥ सिध्य

पाठान्तरम्-१ च मां कुरु । २ चतुर्वक्रसंस्तुते । ३ नाथपूजिते । ४ दुःख । ५ संपदः । ६ द्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ।

उपा.स्त. ३ दुर्गी.

न्त्युचाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यिप ॥ एतेन स्तुवतां देवीं स्तोत्रमैन्त्रेण सिद्धचिति ॥ ३ ॥ न मैन्त्रों नौषधं तत्र न किंचिद्पि वर्तते ॥ विना जाप्येन सिष्येत सर्वमुचाटनादिकम् ॥ ४ ॥ समस्तान्यिप सिद्धचित लोकशङ्कामिमां हरः ॥ कृत्वा निमन्त्रया मास सर्वमेविमदं शुभम् ॥ ५ ॥ स्तोत्रं वे चिण्डकायास्तु तच्च ग्रह्मं चकार सः ॥ समातिर्न च पुण्येन तां यथाविन्नयन्त्रणाम् ॥ ६ ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ॥ कृष्णायां चे चतुर्दश्यामप्टम्यां वा समाहितः ॥ ७ ॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदिति ॥ इत्यंक्ष्पेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥ यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपित संस्फुटम् ॥ स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धवीं जायते वने ॥ ९ ॥ न चैवाप्यटतस्तस्य भयं कापीह जायते ॥ नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ॥ १०॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत द्यकुर्वाणो विनइयति ॥ ततो ज्ञात्वैव संपन्नामिदं प्रारभ्यते बुधेः ॥ ११ ॥ सौभाग्यादि च यितंक चिद्दस्यते छछनाजने ॥ तत्सर्व तत्प्रसादेन तेन जाप्यामिदं ग्रुभम् ॥ १२ ॥ शनेस्तु जप्यमानेऽस्मिन्स्तोत्रे संपत्तिरुचकैः ॥ भवत्येव सम्प्राऽपि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ १३ ॥ ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसंपदः ॥ शत्रुहानिः परो मोक्षः सा न किं स्तूयते जनैः ॥ १८ ॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु जपेत्सप्तशतीं नरः ॥ सरहस्यार्गछोपेतं स सम्यक्फलमञ्जूते ॥ १५ ॥ इति श्रीस्वायम्भवागमे भगवत्याः कीलकं संपूर्णम् ॥ श्लोकाश्चतुर्द्शैवात्र कीलकेऽस्मिन्प्रतिष्ठिताः इति उक्तं नीलकण्ठभट्टाचार्यैः ॥ इति श्रीह्०बृ०घ०उ० श्रीदुर्गोपासनाध्याये कीलकनिरूपणं तृतीयाङ्गं नाम एकपंचाशं प्रकरणम्॥५१॥ अथ विविधन्यासप्रकरणम्॥तत्रादौ एकादशन्यास विधिः॥मूलेनाचम्य प्राणानायम्य ॥ ॐ अद्येत्यादि ॐ एकाद्शन्यासानहं करिष्ये ॥ ॐ अं नमः शिरसि ॥ ॐ आं नमो मुखे ॐ इं नमो दक्षिणनेत्रे॥ॐ ईं नमो वामनेत्रे॥ॐ उं नमो दक्षिणकर्णे ॥ ॐ ऊं नमो वामकर्णे ॥ ॐ ऋं नमो दक्षिणनाप्तिकायाम्॥ ॐ ऋं नमो वामनासिकायाम् ॥ॐ ऌंनमो दक्षिणगण्डे ॥ ॐ ॡं नमो वामगण्डे ॥ ॐ एं नम ऊर्घ्वदन्तपङ्कौ ॥ ॐ ऐं नमोऽधोदन्तपङ्कौ ॥ पाठान्तरम्-१ स्तोत्रमात्रेण । २ न मंत्रामिति । ३ समग्राण्यापे सेत्स्यन्ति । ४ वा । ५ नाल्पमृत्यु । ६ स्तुयते सा न किं जनैः ।

बु.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥१६७॥

ॐ ओं नम अर्ध्वोष्ठि ॥ ॐ औं नमोऽधरोष्ठे ॥ ॐ अं नमो जिह्वायाम् ॥ ॐ अः नमो श्रीवायाम् ॥ ॐ कं नमः खं नमः गं नमः 🔻 पं नमः डं नमः दक्षिणकरसन्धिष्वक्नेषु ॥ ॐ चं नमः छं नमः जं नमः अं नमः वामकरसन्धिष्वक्नेषु ॥ ॐ टं नमः ॐ ठं नमः डं नमः ढं नमः वं नमः वं नमः वामचरणसन्धि क्षे विक्रेषु ॥ ॐ तं नमः थं नमः दं नमः वं नमः वामचरणसन्धि क्षे विक्रेषु ॥ ॐ वं नमः फं नमः वामचरणसन्धि क्षे विक्रेषु ॥ ॐ वं नमः फं नमः वामपार्थे ॥ वं नमः पृष्ठे ॥ अं नमः नाभौ ॥ मं नमः उद्रे ॥ ॐ यं त्यगात्मने नमः हिद् ॥ ॐ रं असृगात्मने नमो दक्षांसे ॥ ॐ छं मांसात्मने नमः ककुदि ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि 🕊 द्श्रहस्तायान्तम् ॥ ॐ षं मज्जात्मने नमः त्हद्यादिवामहस्तायान्तम् ॥ ॐ सं शुकात्मने नमो द्श्रपादायान्तम् ॥ ॐ हं प्राणा ॥ त्मने नमः हृदयादिवामपादायान्तम् ॥ ॐ ळं शक्तयात्मने नमः हृदयाद्यद्यान्तम् ॥ ॐ क्षं क्रोधात्मने नमः हृदयादिमुखान्तम् ॥ मुलेन व्यापकत्रयं विभाव्य ॥ अयं ते मातृकान्यासः प्रथमः परिकीर्तितः ॥ सामवेदसमी भाति सामो मातृकयाऽन्वितः ॥ १ ॥ 🎉 इति प्रथमो न्यासः॥ १॥ ॐ ऐं हीं क्वीं चां नमः किनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ ३ मुं नमः अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ ३ डां नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ३ यें नमः तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ ३ विं नमः अङ्कुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ३ चें नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ३ करमध्ये ॐ ३ पृष्ठे ॐ ३ मणिबन्धे ॐ ३ कूपीरे ॥ॐ३चां नमःह० ॐ३मुं०शि० ॐ३डां०शि० ॐ३ यें० ॐ क० ॐ ३ विं० ने० ॐ ३ चें० अ० ॥ सर्वासु दिश्चु ॥ क्रयोर्मध्यतः पृष्ठे मणिबन्धे च कूपीरे ॥ सहद्यादिसद्वितीयजाति ॥ युक्तः पडङ्गकः ॥ १ ॥ एष सारस्वतो न्यासो महत्यस्मिन्कृते साति ॥ दुारितं विलयं याति जाडचं प्राक्षपाकसंभवम् ॥ २ ॥ इति द्वितीयो न्यासः ॥ २ ॥ ॐ हीं ब्रह्माणी मां पूर्वतः पातु ॥ ॐ हीं माहेश्वरी मामाभेष्यां पातु ॥ ॐ हीं कौमारी मां दक्षिणस्यां पातु ॥ ॐ हीं वैष्णवी मां नैर्ऋत्यां पातु ॥ ॐ हीं वाराही मां पश्चिमायां पातु ॥ ॐ हीं इन्द्राणी मां वायव्यां पातु चामुण्डा मामुत्तरस्यां पातु ॥ ॐ हीं चण्डिका मामीशान्यां पातु ॥ ॐ हीं व्योमेश्वरी मामूर्घ्वं पातु ॥ ॐ हीं सप्तद्वीपेश्वरी

उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ० १२८

मामधः पातु ॥ एवं पूर्वादीशानपर्यन्तं हृदयमारभ्य प्रादक्षिण्येन विन्यस्य मातृगणाख्यं तृतीयं न्यासं कृत्वा तु निर्भयः ॥ जायते त्रिषु लोकेषु सर्वदेविषयो भवेत् ॥ १ ॥ इति तृतीयो न्यासः ॥ ३ ॥ ॐ हीं कमलाङ्कराधरा नन्दजा पूर्वाङ्कं पातु ॥ ॐ हीं खद्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्कं पातु ॥ ॐ हीं पुष्पपळवमूलादिधारिणी शाङ्करी पृष्ठे पातु ॥ ॐ हीं धनुर्वाणधरा दुर्गा वामपार्श्वे पातु ॥ ॐ हीं शिरःपात्रधरा भीमा मस्तकाचरणाविध पातु ॥ ॐ हीं चित्रकान्तिधरा श्रामरी पादाभ्यां शिरो यावत् पातु ॥ अनेन न्यासयोगेन जरामृत्युविवर्जितः ॥ निर्भयश्रामिचौराभ्यां मान्त्रिकस्तत्क्षणाद्भवेत् ॥ १ ॥ इति षड्देव्या त्मकचतुर्थन्यासः ॥ ४ ॥ ॐ ब्रह्मा पादाभ्यां नाभिपर्यन्तं पातु ॥ ॐ हंसः पादद्वयं पातु ॥ ॐ वैनतेयः करद्वयं पातु ॥ ॐ वृषभश्रक्षुषी पातु ॥ ॐ गजाननः सर्वाङ्गानि पातु ॥ ॐ नित्यानन्दमयो हरिः परावर उत्कृष्टं पातु ॥ अभेद्यः पञ्चमो न्यासः कर्तुः कामदुघाफरुः ॥ महापापनिवृत्तेभ्यः प्रायिश्वत्तमसौ अवेत् ॥ १ ॥ इति पञ्चमो न्यासः ॥ ५ ॥ ॐ हीं अष्टाद्शसुजा महा छक्ष्मीर्मध्यं पातु ॥ ॐ क्वीं अष्टसुजा महासरस्वती ऊर्ध्व पातु ॥ ॐ ऐं त्रिंश्छोचनमण्डिता महाकाली अधः पातु ॥ ॐ सिंहा हस्तद्वयं पातु ॥ ॐ परमहंसः अक्षिमण्डलं पातु ॥ ॐ महिषेण समायुक्तः प्रेतः पाद्द्वयं पातु ॥ ॐ महेशानी सर्वाङ्गानि पातु ॥ अ चिडिका परमुत्कृष्टं पातु ॥ वैकुण्ठमुखक्वन्न्यासः षष्ठः कष्टोपशान्तये ॥ १ ॥ इति षष्ठो न्यासः ॥ ६ ॥ अ ऐं ब्रह्मरन्त्रे अ हीं दसनेत्रे अ कीं वामनेत्रे अ चां दसकर्णे अ मुं वामकर्णे अ डां दसनासायाम् अ यें वामनासायाम् अ विं मुले अ चें वाम अ पायो ॥ इति ग्रुतन्यासः सतमः ॥ ७॥ अ ऊं पादो अ ऐं छिङ्गे अ हीं मुले अ कीं वामनासायाम् अ चां दसनासायाम् अ मुं वामनेत्रे अ डां दसनासायाम् अ मुं वामनेत्रे अ डां दसनेत्रे अ डां दसनेत्रे अ वां वामकर्णे अ विं दसकर्णे अ चें ब्रह्मरन्त्रे ॥ न्यासद्वयमिदं प्रोक्तं सुगोप्यं सप्तमाष्टमम् ॥ महाभयमहा व्याधिशृत्रचौराश्रिषातकम् ॥ १ ॥ महारक्षोगणानां च कल्पान्ताश्रिसमं भवेत् ॥ २ ॥ इति ग्रुप्ततरन्यासोऽष्टमः ॥ ८ ॥ ॐ ऐं हीं इतं चामुण्डाये विचे चेवियेडामुंचाक्वींहींऐं ॐ नमः सूर्धनि ॐ २१ हृदये ॐ २१ गृह्ये ॐ २१ पादयोः विस्रोमतः ॐ २१ पादयोः

ॐ २१ गुह्ये ॐ २१ हृद्ये ॐ २१ मूर्धनि ॐ २१ पूर्वाङ्गे ॐ २१ दक्षिणाङ्गे ॐ २१ पश्चिमाङ्गे ॐ २१ वामाङ्गे ॥ अस्मिन् न्यासे कृते सकुन्नवमे देववद्भवेत् ॥ इति दिव्यन्यासो नवमः ॥ ९ ॥ ॐ ऐं हीं क्वीं चामुण्डाये विश्वे हृद्याय नमः ॐ ९ ह्यासे स्वाहा ॐ ९ शिखाये वषद ॐ ९ कवचाय हुम् ॐ ९ नेत्रत्रयाय वौषद् ॐ ९ अस्त्राय फद् ॐ ९ पूर्वस्याम् ॐ ९ आग्नेय्याम् ॐ ९ दक्षिणस्याम् ॐ ९ नेत्र्रत्याम् ॐ ९ पश्चिमायाम् ॐ ९ वायव्याम् ॐ ९ उत्तरस्याम् ॐ ९ ईज्ञान्याम् ॐ ९ उर्ध्वम् ॐ ९ अधः ॥ इति त्रेरुोक्यपूजान्यासो द्श्मः ॥ १० ॥ द्श्वन्यासप्रतिष्ठोऽयं यद्भदेवस्तथा भवेत् ॥ यत्पञ्यति यथा दृष्ट्या तद्भवेत्ताहरां किल ॥ १ ॥ तेन सार्धे महालक्ष्मीः रूवयं वद्ति तत्फलम् ॥ भविष्यमभविष्यं च तं पालयति पुत्रवत् ॥ २ ॥ बह्मविष्णु शिवाश्चेव पालयन्त्यात्मवत्सदा ॥ त्रिषु लोकेषु पर्यन्ति तदाधिक्यं न कंचन ॥ ३ ॥ दश्न्यासकृते पापं दश्जन्मार्जितं क्षणात् ॥ सुतीत्रं विख्यं याति तिमिरं रविणा यथा ॥ ४ ॥ सन्नद्धो दशिभिन्यीसैश्रण्डीसप्तशतीं जपेत् ॥ असाध्यं साधयत्याशु शीत्रं छोकत्रये च यत् ॥ ५ ॥ माधवे मासि मध्याह्ने तपन्तं निर्मछं रविम् ॥ दिवाऽन्धास्तं न पश्यन्ति सर्वदा सर्वगं यथा ॥ ६ ॥ जिक्न ये येत् ॥ ये ॥ सावव साक्ष सन्याह्न तपन्त निमल रावस् ॥ दिवाउन्यास्त न पश्यान्त सवदा सवग यथा॥ ६ ॥ अपि चण्डीसप्तश्तां जाप्ये सरहस्ये नृपोत्तम ॥ न्यासं ते संप्रवक्ष्यामि ब्रह्मविष्णुशिवैः क्वतम् ॥ ७ ॥ अभीष्टसर्वसिद्धचर्थे चन्द्रामृत मनामुखम् ॥ अस्मिन्न्यासे दश श्लोका ब्रह्मविष्णुशिवोदिताः ॥ ८॥ खिद्ग्नि श्लोक्ष्तित्वादि पिठत्वा श्लोकपञ्चकम् ॥ ॐ खिद्ग्नि श्लोक्षित्वा चापिनी बाणा भुशुण्डी पिरचायुधां ॥ ३ ॥ सौम्या सौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्विति मुन्द्री ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥२॥ यच किचित्कचिद्रस्तु सद्सद्वाऽिष्ठिलितिके ॥ तस्य सर्वस्य या शिकः सा त्वं कि स्तूयसे तदा ॥ ३ ॥ यया त्वया जगत्म्नष्टा जगत्पाताऽित्त यो जगत् ॥ सोऽिप निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुिमहेश्वरः ॥ ४ ॥ विष्णुः शरीर्यहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शिक्रमान्भवेत् ॥ ५ ॥ इत्येवं श्लोकपञ्चकमर्गलं कृष्ण भिद्रशा वर्णे ध्वात्वा ऐ इति सर्वाङ्गके न्यसेत् ॥ कृष्णतरं ध्यानं नाभौ न्यसेत् ॥ श्लोकेन पाहि नो देवि पाहि खद्गेन चाम्बिके ॥ घण्टा

दुर्गा.

स्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ १ ॥ सूर्यसदृशं द्वितीयं हीं सर्वतो न्यसेत् ॥ ॐ हीं हृदि ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चिण्डके रक्ष दक्षिणे ॥ श्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरी ॥ २ ॥ ॐ हीं गुदे ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ ३ ॥ ॐ हीं दक्षिणपादे ॥ खङ्ग ग्रूलगदादीनि यानि चाह्याणि तेऽम्बिके ॥ कर पछ्ठवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ ४ ॥ ॐ हीं वामपादे ॥ इत्येवं श्लोकचतुष्टयं कीलकं बालाकंसदृशं ध्यात्वा स्वदेहे व्यापक त्वेन विन्यसेत् ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे इत्यादिश्लोकपञ्चकम् ॥ पठित्वा स्काटिकाभासं तृतीयं (बीजं क्वीं) स्वतनी न्यसेत् ॥ सर्वस्व रूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ ॐ द्वी शिरिस ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं छोचन त्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ ॐ द्वी सुखे ॥ ज्वालाकरालमत्युत्रमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकाछि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ ॐ क्वीं दक्षिणभुजे ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ४ ॥ ॐ क्कीं वामभुजे ॥ असुरासृग्वसापङ्कचितस्ते करोज्ज्वलः ॥ ग्रुभाय खङ्गो भवृत चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ५ ॥ ॐ क्वीं हृद्ये ॥ इत्येवं श्लोकपञ्चकं कवचं शुद्धरफटिकसङ्काशं ध्यात्वा स्वदेहव्यापकं कुर्यात् ॥ स्फटिकसङ्काशं न्यासं त्रैलोक्यकामदम् ॥ अयमेकादशो न्यासो दशन्याससमो भवेत् ॥ १ ॥ एवं न्यासविधि कृत्वा योनिसुद्रां विलोकयेत् ॥ यस्या विलोकनादाजन् कृतो न्यासः स्थिरो अवेत् ॥ २ ॥ इति सप्तशतिकायाः एकादशन्यासविधिः संपूर्णः ॥ ॥ ११ ॥ अथ प्रकारान्तरेण न्यासः ॥ ॐ यन्मोहो ज्ञानिनोरिप अङ्गु० ॥ ॐ निद्रां भगवतीं विष्णोः तर्ज० ॥ ॐ जयेति देवाश्च मुदा मध्य ।। ॐ आजघान भुजे सन्ये अना ।। ॐ इते तस्मिन्महावीर्ये किन ।। ॐ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तं कर तल ॥ एवं हृदयादिन्यासः ॥ अत्र मूलं नोपलभ्यत इति नागोजीभट्टः ॥ अथ पाठाङ्गत्वेन विहितन्यासः ॥ तत्र नामानि ॥ चरितत्रय जाप्यस्य चिण्डकाया नृपोत्तम ॥ सरहस्यस्य नामानि ब्रह्मोक्तानि वदामि ते ॥ १ ॥ महाविद्या महामन्त्रा चण्डीसप्तश्रतीति च ॥

श्च.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ (११६९॥

मृतसंजीविनी नाम चतुर्थे परिकीर्तितम् ॥ २ ॥ पञ्चमं च महाचण्डी चतुःषष्टिपदी परम् ॥ एतानि योऽभिजानाति नामानि नृपसत्तम ॥ ३ ॥ तपो विना भवेत्तस्य चिण्डका वरदा सदा ॥ ४ ॥ अथैभिरेव षडङ्गः ॥ ॐ महाविद्यायै नमः अङ्गु॰ हृदये ॥ ॐ महामन्त्रायै नमः तर्ज॰ शिरिस ॥ ॐ चण्डीसप्तशत्यै नमः मध्य॰ शिखायै वषट् ॥ मृतसंजीविन्यै नमः अना॰ कवचाय हुम् ॥ ॐ महाचण्डचै नमः किनि॰ नेत्र॰ ॥ ॐ चतुःषष्टिपद्यै नमः करतल् अस्त्रा॰ इति पाठाङ्गत्वेन विहितन्यासः ॥ अथ प्रकारान्तरेण क्रि डामरतन्त्रोक्तन्यासः ॥ ॐ अस्य श्रीसप्तज्ञातिकास्तोत्रमालामन्त्रस्य मार्कण्डेयसुमेधात्रह्मेन्द्रवासुदेवरुद्राद्य ऋषयः ॥ गायत्रयुष्णि ॥ मधुकैटभमिद्निमिहिषासुरसेनानीमहिषासुरमिद्निधूम्रहोचनचण्डसुण्डरक्तबीजशुम्भनिशुम्भमिद्नियो देवताः ॥ मधुकैटभमर्दिनीमहिषासुरमर्दिनीशुम्भनिशुम्भमर्दिन्यः प्रधानदेवताः ॥ ब्राह्मीमाहेश्वरीकौमारीवैष्णवीवाराहीन्द्राणीचासुण्डा गर्भ देवताः ॥ नन्दारक्तदन्तिकाञ्चाकंभरीदुर्गाभीमाश्रामयेश्वाङ्गदेवताः ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ देव्या यया ततिमदं जगदात्मश्वन्या निःशेषदेवगणशिक्तसमूहमूत्या ॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थिताऽसि इति बीजम् ॥ त्वं श्रीरूत्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिबींघलक्षणा ॥ या श्रीः स्वयं सुक्कृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतिधियां हृद्येषु ॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु इति ज्ञाक्तिः ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ मेघा ऽसि देवि विदिताखिलज्ञास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥ इति कील कम् ॥ श्रीदेवीमाहात्म्योक्तसंपूर्णफलिखचर्यं जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ शंभुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके ॥ ॐ हां विनयोगः ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ शंभुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके ॥ ॐ हां विनयोगः ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ शंभुतेजोज्वलज्ज्वालामालिनि पावके ॥ ॐ हां विनयोगः विन्यासः विनयोगः विनयोगः विनयोगः विनयोगः विश्वास्य विवयमाभ्यां नमः शिखा ॥ ॐ शंभुतेजोज्वले हें दुर्गाये नमः अनामिकाभ्यां नमः क० ॥ ॐ शंभुतेजोज्वले हों भीमाये नमः किनिष्ठिकाभ्यां नमः ने ॥ ॐ शंभुतेजोज्वले हां भीमाये नमः किनिष्ठिकाभ्यां नमः ने ॥ ॐ श्र्भुतंजोज्वले हां भामाये नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः अ० ॥ ॐ श्र्भुतंज्वले हां दिग्वन्यः ॥ ॐ

उपा.स्त. ₹ दुर्गा. अ०१३८

अथाङ्गन्यासः ॥ ॐ वाराह्मे नमः पादयोः ॥ ॐ नारसिंह्मे नमः नितम्बे ॥ ॐ त्राह्मे नमः पृष्ठे ॥ ॐ वैष्णव्ये नमः दक्षभुने ॥ अधाक स्वार्ति । अ वाराह्म नमः पाद्याः ॥ अ नारात्म नमः । नतम्ब ॥ अ नाह्य नमः पृष्ठ ॥ अ विष्णव्य नमः दक्षमुज ॥ अ मार्थे नमः हक्षमुज ॥ अ मार्थे नमः हक्षमुज ॥ अ काल्ये नमः हक्षमुज ॥ अ काल्ये नमः वामकुको ॥ रक्तदिन्तकाये नमः दक्षकुको ॥ अ ज्ञताक्ष्ये नमः पृष्ठवं ॥ अ काल्ये नमः वामकुको ॥ रक्तदिन्तकाये नमः दक्षकुको ॥ अ ज्ञताक्ष्ये नमः पृष्ठवं ॥ ॥ अ क्षाक मार्ये नमः भ्रुवोः ॥ अथान्यश्च अङ्गन्यासः ॥ अ खिडुनी ज्ञाक मार्ये विष्णि स्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्राहि नो नित्यं दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥ इति उदरे ॥ ॐ एतत्ते वदनं सौम्यं छोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥ इति नाभौ ॥ ॐ ज्वालाकरालमत्युत्रमशेषासुर स्नुदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेभेद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ इति अर्वोः ॥ ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ ९ ॥ इति जान्वोः ॥ ॐ असुरासुग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खद्गो अवतु चिण्डके त्वां नता वयम् ॥ १० ॥ इति पादयोः ॥ अथ ध्यानम् ॥ सौवर्णाम्बुजमध्यगां त्रिनयनां सौदामिनीसन्निभां शृङ्धं चक्रगदाभयानि द्धतीमिन्दोः कलां विश्रतीम् ॥ यैवेयाङ्गद्हारकुण्डलधरामाखण्डलाद्यैः स्तुतां ध्यायेद्विन्ध्यनिवासिनीं शिश्चि मुखीं पार्थस्थपञ्चाननाम् ॥ १ ॥ या देवी मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मुलिनी या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डश्मनी या रक्तबीजाशनी ॥ या शुम्भादिनिशुम्भदैत्यदमनी या सिद्धलक्ष्मीः परा सा चण्डी नवकोटिशाकिसाईता मां पातु विश्वेश्वरी ॥ २ ॥ इति प्रकारान्तर

्ब्रूड्ज्यो.र्ण. वर्षस्कंध ८ (११७०॥

न्यासः ॥ अथ कुल्लुकादिन्यासः ॥ ॐ हीं हूं कुल्लुकायै नमः शिरिस ॥ ॐ सेतवे नमः हिद ॥ ॐ स्त्रीं महासेतवे नमः कण्ठे ॥ ॐ ऐं हीं कीं चामुण्डाये विचे ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं ऌं एं ऐं ओं ओं अं अः कं खं गं घं डं चं छं जं झं अं टं ठं डं ढं णं तं थं दं घं नं पं फं वं भं मं यं रं छं वं शं षं सं हं ळं क्षं ॥ ॐ निर्वाणाय नमः मणिपूरे ॥ ॐ ऐं महाकुण्डाछिन्ये नमः मूलाघारे ॥ ॐ क्षीं कामराजाय नमः लिङ्गे ॥ ॐ रां रीं रमलवरयूं राकिन्यै नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ॐ द्विजिह्वायै नमः हिंदि ॥ इति कुल्लुकादिन्यासः ॥ अथ नवार्णन्यासक्रमः ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायञ्याष्णगनुष्टुप्छन्दांसि महाकाछीमहारुक्षीमहासरस्वत्यो देवताः नन्दाञाकं भरीभीमाः श्रुक्तयः रक्तद्गितकादुर्गाभ्रामयो जपे विनियोगः ॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ गायञ्युष्णिगनुष्ट्रप् ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदये ॥ नन्दाज्ञाकम्भरीभीमाज्ञाकिभ्यो नमः कण्ठे ॥ रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामरीबीजेभ्यो नमः स्तनयोः ॥ अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमः फलके ॥ ॐ ऐं हीं क्वीं चासुण्डायै ततोऽङ्कारिन्यासो यथा ॥ ॐ ऐं अङ्कुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ हीं तर्ज० ॥ ॐ क्वीं मध्य० ॥ ॐ चामुण्डाये अना० ॥ विचे कनि ॥ ॐ ९ करतलकरपृष्ठा ॥ अथ हदयादि न्या ॥ ॐ ऐं ह ॥ ॐ हीं शिर ॥ ॐ कीं शिखा ॥ ॐ चामु ण्डायै क॰ ॥ ॐ विचे ने॰ ॥ सकलेन अस्त्राय फट् ॥ ततोऽक्षरन्यासो यथा ॥ ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ ॐ हीं नमः दक्षनेत्रे ॥ ॐ क्कीं नमः वामनेत्रे ॥ ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ॐ मुं नमः वामकर्णे ॥ ॐ डां नमः दक्षिणनासायाम् ॥ ॐ वामनासायाम् ॥ ॐ विं नमः मुखे ॥ ॐ चें नमः गुह्ये ॥ ततो सूलेन शिखादिपादपर्यन्तमप्टवारं व्यापकं कुर्यात् ॥ ततः ॐ ऐं नमः प्राच्ये ॥ ॐ ऐं आग्नेय्ये० ॥ ॐ हीं दक्षिणाये० ॥ ॐ हीं नैर्ऋत्ये० ॥ ॐ क्वीं पश्चिमाये० ॥ ॐ क्वीं वायव्ये० ॥ चामुण्डायै उदीच्यै॰ ॥ ॐ विच्चे ईज्ञान्यै॰ ॥ ॐ सकलेन ऊर्ध्वायै॰ ॥ पुनः सकलेन अधरायै॰ ॥ अथ ध्यानम् ॥

उपा.स्त. १ दुर्गा.

खद्गं चक्रगदेषुचापपरिघाच शूळं भुशुण्डीशिरःपाशाच् संद्धतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ नीलाइमद्यतिमास्यपाद्दशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौतस्विपिते हरी कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥ अक्षस्रक्परञ्जू गदेषुकुलिज्ञं पद्मं धनुः कुण्डिकां हुण्डे विकास कि स्वास्तिक कि स्वास्तिक कि स्वास्तिक स्वास्तिक कि स्वासिक कि स्वास्तिक स्वासिक स्वासि महारुक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥ घण्टाशूरुहरुानि शङ्क्षेष्ठसरुे चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधर्ती घनान्तविरुसच्छीतांशुतुल्य प्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजेच्छुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥ इति ध्यात्वा मानसो पचारैः संपूज्य ॥ इति नवार्णन्यासविधिः ॥ अथ सप्तशतीन्यासः ॥ तत्रादौ समष्टिसंकल्पः ॥ ॐ अस्य श्रीसप्तशतिकामाला मन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ॐ क्वां श्रीं हीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः गायञ्याष्णगतुष्टुप् छन्दांसि ऐं हीं क्वीं नन्दाशाकं भरीभीमाः शक्तयः ॐ ऐं हीं क्वीं रक्तदन्तिकादुर्गाश्रामयीं बीजानि हस्रीं स्तत्त्वानि ऋग्यज्ञःसामवेदा ध्यानानि मम सकलपापक्षयार्थे चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धचर्थे अभीष्टप्राप्तयर्थे न्यासञ्जापोद्धारोत्कीलन जपरात्रिसूक्तपूर्वकं मार्कण्डेय उवाचेत्यारभ्य सावर्णिर्भविता मनुरित्यन्तं पुनः देवीसूक्तन्यासनवार्णजपान्तं सप्तशतीपाठं कारिष्ये ॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ऋषये वा ऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ देवताभ्यो नमः हृदये ॥ शक्तिभ्यो नमः पादयोः ॥ अथ करषडङ्गन्यासः ॥ ॐ खङ्गिनी शूछिनी घोरा गदिनी चिक्रणी तथा ॥ शङ्किनी चापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुघा ॥ ॥ १ ॥ अङ्कृष्टाभ्यां नमः ॥ हृद्द्र ॥ ॐ शूछेन पाहि नो देवि पाहि खङ्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ २ ॥ तर्जनीभ्यां नमः ॥ शिर० ॥ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ श्रामणेनात्मशूलस्य उत्तर्स्यां तथेश्वरी ॥ ॥ ३ ॥ मध्यमाभ्यां नमः ॥ शि० ॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ॥ यानि चात्यन्तघोराणि ते रक्षारमांस्तया भुवम् ॥ ४ ॥ अनामिकाभ्यां ।। कव ।। ॐ खङ्ग शूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ करपञ्चवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष

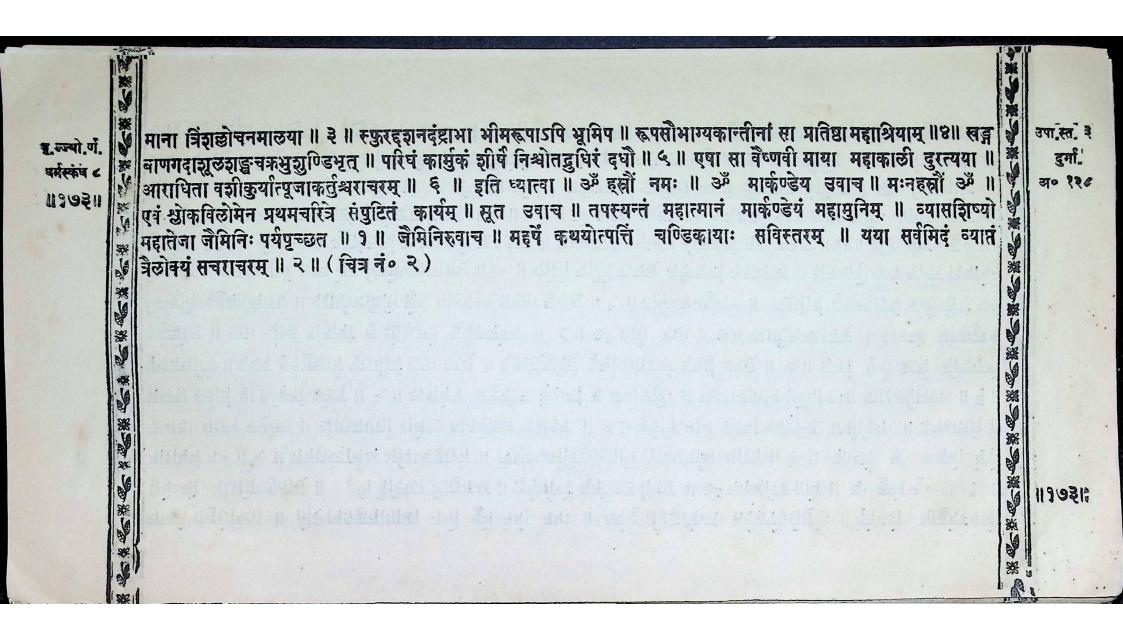
सर्वतः॥५॥ किनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ नेत्र०॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥६॥ अस्त्राक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥६॥ अस्त्राक्तिसमन्विते ॥ अथिभ्यानम् ॥ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपितस्कन्धितां भीषणां अ ॥१७१॥ 🕷 कन्याभिः करवाळखेटविळसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥ इस्तैश्रक्षधरासिखेटविशिखांश्रापं गुणं तर्जनीं बिश्राणामनळात्मिकां शशिधरां दुर्गी त्रिनेत्रां भने ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचाँरैः संपूज्य ॥ छं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ॥ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि ॥ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि ॥ रं अग्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि ॥ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परि कल्पयामि ॥ सं सर्वात्मकं सर्वोपरूकरं परिकल्पयामि ॥ ततो गन्धादिना पुरूतकं संपूज्य आधारे रूथापयेत् ॥ इति सप्तज्ञतीन्यासः ॥ इति श्रीहृ॰बृ॰घ॰ड॰ श्रीदुर्गोपासनाध्याये विविधन्यासनिरूपणं नाम द्विपञ्चाज्ञां प्रकरणम्॥५२॥अथ ज्ञापोद्धारोत्कीलनादिप्रकरणम्॥ ॐ हीं क्वीं श्रीं कों कीं चण्डिकादेव्ये शापानुयहं कुरु कुरु स्वाहा ॥ पाठादी सप्तवारं जपेत् ॥ ॐ श्रीं क्वीं हीं सप्तशाति चण्डिके उत्कीं उन कुरु कुरु स्वाहा ॥ अन्यञ्च॥ ॐ हस्नां हस्नी क्षों ऐं क्षमछवरकीं डमछवरकीं ॐ क्षं क्षां क्षीं क्षुं क्षें क्षों क्षः उत्कीं छय २ स्वाहा॥ अन्यज्ञ ॥ ॐ हीं हीं कीं ॐ ऐं क्षोभय २ मोइय २ अमलवरकीं रूकीं उत्कीलय २ स्वाहा ॥ पाठादी एकविंशतिवारं जपेत्॥ ॐ रं संयुक्तं रं क्षं ॐ इति सप्तवारं जिपत्वा जागरिता विद्या भवति ॥ ततः पञ्चद्श्वारं प्रणवं जिपत्वा ॐ मूळंॐ सप्तवारं जिपत्वा शतमादो शतं चान्ते मध्ये च चरितत्रयम् ॥ सकामः संपुटो जाप्यो निष्कामः संपुटं विनेति वचनात् ॥ जपं कर्तुं माला प्रार्थनां कुर्यात् ॥ ॐ मां माले महामाये सर्वज्ञाक्तिरुवक्षणिण ॥ चतुर्वर्गरुत्वायि न्यरुतरुतरुमान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥ ॐ ऐं हीं सिद्धचै नमः ॥ अविघ्नं कुरु माले त्वं अनेन मन्त्रेण मालां गृहीत्वा संपूज्य दक्षकरस्य मध्याङ्कालिमध्यपर्वणि संस्थाप्यैकायचित्तः

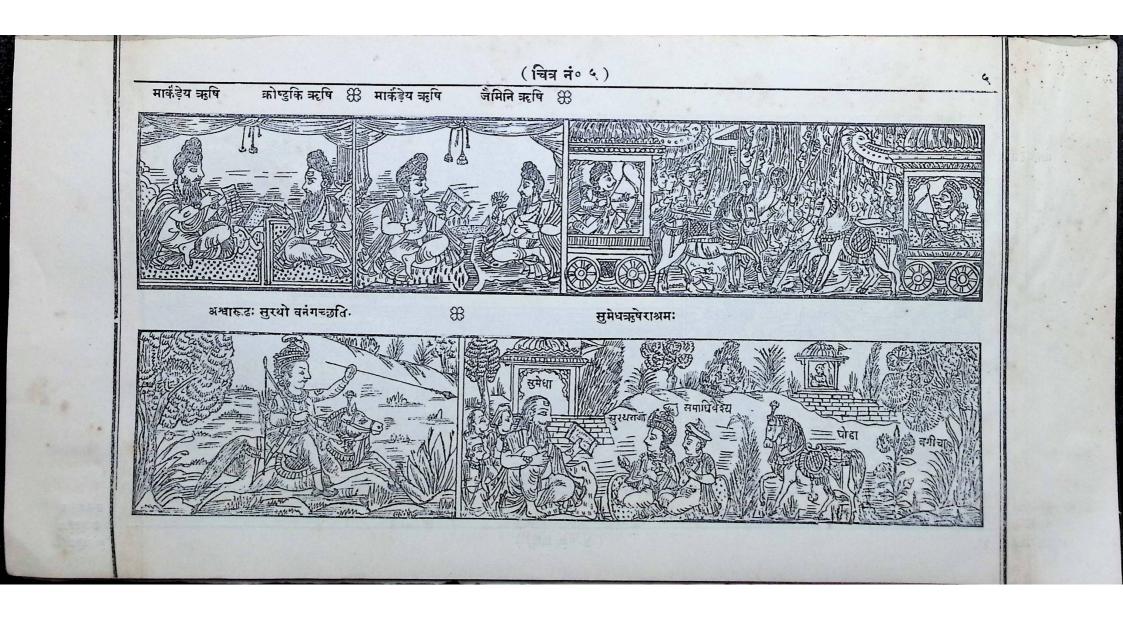
दुर्गी, अ० ११८

सन् मूलमहोत्तरज्ञतं प्रजप्य मालामभिवन्द्य ॥ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा ज्ञुभदा भव ॥ ज्ञिवं कुरूष्व मे भद्रे यशो वीर्य च देहि मे ॥ ॐ नमः सिद्धचै नमः इति मन्त्रेण मालां शिरसि निधाय रहिस स्थापयित्वा गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥ १ ॥ इ।ति मन्त्रेण देव्या वामकरे जपं निवेद्य ॥ अम्ब त्वत्सर्ववाक्यानि सुक्ता सूक्तानि यानि च ॥ तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दुयाळुत्वेन साद्रम् ॥ १ ॥ तव प्रतिज्ञा मद्रका न नश्यन्तीत्यपि कचित् ॥ इति संचिन्त्य सञ्चिन्त्य प्राणान्संधारयाम्यहम् ॥ २ ॥ इति मन्त्रेण क्षमापयेत् ॥ ततः रात्रिसूक्तं पठेदादौ मध्ये सप्तश्नतीस्तवम् ॥ प्रान्ते तु पठनीयं वै देवीसूक्तमिति क्रमः ॥ १ ॥ अतो रात्रिसूक्तं जपेत् वेदोक्तं वा ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीमित्यारभ्य इन्तुमेतौ महासुरौ इत्यन्तं पञ्चद्शश्चोकात्मकं पठेत् ॥ अथ रात्रिसृक्तम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंदारकारिणीम् ॥ स्तौमि निद्रां भगवतीं विष्णोरतुरुतेजसः ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्राऽत्मिका स्थिता॥२॥अर्धमात्रा स्थिता नित्या याऽनुचार्या विशेषतः॥ त्वमेवसा त्वं सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥३॥ त्वयै तद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥४॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ तथा संहितिरूपाऽन्ते जगतोऽस्य जगन्मये॥५॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ महामोहा भगवती महादेवी महासुरी॥६॥ प्रकृतिस्तवं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ कालरात्रिर्महारात्रिमीहरात्रिश्च दारुणा ॥७॥ तवं श्रीस्तवमीश्वरी तवं हीस्तवं बुद्धिमीह लक्षणा ॥ रुजा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं ज्ञान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ८ ॥ खिङ्गनी ज्ञूलिनी घोरा गदिनी चिक्रणी तथा ॥ ज्ञिङ्जिनी चापिनी बाणा अुशुण्डी परिघायुधा ॥ ९ ॥ सौम्या सौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमे

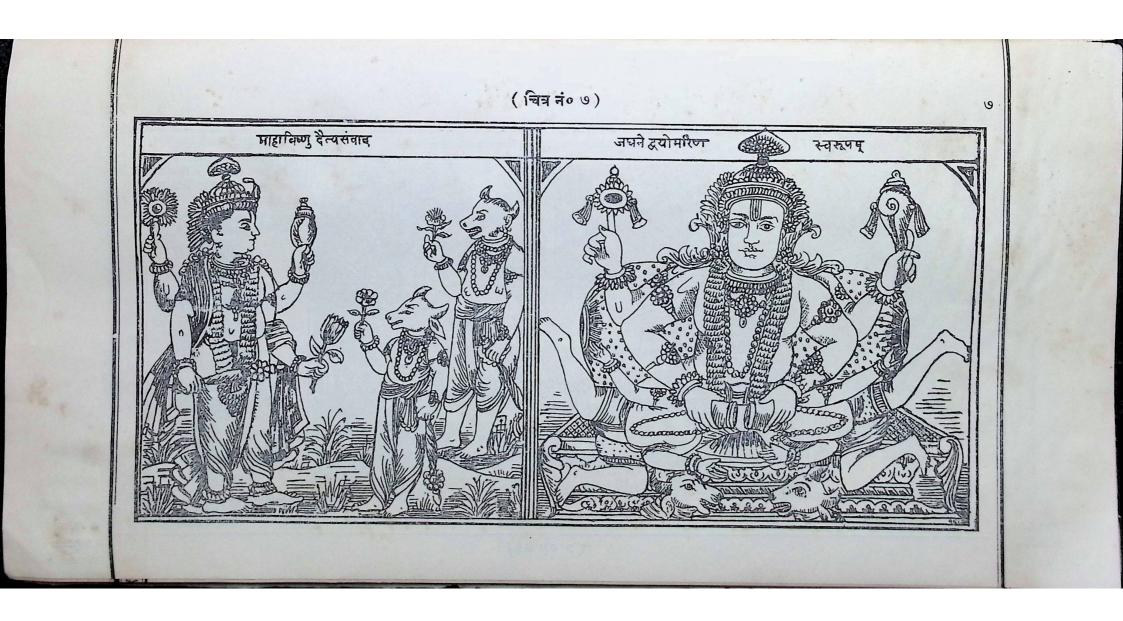
अरी ॥ १० ॥ यच्च किंचित्कचिद्रस्तु सद्सद्वाऽिखलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥ ११ ॥ यया अस्किव ८ विष्णुः न्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यित्त यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः करूत्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२ ॥ विष्णुः शरीरस्रहणमहमीशान ॥१७२॥ हैं एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्विमत्थं प्रभावैः स्वैरुद्रिवे संस्तुता ॥ मोह्येती दुराधर्षावसुरो मधुकैटभो ॥ १४ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो छघु ॥ बोधश्च क्रियतामस्य इन्तुमेतौ महासुरो ॥ १५ ॥ पाठादौ पञ्चद्शश्चोकात्मकं रात्रिसूक्तं पठेत् ॥ इति दुर्गायाः प्रथमाध्यायोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥ अथ वेदोक्तम् ॥ ॐ रात्री व्यख्य 🎇 दायती पुरुत्रा है १ व्या अक्षिभः विश्वाऽअधिश्रियोधित ॥ ओर्वपा अमर्त्या निवतो देव्यु १ द्वतः ॥ ज्योतिषा बाधते तमः ॥ निरु स्वसारमस्कृतोषसंदेव्यायती ॥ अपेदुहासतेतमः ॥ सानोअद्ययस्यावयंनितयामन्नविक्महि ॥ वृक्षेन वसति वयः ॥ नियामासो अविक्षतिनपद्वन्तोनिपक्षिणः ॥ निरुयेनासिश्चदर्थिनः ॥ यावयावृक्यं १ वृकंयवयस्तेनसूर्भ्यं ॥ अथानः स्रुतरा भव ॥ उपमापेषि। इत्तमःकृष्णंव्यक्तमस्थित ॥ उपऋणेवयातय ॥ उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितार्द्वः ॥ रात्रीस्तोमं न जिग्युषे ॥ आरात्रिपार्थिवं रजः पितरः सोमधामिभः ॥ दिवः सदांसि बृहती वितिष्टस आत्वेषं वर्तते तमः ॥ ये ते रात्री वृक्षचसो युक्तासो नवतीर्नव ॥ अज्ञीत संत्वष्टाऽ उतो ते सप्तसप्ततीः ॥ रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूतनिवेशनीय् ॥ भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो दिशाम् ॥ संवेशनीं संयमनीं यहनक्षत्रमालिनीम् ॥ प्रपन्नोऽहं शिवां रात्रीं भद्रे पारमशीमहि ॥ आदित्यवणी तपसा ज्वलन्ती वैरोकिणी चन्द्र सहस्रदीपिताम् ॥ देवीं कुमारीमृषिभिश्च पूजितां तां दुर्गमातां श्ररणं प्रपद्ये ॥ दुर्गेषु विषमे घोरे संप्रामे रिपुसंपुटे ॥ अग्निचीर निपातेषु सर्वयहनिवारणे ॥ दुर्गेषु विषमेषु त्वं संयामेषु वनेषु च ॥ नमस्कृत्य प्रपद्यन्ते तेषां नो अभयं कुरु ॥ क्षीरेण स्नापिता दुर्गा 🖁

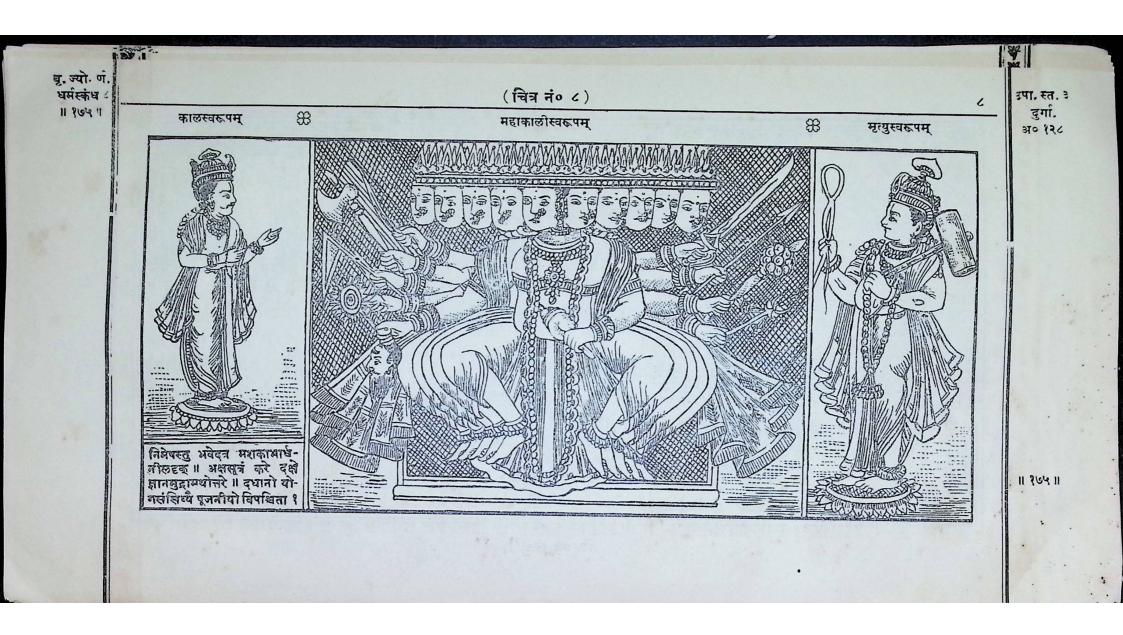
चन्दनेनानुरुपिता ॥ बिल्वपत्रकृतामाला नमो दुर्गे नमो नमः ॥ सर्वभूतिपशाचेभ्यः सर्वसर्पसरीसृपैः ॥ देवेभ्यो मानुषेभ्यश्रो भयेभ्यो माऽभिरक्षताम् ॥ इति वैदिकरात्रिसूक्तम् ॥ द्वयोर्भध्ये एकं पठनीयम् ॥ ॐ नमश्रण्डिकायै ॥ या कुन्देन्दु० ॥ १ ॥ नारायणं न० ॥ २ ॥ जयशब्दार्थश्च भविष्यपुराणे ॥ विष्णुधर्मादिशास्त्राणि शिवधर्माश्च भारत ॥ ३ ॥ कार्ष्णे च पञ्चमो वेदो यन्मया भारतं रुमृतम् ॥ श्रीरामधर्मा राजेन्द्र मानवोक्ता महीपते ॥ ४ ॥ जयोति नाम एतेषां प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ प्रणवमादितो जप्त्वा रूतोत्रं वा संहितां पठेत् ॥ ५ ॥ अश्वमेधः ऋतूनां च देवानां च यथा हरिः ॥ रूतवानामिष सर्वेषां तथा सप्तज्ञातीरूतवः ॥ ६ ॥ प्रथमचारेत्रे ॥ प्रणवं पूर्वमुज्ञार्य पराबीजं ततः परम् ॥ एतत्संपुटितं कुर्यान्नमोऽन्तं प्रथमं जपेत् ॥ ७॥ प्रणवं पूर्वमुज्ञार्य बीजमन्ते समुचरेत् ॥ ततः श्लोकं पठित्वा तु श्लोकान्ते पूर्ववज्जपेत् ॥ ८॥ ॐ हस्रौं नमः ॥ अथ पराबीजलक्षणम् ॥ अनन्तं चन्द्रभुवन मिन्दुबिन्दुयुगान्वितम् ॥ पराबीजामिति ज्ञेयं नाल्पस्य तपसः फल्सम् ॥ ९ ॥ मार्कण्डेयपुराणे ॥ चन्द्रबीजं सुचन्द्राढचं हस्रौं बीजं चलं स्थितम् ॥ एतत्परापरं तत्त्वं येन सिध्येत्ततोत्तमम् ॥१० ॥ चरिते चरिते राजन् जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ॥ शतमादौ शतं चान्ते विधानेन तु सुत्रत ॥११॥ बीजं विना महास्तोत्रं न सिध्याति कदाचन ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन बीजयुक्तं सदा पठेत् ॥१२॥ इति श्रीह० बृ० घ० उ॰ दुर्गोपासनाध्याये त्रिपञ्चाज्ञां ज्ञापोद्धारादिप्रकरणम् ॥ ५३ ॥ ॐ अस्य श्रीदुर्गायाः प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः ही श्रीमहाकाछी देवता ऐं नन्दजा शक्तिः हीं रक्तदन्तिका बीजं रं अभिस्तत्त्वं ऋग्वेदो ध्यानं श्रीमहाकाछीपीत्यर्थे जपे विनियोगः अथ ध्यानम् ॥ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता ॥ सा शर्वा चिण्डका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥ १ ॥ योगनिद्रा इरे हका महाकाली तमागुणा ॥ मधुकैटभनाशार्थ यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥२॥ दशवका दशभुजा दशपादाऽअनप्रभा ॥ विशालया राज











पाठान्तरम्-१ प्रणतोदितम् ।

च.क्ज्यो.र्ण. वर्मस्कंघ ८ ॥१७६॥ उवाच ॥ २० ॥ ॐ समाधिर्नाम वैद्योऽहसुत्पन्नो घिनां कुळे ॥ २१ ॥ ॐ पुत्रद्रिनिरस्तश्च घरळोभाद्साधुभिः ॥ विद्वीनः स्वजने द्रिरे पुत्रेरादाय मे घनम् ॥ २२ ॥ ॐ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चात्रवन्धुभिः ॥ सोऽइं न विद्य पुत्राणां कुत्रळाकुत्रळात्मिकाम् ॥ ॥२३॥ॐ प्रवृत्तिं स्वजनानां च द्राराणां चात्र संस्थितः॥ किं चु तेषां ग्रहेक्षेममक्षेमं किं चु सम्प्रतम्॥२३॥ ॐ कथं ते किं चु सहत्ता दुर्वृत्ताः किं चु मे सुताः ॥ २५ ॥ ॐ राजोवाच ॥ २६ ॥ ॐ येनिरस्तो भवाँ लुङ्वैः पुत्रद्राराद्भिधिनेः ॥ २७ ॥ ॐ तेषु किं भवतः स्नेहमजुवभ्राति मानसम् ॥ २८ ॥ ॐ वैद्य उवाच ॥ २९ ॥ ॐ एवमेतद्यथा प्राह् भवानस्प्रतं वचः ॥ ३० ॥ ॐ किं करोमि न वभ्राति मम निष्ठरतां मनः ॥ यैः संत्यज्य पितृक्षेहं घनळुव्येनिराकृतः ॥ ३१ ॥ ॐ पतिः स्वजनहाई च हार्दि तेष्वेव मे मनः ॥ किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ ३२ ॥ ॐ यत्प्रमप्रवणं चित्तं विग्रणेष्वि वन्धुषु ॥ तेषां कृते मे निश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥ ३३ ॥ ॐ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठरम् ॥ ३० ॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ ३५ ॥ ॐ ततस्तो सहितो विप्र तं सुनि समुपस्थितो ॥ ३६ ॥ ॐ समाधिनाम वैद्योऽसी स च पार्थिवसत्तमः ॥ कृत्वा च तो यथान्यायं यथाई तेन संवि दम् ॥ ३० ॥ ॐ उपविष्ठो कथाः काश्चित्रकर्त्तेष्ठ स्व च पार्थिवसत्तमः ॥ कृत्वा च तो यथान्यायं यथाई तेन संवि दम् ॥ ३० ॥ ॐ उपविष्ठो कथाः काश्चित्रकर्त्तवैद्यपार्थिवो ॥ ३८ ॥ ॐ राजोवाच ॥ ३९ ॥ ॐ भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छा म्येकं वदस्त तत्त ॥ ३० ॥ ॐ दुःखाय यन्ये मनसः स्वित्तायत्ततां विना ॥ ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्विकेष्व ॥ धि ॥ ४९ ॥ ॐ जानतोऽपि यथाऽज्ञस्य किमेतन्युनिसत्तम ॥ अयं च निष्कृतः पुत्रेदिर्यस्योण्डितः ॥ ४२ ॥ ॐ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाऽप्यति ॥ एवमेप तथाऽहं च द्वाद्यत्यन्यन्तदुःखितो ॥ ४३ ॥ ॐ हपद्वेषिऽपि विषये ममत्वाक्कृत्वानसे ॥ तौत्किमेत

1130811

पाठान्तरम्-१ तत्केनैत

न्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरिष ॥ ४४ ॥ ॐ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य सूढता ॥ ४५ ॥ ॐ ऋषिक्वाच ॥ ४६ ॥ ॐ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोविषयगोचरे ॥ ४७ ॥ ॐ विषयाश्च महाभाग यान्ति चैनं पृथक् पृथक् ॥ दिवान्धाः प्राणिनः केवि द्वाञ्चार्मस्त्र समस्तस्य जन्तोविषयगोचरे ॥ ४० ॥ ॐ केचिहिवा तथा रात्रो प्राणिनस्तुल्यहृष्यहृष्यः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं नु ते न हि केव छम् ॥ ४९ ॥ ॐ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिषृगाद्यः ॥ ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥ ५० ॥ ॐ मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥ ज्ञानेऽपि सति पश्येतान्यतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥ ५९ ॥ ॐ कणमोक्षाहृतान्मोहात्पीह्य मानानिष श्चुधा ॥ मानुषा मनुजन्याप्र साभिछाषाः सुतान्प्रति ॥ ५२ ॥ ॐ छोभात्रत्रयुपकाराय नन्वेतान्कि न पश्यिम ॥ तथाऽपि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥ ५३ ॥ ॐ महामायाप्रभावेण संसारिक्थितिकारिणो ॥ तन्नात्र विरूमयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ ५४ ॥ ॐ महामाया हरेश्चेषां तया संमोह्यते जगत् ॥ ज्ञानिनामिष चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ ५५ ॥ ॐ बला दाक्रप्य मोहाय महामाया प्रयच्छिति ॥ तया विसृज्यते विश्वं जगदेतचराचरम् ॥ ५६ ॥ ॐ सेषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति सुक्तये ॥ सा विद्या परमा सुकेहेंतुभूता सनातनी ॥ ५७ ॥ ॐ संसारवन्धहेतुश्च सेव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ५८ ॥ ॐ राजोवाच ॥ ५९ ॥ ॐ भगवन्का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ६० ॥ ॐ व्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ॥ यत्स्वभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ६३ ॥ ॐ तत्सर्व श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रव्यिद्व स्थानां मा देवानां कार्यसिद्ध चर्थमावि व्यापनाम्मुर्तेस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥ ॐ तथाऽपि तत्समुत्पत्तिर्वद्वा भूयतां मम ॥ देवानां कार्यसिद्ध चर्यमावि

पाठान्तरम्-१ कारिणः । २ श्रीतत्तया । ३ यत्प्रभावा ।

श.ज्ज्यो.र्ण. वर्मस्कंध ८ (१९७७)। भैनित सा यदा ॥ ६५ ॥ ॐ उत्पन्नेति तदा छोके सा नित्याऽप्यभिधीयते ॥ योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ६६ ॥ ॐ आस्तीर्य शेषमभजन्कल्पान्ते भगनान्त्रभुः ॥ तदा द्वावसुरी चोरी विष्णुर्तते मधुकेटभी ॥ ६७ ॥ ॐ विष्णुकर्णमछोद्धती इन्तुं न्रह्माणसुद्धती ॥ स नाभिकमछे विष्णोः स्थितो न्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८ ॥ ॐ हद्द्वा तानसुरी चोयी प्रसुतं च जनार्दनम् ॥ तुष्टाव योगनिद्गां तामेकाग्रहृद्द्वियतः ॥ ६९ ॥ ॐ विवोधनार्थाय हरेईरिनेत्रकृताल्याम् ॥ विश्वेषरी जगद्धात्री स्थितिसंहारकारि णीम् ॥ ७० ॥ ॐ विद्रां भगनती विष्णोरतुकां तेजसः प्रसुः ॥७१॥ ॐ न्रह्मोनाच ॥७२॥ ॐ त्यं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वपदकारः स्वरात्मिका ॥ ७३ ॥ ॐ त्वमेव सा त्वं सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ त्वयेतद्धार्थते विश्वं त्वयेतत्सुन्यते जगत् ॥ ७५ ॥ ॐ त्वयेतत्स्व पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टी सृष्टिक्षपा त्वं स्थितिक्ष्या च पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टी सृष्टिक्षपा त्वं स्थितिक्ष्या च पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टी सृष्टिक्षपा त्वं स्थितिक्ष्या च पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टी सृष्टिक्षपा त्वं स्थितिक्ष्या च पाल्यते ॥ ७६ ॥ ॐ तथा संहितिक्षपाऽन्ते च पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टी सृष्टिक्षपा ॥ स्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ ७८ ॥ ॐ काल्यात्रिम्हारात्रिमोहरात्रिमोहरात्रिक्ष दाक्षणा ॥ तवं श्रीस्त्वमीश्वरी तवं हीस्त्वं च हिस्त्वं चालिनी चाणा भुगुण्डी परिघायुघा ॥ सोम्या सोम्यतराऽशेषसीम्यभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ ८२ ॥ ॐ परापराणां परमा त्वमेव परमेथसी ॥ यच किचित्कचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिक ॥ ८२ ॥ ॐ तस्य सर्वस्य या शिक्षः सा त्वं कि स्तूपसे तदा ॥ यया भित्रात्वात्वात्वस्य सर्वस्य सर्वस्य या शिक्षः सा त्वं कि स्तूपसे तदा ॥ यया विष्टेष्य सर्वादाऽखिलात्वात्वस्य सर्वस्य सर्वस्य या शिक्षः सा त्वं कि स्तूपसे तदा ॥ यया विष्टेष्य सर्वसे तद्व विष्टेष्य सर्वसे सर्वसे विष्य

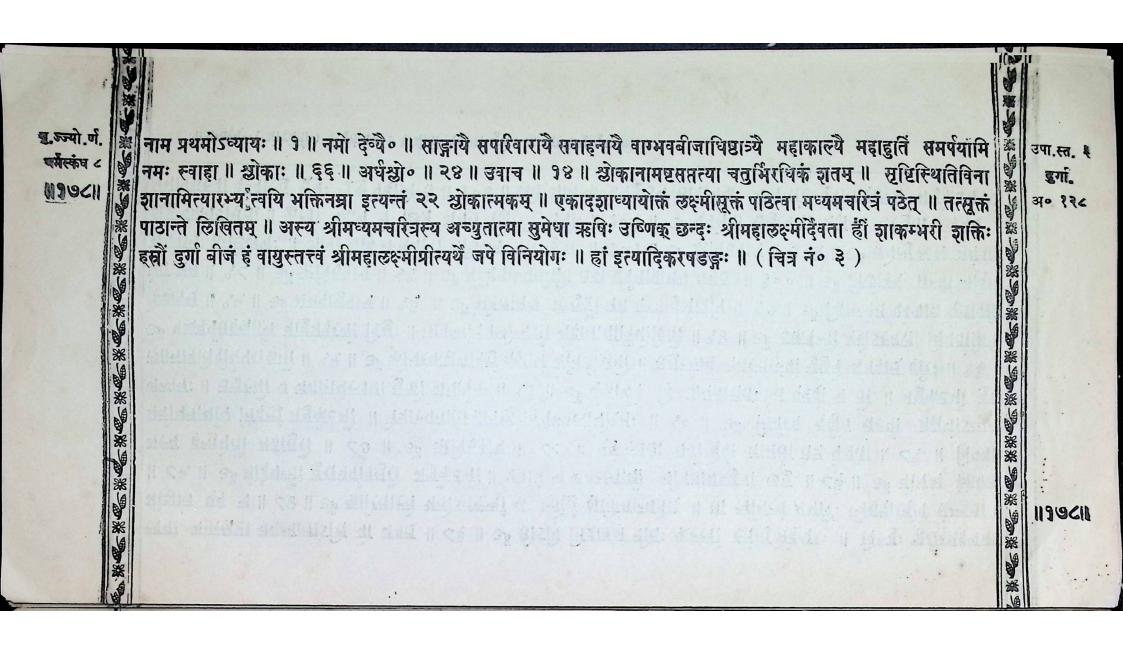
पाठान्तरम्-१ च भवती ।

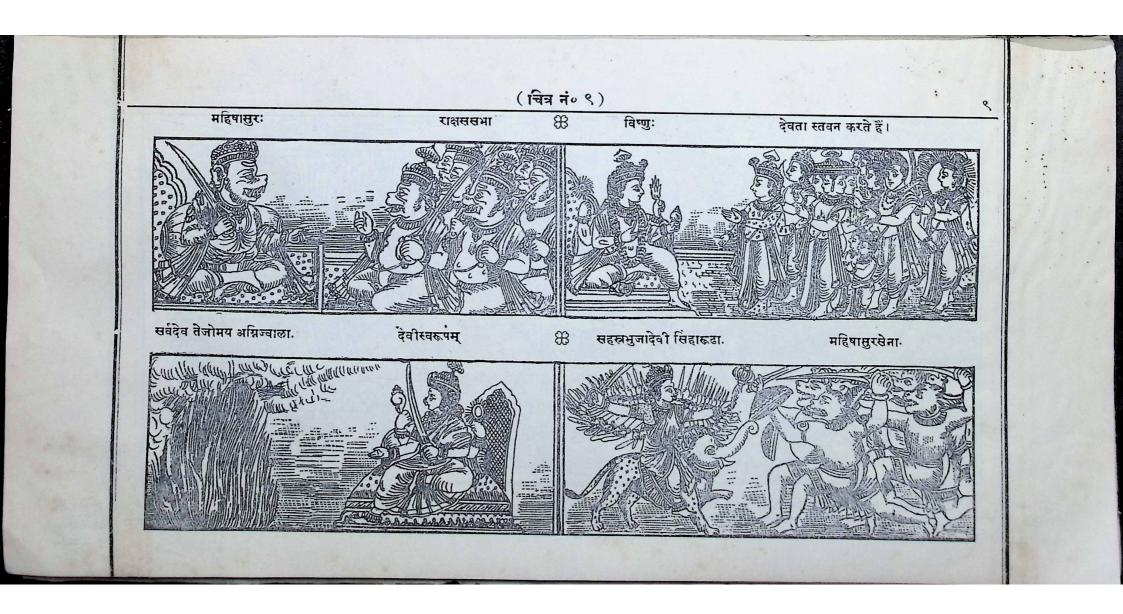
उपा.स्त. ३ दुर्गी. अ० १२८

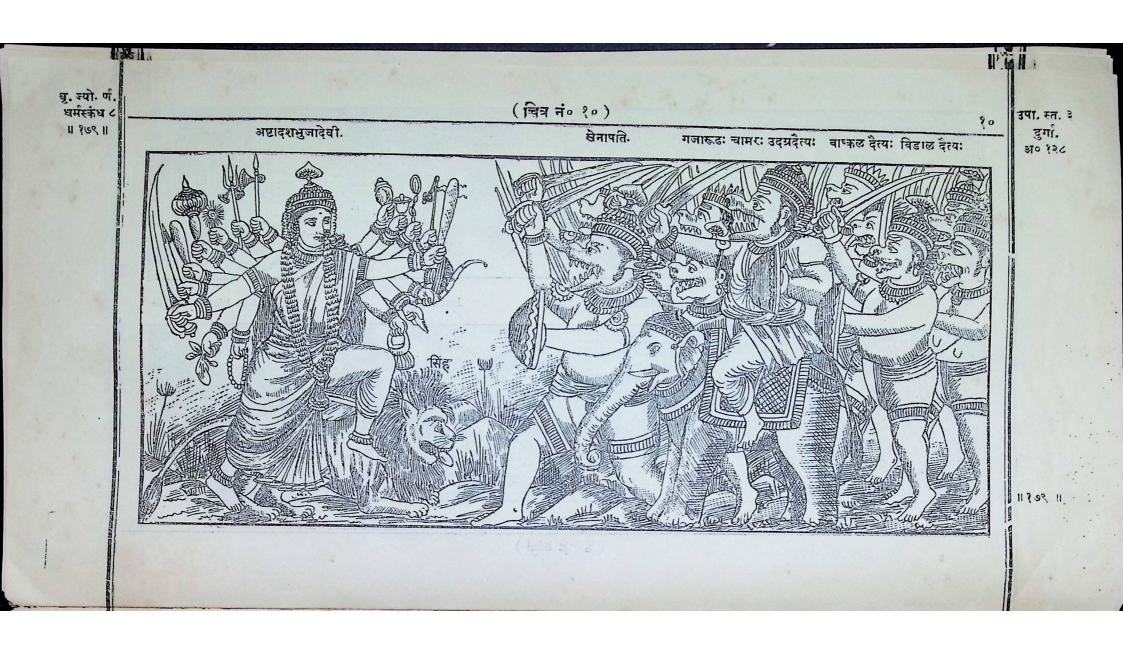
1199911

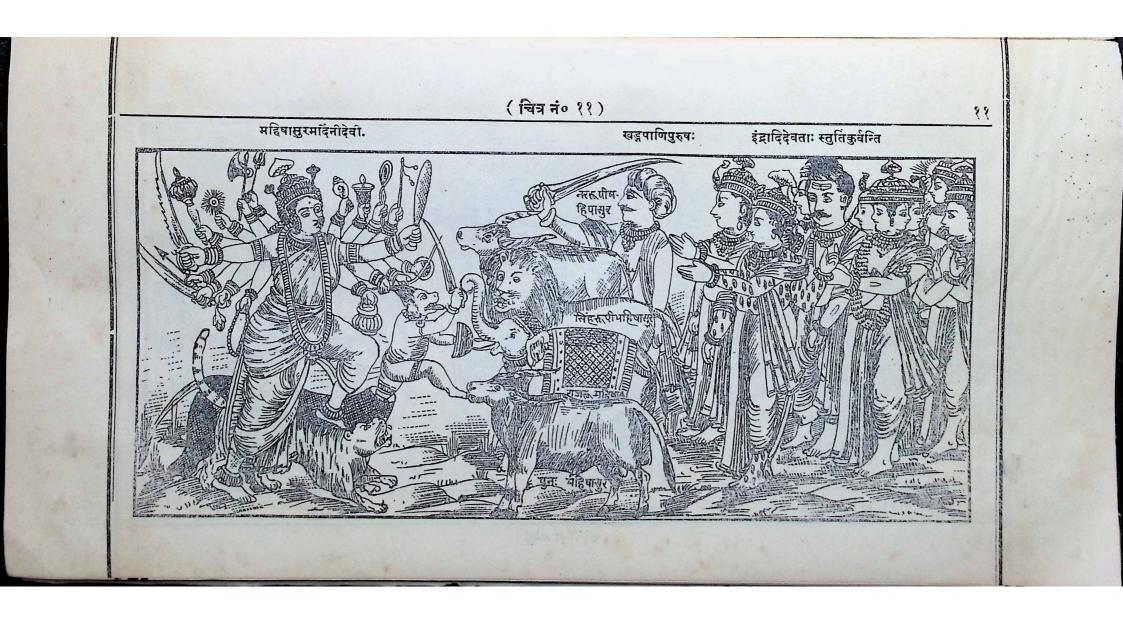
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafqarh Delhi Collection

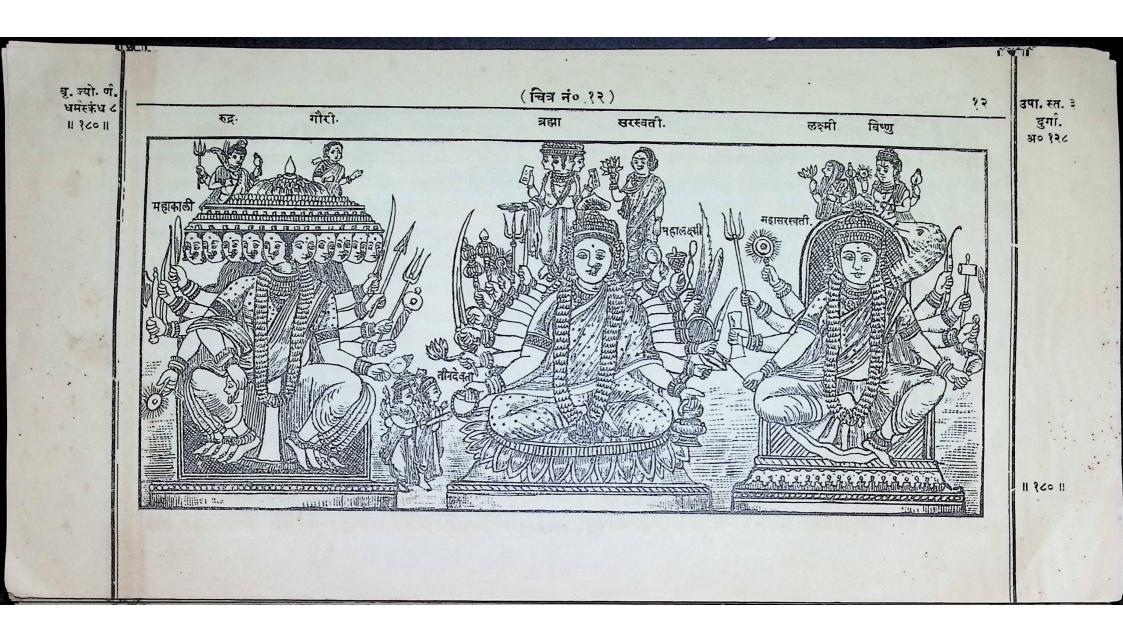
त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पाताऽत्ति यो जगत् ॥ ८३ ॥ ॐ सोऽपि निद्रावर्शं नीतः कहत्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ विष्णुः श्रीरप्रहणमह
मीशान एव च ॥ ८४ ॥ ॐ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शिक्तमान्भवेत् ॥ सा त्विमत्यं प्रभावैः स्वेरुद्रारेदेवि संस्तुता ॥
॥ ८५ ॥ ॐ मोह्यन्तो दुराधर्षावसुरो मधुकेटभो ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो छष्ठ ॥ ८६ ॥ ॐ बोधश्व कियता
मस्य हन्तुमेतौ महासुरो ॥ ८७ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ८८ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ८९ ॥ विष्णोः
प्रबोधनार्याय निहन्तुं मधुकेटभो ॥ नेत्रास्यनासिकाबाहुद्धद्येभ्यस्तथोरसः ॥ ९० ॥ ॐ निर्गम्य द्शीन तस्यो ब्रह्मणोऽज्यक्त
जन्मनः ॥ उत्तस्यो च जगन्नाथस्त्वया सुक्तो जनार्दनः ॥ ९३ ॥ ॐ एकार्णवे हि शयनात्ततः स दृह्शो च तो ॥ मधुकेटभो दुरा
त्मानावितिवीर्यपराक्रमो ॥ ९२ ॥ ॐ कोधरकेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जित्तोद्यमो ॥ ससुत्थाय ततस्ताभ्यां युद्धे भगवान् हिरः ॥ ९३ ॥
ॐ पञ्चवर्षसहस्नाणि बाहुप्रहरणो विसुः ॥ तावप्यतिबर्लान्तो महामायाविमोहितौ ॥ ९४ ॥ ॐ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो वियतामिति
केशवम् ॥ ९५ ॥ ॐ भगवान्तुवाच ॥ ९६ ॥ ॐ भवेतामद्य मे तुष्टो मम वष्याद्यभावि ॥ ९७ ॥ ॐ किमन्येन वरेणात्र एताविद्व
वैतं मम ॥ ९८ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ९६ ॥ ॐ भवेतामद्य मे तुष्टो मम वष्याद्यभावि ॥ १०० ॥ ॐ विद्योक्य ताभ्यां गदितो
भगवान् कमलेक्षणः ॥ औवां जिहे न यत्रोवीं सिल्लिनेन परिष्ठुता ॥ १०३ ॥ ॐ ग्रविषा ससुत्पत्रा ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ॥
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः श्रुण वदामि ते ॥ १०४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सार्वाणके मन्वन्तरे देवीमाहात्स्ये मधुकेटभवघो











अथ घ्यानम् ॥ सर्वदेवशरिरेभ्यो याऽऽविर्भूताऽमितप्रभा ॥ त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ १ ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतरुतन्मण्डला ॥ रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुहन्मदा ॥ २ ॥ सुचित्रज्ञचना चित्रमाल्याम्बरिवभूषणा ॥ चित्रा चुलेपना कान्तिरूपसीभाग्यशालिनी ॥ ३ ॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वश्यन्ते दक्षिणाधः करकमात् ॥ ४ ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ॥ चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्घो घण्टा च पाशकः ॥ ५ ॥ शक्ति दिण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः ॥ अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप ॥ पूजयेत्सर्वछोकानां स देवानां प्रभुभवित् ॥ ७ ॥ अन्यञ्च ॥ अक्ष० ॥ इति ध्यात्वा ॥ प्रणवं पूर्वमुञ्चार्य मायाबीजं ततः परम् ॥ एतत्संपुटितं कार्यं नमोऽन्तं मध्यमं जपेत् ॥ १ ॥ ॐ हीं नमः ॥ ऋषिरुवाच ॥ मः न हीं ॐ ॥ एवं मध्यमचित्रे सर्वत्र ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्द्शतं पुरा ॥ महिषेऽसुराणामधिषे देवानां च पुरंदरे ॥ २ ॥ ॐ तत्रासुरैर्महावीयेँ देवसैन्यं पराजितम् ॥ जित्वा च सक्छान्देवानिन्द्रोऽभूनमहिषासुरः ॥ ३ ॥ ॐ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनि प्रजापितम् ॥ पुरस्कृत्य गतास्त्त्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥ ॐ यथावृत्तं तयोस्तद्धन्महिषासुरचेष्टितम् ॥ त्रिद्शाः कथयामासुद्देवाभिभवविस्त रम् ॥ ५ ॥ ॐ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्द्रनां यमस्य वरूणस्य च ॥ अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६ ॥ ॐ स्वर्गा त्रिराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ॥ विचरन्ति यथा मत्यी महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥ ॐ एतद्रः कथितं सर्वममरारिविचेष्टि तम् ॥ श्रीरणं च प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८॥ ॐ इत्थं निज्ञम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ॥ चकार कोपं शंभुश्र भुकुटीकुटिलाननी ॥ ९ ॥ ॐ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चिकणो वदनात्ततः ॥ निश्वकाम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥ १० ॥ ॐ अन्येषां चैव देवानां शकादीनां शरीरतः ॥ निर्गतं सुमहत्तेजस्तचैक्यं समगच्छत ॥ ११ ॥ ॐ अतीव तेजसः कूटं पाठान्तरम्-१ शरणं वः।

र.ज्ज्यो.णं. विवा ॥ दहशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाज्याप्तदिगन्तरम् ॥ १२ ॥ ॐ अतुरुं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ॥ एकस्थं कि वर्षस्कंष ८ अतुरुं तद्भुन्नारी ज्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३ ॥ ॐ यद्भूच्छांभवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ॥ याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णु ॥१८१॥ कितेजसा ॥ १४ ॥ ॐ सौम्येन स्तनयोर्धुग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ॥ वारुणेन च जङ्घोह्य नितम्बस्तेजसा भुवः ॥ १५॥ अ अत्रमणस्तेजसा पादी तद्कुल्योऽर्कतेजसा ॥ वसूनां च कराङ्कल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ १६ ॥ ॐ तस्यास्तु दन्ताः संभूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥ नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ १७ ॥ ॐ भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिछस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां संभवस्तेजसां शिवा ॥ १८ ॥ ॐ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्धवास् ॥ तां विलोक्य मुद् प्रापु रमरा महिषार्दिताः ॥ १९ ॥ ॐ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ॥ चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाट्य स्वचक्रतः ॥ ॥ २० ॥ ॐ हाङ्कं च वरुणः हाक्तिं ददी तस्यै हुताहानः ॥ मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ २१ ॥ ॐ वज्रमिन्द्रः समु त्पाटच कुलिज्ञादमराधिपः ॥ ददी तस्यै सहस्राक्षी घण्टामैरावतादुजात् ॥ २२ ॥ ॐ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाज्ञं चाम्बपतिर्ददी ॥ 🙀 प्रनापतिश्राक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥ ॐ समस्तरोमकूपेषु निजरइमीन्दिवाकरः ॥ कालश्र दत्तवान् खङ्गं तस्या श्रमं च निर्मलम् ॥२४॥ ॐ क्षीरोदश्रामलं हारमजरे च तथाऽम्बरे ॥ खूडामणि तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ २५ ॥ ॐ अर्ध चन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरा-सर्वबाहुषु ।। नूषुरौ विमली तद्भवयेवयकमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ ॐ अङ्गलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गलीषु च ॥ विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २७ ॥ ३० अल्लाण्यनेकरूपाणि तथाऽभेद्यं च दंशनम् ॥ अम्लानपङ्कां माठां शिरस्युरिक चापराम् ॥ २८ ॥ ॐ अद्दृज्जलिधिस्तस्यै पङ्कां चातिशोभनम् ॥ हिमवान् वाह्नं सिंहं रत्नानि विवि 🐉 धानि च ॥ २९ ॥ ॐ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ॥ शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविश्विषतम् ॥ ३० ॥ ॐ नाग 🖁 ॥१८१॥ हारं ददी तस्य धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ॥ अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥ ३१ ॥ ॐ समानिता ननादोच्चैः सादृहासं 🎉

दुर्गी.

मुद्दर्मुद्दः ॥ तस्या नादेन घोरेण कृत्स्रमापूरितं नभः ॥ ३२ ॥ ॐ अमायतातिमहता प्रतिश्रब्दो महानभूत् ॥ चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ ३३ ॥ ॐ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ॥ जैयेति च मुद्रा देवास्तामूचुः सिंह वाहिनीम् ॥ ३४ ॥ ॐ तुष्टुवुर्मुनयश्चेनां भक्तिनब्रात्ममूर्तयः ॥ हङ्घा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ ३५ ॥ ॐ सन्नद्धा खिरुसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुद्।युधाः ॥ आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥ ॐ अभ्यधावत तं शब्द मशेषरसुरैर्वृतः ॥ स दद्शे ततो देवीं व्याप्तछोकत्रयीं त्विषा ॥ ३७ ॥ ॐ पादाकान्त्या म्बराम् ॥ क्षोभिताशेषपातालां धनुज्यानिःस्वनेन ताम् ॥ ३८ ॥ ॐ दिशो भुजसङ्ख्रेण समन्ताद्याप्य संस्थिताम् ॥ ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरिद्धिषाम् ॥ ३९ ॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम् ॥ महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ४० ॥ ॐ अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ॥ पञ्चाराद्रिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ ४२ ॥ ॐ अयुतानां रातैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे ॥ गजवाजि सहस्रोचैरनेकैः परिवारितः ॥ ४३ ॥ ॐ वृतो रथानां कोटचा च युद्धे तस्मित्रयुष्यत ॥ बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाज्ञाद्भिरथा युतैः ॥ ४४ ॥ ॐ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ॥ अन्ये च तत्रायुत्तक्ञो रथनागहयैर्वृताः ॥ ४५ ॥ ॐ युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ॥ कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥४६॥ ॐ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः ॥ तोमरैभिन्दिपाछैश्र शक्तिभिर्मुसलैस्तथा॥ ४७॥ ॐ युयुधः संयुगे देव्या खङ्गैः परशुपिहरोः॥ केचिच चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथाऽपरे ॥ ४८ ॥ ॐ देवीं खङ्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ॥ साऽपि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥४९॥ ॐ छीछयैव प्रचि च्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ॥ अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरार्षिभिः ॥ ५० ॥ ॐ सुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ॥ पाठान्तरम्-१ जयोति देवाश्च मुदा तामूचः। २ लोकत्रयम्।

1198211

च.ज्ज्यो र्ण सोऽपि कुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ ५१ ॥ ॐ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताज्ञनः ॥ निःश्वासान्सुसुचे यांश्च युष्य 💥 माना रणेऽम्बिका ॥ ५२ ॥ ॐ त एव सद्यः संभूता गणाः ज्ञतसहस्रज्ञः ॥ युयुधुस्ते परञ्जभिभिन्दिपालासिपिहिज्ञैः ॥ ५३ ॥ ॐ ना शयन्तोऽसुरगणान्देवीशक्तयुपबृहिताः ॥ अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्कांस्तथाऽपरे ॥ ५४ ॥ ॐ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन युद्धमहोत्सवे ॥ ततो देवी त्रिशूलेन गद्या शक्तिवृष्टिभिः ॥ ५५ ॥ खङ्गादिभिश्च शतशो निजवान महासुरान् ॥ पातयामास चैवान्यान्यण्टास्वनविमोहितान् ॥ ५६ ॥ ॐ असुरान्ध्रवि पाशेन बद्धा चान्यानकर्षयत् ॥ केचिद्धिधाकृतास्तीक्ष्णैः खङ्गपातैस्तथा उपरे ॥ ५७ ॥ ॐ विपोथिता निपातेन गद्या भुवि श्रेरते ॥ वेमुश्च केचिद्विधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ ५८ ॥ ॐ केचिन्निप तिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ॥ निरन्तराः शरौषेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ५९ ॥ ॐ सेनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुित्रहा। र्दुनाः ॥ केषांचिद्वाह्विश्छन्नाइिछन्नयीवास्तथाऽपरे ॥ ६० ॥ शिरांसि पेतुरन्येषायन्ये यध्ये विदारिताः ॥ विच्छिन्नजंघास्त्व परं पेतुरुव्यों महासुराः॥ ६१ ॥ ॐ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः ॥ छिन्नेऽपि चान्ये शिरिस पितताः पुनरुत्थिताः॥ ॥६२॥ ॐ कबन्धा युर्युधुदैव्या गृहीतपरमायुधाः॥ ननृतुश्चापरं तत्र युद्धे तूर्यल्याश्चिताः॥ ६३॥ ॐ कबन्धाश्चिन्नशिरसः खङ्ग शक्तयृष्टिपाणयः ॥ तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥ ॐ पातितै रथनागाश्वेरसुरैश्च वसुंघरा ॥ अगम्या साऽभवत्तत्र यत्राभृत्स महारणः ॥ ६५ ॥ ॐ ज्ञोणितीचा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुद्धंबुः ॥ यध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजि नाम् ॥ ६६ ॥ ॐ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ॥ निन्ये क्षयं यथा विह्नस्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६७ ॥ ॐ स च सिंहो महानादमुतसृजन्धुतकेशरः ॥ शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ ६८॥ ॐ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथाऽसुरैः ॥ पंथेषां तुष्टुबुर्देवाः पुष्पवृष्टिसुचो दिवि ॥ ६९ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्दन्तरे देवीमाहातम्ये महिषासुरसैन्य पाठान्तरम्-१ विसुखुदुः।

वधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नमो देव्ये० ॥ साङ्गाये सपरिवाराये सायुधाये सवाहनाये लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्ये महालक्ष्म्ये महाहुति समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो॰ ॥ ६८ ॥ अर्ध॰ ॥ उवाच ॥ १ ॥ एकोनसप्ततिः सर्वेऽध्याये मन्त्रा ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ॥ सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धमथाम्बिकाम् ॥ २ ॥ ॐ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ३ ॥ ॐ तस्य च्छित्त्वा ततो देवी छीछयैव शरो त्कराच् ॥ जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥ ४ ॥ ॐ चिच्छेद च घनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छितम् ॥ विव्याध चैव गात्रेषु च्छित्रधन्वानमाशुगैः ॥ ५ ॥ ॐ स च्छित्रधन्वा विरथो हताश्वो इतसाराथिः ॥ अभ्ययावत तां देवीं खड्गचर्म धरोऽसुरः ॥ ६ ॥ ॐ सिंहमाइत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सन्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ७ ॥ ॐ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफा्ल नृपनन्द्न ॥ ततो जयाह शूलं स कोपाद्रुणलोचनः ॥ ८ ॥ ॐ विश्लेष च ततस्तत्त भद्र काल्यां महासुरः ॥ जाज्वल्यमानं तेजोभी रविविम्बमिवाम्बरात् ॥ ९ ॥ ॐ हङ्घा तद्वापतच्छूछं देवी श्रूलमसुञ्चत ॥ तच्छूछं शत्या तेन नीतं स च महासुरः ॥ १० ॥ ॐ इते तस्मिन्मदावीर्यं महिषस्य चमूप्ता ॥ आजगाम गजारूढश्चामरास्निद्शादनः ॥ ११॥ ॐ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्वतम् ॥ हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥ १२ ॥ ॐ अय्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ॥ चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तद्पि साऽच्छिनत् ॥ १३ ॥ ॐ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भा न्तरस्थितः ॥ बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोचैक्षिद्शारिणा ॥ १४ ॥ ॐ युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्मही गतौ ॥ युयुधातऽति संरच्धी प्रहारैरतिदारुणैः ॥ १५ ॥ ॐ ततो वेगात्त्वमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ॥ करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम् ॥ १६ ॥ ॐ उदमश्ररणे देव्या शिलावृक्षादिभिईतः ॥ दन्तमुष्टितलैश्चेव करालश्च निपातितः ॥ १७ ॥ ॐ देवी कुद्धा गदापातैर्चूर्णयामास चोद्धतम् ॥ बाष्करुं भिन्दिपौरुन बाणैस्ताम्रं तथाऽन्धकम् ॥ १८ ॥ ॐ उत्रास्यमुत्रवीर्यं च तथैव च महाहतुम् ॥ त्रिनेत्रा च त्रिश् पाठान्तरम्-१ भिण्डिपालेन ।

ब.ज्ज्यो.र्ण. 🗗 छेन जचान परमेश्वरी ॥ १९ ॥ ॐ विडाङस्यासिना कायात्पात्यामास वै शिरः ॥ दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैनिन्ये यमक्षयम् ॥ २० ॥ वर्मसंब ८ 🚜 ॐ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ॥ माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास ताच् गणान् ॥२१॥ ॐ कांश्चित्तण्डप्रहारेण खुरक्षेपे स्तथाऽपराच् ॥ छाङ्गूछताडितांश्चान्याच् शृङ्गाभ्यां च विदारिताच् ॥ २२॥ ॐ वेगेन कांश्चिद्परान्नादेन भ्रमणेन च ॥ निःश्वास पवनेनान्यान्पातयामास भूतले ॥ २३॥ ॐ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ॥ सिंहं इन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततो **ऽम्बिका ॥ २४ ॥ ॐ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ॥ शृङ्गाभ्यां पर्वतानुचां श्रिक्षेप च ननाद च ॥ २५ ॥ ॐ वेग** अमणविश्चण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ॥ लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धः प्रावयामास सर्वतः ॥ २६ ॥ ॐ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ॥ श्वासानिलास्ताः ज्ञतको निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥ २७ ॥ ॐ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम् ॥ हृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तद्। इकरोत् ॥ २८ ॥ ॐ सा क्षित्वा तस्य वै पाइां तं बबन्ध महासुरम् ॥ तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महा मुधे ॥ २९ ॥ ॐ ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ॥ छिनत्ति तावत्पुरुषः खङ्गपाणिरदृश्यत ॥ ३० ॥ तत एवाञ्च पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ॥ तं खङ्गचर्मणा सार्ध ततः सोऽभून्महागजः ॥ ३१ ॥ ॐ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ॥ कर्षतस्तु करं देवी खङ्गेन निरकुन्तत ॥ ३२॥ ॐ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः॥तथैव क्षोभयामास त्रेलोक्यं सचराचरम्॥ ॥ ३३ ॥ ॐ ततः कुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम् ॥ पपौ पुनः पुनश्चेव जहासारुणलोचना ॥ ३४ ॥ ॐ ननर्द चासरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ॥ विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥ ३५ ॥ ॐ सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्क रैः ॥ उवाच तं मदोद्भृतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥ ३६ ॥ ॐ देव्युवाच ॥ ३७ ॥ गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ॥ मया त्विय इतेऽत्रेव गर्जिष्यन्त्याञ्च देवताः ॥ ३८॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ३९॥ ॐ एवसुक्त्वा ससुत्पत्य साऽऽह्दहा तं महासुरम् ॥

उपा स्त. ३ दुर्गा. वा० १२८

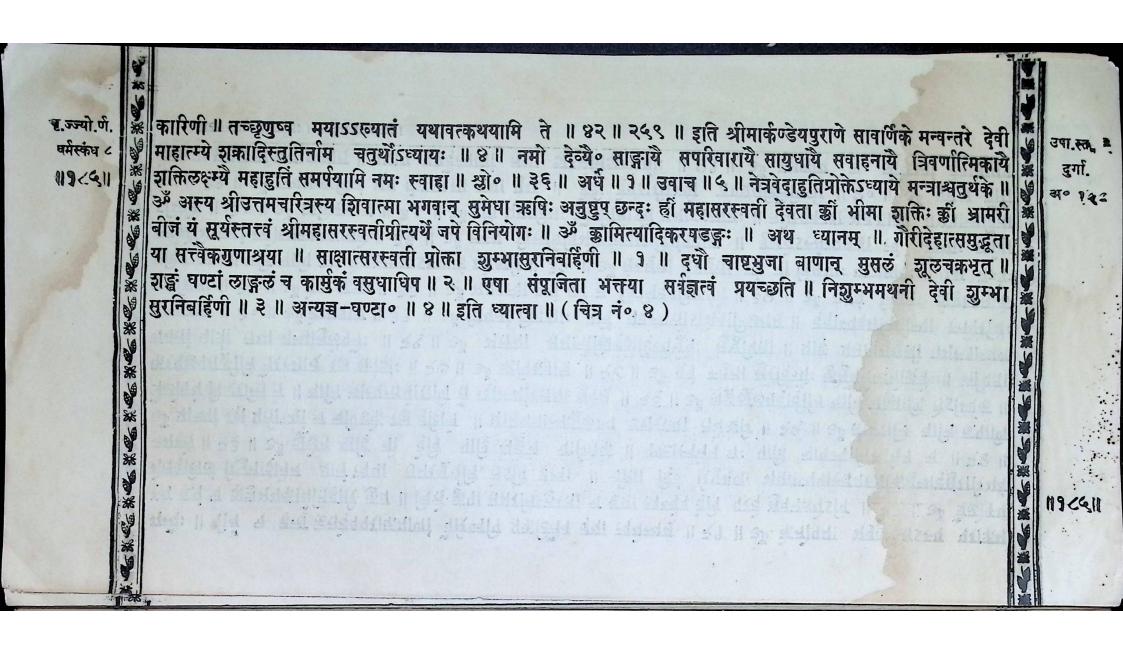
पादेनाकम्य कण्ठे च शूलेंनेनमताखयत् ॥ ४० ॥ ॐ ततः सोऽपि पदाऽऽकान्तस्तया निजमुखात्ततः ॥ अर्धनिष्कान्त एवांसी हेन्या वियेण संवृतः ॥ ४२ ॥ ॐ अर्धनिष्कान्त एवासी युध्यमानो महासुरः ॥ तया महासिना देन्या शिरिइक्टता निपातितः ॥ ४२ ॥ ॐ ततो हाहाकृतं सर्व देत्यसेन्यं ननाञ्च यत् ॥ यहर्ष च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥ ४२ ॥ ॐ तुष्टुचस्तां सुरा देवीं सह दिन्येमेहिषिभः ॥ जर्गुगन्धवंपतयो ननृतुश्चाप्तरोगणाः ॥ ४२ ॥ २० ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिके मन्वन्तरे देवीं माहात्म्ये महालुति सावणिके मन्वन्तरे देवीं माहात्म्ये महालुत्रियो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ नमो देव्ये० ॥ साङ्गाये सपिताराये सायुधाये सवाहनाये अधाविज्ञतिवर्णा तिमकाये महालुति समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ४० अर्ध० उवाच ३ ॥ चतुश्चत्वारिज्ञदेवं सर्वे मन्त्रास्तृतीयके ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ ज्ञाह्राद्यः सुरगणा निहतेऽतिवीये तिम्मन्दुरात्मिन सुरारिवले च देव्या ॥ तां तुष्टुवुः प्रणातेनप्र शिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्भमचारुदेहाः ॥ २ ॥ ॐ देव्या यया ततिमदं जगदात्मज्ञत्त्वा निःशोषदेवगण्जातिसमूहसूर्त्या ॥ तामम्बिकामखेलकेदेवमहार्षपूल्यां भक्त्या नताः स्म विद्धातु ग्रुभानि सा नः ॥ ३ ॥ ॐ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा स्थानिकामखेलकेदेवमहार्षपूल्यां भक्त्या नताः स्म विद्धातु ग्रुभानि सा नः ॥ ३ ॥ ॐ यस्याः प्रभावमतुलं स्याप्ति सर्वेषु देव्यस्यस्य ॥ ५ ॥ ॐ कि वर्णयाम तव रूपमिनन्त्यमेतत् कि चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि कि चहवेषु चरितानि तर्वौद्धतानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥ ॐ हेतुः समस्तजगतां त्रियुणापि दोषिनं ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्ययाऽिकलिमदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ ॐ यस्याः समस्तसुरता ससुदीरणेन तृति प्रयाति सकल्येषु प्रवेष वार्यदेविनत्यमहा वित्राप्ति वे पितृगणस्य च तृतिहेतुरुचार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ८ ॥ ॐ या सुक्तिहेतुरिविनत्यमहा

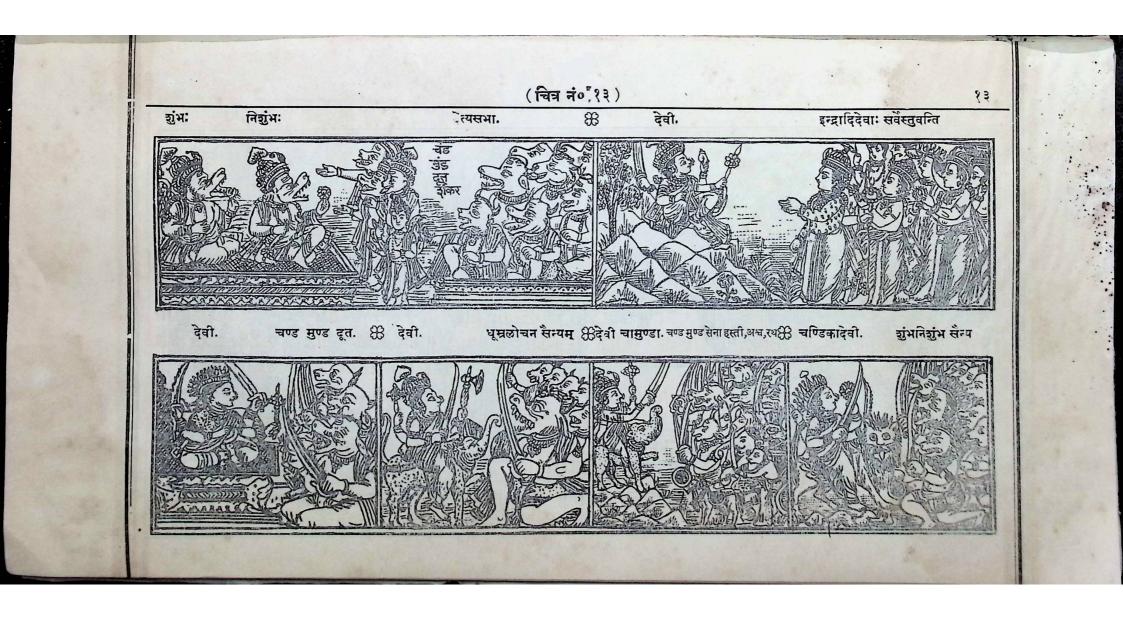
पाठान्तरम्-१ एवातिदेव्या । २ तत् । ३ तवातियानि ।

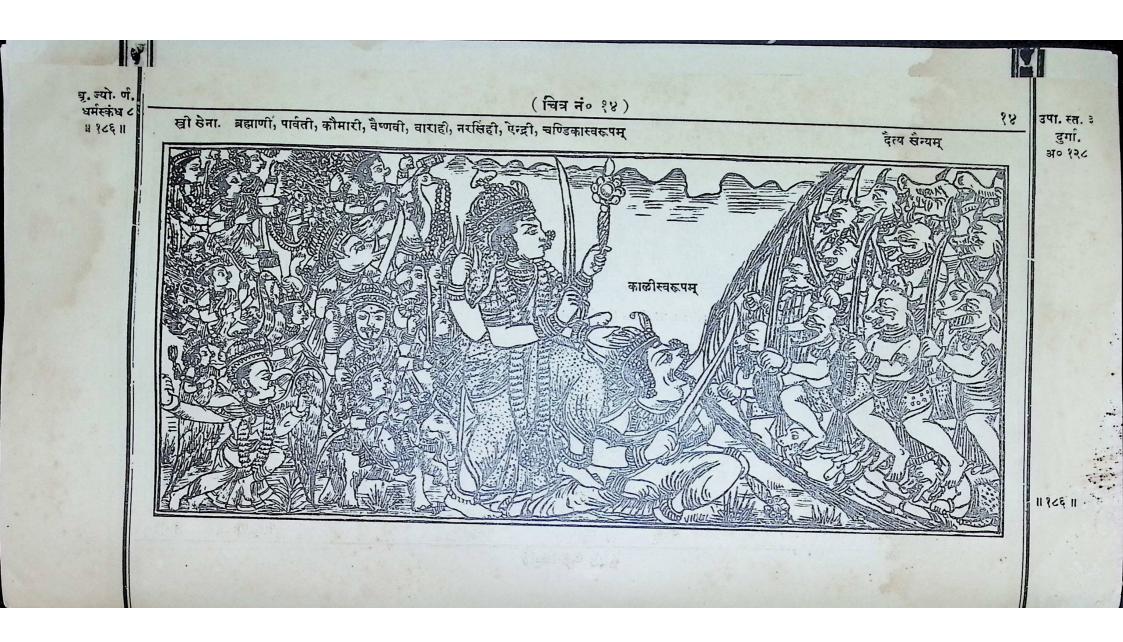
ब्रिता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ९ ॥ 🎉 अप्र शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानसुद्गीथरम्यपद्पाठवतां च साम्राम् ॥ देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ताऽसि सर्व अप्र अग्यतां परमातिहन्त्री ॥ १० ॥ ॐ मेधाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ॥ श्रीः केटभारिहद् विक्राधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ ॐ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रविम्बानुकारि कनकोत्तमकान्ति कान्तम् ॥ अत्यद्धतं प्रहतमात्तरुषा तथाऽपि वकं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ १२ ॥ ॐ हङ्घा तु देवि कुपितं भुकुटीकराल मुद्यच्छशाङ्कसहशच्छिव यन्न सद्यः ॥ प्राणान्सुमोच महिष्टतद्तीव चित्रं कैजींव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १३ ॥ ॐ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयिस कोपवती कुछानि ॥ विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बछं सुविपुछं महिषासुरस्य ॥ ॥ १४ ॥ ॐ ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदिति धर्मवर्गः ॥ धन्यास्त एव निश्वतात्मजशृत्यदारा येषां सदा Sभ्यदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ ॐ धम्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गे प्रयाति च तता भवतीप्रसादाङ्घोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६ ॥ ॐ दुर्गे स्मृता इरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मित मतीव शुभां ददासि ॥ दारिद्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽईचित्ता ॥ १७ ॥ ॐ एभिईतेर्जगद्रपैति सुखं तथेते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ॥ संयामभृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति चूनमहितान्विनिहंसि देवि ॥ १८ ॥ ॐ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ छोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मित भवति तेष्वहितेषु साध्वी ॥ १९॥ ॐ खङ्गप्रभानिकरविरुफ्ररणैस्तथोयैः श्लूछात्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विलयमंश्रमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ २०॥ ॐ दुर्वृत्तवृत्तश्चमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतद्विचिन्त्यमतुल्य

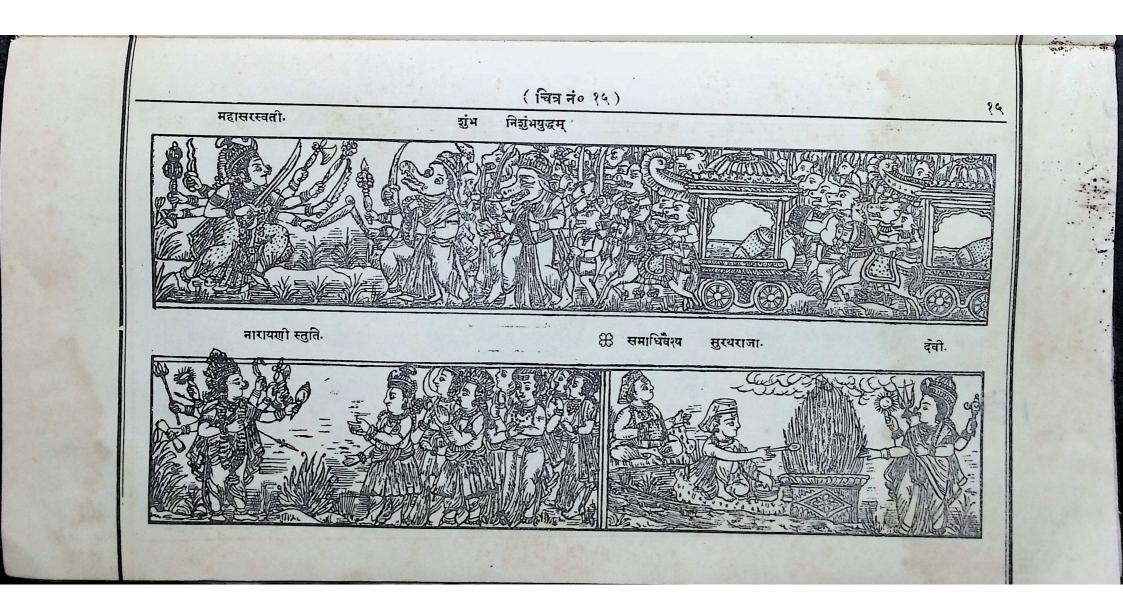
पाठान्तरम्-१ वार्त्ता च । २ बन्धुवर्गः ।

मन्यैः ॥ वीर्यं च इन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव द्या त्वयेत्थम् ॥ २१ ॥ ॐ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रम स्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भ्रुवनत्रयेऽपि ॥ <mark>२२ ॥ ॐ त्रैलोक्य</mark> मेतद् खिलं रिपुनाञ्चनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि इत्वा ॥ नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मद्सुरारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥ ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खद्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ २४ ॥ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ श्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रिंशिन ते ।। यानि चात्यन्तघोराणि ते रक्षारुमां स्तथा भुवम् ॥ २६ ॥ ॐ खङ्गशूलगदादीनि यानि चाह्याणि तेऽम्बिके ॥ करपछवसङ्गीनि तेरस्मान् रक्ष सर्वशंः ॥ २७ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ २८ ॥ ॐ एवं स्तुता सुरैर्दिव्येः कुसुमैर्नन्दनोद्भवेः ॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनेः ॥ २९ ॥ ॐ अत्तया समस्तेिस्त्रिद्शौर्दिव्येर्धूपेः सुधूपिता ॥ प्राह् प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रण तानसुरान् ॥ ३० ॥ ॐ देवयुवाच ॥ ३१ ॥ ॐ त्रियतां त्रिद्शाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाि छतम् ॥ ददाम्यहमित्प्रीत्या स्तवैरेभिः सुपूजिता ॥ ३२ ॥ ॐ देवा ऊचुः ॥ ३३ ॥ ॐ भगवत्या कृतं सर्वे न किंचिद्विशाष्यते ॥ ३४ ॥ ॐ यद्यं निह्तः शाचुरस्माकं महिषासुरः ॥ यदि चापि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि ॥ ३५ ॥ ३० संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ यश्च मत्र्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यम्छानने ॥ ३६ ॥ ॐ तस्य वित्तर्धिविभवैर्धनदारादिसंपदाम् ॥ वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदा ऽम्बिके ॥ ३७ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥ ॐ इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थं तथाऽऽत्मनः ॥ तथेत्युक्त्वा भद्रकाळी बभूवान्ताईता नृप ॥ ३९ ॥ ॐ इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुरा ॥ देवी देवश्रारिभ्यो जगत्रयहितैषिणी ॥ ४० ॥ ॐ पुनश्र गौरी देहात्सा समुद्भूता यथाऽभवत् ॥ वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भानेशुम्भयोः ॥ ४१ ॥ ॐ रक्षणाय च लोकानां देवानामुप पाठान्तरम्-१ सर्वतः। ? अस्मत्मपन्ना।











प्रणवं पूर्वमुज्ञार्य कामबीजं ततः परम् ॥ एतत्संपुटितं कार्यं नमोऽन्तमुत्तरं जवेत् ॥ १ ॥ क्वीं नमः ॐ ऋषिरुवाच मःनक्कीं ॐ॥ एवं सर्वत्र संपुटितम् ॥ ॐ ऋषिरुवाच॥ १॥ ॐ पुरा शुम्भिनशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ॥ त्रैठोक्यं यज्ञभागाश्च हता मद्बलाश्रयात् ॥ २ ॥ ॐ तावेव सूर्यतां तद्वद्धिकारं तथैन्दवम् ॥ कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ ३ ॥ ॐ तावेव पवनिध च चक्रतुर्विद्वकर्म च ॥ ततो देवा विनिर्धूता अष्टराज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥ ॐ ह्ताधिकारास्त्रिदशास्त्रास्यां सर्वे निरा कृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ ५ ॥ ॐ तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताऽखिलाः ॥ अवतां नाञ्च यिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ ६ ॥ ॐ इति कृत्वा मातिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ ७ ॥ ॐ देवा ऊचुः ॥ ८ ॥ ॐ नमो देव्ये महादेव्ये शिवाये सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ९ ॥ ॐ रौद्राये नमो नित्याये गोर्ये धात्र्ये नमो नमः ॥ ज्योतस्नाये चेन्दुरूपिण्ये सुखाये सततं नमः ॥ १० ॥ ॐ कल्याण्ये प्रण तां वृद्धचै सिद्धचै कूम्यैं नमो नमः ॥ नैर्ऋत्यै भूभृतां छक्ष्म्यै ज्ञाविषये ते नमो नमः ॥ ११ ॥ ॐ दुर्गायै दुर्गपाराये साराये। सर्वकारिण्ये ॥ ख्यात्ये तथैव कृष्णाये धूम्राये सततं नमः ॥ १२ ॥ ॐ अतिसौम्यातिरौद्राये नतास्तस्ये नमो नमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठाये देव्ये कृत्ये नमो नमः ॥ १३ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्ये ॥ १४ ॥ ॐ नमस्तस्ये ॥ ॥ १५ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १६ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्यै ॥ १७ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥१८॥ ॐ नमस्तस्य नमो नमः ॥ १९ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्य ॥ २० ॥ ॐ नमस्तस्य ॥ २१ ॥ ॐ नम स्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु निद्राह्वपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २३ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ २४ ॥ ॐ नमस्तस्यै । २४ ॥ ॐ नमस्तस्यै । नमस्तस्यै । नमस्तस्यै । २६ ॥ ॐ नमस्तस्यै । २७॥ ॐ नमस्तस्यै पाठान्तरम्-१ कुर्मः ।

वमस्कंघ ८ MISSEN नमो नमः ॥ २८ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्ये ॥ २९ ॥ ॐ नमस्तस्ये ॥ ३२ ॥ ॐ नमस्तस्ये नमो नमः ॥ ३९ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु कृतिकृषेण संस्थिता ॥ नमस्तस्ये ॥ ३६ ॥ ॐ नमस्तस्ये ॥ ३९ ॥ ॐ नमस्तस्ये ॥ ३० ॥ ॐ नम नम्। नमः ॥ ४३ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु लजारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ४५ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४६ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु ज्ञान्तिरूपेण सांस्थिता ॥ नयस्तस्यै ॥ ४७ ॥ ॐ नयस्तस्यै ॥ ४८ ॥ ॐ नयस्त स्यै नमो नमः ॥ ४९ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५० ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ ॐ नम स्तस्ये नमो नमः ॥ ५२ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिक्ष्पेण संस्थिता ॥ नमस्तस्ये ॥ ५३ ॥ ॐ नमस्तस्ये ॥ ५४ ॥ ॐ नम स्तर्षे नमो नमः ॥ ५५ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥५६॥ ॐ नमस्तस्यै ॥५७॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५८ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु रुमृतिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥६२॥ ॐ नमस्तस्यै ॥६३॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ॥ ६४ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥६५॥ ॐ नमस्तस्यै ॥६६॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६७ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु तृष्टिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६८ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७० ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु मातृहृपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ७२ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७३ ॥ ॐ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७४ ॥ ॐ नमस्तस्यै ॥ ७५ ॥ ॐ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७६ ॥ ॐ इन्द्रि

याणामाधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै व्यात्रये देव्ये नमो नमः ॥ ७७ ॥ ॐ चितिह्रपेण या कृत्स्नमेतद्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्तस्ये ॥ ७८ ॥ ॐ नमस्तस्ये ॥ ७९ ॥ ॐ नमस्तस्ये नमो नमः ॥ ८० ॥ ॐ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट संश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ८९ ॥ ॐ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितेरस्माभिरीञ्चा च सुरैनमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सुर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥८२॥ ॐ ऋषि रुवाच ॥ ८३ ॥ ॐ एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ॥ स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्देन ॥ ८४ ॥ ॐ साऽत्रवी त्तान्सुरान्सुभूभेवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ॥ शरीरकोशतश्चास्याः समुद्धताऽत्रवीच्छिवा ॥ ८५ ॥ ॐ स्तोत्रं ममैतिस्त्रयते शुम्भदैत्यिनरा कृतैः ॥ देवेः समस्तैः समरे निशुम्भेन पराजितेः ॥८६ ॥ ॐ शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताऽम्बिका ॥ कौशिकाति समस्तेषु ततो छोकेषु गीयते ॥ ८७ ॥ ॐ तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाऽभूत्साऽपि पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ ॥ ८८ ॥ ॐ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिश्राणां सुमनोहरम् ॥ दद्र्श चण्डो सुण्डश्च भृत्यौ शुम्भानिशुम्भयोः ॥ ८९ ॥ ॐ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा ॥ काऽप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ ९० ॥ ॐ नैव ताहक् कचिद्र्पं हृष्टं केनचिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥ ९१ ॥ ॐ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्तिवणा सा तु तिष्ठ ति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमईति ॥ ९२ ॥ ॐ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु समस्तानि सांप्रतं भान्ति ते गृहे ॥ ९३ ॥ ॐ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ॥ पारिजाततरुश्चायं तथैवोचैःश्रवा हयः ॥ ९४ ॥ ॐ विमानं इंस संयुक्तमेततिष्ठति तेंऽङ्गणे ॥ रत्नभूतिमहानीतं यदासिद्धेधसोऽद्धतम् ॥ ९५ ॥ ॐ निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किञ्ज ल्किनीं ददी चान्धिमिळामम्लानपङ्कजाम् ॥ ९६ ॥ ॐ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्नावि तिष्ठति ॥ तथाऽयं स्यन्द्नवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥ ९७ ॥ ॐ मृत्योक्तकान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वयाऽऽह्तता ॥ पाशः सिळळराजस्य श्रातुस्तव परित्रहे ॥ ९८ ॥

श्.ज्ज्यो.र्ण. वर्मस्कंघ ८ ॥१८९॥

ॐ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ॥ विह्नरिप द्दौ तुभ्यमिश्रौचे च वासप्ती ॥ ९९ ॥ ॐ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याह्तानि ते ॥ भ्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया करमात्र गृद्धते ॥ १००॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ निराम्येति वचः शुम्भः भि स तदा चण्डमुण्डयोः ॥ प्रेषयामाप्त सुग्रीवं दूतं देव्या यहासुरम् ॥ २ ॥ ॐ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनानमम् ॥ यथा भ चाम्येति संप्रीत्या तथा कार्य त्वया लघु ॥ ३ ॥ ॐ स तत्र गत्वा यत्रास्ते है। छोदेशेऽतिशोभने ॥ सा देवी तां ततः प्राह शुर्ण क्ष मञ्जरवा गिरा॥ ४॥ ॐ दूत उवाच ॥ ५॥ ॐ देवि दैत्येश्वरः शुम्भक्षे छोक्ये परमेश्वरः ॥ दूतोऽहं प्रेपितहतेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥ ॥ ६॥ ॐ अन्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ॥ निर्निताखिछदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥ ७॥ ॐ मम त्रेछोक्यमिखं छं मम देवा वज्ञानुगाः ॥ यज्ञभागानहं सर्वानुपाइनामि पृथक् पृथक् ॥ ८॥ ॐ त्रैठोक्ये वररत्वानि सम वज्ञ्यान्यज्ञेपतः ॥ तथैव गजरत्नं च हत्वा देवेन्द्रवाहनस् ॥ ९ ॥ ॐ क्षीरोद्रमथनोद्धृतमथरत्नं समामरैः ॥ उबैःश्रवससंज्ञं तत्र्राणिपत्य समापि तम् ॥ ११० ॥ ॐ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च ॥ रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने भूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् ॥ सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ १२ ॥ ॐ मां वा ममानुजं वाऽिष निशुम्भमुरुविक्रमम् ॥ भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूताऽसि ये यतः ॥ १३ ॥ ॐ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिष्रहात् ॥ एतद् बुद्धचा समालोच्य मत्परिग्रहतां वन ॥ १८ ॥ ॐ ऋपिरुवाच ॥ १६ ॥ ॐ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः।स्मिता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रा यथेदं धार्यते जगत् ॥ १६॥ ३० श्रीदेव्युवाच ॥ १७॥ ३० सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयो दितम् ॥ त्रेलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः॥ १८॥ अ कित्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तिक्रयते कथम् ॥ श्रूयता वितम् ॥ त्रलाक्याधिपातः शुक्ता परा ॥ १९ ॥ ॐ यो मां जयित संग्रामे यो मे दर्प व्यपोहित ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भि मलपबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ १९ ॥ ॐ यो मां जयित संग्रामे यो मे दर्प व्यपोहित ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १२० ॥ ॐ तद्गगच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः ॥ मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणि गृहातु मे

उपा.स्त. १ दुर्गां.

अ० १२६

1196311

लघु ॥२१ ॥ ॐ दूत उवाच ॥२२ ॥ ॐ अवलिप्ताऽसि मैवं त्वं देवि ब्हि समायतः ॥ त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेद्ये गुम्भानिशुम्भयोः ॥ ॥ २३ ॥ ॐ अन्येषामिष दैत्यानां सर्वे देवा न वे युधि ॥ तिष्ठंति संमुखे देवि कि पुनः स्त्री त्रमेकिका ॥ २४ ॥ ॐ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुपेषां न संयुगे ॥ कुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यित संमुखम् ॥ २५ ॥ ॐ सा त्वं गच्छ मयेवोका पार्श्व शुम्भिनिशुम्भयोः ॥ केशाकर्षणनिर्धूनगौरवा मा गिमष्यित ॥ २६ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ २० ॥ ॐ एवमेतद्वली शुम्भो विश्वम्भश्चातिवीर्यवाच् ॥ कि करोमि प्रतिज्ञा मे यद्नालोचिता पुरा ॥ २८ ॥ ॐ स त्वं गच्छ मयेवोक्तं यदेतत्सर्वमाहतः ॥ तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ १२९ ॥ ३८८ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देवी द्वतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ नमो देवयै० साङ्गाये सपरिवाराये सवाहनाये सायुधाये विष्णुमायादित्रयोविंशति देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लोकाः ७६ अर्धः ॰ उवाच ९ ॥ पट्सप्ततिश्लोकयुक्तेऽध्याये मन्त्रास्तु पश्चमे ॥ एकोन त्रिंशदिषकं शतं कात्यायनीमते ॥ १ ॥ ॐ ऋषिहवाच ॥ १ ॥ ॐ इत्याकण्यं वचो देव्याः स दूरोऽमर्पपूरितः ॥ समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय ।विरुतरात् ॥ २ ॥ ॐ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकण्यांसुरराट् ततः ॥ सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूत्र छोचनम् ॥ ३ ॥ ॐ हे धूज्रठोचनाञ्च त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ॥ तामान्य वलाद्दुष्टां केशाकर्षणिह्निलास् ॥ ४ ॥ ॐ तत्परित्राणदः किश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ॥ स इन्तन्योऽमरो वाऽपि यक्षो गन्धर्व एवं वा ॥ ५ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥ ॐ तेनाज्ञप्तस्ततः शींत्रं स दैत्यो धूत्रलोचनः ॥ वृतः पष्टचा सहस्राणामसुराणां द्धतं यथौ ॥ ७॥ ॐ स हङ्घा तां ततो देशें तिहनाचलसंस्थि ताम् ॥ जगादोचेः प्रयाहीति सूलं शुम्भिनिशुम्भयोः ॥ ८॥ ॐ न चेत्रीत्याऽद्य भवती मद्धर्तारसुपैष्यति ॥ ततो बलात्रयाम्येप केशाकपणिविह्वलाम् ॥ ९॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ १०॥ ॐ दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान्वलांवृतः ॥ बलान्नयिस मामेवं ततः

पाठान्तरम्-१ एव च । २ हिमाचळ० ।

ए.ज्ज्यो र्ण किं ते करोम्यहम् ॥ ११ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १२ ॥ ॐ इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रछोचनः ॥ हुंकारेणैव तं भस्म सा वर्मस्केष ८ चकाराम्बिका ततः ॥ १३ ॥ ॐ अथ कुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ॥ ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णस्तथा शक्तिपरश्वधेः ॥१९०॥ ॥ १८॥ ॐ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ॥ पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः॥ १५॥ ॐ कांश्चित्कर प्रहारेण दैत्यानास्येन चापराच् ॥ आकान्त्या चाधरेणान्यान्स जघान महासुराच् ॥ १६॥ ॐ केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ॥ तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् ॥ १७ ॥ ॐ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथाऽपरे ॥ पपौ च रुधिरं कोष्टा इन्येषां धुतकेसरः ॥ १८ ॥ ॐ क्षणेन तद्वलं सर्वे क्षयं नीतं महात्मना ॥ तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ १९ ॥ ॐ श्रत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रछोचनम् ॥ बछं च क्षयितं कृत्हनं देवीकेसरिणा ततः ॥ २०॥ ॐ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिता धरः॥ आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ २१॥ ॐ हे चण्ड हे मुण्ड बल्डैर्बहुभिः परिवारितौ ॥ तत्रं गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ २२ ॥ ॐ केहोष्वाकृष्य बद्धा वा यदि वः संशयो युधि ॥ तद्राऽहोषायुधैः सर्वेरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥ २३ ॥ 🖫 ॐ तस्यां इतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ॥ शीष्रमागम्यतां बद्धा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ २४ ॥ ४१२ ॥ इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहातम्ये धूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ नमो देव्यै० साङ्गायै सपरिवारायै सायुधाये ॥ सवाहनायै शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लोकाः ॥ २० ॥ उवाच ॥ ४ ॥ चतुर्विशतिमन्त्राणामित्येवं परि कीर्तितम् ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डयुण्डयुरोगमाः ॥ चतुरङ्गबलोपेता ययुर्भ्युद्यतायुधाः ॥ २ ॥ 💥 ॐ दह्शुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ॥ सिंह्स्योषिर शैलेन्द्रशृङ्गे महित काञ्चने ॥ ३॥ ते हङ्घा तां समादातुमुद्यमं विचक्रुस्यताः ॥ आकृष्टचापासिधरास्तथाऽन्ये तत्समीषगाः ॥ ४ ॥ ॐ ततः कोषं चकारोचैरिम्बका तानरीन्प्रति ॥ कोषेन चास्या पाठान्तरम्-१ गच्छ त्वं तत्र गत्वा च।

उपा.स्त. ३

दुर्गा.

वद्नं मधीवर्णमभूत्तद् ॥ ५ ॥ ॐ भ्रुक्कटीक्कटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्वतम् ॥ काली करालवद्ना विनिष्कान्ताऽसिपाञ्चिनी ॥ ६ ॥ ॐ विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा ॥ द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसाऽतिभैरवा ॥ ७ ॥ ॐ अतिविस्तारवद्ना जिह्वा लल्ला ॥ विमया रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुला ॥ ८ ॥ ॐ सा वेगेनौतिपतिता घातयन्ती महासुरान् ॥ सैन्ये तत्र सुरारीणा मभक्षयत तद्बलम् ॥ ९ ॥ ॐ पार्षणयाहाङ्कश्राहियोधघण्टासमन्वितान् ॥ समादायैकहरूतेन मुले चिक्षेप वारणान् ॥ १० ॥ ॐ तथेव योधं तुरगे रथं सारथिना सह ॥ निक्षिप्य वके दशनैश्चर्ययन्त्यतिभैरवम् ॥ ११ ॥ ॐ एकं जयाह केशेषु यीवायामथ चापरम् ॥ पादेनाकम्य चैवान्यमुरसाऽन्यमपोथयत् ॥ १२ ॥ ॐ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथाऽसुरैः ॥ मुलेन जयाह रुषा दशनैर्मिथितान्यिष ॥ १३ ॥ ॐ बालिनां तद्वलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् ॥ ममर्दाभक्षयञ्चान्यानन्यांश्चाताद्वयत्तथा ॥ १४ ॥ ॐ असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः ॥ जग्मुर्विनाश्मसुरा दन्तौत्राभिहतास्तथा ॥१५॥ ॐ क्ष<mark>णेन तद्</mark>वर्छं सर्वमसुराणां निपातितम् ॥ दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥ १६ ॥ ॐ श्रुरवर्षैर्महाभीमैभीमाक्षी तां महासुरः ॥ छादयामास चक्रैश्व मुण्डिक्षितैः सहस्रशः ॥ १७ ॥ ॐ तानि चक्राण्यनेकानि विश्वमानानि तन्मुखम् ॥ वसुर्यथाऽकिविम्बानि सुबहूनि घनो है दरम् ॥ १८ ॥ ॐ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी ॥ काली करालवक्रान्तर्दुर्दर्शद्शनोज्ज्वला ॥ १९ ॥ ॐ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत ॥ गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाऽिच्छनत् ॥ २० ॥ ॐ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां हङ्घा चण्डं निपातितम् ॥ तमप्यपातयद्भमौ सा खङ्गाभिइतं रुषा ॥ २१॥ ॐ इतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ॥ सुण्डं च सुमहावीर्यं दिशों भेजे भयातुरम् ॥ २२ ॥ ॐ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च ॥ प्राह प्रचण्डाट्टहासामिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥ ॥ २३ ॥ ॐ मया तवात्रोपहतौ चण्डमुण्डौ महापशू ॥ युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं विशुम्भं च हिनष्यासे ॥ २४ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ २५ ॥ पाठान्तरम् - १ नाभिपतिता । २ दंष्ट्राग्राभिहता रुषा । ३ खद्वाङ्गाभिहतं रुषा ।

बु.ज्ज्यो र्ण

👸 🕉 तावानीतो ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डो महासुरो ॥ उवाच कालीं कल्याणी लिलतं चण्डिका वचः ॥ २६ ॥ ॐ यस्माचण्डं च मुण्डं च मिस्कंष ८ महीत्वा त्वसुपागता ॥ चामुण्डोति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॥ २७ ॥ ४३९ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिक मन्व अस्वित्र ।। १९३॥ विष्या स्वाहनाये साधुधाये कर्प्रवीजाधि क्ष ष्टात्र्य कालीचामुण्डादेव्ये महाहुति सम०॥ श्लो० २५ उवाच २॥ सप्तविंशतिरेवं च मन्त्रसंख्या प्रकृतिता॥ ॐ ऋषिक्वाच॥॥ १॥ ॐ चण्डे च निहते दैत्य युण्डे च विनिपातिते॥ बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः॥ २॥ ॐ ततः कोपपराधीनचेताः। शुम्भः प्रतापवान्॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह॥ ३॥ ॐ अद्य सर्वबलै रैत्याः पडशीतिहदायुधाः॥ कम्बूनां चतुरा शीति निर्यान्त स्वबलैर्बनाः ॥ ३ ॥ ॐ कोटिवीर्याणि पञ्चाज्ञाद्सुराणां कुलानि वै ॥ ज्ञानं कुलानि धूब्राणां निर्गच्छन्त समाज्ञया वि शाल निवान एक स्वार्टिश मीर्याः कालकेयास्तर्थाऽसुराः ॥ युद्धाय सज्जा निर्यान्त आज्ञवा त्वरिता सम ॥ ६ ॥ ॐ इत्याज्ञाच्या सुर्पातिः शुम्भो भैरवञ्चासनः ॥ निजगाम महासैन्यसहस्रे बहुभिर्वृतः ॥ ७ ॥ ॐ आयान्तं चिष्डिका दृद्धा तत्तेन्यमितिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैः पूर्यामास घरणीगगनान्तरम् ॥ ८॥ ॐ ततः सिंहो महानाद्मनीव कृतवान्त्वप् ॥ घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपवृं ह्यत् ॥ ९ ॥ ॐ धनुर्ज्यासिंह्यण्टानां नादापूरितिदिङ्मुखा ॥ निनादैर्भीपणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥१०॥ ॐ तिन्नादमुप ॥ अत्य दैत्यसैन्येश्वतुर्दिशम् ॥ देवी सिंहस्तथा काली सराषैः परिवारिताः ॥ ११ ॥ ॐ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विपाम् ॥ भवायामरसिंहानामतिवीर्यवलान्विताः ॥ १२ ॥ ॐ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्कम्य तद्र्पैश्चण्डिकां ययुः॥१३॥ ॐ यस्य देवस्य यद्वपं यथा भूषणवाहनम्॥तद्वदेव हि तच्छिक्तिरसुरान्योद्धमाययौ॥ १८॥ ॐ हंसयुक्तविमानामे साक्षसूत्र कमण्डलुः॥आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्वह्माणीत्यभिधीयते॥१५॥ ॐ माहेश्वरी वृषाद्वढा त्रिशूळवरधारिणी॥ महाहिवळया प्राप्ता चन्द्र पाठान्तरम्-१ अपराः । २ साऽभिधीयते ।

उपा स्त. इ

दुर्गी. अ० ११०

रेखाविभूषणा ॥ १६ ॥ ॐ कौमारी शक्तिहरूता च मयूरवरवाहना ॥ योद्धमभ्याययौ दैत्यानम्बिका ग्रहरूपिणी ॥ १७ ॥ ॐ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ॥ शङ्खनकगदाशार्क्सखद्गहरूताऽभ्युपाययौ ॥ १८॥ ॐ यज्ञवाराहमतुरुं रूपं या विश्वतो हरेः ॥ श्री शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं विभती तनुम् ॥ १९॥ ॐ नारिसही नृसिंहरूय विश्वती सहशं वपुः ॥ प्राप्ता तत्र सटाक्षेपिक्षप्तनक्षत्र ॥ संइतिः ॥ २० ॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपिर स्थिता ॥ प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥ २१ ॥ ॐ ततः परिवृत स्ताभिरीज्ञानो देवज्ञक्तिभिः ॥ इन्यन्तामसुराः ज्ञीत्रं मम प्रीत्याऽऽइ चिण्डकाम् ॥ २२ ॥ ॐ ततो देवीज्ञरीरात्तु विनिष्कान्ताऽति भीषणा ॥ चिण्डकाशक्तिरत्युत्रा शिवाशतिनादिनी ॥ २३ ॥ ॐ सा चाह धूम्रजिटलमीशानमपराजिता ॥ दूतत्वं गच्छ भगवन् पार्श्व शुम्भिनशुम्भयोः ॥ २४ ॥ ॐ बूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावितगिवितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ ॥ २५ ॥ ॐ त्रेलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हिवर्भुजः ॥ यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥ २६ ॥ ॐ बलावलेपा दृथ चेद्धवन्तो युद्धकाङ्किणः ॥ तदागच्छत तृष्यन्तु मिच्छवाः पिशितेन वः ॥ २७ ॥ ॐ यतो नियुक्तो दुत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ॥ शिवदूर्तीति छोकेऽस्मिस्ततः सा स्यातिमागता ॥ २८ ॥ ॐ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वास्यातं महासुराः समर्पापूरिता जग्युर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥ २९ ॥ ॐ ततः प्रथममेवाये शरशक्तयृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामप्रस्तां देवीसमरा रयः ॥ ३० ॥ ॐ, सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूळचक्रपरश्रधान् ॥ चिच्छेद् लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तिर्महेषुभिः ॥ ३१ ॥ ॐ तस्यायतस्तथा काली शूलपातिवदारितान् ॥ खट्वाङ्गरोथितांश्वान्यान्कुर्वती व्यवस्तदा ॥ ३२ ॥ ॐ कमण्डलुजलाक्षेपहत विर्यान्हतीजसः ॥ ब्रह्माणी चाकरोच्छत्र्नयेन येन स्म धावति ॥ ३३ ॥ ॐ माहेश्वरी त्रिश्च छेन तथा चकेण वैष्णवी ॥ दैत्यान् जधान विष्णिरी तथा श्वरत्याऽतिकोपना ॥ ३४ ॥ ॐ ऐन्द्रीकुलिश्चापतिन शत्राते दैत्यदानवाः ॥ पेतुर्विदारिताः पृथ्वयां किषरीघ प्रविणः ॥ ३५ ॥ ॐ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राप्रक्षतवक्षसः ॥ वाराहमूर्त्या न्यपतंश्वकेण च विदारिताः ॥ ३६ ॥ ॐ नविधिदारितां

वृ.ज्ज्यो.र्ण. वर्मस्कंघ ८ ॥१९२॥

श्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान् ॥ नारसिंही चचाराजी नादापूर्णदिगम्बरा ॥ ३७ ॥ ॐ चण्डाद्वहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्रखादाथ सा तदा ॥ ३८ ॥ ॐ इति मातृगणं कुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ॥ हङ्घाऽभ्युपार्येविविधेनैकु देवारिसैनिकाः ॥ ३९ ॥ ॐ पठायनपरान् हङ्घा दैत्यान्मातृगणार्दितान् ॥ योद्धमभ्याययौ कुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ ४० ॥ ॐ रक्तविन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य श्रारितः ॥ समुत्पतिति मेदिन्यास्तत्त्रमाणस्तैदाऽसुरः ॥ ४१ ॥ ॐ युग्रधे स गदापाणिरिन्द्र शक्त्या महासुरः ॥ ततश्चेन्द्री स्ववत्रेण रक्तवीजमताडयत् ॥४२॥ ॐ कुल्डिशेनाहतस्याग्रु तस्य सुम्नाव शोणितम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्भपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३ ॥ ॐ यावन्तः पतितास्तस्य श्रीराद्रक्तविन्दवः ॥ तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यवस्रविक्रमाः ॥ ॥ ४४ ॥ ॐ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसंभवाः ॥ समं मातृभिरत्युत्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥ ४५ ॥ ॐ पुनैश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा ॥ ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जार्ताः सहस्रशः ॥ ४६ ॥ ॐ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजवान ह ॥ गद्या ताडयामास ऐन्द्री तमसुरंश्वरम् ॥ ४७ ॥ ॐ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्नावसंभवैः ॥ सहस्रज्ञो जगद्वचातं तत्त्रमाणैर्महासुरैः॥ ॥ ४८ ॥ ॐ श्वन्त्या जवान कौमारी वाराही च तथाऽसिना ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तवीजं महासुरम् ॥ ४९ ॥ ॐ स चापि दैत्यः सर्वा एवाइनत्पृथक् ॥ मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ ५० ॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूछादिभिर्भुवि ॥ पपात यो वै रक्तीयस्तेनासञ्छतश्रोऽसुराः ॥ ५१ ॥ ३० तैश्रासुरासृक्संभूतिरसुरैः सकलं जगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततो देवा अयमाजग्मु रुत्तमम् ॥ ५२ ॥ तान्विषण्णान्सुरान् दृष्ट्वा चिण्डका प्राहं सत्वरम् ॥ उवाच काळीं चामुण्डे विस्तीर्णं वद्नं कुरु ॥ ५३ ॥ ॐ मच्छस्रपातसंभूतान् रक्तबिन्द्रन्महासुरान् ॥ रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्रणानेन वेगिना ॥ ५४ ॥ ॐ भक्षयन्ती चर रणे तदु त्पन्नान्महासुराच् ॥ एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ५५ ॥ ॐ अक्ष्यमाणारुत्वया चोत्रा

119921

उपा स्त ३

दुर्गी.

अ० १३८

पाठान्तरम्-१ दिगन्तरा । २ प्रमाणो महासुरः । ३ पुनः स्ववज्रपातेन । ४ याताः ।

इत्युक्तवा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥ ५६ ॥ ॐ मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ॥ ततोऽसावाजघानाथ गद्या तत्र चिष्डकाम् ॥ ५७॥ ॐ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामिप ॥ तस्याहतस्य देहात् बहु सुस्नाव शोणि तम् ॥ ५८ ॥ ॐ यतस्ततस्तद्रकेण चामुण्डा संप्रतीच्छिति ॥ मुखे समुद्रता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥ ५९ ॐ तांश्रखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ देवी शूछेन वज्रेण बाणैरसिभिक्रिष्टिभिः ॥ ६० ॥ ॐ जघान रक्तबीजं चामुण्डापीतशोणितम् ॥ स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ॥ ६१ ॥ ॐ नीर्क्श महीपाल रक्तबीजो महासुरः ॥ तृतस्ते हर्ष मतुलमवापुस्त्रिद्शा नृप ॥ ६२ ॥ ॐ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ ६३ ॥ ५०२ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे 🕷 सावर्णिक मन्यन्तरे देवीमाहातम्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः॥ ८ ॥ नमो देव्यै० ॥ साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ६१ अर्धम् १ उवाच १ ॥ आदावेव ऋषिश्चैव त्रिषष्टि र्भन्त्रसंततिः॥ १॥ ॐ राजोवाच ॥ १ ॥ ॐ विचित्रमिद्माख्यातं भगवन्भवता मम ॥ देव्याश्चारितमाहातम्यं रक्तबीजवधा श्रितम् ॥ २ ॥ ॐ भूयश्रेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ॥ चकार श्रुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्रातिकोपनः ॥ ३ ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ ४ ॥ ॐ चकार कोपमतुरुं रक्तबीजे निपातिते ॥ श्रुम्भासुरो निशुम्भश्र हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ५ ॥ ॐ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्पमुद्धहन् ॥ अभ्यधावत्रिशुम्भोऽथ मुख्ययाऽसुरसेनया ॥ ६ ॥ ॐ तस्यायतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ॥ सन्दृष्टीष्ठ पुटाः कुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥ ७ ॥ ॐ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ॥ निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८ ॥ ॐ ततो युद्धमतीवासीद्देव्याः शुम्भनिशुम्भयोः ॥ श्रावर्षमतीवायं मेघयोरिव वर्षतोः ॥ ९ ॥ ॐ विच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ॥ ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रीचेरसुरेश्वरौ ॥ १० ॥ ॐ निशुम्भो निश्चितं खङ्गं चर्षायाय सुप्रभम् ॥ अताडयन्मूर्षि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥ ११ ॥ ॐ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निश्चम्भ

ष्ट.ज्ज्यो.णं. वर्मस्कंध ८ (१९२॥

स्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥ १२ ॥ ॐ छित्रे चर्माणे खद्गे च झित्तं चिसेप सोऽसुरः ॥ तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभि सुलागताम् ॥ १३ ॥ ॐ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जमाह दानवः ॥ आयान्तं सृष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥ १८ ॥ ॐ आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ॥ साऽपि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना अस्मत्वमागता ॥ १५ ॥ ॐ ततः परशु इस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ॥ आइत्य देवी वाणोषैरपातयत भूतले ॥ १६ ॥ ॐ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ॥ श्रातर्यतीव संकुद्धः प्रययो इन्तुमिन्बकाम् ॥ १७ ॥ ॐ स रथस्थरूतथाऽत्युचैर्गृहीतपरमायुचैः ॥ सुनैर्गृभिरतुलैर्व्याप्याहोषं बभी नभः ॥ १८ ॥ ॐ तमायान्तं समालोक्य देवी हाङ्कमवाद्यत् ॥ ज्याहार्वं चापि धनुपश्चकारातीव दुःसहम् ॥ १९ ॥ ॐ पूर्यामास ककुभो निजघण्टारुवनेन च ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ २० ॥ ॐ ततः सिंहो महानादैस्त्या जितेभमहायहैः ॥ पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥ २१ ॥ ॐ ततः काछी समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताड्यत् ॥ कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्रवनास्ते तिरोहिताः ॥ २२ ॥ ॐ अडाहहासमिशिवं शिवदृती चकार ह ॥ तैः शब्दैरमुरास्त्रेमुः शुम्भः कोपं परं ययो ॥ २३ ॥ ॐ दुरात्मंस्तिष्ट तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा ॥ तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥ २४ ॥ ॐ ग्रुम्भेनागत्य या शक्तिर्भुक्ता ज्वालातिभीपणा ॥ आयान्ती विह्नकृटाभा सा निरस्ता महोलक्तया ॥ २५ ॥ ॐ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ॥ निर्वातानिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ २६ ॥ ॐ शुम्भम्रकाञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेद स्वरारेख्यैः रातराोऽथ सहस्रगः ॥२७॥ ॐ ततः सा चण्डिका कुद्धा शुलेनाभिजवान तम् ॥ स तद्।ऽभिहतो भूमी मूर्चिछतो विषपात ह ॥ २८॥ ॐ ततो निशुम्भः संप्राप्य चेतनामात्तकार्युकः ॥ आजवान हारैदेवी काली केसरिणं तथा ॥ २९॥ ॐ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः ॥ चक्रायुतेन दितिजङ्छाद्यामास चण्डिकाम् ॥ ३० ॥ ॐ ततो भगवती कुद्धा दुर्गा दुर्गाति 🗳 नाञ्चिनी ॥ चिच्छेद तानि चक्राणि स्वज्ञारेः सायकांश्च तान् ॥ ३० ॥ ॐ ततो निज्ञुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् ॥ अभ्य 🔏

उपा.स्त्री शे दुर्गा.

1196311

धावत वै इन्तुं दैत्यसैन्यसमावृतः ॥ ३२ ॥ ॐ तस्यापतत एवाग्नु गदां चिच्छेद चिण्डका ॥ खङ्गेन वित्वधारेण स च शूलं समा देवे ॥ ३३ ॥ ॐ शूल्डस्तं समायान्तं निशुम्भममराईनम् ॥ हिद् विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चिण्डका ॥ ३४ ॥ ॐ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निः सृतोऽपरः ॥ महावछो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वद्न् ॥ ३५ ॥ॐ तस्य निष्कामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः ॥ शिर्श्यिच्छेद खङ्गेन ततोऽसावपतद्भवि ॥ ३६ ॥ ॐ ततः सिह्श्यखादे। प्रदेशक्षुण्णिशिरोधरान् ॥ अपुरांस्तांस्तथा काली शिव दूती तथाऽपरान् ॥ ३७ ॥ ॐ कौमारीञ्चिति भिन्नाः केचिन्नेश्चर्यात्वात्वाः ॥ न्नाणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥ ॐ माहेश्वरीत्रिञ्च छेन भिन्नाः पेतुस्तथाऽपरे ॥ वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥ ३९ ॥ ॐ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वञ्रण चैन्द्रीहरूतात्रविम्रकेन तथाऽपरे ॥ ४० ॥ ॐ केचिद्धिनेशुरसुराः केचित्रष्टा महाह्वात् ॥ अक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिषः ॥ ४१ ॥ ५४३ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे साविणिके मन्यन्तरे देवीमाहातम्ये निशुम्भवधी नाम नव केचित्रष्टा महाह्वात् ॥ अक्षिताश्चापरे मोऽष्यायः ॥ ९ ॥ नमो देव्यै० ॥ १ ॥ साङ्गायै सपरिनारायै साग्रुधायै सवाहनायै वाग्भववीजाधिष्ठात्रयै महाकाल्यै महाहुति समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लो० ३९ अर्धम्० खवाच ॥ २ ॥ राजा ऋषिश्चेति एकचत्वाार्रज्ञन्मनुः स्वयम् ॥ ॐ ऋषिह्वाच ॥ ९॥ ॐ निज्ञुम्भं निहतं हड्डा श्रातरं प्राणसंमितम् ॥ हन्यमानं वलं चैव ज्ञुम्भः कुद्धोऽन्नशिद्धचः ॥ २ ॥ ॐ वलावलेपाहुहे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ॥ अन्यासां बलमाश्रित्य युद्धचसे याऽतिमानिती ॥ ३ ॥ ॐ देव्युवाच ॥ ४ ॥ ॐ ऐकेवाहं जगत्यत्र द्वितीया का यमापरा ॥ पर्येता दुष्ट मध्येव विश्-त्यो महिधूतयः ॥ ५ ॥ ॐ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा रूपम् ॥ तस्या देव्या स्तनी जम्युरंकैवासीत्तदाऽम्बिका ॥ ६ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ ७ ॥ ॐ अहं विभूत्या बहुभिरिह ह्वपैर्यदा स्थिता ॥ तत्संहतं मयेकैव तिष्ठाम्याजी स्थिरो भव ॥८॥ॐ ऋषिरुवाच ॥९॥ॐ ततः प्रवृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः॥ पर्यताः सर्वदेवाना मसुराणां च दारुणम् ॥ १०॥ ॐ शरवर्षैः शितैः शस्त्रीस्तथाऽस्त्रीश्चैव दारुणैः ॥ तयोर्युद्धमभूद्भयः सर्वछोकभयंकरम् ॥ १९॥

द्धन्त्यो.र्ण. वर्षेस्कंघ ८ ॥१९८॥

ॐ दिन्यान्यस्नाणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ॥ बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ १२ ॥ ॐ मुक्तानि तेन चास्नाणि ﷺ
दिन्यानि परमेश्वरी ॥ बभञ्ज लीलयैवोत्रहुंकारोच्चारणादिभिः ॥ १३ ॥ ॐ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः ॥ साऽिष् औ
तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १४ ॥ ॐ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शिक्तम्थाद्द् ॥ चिच्छेद् देवी चकेण तामप्यस्य करस्थिताम् ॥ १५ ॥ ॐ ततः खङ्गमुपादाय शतचन्द्रं च भाजमत् ॥ अभ्यर्धावत तां देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥ ॐ तस्या पत्ति एवाशु खङ्गं चिच्छेद चिण्डका ॥ धनुर्भुक्तैः शितैर्बाणैश्वर्म चार्ककरामसम् ॥ १७ ॥ ॐ हताश्वः स तदा दैत्यिरिछन्नधन्वा विसारथिः॥ जत्राह् मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः॥ १८॥ ॐ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निश्चितैः श्रौः॥ तथाऽपि सोऽभ्य धावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ १९ ॥ ॐ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ॥ देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताड यत् ॥ २०॥ ॐ तल्प्रहाराभिहतो निपपात महीतले ॥ स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः॥ २१॥ ॐ उत्पत्य च प्रमृह्मोचे देवीं गगनमास्थितः ।। तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ २२॥ ॐ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ॥ चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविरमयकारकम् ॥ २३ ॥ ॐ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ॥ उत्पात्य श्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ २४ ॥ ॐ स क्षिप्तो धरणी प्राप्य मुष्टिमुद्यस्य वेगतैः ॥ अध्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥ २५ ॥ 🎉 ॐतमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् ॥ जगत्यां पातयामास भित्त्वा श्रूलेन वक्षाप्ति ॥२६॥ ॐ स गतासुः प्पातोव्यी देवीशूलाय विक्षतः ॥ चालयन्सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ २७ ॥ ॐ ततः प्रसन्नमखिलं इते तस्मिन् दुरात्मिनि ॥ जगत्स्वास्थ्यमती वाप निर्मर्छं चाभवन्नभः ॥ २८ ॥ ॐ उत्पात्मेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते हामं ययुः ॥ सरितो मार्गवाहिन्यस्तथाऽऽसंस्तत्र पातिते ॥ २९ ॥ ॐ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ॥ बभूबुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा लिलतं जगुः ॥ ३० ॥ ॐ अवाद्यंस्तथै पाठान्तरम्-१ सुपाददे । २ अभ्यधावत्तदा । ३ वेगवान ।

ड्रग्ते.

वान्ये ननृतुश्राप्तरोगणाः॥ वद्यः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूदिवाकरः॥ ३१॥ ॐ जज्वलुश्राप्रयः ज्ञान्ताः ज्ञान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ ३२ ॥ ५७५ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिकं मन्वन्तरे देवीमाहातम्ये ग्रुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नमो दे० ॥ साङ्गाये सपरिवाराये सबाहनाये सायुधाये सिंहवाहनाये त्रिश्चलपाश्चाधिरण्ये महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्लोकाः २७ अर्धमं० १ उवाच ४ ॥ देव्युवाचद्वयं चेव द्वात्रिंशन्मनुसंतितः ॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ॐ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा विद्वार्यामास्ताम् ॥ कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभादिकाशिवकास्तु विकाशिताशाः ॥ २ ॥ ॐ देवि प्रपत्नार्तिहरे प्रसीदं प्रसीदं मातर्जगतोऽखिलस्य ॥ प्रसीदं विश्वेशिर पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ३ ॥ ॐ वं वेष्णवी शक्तरन्तवीर्या विश्वस्य वेषा यतः स्थिताऽसि ॥ अपां स्वरूपस्थितया त्वयेतदाप्यायते कृत्सनमळङ्ख्यवीर्ये ॥ ४ ॥ ॐ त्वं वेष्णवी शक्तरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमाऽसि माया ॥ संमोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५ ॥ ॐ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकु जगत्मु ॥ त्वयेकया पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥ ६ ॥ ॐ सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्ति प्रदायिनी ॥ त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः॥ ७॥ ॐ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदे नारायाण नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ ॐ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ॥ विश्वस्योपरतो इक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते अस्तिमङ्गलया द्विष्टि सर्वार्थसाधिके ॥ इरण्ये ज्यम्बके गौरि ना० ॥ ३० ॥ ॐ सृष्टिस्थितिविनाञ्चानां इर्मातिनि ॥ गुणाश्रये गुणमये नारा० ॥ ३०॥ ॐ इरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यातिहरे देवि नारा० ॥ ३२॥ ॐ विमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौशाम्भःक्षरिके देवि नारा० ॥ ३३ ॥ ॐ त्रिशूल्चन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ म स्वरूपेण नारा ।। १४॥ ॐ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ॥ कौमारीरूपसंस्थाने नारा ।। १५॥ ॐ

गृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीद् वैष्णवीरूषे नारा॰ ॥ १६॥ ॐ गृहीतोग्रमहाच्के दंश्रोद्धतवसुंधरे ॥ वराहरूपिणि शिवे नारा॰ ॥ ॥ १७॥ ॐ नृसिंहरूपेणोग्रेण इन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्राणसहिते नारा०॥ १८॥ ॐ किरीटिनि महावत्रे सहस्रनयनो अ१९६॥ कन्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारा० ॥ १९ ॥ ॐ हिावदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ॥ घोररूपे महारावे० ॥ २० ॥ ॐ दंष्टाकराल क्रिये वदने शिरोमालाविभूषणे ॥ चामुण्डे मुण्डमथने नारा० ॥ २१ ॥ ॐ लक्ष्मि लजे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रवे ॥ महारात्रि महामाये नारा॰ ॥ २२ ॥ ॐ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ॥ नियते त्वं प्रसीदेशे नारा॰ ॥ २३ ॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशिक्तिसमन्विते ॥ भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ २४ ॥ ॐ एतत्ते वदनं सौम्यं छोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥ ॐ ज्वालाकरालमत्युयमशेषासुरसूदनम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ २६ ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ २७॥ ॐ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितरूते करोज्ज्वलः ॥ ग्रुभाय खङ्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयस् ॥ २८ ॥ ॐ रोगानशेषानपदंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकछानभीष्टाच् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ २९ ॥ ॐ एतत्कृतं यत्कद्नं त्वयाऽद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपेरनेकैर्बहुधाऽऽत्मसूर्ति कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोति काऽन्या ॥ ३० ॥ ॐ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वद्न्या॥ समत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विश्रामयत्येतद्तीव विश्वम्॥ ३१ ॥ ३० रक्षांसि यत्रोत्रविषाश्च नागा यत्रारयो द्रखुबलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ ३२॥ ॐ विश्वेश्वारे त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।। विश्वेशवन्द्या अवती अवन्ति विश्वाश्रया ये त्वाये भक्ति नम्राः ॥ ३३ ॥ ॐ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथाऽसुरवधाद्धुनैव सद्यः ॥ पापानि सर्वजगतां प्रश्नमं नयाशु कर ।। कर जनकिसायनः शास्त्राः शास्त्रा दिग्धानति वर्षाः

उपा.स्त. ३ दुर्गा. 36 8 o FE

उत्पातपाक नितांश्च महोपसर्गान् ॥ ३४ ॥ ॐ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वातिहारिणि ॥ त्रेलोक्यवासिनामीडचे लोकानां वरदा भव ॥ ३५ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ ३६ ॥ ॐ वरदाऽहं सुरगणा वरं यन्मनसच्छथ ॥ तं वृणुष्वं प्रयच्छामि जगतासुप कारकम् ॥ ३७ ॥ ॐ देवा ऊचुः ॥ ३८ ॥ ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रेलोक्यस्याखिलेश्वरि ॥ एवमव त्वया कार्यमस्मद्वेरिविनाश्च नम् ॥ ३९ ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ ४० ॥ ॐ वेवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविश्वातिमे युगे ॥ शुम्भो निशुम्भश्चेवान्याबुत्पत्स्येते महा सुरौ ॥ ४९ ॥ ॐ नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसंभवा ॥ ततस्तौ नाश्चिष्यामि विन्ध्याचलिवासिनी ॥ ४२ ॥ ॐ पुनरप्यति रोह्रेण स्वपेण पृथिवीतले ॥ अवतीर्थ हिन्ध्यामि वैप्रवित्तांस्तु दानवान् ॥ ४३ ॥ ॐ भक्षयन्त्याश्च तानुप्रान्वेप्रचित्तान्मदासुरान् ॥ रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसमोपमाः ॥ ४४ ॥ ॐ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलेकि च मानवाः ॥ स्तुवन्तो व्याहरिष्यंति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ४५ ॥ ॐ भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्टचामनम्भसि ॥ सुनिभिः संस्तुतौ भूमौ संभविष्याम्ययोतिजा ॥ ॥ ४६ ॥ ॐ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ॥ कीर्तियिष्यान्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ४७ ॥ ॐ ततोऽह् मिल्छं छोकमात्मदेहसमुद्भवेः ॥ भरिष्यामि सुराः शाकरावृष्टेः प्राणधारकः ॥ ४८ ॥ ॐ शाकम्भरीति विख्याति तदा यास्याम्यहं भुवि ॥ तत्रेव च विषष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ ४९ ॥ ॐ दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ॥ पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाच्छे ॥ ५० ॥ ॐ रक्षांसि भक्षयिष्यामि सुनीनां त्राणकारणात् ॥ तदा मां सुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानस्रमूर्तयः ॥ ५१ ॥ अ भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति॥यदाऽरुणाख्यस्त्रेलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥५२॥ ॐ तदाऽहं आमूरं रूपं कृत्वाऽसं रूपेयषद्पद्म् ॥ त्रेटोक्यस्य हितार्थाय विषयामि महासुरम् ॥५३॥ ॐ श्रामरीति च मां ठोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ॥ इत्थं यदा यदाबाधा दानवात्था भविष्यति ॥ ५४ ॥ ॐ तदा तदाऽवतीर्याहं करिष्याम्यारसंक्षयम् ॥ ५५ ॥ ६३० ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावार्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये नारायणीस्तुतिर्नामैकाद्शोऽध्यायः ॥ ११ ॥ नमो देव्ये० ॥ साङ्गायै संपरिवाराये सवाहनायै

व.ज्ज्यो.जं वर्मस्कंव ८ ॥१९६॥

सायुधाये सर्वनारायण्ये महाहुति समर्पयामि नमः स्वाहा ॥ श्वो॰ ५० अर्धम्॰ १ उ० ४ ॥ पश्चाधिकं तु परिस्फुटाः ॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥ ३ ॥ ॐ एभिः स्तवैश्व मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ॥ तरूयाहं सक्छां बाधां नाज्ञायिष्या म्यसंज्ञायम् ॥ २ ॥ ॐ मधुकैटभनाज्ञां च महिषासुरघातनम् ॥ कीर्तायिष्यन्ति ये तद्वद्वधं ज्ञुम्भनिज्ञुम्भयोः ॥ ३ ॥ ॐ च चतुर्दञ्यां नवम्यां चैकचेतसः ॥ श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यसुत्तमम् ॥ ४ ॥ ॐ न तेषां दुष्कृतं किंचिद त्था न चापदः ॥ भविष्यति न दारिद्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ५ ॥ ॐ श्रञ्जतो न भयं तस्य दस्युतो वा नलतोयीचात्कदाचित्संभविष्यति ॥ ६ ॥ ॐ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ॥ श्रोतव्यं च सदा अक्तया परं स्वस्त्य यनं महत् ॥ ७ ॥ ॐ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ॥ तथा त्रिविधमुत्पातं माहातम्यं शमयेन्मम् ॥ ८ ॥ ॐ यत्रैतत पठचते सम्युक् नित्यमायतने मम ॥ सदा न तद्धिमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९ ॥ ॐ बिछप्रदाने पूजायामग्रिकार्यं महो त्सवे ॥ सर्व ममैतचारितमुचार्य श्राव्यमेवं च ॥ १०॥ ॐ जानताऽजानता वाऽपि बल्छिपूजां तथा कृताम् ॥ प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या विह्नहोमं तथा कृतम् ॥ ११॥ ॐ इारत्काले महापूजा कियते या च वार्षिकी ॥ तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भिक्तसम न्वितः ॥ १२॥ ॐ सर्वबाधाविनिर्भुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ॥ मजुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संज्ञायः ॥ १३॥ ॐ श्रुत्वा शुभाः ॥ पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥ १४ ॥ ॐ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वतास् ॥ १५॥ ॐ ज्ञान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्रदर्जने ॥ ग्रहपीडास चोत्रास माहात्म्यं शृणुयान्मम् ॥ १६ ॥ ॐ उपसर्गाः ज्ञामं यान्ति ब्रह्पोडाश्च दारुणाः ॥ दुःस्वप्नं च नृभिर्देष्टं यते ॥ १७ ॥ ॐ बालप्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ॥ संवातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥ १८ ॥ महोषाणां बलहानिकरं परम् ॥ रक्षोभूतिपशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥ १९ ॥ ॐ सर्व ममैतन्माहात्म्यं मम सन्नि।

षाठान्तरमु--१ मेव वा। २ समन्वितः।

पशुपुष्पार्षधूपेश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमेः ॥ २० ॥ ॐ विप्राणां भोजनेहोंमेः प्रोक्षणियरेहानिज्ञम् ॥ अन्येश्च विविधेभाँगेः प्रदाने वित्तरेण या ॥ २० ॥ ॐ प्रीतिमं क्रियते साऽिह्मनसक्च दुचरित श्वते ॥ श्वतं हरित 'पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छिति ॥ २२ ॥ ॐ रक्षां करोति भ्रतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ॥ युद्धेषु चिरतं यन्मे दुष्टेत्यिनिवहणम् ॥ २३ ॥ ॐ तस्मिन् श्वतं वेरिकृतं भयं पुंसां न जायते ॥ युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मांभिः कृताः ॥ २८ ॥ ॐ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छिति इप्तां मित्र ॥ अरण्ये प्रान्तरे वाऽिष हावािष्रपरिवािरतः ॥ २५ ॥ ॐ द्रस्युभिवी वृतः श्रून्ये ग्रह्मितो वाऽिष श्वाह्मितः ॥ सिहन्याघानुयातो वा वने वन वनहित्तभः ॥ २६ ॥ ॐ रावेष प्रयाद्या हुयातो वा वने स्थितः पाते महा प्रविच ॥ २० ॥ ॐ पत्तसु वािप श्रम्भे प्रश्नामे सुश्चा महाविष्ये । सर्वा वाते स्थितः पाते महा ॥ विष्यते सुल्यते ॥ स्व प्रभावित्वाद्या द्रस्यवे विषयते ॥ वर्ष द्रावेष पर्वावन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥ ३० ॥ ॐ व्रविक्वाच ॥ ३० ॥ ॐ हत्युक्तवा सा भगवती चिर्णह्का चण्डिक्सा ॥ ३२ ॥ ॐ पश्चतामेव देवानां तत्रवान्त रिवा ॥ १० ॥ ॐ कृतिहास्त सुल्या ॥ ३२ ॥ ॐ व्यत्वामेव देवानां तत्रवान्त रिवा । स्व ॥ ३० ॥ ३० एवं भगवती देवी सा नित्याऽपि पुनः पुनः ॥ संभूय कुकृते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ३६ ॥ ॐ त्येतन्योद्यते विश्व । सहा । स्व । ३० एवं भगवती देवी सा नित्याऽपि पुनः पुनः ॥ संभूय कुकृते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ३६ ॥ ॐ तयेतन्योद्यते । सहा । स्व । विश्वते प्रहामारीहित करोति भूतानां सेव काले सना । स्व । ३० ॥ ॐ व्यातं त्येतत्सकुलं ब्रह्मा । सेव काले सना । त्यात्रवा । १० ॥ ॐ व्यातं त्येतत्सकुलं ब्रह्मा । सेव काले सना । विश्वते प्रहामारीहित हारायोपनायते ॥ १० ॥ ॐ स्तुता संपू । विश्वत्वत्य । सहा । विश्वते प्रहामारीहित हारायोपनायते ॥ १० ॥ ॐ स्तुता संपू । विश्वत्वत्या । दस्त । ३ व्यति । ३ पुरुषार्घधूपेश्च गन्धदीपेस्तथोत्तमैः ॥ २० ॥ ॐ विष्राणां भोजनैहींमैः प्रोक्षणीयरहार्निशस् ॥ अन्येश्च विविधेभीगैः प्रदाने पाठान्तरम्-१ दैत्ये च। २ घ्वांसानि । ३ गतिम्।

ब.ज्ज्यो.र्ण. वर्मस्कंष ८ ॥१९७॥ मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये भगवतीवाक्यं नाम द्वाद्शोऽध्यायः॥ १२॥ नमो देव्ये०॥ साङ्गाये सपरिवाराये सवाहनाये सायुधाये बालात्रिपुरसुन्द्ये महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा॥ श्लो० ३०॥ अधै० २ उवाच २॥ चत्वारिशत्येकश्च मन्त्रास्तत्राहुतिद्वयम् ॥ ॐ ऋषिरुवाच॥ १॥ॐ एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धायते जगत्॥ २॥ ॐ विद्यात्येव कियते भगवद्विष्णुमायया॥ तया त्वमेष वैश्यश्च तथेवान्येऽविवेकिनः॥ ३॥ ॐ मोह्यन्ते मोहिताश्चेव मोहमेष्यन्ति चापरे॥ तामुपेहि महाराज श्लारणं परमेश्वरीम् ॥४॥ ॐ आराधिता सेव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा॥६॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच॥६॥ ॐ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः॥ ७॥ ॐ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितत्रत्रतम् ॥ निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ ॥ ८॥ ॐ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ॥ संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः ॥ ९ ॥ ॐ स च वैश्यस्तपस्तेषे देवी मुक्तं परं जपन् ॥ तो तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ १० ॥ ॐ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपामितपणेः ॥ निरा हारी यतात्मानी तन्मनस्की समाहिती ॥११॥ ॐ दृद्तुस्ती बिछं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् ॥ एवं समाराधयतोस्त्रिभिवंधैर्यतात्मनोः ॥ १२ ॥ ॐ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चिण्डिका ॥ १३ ॥ ॐ देव्युवाच ॥ १४ ॥ ॐ यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया नन्दन ।। मत्तरतरप्राप्यतां सर्वे परितुष्टा ददामि तत् ॥ १५ ॥ ॐ मार्कण्डेय डवाच ॥ १६ ॥ ॐ ततो वत्रे तृ न्यजन्मिन ॥ अत्रैव च निजं राज्यं हतज्ञ बुबलं बलात् ॥ १७ ॥ ॐ सोऽपि वैङ्यस्ततो ज्ञानं वत्रे निर्विण्णमानसः प्राज्ञः सङ्गिविच्युतिकारकम् ॥ १८॥ ॐ देव्युवाच ॥ १९॥ ॐ स्वल्पेरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥ २०॥ ॐ हत्वा रिपूनस्विकतं तव तत्र भविष्यति ॥ २१॥ ॐ मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ २२॥ ॐ सावर्णिको नाम मनुभवान् भवि भविष्यति ॥ २३॥ ॐ वेइयवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाािश्कतः ॥ २४॥ ॐ तं प्रयच्छामि संसिद्धचै तव ज्ञानं भवि प्यति ॥ २५॥ ॐ मार्कण्डेय उवाच ॥ २६॥ ॐ इति दत्त्वा तयोद्वी यथाऽभिरुषितं वरम् ॥ वभूवान्तिहिता सद्यो भत्तया ताभ्या

उपा स्त. ३

दुर्गी.

य० १२८

षाठान्तरम्-१ यताहारौ।

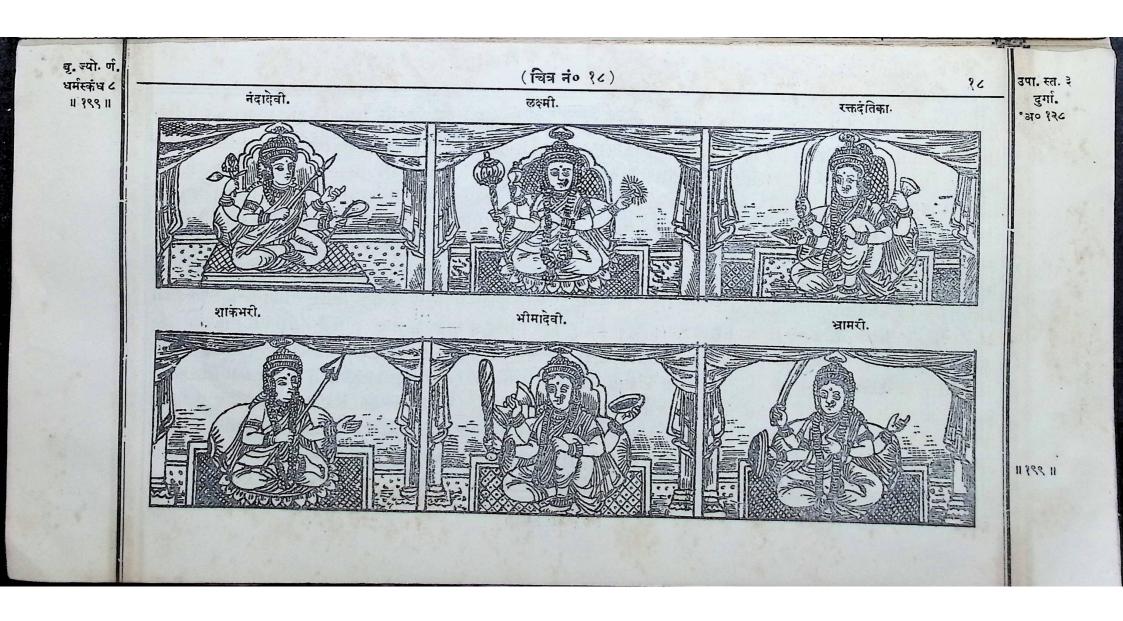
मिम्छुता ॥ २७ ॥ ॐ एवं देव्या वरं छब्धा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ सूर्याजन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥२८ ॥ॐ एवं दे०सूर्या ज्ञ ॥२९॥७००॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकं मन्वन्तरे देवीमाहातम्ये सुरथवेश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३॥ नमो देव्ये० ॥ साङ्गाये सपरिवाराये सवाहनाये सायुधाये श्रीत्रिपुरसुन्दर्ये श्रीविद्याये महाहुति समर्पयामि नमः स्वाहा ॥श्रो०॥१४॥ अ० ६ उवाच ६ ॥ एकोनत्रिंशत्संख्याका मन्त्रास्त्वत्र स्मृता बुधेः ॥ आवृत्त्या त्वधिको मन्त्रः सावर्णिर्भविता मृतुः ॥ १ ॥ ब्रह्मैको भगवानेक ऋषयः सप्तविंशतिः ॥ देविद्वीदृश देवास्त्रीन् मार्कण्डयस्तु मार्गणः ॥ २ ॥ राजोवाचिति चर्त्वारि दूतवेश्यदिको दिको ॥ चैतुःषष्टिरर्धसंख्या एकाधिकमतो मनुः ॥ संख्या १२२॥३॥ एवं विधानतः कुर्याजपहोमकमादिषु शतपञ्चकम् ॥५७८॥ त्रोक्तं सप्तश्वतिस्तोत्रे तत्सप्तशातिसंख्यया ॥ ५॥ इति कात्यायनीमतम् ॥ एवं डामरे वाराहीतन्त्रेऽप्येवमेव इति इ० व० घ० उ० दुर्गी० सप्तश्तिनिरूपणं नाम चतुष्पंचाशं प्रकरणम् ॥५४॥ अथ देवीसूक्तम्॥देवा ऊचुः॥ नमो देव्यै शिवाय सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्य भद्राय नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥ रोद्राय नमो नित्याय गाँय धाज्य नमो नमः ॥ ज्योत्स्नाय चेन्दुक्षिण्य सुखाय सततं नमः ॥ २ ॥ कल्याण्ये प्रणतां वृद्धचे सिद्धचे कूम्य नमो नमः ॥ नैर्ऋत्ये भूभृतां छक्ष्म्य शर्वाण्ये ते नमो नमः ॥ ३ ॥ दुर्गाय दुर्गपाराय साराय सर्वकारिण्ये ॥ ख्यात्ये तथव कृष्णाय धूम्राय सततं नमः ॥ ४ ॥ अतिसोम्यातिरोद्राय नतास्तस्य नमो नमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठाये दृष्ये कृत्ये नमो नमः ॥ ५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शिव्दता ॥ नमस्तस्य नमस्तस्य नमस्तस्य नमो नमः ॥ ६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नम० ॥ ७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चुद्धिक्षेण संस्थिता ॥ नम॰ ॥ ८ ॥ या देवी॰ निद्राह्ण । नम॰ ॥९॥ या देवी॰ क्षुधाह्ण ॥ नम॰ ॥१०॥ या देवी॰ छायाह्ण ॥ नम॰॥११॥ या देवी॰ शक्तिह्ण ॥ नम॰ ॥ १२ ॥ या देवी॰ तृष्णाह्ण ॥ नम॰ ॥ १३ ॥ या देवी॰ क्षान्तिह्ण ॥ नम॰ ॥ १४ ॥ या देवी॰ जातिह्ण ॥ नम॰ ॥ १५ ॥ या देवी॰ छजाह्ण ॥ नम॰ ॥ १६ ॥ या देवी॰ शान्तिह्ण ॥ नम॰ ॥ १७ ॥ या देवी॰ श्रद्धाह्ण ॥ पाठान्तरम्-१ सावणिभीवता मनुः। २ कुर्मः।

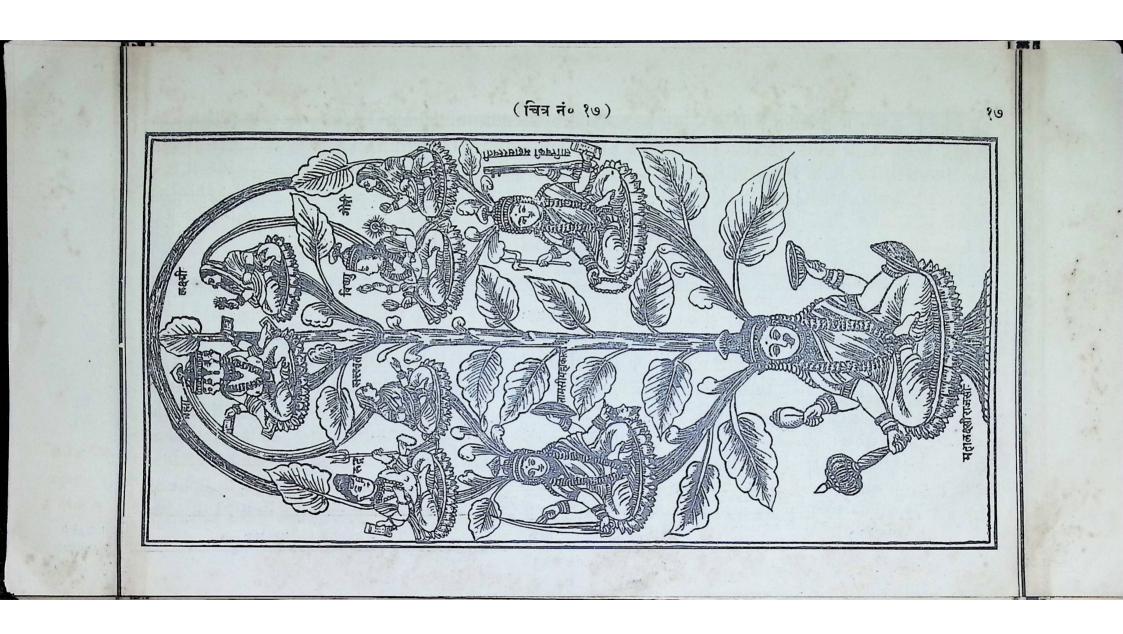
श्व.कज्यो.र्ण. वर्मस्कंघ ८ ॥१९८॥

नम ।। १८॥ या देवी कान्तिक ॥ नम ।। १९॥ या देवी । उक्ष्मीक ।। नम ।। २०॥ या देवी । वृत्तिक सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ॥ करोतु सा नः ग्रुभहेतुरीश्वरी सुरैनेमस्यते ॥ या च स्पृता तत्क्षणमेव इन्ति ॥ इति दुर्गायाः पञ्चमाध्यायोक्तं देवीसूक्तम् ॥ अथ वैदिकम् ॥ ॐ अहं रुद्देभिवेसुभिश्चराभ्यहमादित्यैरुत मित्रावरुणोभा विभम्पेहमिन्द्रायी अहमिथनोभा ॥ १ ॥ अहं सोममाहनसं विभम्पेहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ॥ अहं द्धामि द्विणं इविष्मते सुप्राव्ये २ यजमानाय सुन्वते ॥ २ ॥ अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यूज्ञियानाम् ॥ ३ ॥ मया सो अन्नमत्ति यो विपर्यति यः ब्रह्माणं तमृषि तं सुमेधाम् ॥ ५ ॥ अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे इन्तवाउ ॥ अहं जनाय ॥ अहं सुवेपितरमस्य सूर्धन् मम योनिरप्स्वं १ तः समुद्रे ॥ ततो वितिष्ठे अहमेन वात इव ब्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ॥ परो दिवा पर एना पृथिव्ये र ॥ इति वैदिकं देवीसूक्तम् ॥ एवं पाठान्ते देवीसुक्तं पिठुत्वा खिद्गनीत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं कृत्वा अष्टोत्तरशतवारं नवाण जित्वा पूर्ववन्मालां प्रार्थ्य पुनः षडङ्गं कृत्वा मानसोपचारैः संपूज्य कृतजपं देव्या वामकरे समर्प्य योन्या प्रणम्य रहस्यत्रयं पठेत् ॥ इति श्रीह० वृ० घ० उ० श्रीदुर्गोपासनाध्याये सुकत्यासादिनिक्रपणं नाम पञ्चपञ्चाज्ञां प्रकरणम्

उपा.स्त. दुर्गा.

119861





श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्रीदेव्याः मूर्तिरहस्येषु प्रथमं प्राधानिकं नाम रहस्यं तस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः महाकाङी देवता ऐं नन्द्रजा ज्ञातिः हसौं रक्तद्दिका बीजं रं अग्निस्तत्त्वं श्रीमहाकाछीप्रीत्यर्थं प्रथमरहस्यजेष विनियोगः ॥ ॐ आं एं ऐं राजोवाच ऐं एं आं ॐ महाकाल्ये नमः ॥ एवं प्रतिश्चोके छोमविछोमेन प्रथमरहस्य संपुटितं कार्यम् ॥ वैइय उवाच ॥ पुनर्न्नृहि महाराज कथितं यत्तवाग्रतः ॥ यच्च सर्वं महादेव्याः परमं गूढमेव च ॥ १ ॥ राजोवाच ॥ भगवन्नवतारा मे चिष्डकायास्त्वयो दिताः ॥ एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्प्रधानं वक्तुमर्हिस ॥ १ ॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज ॥ विधिना ब्रहि सक्छं यथावत्प्रणतस्य मे ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते ॥ भक्तोऽसीति न मे किंचित्तवावाच्यं नराधिप ॥ ॥ ३ ॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी ॥ लक्ष्यालक्ष्यस्वह्वया सा व्याप्य कृतस्नं व्यवस्थिता ॥ ४ ॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिश्रती ॥ नागं छिङ्गं च योनिं च बिश्रती नृप मुधीन ॥ ५ ॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा ॥ शून्यं तद् खिछं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ ६ ॥ शून्यं तद्खिछं छोकं विछोक्य परमेश्वरी ॥ बभार रूपमपरं तमसा केवछेन हि ॥ ७ ॥ सा भिन्नाञ्चनसङ्काशा दंष्टाङ्कितवरानना ॥ विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥ ८॥ खद्गपात्रशिरःखेटेरलंकृतचतुर्भुजा ॥ कबन्धहारमुरसा बिश्राणा हि शिरःस्रजम् ॥ ९॥ सा प्रोवाच महालक्ष्मी तामसी प्रमदोत्तमा ॥ नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥ १०॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसी प्रमदोत्तमाम् ॥ ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥ १०॥ महा माया महाकाली महामारी श्रुधा तृषा ॥ निद्रा कृष्णा चेकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥ १२॥ इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः ॥ एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽइनुते सुखम् ॥ १३ ॥ तामित्युक्तवा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप ॥ सत्त्वा ख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥ १४ ॥ अक्षमालाङ्कराधरा वीणापुस्तकधारिणी ॥ सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यैव सा ददौ ॥ १५ ॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती॥आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥ १६ ॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महा

ष्ट.क्ज्यो.र्ण. वर्मस्कंघ ८ भि२००॥

काली सरस्वतीम्।।युवां जनयतं देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः।। १७।।इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः सप्तर्ज मिथुनं स्वयम् ॥ हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसी कमलासनी॥१८॥ब्रह्मन् विधे विरश्चेति धातारित्याइ तं नृप ॥ श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याइ माता स्त्रियं च ताम् ॥ महाकाछी भारती च मिथुने सृजतः सह ॥ एतयोरिप रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥ २० ॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्र शेखरम् ॥ जनयामास पुरुषं महाकाली सितां हित्रयम् ॥ २१ ॥ स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः ॥ त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषा स्वराऽक्षरा ॥ २२ ॥ सरस्वती स्त्रियं गौरीं कूष्णं च पुरुषं नृप ॥ जनयामास नामानि तयोरिप वदामि २३ ॥ विष्णुः कृष्णो ह्विकिशो वासुदेवो जनार्दनः ॥ उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शुभौ ॥ २४ ॥ एवं युवतयः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ॥ चक्षुष्मन्तोऽनुपर्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥ २५ ॥ ब्रह्मणे प्रदृदौ पत्नीं महाळक्ष्मीर्नृप त्रयीम् ॥ गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ २६ ॥ स्वरया सह संभूय विश्ञिडिण्डमजीजनत् ॥ विभेद भगवान् रुद्रस्तद्गौर्या सह वीर्य वान् ॥२७॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्वपणमहाश्रुतात्मकं सर्व जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ २८॥ प्रपोष पाछयामास तछक्ष्म्या सह केशवः ॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वंमयीश्वरी ॥ २९ ॥ निराकारा च साकारा सेव नानाभिधानभृत् ॥ नामान्तरैर्निह्रप्येषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥३०॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सार्वाणके०प्राधानिकरहरूयं नाम चतुर्द्शोऽध्यायः ॥ १४ ॥ १ ॥ ॐ अस्य श्रीवैकृतिकद्वितीयरहरूयस्य विष्णुऋषिः अनुष्टुष् छन्दः महालक्ष्मीर्देवता इसी दुर्गा बीजं ही ज्ञाकंभरी ज्ञाकिः इंवायुस्तत्त्वं श्रीमहा लक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ हूं श्रीं हीं ॥ ऋषिरुवाच ॥ हीं श्रीं हूं ॐ महालक्ष्म्ये नमः ॥ एवं प्रकारेण प्रति श्चोके संपुटितं कार्यम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिघोदिता ॥ सा शर्वा चिण्डका दुर्गा भद्रा भर्गव तीर्यते ॥ १ ॥ योगनिद्रा हरेरुका महाकाली तमोगुणा ॥ यधुकैटभनाञार्थं यां तुष्टावांबुजासनः ॥ २ ॥ दुश्वका दुश्युजा

पाठान्तरम्-१ श्वाह माता च तां स्त्रियम्। २ शिवा। ३ सावित्री चृपसत्तम । ४ सर्वलोकमहेश्वरी । ५ भगवतीति च ।

उपा.स्तू व दुर्गा.

ग२००॥

दुशपाद्। ऽअनप्रभा ।। विशालया राजमाना त्रिंशङोचनमालया ॥ ३ ॥ स्फुरद्शनदृंद्रा सा भीमरूपाऽपि भूभिप ॥ रूपसीभाग्य कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियाम् ॥ ४॥ खङ्गबाणगदाञ्च छशङ्क चक्रमुगुण्डिभृत् ॥ परिवं कार्मुकं शीर्ष निश्चोतद्विधरं द्धौ ॥ ॥ ५॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया ॥ आराधिता वर्शाकुर्यात्यूजाकर्तश्चराचरम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवरारिभ्यो र्भूताऽमितप्रभा ॥ त्रिगुणा सा महारुक्ष्मीः साक्षान्महिषमिद्नी ॥ ७ ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला ॥ रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मद्।।। ८ ।। सुचित्रजवना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा ।। चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ९ ॥ अष्टाद्श्युजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ॥ आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरकमात् ॥ १० ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा ॥ चकं त्रिशूलं परशुः शङ्को घण्टा च पाशकः ॥ ११ ॥ शक्तिर्दण्डश्रमं चापं पानपात्रं अछंकृतभुजामेभिरायुंधैः कमलासनाम् ॥ १२ ॥ सर्वदेवमयीमीज्ञां महालक्ष्मीमिमां नृप ॥ पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभु भेवेत् ॥ १३ ॥ गौरीदेहात्समुद्भता या सत्त्वैकगुणाश्रया ॥ साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भामुरिववर्हिणी ॥ १४ ॥ द्धौ चाष्ट्रमुजा बाणमुसले शूलचकभृत् ॥ शङ्कं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥ १५॥ एषा संपूर्जिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छिति ॥ निशुम्भमथनी देवी शुम्भामुरिनबर्हिणी ॥ १६॥ इत्युक्तानि स्वह्मपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव ॥ उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥ १७॥ महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सर्स्वती ॥ दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥ १८॥ विरिश्चः स्वरया मध्ये रहो गौर्या च दक्षिणे ॥ वामे लक्ष्म्या हिषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥ १९ ॥ अष्टादश्रमुजा मध्ये वामे चास्या दशानना ॥ दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥ २० ॥ अष्टादश्रभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिष ॥ दशानना चाष्ट भूजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ २१ ॥ कालमृत्यू च संपूज्यौ सर्वारिष्टप्रज्ञान्तये ॥ यदा चाष्ट्रभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ २२ ॥

पाठान्तरम्-१ पात्र । २ कार्मुकं च बिभर्ति या । ३ एषा सा पूजिता ।

ष्ट्रक्यो.णे. कॉस्कंब ८ ॥२०३॥

नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तथा रुद्रविनायकौ ॥ नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ २३ ॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः ॥ अष्टादश्रभुजा चैषा पूज्या महिषमिद्नी ॥ २४ ॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सेव प्रोक्ता सरस्वती ॥ ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥ २५ ॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः ॥ कृत्वा चाष्टदलं पद्मं चन्द्नागरू कुङ्कमैः ॥ २६ ॥ षट्कोणं च त्रिकोणं च देवीं तन्मध्यतो यजेत् ॥ पूज्येज्ञगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥ २७ ॥ अर्घ्यादिभि रलंकारेर्गन्धपुष्पेस्तथाऽक्षतेः ॥ धूपेदींपेश्च नेवेद्येनीनाभक्ष्यसमन्वितेः ॥ २८ ॥ क्षिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप ॥ बिल मांसादिपूजा या विप्रवर्ज्या मयोरिता ॥ २९ ॥ प्रणामाचमनीयेन चन्द्रनेन सुगन्धिना ॥ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभाव समन्वितैः ॥ ३० ॥ वामभागेऽत्रतो देव्याञ्छित्रज्ञीर्षे महासुरम् ॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीज्ञाया दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥ वाह्नं पूजयेहेव्या धृतं येन चराचरम् ॥ ३२ ॥ ततः कृताञ्चिषुटः स्तुवीत च रिमेः ॥ एकेन वा मध्यमेन नैकनेतरयोरिह ॥ ३३ ॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपंहिछद्रमवाप्नुयात् ॥ स्तोत्रमन्त्रेः स्तुवीतेमां वा जगदम्बिकाम् ॥ ३४ ॥ प्रदक्षिणानमस्कारान्कृत्वा सूर्धि कृताञ्चिः ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतान्द्रितः ॥ ३५ ॥ प्रतिश्चिकं तु जुहुयात्पायसं तिल्सिपिषा ॥ जुहुयात्स्तोत्रैमन्त्रेवां चिष्डिकाये ग्रुभं इविः ॥ ३६ ॥ नमोनमः पहेर्देवीं पूजयेत् सुसमाहितः ॥ प्रयतः प्राञ्जान्तिः प्रहः प्रणम्यारोप्य चात्प्रानि ॥ ३७ ॥ सुचिरं भावयहैंवीं चिण्डकों तन्मयो भवेत् ॥ एवं यः पूजयेद्वत्तया प्रत्यहं परमेश्वरीम् ॥ ३८ ॥ अक्त्वा भोगान्यथाकामं देवीसायुज्यमाप्रयात् ॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥ ३९ ॥ भस्मी कृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् ॥ ४० ॥ यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सख माप्स्यासि ॥ ४१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपु॰ वैकृतिकरहरूयं नाम पञ्चद्शोऽध्यायः ॥ १५ ॥ २ ॥ अथ मूर्तिरहरूयेषु रक्तदन्तिकादि पाठान्तरम्-१ लिखित्बाऽष्टद्लम् । २ कात्यायनीतन्त्रोक्तं प्रतिमन्त्रमित्यर्थः । ३ अशक्तविषये ५७८ एतावद्भिः श्लोकैः । ४ दीशाम् । ५ कामान् ।

हुगीं.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

माहात्म्यं नाम तृतीयरहरूयम् ॥ तर्य रुद्र ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः महासरस्वती देवता क्वीं भीमा शक्तिः क्वीं श्रामरी बीजं यं सूर्यस्तत्त्वं तृतीयरहरूयजपे विनियोगः ॥ ॐ हों हीं क्वीं ऋषिरुवाच क्वीं हीं हीं ॐ ॐ महासरस्वत्ये नमः ॥ एवं लोमविलोमेन तृतीयरहरूये प्रतिश्चोके संपुटितं कार्यम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा ॥ संस्तुता पूजिता भत्तया वशी कुर्याजगत्रयम् ॥ १ ॥ कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा ॥ देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥ २ ॥ कमलाङ्कश पाञाञ्जैरछंकृतचतुर्भुजा ॥ इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना ॥ ३ ॥ या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयाऽनच ॥ तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम् ॥ ४ ॥ यच्छत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा॥ ५ ॥ रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशाऽतिभीषणा॥ रक्ततीक्ष्णनला रक्तद्शना रक्तद्निका त्रियं पुत्रं देवी भक्तं भजेजनम् ॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी ॥ ७॥ दीघौँ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्द्रपयोनिधी ॥ ८ ॥ आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ अनया जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ ९ ॥ इमां यः पूजयेद्रक्त्या स व्याप्रोति चराचरम् ॥ अधीते य इमं नित्यं रक्तदंत्या वपुःस्तवम् ॥ १० तं सा परिचरेदेवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना ॥ ११ ॥ गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूद्री ॥ सुककेशसमोत्तुङ्गवृत्तपीन्यनस्तनी ॥ १२ ॥ मुधि शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥ पुष्पपञ्चनमूलादिफलायं शाकसंचयम ॥ १३ ॥ काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुनृण्मृत्युभयापहम् ॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति विश्रती परमेश्वरी ॥ १४ ॥ शाकम्भरी शताक्षी सा सेव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती ॥ १५ ॥ शाकम्भरी स्तुवन्ध्यायन् जपन्संपूजयन्नमन् ॥ अक्षयाण्यर्तुते शीत्रमन्नपानामृतानि सः ॥ १६ ॥ भीमाऽपि नीछवर्णा च दृष्टादशनभासुरा ॥ विशाललोचना नारी वृत्तपीन पयोधरा ॥ १७ ॥ चन्द्रहासं च डमरुं शिरःपात्रं च बिश्रती ॥ एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा आमरी

चित्रकान्तिभृत् ॥ १८ ॥ चित्राञुरुपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥ चित्राभरणपाणिः सा महामारीति गीयते ॥ १९ ॥ मेधा प्रज्ञा तथा 💥 अद्धा धारणा कान्तिरेव च ॥ अवन्ति रुतुवतो नित्यं चण्डिकायाः प्रकीर्तिताः ॥ २०॥ इति ते सूर्तयो देव्या व्याख्याता वसुधाधिप ॥ जगन्मातुश्रण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः ॥ २१ ॥ इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीना मधीष्वावहितः स्वयम् ॥ २२ ॥ देव्याश्चेव प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि ॥ ज्ञान्तिः पुष्टिस्तथा छक्ष्मीरेतत्सर्वे प्रयच्छित् ॥ २३ ॥ सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत् ॥ अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि जगदम्बिकाम् ॥ २४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सूर्तिरहरूयं नाम तृतीयम् ॥ इति ह० वृ० घ०उ०दु० ध्याये रहरूयत्रयनिरूपणं नाम षट्पञ्चाशं प्रकरणम्॥५६॥ अथ उक्ष्मीसूक्तं प्रथमचरित्रान्ते पठित्वा पश्चात् मध्यमचरित्रं पठेत् सृष्टिस्थितिविनाज्ञानां इत्यारभ्य त्विय भक्तिनम्राः इत्यन्तं दुर्गायाः एकाद्शाध्यायोक्तं द्वाविंशतिश्चोकात्मकं सूक्तं पठेत् ॥ वा तन्त्रान्तरे शकादिस्तुत्यध्यायं पठित्वा पश्चात् शुलेन पाहि नो देवीति॰ यथावत् कथयामि ते इत्यन्तं रुक्ष्मीसूक्तं पठेत्॥ अथ एकाद्शाध्यायोक्तरुक्ष्मीसूक्तसुच्यते॥सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनाति।॥ गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि० ॥ २ ॥ इंसयुक्त विमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौज्ञाम्भःक्षारिके देवि नाराय० ॥ ३ ॥ त्रिज्ञूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेण नाराय ।। ४ ॥ शङ्खन्यकगदाञार्क्नगृहीतपरमायुधे ॥ प्रसीद् वैष्णवीरूपे नाराय ।। ५ ॥ गृहीतोत्रमहाचके दृष्टोद्धृतवसुंधरे ॥ वाराहरूपिणि शिवे नाराय॰ ॥ ६ ॥ नृसिंहरूपेणोश्रेण इन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे ॥ त्रेलोक्यत्राणसहिते नाराय॰ महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नाराय० ॥ ८॥ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ॥ चोररूपे महारावे नाराय० ॥ ॥ ९ ॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ॥ चामुण्डे मुण्डमथने नाराय० ॥ १० ॥ लिक्ष्म लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे 💆 ॥२०२॥ भ्रवे ॥ महारात्रि महाविद्ये नाराय० ॥ ११ ॥ मेधे सरस्वति वरे भ्रति बाश्रवि तामिस ॥ नियते त्वं प्रसीदेशे नाराय० ॥ १२ ॥

उपा.स्त. ३ दुर्गी, अ० ११८

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ अयेभ्यस्त्राहि नो देवि नाराय॰ ॥ १३ ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं छोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥ ज्वालाकरालमत्युत्रमशेषासुरसूद्नम् ॥ त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमो ऽस्तु ते ॥ १५ ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ १६ ॥ असु रास्ग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ ग्रुभाय खङ्गो भवतु चिण्डिक त्वां नता वयम् ॥ १७॥ रोगानशेषानपहंसि तृष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ १८॥ एतत्कृतं यत्कद्नं त्वयाऽद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपरनकैर्वहुधाऽऽत्ममूर्ति कृत्वाऽम्बिकं तत्प्रकरोति काऽन्या ॥ १९॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेक दीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वद्त्या ॥ ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विश्रामयत्येतद्तीव विश्वम् ॥ २०॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युवलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाऽव्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ २१ ॥ विश्वेश्वरी त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ॥ विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्विय भक्तिनम्राः ॥ २२ ॥ इति श्रीह्० वृ० घ॰ उ॰ दु॰ ध्याये एकाद्शाध्यायोक्तलक्ष्मीसूक्तानिरूपणं नाम सप्तपंचाशं प्रकरणम् ॥ ५७ ॥ अथ विलोमदुर्गापाठः ॥ तत्रादौ कवचार्गळकीळकनवार्णन्यासाः ॥ जपं रात्रिसूक्तं च पठित्वा विळोमपाठान्ते देवीसूक्तजपन्यासरहस्यानि पठेत् ॥ अथ विनियोगः ॥ अस्य श्रीविछोमसत्रशत्युत्तममध्यमप्रथमचरित्रस्य रुद्रविष्णुब्रह्माण ऋषयः श्रीसरस्वती महारुक्ष्मी महाकाछी देवताः अनुष्टुप् त्रिष्टुप् गायत्री छन्दांसि भीमाञ्चाकंभरीनन्दाः शक्तयः श्रामरी दुर्गा रक्तदन्तिका बीजानि सूर्यवाय्वयस्तत्त्वानि ॥ सामयजु ऋग्वेदा ध्यानानि मानसेप्सितकामनासिद्धचर्थे विलोमसप्तशतीपाठे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ घण्टाशूल् ॥ १ ॥ अक्षस्रक् परशुं ।। र ॥ खड्गं चक ॰॥ ३ ॥ इति ध्यात्वा ॥ अथ विलोमसप्तश्तीन्यासः ॥ क्वीं कीलकं १ हीं शक्तिः २ ऐं बीजं ३ ॐ सर्वस्व रूपे सर्वेशे सर्वशक्ति ॰ १ अस्त्राय फट् करतलकरपृष्ठाभ्यां ॰ १ ॐ खड्गशूलगदादीनि ॰ १ नेत्रत्रयाय वौषट् कनिष्ठिकाभ्यां २

ब्र.डडयो, र्ण बर्मस्कंघ ८ ॥३०३॥

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रेलो॰ १ कवचाय हुं अनामिकाभ्यां नमः ३ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके॰ १ शिखाये वषद मध्यमाभ्यां नमः ४ ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि० १ शिरसे स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः ५ ॐ खङ्गशूलगदादीनि यानि० १ हिद्याय नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ इति षडङ्गक्ररन्यासौ कृत्वा ध्यानम् ॥ विद्यहामसमप्रभां० ॥ १ ॥ अथ संहारपाठः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमश्रण्डिकाये ॥ एवं देव्या वरं लब्धा सुरथः क्षत्रियर्घभः ॥ सूर्याज्ञन्म समासाद्य साविणर्भविता मनुः ॥ २ ॥ इति दत्त्वा तयोदेवी सुर्थः ॥ १ ॥ एवं देव्या वरं लब्धा सुर्थः क्षत्रियर्घभः ॥ सूर्याज्ञन्म समासाद्य साविणर्भविता मनुः ॥ २ ॥ इति दत्त्वा तयोदेवी यथाऽभिलुषितं वरम् ॥ बभूवान्ताईता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्ठता ॥ ३ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ४ ॥ तं प्रयच्छामि संसि द्धचै तव ज्ञानं भविष्यति ॥ ५ ॥ वैइयवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवािष्ठतः ॥ ६ ॥ सार्वाणको नाम मनुर्भवान् अवि भवि ष्यति ॥ ७ ॥ मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ ८ ॥ इत्वा रिपूनस्खितं तव तत्र अविष्यति ॥ ९॥ स्वल्पेरहोभि र्नुपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥ १० ॥ देव्युवाच ॥ ११ ॥ सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वत्रे निर्विण्णमानसः ॥ ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥ १२ ॥ ततो वत्रे नृपो राज्यमविश्रंइयन्यजन्माने ॥ अत्रैव च निजं राज्यं हतशञ्चबलं बलात् ॥ १३ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ १४ ॥ यत्त्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्द्न ॥ मत्तस्तत्त्राप्यतां सर्व परितुष्टा ददामि तत् ॥ ॥ १५ ॥ देव्युवाच ॥ १६ ॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह् चण्डिका ॥ १७ ॥ दृद्तुस्तौ बिछं चैव निज्गात्रासृगुक्षितम् ॥ एवं समाराध यतोस्त्रिभिर्वर्षेर्यतात्मनोः ॥ १८ ॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपामितर्पणैः ॥ निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ १९ ॥ स च वैश्यस्तपस्तेषे देवीसूक्तं परं जपन् ॥ तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा सूर्ति महीमयीम् ॥ २० ॥ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ॥ संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः ॥ २१ ॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषि संशितव्रतम् ॥ निर्विण्णोऽतिमम राज्यापहरणेन च ॥ २२ ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ २३ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ २४ ॥

उपा.स्त. शे दुर्गी...

112031

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ २५ ॥ मोह्मन्ते मोहिताश्चिव मोहमेष्यन्ति चापरे ॥ तासुपैहि महाराज शरणं परमे श्वरीम् ॥ २६ ॥ विद्या तथैव क्रियते भगविद्धष्णुमायया ॥ तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्येऽविवेकिनः ॥ २७ ॥ एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ एवंप्रभावा सा देवी ययदं धार्यो जगत् ॥ २८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २९ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्यन्तरे देवीमाहातम्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ स्तुता संपूजिता पुष्वैर्धूपगन्धादिभिस्तथा ॥ ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे तथा शुभाम् ॥ १ ॥ भवकाले नृणां सेव लक्ष्मीर्विद्युपदा गृहे ॥ सेवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोप जायते ॥ २ ॥ सेव काले महामारी सेव सृष्टिर्भवत्यजा ॥ स्थिति करोति भूतानां सेव काले सनातनी ॥ ३ ॥ व्याप्तं तयेतत्स कलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ॥ महाकाल्या महाकाली महामारीस्वरूपया ॥ ४ ॥ तयेतन्मोहाते विश्वं सेव विश्वं प्रसूयते ॥ सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छिति ॥ ६ ॥ एवं भगवती देवी सा नित्याऽपि पुनः पुनः ॥ संभूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ६ ॥ जगद्धिष्वंसके तस्मिन्महोत्रेऽतुलविक्रमे ॥ निशुम्भे च महावीर्ये होषाः पातालमाययुः ॥ ७ ॥ यज्ञभागभुनः सर्वे चकु विनिहतारयः ॥ देत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥ ८ ॥ पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत ॥ तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥ ९ ॥ इत्युक्त्वा सा. भगवती चण्डिका चण्डिकिमा ॥ १० ॥ ऋषिरुवाच ॥११॥ दूरादेव पलायन्ते स्मरत अरितं मम ॥ १२ ॥ रमरनममैतचरितं नरो मुच्येत संकटात् ॥ मम प्रभावात्सिहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ १३ ॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संयामे भृशदारुणे ॥ सर्वाबाधासु वोरासु वेदनाभ्यार्दितोऽपि वा ॥ १४ ॥ राज्ञा कुद्धेन वाऽऽज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा ॥ आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ १५ ॥ दस्युभिर्वा वृतः श्रून्ये गृहीतो वाऽपि श्रृञ्जभिः ॥ सिंह्व्यात्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥ १६ ॥ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति श्रुभां मतिम् ॥ अरण्ये प्रान्तरेवाऽपि दावाग्निपारेवारितः ॥ १७ ॥ तिस्मन् श्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ॥ युष्माभिः स्तुतयो याश्र याश्र ब्रह्मार्षिभः कृताः ॥ १८ ॥ रक्षां करोति भूतेभ्यो

ष्.ज्ज्या.ण. वर्मस्कंघ ८

जन्मनां कीर्तनं मम ॥ युद्धेषु चारतं यन्मे दुष्टदैत्यानिबईणम् ॥ १९ ॥ प्रीतिमें कियते साऽस्मिन्सकृदुचारिते श्रुते ॥ श्रुतं हरित 🔏 पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छाति ॥ २० ॥ विष्राणां भोजनैहींमैः प्रोक्षणीयैरहर्निहाम् ॥ अन्येश्व विविधेभींगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥२१ ॥ सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् ॥ पशुपुष्पार्घधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥ २२ ॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम रक्षोभूतिपशाचानां पठनादेव नाश्नम् ॥ २३ ॥ बाल्यहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ॥ संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरण मुत्तमम्॥२८॥उपसर्गाः शमं यान्ति यहपीडाश्च दारुणाः ॥ दुःस्वप्नं च नृभिर्द्षष्टं सुस्वप्रसुपजायते ॥२५॥ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्रदर्शने ॥ प्रहपीडासु चोत्रासु माहातम्यं शृणुयान्मम ॥ २६ ॥ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ॥ नन्दते चकुछं पुंसां माहात्म्यं मम शृज्वताम् ॥ २७ ॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ॥ पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥ ॥ २८॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः ॥ मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संश्यः॥ २९ ॥ श्रारकाले महापूजा कियते या च वार्षिकी ॥ तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥ ३० ॥ जानताऽजानता वाऽपि बलिपूजां तथा कृताम् ॥ प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या विह्नहोमं तथा कृतम् ॥ ३१ ॥ बिछपदाने पूजायामिशकार्ये महोत्सवे॥ सर्वे ममैतचारितमुचार्ये श्राव्य मेव च ॥ ३२ ॥ यत्रैतत्पठचते सम्यङ् नित्यमायतने मम ॥ सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निष्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ३३ ॥ उपसर्गा नजेषांस्त महामारीसमुद्भवान् ॥ तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ३४ ॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ॥ श्रोतव्यं च सदा भक्तया परं स्वरूत्ययनं महत् ॥ ३५ ॥ ज्ञात्रतो न भयं तेषां दस्युतो वा न राजतः ॥ न ज्ञास्त्रानलतोयौघात्कदा चित्संभविष्यति॥ ३६॥ न तेषां दुष्कृतं किंचिद्दुष्कृतोत्था न चापदः ॥ अविष्यति न द्यारिद्रचं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ३७॥ अष्टम्यां च चतुर्द्र्यां नवम्यां चैकचेतसः॥ श्रोष्यन्ति चैव ये अक्तया मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ३८॥ मधुकेटभनाज्ञां च महिषा अ सुरघातनम् ॥ कीर्तियिष्यन्ति ये तद्वद्वधं ग्रुम्भिनिशुम्भयोः ॥ ३९ ॥ एभिः स्तवैश्व मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ॥ तस्याहं

उषा स्त. १ दुर्मी! अ० ११ ह

सकलां बाधां नाज्ञायिष्याम्यसंज्ञायम् ॥ ४० ॥ देव्युवाच ॥ ४१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावार्णिक मन्वन्तरे देवीवाक्यं नाम द्राद्शोऽध्यायः ॥ १२ ॥ तदा तदाऽवतीर्याऽहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ १ ॥ श्रामरीति च मां छोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ॥ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ २ ॥ तदाऽहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्थाय विध ष्यामि महासुरम् ॥ ३ ॥ भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भाविष्यति ॥ यदाऽह्मणाख्यस्त्रेळोक्ये महाबाधां कारिष्यति ॥ ४ ॥ रक्षांसि भक्षियष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ॥ तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ ५ ॥ दुर्गादेवीति नाम भविष्यति ॥ पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ६ ॥ ज्ञाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ॥ तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महामुरम् ॥ ७॥ ततोऽहमाखिछं छोकमात्मदेहसमुद्भवैः ॥ भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः ॥ ८॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ॥ कीर्तियिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ९॥ वार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भित ॥ मुनिभिः संस्तुता भूमौ संभविष्याम्ययोनिजा ॥ १० ॥ ततो मां देवताः स्वर्गे मत्यैछोके मानवाः ॥ स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ११ ॥ अक्षयन्त्याश्च तानुयान्वैप्रचित्तान् महासुरान् ॥ रक्ता दन्ता अवि ष्यन्ति दाडिमीकुसुमीपमाः ॥ १२ ॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ॥ अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥ १३ ॥ नन्दगोप्गृहे जाता यशोदागर्भसंभवा ॥ ततस्ती नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ १४ ॥ वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंश तिमे युगे ॥ शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुतपत्स्येते महासुरी ॥ १५ ॥ देव्युवाच ॥ १६ ॥ सर्वाबाधाप्रश्रमनं त्रैलोक्यस्याखिले श्वारि ॥ एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाञ्चनम् ॥ १७ ॥ देवा ऊचुः ॥ १८ ॥ वरदाऽहं सुरगणा वरं यं मनसेच्छथ प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ १९ ॥ देव्युवाच ॥ २० ॥ प्रणतानां प्रसीद् त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि॥ त्रैलोक्यवासिना मीडचे छोकानां वरदा भव ॥ २१ ॥ देवि प्रसीद् पारेपाछय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथाऽसुरवधाद्धुनैव सद्यः ॥ पापानि सर्व

ष्ट.ज्ज्यो.र्ण. बर्मस्कंघ ८ ॥२०५॥

जगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥ २२ ॥ विश्वेश्वारे त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका विश्वम् ॥ विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्विय भिक्तिनुष्ठाः ॥ २३ ॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो क्ष्म दस्युवलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाऽिधमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ २४ ॥ विद्यास ज्ञास्त्रेषु विवेकदीपेष्वा ॥ विद्यास ज्ञास्त्रेषु विवेकदीपेष्वा ॥ विद्यास ज्ञास्त्रेषु विवेकदीपेष्वा ॥ विद्यास विश्वम् ॥ २५ ॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाऽद्य धर्मद्भिषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्ति कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोति काऽन्या ॥ २६ ॥ रोगानशेषानपहंिस तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकछानभीष्टाच् ॥ त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ २७ ॥ पङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ॥ शुभाय खङ्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ २८ ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ॥ सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ २९ ॥ ज्वालाकरालमत्युत्रमञ्जेषासुरसूद्नम् ॥ भीतेर्भद्रकाछि नमोऽस्तु ते ॥ ३० ॥ एतत्ते वद्नं सौम्यं छोचनत्रयभूषितम् ॥ पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ ३१ ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ॥ अयेभ्यस्नाहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ३२ ॥ अधे सरस्वति वरे भूति बाभावि तामिस ॥ नियते त्वं प्रसीदेशे नारायाणि नमोऽस्तु ते ॥ ३३ ॥ छिस्म छिने महाविद्ये अद्धे पुष्टि स्वधे धुवे ॥ महा रात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३४ ॥ दंष्ट्राक्रराळवदने शिरोमाळाविभूषणे ॥ चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३५ ॥ शिवद्तीस्वरूपेण इतदैत्यमहाबले ॥ घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३६ ॥ किरीटिनि महावजे सहस्र 🖐 नयनोज्ज्वले ॥ वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३७ ॥ वृतिहरूपेणोग्रेण इन्तुं दैत्याच् कृतोद्यमे ॥ त्रैलोक्यत्राणसहिते ॥ नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३८ ॥ गृहीतोग्रमहाचके दंष्ट्रोद्धतवसुन्धरे ॥ व्राहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३९ ॥ शङ्क चकगदाशार्क्नगृहीतपरमायुघे ॥ प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४० ॥ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ॥ कीमारी

उपा.स्त. दुर्गी.

112061

रूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४९ ॥ त्रिशूळचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ॥ माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४२ ॥ इंसयुक्तिविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ॥ कौशाम्भःक्षारिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४३ ॥ शरणागतदीनाते परित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यातिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४४ ॥ सर्वमङ्गळमाङ्गलये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये ज्यम्बके गौरि नारायणि नमो अये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४५ ॥ सर्वमङ्गळमाङ्गलये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये ज्यम्बके गौरि नारायणि नमो उस्तु ते ॥ ४६ ॥ कठाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी ॥ विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४७ ॥ सर्वस्य बुद्धि कृपेण जनस्य हिंदि संस्थिते ॥ स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४८ ॥ सर्वभूता यदा देवि स्वर्गधिक्तप्रदायिनि ॥ त्वं स्वर्गाप्ति स्वर्गाप्ति ।। त्वं स्वर्गाप् स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः॥ ४९॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः श्लियः समस्ताः सकला जगत्सु ॥ त्वयै कया पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः॥ ५०॥ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमाऽसि माया ॥ संमोहितं देवि समस्तमेतत्त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५९ ॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण युतः स्थिताऽसि ॥ अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्गचवीर्ये॥ ५२ ॥ देवि प्रपन्नातिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य प्रसीद विश्वेश्वारे पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ५३ ॥ देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा विह्नपुरोगमास्ताम् ॥ कात्यायनीं तुष्टुंबुरिष्टलाभाद्रिकासिवकास्तु विकासिताज्ञाः ॥ ५४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ५५ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिके मन्वन्तरे देवीमाहातम्ये नारायणीस्तुतिनीम एकादशोऽध्यायः॥ ११॥ जन्नलुश्राययः शान्ताः शान्ताः दिग्जनितस्वनाः अवाद्यंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽश्रुद्दिवाकरः ॥ २ ॥ ततो देवगणाः सर्वे मानसाः ॥ बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा छिछतं जगुः ॥ ३ ॥ उत्पातमेषाः सोलका ये प्रागासंस्ते शमं युषुः ॥ सरितो म स्तथाऽऽसंस्तत्र पातिते ॥ ४ ॥ ततः प्रसन्नमिखछं इते तस्मिन्दुरात्मिनि ॥ जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मछं

ह. ज्यो. र्ण. असे स गतासुः पपातोव्यी देवीशूलायविक्षतः ॥ चालयनसकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ ६ ॥ तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्य असे उपा.स्त है जनेश्वरम् ॥ जगत्यां पातयामास भित्त्वा झूळेन वक्षिति ॥ ७ ॥ स क्षित्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगतः ॥ अभ्यधावत दुष्टात्मा ॥ चिन्नेष्ठया ॥ ८ ॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ॥ उत्पात्य आमयामास चिक्षेप धरणीत्रछे ॥ ९ ॥ ॥ वियुद्धं खे तदा दैत्यश्रण्डिका च परस्परम् ॥ चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ १० ॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चेद्वीं गगन ॥ मास्थितः ॥ तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ ११ ॥ तळप्रहाराभिहतो निप्पात महीत्रछे ॥ स दैत्यराजः सहसा पुन्रेव तथोत्थितः ॥ १२ ॥ स मुप्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुद्भवः ॥ देव्यास्तं चापि सा देवी तछेनोरस्यताडयत् ॥ १३ ॥ चिच्छेदा पततस्तर्य मुद्गरं निशितैः शरैः ॥ तथाऽपि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यस्य वेगवान् ॥ १४ ॥ इताश्वः स तदा दैत्यि इछन्नधन्वा विसारथिः ॥ जयाह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ १५ ॥ तस्यापतत एवाञ्च खङ्गं चिच्छेद् चण्डिका ॥ धनुर्मुक्तैः शितैब श्रमं चार्ककरामलम् ॥ १६ ॥ ततः खङ्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् ॥ अभ्यधावत्तदा देवी दैत्यानामधिपेश्वरः ॥ १७ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाद्दे ॥ चिच्छेद् देवी चक्रेण तामप्यस्य करस्थिताम् ॥ १८॥ ततः शरशतैर्देवीमाच्छाद् यत सोऽसुरः ॥ साऽपि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १९ ॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ॥ बभञ्ज छीछ यैवोग्रहुंकारोचारणादिभिः ॥ २० ॥ दिव्यान्यस्त्राणि ज्ञतज्ञो सुसुचे यान्यथाम्बिका ॥ बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीचातकर्तृभिः ॥ २१ ॥ ज्ञात्रे ज्ञात्रे ज्ञात्रे ।। २१ ॥ ज्ञात्रे ज्ञात्रे व्याः ।। २१ ॥ ज्ञात्रे ज्ञात्रे व्याः ।। २१ ॥ ज्ञात्रे व्याः व्याप्त्रे ।। ३३ ॥ अहं विभूत्या बहुभिरिह हृपैर्यदा स्थिता ॥ तत्संहतं मयेकैव तिष्ठाम्याजी स्थिरो भव ॥ २५ ॥ देव्युवाच ॥ २६ ॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा भारे । लयम् ॥ तस्या देव्यास्तनौ जम्मुरेकेवासीत्तदारिम्बका ॥ २७ ॥ एकेवाई जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ॥ पश्येता दुष्ट मय्येव

विश्वन्तयो मिद्वभूतयः ॥ २८ ॥ देव्युवाच ॥ २९ ॥ बलावलेपाहुष्टे त्वं मा हुगें गर्वमावह ॥ अन्यासां बलमाश्चित्य युष्यसे याऽतिमानिनी ॥ ३० ॥ निशुम्भं निहतं दृष्टा श्रातरं प्राणसंमितम् ॥ हन्यमानं बलं चैव शुम्भः कुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ ३१ ॥ ऋषि स्वाच ॥ ३२ ॥ इति श्रीमाकण्डेयपुराणे साविणके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दृशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ केचिद्वि नेशुरसुराः केचित्रष्टा महाहवात् ॥ भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ १ ॥ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वश्रेण चैन्द्रीहस्तायविसुक्तेन तथा परे ॥ २ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथा परे ॥ वाराही तुण्डघातेन केचिच्चूर्णी कृता भुवि ॥ ३ ॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ॥ त्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ४ ॥ ततः सिंहश्रवा कृता सुनि । र । कामाराशाकानामान कार्यमञ्जूमहातुरान । मुलागान नहार । तिराहितान । व । तिराहितान । विराहित । विराह तान् ॥ ११ ॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दुनुजेश्वरः ॥ चक्रायुधेन दितिजङ्छादुयामास चण्डिकाम् ॥ १२ ॥ ततो निशुम्भः संप्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ॥ आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ १३ ॥ ततः सा चण्डिका कुद्धा तदाऽभिहतो भूमी मूर्च्छितो निपपात ह ॥ १४ ॥ शुम्भमुकाञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ॥ चिच्छेद स्वशरेरुप्रैः शत शोऽथ सहस्रशः ॥ १५ ॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्यातं छोकत्रयान्तरम् ॥ निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ १६ ॥ शुम्भेनागृत्य या शक्तिर्भुक्ता ज्वालातिभीषणा ॥ आयान्ती विद्वक्षटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥ १७ ॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति

वृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२०७॥

व्याजहाराम्बिका यदा ॥ तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥ १८ ॥ अट्टाट्टहासमिशवं शिवदूती चकार ह ॥ तैः शब्दैरसुरा स्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥ १९ ॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ॥ कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरो हिताः ॥ २० ॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः ॥ पूरयामास गगनं गां तथोपदिशो दश ॥ २१ ॥ पूरयामास कञ्जभो निजघण्टास्वनेन च ॥ समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ २२ ॥ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्कमवादयत् ॥ ज्याश्चादं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥२३॥स रथस्थस्तथाऽत्युचैर्यहीतपरमायुधैः ॥ भुजैरप्टाभिरतुलैव्याप्याञ्चेषं वभौ नभः ॥॥२४॥तश्चित्रवित्रेष्टिमित्रतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ॥ आतर्यतीव संकुद्धः प्रययौ हन्तुमित्रविकाम् ॥२५॥ ततः परशुह्स्तं त मायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ॥ आहत्य देवी बाणौचैरपात्यत भूतले ॥२६ ॥ आविष्याय गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति॥ साऽपि देव्या त्रिशूळेन भिन्ना भस्मत्वमागता॥ २७ ॥ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूळं जत्राह दानवः॥ आयान्तं सृष्टिपातेन देवी तचा प्यचूर्णयत् ॥ २८॥ छिन्ने चर्मणि खङ्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः ॥ तामप्यस्य द्विघा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥ २९ ॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥ ३०॥ निशुम्भो निशितं खङ्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ॥ अताडयन्यूर्धि सिंहं देव्या वाहनसुत्तमम् ॥ ३१ ॥ चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वरारोत्करैः ॥ चाङ्गेषु शस्त्रीचैरसुरेश्वरी ॥ ३२ ॥ तत्रो युद्धमतीवासीदेव्याः शुम्भनिशुम्भयोः ॥ श्रवर्षमतीवोत्रं मेषयोरिव वर्षतोः ॥ ३३ ॥ आजगाम महावीर्यः ग्रुम्भोऽपि स्वबछैर्वृतः ॥ निहन्तुं चिण्डकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ३४ ॥ तस्यायतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ॥ संदृष्टीष्ठपुटाः कुद्धा हन्तुं देवीसुपाययुः ॥ ३५ ॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षसुद्धहन् ॥ अभ्यधावन्नि गुम्भोऽथ सुरुययाऽसुरसेनया ॥ ३६ ॥ चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ॥ गुम्भासुरो निग्जुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ३७ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ॥ चकार ग्रुम्भो यत्कर्म निग्रुम्भश्चातिकोपनः ॥ ३९ ॥ विचित्र

उपा.स्व. दुगर्ट

अ॰ १२६

मिद्माख्यातं भगवन्भवता मम ॥ देव्याश्चरितमाद्दातम्यं रक्तबीजवधाश्चितम् ॥ ४० ॥ राजीवाच ॥ ४१ ॥ इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहातम्ये निद्युम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥ तेषां मातृगणो जातो ननतीसृङूमदोद्धतः॥ १॥ नीरक्तश्च महीपाळ रक्तबीजो महासुरः ॥ ततस्ते हर्षमतुळमवाष्ठास्त्रिद्शा नृप ॥ २ ॥ जघान रक्तबीजं तं चासुण्डापीतशोणितम् ॥ स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः ॥ ३ ॥ तांश्रखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ देवी शूलेन वन्नेण बाणैरासिभि र्ऋष्टिभिः ॥ ४ ॥ यतस्ततस्तद्रकेण चामुण्डा संप्रतीच्छति ॥ मुखे समुद्रता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥ ५ ॥ न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ॥ तस्याइतस्य देहात्त बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ६ ॥ मुखेन कान्नी जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ॥ ततोऽसावाजघानाथ गद्या तत्र चिण्डकाम् ॥ ७ ॥ अक्ष्यमाणास्त्वया चोत्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ॥ इत्युक्तवा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥ ८॥ भक्षयन्ती चर रणे त्वदुत्पन्नान्महासुरान् ॥ एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ९॥ मच्छस्न पातसंभूतान् रक्ताबिन्द्रन्महासुरान् ॥ रक्ताबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्रेणानेन वेगिना ॥ १० ॥ तान्विषण्णान्सुरान्द्वञ्चा चिष्डक प्राह सत्वरम् ॥ उवाच कार्टी चामुण्डे विस्तीर्णे वद्नं कुरु ॥ ११ ॥ तैश्रामुरांसृक्संभूतैरसुरैः सक्रं जगत् ॥ व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ १२ ॥ तस्याइतस्य बहुधा शक्तिशूछादिभिर्भुवि ॥ पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥ १३ ॥ स चापि गद्या दैत्यः सर्वा एवाइनत्पृथक् ॥ भावृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ १४ ॥ शक्तया जघान कौमारी वाराही च तथाऽसिना ॥ माहेश्वरी त्रिशूळेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ १५ ॥ वैष्णवीचक्रभित्रस्य रुधिरस्नावसंभवैः ॥ सहस्रशो जगद्वचातं तत्त्रमाणैर्महासुरैः ॥ १६ ॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजचान ह ॥ गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ १७ ॥ पुनश्च वज्ञ पातेन क्षतमस्य शिरो यदा ॥ ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥ १८॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसंभवाः ॥ समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीपणम् ॥ १९ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तविन्दवः ॥ तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यवरु

धर्मस्कंष ८

कुलिशेनाइतस्याशु बहु सुम्नाव शोणितम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः गदापाणिरिन्द्रशक्तया सहासुरः ॥ ततश्रीनदी स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥ २२ ॥ श्रारीरतः ॥ समुत्पताति मेदिन्यास्तत्प्रमाणो महामुरः ॥ २३ ॥ पछायनपरान्हङ्घा योद्धमभ्याययौ कुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ २४ ॥ इति मातृगणं कुद्धं मद्यन्तं र्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥ २५ ॥ चण्डाहृहांसैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्रखादाथ सा तदा ॥ २६ ॥ नखे र्विदारितांश्चान्यान्भक्षयन्ती महासुरान् ॥ नारसिंही चचाराजी नादापूर्णदिगम्बरा ॥ २७ ॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दृष्टाप्रक्षतवक्षसः ॥ वराहमूर्त्या न्यपतंश्वकेण च विदारिताः ॥ २८ ॥ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः ॥ पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरीघपव इतवीर्यान्हतौजसः ॥ ब्रह्माणी चाकरोच्छ्यून्येन येन स्म धावति ॥ ३१ ॥ तस्यायतस्तथा काली शुल्पातविदारितान् ॥ खट्वाङ्ग 🕺 पोथितांश्वारीन्कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥ सा च तान्त्रहितान्बाणाच् ग्लूलज्ञाक्तिपरश्वधाच् ॥ चिच्छेद् लीलयाऽऽध्मातधनुर्धके मेहेषुभिः ॥ ३३ ॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ॥ ववर्षुरुद्धतामर्पास्तां देवीममरारयः ॥ ३४ ॥ तेऽपि श्रुत्वावचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ॥ अमर्षापूरिता जग्सुर्यतः कात्यायनी स्थिता ॥ ३५ ॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया शिवदूतीति छोकेऽस्मिस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ ३६ ॥ बलावलेपाद्थ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ ३७ ॥ त्रैलोक्यिमन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हिविर्धुनः ॥ यूयं प्रयात पातालं यिद निवित्तिमच्छथ ॥ ३८ ॥ ब्रहि अ गुम्भं निग्जुम्भं च दानवावित्रगिर्वितौ ॥ ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपिस्थिताः ॥ ३९ ॥ सा चाह धूम्रनिटलमीशानमपरानि द्तत्वं गच्छ भगवन्पार्श्व ग्रुम्भिनिग्रुम्भयोः ॥ ४० ॥ ततो देवीश्ररीरात्तु विनिष्क्रान्ताऽतिभीषणा ॥ चण्डिका शक्तिरत्युत्रा

उपा.स्त. ३ दुगाँ, अ० ११८

शिवाशतनिनादिनी ॥४१॥ ततः परिवृतस्ताभिरीञ्चानो देवज्ञक्तिभिः ॥ इन्यन्तामसुराः ज्ञीघं मम प्रीत्याऽऽह चिण्डकाम् ॥ ४२ ॥ वजहरूता तथेवैन्द्री गजराजोपिर स्थिता ॥ प्राप्ता सहस्रनयना यथा ज्ञाकरूतथेव सा ॥ ४३ ॥ नारसिंही नृसिंहस्य विश्रती सहज्ञं वपुः ॥ प्राप्ता तत्र सटाक्षेपिक्षप्तनक्षत्रसंहितः ॥ ४४ ॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिश्रतो हरेः ॥ शक्तिः साऽप्याययौ तत्र वाराहीं विश्रती ततुम् ॥ ४५ ॥ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपिर संस्थिता ॥ शङ्कचक्रगदाशार्क्षत्वङ्गहरूताऽभ्युपाययौ ॥ ४६ ॥ कौमारी शक्तिहरूता च मयूरवरवाहना ॥ योद्धमभ्याययौ दैत्यानम्बिका ग्रहरूपिणी ॥ ४७ ॥ माहेश्वरी वृषाह्वढा त्रिशूलवरधारिणी ॥ महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥ ४८ ॥ इंसयुक्तविमानात्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ॥ आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साऽभि धीयते ॥ ४९ ॥ यस्य देवस्य यद्भूपं यथा भूषणवाहनम् ॥ तद्भदेव हि तच्छिक्तिरसुरान्योद्धमाययौ ॥ ५० ॥ ब्रह्मेश्युहिविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्र्पेश्चिण्डिकां ययुः ॥ ५१ ॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ॥ भवायामर सिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ ५२ ॥ तन्निनाद्मुपश्चत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ॥ देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥ ५३ ॥ धनुर्ज्यासिंह्घण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा ॥ निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ ५४ ॥ ततः सिंहो महानादमतीव कृत वात्रृप ॥ घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ५५ ॥ आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् ॥ ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥ ५६ ॥ इत्याज्ञाप्यासुरपतिः ग्रुम्भो भैरवञ्ञासनः ॥ निर्जगाम महासैन्यसहस्नैर्बहुभिर्वृतः ॥ ५७ ॥ कालका दौर्ह्वदा मौर्याः कालकेयास्तथाऽसुराः ॥ युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ५८ ॥ कोटिवीर्याणि पञ्चाज्ञदसुराणां कुलानि वै ॥ शतं कुलानि धूम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५९ ॥ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ॥ कम्बूनां चतुराशीति निर्यान्तु स्वबलेर्वृताः ॥ ६० ॥ ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ ६१ ॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ॥ बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ ६२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६३ ॥ इति श्रीमार्कण्डेय

🖫 पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहातम्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ यस्माञ्चण्डं च मुण्डं च महीत्वा त्वमुपागता ॥ 🔏 चित्रसंच ८ वामुण्डेति ततो छोके ज्याता देवि भविष्यप्ति ॥ १ ॥ तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महामुरौ ॥ उवाच काछी कल्याणी है छितं चण्डिका वचः ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥३॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापश्च ॥ युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हिन ज्यप्ति ॥ ४ ॥ शिरश्रण्डस्य काछी च गृहीत्वा मुण्डमेव च ॥ प्राह प्रचण्डाहृहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥ ५ ॥ इतशेषं ततः सेन्यं हिम् चण्डं निपातितम् ॥ मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥ ६ ॥ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ॥ तमप्य पातयद्भौ सा खङ्गाभिहतं रुषा ॥ ७ ॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत ॥ गृहीत्वा चास्य केरोषु शिरस्तेनासिनाऽच्छिनत् ॥ ८॥ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी ॥ काली करालवक्त्रान्तर्डुर्द्शद्शनोज्ज्वला ॥ ९ ॥ तानि चक्राण्यनेकानि विश मानानि तन्मुखम् ॥ बमुर्यथाऽकीबिम्बानि सुबहूनि घनोद्रम् ॥ १०॥ ज्ञारवर्षेर्महाभीमैर्भीमाश्ची तां महासुरः ॥ छाद्यामास चकैश्च मुण्डिक्षितेः सहस्रहाः ॥ ११ ॥ क्षणेन तद्वछं सर्वससुराणां निपातितम् ॥ हङ्घा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥ १२ ॥ असिना निहताः केचित्केचित्सद्वाङ्गताडिताः ॥ जग्मुर्विनाशमसुरा दृष्टात्राभिहतास्तथा ॥ १३ ॥ बिलनां तद्वलं सर्वमसुराणां ॥ महात्मनाम् ॥ ममद्भिक्षयञ्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तदा ॥ १४ ॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथाऽसुरैः ॥ मुखेन जयाह रुषा दशनैर्मिथतान्यपि ॥ १५ ॥ एकं जम्राह केशेषु श्रीवायाम्थ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसाऽन्यमपोथयत् ॥ १६ तथैव योधं तुरमै रथं सारथिना सह ॥ निक्षिप्य वक्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवस् ॥ १७ ॥ पार्ष्णियाहाङ्कश्रयाहियोधघण्टासमन्वि तान् ॥ समादायैकहरूतेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ १८ ॥ सा वेगेनाभिपतिला घातयन्ती महासुरान् ॥ सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्ष 💥 यत तद्वरुम् ॥ १९ ॥ अतिविस्तारवद्ना जिह्वाल्लनभीषणा ॥ निममा रक्तनयना नादापूरितादिङ्मुखा ॥२०॥ विचित्रखट्वाङ्ग 👙

दुर्गी.

कराळवद्ना विनिष्कान्ताऽसिपाशिनी ॥ २२ ॥ ततः कोपं चकारोंचैरिध्वका तानरीन्प्रति ॥ कोपेन चास्या वद्नं मधीवर्ण मभूत्तदा ॥ २३ ॥ ते हङ्घा तां समादातु सुद्यमं चक्क रुखताः ॥ आकृष्टचापासिधरास्तथाऽन्ये तत्समीपगाः ॥ २४ ॥ दह्युस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ॥ सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ २५ ॥ आज्ञतास्ते ततो दैत्याश्रण्डमुण्डपुरोगमाः ॥ चतु 🕺 रङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ २७ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहातम्ये चण्ड मुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ तस्यां इतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ॥ शीव्रमागम्यतां बद्धा गृहीत्वा तामथा म्बिकाम् ॥ १ ॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि ॥ तदाऽशेषायुधैः सर्वेरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥ २ ॥ हे चण्ड हे सुण्ड बलैर्बहुलैः परिवारितौ ॥ तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ ३ ॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फरिताधरः ॥ आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महामुरौ ॥ ४ ॥ श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रहोचनम् ॥ वहं च क्षितं कृतस्नं देवीकेस रिणा ततः ॥ ५ ॥ क्षणेन तद्वरुं सर्वे क्षयं नीतं महात्मना ॥ तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ ६ ॥ विच्छिन्नबाहु शिर्सः कृतास्तेन तथा परे ॥ परो च क्षिरं कोष्टादन्येषां धुतकेसरः ॥ ७ ॥ केषांचित्पाटयामास नखेः कोष्टानि केसरी ॥ तथा तळ प्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् ॥ ८ ॥ कांश्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ॥ आकान्त्या चाधरेणान्यान् जवान स महा सुरान् ॥ ९ ॥ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवस् ॥ पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ १० ॥ अथ कुद्धं महा 🎇 सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिकाम् ॥ ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा इाक्तिपरश्रधेः ॥ ११ ॥ इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रठोचनः ॥ हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥ १२ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १३ ॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बळवान्ब्छसंवृतः ॥ बळान्न्यसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥ १४ ॥ देव्युवाच ॥ १५ ॥ न चेत्र्पीत्याऽद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ॥ ततो बलान्नयाम्येष केज्ञा कर्षणविह्वलाम् ॥ १६ ॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ॥ जगादोच्चैः प्रयाहीति भूलं शुम्भिनिशुम्भयोः

बृ ज्ज्यो र्ण. धर्मस्कंघ ८ 💥

तेनाज्ञप्तरततः शीघं स दैत्यो धूम्रलोचनः ॥ वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्वतं ययौ ॥ १८॥ ऋषिरुवाच ॥ १९॥ तत्परित्रा णदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ॥ स हन्तन्योऽमरो वाऽपि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ २०॥ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ॥ तामानय बलाहुष्टां केञ्चाकर्षणिवह्वलाम् ॥ २१ ॥ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकण्यां सुरराट् ततः ॥ सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिषं धूम्रलोचनम् ॥ २२ ॥ इत्याकण्यं वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ॥ समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥ २३ ॥ ऋषि ह्वाच ॥ २४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये ग्रुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रठोचनवधो नाम पछोऽध्यायः ॥ ६ ॥ स त्वं गच्छ मयैवोक्तं यदेतत्सर्वमाहतः ॥ तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ १ ॥ एवमेतद्वर्छा शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् ॥ किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥ २ ॥ देव्युवाच ॥ ३ ॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वे शुम्भ निशुम्भयोः ॥ केशाकर्षणनिर्धृतगौरवा मा गमिष्यसि ॥ ४ ॥ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे ॥ शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यिस संमुखम् ॥ ५ ॥ अन्येषामि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ॥ तिष्ठन्ति संमुखे देवि कि पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥ ६ ॥ अविद्याऽिस मैवं त्वं देवि बूहि ममायतः ॥ त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेद्ये शुम्भिनिशुम्भयोः ॥ ७॥ दूत उवाच ॥ ८॥ तदागच्छतु क्रि शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः ॥ मां जित्वा किं चिरणात्र पाणि गृह्णातु मे लघु ॥ ९ ॥ यो मां जयित संत्रामे यो मे दर्प व्यपो क्रि हाति ॥ यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १० ॥ किंत्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तिक्रयते कथम् ॥ श्र्यतामल्पचुद्धि त्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ १३ ॥ सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम् ॥ त्रेलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भ श्वापि ताह्याः ॥ १२ ॥ देव्युवाच ॥ १३ ॥ इत्युक्त्वा सा तदा देवी गम्भीरान्तः हिमता जगौ ॥ दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते क्षि जगत् ॥ १४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १५ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ॥ एतद् बुद्धचा समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥ 🐉 ॥२१०॥ ॥ १६॥ मां वा ममानुजं वाऽपि निशुम्भमुरुविक्रमम् ॥ अज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूताऽसि वै यतः ॥ १७॥ स्त्रीरत्नभूतां त्वां

उपा स्त. ३ दुगी!

देवि छोके मन्यामहे वयम् ॥ सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ १८॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च ॥ रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ १९॥ क्षीरोदमथनोद्धृतमश्वरत्नं ममामरैः ॥ उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ ॥ २०॥ त्रेछोक्ये वररत्नानि मम् वरुयान्यशेषतः ॥ तथैव गजरत्नं च हत्वा देवेन्द्रवाहनम् ॥ २१॥ मम त्रेछोक्यमिख्छं मम देवा वशानुगाः ॥ यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्चामि पृथक् पृथक् ॥ २२ ॥ अन्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ॥ निर्जिताखिल दैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥ २३ ॥ देवि दैत्येश्वरः ग्रुम्भस्नेलोक्ये परमेश्वरः ॥ दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाञ्चामहागतः ॥ ॥ २४ ॥ दूत उवाच ॥ २५ ॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोदेशेऽतिशोभने ॥ सा देवी तां ततः प्राह श्रक्षणं मधुरया गिरा ॥ २६ ॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम् ॥ यथा चाभ्येति संप्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ २७ ॥ निशम्येति वचः ग्रुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः ॥ प्रेषयामास सुत्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥ २८ ॥ ऋषिष्ठवाच ॥ २९ ॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते स्त्रीरतमेषा कल्याणी त्वया करमात्र गृद्यते ॥ ३० ॥ निज्ञुम्भस्यान्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ॥ विह्नरिप ददौ तुभ्यमिश्रौचे च वाससी ॥ ३१ ॥ मृत्योरुत्कान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ॥ पाशः सिछ्छराजस्य श्रातुस्तव परित्रहे ॥ ३२ ॥ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति ॥ तथाऽयं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥ ३३ ॥ निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किञ्जलिकनीं द्दी चान्धिमीलामम्लानपङ्कजाम् ॥ ३४ ॥ विमानं इंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे ॥ रत्नभूतिमहानीतं यदासिद्रिधसोऽद्ध तम् ॥ ३५ ॥ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ॥ पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ ३६ ॥ यानि रत्नानि मणयो गजा 📳 श्वादीनि वै प्रभो ॥ त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥ ३७ ॥ स्त्रीरत्नमातिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिश्हित्वषा ॥ सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान्द्रष्टुमईति ॥ ३८ ॥ नैव ताहक् कचिद्र्पं दृष्टं केनचिद्रत्तमम् ॥ ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरे श्वर ॥ ३९ ॥ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोइरा ॥ काऽप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ ४० ॥ ततोऽम्बिकां

च.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥२११॥

परं ह्वपं बिश्राणां सुमनोहरम् ॥ दद्शं चण्डो मुण्डश्च भृत्यो शुम्भिनशुम्भयोः ॥ ४१ ॥ तस्यां विनिगंतायां तु कृष्णाऽभूत् 🖁 साऽपि पार्वती ॥ कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ ४२ ॥ श्रारीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताऽम्बिका ॥ कोशि कीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रं समैतित्क्रयते ग्रुम्भदैत्यनिराकृतैः ॥ देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥ ॥ ४४ ॥ साऽत्रवीत्तान्सुरान्सुञ्चर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ॥ शरीरकोशतश्वास्याः समुद्धृताऽत्रवीच्छित्रा ॥ देवानां तत्र पार्वती ॥ स्नातुमभ्याययो तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ४६ ॥ ऋषिरुवाच च सुरैनीमस्यते ॥ या च स्मृता तत्क्षणमेव इन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ४८ ॥ स्तुता सुरैः संश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता॥ करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चार्पदः॥४९॥नयस्तस्यै नमो नमः॥५०॥ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ चितिरूपेण या कृतस्रमेतद्याप्य स्थिता जगत् ॥ नमस्तस्यै ॥ ५२ ॥ इन्द्रियाणामधिष्टात्री लेषु या ॥ भूतेषु सततं तस्यै व्यात्यै देव्यै नमो नमः ॥ ५३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५५ ॥ या देवी सर्वभ्रतेष श्रान्तिह्रपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥५७॥ नमस्तस्यै ॥५८॥ या नमस्तस्ये ॥ ५९ ॥ नमस्तस्ये नमो नमः ॥ ६० ॥ नमस्तस्ये ॥ ६९ ॥ या ६२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु द्याह्रपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ नमस्तस्ये ॥ ६७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिक्षपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्ये ॥ ६८ ॥ नमस्तस्ये नमो नमः ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७० ॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः नमस्तस्यै ॥ ७३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीह्रपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७५॥ नमस्तस्यै ॥७३॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण सांस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७८ ॥ नमस्तस्यै

उपा.स्त, ३ दुर्गा.

सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ८० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ८२ ॥ या देवी ॥ नमस्तस्य ॥ ८३॥ नमस्तस्य नमो नमः॥ ८४॥ नमस्तस्य ॥ ८५॥ या देवी सर्वभूतेषु रुजारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ८६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८७ ॥ नमस्तस्यै ॥ ८८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ८९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९० ॥ नमस्तस्यै ॥ ९९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिक्रपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्य ॥ ९२ ॥ नमस्तस्य नमो नमः ॥ ९३ ॥ नमस्तस्य ॥ ९४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णाह्रपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्य ॥ ९५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९६ ॥ नमस्तस्यै ॥ ९७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ९८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ९९ ॥ नमस्तस्यै ॥ १०० ॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ १०१ ॥ नमस्तस्यै नमा नमः ॥ १०२ ॥ नमस्तस्यै ॥ १०३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुघारूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ १०४ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १०५ ॥ नमस्तस्यै ॥१०६॥ या देवी सर्वभूतेषु निदाह्रपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥१०७॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०८॥ नमस्तस्यै ॥ १०९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ११० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १११ ॥ नम स्तस्य ॥ ११२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ॥ नमस्तस्य ॥ ११३ ॥ नमस्तस्य नमो नमः ॥ ११४ ॥ 394 ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शिब्दता ॥ नमस्तस्य ॥ 39६ ॥ अतिसीम्यातिरीद्राये नतास्तस्य नमो नमः ॥ नमो जगत्प्रतिष्ठाये देव्ये कृत्ये नमो नमः ॥ 39७ ॥ दुर्गाये दुर्गपाराये साराये सर्वकारिण्ये ॥ ख्यात्ये तथेव कृष्णाये धूम्राये सततं नमः ॥ 39८ ॥ कल्याण्ये प्रणतां वृद्धये सिद्धये कृम्ये नमो नमः ॥ नैर्ऋत्ये भूमृतां छक्ष्म्ये शर्वाण्ये ते नमो नमः ॥ 39८॥ रोद्राये नमो नित्याये गौर्ये धात्र्ये नमो नमः ॥ ज्योत्स्राये चेन्दुक्षिण्ये सुखाये सततं नमः ॥ 3२०॥ नमो देव्ये महादेव्ये शिवाये सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः रूम ताम् ॥ १२१ ॥ देवा ऊचुः ॥ १२२ ॥ इति कृत्वा

चृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२१२॥

मितिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ॥ जम्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवः ॥ १२३ ॥ तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृता ऽिषठाः ॥ भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ १२४ ॥ हताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ १२५ ॥ तावेव पवनार्धे च चक्रतुर्विह्नकर्म च ॥ ततो देवा विनिर्धूता अष्टराज्याः पराजिताः ॥ १२६ ॥ तावेव सूर्यतां तद्रद्धिकारं तथैन्द्वस् ॥ कौबेरमथ याम्यं च चकाते वरुणस्य च ॥ १२७ ॥ पुरा शुम्भिनशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शची पतेः ॥ त्रेटोक्यं यज्ञभागाश्च हता मद्बलाश्रयात् ॥ १२८ ॥ ऋषिष्ठवाच ॥ १२९ ॥ गौरी० द्धौ चाष्ट्रभुजा० ॥ १ ॥ उत्तरचरित्रस्य शिवात्मा सुमेधा भगवाच् ऋषिः अनुष्टुएजगती छन्द्सी महासरस्वती देवता भीमा शक्तिः श्रामरीति बीजं सूर्यस्तत्त्वं क्वी पडङ्गः ॥ गौरीदेहात्समुद्धृता० ॥ २ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे साविणके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ च छोकानां देवानामुपकारिणी ॥ तच्छुणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते समुद्भता यथाऽभवत् ॥ वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भिनशुम्भयोः ॥ २ ॥ इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुरा ॥ देवी देव शरीरेभ्यो जगत्रयहितैषिणी ॥ ३ ॥ इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः ॥ तथेत्युक्तवा भद्रकाली वभूवान्तर्हिता नृप ॥ ४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ५ ॥ तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसंपदाम् ॥ वृद्धयेऽस्मत्प्रपन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाऽम्बिके ॥ ६ ॥ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ॥ यश्च मत्र्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमळानने ॥ ७ ॥ यद्यं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥ वाऽपि वरो देयस्त्वयाऽस्माकं महेश्वरि ॥ ८॥ अगवत्या कृतं सर्वे न किंचिद्विश्वित्यते ॥ ९॥ देवा ऊचुः वियतां त्रिद्शाः सर्वे यद्रमत्तोऽभिवाञ्छतम् ॥ दृद्यम्यह्मतिप्रीत्या स्तवैरेभिः सुपूजिता ॥ ११ ॥ देव्युवाच समस्तेश्चिद्शैर्दिन्येर्ध्येः सुधूपितः ॥ प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान्सुराच् ॥ १३ ॥ एवं स्तुता सुरैर्दिन्येः कुसुनैर्नन्दनीद्भवैः ॥ अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुरुपनैः ॥ १४ ॥ ऋषिष्ठवाच ॥ १५ ॥ खङ्गश्रूरुगद्दिनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ॥ कर

उपा.स्त.३ दुर्गा.

पछ्यसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ १६ ॥ सौम्यानि यानि ह्रपाणि तैलोक्ये विचरान्ति ते ॥ यानि चात्यर्थघोराणि ते रक्षा स्मांस्तथा भुवम् ॥ १७ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ आमणेनात्मश्लूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ १८ ॥ श्लूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ॥ घण्टास्वनेन नः पाहि चापन्यानिःस्वनेन च ॥ १९ ॥ त्रेलोक्यमेतद्खिलं रिप्रनाश्च नेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ॥ नीता दिवं रिप्रगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदमुरारिभवं नमस्ते ॥ २० ॥ केनो पमा भवत तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरिनिष्टुरता च हृष्टा त्वय्येव देवि वरदे सुवन त्रयेऽपि ॥ २१ ॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीछं रूपं तथैतद्विचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ॥ वीर्षे च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्विप प्रकटितेव द्या त्वयेत्थम् ॥ २२ ॥ खङ्गप्रभानिकरिवस्फरणैस्तथोर्थः श्रूलाप्रकान्तिनिवहेन हशोऽसराणाम् ॥ यत्रा गता विलयमंशुमादिन्दुखण्डयोग्याननं तव विल्लोकयतां तदेतत् ॥ २३ ॥ हङ्गैव कि न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानारेषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मितर्भवित तेष्वहितेषु साध्वी ॥ २४ ॥ एभिहतेर्जगदुपैति सुलं तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ॥ संयाममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति चूनमहिताच् विनिहंिस देवि ॥ ॥ २५ ॥ दुर्गे स्मृता हरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मितम्तीव ग्रुभां ददासि ॥ दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वीप कारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥ २६ ॥ धर्म्याणि देवि सकलानि संदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाङ्घोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ २७ ॥ ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीद्ति धर्मवर्गः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मनभृत्यदारा येषां सदाऽभ्युद्यदा भवती प्रसन्ना ॥ २८ ॥ देवि प्रसीद् परमा भवती भवाय सद्यो विनाश्यसि कोपवती कुलानि ॥ विज्ञातमेतद्धुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ २९ ॥, हङ्घा तु देवि कुपितं श्रुकुटीकरालमुयच्छशाङ्कसदशच्छिव यत्र सद्यः ॥ प्राणानमुमोच महिषस्तद्तीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक

^{ब्.ज्ज्}यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥२१३॥

दर्शनेन ॥ ३० ॥ ईषत्सहासममछं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्ति कान्तम् ॥ अत्यद्धतं प्रहतमात्तरुषा तथाऽपि वकं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ ३१ ॥ मेघाऽसि देवि विदिताखिलशास्त्रासारा दुर्गाऽसि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ॥ श्रीः किंदिनारित्द्रदेशे किंदिनाधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिक्षतप्रतिष्ठा ॥ ३२ ॥ शब्दात्मिका सुविमलग्ये जुषां निधानसुद्गीथरम्यपद् अत्रित्तां च साम्राम् ॥ देवि त्रयी भगवती अवभावनाय वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ ३३ ॥ या सुक्तिहेतुरविचिन्त्य महात्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ॥ मोक्षार्थिभिर्सुनिभिरस्तसमस्तदोषै्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ३४ ॥ यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ॥ स्वाहाऽसि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुचार्यसे जनैः स्वधा च ॥ ३५ ॥ हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणाऽपि दोषेनी ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ॥ सर्वाश्रयाऽिषलिमिदं मन्याकृता हि परमा प्रकृतिरूत्वमाद्या ॥ ३६ ॥ किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतित्क चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि चरितानि तवातियानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ३७ ॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतिधियां हृद्येषु बुद्धिः ॥ श्रद्धा सतां कुरुजनप्रभवस्य रुजा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ३८ ॥ यस्याः प्र भगवाननन्तो ब्रह्मा इरश्च न हि वक्तमरुं बरुं च ॥ सा चिण्डकाऽखिरुजगत्परिपालनाय नाज्ञाय चासुरभयस्य मति ३९॥ देव्या यया ततामिदं जगदात्मशक्तया निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूत्या ॥ तामम्बिकामखिळदेवमहर्षिपूज्यां भक्तया नताः स्म विद्धातु शुभानि सा नः ॥ ४० ॥ ज्ञाद्यः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्त्रिन्दुरात्मनि सुरारिबले तुष्टुवुः प्रणितनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ ४१ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४२ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे साव णिकं मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिनीम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ तुष्टुवस्तां सुरा देवीं सह दिन्यैर्महर्षिभिः ॥ जगुर्गन्धर्व पतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ १ ॥ ततो हाहाकृतं सर्वे दैत्यसैन्यं ननाश तत् ॥ प्रहर्षे च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥ २ ॥

उपा.स्त. ३ दुर्गाः

<mark>अर्धनिष्कान्त एवासौ युद्धचमानो महासुरः ॥ तया महासिना देव्या शिरिइछत्त्वा निपातितः ॥ ३ ॥ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्त</mark> स्तया निजमुखात्ततः ॥ अर्धनिष्कान्त एवासीदेव्या वीर्येण संवृतः ॥ ४ ॥ एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् ॥ पादे नाकम्य कण्ठे च झूलेनेनमताडयत् ॥ ५ ॥ ऋषिर्वाच ॥ ६ ॥ गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावित्पबाम्यहम् ॥ मया त्विय इतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याञ्ज देवताः ॥ ७ ॥ देव्युवाच ॥ ८ ॥ सा च ताच् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती हारोत्करैः ॥ उवाच तं मदोद्धृतमुख रागाकुलाक्षरम् ॥ ९ ॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ॥ विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥ ततः कुद्धा जगन्माता चिण्डिका पानमुत्तमम् ॥ पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ ११ ॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ॥ तथैव क्षोभयामास जैलोक्यं सचराचरम् ॥ १२ ॥ करेण च महासिंहं तं चकुर्ष जगर्ज च ॥ कर्षतस्तु करं देवी खद्गेन निरक्नन्तत ॥ १३ ॥ तत एवाञ्च पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ॥ तं खद्गचर्मणा सार्धे ततः सोऽभून्महागजः ॥ १४ ॥ ततः सिंहोऽभवत्सचो यावत्तस्याम्बिका शिरः ॥ छिनत्ति तावत्पुरुषः खङ्गपाणिरदृश्यत ॥ १५ ॥ सा क्षित्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम् ॥ तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामुधे ॥ १६ ॥ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम् ॥ दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्रधाय तदाऽकरोत् ॥ १७ ॥ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ॥ श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः वेगभ्रमणविश्चण्णा मही तस्य व्यशीर्यत् ॥ छाङ्गूछेनाहृतश्चाब्धः प्रावयामास सर्वतः ॥ १९ ॥ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्ण महीतलः ॥ शृङ्गाभ्यां पर्वतानुचांश्चिक्षेप च ननाद् च ॥ २० ॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ॥ सिंहं इन्तुं महादेव्याः कोपं चके ततोऽम्बिका ॥ २१ ॥ वेगेन कांश्चिदपरात्रादेन श्रमणेन च ॥ निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूतछे ॥ २२ ॥ कांश्चि चुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथाऽपरान् ॥ लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छूङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ २३ ॥ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषा सुरः ॥ माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥ २४ ॥ बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः ॥ दुर्धरं दुर्भुखं चोभौ शरै

बाणैस्तद्पि साऽिच्छनत् ॥३२॥ सोऽिप शक्तिं सुमोचाथ देव्यास्तामिष्विका द्वतम् ॥ हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥ ॥ ३३ ॥ इते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चसूपतौ ॥ आजगाम गजारूढश्चामरिह्मद्शाद्नः ॥ ३४ ॥ हट्घा तदापतच्छूलं देवी शूल ममुञ्चत ॥ तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥ ३५ ॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ॥ जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बिमवाम्बरात् ॥ ३६ ॥ तस्याः खङ्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ॥ ततो जयाह शूलं स कोपाद्रुणलोचनः ॥ ३७ ॥ सिंह्माहृत्य खङ्गेन तीक्ष्णधारेण सूर्धीन ॥ आजधान भुजे सन्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ३८ ॥ स च्छित्रधन्वा विरयो हताश्रो ह्तसार्थिः ॥ अभ्यधावत तां देवीं खङ्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ३९ ॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छितम् ॥ विद्याध चैव गात्रेषु च्छिन्नधन्वानमाञ्चगैः ॥ ४० ॥ तस्य च्छित्वा ततो देवी छीछयैव शरीत्करान् ॥ जघान तुरगान् वाणैर्यन्तारं चैव वाजि नाम् ॥४३॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ४२ ॥ निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ॥ सेनानीश्रिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धमथाम्बिकाम् ॥ ४३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४४ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिक मन्व न्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथाऽसुरैः ॥ यथेषां तुष्टुवुर्देवाः प्राध्यायः ॥ ३ ॥ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथाऽसुरैः ॥ यथेषां तुष्टुवुर्देवाः प्राध्यायः ॥ अधिका विचिन्वाते ॥ २ ॥ क्षणेन प्राध्यायः ॥ श्रारीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वाते ॥ २ ॥ क्षणेन

उपा.स्त. ३ दुर्गी. अ० ११८

तन्महासैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका ॥ निन्ये क्षयं यथा विह्नस्तृणदाह्महाचयम् ॥ ३ ॥ ज्ञोणितौचा महानद्यः सद्यस्तत्र विसुस्रुवुः ॥ मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥ ४ ॥ पातितै रथनागाश्वरसुरैश्च वसुन्धरा ॥ अगम्या साऽभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥ ॥ ५ ॥ कबन्धारिछन्नशिरसः खङ्ग शत्त्र यत्राभूत्स महारणः ॥ ॥ ५ ॥ कबन्धारिछन्नशिरसः खङ्ग शत्त्र या युगुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ॥ ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ७॥ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः ॥ छिन्नेऽपि चान्ये शिरिस पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ८ ॥ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ॥ विच्छित्रजङ्घारूत्वपरे पेतुरुव्यी महासुराः ॥ ९॥ सेनानुकारिणः प्राणान्मुमुचुम्निद्शार्दनाः ॥ केषांचिद्वाह्विङ्घन्नािइछन्नप्रीवास्तथाऽपरे ॥ १० ॥ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वश्नसि ॥ निरन्तराः शरीषेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ११ ॥ विपोथिता निपातेन गद्या भुवि शेरते ॥ वेमुश्च केचिद्रधिरं मुस छेन भुशं इताः ॥ १२ ॥ असुरान्भुवि पाशेन बद्धा चान्यानकर्षयत् ॥ केचिद्धिधा कृतास्तीक्ष्णैः खङ्गपातैस्तथाऽपरे ॥ १३ ॥ खङ्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ॥ पातयामास चैवान्यान्वण्टास्वनविमोहितान् ॥ तस्मिन्युद्धमहोत्सवे ॥ ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ १५ ॥ नाज्ञयन्तोऽसुरगणान्देवीज्ञक्तयुपच्चंहिताः अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्कांस्तथाऽपरे ॥ १६ ॥ त एव सद्यः संभूता गणाः शतसहस्रशः ॥ युयुधुस्ते परशुभिभिन्दिपाछासि १७ ॥ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताञ्चानः ॥ निश्वासान्सुसुचे यांश्र युध्यमाना रणेऽम्बिका मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ॥ सोऽपि कुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ १९ ॥ शस्त्रास्त्रवर्षिणी ॥ अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुर्राषिभिः ॥ २० ॥ देवीं खङ्गप्रहारैस्तु ते तां इन्तुं प्रचक्रमुः ॥ साऽपि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥२१ ॥ युयुधुः संयुगे देव्याः खङ्गैः पर्श्चपट्टिशैः ॥ केचिच चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथाऽपरे ॥ २२ ॥ इयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः ॥ तोमरैर्भिन्दिपाछैश्र शक्तिभिर्धुसछैस्तथा ॥ २३ ॥ युयुधुः

ब.ज्ज्यो र्ण. असंयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ॥ कोटिकोटिसहस्रेस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ २८ ॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ॥ अन्ये च तत्रायुत्रशो रथनागह्यैर्वृताः ॥ २५ ॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मित्रयुष्यत ॥ विडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशाद्धि रथायुतेः ॥ २६ ॥ अयुतानां शतेः षद्भिर्वाष्कलो युयुधे रणे ॥ गजवाजिसहस्रोधेरनेकैः परिवारितः ॥ २७ ॥ अयुष्यतायु वितानां च सहस्रेण महाहुनः ॥ पञ्चाशाद्धिश्च नियुत्तेरसिलोमा महासुरः ॥ २८ ॥ युयुधे चामरश्चान्येश्चतुरङ्गवलान्वितः ॥ रथाना मयुतेः षद्भिरुद्याख्यो महासुरः ॥२९॥ शस्त्रास्त्रेर्वहृषा मुक्तेरादीपितद्गिन्तरम् ॥ महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ३० ॥ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद्याप्य संस्थिताम् ॥ ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३१ ॥ पादाकान्त्या नतभुवं किरीटा छिखिताम्बराम् ॥ क्षोभिताशेषपातालां धनुज्यानिःस्वनेन ताम् ॥ ३२ ॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषरसुरैवृतः ॥ स ददशं ततो देवी व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ ३३ ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ॥ आः किमेतदिति कोघादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३४ ॥ तुष्ट्वर्भुनयश्चेनां भिकतम्रात्मसूर्तयः ॥ दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ ३५ ॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः॥ जयोति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ ३६ ॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ॥ चुक्षुमुः सकला लोकाः समु द्राश्च चकम्पिरे ॥ ३७ ॥ संमानिता ननादोच्चैः साहुह्यसं मुहुर्भुहुः ॥ तस्या नादेन घोरेण कृतस्रमापूरितं नभः ॥ ३८ ॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ॥ अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधिरूतथा ॥ ३९ ॥ दुद्दावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ ४० ॥ अद्दुज्जलिधस्तस्यै पङ्कां चातिशोभनम् ॥ हिमवान्वाहनं सिंहं रत्नानि विवि धानि च ॥ ४१ ॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाऽभेद्यं च दंशनम् ॥ अम्लानपङ्कर्जां मालां शिरस्युरित चापराम् ॥ ४२ ॥ अङ्क रुपिकरत्नानि समस्तास्वङ्करीषु च ॥ विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मरुम् ॥ ४३ ॥ अर्धचन्द्रं तथा शुश्रं केयूरान्सर्वबाहुषु ॥ वृष्ठुरौ विमरो तद्रद्रेवेयकमनुत्तमम्॥४४॥क्षीरोदश्चामरुं हारमजरे च तथाऽम्बरे ॥ चूडामणि तथा दिव्यं कुण्डरुं कटकानि च ॥४५॥ ॥

समस्तराम्कूपेषु निजरइमीन्दिवाकरः ॥ कालश्च दत्तवान् खद्गं तत्त्याश्चर्म च निर्मलम् ॥ ४६ ॥ कालदण्डाद्यमो दण्डं ॥ प्रजापतिश्राक्षमालां ददौ त्रंह्मा कमण्डलुम् ॥ ४७॥ वत्रमिन्द्रः समुत्पाटच कुलिज्ञादमराधिपः तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात् ॥ ४८ ॥ शङ्कं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ॥ मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथे षुधी ॥ ४९ ॥ शूछं शूछाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ॥ चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाटच स्वचकतः ॥ ५० ॥ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ॥ तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥ ५१ ॥ भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः च ॥ अन्येषां चैव देवानां संभवस्तेजसां शिवा ॥ ५२ ॥ तस्यास्तु दन्ताः संभूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥ नयनत्रितयं जज्ञो तथा पावकतेजसा ॥ ५३ ॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तद्ङुल्योऽर्कतेजसा ॥ वसूनां च कराङ्जल्यः कौबरेण च नासिका ॥ ५४ ॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ॥ वारुणेन च जङ्घोह्य नितम्बस्तेजसा भ्रुवः ॥ ५५ ॥ यद्भूच्छांभवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ॥ याम्येन चाभवन्केशा बाह्वो विष्णुतेजसा ॥ ५६ ॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ॥ एकस्थं तद्भुन्नारी व्याप्तलोक त्रयं त्विषा ॥ ५७ ॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम् ॥ दृह्शुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ॥ निर्गतं सुमहत्तेजस्तचैक्यं समगच्छत् ॥ ५९ ॥ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चिक्रणो वदनात्ततः ॥ निश्च काम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥ ६० ॥ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ॥ चकार कोपं शंभुश्र भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ॥ ६१ ॥ एतद्रः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् ॥ शरणं च प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ६२ ॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भ्रवि ॥ विचरान्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ६३ ॥ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरूणस्य च चाधिकारान्स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६४ ॥ यथा वृत्तं तयोस्तद्धन्महिषासुरचेष्टितम् ॥ त्रिद्शाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्त रम् ॥ ६५ ॥ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ६६ ॥ तत्रासुरैर्महावीर्थेर्देव

वृ.ज्ज्यो.णे. धर्मस्कंघ ८ ॥२१६॥

सैन्यं पराजितम् ॥ जित्वा च सकछान्देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ६७ ॥ देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमन्दरातं पुरा ॥ महिषेऽसुराणा क्षे मधिपे देवानां च पुरंदरे ॥ ६८ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६९ ॥ श्लोंकैर्ध्यात्वा जपेत् ॥ सर्वदेवमयीमीशाम् ॥ १ ॥ शक्तिर्दण्ड० ॥ २ ॥ ॥ अक्षमालाम् ।। ३ ॥ अष्टाद्श् ।। ४ ॥ सुचित्रज्ञ ॥ ५ ॥ श्वेतानना ।। ६ ॥ मध्यमचिर्त्रस्य अच्युतात्मा सुमेधा भगवान् ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः महालक्ष्मिदिनता शाकंभरी शक्तिः दुर्गा बीजं वायुरुतत्त्वं पूर्वविद्विनियोगः ॥ माया हीं बीजेन पदङ्गः ॥ सर्वदेव शरीरेभ्यो ।। ७ ॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ।। प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ १ ॥ तथेत्युक्त्वा भगवता ज्ञाङ्कचक्रगदा भृता ।। कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ २ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ३ ॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान्कमलेक्षणः ॥ आवां जिह न यत्रोवीं सिळिलेन परिप्लुता ॥ ४ ॥ विश्वताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगव ॥ ५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ६ न्येन वरेणात्र एताविद्ध वृतं मम ॥ ७ ॥ भवेतामद्य मे तुष्टी मम वध्यावुभाविष ॥ ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ९ ॥ वरोऽस्मत्तो त्रियतामिति केशवम् ॥ १० ॥ पञ्चवर्षसङ्खाणि बाहुप्रहरणो विभुः ॥ तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ ११ ॥ कोधरक्तेक्षणी इन्तुं ब्रह्माणं जिनतोद्यमी ॥ समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् इरिः ॥ १२ ॥ एकार्णवे हि शयनात्ततः स दहरों च तौ ॥ मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्थपराक्रमौ ॥ १३ ॥ निर्गम्य दुर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ॥ उत्तस्थौ च जग त्राथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ १४ ॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥ नेत्रास्यनासिकाबाहुहृद्येभ्यस्तथोरसः ॥ १५ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ १६ ॥ ऋषिरुवाच ॥ १७ ॥ बोधश्च क्रियतामस्य इन्तुमेती महासुरी ॥ १८ ॥ मोह यैतो दुराधर्षावसुरो मधुकेटभौ ॥ प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो छचु ॥ १९ ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्ति मान भवेत ॥ सा त्वमित्थंप्रभावैः स्वैरुद्रिवि संस्तुता ॥ २० ॥ सोऽपि निद्रावद्यं नीतः करूत्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ विष्णुः

उपा.स्त. ३ दुर्गी. अ० १२८

॥२१६॥

शरीरमहणमहमीशान एवं च ॥ २१ ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं कि स्तूयसे तदा ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यति यो जगत् ॥ २२ ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ यच्च किंचित्कचिद्वस्तु सदसद्वाऽखिलात्मिक ॥ २३ ॥ शङ्किनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्द्री ॥ २४ ॥ रुजा प्रष्टिस्तथा तृष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ खिद्गनी श्रुलिनी घोरा गिद्नी चिक्रणी तथा ॥ २५ ॥ कालरात्रिमेहारात्रिमोहरात्रिश्च दारुणा ॥ त्वं श्रीस्त्वमी श्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिबेधलक्षणा ॥ २६ ॥ महामोहा भगवती महादेवी महासुरी ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ २७ ॥ तथा संहितिह्नपाउन्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ महाविद्या महामाया महामेघा महास्मृतिः ॥ २८ ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टी सृष्टिह्नपा त्वं स्थितिह्नपा च पालने ॥ २९ ॥ त्वमेव सा त्वं सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ ३० ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्धमात्रा स्थिता नित्या याऽनुचार्या विशेषतः ॥ ३१ ॥ त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषदकारः स्वरात्मिका ॥ ३२ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ३३ ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः॥ ३४ ॥ विबोधनार्थाय हरेईरिनेत्रकृतालयाम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ ३५ ॥ दृष्ट्वा तावसरी चोत्री प्रसुतं च जनार्दनम् ॥ तुष्टाव योगनिद्रां तामकायहृदयस्थितः ॥ ३६ ॥ विष्णुकर्णमलोद्भृतौ हन्तुं ब्रह्माणसुद्यतौ ॥ स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः॥ ३७॥ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान्त्रभुः॥ तदा द्वावसुरी चोरी विष्यातौ मधु कैटभी ॥ ३८ ॥ उत्पन्नति तदा लोके सा नित्याऽप्यभिधीयते ॥ योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ३९ ॥ तथाऽपि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्र्यतां मम ॥ देवानां कार्यसिद्धचर्थमाविभवति सा यदा ॥ ४० ॥ नित्यैव साजगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ॥ ४९ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ४२ ॥ तत्सर्वे श्रोतिमच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥४३॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कमीस्याश्च कि द्विज ॥ यत्स्व भावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्रवा ॥ ४४॥ भगवन्का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥४५॥ राजीवाच ॥४६॥ संसारबन्धहेतुश्र च्.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२१७॥

सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ४७ ॥ सेषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्तेईतुभूता सनातनी ॥ ४८ ॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छिति ॥ तया विसृज्यते विश्वं जगदेतचराचरम् ॥ ४९ ॥ महामाया हरेश्वेतत्तया संमोहाते जगत् ॥ ज्ञानिनामिषे केतांसि देवी भगवती हि सा ॥५०॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा ॥ तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ ५९ ॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेत किं न पश्यिस ॥ तथाऽपि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥ ५२ ॥ कणमोक्षादतान्मोहात्पीडचमानानिप क्षुधा ॥ मानुषा मनुजन्यात्र साभिलाषाः सुतान्त्रति ॥ ५३ ॥ मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥ ज्ञानेऽपि सति पर्येतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥५४॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ॥ ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥५५॥ केचिद्दिवा तथा रात्री प्राणिनस्तुल्यदृष्ट्यः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किंनु ते निह् केवलम् ॥ ५६ ॥ विषयाश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक् पृथक् ॥ दिवाऽन्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथाऽपरे ॥५७॥ ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥५८॥ ऋषिह्वाच ॥ ५९ । ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ ६० ॥ दृष्टदेषिऽपि विषये समत्वाकृष्टमानसौ ॥ तत्केनैतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनो स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाऽप्यति ॥ एवमेष तथाऽहं द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥ ६२ ॥ जानतोऽपि किमेतन्युनिसत्तम् ॥ अयं च निकृतः पुत्रैर्दारिर्भृत्येरुतयोज्झितः ॥ ६३ ॥ दुःखाय यन्मे मनसः गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्विखेष्वपि ॥ ६४ ॥ भगवंस्त्वामहं कथाः काश्चिचकतुर्वेइयपाधिवौ ॥ ६७ ॥ समाधिनीम वैइयोऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ॥ कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथाई तेन संविद्म् ॥ ६८ ॥ ततस्तौ सिहतौ वित्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ ६९ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ॥ ७० ॥ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्टुरम् ॥ ७९ ॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विग्रुणेष्वपि बन्धुषु ॥ तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥ ७२ ॥ पतिः स्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः ॥ किमतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ ७३ ॥

उपा.स्त. ३ दुर्गा.

किं करोमि न बभ्राति मम निष्दुरतां मनः ॥ यैः संत्यन्य पितृरूनेहं धनलुन्धैर्निराक्कतः ॥ ७४ ॥ एवमेतद्यथा प्राह भवानरूमद्गतं वचः ॥ ७५ ॥ वैश्य उवाच ॥ ७६ ॥ तेषु किं भवतः स्नेइमनुबन्नाति मानसम् ॥ ७७ ॥ यैर्निरस्तो भवाल्छुँ॰धैः पुत्रदारादिभि धनैः ॥ ७८ ॥ राजोवाच ॥ ७९ ॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥ ८० ॥ प्रवृत्ति स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः ॥ किं चु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं चु साम्प्रतम् ॥ ८३ ॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ॥ सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुश्लाकुश्लात्मिकाम् ॥ ८२ ॥ पुत्रदारिनिरस्तश्च धनलोभाद्साधुभिः ॥ विद्दीनः स्वजनैदीरैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥ ॥ ८३ ॥ समाधिनीम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ ८४ ॥ वैश्य उवाच ॥ ८५ ॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥ ॥ ८६ ॥ सञ्चोक इव करमात्त्वं दुर्मना इव छक्ष्यसे ॥ इत्याकर्ण्यं वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ ८७ ॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं दुदर्श सः ॥ स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽज्ञ कः ॥ ८८ ॥ संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यिति ॥ एतचा न्यच सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ ८९ ॥ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् ॥ असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥ ९० ॥ मम वैरिवशं यातः काच् भोगानुपल्रप्स्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसाद्धनभोजनैः ॥ ९० ॥ मद्भृत्यैस्तै रसद्वृत्तिर्धर्मतः पाल्यते न वा ॥ न जाने स प्रधानो मे शूर्हस्ती सदामदः ॥ ९२ ॥ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्ट्चेतनः ॥ मत्पूर्वैः पालितं पूर्वे मया हीनं पुरं हि तत् ॥ ९३ ॥ तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ॥ इतश्रेतश्र विचरंस्तिस्मिन् मुनिवराश्रमे ॥ ९४ ॥ स तत्राश्रममद्राक्षीद्विजवर्यस्य मेधसः ॥ प्रज्ञान्तश्वापदाकीर्णं मुनिज्ञाच्योपज्ञोभितम् ॥ ९५ ॥ ततो मृगया व्याजेन हतस्वाम्यः स भूपतिः ॥ एकाकी हयमारुह्म जगाम गहनं वनम् ॥ ९६ ॥ अमात्यैर्वेछिभिर्दुष्टैर्वेछस्य दुरात्मभिः ॥ कोशो बछं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ९७ ॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ॥ आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ९८ ॥ तस्य तैरभवद्यद्धमतिप्रबलदण्डिनः ॥ न्यूनैरि स तैर्युद्धे कोलाविष्वंसिभिर्जितः ॥ ९९ ॥ तस्य पालयतः

चृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२१८॥

सम्यक् प्रजाः प्रजानिवीरसात् ॥ बभूबुः ज्ञाजवो भूषाः कोलाविध्वंसिनस्तथा ॥ १००॥ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्व चैत्रवंशसमुद्भवः ॥ स्वरथो नाम राजाऽभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥ १०१ ॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिषः ॥ स बभूव महाभागः सावणिस्तनयो स्वे ॥ १०२ ॥ सावणिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निज्ञामय तदुत्पत्तिं विस्तराहृद्तो मम ॥ १०३ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ १०४ ॥ ३० नमश्चण्डिकाये॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावणिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकेटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १॥ १०४ ॥ १०० वर्षे । १०० इति श्रीह्॰ बृ॰ घ॰ ड॰ श्रीदुर्गोपासनाध्याये दुर्गासंहारपाठकमिनिह्नपणं नामाष्टपंचाशं प्रकरणम् ॥ ५८ ॥ अथ श्रीदुर्गा देवीगीता ॥ उक्तं च देवीभागवते सप्तमस्कन्धे एक्त्रिशेऽध्याये ॥ जनमेजय उवाच ॥ धराधराधीशमौलावाविरासीत्परं महः ॥ यदुक्तं भवता पूर्वे विस्तरात्तद्भदस्य मे ॥ १ ॥ को विरच्येत मतिमान्पिब छिक्तिकथामृतम् ॥ सुधां तु च्छुण्वतो भवेत् ॥ २ ॥ व्यास उवाच ॥ धन्योऽसि कृत्यकृत्योऽसि शिक्षितोऽसि महात्मभिः निर्व्यांजा भक्तिरस्ति ते ॥ ३ ॥ शृणु राजन्पुरा वृत्तं सतीदेहेऽभिभर्जिते ॥ भ्रान्तः शिवस्तु बभ्राम कचिद्देशे स्थिरोऽभवत् प्रपञ्चभानरिहतः समाधिगतमानसः ॥ ध्यायन्देवीरुवरूपं तु कालं निन्ये स आत्मवान् ॥ ६ ॥ सौभाग्यरिहतं सचराचरम् ॥ शक्तिहीनं जगत्सर्वे साब्धिद्वीपं सपर्वतम् ॥ ६ ॥ आनन्दः शुष्कतां यातः सर्वेषां हृद्यान्तरे ॥ उदासीनाः सर्वलोकाश्चिन्ताजर्जरचेतसः ॥ ७ ॥ सदा दुःखोद्धौ मन्ना रोगग्रस्तास्तद्।ऽभवन् ॥ ग्रहाणां देवतानां च वैपरीत्येन वर्तनम् ॥ ८॥ आधिभूताधिँदैवानां सत्यभावा नृपाभवन् ॥ अथास्मिन्नेव काले तु तारकाख्यो महासुरः ॥ ९ ॥ ब्रह्मद्त्त्वरो दैत्यो ॥ ८॥ आधिभूत॥घदवाना सत्यमाना नृपानपत्र ॥ जनारणजन नगण छ गारणारपान गर्गछ । इति काल्पितमृत्युः स देवदेवैर्महासुरः ॥ ऽभवेत्रेलोक्यनायकः ॥ शिवौरसस्तु यः पुत्रः स ते इन्ता भविष्यति ॥ १०॥ इति काल्पितमृत्युः स देवदेवैर्महासुरः ॥ शिवौरससुताभावाज्ञगर्ज च ननन्द च ॥ ११ ॥ तेन चोपद्धताः सर्वे स्वस्थानात्प्रच्युताः सुराः ॥ शिवौरससुताभावाज्ञिन्तामापु ईरत्ययाम् ॥ १२ ॥ नाङ्गना शंकरस्यास्ति कथं तत्सुतसंभवः ॥ अस्माकं भाग्यहीनानां कथं कार्यभविष्यति ॥१३॥ इति चिन्तातुराः

उपा.स्त.३ डगाँ.

सर्वे जम्मुर्वेकुण्ठमण्डले ॥ शशंसुईरिमेकान्ते स चोपायं जगाद इ ॥ १४ ॥ कुतिश्चन्तातुराः सर्वे कामकल्पद्धमा शिवा ॥ जागित भुवनेशानी मणिद्वीपाधिवासिनी ॥१५॥ अस्माकमनयादेव तदुपेक्षाऽस्ति नान्यथा ॥ शिक्षेवेयं जगन्मात्रा कृताऽस्मिच्छिक्षणाय च ॥ ॥ १६ ॥ छाछने ताडने मातुर्नाकारुण्यं यथाऽर्भके ॥ तद्भदेव जगन्मातुर्नियन्त्रया गुणदोषयोः ॥ १७ ॥ अपराधो भवत्येव तन यस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहते छोके केवछं मातरं विना ॥ १८ ॥ तस्माद्ययं पराम्बां तां शरणं यात मा चित्तवृत्त्या सा वः कार्यं विधास्यति ॥ १९ ॥ इत्यादिश्य सुरान्सर्वान्महाविष्णुः स्वजायया ॥ संयुतो निर्जगामाशु देवैः सह सुराधिपः ॥ २० ॥ आजगाम महाशैलं हिमवन्तं नगाधिपम् ॥ अभवंश्र सुराः सर्वे पुरश्चरणकर्मिणः ॥ २१ ॥ अम्बायज्ञविधानज्ञा अम्बायज्ञं च चिक्रेर ॥ तृतीयादिव्रतान्याञ्च चक्रः सर्वे सुरा नृप ॥ २२ ॥ केचित्समाधिनिष्णाताः केचित्रामपरायणाः त्स्कपराः केचित्रामपारायणोत्सुकाः ॥ २३ ॥ मन्त्रपारायणपराः केचित्कुच्छ्रादिकारिणः ॥ अन्तर्यागपराः यणाः ॥ २४ ॥ त्रञ्जेखयाऽपराः शक्तेः पूजां चक्रस्तन्द्रिताः ॥ इत्येवं बहुवर्षाणि काल्रोऽगाजनमेजय ॥ |मासीयनवम्यां च भृगोर्दिने ॥ प्रादुर्बभूव पुरतस्तन्महः श्रुतिबोधितम् ॥ २६ ॥ चतुर्दिश्च चतुर्वेदैर्मूर्तिमद्गिरभिष्टुतम् ॥ कोटिसूर्य प्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम् ॥२७ ॥ विद्युत्कोटिसमानाभमरूणं तत्परं महः॥ नैव चोर्घ्वन तिर्पक् च न मध्ये परिजयभत्॥ ॥२८॥ आद्यन्तरहितं तत्तु न हस्ताद्यङ्गसंयुतम् ॥ न च स्त्रीरूपमथवा न पुंरूपमथोभयम् ॥ २९ ॥ दीप्तया विधानं नेत्राणां तेषा भासीन्महीपते ॥ पुनश्च धैर्यमालम्ब्य यावत्ते दृहशुः सुराः ॥ ३० ॥ तावत्तदेव स्त्रीहृपेणाभाद्दिव्यं मनोहरम् ॥ अतीव रमणीयाङ्गी कुमारीं नवयौवनाम् ॥ ३१ ॥ उद्यत्पीनकुचद्वन्द्वनिन्दिताम्भोजकुड्मलाम् ॥ रणितकङ्किणिकाजालासिअन्मअरिमेखलाम् ॥ ३२ ॥ कनकाङ्गदेकयूर्यवेयकविभूषिताम् ॥ अनर्ध्यमणिसंभित्रगलबन्धविराजिताम् ॥३३॥ तनुकेतकसंराजन्नीलभ्रमरकुन्तलाम् ॥ नितम्ब बिम्बसुभगां रोमराजिविराजिताम् ॥३४॥ कर्पूरशकछोन्मिश्रताम्बूछपूरिताननाम् ॥ कनत्कनकताटङ्कविटङ्कवदनाम्बुजाम् ॥ ३५।

च ज्ज्यो.र्ण. धमस्कंध ८ ॥२१९॥

बिम्बाभरुछाटामायतभ्रुवम् ॥ रक्ताराविन्दनयनासुन्नसां मधुराधराम् ॥ ३६ ॥ कुन्द्कुड्मरुद्नतात्रां सुक्ताहारविराजिताम् ॥ ॥ ३७ ॥ मिक्कामारुतीमारुकिशपाशिवराजिताम् ॥ काश्मीरिबन्दुनिटिसं सिनीम् ॥ ३८ ॥ पाञ्चाङ्कश्वराभीतिचतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ॥ रक्तवह्मपरीधानां दाडिमीकुमुमप्रभाम् ॥ ३९ ॥ सर्वशृङ्कारवेपाढ्यां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वाशाप्रकां सर्वमातरं सर्वमोहिनीम् ॥ ४० ॥ प्रसाद्मुमुखीमम्बां मन्दिस्मतमुखाम्बुजाम् ॥ अव्याजकरुणा मूर्ति दृह्युः पुरतः मुराः ॥ ४९ ॥ दृष्ट्वा तां करुणामूर्ति प्रणेष्ठः सकलाः मुराः ॥ वक्तं नाज्ञक्तुवन्किचिद्वाष्पसंरुद्धनिःस्वनाः ॥ प्रमाश्रुलोचनाः तर्वे विलोकनपराः स्थिताः ॥ ४२ ॥ कथंचितस्थैर्यमालव्यय अक्तया चानत्कन्धराः ॥ प्रमाश्रपूर्णनयनास्तुष्टुवु र्जगद्मिवकाम्॥४३॥ देवा ऊचुः ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भदायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥४४॥ तामियवर्णो तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ॥ दुर्गो देवीं श्ररणसहं प्रपद्ये सुतरिस तरसे नमः नयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पश्चां वदन्ति ॥ सा नो मन्द्रेषसूर्जे दुहाना घेनुर्वागरमानुपसुष्टुतैतु वैष्णवीं स्कन्द्मातरम् ॥ सरस्वतीमदितिं दक्षद्वाहितरं नमामः पावनां ज्ञिवाम् ॥ ४७ ॥ महालक्ष्म्ये च विद्यहे सर्वज्ञकृत्ये च घीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ ४८ ॥ नमो विराट्स्वरूपिण्ये नमः सूत्रात्मसूत्ये ॥ नमोऽव्याकृतरूपिण्ये नमः श्रीब्रह्मसूत्ये ॥ ४९ ॥ य ज्ञानाजगद्भाति रज्जुसर्पस्रगादिवत् ॥ यज्ज्ञानाञ्चयमाप्रोति नुमस्तां भुवनेश्वरीम् ॥ ५०॥ नमस्तत्पद्छक्ष्यार्थी चिदेकरसरूपिणीम् ॥ तां वेदतात्पर्यभूमिकाम् ॥ ५१ ॥ पश्चकोज्ञातिरिक्तां तामवस्थात्रयसाक्षिणीम् ॥ जुमस्त्वंपद्रुक्ष्यार्थो प्रत्य गात्मस्वरूपिणीम् ॥५२॥ नमः प्रणवरूपायै नमो हींकारसूर्तये ॥ नानामन्त्रात्मिकायै ते करुणायै नमो नमः ॥५३॥ इति स्तुता तदा देवैर्मणिद्वीपाधिवासिनी ॥ प्राह वाचा मधुरया मत्तकोकिलनिःस्वना ॥५४॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वदन्तु विबुधाः कार्ययदर्थमिह संगताः ॥ वरदाऽहं सदा भक्तकामकल्पद्धमाऽस्मि च ॥ ५५ ॥ तिष्ठन्त्यां मिय का चिन्ता युष्माकं भक्तिज्ञालिनाम् ॥ समुद्धरामि मद्भक्त्या

उपा.स्त. ३ दुर्गाः

दुःखसंसारसागरात् ॥ ५६ ॥ इति प्रतिज्ञां मे सत्यां जानीथ विबुधोत्तमाः ॥ इति प्रेमाकुलां वाणीं श्रुत्वा संतुष्टमानसाः ॥५७॥ निर्भया निजरा राजन्तूचुर्दुःखं स्वकीयकम् ॥ देवा ऊचुः ॥ नाज्ञातं किंचिद्प्यत्र भवत्याऽस्ति जगत्रये ॥ ५८ ॥ सर्वज्ञया सर्वसाक्षि 🕺 रूपिण्या परमेश्वारे ॥ तारकेणासुरेन्द्रेण पीडिताः स्मो दिवानिशय ॥ ५९ ॥ शिवाङ्गजाद्धधस्तस्य निर्मितो ब्रह्मणा शिवे ॥ शिवा क्रि ङ्गना तु नैवास्ति जानासि त्वं महेश्वारे ॥ ६० ॥ सर्वज्ञपुरतः किंवा वक्तव्यं पामरेर्जनैः ॥ एतदुद्देशतः प्रोक्तमपरं तर्कयाम्बिके ॥ ६९ ॥ सर्वदा चरणाम्भोजे भक्तिः स्यात्तव निश्वला ॥ प्रार्थनीयमिदं मुख्यमपरं देहहेतवे ॥ ६२ ॥ इति तेषां वचः श्रुत्वा प्रोवाच परमेश्वरी ॥ मम शक्तिस्तु या गौरी भविष्यति हिमालये ॥ ६३ ॥ शिवाय सा प्रदेया स्यात्सा वः कार्य विधास्यति ॥ भक्तिर्मचरणाम्भोजे भूयाद्युष्माकमाद्रात् ॥ ६४ ॥ हिमालयो हि यनसा मामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥ ततस्तस्य गृहे मम प्रियकरं मतम् ॥ ६५ ॥ व्यास उवाच ॥ हिमालयोऽपि तच्छुत्वाऽत्यनुग्रहकरं वचः ॥ बाष्पैः संरुद्धकण्ठाक्षो महाराज्ञीं वचो ऽत्रवीत् ॥ ६६ ॥ महत्तरं तं कुरुषे यस्यानुग्रहमिच्छिस ॥ नोचेत्काहं जडः स्थाणुः क त्वं सचित्स्वरूपिणी जन्मरातैस्त्वित्पतृत्वं ममानघे ॥ अश्वमेधादिपुण्यैर्वा पुण्येर्वा तत्समाधिजैः ॥ ६८ ॥ अद्य प्रपश्चे कीर्तिः स्याजगन्माता सुता ऽभवत् ॥ अहो हिमालयस्यास्य धन्योऽसौ भाग्यवानिति ॥ ६९ ॥ यस्यास्तु जठरे सन्ति ब्रह्माण्डानां च कोटयः ॥ सैव यस्य सुता जाता को वा स्यात्तत्समो सुवि ॥ ७० ॥ न जानेऽरूमित्विष्णां किं स्थानं स्यान्निर्मितं परम् ॥ एताहशानां वासाय येषां वंशेऽस्ति माहशः॥ ७१ ॥ इदं यथा च दत्तं मे कृपया प्रेमपूर्णया ॥ सर्ववेदान्तसिद्धं च त्वद्रूपं ब्रूहि से तथा ॥ ७२ ॥ योगं च भक्तिसहितं ज्ञानं च श्रुतिसंमतम् ॥ वद्र्व परमेज्ञानि त्वमेवाहं यतो भवे ॥ ७३॥ व्यास उवाच ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रसन्नमुखपङ्कजा ॥ वक्तमारभताम्बा सा रहस्यं श्रुतिगृहितम् ॥ ७४ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां प्रथमोऽध्यायः ॥ वाच ॥ शृण्वन्तु निर्जराः सर्वे व्याहरन्त्या वचो मम ॥ यस्य श्रवणमात्रेण मद्भपत्वं प्रपद्यते ॥ ७६ ॥ अहमेवास

वृ.ज्ज्यो.णं. धर्मस्कंब ८ ॥२२०॥

किंचित्रगाधिप ॥ तद्दात्मरूपं चित्संवित्परब्रह्मेकनामकम् ॥ ७६ ॥ अप्रतक्यमनिर्देश्यमनौपम्यमनामयम् ॥ तस्य काचित्स्वतः 💏 सिद्धा शिक्तमीयेति विश्वता ॥ ७७ ॥ न सती सा नासती सा नोभयात्मा विरोधतः ॥ एतद्विलक्षणा काचिद्रस्तुभूताऽस्ति सर्वदा ॥ ॥ ७८ ॥ पावकस्योष्णतेवयमुष्णांशोरिव दीधितिः ॥ चन्द्रस्य चिन्द्रकेवयं समयं सहजा ध्रवा ॥ ७९ ॥ तस्यां कर्माणि जीवानां जीवाः कालश्च संचरे ॥ अभेदेन विलीनाः स्युः सुषुप्तौ व्यवहारवत् ॥ ८० ॥ स्वशक्तेश्च समायोगादहं बीजात्मतां गता ॥ स्वाधारावरणा त्तस्या दोषत्वं च समागतम् ॥ ८१ ॥ चैतन्यस्य समायोगान्निमित्तत्वं च कथ्यते ॥ प्रपञ्चपरिणामाच ॥ ८२ ॥ केचित्तां तप इत्याहुस्तमः केचिज्जडं परे ॥ ज्ञानं मायां प्रधानं च प्रकृतिं शिक्तिमप्यजाम् ॥ ८३ ॥ प्राहुः शैवशास्त्रविशारदाः ॥ अविद्यामितरे प्राहुर्वेदतत्त्वार्थचिन्तकाः ॥ ८४ ॥ एवं नानाविधानि स्युर्नामानि निगमादिषु तस्या जडत्वं हर्यत्वाज्ज्ञाननाञ्चात्ततोऽसती ॥ ८५ ॥ चैतन्यस्य न हर्यत्वं हर्यत्वे जडमेव तत् ॥ स्वप्रकाशं च चैतन्यं न परेण प्रकाशितम् ॥ ८६ ॥ अनवस्थादोषसत्त्वान्न स्वेनापि प्रकाशितम् ॥ कर्मकर्तृविरोधः स्यात्तस्मात्तद्दीपवत्स्वयम् ॥ ८७ प्रकाशमानमन्येषां भासकं विद्धि पर्वत ॥ अत एव च नित्यत्वं सिद्धं संवित्तनोर्मम ॥ ८८ ॥ जाय्रत्स्वप्रसुष्टव्यादौ हर्यस्य व्यभि चारतः ॥ संविदो व्यभिचारश्च नानुभूतोऽस्ति किहिचित् ॥ ८९ ॥ यदि तस्याप्यनुभवस्तर्द्धयं येन साक्षिणा ॥ अनुभूतः ॥ ९० ॥ अत एव च नित्यत्वं प्रोक्तं सच्छास्रकोविदैः ॥ आनन्दह्रपता चास्याः मा न भूवं हि भूयासमिति प्रेमात्मिनि स्थितम् ॥ सर्वस्यान्यस्य मिथ्यात्वाद्सङ्गत्वं स्फुटं मम एव मता सम ॥ तच्च ज्ञानं नात्मधर्मो धर्मत्वे जङताऽऽत्मनः ॥ ९३ ॥ ज्ञानस्य जङशेषत्वं न दृष्टं न तथा नास्ति चितश्चित्र हि भिद्यते ॥ ९४ ॥ तस्मादात्मा ज्ञानरूपः सुखरूपश्च सर्वदा ॥ सत्यः पूर्णोऽप्यसङ्गश्च द्वैतजालविव र्जितः ॥ ९५ ॥ स पुनः कामकर्मादियुक्तया स्वीयमायया ॥ पूर्वानुभवसंस्कारात्कालकर्मविपाकतः ॥ ९६ ॥ अविवेकाच

उषा स्त. ३ हुगौ. अ० ११८

तत्त्वस्य सिसृक्षावान्त्रजायते ॥ अबुद्धपूर्वः सर्वोऽयं कथितस्ते नगाधिप ॥ ९७ ॥ एतद्धि यन्यया प्रोक्तं यम रूपमुखी किकम् ॥ अन्याकृतं तद्व्यक्तं मायाज्ञबलामित्यपि ॥ ९८ ॥ प्रोच्यते सर्वज्ञास्त्रेषु सर्वकारणकारणम् सिचदानन्दिवग्रहम् ॥ ९९ ॥ सर्वकर्भयनीभूतमिच्छाज्ञानिकयाश्रयम् ॥ हीकारमन्त्रवाच्यं तदादितत्त्वं १००॥ तस्माद्काञ्च उत्पन्नः शब्दतन्मात्ररूपकः ॥ भवेत्स्पर्शात्मको वायुस्तेजोरूपात्मकं रसात्मकं पश्चात्ततो गन्धात्मिका धरा ॥ शब्दैकगुण आकाशो वायुः स्पर्शरवान्वितः ॥ १०२ ॥ शब्दस्पर्शरूपगुणं तेज इत्युच्यते ॥ शब्दस्पर्शस्त्रपरसेरापो वेदगुणाः स्मृताः ॥ १०३ ॥ शब्दस्पर्शस्त्रपरसगन्धेः पश्चगुणा घरा ॥ तेभ्योऽभवन्महतसूत्रं यिछिङं प्ररिचक्षते ॥ १०४ ॥ सर्वात्मकं तत्संत्रोक्तं सूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः ॥ अव्यक्तं कारणो देहः स चोक्तः पूर्वमेव हि ॥ १०५ ॥ यस्मिन जगद्बीजरूपं स्थितं छिङ्गोद्रवो यतः ॥ ततः स्थूछानि भूतानि पञ्चीकरणमार्गतः ॥ १०६ ॥ पञ्चसंख्यानि जायन्ते तत्प्रकार स्त्वथोच्यते ॥ पूर्वोक्तानि च भूतानि प्रत्येकं विभजेद्विधा ॥ १०७ ॥ एकैकं भागमेकस्य चतुर्धा विभजेद्विरे योजनात्पञ्च पञ्च ते ॥ १०८ ॥ तत्कार्यं च विराइदेहः स्थूलदेहोऽयमात्मनः ॥ पञ्चभूतस्थसत्त्वांहोः श्रोत्रादीनां समुद्रवः ॥ १०९ ॥ ज्ञानेन्द्रियाणां शैळेन्द्र प्रत्येकं मिळितैस्तु तैः ॥ अन्तःकरणमेकं स्याद् वृत्तिभेदाचतुर्विधम् ॥ ११० ॥ यदा तु संकरपविकरपक्रत्यं तदा भवेत्तन्मन इत्यभिरूयम् ॥ स्याद् बुद्धिसंज्ञं च यदा प्रवेत्ति सुनिश्चितं संशयहीनरूपम् ॥ १११ ॥ अनुसंघानरूपं तिच्चत्तं च परिकीर्तितम् ॥ अहंकृत्याऽऽत्मवृत्त्या तु तदहंकारतां गतम् ॥ ११२ ॥ तेषां रजोंऽशैर्जातानि क्रमात्कर्मेन्द्रियाणि च ॥ प्रत्येकं मिलितैस्तैस्तु प्राणो भवति पञ्चधा ॥ ११३ ॥ हृदि प्राणो गुदेऽपानो नाभिस्थस्तु समानकः ॥ कण्ठदेशेऽप्युदानः स्याद्यानः सर्व श्रीरगः ॥ ११४ ॥ ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्चेव पञ्च कर्मेन्द्रियाणि च ॥ प्राणादिपञ्चकं चैव धिया च सहितं मनः ॥ ११५ ॥ एतत्प्रक्ष्म रीरं स्यान्मम छिङ्गं यदुच्यते ॥ तत्र या प्रकृतिः प्रोक्ता सा राजन् ।द्विविधा स्मृता ॥ ११६ ॥ सत्त्वात्मिका तु माया स्य

चृ.ज्ज्यो र्ण ।धर्मस्कंव ८ ॥२२१॥

द्विद्या गुणमिश्रिता ॥ स्वाश्रयं या तु संरक्षेत्सा मायेति निगद्यते ॥ ११७ ॥ तस्यां यत्प्रतिबिम्बं स्याद्धिम्बभूतस्य चेशितुः ॥ स ईश्वरः समाख्यातः स्वाश्रयज्ञानवान्परः ॥ ११८ ॥ सर्वज्ञः सर्वकर्ता च सर्वानुग्रहकारकः ॥ अविद्यायां तु यत्किचित्प्रतिबिम्बं नगाधिप ॥ ११९ ॥ तदेव जीवसंज्ञं स्यात्सर्वदुःखाश्रयं पुनः ॥ द्वयोरपीह संप्रोक्तं देहत्रयमविद्यया ॥ १२० ॥ देहत्रयाभिमाना चाप्यभूत्रामत्रयं पुनः ॥ प्राज्ञस्तु कारणात्मा स्यातसूक्ष्मदेही तु तैजसः ॥ १२१ ॥ स्थू छदेही तु विश्वाख्यस्त्रिविधः परिकीर्तितः एवमीशोऽपि संप्रोक्त ईशसूत्रविरादपदैः ॥ १२२ ॥ प्रथमो व्यष्टिरूपस्तु समष्टचात्माऽपरः स्मृतः ॥ स हि सर्वेश्वरः साक्षाजीवा नुयहकाम्यया ॥ १२३ ॥ करोति विविधं विश्वं नानाभोगाश्रयं पुनः ॥ मच्छिक्तिप्रेरितो नित्यं मिय राजन् प्रकल्पितः ॥ १२४ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ देव्युवाच ॥ मन्मायाज्ञाक्तिसंक्छप्तं जगत्सर्वे चराचरम् ॥ साऽपि मत्तः पृथङ् माया प्रमार्थतः ॥ १२५ ॥ व्यवहारहज्ञा सेयं विद्या मायेति विश्वता ॥ तत्त्वहृष्ट्या तु नास्त्येव तत्त्वमेवास्ति केवलम् ॥ १२६ ॥ साऽहं सर्वे जगत्सृङ्घा तद्न्तः प्रविज्ञाम्यहम् ॥ मायाकर्मादिसहिता गिरे प्राणपुरःसरा॥ १२७॥ छोकान्तरगतिनों चेत्कथं स्यादिति हेतुना ॥ यथा यथा भवन्त्येव मायाभेदास्तथा तथा ॥१२८॥ उपाधिभेदाद्भिन्नाऽहं घटाकाज्ञादयो यथा वस्तूनि भासयन्भास्करः सद्। ॥ १२९ ॥ न दुष्यति तथैवाई दोषैर्छिता कद्।ऽपि न ॥ मयि बुद्धचादिकर्तृत्वमध्यस्यैवापरे जनाः ॥ १३० ॥ वदन्ति चात्मा कर्मोति विमूढा न सुबुद्धयः ॥ अज्ञानभेदतस्तद्दन्मायाया भेदतस्तथा ॥ १३१ ॥ जीवेश्वर विभागश्च कल्पितो माययैव तु ।। घटाकाशमहाकाशविभागः कल्पितो यथा ॥१३२॥ तथैव कल्पितो भेदो जीवात्मपरमात्मनोः ॥ यथा जीवबहुत्वं च मायया न स्वभावतः ॥ १३३ ॥ तथेश्वरबहुत्वं च मायया न स्वभावतः ॥ देहेन्द्रियादिसंघातवासनाभेदभेदिता ॥ १३४॥ अविद्या जीवभेद्र्य हेतोर्नान्यः प्रकीर्तितः ॥ गुणानां वासनाभेद्भोदिता या धराधर ॥ १३५॥ माया सा परभेद्र्य हेतुर्नान्यः कदाचन ॥ मिय सर्वभिदं प्रोतमोतं च धरणीधर ॥ १३६ ॥ ईश्वरोऽहं च सूत्रात्मा विराडात्माऽहमस्मि

उपा.स्त. १ खुर्गी. य॰ १३८

11/1/10

विष्णुरुद्दी च गौरी ब्राह्मी च वैष्णवी ॥ १३७ ॥ सूर्योऽहं तारकाश्चाहं तारकेशस्तथाऽसम्यहम् ॥ पशुपक्षिस्वरूपाऽहं चाण्डालोऽहं च तस्करः॥ १३८॥ व्याधोऽहं क्राकमीऽहं सत्कमीऽहं महाजनः ॥ स्त्रीपुंनपुंसकाकारोऽप्यहमेव न संश्यः॥ ॥ १३९ ॥ यच किचित्कचिद्रस्तु दृश्यते श्रूयतेऽपि वा ॥ अन्तर्बिह्श्च तत्सर्वे व्याप्याहं सर्वदा स्थिता ॥ १४० त दस्ति मया त्यकं वस्तु किंचिच्याचरम् ॥ यद्यस्ति चेत्तच्छून्यं स्याद्रन्ध्यापुत्रोपमं हि तत् ॥ १४१ ॥ मालाभेदैरेका विभाति हि ॥ तथैवेज्ञादिरूपेण भाम्यहं नात्र संज्ञयः ॥ १४२ ॥ अधिष्ठानातिरेकेण तस्मान्मत्सत्तयैवैतत्सत्तावन्नान्यथा भवेत् ॥ १४३ ॥ हिमालय उवाच ॥ यथा वदासे देवेशि समष्ट्यात्मवपुस्तिवदम् ॥ द्रष्टुमिच्छामि यदि देवि कृपा मयि ॥ १४४ ॥ व्यास उवाच ॥ इति तस्य वचः श्रुत्वा सर्वे देवाः सविष्णवः॥ ननन्दुर्मुदितात्मानः पूजयन्तश्च तद्भचः ॥ १४५ ॥ अथ देवमतं ज्ञात्वा भक्तकामदुषा शिवा ॥ अद्रश्यित्रजं रूपं भक्त कामप्रपूरिणी ॥ १४६ ॥ अप्रयंस्ते महादेव्या विराङ्क्षपं परात्परम् ॥ द्योर्मस्तकं भवेद्यस्य चन्द्रसूर्यौ च चक्षुषी । ॥ १४७॥ दि्शः श्रोत्रे वचो वेदाः प्राणो वायुः प्रकीर्तितः॥ विश्वं हृद्यमित्याहुः पृथिवी जघनं स्मृतम् ॥ १४८॥ नभस्तछं नाभिसरो ज्योतिश्रकमुरःस्थलम् ॥ महलौंकस्तु श्रीवा स्याजनोलोको मुखं स्मृतम् ॥ १४९ ॥ तपोलोको रराटिस्तु सत्यलोका द्धः स्थितः ॥ इन्द्रादयो बाह्वः स्युः ज्ञब्दः श्रोत्रं महेशितुः ॥ १५० ॥ नासत्यदस्रौ नासे स्तो गन्धो त्राणं स्मृतो बुधैः ॥ सस मित्रिः समाख्यातो दिवारात्री च पक्ष्मणी ॥ १५१ ॥ ब्रह्मस्थानं भ्रूविजृम्भोऽप्यापस्तालुः प्रकीर्तिताः ॥ रसो यमो दृंष्टाः प्रकीर्तिताः ॥ १५२ ॥ दृन्ताः स्नेहकला यस्य हासो माया प्रकीर्तिता ॥ स्वर्गस्त्वपाङ्गमोक्षः स्याद्वीडोधोधो महे शितुः ॥ १५३ ॥ लोभः स्याद्धरोष्टोऽस्य धर्ममार्गस्तु पृष्ठभूः ॥ प्रजापतिश्च मेद्रं स्याद्यः स्रष्टा जगतीतले ॥ १५४ ॥ कुक्षिः समुद्रा गिरयोऽस्थीनि देव्या महेशितुः ॥ नद्यो नाडचः समाख्याता वृक्षाः केशाः प्रकीर्तिताः ॥ १५५ ॥ कीमारयीवनजरावय

च .ज्ज्यो.णं. धर्मस्कंघ ८ ॥२२२॥

ऽस्य गतिरुत्तमा ॥ बळाहकारनु केशाः स्युः सन्ध्ये ते वाससी विभो ॥ १५६ ॥ राजन् श्रीजगदम्बायाश्चन्द्रमास्तु मनः समृतम् ॥ विज्ञानशक्तिस्तु हरी रुद्रोऽन्तःकरणं स्वृतम् ॥ १५७॥ अश्वादिजातयः सर्वाः श्रोणिदेशे स्थिता विभो ॥ अतलादिमहालोकाः कटचधोभागतां गताः ॥ १५८॥ एतादृशं महारूपं दृह्युः सुरपुङ्गवाः ॥ ज्वालामालासहस्राद्यं लेलिहानं च जिह्नया ॥ १५९ ॥ अ दृष्टाकटकटारावं वमन्तं वाह्निमक्षिभिः ॥ नानायुधधरं वीरं ब्रह्मक्षत्रीद्नं च यत् ॥ १६० ॥ सहस्रशिष्नयनं सहस्रचरणं तथा ॥ अ कोटिसूर्यप्रतीकाइां विद्युत्कोटिसमप्रभम् ॥ १६१ ॥ भयंकरं महाघोरं हृदक्षणोस्त्रासकारकम् ॥ दृहशुस्ते सुराः सर्वे हाहाकारं च चिकरे ॥ १६२ ॥ विकम्पमानहृद्या मूर्च्छामापुर्दुरत्ययाम् ॥ स्मरणं च गतं तेषां जगद्म्बेयमित्यपि ॥ १६३ ॥ अथ ते ये स्थिता वेदाश्चतुर्दिक्षु महाविभो ॥ बोधयामासुरत्युत्रमूच्छीतो सूर्चिछतान् सुरान् ॥ १६४ ॥ अथ ते धैर्यमालम्ब्य लब्बा च श्वतिस्तमाम् ॥ प्रेमाश्चपूर्णनयना रुद्धकण्ठास्तु निर्जराः ॥ १६५ ॥ बाष्पगद्गद्या वाचा स्तोतुं समुपचितरे ॥ देवा उचुः ॥ अपराधं क्षमस्वाम्ब पाहि दीनांरूत्वदुद्भवान् ॥ १६६ ॥ कोपं संहर देवेशि सभया रूपदर्शनात् ॥ का ते स्तुतिः प्रकर्तव्या पामरैर्निर्जरीरह स्वस्याप्यज्ञेय एवासौ यावान्यश्च स्वविक्रमः ॥ तद्वीग् जायमानानां कथं स विषयो भवेत् ॥ १६८ ॥ नमस्ते भुवनेशानि नमस्ते प्रणवात्मिके ॥ सर्ववेदान्तसंसिद्धे नमो हींकारसूर्तये ॥ १६९ ॥ यस्माद्शिः समुत्पन्नो यस्मात्सूर्यश्च चन्द्रमाः ॥ यस्मादोष धयः सर्वास्तरमे सर्वात्मने नमः ॥ १७० ॥ यस्माञ्च देवाः संभूताः साध्याः पक्षिण एव च ॥ पञ्चवश्च मनुष्याश्च तस्मै सर्वा त्मने नमः ॥ १७१ ॥ प्राणापानौ ब्रीहियवौ तपः श्रद्धा ऋतं तथा ॥ ब्रह्मचर्यविधिश्चैव यस्मात्तस्मै नमो नमः ॥ १७२ ॥ सप्त प्राणार्चिषो यरुमात्समिधः सप्त एव च ॥ होमाः सप्त तथा लोकास्तरुमै सर्वात्मने नमः ॥ १७३ ॥ यरुमात्समुद्रा गिरयः सिन्धवः प्रचरित च ॥ यस्मादोषधयः सर्वा रसास्तस्मै नमो नमः ॥ १७४ ॥ यस्माद्यज्ञः समुद्भूतो दीक्षा यूपश्च दक्षिणा ॥ ऋचो यजूषि सामानि तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ १७५ ॥ नमः पुरस्तात्पृष्टे च नमस्ते पार्श्वयोर्द्रयोः ॥ अध ऊर्ध्व चतुर्दिश्च मातर्भूयो नमो नमः॥१७६॥ 💃

उपांस्त. ३ दुर्गाः! अ० १२६

॥२२२॥

उपसंहर देवेशि रूपमेतद्छौकिकम् ॥ तदेव दर्शयास्माकं रूपं सुन्दरसुन्दरम् ॥ १७७॥ व्यास उवाच ॥ इति भीतान्सुरान् हञ्चा जगदम्बा कृपार्णवा ॥ संहत्य रूपं घोरं तद्दरीयामास सुन्दरम् ॥ १७८ ॥ पाज्ञाङ्कज्ञवराभीतिधरं सर्वाङ्गकोमलम् ॥ करुणापूर्ण नयनं मन्दर्सिमतमुखाम्बुजम् ॥ १७९ ॥ हञ्चा तत्सुन्दरं रूपं तदा भीतिविवर्जिताः ॥ ज्ञान्तिचित्ताः प्रणेम्रस्ते हर्षगद्गदनिस्वनाः ॥ १८० ॥ इति श्रीदेवीगीतायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ क यूर्यं मन्द्रभाग्या वै केदं रूपं महाद्भुतम् ॥ तथाऽपि भक्त वात्सल्यादीह्यां दर्शितं मया ॥ १८१ ॥ न वेदाध्ययनैयोगेर्न दानैस्तपसेज्यया ॥ रूपं द्रष्टुमिदं शक्यं केवलं मत्कृपां ॥ १८२ ॥ प्रकृतं शृणु राजेन्द्र परमात्माऽत्र जीवताम् ॥ उपाधियोगात्संप्राप्तः कर्तृत्वादिकमप्युत ॥ १८३ ॥ क्रियाः करोति विविधा धर्माधर्मैकहेतवः ॥ नानायोनीस्ततः प्राप्य सुखदुःखश्च युज्यते ॥ १८४ ॥ पुनस्तत्संस्कृतिवञ्चान्नानाकर्मरतः सदा ॥ नानादेहान्समाप्रोति सुखदुः वैश्व युज्यते ॥ १८५ ॥ घटीयन्त्रवदेतस्य न विरामः कदाऽपि हि ॥ अज्ञानमेव मूछं स्यात्ततः कामः क्रियास्ततः ॥ १८६ ॥ तस्माद्ज्ञाननाञ्चाय यतेत नियतं नरः ॥ एतद्धि जन्मसाफल्यं यद्ज्ञानस्य नाज्ञनम् ॥ १८७ ॥ पुरुषार्थ समाप्तिश्च जीवन्मुक्तद्शाऽपि च ॥ अज्ञाननाशने शका विद्येव तु पटीयसी ॥ १८८ ॥ न कर्म तज्जनोपास्तिविरोधाभावतो गिरे ॥ प्रत्युताज्ञाज्ञाननाज्ञो कर्मणा नैव भाव्यताम् ॥१८९॥ अनर्थदानि कर्माणि पुनः पुनरुज्ञन्ति हि॥ ततो रागस्ततो दोषस्ततोऽनर्थो महान् भवेत् ॥ १९०॥ तस्मात्सर्वप्रयतेन ज्ञानं संपाद्येत्ररः ॥ कुर्वन्नेवेह कर्माणीत्यतः कर्माप्यवश्यकम् ॥ १९१ ॥ ज्ञानादेव हि कैवल्य मतः स्यात्तत्समुचयः ॥ सहायतां त्रजेत्कर्म ज्ञानस्य हितकारि च ॥ १९२ ॥ इति केचिद्रदन्त्यत्र सिद्धरोधात्र संभवेत् ॥ ज्ञानाद्ध द्रन्थिभेदः स्याद्धद्रन्यो कर्मसंभवः ॥ १९३ ॥ योगपद्यं न संभाव्यं विरोधात्त ततस्तयोः ॥ तमःप्रकाशयोर्यद्रद्योगपद्यं न संभवि ॥ ॥ १९४ ॥ तस्मात्सर्वाणि कर्माणि वैदिकानि महामते ॥ चित्तशुद्धचन्तमेव स्युस्तानि कुयात्त्रियत्नतः ॥ १९५ ॥ शमो दमस्तितिश्चा च वैराग्यं सत्त्वसंभवः ॥ तावत्पर्यन्तमेव स्युः कर्माणि न ततः परम् ॥ १९६ ॥ तदन्ते चैव संन्यस्य संश्रयद्धिरुमात्मवान् ॥ श्रोत्रियं चृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ ॥२२३॥

ब्रह्मनिष्ठं च भक्त्या निर्व्याजया पुनः ॥ १९७॥ वेदान्तश्रवणं कुर्यान्नित्यमवमतन्द्रितः ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यस्य नित्यमर्थं विचा रयेत् ॥ १९८ ॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यं तु जीवब्रह्मैक्यबोधकम् ॥ ऐक्ये ज्ञाते निर्भयस्तु मद्रूपो हि प्रजायते ॥ १९९ ॥ पदार्थावगतिः 💥 पूर्व वाक्यार्थावगतिस्ततः ॥ तत्पद्र्य च वाक्यार्थी गिरेऽहं परिकीर्तितः ॥ २०० ॥ वाच्यार्थयोर्विरुद्धत्वादैक्यं लक्षणाऽतः प्रकर्तव्या तत्त्वमोः श्रुतिसंस्थयोः ॥ २०३ ॥ चिन्मात्रं तु तयोर्लक्ष्यं तयोरेक्यस्य संभवः ॥ तयोरेक्यं तथा ज्ञात्वा स्वाभ देनाद्वयो भवेत्॥ २०२ ॥ देवद्त्तः स एवायमितिवछक्षणा रुमृता ॥ स्थूलादिदेह्रहितो ब्रह्म संपद्यते नरः ॥ २०३ ॥ पञ्चीकृतमहाभूत स्थू छदेहकः ॥ भोगालयो जराव्याधिसंयुतः सर्वकर्मणाम् ॥ २०४॥ मिथ्याभूतोऽयमाभाति रुफुटं मायामयत्वतः ॥ सोऽयं स्थुल उपाधिः स्यादातमनो मे नगेश्वर ॥ २०५ ॥ ज्ञानकर्मेन्द्रिययुतं प्राणपञ्चकसंयुतम् ॥ मनोबुद्धियुतं चैतत्सूक्ष्मं तत्कवयो विदुः ॥ २०६॥ अपञ्चीकृतभूतोत्थं सूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः ॥ द्वितीयोऽयमुपाधिः स्यात्सुखादेरवनोधकः मजानं त तृतीयकः ॥ देहोऽयमात्मनो भाति कारणात्मा नगश्वर ॥ २०८ ॥ उपाधिविखये जाते पश्च कोज्ञा अन्तःस्थाः सन्ति सर्वदा ॥ २०९ ॥ पश्चकोज्ञापरित्यागे ब्रह्मपुच्छं हि लभ्यते ॥ नेति नेतीत्यादिवासयेमम यदुच्यते ॥२१०॥ न जायते श्रियते तत्कदाचित्रायं भूत्वा न बभूव कश्चित् ॥ अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न इन्यते इन्यमाने शुरीरे ॥ २११ ॥ इन्ता चेन्मन्यते इन्तुईतश्चेन्मन्यते इतम् ॥ उभौ तौ न विजानीतो नायं इन्ति न इन्यते ॥ २१२ ॥ अणोरणी यान्महतो महीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ॥ तमऋतुं पर्यति वीतशोको धातुः आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु ॥ बुद्धिं तु सार्थि विद्धि मनः प्रग्रह एव च ॥ २१४॥ इन्द्रियाणि ह्यानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान् ॥ आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ २१५॥ यस्त्वविद्वान् भवति चामनस्कः सद्।ऽशुचिः ॥ न तत्पद्मवा प्रोति संसारं चाधिगच्छति ॥ २१६॥ यस्तु विज्ञानवान्भवति समनस्कः सदा ग्रुचिः ॥ स तु तत्पद्माप्रोति यस्माद्भयो

उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ० १३८

॥३२३॥

न जायते ॥ २१७ ॥ विज्ञानसारथिर्यस्तु मनःप्रयह्वाञ्चरः ॥ सोऽध्वनः परमाप्नोति मदीयं यत्परं पद्म् ॥ २१८॥ इत्थं श्रुत्या च मत्या च निश्चित्यात्मानमात्मनः ॥ भावयेन्मामात्मरूपां निद्धियासनतोऽपि च ॥ २१९ ॥ योगवृत्तेः पुरा स्वस्मिन्भावयेदस्रर त्रयम् ॥ देवीप्रणवसंज्ञस्य ध्यानार्थं मन्त्रवाच्ययोः ॥ २२० ॥ इकारः स्थूळदेहः स्याद्रकारः स्थूळदेहकः ॥ ईकारः कारणात्मा ऽसौ हीकारोऽहं तुरीयकम् ॥२२१॥ एवं समष्टिदेहेऽपि ज्ञात्वा बीजत्रयं क्रमात् ॥ समष्टिव्यष्टचोरेकत्वं भावयेन्मतिमात्ररः ॥ २२२॥ समाधिकालात्पूर्वे तु भावयित्वैवमादतः ॥ ततो ध्यायेन्निलीनाक्षो देवीं मां जगदीश्वरीम् ॥ २२३ ॥ प्राणापानौ समौ कृत्वा नासा भ्यन्तरचारिणी ॥ निवृत्तविषयाकाङ्को वीतदोषो विमत्सरः ॥ २२४ ॥ भक्त्या निव्याजया युक्तो गुहायां निःस्वने स्थले ॥ हकारं विश्वमात्मानं रकारे प्रविछापयेत् ॥ २२५ ॥ रकारं तैजसं देवसीकरे प्रविछापयेत् ॥ ईकारं प्राज्ञमात्मानं हींकारे प्रविछापयेत् ॥ ॥२२६॥ वाच्यवाचकताहीनं द्वेतभावाविवार्जितम् ॥ अखण्डं सिचदानन्दं भावयेत्तिच्छिखान्तरे ॥ २२७॥ इति ध्यानेन मां राजन साक्षात्कृत्य नरोत्तमः ॥ मद्रूप एव भवति द्वयोरप्येकता यतः ॥ २२८ ॥ योगयुक्त्याऽनया दृष्ट्वा मामात्मानं परात् परम् ॥ अज्ञानस्य स कार्यस्य तत्क्षणे नाज्ञको भवेत् ॥ २२९ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां चतुर्थोऽघ्यायः ॥ ४ ॥ हिमाल्य ॥ योगं वद महेशानि साङ्गं संवित्प्रदायकम् ॥ कृतेन येन योग्योऽहं भवेयं तत्त्वदर्शने ॥ २३० नभसः पृष्ठे न भूमौ न रसात्छे ॥ ऐक्यं जीवात्मनोराहुयोंगं योगविज्ञारदाः ॥ २३१ ॥ तत्प्रत्यूहाः पडाख्याता योगविन्न करा नग ॥ कामकोधौ छोभमोहौ मद्मात्सर्थसंज्ञकौ ॥ २३२ ॥ योगाङ्गिरेव भित्त्वा तान्योगिनो योगमाप्रयुः ॥ यमं नियममासनप्राणा यामौ ततः परम् ॥ २३३ ॥ प्रत्याहारं धारणाख्यं ध्यानं सार्धं समाधिना ॥ अष्टाङ्गान्याहुरेतानि योगिनां योगसाधने ॥ २३४ अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं द्याऽऽर्जवम् ॥ क्षमा धृतिर्मिताहारः शौचं चेति यमा दश ॥ २३५ ॥ तपः संतोष आस्तिक्यं दानं देवस्य पूजनम् ॥ सिद्धान्तश्रवणं चैव हीर्मतिश्र जपो हुतम् ॥ २३६ ॥ दुशैते नियमाः प्रोक्ता मया पर्वतनायक ॥ पद्मासनं स्वस्तिकं

चृ.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंध ८ स२२४॥

च भद्रं वज्रासनं तथा ॥ २३७ ॥ वीरासनमिति प्रोक्तं कमादासनपञ्चकम् ॥ ऊर्वोक्तपरि विन्यस्य सम्यक्पाद्तले शुभे च निबर्भीयाद्धस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्ततः ॥ पद्मासनिमिति प्रोक्तं योगिनां हृद्यंगमम् ॥ २३९ ॥ जानूर्वोरन्तरे सम्यक् कृत्वा पादतले शुभे ॥ ऋजुकायो विशेद्योगी स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते ॥ २४० ॥ सीवन्याः पार्श्वयोन्यस्य गुल्फयुग्मं सुनिश्चितम् ॥ वृषणाधः पादपाष्णिः पाणिभ्यां परिबन्धयेत् ॥ २४१ ॥ भद्रासनमिति प्रोक्तं योगिभिः परिपूजितम् ॥ ऊर्वोः पादौ क्रमाद्रयस्य जान्वोः २४२ ॥ करें। विद्ध्यादाल्यातं वज्रासनमनुत्तमम् ॥ एकं पादमधः कृत्वा विन्यस्योकं तथोत्तरे ॥ २४३ ॥ ऋजु कायो विशेचोगी वीरासनमितीरितम् ॥ इडया कर्षयेद्वायुं बाह्यं षोडशमात्रया ॥ २४४॥ घारयेत्पूरितं योगी चतुःषष्टचा तु मात्रया ॥ सुषुम्नामध्यगं सम्यग्द्वात्रिंशन्मात्रया श्रनैः ॥ २४५ ॥ नाडचा पिङ्गलया चैव रेचयेग्रोगवित्तमः योंगशास्त्रविशारदाः ॥ २४६ ॥ भूयो भूयः क्रमात्तस्य बाह्यमेवं समाचरेत् ॥ मात्रावृद्धिः क्रमेणेव सम्यग्द्वादश षोडश ॥ २४७ ादिभिः सार्ध सगर्भ तं विदुर्बुधाः ॥ तद्पेतं विगर्भ च प्राणायामं परे विदुः ॥ २४८ ॥ क्रमाद्भ्यस्यत पुंसो देहे स्वेद्ो द्रमोऽधमः ॥ मध्यमः कम्पसंयुक्तो भूमित्यागः परो मतः ॥ २४९ ॥ उत्तमस्य गुणावातिर्यावच्छीलनमिष्यते रतां विषयेषु निरर्गलम् ॥ २५० ॥ बलादाहरणं तेभ्यः प्रत्याहारोऽभिधीयते ॥ अङ्कष्टगुल्फनानूरुमूलाधारालिङ्गनाभिषु ॥ हृद्रीवाकण्ठदेशस्तु लम्बिकायां ततो निस ॥ अूमध्ये मस्तके सूर्धि द्वादृशान्ते यथाविधि ॥ २५२॥ धारणं प्राणमस्तो धारणेति निगद्यते ॥ समाहितेन मनसा चैतन्यान्तरवर्तिना ॥ २५३ ॥ आत्मन्यभीष्टदेवानां ध्यानं ध्यानमिहोच्यते ॥ समत्वभावना निगद्यते ॥ समाहितेन मनसा चतन्यान्तरवातना ॥ ९५९ ॥ जात्व प्रचाटपुराता प्राप्त । । १५९ ॥ वित्यं जीवात्मपरमात्मनोः ॥ २५९ ॥ समाधिमाहुर्मुनयः प्रोक्तमष्टाङ्ग्रुरुश्चणम् ॥ इदानीं कथये तेऽहं मन्त्रयोगमनुत्तमम् ॥ २५५ ॥ विश्वं श्रारिमित्युक्तं पञ्चभूतात्मकं नग ॥ चन्द्रसूर्यायितेजोभिजीवत्रक्षेक्यरूपकम् ॥ २५६ ॥ तिव्रः कोटचस्तद्वेन शरीरे नाडयो ॥ विश्वं शरीरिमित्युक्तं पञ्चभूतात्मकं नग ॥ चन्द्रसूर्यायितेजोभिजीवत्रक्षेक्यरूपकम् ॥ २५६ ॥ तिव्रः कोटचस्तद्वेन शरीरे नाडयो ॥ सताः ॥ तासु सुख्या दश प्रोक्तास्ताभ्यस्तिस्रो व्यवस्थिताः ॥ २५७ ॥ प्रधाना यहद्वेऽत्र चन्द्रसूर्यायिह्यिक्षिणी ॥ इडा वामे स्थिता ॥

डपा.स्त्र इ डुर्मी अ०१२८

नाडी ग्रुष्रा तु चन्द्ररूपिणी ॥२५८॥ शक्तिरूपा तु सा नाडी साक्षाद्मृतिवयहा ॥ दक्षिणे या पिङ्गलाख्या पुंरूपा सूर्यवियहा ॥ २५९ ॥ सर्वतेजोमयी सा तु सुषुष्ठा विहरूपिणी ॥ तस्या मध्ये विचित्राख्ये इच्छाज्ञानाकियात्मकम् ॥ २६० ॥ मध्ये स्वयंध्र छिङ्गं तु कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥ तद्द्रध्वे मायाबीजं तु इरात्मा बिन्दुनादकम् ॥ २६१ ॥ तद्द्रध्वे तु शिखाकारा कुण्डली रक्तवियहा ॥ देव्यात्मिका तु सा प्रोक्ता मदभिन्ना नगाधिप ॥ २६२ ॥ तद्वाह्ये हेमह्तपार्थं वादिसान्तचतुर्छम् ॥ द्वतहेमसमप्रख्यं पद्मं तत्र विचिन्तयेत् ॥ २६३ ॥ तदूर्ध्व त्वनलप्रक्यं षड्दलं हीरकप्रभम् ॥ हादिलान्तषडणैन स्वाधिष्ठानमनुत्तमम् ॥ २६४ ॥ मूलमाधार षट्काणां मूळाधारं ततो विदुः ॥ स्वशब्देन परं छिङ्गं स्वाधिष्ठानं ततो विदुः ॥ २६५ ॥ तदूर्वं नाभिदेशे तु मणिपूरं महा प्रथम् ॥ मेघामं विद्युदामं च बहुतेजोमयं ततः ॥ २६६ ॥ मणिविद्धिन्नं तत्पद्मं मणिपद्मं तथोच्यते ॥ दशिभश्च दछैर्युक्तं डादिफान्ताक्ष रान्वितम् ॥ २६७ ॥ विष्णुनाऽधिष्ठितं पद्मं विष्ण्वालोकनकारणम् ॥ तदूर्ध्वेऽनाहतं पद्ममुद्यदादित्यसन्निभम् ॥ २६८ ॥ कादिठान्त द्छैरक्पत्रैश्च समधिष्ठितम् ॥ तन्मध्ये बाणिछङ्गं तु सूर्यायुतसमप्रभम् ॥ २६९ ॥ शब्दब्रह्ममयं शब्दानाहतं तत्र दृश्यते ॥ अनाइताख्यं तत्पद्मं मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ २७० ॥ आनन्दसद्नं तत्तु पुरुषाधिष्ठितं परम् ॥ तदूर्ध्वं तु विशुद्धाख्यं पङ्कजम् ॥२७१॥ स्वरैः षोडशभिर्युक्तं धूम्रवर्णं महाप्रभम् ॥ विशुद्धं तनुते यस्माज्जीवस्य हंसलोकनात् ॥ २७२॥ विशुद्धं पद्म माल्यातमाकाशाल्यं महाद्धतम् ॥ आज्ञाचकं तदूर्वे तु आत्मनाऽधिष्ठितं परम् ॥ २७३ ॥ आज्ञासंक्रमणं तत्र तेनाज्ञेति प्रकीर्ति तम् ॥ द्विदछं इक्षसंयुक्तं पद्मं तत्सुमनोहरम् ॥ २७४ ॥ कैछासाल्यं तदूर्वे तु रोधिनी तु तदूर्वतः ॥ एवं त्वाधारचकाणि प्रोक्तानि तव सुत्रत ॥ २७५ ॥ सहस्रारयुतं विन्दुस्थानं तदूर्ध्वमीरितम् ॥ इत्येतत्कथितं सर्वे योगमार्गमनुत्तमम् ॥ २७६ ॥ आदौ पूरक योगेनाप्याधारे योजयेन्मनः ॥ गुद्मेद्रान्तरे शक्तिस्तामाकु व्य प्रबोधयेत् ॥ २७७ ॥ छिङ्गभेद्क्रमेणैव बिन्दुचकं च प्रापयेत् ॥ शंभुना तां परां शक्तिमेकीभूतां विचिन्तयेत्॥ २७८॥ तत्रोत्थितामृतं यत्तु द्वतलाक्षारसोपमम् ॥ पायित्वा तु तां शक्ति मायाख्यां

ष्ट.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥२२५॥

षद्चऋदेवतास्तत्र संतर्पामृतधारया ॥ आनयेत्तेन मार्गेण पूळाधारं ततः सुधीः एवमभ्यस्यमानस्याप्यहृन्यहानि निश्चितम् ॥ जरामरणदुःखाद्येर्धुच्यते भवबन्धनात् ॥ २८१ ॥ पूर्वोक्तदूषिता सिद्धचन्ति नान्यथा॥ ये ग्रुणाः सन्ति देव्या मे जगन्मातुर्यथा तथा॥ २८२॥ ते ग्रुणाः साधकवरे भवन्त्येव च इत्येवं कथितं तात वायुधारणमुत्तमम् ॥ २८३ ॥ इदानीं धारणाख्यं तु शृणुष्वावहितो मम विधाय च ॥ २८४ ॥ तन्मयो भवति क्षिप्रं जीवब्रह्मैक्ययोजनात् ॥ अथवा समलं चेतो यदि क्षिप्रं न सिद्धचति ॥ २८५ ॥ तदाऽवयवयोगेन योगी योगान्समभ्यसेत् ॥ मदीयहरूतपादादावङ्गे तु मधुरे नग ॥ २८६ ॥ चित्तं संस्थापयेन्मन्त्री स्थानं स्थान संस्थापयेन्यनः ॥ २८७ ॥ यावन्यनो छयं याति देव्यां संविदि पर्वत ॥ २८८ ॥ मन्त्राभ्यासेन योगेन ज्ञेयज्ञानाय कल्पते ॥ न योगेन विना मन्त्रो न मन्त्रेण सः ॥ २८९ ॥ द्वयोरभ्यासयोगो हि ब्रह्मसंसिद्धिकारणम् ॥ तयःपरिवृते गेहे घटो दीपेन दृश्यते ॥ २९० ॥ एवं मायावृतो मनुना गोचरीकृतः ॥ इति योगविधिः कृत्स्नः साङ्गः प्रोक्तो सयाऽधुना ॥ २९१ ॥ गुरूपदेशतो ज्ञेयो श्रीदेवीगीतायां पञ्चमोऽच्यायः ॥ ५ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ इत्यादियोगयुक्तात्मा ध्यायेन्मां ब्रह्मरूपिणीम् निव्याजया राजन्नासने समुपस्थितः ॥ २९३ ॥ आविःसन्निहितं गुहाचरं नाम यत् ॥ २९४ ॥ एतजानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ॥ यद्चिमद्यद्णुभ्योऽणु नश्च ॥ २९६ ॥ तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ् मनः ॥ तदेतत्सत्यममृतं तद्वेद्धव्यं सौम्य र्ग्हीत्वीपनिषदं महास्रं शरं ह्यपासानिशितं संधयीत ॥ आयम्य तद्वागनृतेन चेतसा छक्ष्यं तदेवाक्षरं सीम्य शरो ह्यात्मा त्रह्म तछक्ष्यमुच्यते ॥ अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ २९८ ॥ यस्मिन्द्यौश्च पृथिवी चान्तरिक्ष

उपा.स्त. २ दुर्गाः । अ०१२८

मोतं मनः सह प्राणेश्व सर्वैः ॥ तमेवैकं जानथात्मानमन्या वाचो विमुञ्जथाऽमृतस्यैष सेतुः ॥ २९९ ॥ अरा इव रथनाभी संहता यत्र नाडचः ॥ स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः ॥ ३०० ॥ ॐ इत्येवं ध्यायतात्मानं स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ब्रह्मपुरे व्योम्नि आत्मा संप्रतिष्ठितः॥ ३०१ ॥ मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृद्यं सन्निधाय ॥ तद्विज्ञानेन परि पर्यन्ति धीरा आनन्द्रूपममृतं यद्विभाति ॥ ३०२ ॥ भिद्यते हृद्यश्रन्थिश्छद्यन्ते सर्वसंश्याः ॥ क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् हरे परावरे ॥ ३०३ ॥ हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम् ॥ तच्छुष्ठं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः ॥ ३०४ ॥ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमित्रः ॥ तमेव भान्तमनुभाति सर्वे तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ३०५ ॥ ब्रह्मैवेद्ममृतं पुरस्ताद्वह्म पश्चाद्वह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण ॥ अधश्चोर्ध्व च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वं वरिष्ठम् ॥ ३०६ ॥ एताह गनुभवो यस्य स कृतार्थों नरोत्तमः ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचित न काङ्श्रति ॥ ३०७ ॥ द्वितीयाद्वै भयं राजंस्तद्भावाद्विभेति न ॥ न तद्वियोगो मेऽप्यस्ति मद्वियोगोऽपि तस्य न ॥ ३०८ ॥ अहमेव स सोऽहं वै निश्चितं विद्धि पर्वत ॥ महर्शनं तु तत्र स्या द्यत्र ज्ञानी स्थितो मम ॥ ३०९ ॥ नाहं तीर्थे न कैलासे वैकुण्ठे वा न किहीचित् ॥ वसामि किन्तु मन्ज्ञानिहृद्याम्भोजमध्यमे ॥ ३१० ॥ मत्पूजाकोटिफलदं सक्ननमज्ज्ञानिनोऽर्चनम् ॥ कुलं पवित्रं तस्यास्ति जननी कृतकृत्यका ॥ ३११ ॥ विश्वंभरा पुण्यवती चिछयो यस्य चेतसः ॥ त्रह्मज्ञानं तु यत्पृष्टं त्वया पर्वतसत्तम ॥ ३१२ ॥ कथितं तन्मया सर्वे नातो वक्तव्यमस्ति हि ॥ इदं ज्येष्ठाय पुत्राय भक्तियुक्ताय शीछिने ॥ ३१३ ॥ शिष्याय च यथोक्ताय वक्तव्यं नान्यथा क्वचित् ॥ यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुर ॥ ३१४ ॥ तस्यैते कथिता हार्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥ येनोपदिष्टा विद्येयं स एव परमेश्वरः ॥ ३१५ ॥ यस्यायं सुकृतं मसमर्थस्ततो ऋणी ॥ पित्रोरप्यधिकः प्रोक्तो ब्रह्मजन्मप्रदायकः ॥ ३१६ ॥ पितृजातं जन्म नष्टं नेत्थं जातं कदाचन ॥ तस्मै द्वुद्धोदित्यादि निगमोऽप्यवदन्नग ॥ ३१७ ॥ तरुमाच्छास्नस्य सिद्धान्तो त्रसदाता ग्ररुः परः ॥ शिवे रुष्टे गुरुस्नाता गुरौ रुष्टे

🏂 शिङ्करः॥३१८॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रीग्रक्तं तोषयेत्रग ॥ कायेन मनसा वाचा सर्वदा तत्परो भवेत् ॥३१९॥ अन्यथा तु कृतन्नः स्यात्कृतन्ने धर्वस्केव ८ विन्कृतिः ॥ इन्द्रेणाथर्वणायोक्ता शिरइछेदप्रतिज्ञया ॥ ३२० ॥ अश्विभ्यां कथने तस्य शिरिइछन्नं च वित्रणा॥ अश्वीयं ॥२२६॥ 🖁 तिच्छरो नष्टं दृष्ट्वा वैद्यो सुरोत्तमो ॥ ३२१ ॥ युनः संयोजितं स्वीयं ताभ्यां सुनिशिरस्तदा ॥ इति संकटसंपाद्या धिप ॥ ३२२ ॥ रुव्धा येन स धन्यः स्यात्कृतकृत्यश्च भूधर ॥ ३२३ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ हिमालय उवाच ॥ स्वीयां भक्तिं वदस्वाम्ब येन ज्ञानं सुखेन हि ॥ जायेत मनुजस्यास्य मध्यमस्याविरागिणः ॥ ३२४ ॥ देव्युवाच ॥ मार्गास्त्रयो मे विख्याता मोक्षप्राप्तौ नगाधिप ॥ कर्मयोगो ज्ञानयोगो भक्तियोगश्च सत्तम ॥ ३२५॥ त्रयाणामप्ययं योग्यः कर्तु शक्योऽस्ति सर्वदा ॥ सुरुभत्वान्मानसत्वात्कायचित्ताद्यपीडनात् ॥ ३२६ ॥ गुणभेदान्मचुष्याणां सा भक्तिस्त्रिविधा मता ॥ पर पीडां समुद्दिश्य दम्भं कृत्वा पुरःसरम् ॥ ३२७ ॥ मात्सर्यकोधयुक्तो यस्तस्य अक्तिस्तु तामसी ॥ परपीडादिरहितः स्वकल्याणार्थ मेव च ॥ ३२८ ॥ नित्यं सकामो हृद्ये यशोऽर्थी भोगछोछुपः ॥ तत्तत्फलसमावाप्त्ये मामुपास्तेऽतिभक्तितः ॥ ३२९ ॥ बुद्धचा तु मां स्वस्माद्वयां जानाति पामरः॥ तस्य अक्तिः समाख्याता नगाधिप तु राजसी ॥ ३३० ॥ परमेशार्पणं कर्म पाप संक्षालनाय च ॥ वेदोक्तत्वादवर्यं तत्कर्तव्यं तु मयाऽनिशम् ॥ ३३१ ॥ इति निश्चित्वुद्धिस्तु भेद्बुद्धिसुपाश्चितः ॥ करोति प्रीतये कर्म भक्तिः सा नग सात्त्विकी ॥ ३३२ ॥ परभक्तेः प्रापिकेयं भेदबुद्धचवलम्बनात् ॥ पूर्वप्रोक्ते सुभे भक्ती न परप्रापिके मते ॥ ३३३॥ अधुना परभक्ति तु प्रोच्यमानां निबोध मे ॥ मद्भणश्रवणं नित्यं सम नामानुकीर्तनम् ॥ ३३४ ॥ कल्याणगुणरत्नानामाकरायां मिय स्थिरम् ॥ चेतसो वर्तनं चैव तैलधारासमं सदा ॥ ३३५ ॥ हेतुस्तु तत्र को वाऽपि न कदाचिद्भवेदपि ॥ सामीप्यसाढिष्टिसायुज्य सालोक्यानां न चेषणा ॥ ३३६ ॥ मत्सेवातोऽधिकं किंचिन्नैव जानाति किंचित् ॥ सेव्यसेवकताभावात्तत्र मोक्षं न वाञ्छित॥३३७॥ 💆 ॥२२६॥ पराचरत्तया मामेव चिन्तयेद्यो ह्यतन्द्रितः ॥ स्वाभेदैनैव मां नित्यं जानाति न विभेदतः ॥ ३३८॥ मद्रूपत्वेन जीवानां

उपा स्त. ३ दुगी, अ० १३८

चिन्तनं कुरुते तु यः ॥ यथा स्वस्यात्मनि प्रीतिस्तथैव च परात्मानि ॥ ३३९ ॥ चैतन्यस्य समानत्वान्न भेदं कुरुते तु यः ॥ सर्वत्र वर्तमानां मां सर्वरूपां च सर्वदा ॥ ३४० ॥ नमते यजते चैवाप्याचाण्डालान्तमीश्वर ॥ न कुत्रापि द्रोह्बुद्धि वर्जनात् ॥ ३४१ ॥ मत्स्थानदर्शने श्रद्धा मद्रक्तदर्शने तथा ॥ मच्छास्त्रश्रवणे श्रद्धा मन्त्रतन्त्रादिषु प्रभो ॥ ३४२ ॥ मयि प्रेमाकुल मती रोमाञ्चिततत्तुः सद्। ॥ प्रेमाश्चजलपूर्णाक्षः कण्ठगद्गद्गिनःस्वनः ॥ ३४३ ॥ अनन्येनैव भावेन पूजयेद्यो सर्वकारणकारणम् ॥ ३४४ ॥ त्रतानि मम दिन्यानि नित्यनैमित्तिकान्यपि ॥ नित्यं यः कुरुते ॥ ३४५ ॥ मदुत्सविदृह्शा च मदुत्सवक्वतिस्तथा ॥ जायते यस्य नियतं स्वभावादेव भूघर ॥ ३४६ ॥ नामानि ममैव खलु नृत्यति ॥ अइंकारादिरहितो देइतादातम्यवर्जितः ॥ ३४७ ॥ प्रारब्धेन यथा यच कियते यत्तथा अवेत् ॥ न मे चिन्ताऽस्ति तत्रापि देइसंरक्षणादिषु ॥ ३४८ ॥ इति भक्तिस्तु या प्रोक्ता परभक्तिस्तु सा स्मृता ॥ यस्यां देव्यतिरिक्तं तु किंचिद्पि भाव्यते ॥ ३४९ ॥ इत्थं जाता परा भिक्तर्यस्य भूधर तत्त्वतः ॥ तदैव तस्य चिन्मात्रे मद्रूपे विख्यो भवेत् ॥ ३५० ॥ भक्तेस्तु या परा काष्टा सैव ज्ञानं प्रकीर्तितम् ॥ वैराग्यस्य च सीमा सा ज्ञाने तदुभयं यतः ॥ ३५१ ॥ भक्तौ कृतायां यस्यापि प्रारब्धवज्ञतो नग ॥ न जायते मम ज्ञानं मणिद्वीपं स गच्छति ॥ ३५२ ॥ तत्र गत्वाऽिखळान्भोगाननिच्छन्नपि चच्छिति ॥ तदन्ते मम चिद्रुपज्ञानं सम्यग्भवेत्रग ॥ ३५३ ॥ तेन मुक्तः सदैव स्यान्ज्ञानान्मुक्तिने चान्यथा ॥ इहैव यस्य ज्ञानं स्याद्धुतप्रत्यगात्मनः ॥ ३५४ ॥ मम संवित्परतनोस्तस्य प्राणा व्रजन्ति न ॥ ब्रह्मेव संस्तद्।ऽऽप्रोति ब्रह्मेव ब्रह्म वेद यः नात्तु तिरोहितम् ॥ ज्ञानाद्ज्ञाननाञ्चेन रुञ्धमेव हि रुभ्यते ॥ ३५६ ॥ विदिताविदिताद्न्यन्नगोत्तम वपुर्मम् ॥ यथाऽऽद्र्शे तथा ऽऽत्मिनि यथा जले तथा पितृलोके ॥ ३५७ ॥ छायातपौ यथा स्वच्छो विविक्तौ तद्वदेव हि ॥ मम लोके अवेज्ज्ञानं दैतआन विवर्जितम् ॥ ३५८ ॥ यस्तु वैराग्यवानेव ज्ञानहीनो भ्रियेत चेत् ॥ ब्रह्महोके वसेन्नित्यं यावत्करुपं ततः परम् ॥ ३५९ ॥ शुचीनां

श्रीमतां गेहे भवेत्तस्य जिनः पुनः ॥ करोति साधनं पश्चात्ततो ज्ञानं हि जायते ॥ ३६० ॥ अनेकजन्मभी राजन् ज्ञानं 🖫 स्थांस्केष ८ हैं स्यांनेकजन्मना ॥ ततः सर्वप्रयत्नेन ज्ञानार्थं यत्नमाश्रयेत् ॥ ३६१ ॥ नो चेन्महाविनाशः स्याजन्मेतद् दुर्लभं पुनः ॥ तत्रापि प्रथमे वर्णे वेदप्राप्तिश्च दुर्लभा ॥ ३६२ ॥ श्वामादिषद्कसंपत्तियोगिसिद्धिस्तयेव च ॥ तथोत्तमगुरुप्राप्तिः सर्वमेवात्र दुर्लभ्ये भम् ॥ ३६३ ॥ तथेन्द्रियाणां पटुता संस्कृतत्वं तनोस्तथा ॥ अनेकजन्मपुण्येस्तु मोक्षेच्छा जायते ततः ॥ ३६४ ॥ साधने सक्लेऽप्येवं जायमानेऽपि यो नरः ॥ ज्ञानार्थं नेव यतते तस्य जन्म निरर्थकम् ॥ ३६५ ॥ तस्माद्राजन्यथाश्वस्त्या ज्ञानार्थं यत्नमाश्रयेत् ॥ पदे पदेऽश्वमेधस्य फलमाप्रोति निश्चितम् ॥ ३६६ ॥ घृतिमिव पयित निग्रढं भूते भूते च वसित विज्ञानम् ॥ सततं मन्थियतव्यं मनसा मन्थानभूतेन ॥ ३६७॥ ज्ञानं रुव्धा कृतार्थः स्यादिति वेदान्ति छिडमः ॥ सर्वमुक्तं समासेन कि भूयः श्रोतिमिच्छिसि ॥ ३६८ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ हिमालय उवाच ॥ कित स्थानानि देवेशि द्रष्टव्यानि महीत्र ॥ मुख्यानि च पवित्राणि देवीप्रियतमानि च ॥ ३६९ ॥ त्रतान्यपि तथा यानि तुष्टिदान्युत्सवा अपि ॥ तत्सर्वे वद मे मातः कृतकृत्यो यतो नरः ॥ ३७० ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ सर्वे हृइयं सम स्थानं सर्वे काला त्रतात्मकाः ॥ उत्सवाः सर्वकालेषु यतो <u> इहं सर्वरूपिणी ॥ ३७१ ॥ तथाऽपि अक्तवात्सल्यात्विक्वित्वित्विद्योच्यते ॥ शृणुष्वावहितो भूत्वा नगराज वचो मम ॥ ३७२ ॥</u> कोलापुरं महास्थानं यत्र रुक्ष्मीः सदा स्थिता ॥ मातुः पुरं द्वितीयं च रेणुकाधिष्ठितं परम् ॥ ३७३ ॥ तुल्जापुरं तृतीयं स्यात्सप्तशृङ्गं तथैव च ॥ हिङ्कलाया महास्थानं ज्वालामुख्यास्तथैव च ॥ ३७४ ॥ ज्ञाकंभर्याः परं स्थानं भ्रामर्याः स्थान मत्तमम् ॥ श्रीरक्तदन्तिकास्थानं दुर्गास्थानं तथैव च ॥ ३७५ ॥ विन्ध्याचलिनवासिन्याः स्थानं सर्वोत्तमोत्तमम् ॥ अन्नपूर्णामहास्थानं काश्चीपुरमनुत्तमम् ॥ ३७६ ॥ भीमादेव्याः परं स्थानं विमलास्थानमेव च ॥ श्रीचन्द्रलामहास्थानं कौशिकीस्थानमेव च ॥ ३७७ ॥ नीलाम्बायाः परं स्थानं नीलपर्वतमस्तके ॥ जाम्बूनदेश्वरीस्थानं तथा श्रीनगरं शुभम् ॥ ३७८ ॥ ग्रुह्मकाल्या महास्थानं नेपाले 💥

यत्प्रतिष्ठितम् ॥ मीनाक्ष्याः परमं स्थानं यज्ञ प्रोक्तं चिद्मबरे ॥ ३७९ ॥ वेद्रारण्यं महास्थानं सुन्दर्या समधिष्ठितम् ॥ एकाम्बरं महास्थानं परज्ञाकत्या प्रतिष्ठितम् ॥ ३८० ॥ महालसा परं स्थानं योगेश्वर्यास्तथैव च ॥ तथा नीलसरस्वत्याः स्थानं चीनेषु विश्वतम् ॥ ३८१ ॥ वैद्यनाथे तु बगलास्थानं सर्वोत्तमं मतम् ॥ श्रीमच्छ्रीक्षुवनेश्वर्या मणिद्वीपं मम रुपृतम् ॥ ३८२ ॥ श्रीमच्छ्रीपुरभैरव्याः कामाख्यायोनिमण्डलम् ॥ भूमण्डले क्षेत्ररतं महामायाधिवासितम् ॥ ३८२ ॥ नातः परतरं स्थानं कचि धरातले ॥ प्रतिमासं भवेदेवी यत्र साक्षाद्रजरूवला ॥ ३८४ ॥ तत्रत्या देवताः सर्वाः पर्वतात्मकतां गताः न्त्येव महत्यो देवता अपि ॥ ३८५ ॥ तत्रत्या पृथिवी सर्वा देवीह्या स्मृता बुधैः ॥ नातः परतरं स्थानं कामारुयायोनिमण्डलात् ॥ ३८६ ॥ गायज्याश्च परं स्थानं श्रीमत्युष्करमीरितम् ॥ अमरेशे चिण्डका स्यात्प्रभासे युष्करेक्षिणी ॥ ३८७ ॥ नैमिषे तु महा स्थाने देवी सा छिङ्गधारिणी ॥ पुरुहूता पुष्कराक्ष्ये आषाढौ च रतिस्तथा ॥ ३८८ ॥ चण्डमुण्डा महास्थाने दण्डिनी परमेश्वरी ॥ भारभूतौ भवेद्भितिनीकुले नकुलेश्वरी ॥ ३८९ ॥ चण्डिका तु हरिश्चन्द्रे श्रीगिरी शांकरी स्मृता ॥ जप्येश्वरे त्रिशूला स्यातसूक्ष्मा चाम्रातकेश्वरे ॥ ३९० ॥ शांकरी तु महाकाले शर्वाणी मध्यमाभिषे ॥ केदाराख्ये महाक्षेत्रे देवी सा मार्गदायिनी भैरवाख्ये भैरवी सा गयायां मङ्गळा रुमृता ॥ स्थाणुप्रिया कुरुक्षेत्रे स्वायंभुव्यपि नाकुळे ॥ ३९२ ॥ कनखळे भवेदुवा विश्वेशा विमलेश्वरे ॥ अट्टहासे महानन्दा महेन्द्रे तु महान्तका ॥ ३९३ ॥ भीमे भीमेश्वरी प्रोक्ता स्थाने वस्त्रापथे पुनः ॥ भवानी ज्ञांकरी प्रोक्ता रुद्राणी त्वर्धकोटिके ॥३९४॥ अविमुक्ते विज्ञालाक्षी महाभागा महालये ॥ गोकर्णे भद्रकर्णी स्याद्रद्रा स्याद्रद्रकर्णके ॥३९५॥ उत्पराक्षी सुवर्णाक्षे स्थाण्वीज्ञा स्थाणुसंज्ञके॥कमरु।खये तु कमरु। प्रचण्डा च्छगरुण्डके ॥ ३९६॥ कुरण्डले त्रिसन्ध्या स्यान्माकोटे मुकुटेश्वरी ॥ मण्डलेशे शांडकी स्यात्काली कालक्षरे पुनः ॥ ३९७ ॥ शङ्ककर्णे ध्वनिः प्रोक्ता स्थूला स्यातस्थूलकेश्वरे ॥ ज्ञानिनां हृद्याम्भोजे हृछेखा परमेश्वरी ॥ ३९८ ॥ प्रोक्तानीमानि स्थानानि देव्याः प्रियतमानि च ॥ तत्तत्क्षेत्रस्य माहातम्यं श्चत्व

धर्मस्कंघ ८

त्थणात्रग सत्वरम् ॥ श्राद्धकाछे पठेदेतान्यमछानि द्विजायतः ॥ ४०३ ॥ मुक्तारुतित्वरः सर्वे प्रयान्ति परमां गतिम् ॥ अधुना कथिष्यामि त्रतानि तव सुत्रत ॥ ४०४ ॥ नारीभिश्च नरैश्चेव कर्तव्यानि प्रयत्नतः ॥ त्रतमनन्ततृतीयाख्यं रसकल्याणिनीत्रतम् ॥ ॥४०५॥ आर्ड्रानन्दकरं नाम्रा तृतीयायां व्रतं च यत् ॥ शुक्रवारव्रतं चैव तथा कृष्णचतुर्द्शी ॥४०६॥ भौमवारव्रतं चैव प्रदोषव्रतमेव च ॥ यत्र देवो महादेवो देवीं संस्थाप्य विष्टरे ॥ ४०७ ॥ नृत्यं करोति पुरतः सार्ध देवैर्निशासुखे ॥ तत्रोपोष्य रजन्यादी प्रदोषे पूजयेच्छिवाम् ॥ ४०८ ॥ प्रतिपक्षं विशेषेण तद्देवीप्रीतिकारकम् ॥ सोमवारव्रतं चैव समातिप्रियकुव्नग ॥ ४०९ ॥ तत्रापि देवी संपूज्य रात्री भोजनमाचरेत् ॥ नवरात्रद्धयं चैव व्रतं प्रीतिकरं सम।। ४१०॥ एवमन्यान्यपि विभो नित्यनैमित्तिकानि त्रतानि कुरुते यो वै मत्प्रीत्यर्थ विमत्सरः ॥ ४११ ॥ प्राप्नोति मम सायुज्यं स मे भक्तः स मे प्रियः ॥ उत्सवानिष कुर्वीत दोलोत्सवमुखान्विभो ॥ ४१२ ॥ शयनोत्सवं यथा कुर्यात्तथा जागरणोत्सवम् ॥ रथोत्सवं च मे कुर्याद्दमनोत्सवमेव च पवित्रोत्सवमेवापि श्रवणे प्रीतिकारकम् ॥ मम भक्तः सद्। कुर्यादेवमन्यान्महोत्सवान् ॥ ४१४ ॥ मद्भकान्भोजयेत्प्रीत्या तथा चैव सुवासिनीः ॥ कुमारीर्बेटुकांश्चापि मद्बुद्धचा मद्गतान्तरः ॥ ४१५ ॥ वित्तज्ञाठचेन रहितो यजेदेतान्सुमादिभिः एवं कुरुते भक्तया प्रतिवर्षमतन्द्रितः ॥ ४१६ ॥ स धन्यः कृतकृत्योऽसौ मत्प्रीतेः पात्रमञ्जसा ॥ सर्वमुक्तं समासेन मम प्रीति हैं प्रदायकम् ॥ नाशिष्याय प्रदातव्यं नाभक्ताय कदाचन ॥ ४१७ ॥ इति श्रीदेवीगीतायामप्रमोऽष्यायः ॥ ८ ॥ श्रीहिमालय हैं ॥२२८॥ एवं कुरुते भक्तया प्रतिवर्षमतन्द्रितः ॥ ४१६ ॥ स धन्यः कृतकृत्योऽसौ मत्प्रीतेः पात्रमञ्जसा ॥ सर्वेयुक्तं समासेन मम प्रीति उवाच ॥ देवदेवि महेशानि करुणासागरेऽम्बिके ॥ बूहि पूजाविधि सम्यग्यथावद्धुना निजम् ॥ ४१८ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ वक्ष्ये पूजा

उपा.स्त. ३ दुगी,

विधि राजन्नम्बिकाया यथा त्रियम् ॥ अत्यन्तश्रद्धया सार्धे शृणु पर्वतपुंगव ॥ ४१९ ॥ द्विविधा मम पूजा स्याद्वाह्या न्तराऽपि च ॥ बाह्याऽपि द्विविधा प्रोक्ता वैदिकी तान्त्रिकी तथा ॥ वैदिक्यर्चाऽपि द्विविधा मूर्तिभेदेन भूधर ॥ ४२० ॥ वैदिकी वैदिकैः कार्या वेददीक्षासमन्वितैः ॥ तन्त्रोक्तदीक्षाविद्धस्तु तान्त्रिकी संश्रिता अवेत् ॥ इत्थं पूजारहरूयं च न ज्ञात्वा विपरीत कम् ॥ ४२१ ॥ करोति यो नरो मुढः स पतत्येव सर्वथा ॥ तत्र या वैदिकी प्रोक्ता प्रथमा तां वदाम्यहम् ॥ ४२२ ॥ यन्मे साक्षात् रूपं दृष्टवानिस भूधर ॥ अनन्तर्शीर्षनयनमनन्तचरणं महत् ॥ ४२३ ॥ सर्वशक्तिसमायुक्तं प्रेरकं यत्परात्परम् ॥ त्रित्यं नमेद्धचायेत्स्मरेद्ि ॥ ४२४ ॥ इत्येतत्त्रथमार्चायाः स्वरूपं कथितं नग ॥ ज्ञान्तः समाहितमना दम्भाहंकारवर्जितः ॥ ४२५ ॥ तत्परो भव तद्याजी तदेव शरणं व्रज ॥ तदेव चेतसा पर्य जप ध्यायस्व सर्वदा ॥ ४२६ ॥ अनन्यया प्रेमयुक्त भक्तया मद्रावमाश्रितः ॥ यज्ञैर्यन तपोदानैर्मामेव परितोषय ॥ ४२७ ॥ इत्थं ममाजुग्रहतो मोक्ष्यसे भवबन्धनात् ॥ मत्परा ये मद सक्तचित्ता अक्तवरा मताः॥४२८॥प्रतिजाने भवाद्रस्मादुद्धराम्यचिरेण तु॥ध्यानेन कर्मयुक्तेन भक्तिज्ञानेन वा पुनः ॥४२९॥ प्राप्याऽहं ॥ धर्मात्संजायते भक्तिर्भक्तया संजायते परम् ॥ ४३० ॥ श्रुतिस्मृतिभ्यासुदितं प्रकीर्तितः ॥ अन्यशास्त्रेण यः प्रोक्तो धर्माभासः स उच्यते ॥ ४३१ ॥ सर्वज्ञात्सर्वशक्तेश्च मत्तो वेदः समुत्थितः श्रातिः ॥ ४३२ ॥ रुमृतयश्र श्रुतेरर्थे गृहीत्वैव च निर्गताः ॥ प्रामाण्यमिष्यते ॥ ४३३ ॥ कचित्कदाचित्तन्त्रार्थकटाक्षेण परोदितम् ॥ धर्म वदन्ति सोंऽशस्तु नैव ब्राह्योऽस्ति वैदिकैः अन्येषां शास्त्रकर्तृणामज्ञानप्रभवत्वतः ॥ अज्ञानदोषदुष्टत्वात्तदुक्तेर्न प्रमाणता ॥ ४३५ ॥ तस्पान्मुमुसुधर्मार्थं सर्वथा वेद्माश्रयेत् ॥ राजाज्ञा च यथा छोके इन्यते न कदाचन ॥ ४३६ ॥ सर्वेशान्या ममाज्ञा सा श्रुतिस्त्याज्या कथं नृभिः ब्रह्मक्षित्रियजातयः ॥ ४३७ ॥ मया सृष्टास्ततो ज्ञेयं रहस्यं मे श्रुतेर्वचः ॥ यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भूधर ॥ ४३८

ष्ट.ज्ज्यो.र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥२२९॥

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदा वेषान्बिभर्म्यद्म् ॥ देवदैत्यविभागश्चाप्यत एवाभवन्तृप ॥ ४३९ ॥ ये न कुर्वन्ति तद्धर्म तिच्छक्षार्थं ॥ ४४१ ॥ ब्राह्मणैर्न च संभाष्याः पङ्क्तियाह्या न च द्विजैः ॥ अन्यानि यानि शास्त्राणि श्रतिस्मृतिविरुद्धानि तामसान्येव सर्वज्ञः॥ तेषामुद्धरणाथांच च ॥ गाणपत्या आगमाश्च प्रणीताः शंकरेण तु ॥ ४४६ ॥ तत्र वेद्विकद्वोऽशोऽप्युक्त ॥ सर्वथा वेद्भिन्नार्थे नाधिकारी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वैदिको वेदमाश्रयेत् ॥ धर्मेणासहितं ज्ञानं मानाहंकारवर्जिताः॥ ४५० ॥ मचिता मदतप्राणा उपासते सदा अक्त्या योगमैश्वरसंज्ञितम् ॥ तेषां नि ज्ञानसूर्यंप्रकाशेन नाशयामि न संशयः ॥ इत्थं वैदिकपूजायाः प्रथमाया नगाधिप ॥ ४५३ । स्वरूपमुक्तं संक्षेपाद्द्वितीयाया अथो ब्रवे ॥ मूर्तौ वा स्थिण्डिले वाऽपि तथा सूर्येन्दुसण्डले ॥ ४५४ ॥ जलेऽथवा बाणलिङ्गे वाऽपि महापटे ॥ तथा श्रीहृद्याम्भोजे ध्यात्वा देवीं परात्पराम् ॥ ४५५ ॥ सगुणां करुणापूणी सारसीमान्तां सर्वावयवसुन्दरीम् ॥ ४५६ ॥ शृङ्गाररससंपूर्णी सदा भकातिकातराम् ॥ प्रसादसुमुखीमम्बां ॥ ४५७ ॥ पाज्ञाङ्क् ज्ञवराभीतिधरामानन्द्रह्मपिणीम् ॥ पूजयेदुपचारैश्च यथा वित्तानुसारतः ॥ ४५८ ॥ यावदान्तरपूजाया

उपा.स्त. ३ दुर्गा. अ०११८

1155211

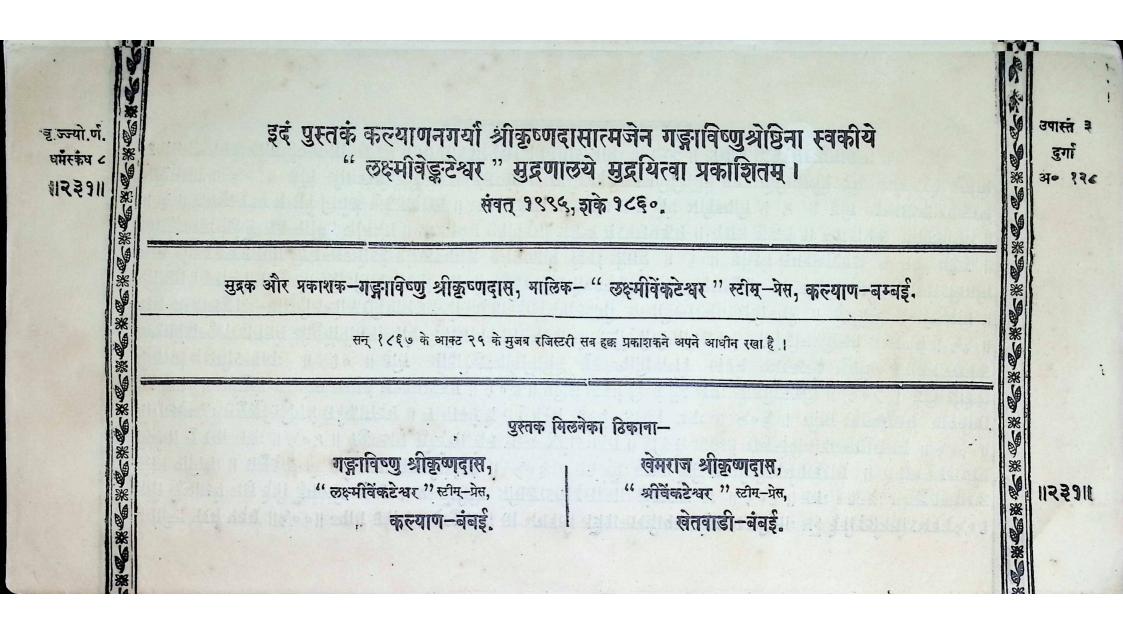
मधिकारों भवेत्र हि ॥ तावद्वाह्यामिमां पूजां श्रयेजाते तु तां त्यजेत् ॥ ४५९ ॥ आभ्यन्तरा तु या पूजा सा तु संविछयः स्मृतः ॥ संविदेव परं रूपसुपाधिरहितं मम ॥ ४६० ॥ अतः संविदि मद्र्षे चेतः स्थाप्य निराश्रयम् ॥ संविद्रपातिरिक्तं तु मिथ्या मायामयं जगत् ॥ ४६१ ॥ प्राप्तः संसारनाज्ञाय साक्षिणीमात्मह्मपिणीम् ॥ भावयेत्रिर्मनस्केन योगयुक्तेन चेतसा ॥ ४६२ ॥ अतः परं बाह्यपूजाविस्तारः कथ्यते मया॥ सावधानेन मनसा शृणु पर्वतसत्तम ॥ ४६३ ॥ इति श्रीदेवीगीतायां नवमोऽध्यायः॥ ॥ ९ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ प्रातरुत्थाय शिरिस संस्मरेत्पद्ममुज्ज्वलम् ॥ कर्पूराभं स्मरेत्तत्र श्रीगुर्ह निजहृपिणम् ॥ ४६४ ॥ सप्रसन्नं लसद्भूषाभूषितं शक्तिसंयुतम् ॥ नमस्कृत्य ततो देवीं कुण्डलीं संस्मरेद्बुधः ॥ ४६५ ॥ प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे प्रतिप्रयाणेऽप्य मृतायमानाम् ॥ अन्तःपद्व्यामनुसंचरन्तीमानन्द्रह्मपामबङां प्रपद्ये ॥ ४६६ ॥ ध्यात्वेवं तच्छिखामध्ये सचिदानन्द्रह्मपिणीम् ॥ मां घ्यायेदत्रशौचादिकियाः सर्वाः समापयेत् ॥ ४६७ ॥ अग्निहोत्रं ततो हुत्वा मत्त्रीत्यर्थे द्विजोत्तमः ॥ होमान्ते स्वासने स्थित्वा पूजासंकल्पमाचरेत् ॥ ४६८ ॥ भूतशुद्धिं पुरा कृत्वा मातृकान्यासमेव च ॥ त्र्छेखामातृकान्यासं नित्यमेव समाचरेत् ॥ ४६९ मुलाधारे इकारं च हदये च रकारकम् ॥ भूमध्ये तद्वदीकारं हींकारं मस्तके न्यसेत् ॥ ४७० ॥ तत्तन्मन्त्रोदितानन्याञ्चयासानसर्वाच् समाचरेव ॥ कल्पयेत्स्वात्मनो देहे पीठं धर्मादिभिः पुनः ॥ ४७१ ॥ ततो ध्यायेन्महादेवीं प्राणायामैर्विजृम्भिते ॥ हृद्म्भोजे स्थाने पञ्चप्रेतासने बुधः ॥ ४७२ ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाज्ञिवः ॥ एते पञ्च महाप्रेताः पाद्मूले मम स्थिताः ॥ ४७३ ॥ पञ्चभूतात्मका होते पञ्चावस्थात्मका अपि ॥ अहं त्वव्यक्तचिद्रूपा तद्तीताऽस्मि सर्वथा ॥ ४७४ ॥ ततो विष्टरतां याताः शिक्ततन्त्रेषु सर्वेदा ॥ ध्यात्वेदं मानसैभींगैः पूजयेन्मां जपेद्पि ॥ ४७६ ॥ जपं समर्प्य श्रीदेव्यै ततोऽर्घ्यस्थापनं कृत्वा पूजाद्रव्याणि शोधयेत् ॥ ४७६ ॥ जलेन तेन मनुना चास्त्रमन्त्रेण देशिकः ॥ दिग्बन्धं च पुरा कृत्वा गुरूत्रत्वा ततः परम् ॥ ॥ ४७७ ॥ तद्वुज्ञां समादाय बाह्यपीठे ततः परम् ॥ हृदिस्थां भावितां मृतिं मम दिव्यां मनोहराम् ॥ ४७८ ॥ आवाहयेत्ततः

ह. ज्ज्यो. र्ण. धर्मस्कंघ ८ ॥२३०॥

पीठे प्राणस्थापनिवद्यया ॥ आसनावाहने चार्च्य पाद्याद्याचमनं तथा ॥ ४७९ ॥ स्नानं वासोद्वयं चैव भूषणानि यथायोग्यं इत्त्वा देव्ये स्वभक्तितः॥ ४८०॥ यन्त्रस्थानामावृतीनां पूजनं सम्यगाचरेत् ॥ प्रतिवारमञ्कानां गुक ारो नियम्यते ॥ ४८१ ॥ मूलदेवीप्रभारूषाः स्मर्तव्या अङ्गदेवताः ॥ तत्प्रभाषटळव्याप्तं त्रैलोक्यं च विचिन्तयेत् ॥ ४८२ ॥ उनरावृत्तिसहितां मूलदेवीं च पूजयेत् ॥ गन्धादिभिः सुगन्धेस्तु तथा पुष्पैः सुवासितैः ॥ ४८३ ॥ नैवेद्यस्तर्पणेश्चव ताम्बूलैर्दक्षिणा ॥ तोषयेन्मां त्वत्कृतेन नाम्नां साहस्रकेण च ॥ ४८४ ॥ कवचेन च स्तूक्तेनाहं रुद्रेभिरिति प्रभो ॥ देव्यथर्वशिरोमन्त्रैर्ह्छेखो इवैः ॥ ४८५ ॥ महाविद्यां महामन्त्रैस्तोषयेन्मां सुहुर्सुहुः ॥ क्षमापयेजगद्धात्रीं प्रेमाईहृदयो नरः ॥ ४८६ ॥ पुलकाङ्कित सर्वाङ्गिर्बाष्परुद्धाक्षिनिःस्वनः ॥ नृत्यगीतादिषोषेण तोषयेन्मां सुहुर्सुहुः ॥ ४८७ ॥ वेद्पारायणैश्चेव पुराणैः सकल्रेरि ॥ प्रतिपाद्या यतोऽहं वै तरुमात्तरेरतोषयेत्त माम् ॥ ४८८ ॥ निजं सर्वस्वमिष से सदेहं नित्यशोऽपयेत् ॥ नित्यहोमं ततः कुर्याद्वाह्मणांश्च सुवा बहुकान्पामरानन्यान्देवीबुद्धचा तु भोजयेत् ॥ नत्वा पुनः स्वहृदये व्युत्क्रमेण विसर्जयेत् ॥ ४९०॥ सर्व हुछेखया कुर्यात्पूजनं मम सुत्रत ॥ हुछेखा सर्वमन्त्राणां नायिका परमा स्मृता ॥ ४९१ ॥ हुछेखादुर्पणे नित्यमहं तु प्रतिबिम्बिता ॥ तस्मादृष्टेखया दत्तं सर्वमन्त्रैः समर्पितम् ॥ ४९२ ॥ गुर्ह् संपूज्य भूषाद्यैः कृतकृत्यत्वमावहेत् ॥ य एवं पूजयेदेवीं श्रीमद्भवनसुन्द रीम् ॥४९३॥ न तस्य दुर्छभं किंचित्कदाचित्कचिद्स्ति हि ॥ देहान्ते तु मणिद्वीपं मम यात्येव सर्वथा ॥ ४९४॥ ज्ञेयो देवीस्वरूपो उसौ देवा नित्यं नमन्ति तम् ॥ इति ते कथितं राजन् महादेन्याः प्रपूजनम् ॥ ७९५ ॥ विमृश्यैतदृशेषेणाप्यधिकारानुरूपतः ॥ कुरु मे पूजनं तेन कृतार्थस्त्वं भविष्यसि॥४९६॥ इदं तु गीताशास्त्रं मे नाशिष्याय वद्तकिचित् ॥ नाभक्ताय प्रदातन्यं न धूर्तीय च दुहिदे ॥ ४९७॥ एतत्प्रकाज्ञनं मातुरुद्दाटनमुरोजयोः ॥ तरुपाद्वर्यं यतेन गोपनीयमिदं सदा ॥४९८॥ देयं भक्ताय ज्ञिष्याय ज्येष्ट पुत्राय चैव हि ॥ सुशीलाय सुवेषाय देवीभक्तियुताय च ॥ ४९९ ॥ श्राद्धकाले पठेदेतद्वाह्मणानां समीपतः ॥ तृप्तास्तित्पतरः सर्वे

उपा.स्त्रं ३ दुर्गाः

प्रयान्ति परमं पद्म् ॥५००॥ व्यास उवाच ॥ इत्युक्त्वा सा भगवती तत्रैवान्तरधीयत ॥ देवाश्च युद्तिताः सर्वे देवीदर्शनतोऽभवन् ५० ततो हिमालये जज्ञे देवी हैमवती तु सा ॥ या गौरीति प्रसिद्धाऽसीदत्ता सा शंकराय च ॥ ५०२ ॥ ततः स्कन्दः समुद्धतस्तारक स्तेन पातितः ॥ समुद्रमन्थने पूर्व रत्नान्यासुर्नराधिप ॥ ५०३ ॥ तत्र देवेः स्तुता देवी लक्ष्मीप्रीत्यर्थमाद्रात् ॥ तेषामनुत्रहार्थाय निर्गता तु रमा ततः ॥ ५०४ ॥ वेकुण्ठाय सुरेर्दता तेन तस्य शुमोऽभवत् ॥ इति ते कथितं राजन्देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ५०५ ॥ गौरीछक्ष्म्योः समुद्भतिविषयं सर्वकामदम् ॥ न वाच्यं ते तद्न्यस्मै रहस्यं कथितं यतः ॥ ५०६ ॥ गीता रहस्यभूतेयं गोपनीया प्रयत्नतः ॥ सर्वमुक्तं समासेन यत्पृष्टं तत्त्वयाऽनघ ॥ ५०७ ॥ पवित्रं पावनं दिव्यं कि भ्रयः श्रोतिमच्छिस ॥ ५०८ ॥ इति श्रीदेवी ॥ इति श्रीहारिक्वष्णविनिार्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवे अष्टमे धर्मस्कन्धे तृतीये श्रीमद्वाजसनेयिगौतमकुरुोत्पन्नोऽतिविद्यावतां मान्यो गुर्जरपण्डितोपपदकौदीच्यः सहस्राह्वकः मान् श्रीव्यङ्कटाख्यो द्विनस्तन्नोऽहं हरिकृष्णसंज्ञ इममाकार्ष विदां श्रीतये ॥ १ ॥ दक्षिणे सुमहाराष्ट्रदेशे औरङ्गाबादसंज्ञं वै तत्र चास्ति जनिर्मम ॥२॥ प्रार्थये सर्वविदुषां क्षमध्वं मेऽपराधकम् ॥ यद्यत्र कुकृतं वा स्यादिधकं यत्रकुत्रचित् ॥ ३॥ रागमुत्सृष्य तत्सर्वे निर्मेखं कुरुताद्रात् ॥ अत्राविद्यां भागः स तु शेषे भविष्यति ॥ ४ ॥ इति अन्थालंकारप्रकर पष्टितमम् ॥ ६० ॥ इति श्रीमज्ज्योतिर्वित्कुलावतंसव्यंकटरामात्मजहरिक्वणविनिर्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवेऽष्टमे धर्मस्कन्धे तृतीये उपासनास्तवके श्रीदुर्गोपासनानिरूपणं नामाष्टाविंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १२८ ॥ अथाग्रे त्रिपुरभैरव्युपासना ॥



e (क्रिका विज्ञ	ापन दिन्छ । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।		
न.म.	की. हे. आ.	नाम.	की.	रु. आ
भनुष्ठानप्रकाश—स्व॰ पं॰ चतुर्यालालकृत	६-0	कार्तशीर्यार्जुनोपासनाध्याय-(बृहज्ज्योतिषावणवान्तर्गत)	900	2-0
अप्टिसिद्धि—त्राषाटीकासिहत । गुरूपिदृष्टमार्गसे अभीष्टफलपद्यैय	1 0-93	कामरतन-योगेश्वर नित्यनायप्रणीत तथा स्व० वि० वा० पं०		
आश्चर्यदीपिका	0-3	ज्यालामसाद्मिश्रकृत भाषाटीकासहित ।	0000	5-8
आतिश्वाजी-भाति २ की आतिश्वाजी बनानेकी विधि	0-811	क्रियोड्डीशतन्त्र-इन्द्रजिद्धिरचित भाषाठीकासहित ।		0-90
आश्चर्ययोगमालातन्त्र-सिद्ध नागाजुनभणीत, स्व॰ पं॰ बल-		गायत्रीपुरश्चरणविधि		0-91
देवप्रसाद्मिश्रकृत भाषार्टाकासहित	6-8	गायत्रीपश्चाङ्ग	***	2-0
आसुरी व ल्प-भाषाठीकासाहित । तन्त्रज्ञास्त्रका पुस्तक	१-८	गायत्रीतन्त्र-भाषाभाष्यसहित ।	****	0-6
बृहत्) इन्द्रजाल-अर्थात् कीतुकरत्नभाण्डागार रच्छिष्टगणपतिपञ्चाङ्ग तथा उच्छिष्टचण्डाव्नियुपासना	१-0	गायत्रीमन्त्रार्थभारकर-सायण, उवट, महीधर, रावण, शंकर,		
अच्छष्टगणपातपञ्चाङ्ग तथा अच्छिट्यण्डााल् चुनारामा उद्घीशतन्त्र–रावणिवरचित मूल तथा सुरादाचादिनवासी स्याम		विद्यारण्य, भट्टोजिदीक्षितादिकृत अनेक भाष्य तथा		
सुन्दरलाल त्रिपाठीकृत भाषाटीकासाहित.	٥-٤	भाषाटीकासहित।		3-0
	पुस्तक मिलने	का ठिकाना—		
खेमराज-श्रीकृष्णदास,		गङ्गाविष्णु-श्रीकृष्णदास,		
"श्रीवेङ्करेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बग्बई.		"लक्ष्मीवेङ्गदेश्वर" प्रेस, कल्याण-बस्बई.		

